# सूचीपत्र ।

## पूर्वार्द्ध ।

# सूचीपत्र।

## उत्तरार्द्ध।

# ब्रजविलास।

होत गुणनकी खान, जाके गुण उर गनतहीं ॥
द्रवो सु दयानिधान, वासुदेव भगवन्त हरि ॥ १ ॥
मिटत तापत्रय फांसि, जासु नाम मुखसों कहत ॥
वन्दौं सो शुभरासि, नन्दसुवन सुन्दर सुखद ॥ २ ॥
अरुण कमलदल नैन, गोपवृन्द मण्डन सुभग ॥
करहु सो मम उर ऐन, पीताम्वर वरवेणुधर ॥ ३ ॥
वन्दौं जगत-अधार, कृष्णाग्रज बलदेवपद ॥
अभिमत-फल-दातार, नीलाम्ब ररेवतिरमण ॥ ४ ॥
श्री गुरु कृपानिधान, वन्दौं पद महि माथ धरि ॥
जासु वचन जलयान, नर चढ़ि भवसागर तरहिं ॥ ५ ॥
वन्दौं सन्त कृपाल, पद सरोजरज राखि शिर ॥
जगहितरत शुभ माल, जिन निज गुण हरि वश करे ॥६॥
पुनि वन्दौं ब्रजदेश, परम रम्य पावन परम ॥
महिमा जासु सुवेश, राधानाथ विहारथल ॥ ७ ॥
प्रथम कृष्णको तात मनाऊं। श्रीवसुदेव चरण शिर नाऊं ॥
बहुरि देवकीपद जलजाता। वन्दन करौं कृष्णकी माता ॥

इनते और कौन बड़भागी । ब्रह्म धरयो नरतनु जिनलागी ॥
वन्दौं नन्द महरके चरणा । सहित यशोमति मङ्गल करणा ॥
जिनकी महिमा भाग्य बड़ाई । निगमागम शिव शारद गाई ॥
वन्दौं रोहिणि पद जलजाता । कृष्णाग्रज बलदेवकि माता ॥
कीरतियुत वृषभानु गोपवर । वन्दौं चरण कमल रज शिरधर ॥
तात मात राधा रानीके । त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानीके ॥
कृपा कमल दृगकी कमलाके । कलुष-विभञ्जन सब विमलाके ॥
वन्दौं श्रीराधापद अम्बुज । जिनकेध्यान मिटत भवभयरुज ॥
होत कृष्ण सहजहि वश ताके । प्रेमसहित गुणगावत जाके ॥
वन्दौं सो वृषभानु दुलारी । कृष्ण प्राण जीवनधन प्यारी ॥

राधाकृष्ण पदाम्बुजन, वन्दौं महि शिर टेक ।
व्रजविलास हित दोय तन, प्रगट किये हैं एक ॥
वन्दौं युगल किशोर, रूपराशि आनन्दघन ।
दोऊ चन्द्र चकोर, प्रीति-रीति रसवश सदा ॥

अपर गोप गोपी गोपाला । जिनके सँग विचरहिं नँदलाला ॥
गाय वच्छ वालक व्रजवासी । जिनके सखा कृष्ण अविनासी ॥
और जाति जो व्रजहिं निवासी । बन्दौं सकल सुकृतकी रासी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर । गोकुलादि जो ग्राम उजागर ॥
श्रीयमुनासरि पर्व पुनीता । जासु दरश नहिं यमपुर भीता ॥
पर्वत वापी कूप तड़ागा । श्रीवृन्दावनादि वन वागा ॥

खग मृग जलचर जीवविभागा। वन्दौं सकल सहित अनुरागा॥
वन्दौं गिरि गोवर्द्धन देवा। अपर देव तिनसम नहिं केवा॥
सुरपति मेटि जाहि हरिपूजा। आन देव तिन समको दूजा॥
अति रमणीय रेत यमुना तट। उपवन अमित सुभग वंशीवट॥
जहं जहं श्रीहरि धेनु चराई। सुन्दर श्यामल कुवँर कन्हाई॥
रास बिलास जहां हरि कीन्हों। भक्तवत्सल भक्तन सुख दीन्हों

जड़चेतन ब्रजदेशके, तृण तरु महिरज जेत।
वन्दौं कीट पतङ्ग सब, पुनि पुनि प्रीतिसमेत॥
ब्रजजनपद शिर राख, विनय करौं कर जोरि पुनि।
मो मनको अभिलाष, पूरण करिये जानि जन॥

ब्रजविलास कछु कहौं वखानी। करन पुनीत जान निज वानी
सो तबलौं नहिं उरमें आवै। जबलग तुम्हरी कृपा न पावै॥
मैं मन वच क्रम तुम्हरो दासा। ताते पुरवहु मोरी आसा॥
यद्यपि मति इतनी मोहिं नाहीं। करौं उक्ति कछु निज तेहि माहीं
तहां एक मैं कियो बिचारा। या विधि बल अपने उर धारा॥
श्रीशुकदेव कही हरिलीला। सुनी परीच्छित सब गुणशीला॥
सूरदास सोइ हरिरस सागर। गायो बहु विधि परम उजागर॥
फैलि रह्यो सो त्रिभुवनमाहीं। गावत सुनत सुयश हरषाहीं॥
विविध प्रकार चरित हरिकेरे। तामहँ वरणे सूर घनेरे॥
सो वह प्रीति रीति सुखदाई। मेरे मन अतिशय करि भाई

सो तौ कथा अमित विस्तारा । मोपै पायो जात न पारा ॥
तामें ब्रजविलास सुखदाई । सो कछु कहिहौं करि चौपाई ॥

भाषाकी भाषा करौं, चमियो कवि अपराध ।
जिहि तिहि विधि हरि गाइये, कहत सकल श्रुति साध ॥
हरिपद प्रीति न होय, विन हरि गुण गाये सुने ।
भवते छुटत न कोय, विना प्रीति हरिपद भये ॥

ताते मैं सन्तन शिर नाई । गावों हरियश जन सुखदाई ॥
जो व्रजमें हरि कियो विलासा । सो कछु कहिहौं सहित हुलासा
यामें इतनी कथा बखानौं । ताकी सूचनिका यह जानौं ॥
श्रीवसुदेव देवकी व्याही । चल्यो कंस पहुँचावन ताही ॥
तहां भई नभवाणी वाही । सुनिकै कंस डरयो पुनि ताही ॥
अठयों गर्भ होयगो याके । तेरी मृत्यु हाथ है ताके ॥
तवहिं देवकी हतन विचारयो । करि विनती वसुदेव उबारयो ॥
सब सुत ताहि देनको भाखे । नृप तब दुहुँन वन्दिमें राखे ॥
षट बालक तिनके नृप मारे । पातक भये भूमिपर भारे ॥
दुखित गई सो हरिके पासा । हरि ताको जिमि दई दिलासा ॥
पुनि संकर्षण गर्भहि आये । तिनको बहुरि रोहिणी जाये ॥
सो सब कहिहौं मति अनुमाना । जैसी भांतिन सुन्यो पुराना ॥

पुनि भगवान अनादि अज, ब्रह्म सच्चिदानन्द ।
प्रगट भये वसुदेवगृह, निज इच्छा सुखकन्द ॥

तात मात सुख दैन, सुन्दर रूप दिखायके।
किये परम उर चैन, दूर किये दुख द्वंद्व सब॥
तात मात पुनि जिमि समुझाये। लै गोकुल वसुदेव सिधाये॥
यशुदा गोद राखि घनश्यामहिं। कन्या तासु गये लै धामहिं॥
कंसासुर सो कन्या पाई। सो जैसे आकाश सिधाई॥
तासुवचनसुनि अतिभयमाना। बालकहतन मन्त्र तब ठाना॥
बजे नन्दघर अनँद बधाये। ब्रज युवतिन मिलि मङ्गल गाये॥
भयो नन्दघर अति उत्साहू। ब्रजवासिनको परम उछाहू॥
प्रीति सहित सो सब सुख गैहौं। जितनो निजमति को बल पैहौं
बहुरि कंस पूतना पठाई। सो जैसे हरिके ढिग आई॥
ताहि मारि जननी गति दीन्हों। प्राण पान करि पावन कीन्हों॥
कागासुर पुनि जा विधि आयो। ताको पुनि हरि मारि बहायो॥
बहुरयो शकट चरणते डारयो। तृणावर्त्तको जा विधि मारयो॥
अन्न-पराशनादि जे कर्मा। किये नन्द जिमि निजकुलधर्मा॥
बालचरित्र पवित्र पुनि, जिमि कीन्हे अभिराम।
जानुपाणि चलि सुखदियो, तात मातको श्याम॥
ब्रज जनके मनमोद, चले बहुरि पायँन कछुक।
कीन्हे बालविनोद, नन्द यशोमतिके अजिर॥
गर्ग आय लक्षण पुनि भाषे। पुनि सब ब्रजवासी अभिलाषे॥
पुनि बालनसँग खेलन लागे। बालखेल लीला अनुरागे॥
विप्रपाक जैसे जुठ लीन्हों। चंदाहेत बहुरि हठ कीन्हों॥

कनछेदन लीला सुखदाई। कहिहौं सब आनन्द वधाई॥
पुनि हरि खेलत माटी खाई। यशुमति लै सांटी उठि धाई॥
माता आगे मुख जिमि वायो। ताहीमें त्रिभुवन दिखरायो॥
शालग्राम मेलि मुख लीन्हों। नन्दहि पूजामें सुख दीन्हों॥
अन्हवावनहित जिमिमचलाये। वहुत भांति यशुमति फुसलाये
ग्वालन संग वहुरि अनुरागे। माखनचोरीके रस पागे॥
वहुरों माता क्रोध उपायो। भक्तिहेत दांवरी वँधायो॥
यमलाअर्ज्जुन वृक्ष ढहाये। धनद सुतनके पाप नशाये॥
पुनि वन गोचारन मन आन्यो। ग्वालन संग जान हठ ठान्यो॥

वहुरि जाय वनमें हन्यो, वत्सासुर नँदनन्द।
ग्वालनसँग आनदसहित, घर आये सुखकन्द॥
सो करिकै विस्तार, प्रेम सहित सव वरणिहौं।
निज मतिके अनुसार, व्रजवासी प्रभुके गुणन॥

गोदोहन जैसे पुनि कीन्हओं। तातमात व्रजजन सुख दीन्हओं॥
मोती वये नन्दके धामें। सुर नर लखि चकृतभये जामें॥
वहुरि जाय वन नन्दकुमारा। वकाअसुरको वदन विदारा॥
वहुरों वालचरित चित दीने। भौंरा चकई खेलन लीने॥
श्रीराधासों प्रीति वढ़ाई। कीन्हें चरित ललित सुखदाई॥
अघाअसुर मारओ पुनि जाई। ग्वालन संग छाक वन खाई॥
भयो मोह जिमि विधिके मनमें। वालक वत्स हरे तिन वनमें॥
तिनको रूप आप प्रभु कीन्हों। व्रजके वासिनको सुख दीन्हों॥

सो सब कहिहौं करि विस्तारा। अघनाशन प्रभु चरित उदारा।
श्री वृषभानु-लली पुनि आई। जैसे हरिसों गाय दुहाई॥
कहिहौं सो रसकथा सुहाई। अति बिचित्र जनमन सुखदाई॥
बहुरो धेनुकको वध कीन्हों। विष जलते ग्वालन रख लीन्हों॥

पुनि नाथ्यो कालीउरग, जलमें पैठि मुरारि।
यमुनाजल निर्म्मल कियो, ब्रजते दियो निकारि॥
किय दावानल पान, राखि लिये ब्रज लोग सब।
जिनके कृपानिधान, सदा भक्त सङ्कट हरण॥

बहुरि प्रलंब असुर ब्रज आयो। खेलतमें हरि ताहि नशायो॥
पनिघट यमुनातट पुनि जाई। गोपिनसों रसकियो कन्हाई॥
चीरहरण लीला पुनि कीनी। कहिहौं सकल प्रेम-रस भीनी॥
पुनि बृन्दावनमें सुखशीला। ग्वालनसंग करी जो लीला॥
बृन्दावनकी महत बड़ाई। श्रीमुख श्रीबलजूसों गाई॥
ऋषिपत्निनसों भोजन लीन्हों। भक्तिदान तिनको प्रभु दीन्हों॥
पुनि श्रीगोवर्द्धन गिरि राई। ब्रज थापे सुरपतिहि मिटाई॥
सुरपति कोप कियो यह जानी। बरष्यो प्रलय कालको पानी॥
तबप्रभु गिरिकरधरि ब्रज राख्यो। जै जै सब ब्रजवासिन भाख्यो॥
सो सब अनुपम कथा सुहाई। कृष्णकृपाते कहिहौं गाई॥
नन्दहि पकरि वरुणके दासा। जिमि लै गये बरुणके पासा॥
लाये श्याम तहाँते जाई। ब्रजमें भई अनन्द बधाई॥

वहुरों पुर वैकुण्ठ जो, अति पुनीत निजधाम।
व्रजवासिनको करिकृपा, दिखरायो घनश्याम॥
सो सब कथा अनूप, अति विचित्र पावन परम।
कहिहौं मतिअनुरूप, सन्तजनन मन भावनी॥

पुनि जो करी श्याम सुखशीला। अति अद्भुत व्रजमें रसलीला
श्रीराधा वृषभानु दुलारी। और सकल व्रजगोपकुमारी॥
तिनसों मिलि श्रीकृष्णविहारी। रस सिंगार लीला विस्तारी॥
आनँद भयो सकल सुखकारी। गाय तरत भव सब नर नारी॥
जिमि गोपिन हरि सों मन लायो। प्रेम पन्थ दृढ़करि दिखरायो
गोरस लै निकसीं व्रजनारी। जिमि दधिदान लियो वनवारी॥
भई प्रेम उनमत्त गुवारी। लोक लाज तनु दशा विसारी॥
वहुरि चरित्र कुवँरि राधाके। परम पवित्र हरण बाधाके॥
जैसे मिली श्यामसों जाई। वहुरों जैसी प्रीति दुराई॥
पुनि संकेत चरित्र विविधवर। किये प्रिया प्रियतम अतिसुन्दर
गर्व विरह अभिलाष परस्पर। अति रहस्य लीला सुन्दरवर॥
कहिहों सकल कथा सुखदाई। भक्ति रसज्ञन के मन भाई॥

देखि मुकुरमें लाड़िली, पुनि जैसो निजरूप।
विवशभई सो गायहौं, लीला परम अनूप॥
पुनि नैनन अनुराग, अरु मुरलीकी प्रिय कथा॥
कहिहौं सहित विभाग, प्रेमसुधारससों भरी॥

वहुरों शरदरैनि अति पावन। श्रीवृन्दावन परम सुहावन॥

तहां श्याम बांसुरी बजाई। घर घरते ब्रज नारि बुलाई॥
कियो रास रस रसिक बिहारी। भई प्रेम गर्वित लहँ नारी॥
अन्तरध्यान चरित तब कीन्हों। गर्व गोपिकनको हरि लीन्ह्यों॥
कियो महा मङ्गल पुनि रासा। बाढ्यो परमानन्द हुलासा॥
पुनि जलकेलि करी मनभावन। कहिहौं चरित सकलअतिपावन
मानचरित लीला सुखदाई। करी बहुरि जिमि कुवँर कन्हाई॥
विस्तर सहित कहौं सो वरणी। भरी प्रेम रस आनँद करणी॥
बहुरौं जाय हिंडोला झूले। भये सकल गोपिन अनुकूले॥
ऋतु बसन्त फागुन जब आयो। कियो फाग रँग सब मन भायो
सो रस कथा सकल सुखदानी। मति समान सब कहौं बखानी
पुनि विद्याधर शाप नशायो। अजगर रूपते ताहि छुड़ायो॥

शङ्खचूड़ मार्‍यो बहुरि, अधम निशाचर नीच।
पुनि मार्‍यो वृषभासुरहि, हरि ब्रजवासिन बीच॥
बध्यो बहुरि गोपाल, केशी व्योमासुरहि जिमि।
दुष्टदलन नँदलाल, कहिहौं चरित पुनीत सब॥

बहुरि आय नारद यश गायो। सुनिके श्याम बहुत सुखपायो॥
तबहिं कंस अक्रूर पठायो। लेन कृष्णको सो ब्रज आयो॥
भये सुनत ब्रज लोग उदासी। मधुपुर चले बहुरि सुखरासी॥
जब अक्रूर हृदय दुख पायो। तब हरि जलमें दरश दिखायो॥
भये सुखी लखि प्रभु प्रभुताई। सो सब चरित कहौं सुखदाई॥
गये बहुरि मथुरा रजधानी। मार्‍यो प्रथम रजक अभिमानी॥

वसन लुटाय सखन पहिराये। बहुरि सुदामाके घर आये॥
कुबजाते चन्दन हरि लीन्हों। ताको रूप अनूपम दीन्हों॥
तोरयो धनुष असुर बहु मारे। द्विरद जीति पुनि दन्त उखारे॥
भिरे बहुरि मल्लनसों जाई। कियो युद्ध तिनसों दोउ भाई॥
जीति मल्ल सब असुर सँहारे। डर्यो कंस लखि अति बलभारे॥
गये नृपतिपहँ तब दोउ भाई। दियो मञ्चते भूमि गिराई॥

मारि कंस पुनि केश धरि, दियो यमुनजल डारि।
उग्रसेन राजा कियो, चमर छत्र सिर ढारि॥
बहुरि दियो सुख जाय, बन्दि काटि पितुमातको।
सुन्दर दरश दिखाय, भयो तहां मङ्गल परम॥

कहिहौं सकल चरित विस्तारी। भवभयभञ्जन मङ्गलकारी॥
करि मधुपुरके लोग सनाथा। कुबजासदन बसे ब्रजनाथा॥
नन्द विदा करि व्रजहि पठाये। बिछुरत व्रजवासिन दुख पाये॥
हरि तजि नँद आये व्रज जबहीं। भई यशोदा व्याकुल तबहीं॥
गोपी सुनि हित कुबजा हरिको। कियोपरेखो अति गिरिधरको
भई विरहवश सब व्रजबाला। कहिहौं सो सब प्रेम विशाला॥
पुनि कुलरीति जानिवसुदेऊ। हरि हलधरको कियो जनेऊ॥
विद्यानिधि पुनि जानतराई। विद्यापढ़न लगे दोउ भाई॥
पूरण काम गुरुके कीन्हे। मरे पुत्र प्रभु तिनके दीन्हे॥
ज्ञानगर्व उद्धव मन जानी। पठये व्रजहि श्याम सुखखानी॥

सो उद्धव गोपी सम्बादा। प्रेम भक्ति रसको मर्य्यादा॥
कहौं सु कथा विचित्र सुहाई। भक्त जननको अति सुखदाई॥

पुनि उद्धव जैसे गये, प्रेम भक्तिको पाय।
ब्रजवासिनकी सब कथा, कही श्यामसों जाय॥
ब्रजहिं रहे ब्रजराज, ब्रजवासिनके प्रेमवश।
किये सुरनके काज, धारि चतुर्भुज रूप पुनि॥

सो द्वारकाचरित्र सुहाये। प्रकट पुराणनमें सब गाये॥
अति विचित्र हरिचरित अपारा। काहू गाय लह्यो नहिं पारा॥
मति समान बुध जन सब गावैं। गाय गाय तनु पाप नशावैं॥
हरिपदपङ्कज प्रीति बढ़ावै। मन चञ्चलको तहां रमावै॥
ब्रजबिलास हरिको अतिपावन। रस माधुर्य चरित्र सुहावन॥
ताते कछुक कहत हौं गाई। सब सन्तनके पद शिर नाई॥
यामें कछुक बुद्धि नहिं मेरी। उक्ति युक्ति सब सूरहि केरी॥
कियो सूररस सिंधु उधारा। तामें प्रेम-तरङ्ग अपारा॥
हरिके चरित रत्न विधि माना। ब्रजबिलास सो सुधा समाना॥
पदरचना करि सूर बखान्यो। कोमल विमल मधुररस सान्यो॥
समय समयके राग सुहाये। अति विस्तार भाव मन भाये॥
ताको स्वाद कह्यो नहिं जाई। कहत सुनत श्रवणन सुखदाई॥

अतिशय करि मोहत मनहिं, गंध्रबगुणके सङ्ग।
कहत बनै तामें नहीं, क्रमसों कथाप्रसङ्ग॥

मेरे मन अभिलाष, प्रभु प्रेरित ऐसो भयो।
कहिहौं यह रसभाष, क्रमसों कथा प्रसङ्गसब ॥
ताते निजमनकी रुचि जानी। यहि विधि करौं प्रबन्ध सुवानी ॥
द्वादश चौपाई प्रति दोहा। तहँ पुनि एक सोरठा सोहा ॥
कहूं कहूं शुभ छन्द सुहाई। भाषा सरल न अर्थ दुराई ॥
कहत सुनत समुझत मनभाई। ध्यान रूपमय कथा सुहाई ॥
कर्म्म धर्म्म नहिं नीति वखानी। केवल भक्ति प्रेम सुखदानी ॥
जानि कृष्णके चरित पुनीता। कहिहैं सुनिहैं सन्त सप्रीता ॥
वहुरि कहत दोऊ करजोरी। सुनियो विनय कृपाकरि मोरी ॥
चूकपरी जो मोतन होई। सुजन सुधारि लीजिये सोई ॥
मैं नहिं कवि न सुजान कहाऊं। कृष्णविलास प्रीति करि गाऊं
सो विचारिके श्रवणन कीजै। काव्य दोष गुण मन नहिं दीजै ॥
ऐसे सबको विनय सुनाई। कृष्णचरित वरणौं सुखदाई ॥
कृष्णचरित आनदके रासा। मङ्गल करण हरण भवत्रासा ॥
विघन विनाशन शुभ करण, हरणतापत्रयशूल।
चरित ललित नन्दनन्दके, सकल सुखनके मूल ॥
चरण कमल उरधार, श्रीराधा नँदलालके।
सुन्दररस आगार, व्रजविलास अब वरणिहौं ॥
सम्वत शुभ पुराण शत जानौ। तापर और नक्षत्रहि आनौ ॥
माघ सु मास पक्ष उजियारा। तिथि पञ्चमी सुभग शशिवारा
श्रीवसन्त उत्सव दिन जानौ। सकल विश्व मन आनँददानौ ॥

मनमें करि आनन्द हुलासा। ब्रजबिलासको करौं प्रकासा॥
वन्दौं प्रथम कमलपद नीके। श्रीवल्लभ आचारज जीके॥
श्रीलक्ष्मणभट कुंवर उदारा। जन उद्धारण हित अवतारा॥
माया व्याधि मिटाय अनेका। कियो प्रेम मारग दृढ़ एका॥
श्रीगोकुलबसि सुख उपजायो। कृष्ण नामको दान चलायो॥
विरहानलमें सुभग शरीरा। वाणी प्रेम सिन्धु गम्भीरा॥
हरिप्रापतिकी रीति बताई। विरह रूप करि प्रगट दिखाई॥
विरह भरयो जिनको सब नेमा। विरहरूप करि जिनको प्रेमा॥
विरहै भरी भक्ति विस्तारी। ताते गोकुल गेल निहारी॥

द्वापरतनु धरि सुरनहित, कृष्ण सँहारे दुष्ट।
श्रीवल्लभ वपु धरि कियो, प्रेमपन्थ कलि पुष्ट॥
मन बच क्रमसों चित्त, श्रीवल्लभ चरणनलग्यो।
वही आश वहि वित्त, वहि साधन वहि युक्तफल॥

पुनि श्रीवल्लभकुलहि मनाऊं। चरणकमल तिनके शिरनाऊं॥
श्रीगोकुलमें जिनको धामा। विश्व विदित सुन्दर गुणग्रामा॥
प्रेम भक्तिकी ज्योति विराजै। तेज प्रताप जगतपर राजै॥
जिनके सदन देखिये ऐसे। नन्द महरिके सुनियत जैसे॥
तहां कृष्णकी नित नवलीला। बाल बिनोद भरी सुखशीला॥
तिनको शरण जीव जो आवै। तौ दृढ़ भक्ति कृष्णकी पावै॥
देत श्रवणमग अति सुखदाई। कृष्ण नाम रस सुधा पियाई॥
भक्ति दानको परम उदारा। जगत विदित श्रीगोकुलद्वारा॥

नामहुँ मङ्गलवंश मँझारी। परम कृपालु दीन दुखहारी॥
श्रीमोहनजी नाम गुसांई। सुन्दर श्याम श्यामकी नाई॥
परमविशालकमलदललोचन। दयादृष्टि उरताप विमोचन॥
मधुर मनोहर शीतल बानी। प्रेम सुधारससों लपटानी॥

तिन तीरथपति मधि दियो, कृष्णनाम मोहि दान।
दीन जानि राख्यो शरण, लगिकै मेरे कान॥
तिनके पद उर राख, व्रजविलास वर्णन करौं।
मो मनको अभिलाष, पूरण करि हैं जानि जन॥

वन्दतहौं सब सूर सुजाने। जिन्हैं सूर सम सबकोउ माने।
प्रेम रूप वाणी परकासा। प्रफुलित अम्बुज सुनि हरिदासा॥
कृष्णरूप बिन और न देख्यो। जगतविषय तृणसमकरिलेख्यो॥
राखे नैन सदा करि ध्याना। दिव्य दृष्टि करि सुयश बखाना॥
लीला श्याम जन्म भरिगाई। रहसकेलि सब प्रगट जनाई॥
वाणी भांति अनेक बखानी। कृष्ण प्रेम रससों लपटानी॥
चढ़े कठोर मोहवश जेऊ। होत प्रेम वश सुनिकै तेऊ॥
कीन्हों अति उपकार जगतको। मारग दयो चलाय भगतको॥
मोहि बड़ाई करि नहिं आवै। जिनको गायो सबकोउ गावै॥
चरण शीश धरि तिन्हैं मनाऊं। यह अपराध क्षमा करि पाऊं॥
मोते यह अति होत ढिठाई। करत विष्णुपदकी चौपाई॥
सो मम दोष न उरमें धरिये। सफल मनोरथ मेरो करिये॥

अब सन्तनकी मण्डली, वन्दत हौं शिरनाय।
बिना कृपा जिनकी भये, हरियश गाय न जाय॥
करिहैं मोहिं सहाय, गुणगाहक परहित करन।
तिनको सहज सुभाय, सन्तत सन्त कृपालुचित॥
सन्त मण्डलीको शिर नाऊं। जिनकी कृपा विमल मति पाऊं॥
जिनकी कृपा विघ्न सबनशै। जिनकी कृपा कृष्णगुण भाशै॥
जिनकी प्रेम भक्ति फल पाई। जिनकी कृपाकुमतिमिटिजाई॥
जिनकी कृपा होय गुणनाना। जिनकी कृपा सर्व कल्याना॥
जिनकी कृपा मोह तम नाशै। जिनकी कृपा ज्ञान परकाशै॥
जिनकी कृपा सकल सुखमूला। होहु सो सन्त मोहिं अनुकूला॥
जय जय जय श्रीकुंजविहारी। नँदनंदन वृषभानु दुलारी॥
मङ्गल मूरति आनँद कारी। लीला ललित भक्तभय हारी॥
रूपनिधान प्रेमको रासी। श्रीवृन्दावन धाम निवासी॥
अखिल नाम गण सुखके धामा। पूरण काम श्याम अरुश्यामा॥
युगल किशोर ध्यान उर धरिकै। सुभग कमल पद बन्दन करिकै॥
ब्रजविलास रस परम हुलासा। गावतहै ब्रजबासीदासा॥

---

## कथाप्रसङ्ग वर्णन।

तत्त्व नाम पद परम गुरु, पुरुषोत्तम जगदीश।
कृष्णकमल लोचनसुखद, सकलदेव मणिशीश॥

वन्दौं नन्दकिशोर, वृन्दावनवासी सदा।
श्रीराधा चितचोर, आनँदघन भवभयहरण॥
कहौं कथा सुन्दर सुखदेनी। अघहरणी बैकुण्ठ निशेनी॥
कृष्णचरण पङ्कज रतिदेनी। जनपावन करनी जिमि वेनी॥
श्रीकलिन्दतनया तट पावन। बसत मधुपुरी परम सुहावन॥
जाकी महिमा सुर मुनि गावैं। तीनि लोक पर वेद बतावैं॥
दरशनते नर पावन होई। कृष्ण कृपा बिन सुलभ न सोई॥
उग्रसेन तहँ बसै नरेशा। नीतिनिपुण सह धर्म्म सुवेशा॥
ताको सुवन कंस अति पापी। असुर बुद्धि भो जग सन्तापी॥
कियो तात गहि बन्दीशाला। आपुन भयो कंस भूपाला॥
तात अनुज तहँ देवक नामा। सुता तासु देवकी ललामा॥
दई कंस वसुदेवहि ताही। लोक वेदकी रीति विवाही॥
दायज दियो अनेक विधाना। हय गज रथ पट भूषण नाना॥
दासी दास बहुत सँग दीनो। दान मान परिपूरण कीनो॥

तब चढ़ाय रथ देवकी, आप भयो रथवान।
पहुँचावन अति हेतसों, चल्यो सहित अभिमान॥
तेहि क्षण गिरा विशाल, होत भई आकाशते।
होय कंसको काल, देवकिको सुत आठवों॥

कंसासुर सुनि वचन अकाशा। भयो चकित मन मिटयो हुलाशा॥
शत्रु समान देवकिहि मानी। रथते उतरि परयो अभिमानी॥
खड्ग निकासि हाथमें लीन्हों। यह विचार अपने मन कीन्हों॥

अब हौं याहि मारि दुख मेटों। पुनि कलेश काहेको भेंटों ॥
केश पकरि देवकिमहिलीन्हो। नहिंकछुकानि बहिनिकी कीन्हो
तब वसुदेव दीन ह्वै कहहीं। तियवध नहीं भूप यश लहहीं ॥
बहुरो यह पुनि स्वसा तिहारी। राजन कीजै काज विचारी ॥
सुन वसुदेव भई नभ बानी। तुमहूँ सुनी कछु नाहिं छिपानी ॥
ताते उग्र शोच किन करिये। पाछे काहेको दुख भरिये ॥
वृक्ष फले जो विषफल आगे। ताहि बने पहिलेही त्यागे ॥
जो नहिं हतौं आज यह वाला। मिटै न उरसों शोच विशाला ॥
कन्या और व्याहि तोहिं दैहौं। याहि मारि उर शोच नशैहौं ॥

मुनिजन गुरुजन सङ्ग जे, तिन्हहिं कह्यो तिहि काल।
वृथा होतहै यज्ञफल, यह न उचित महिपाल ॥
यहै तुम्हारे भाल, आनकदुन्दुभि देवकी।
इन्हैं न हतिये जान, वेद विरोध न कीजिये ॥

पुनि वसुदेव कह्यो करजोरी। राजन सुनिय विनय कछु मोरी ॥
वृथा देवकीको जिन मारो। याको सुतहै शत्रु तुम्हारो ॥
सब सुत याके हमसों लीजै। जीवदान याको प्रभु दीजै ॥
यह वाचा हम तुमसो भाखैं। चन्द्र सूर साखी दै राखैं ॥
भली बात यह सब दिन जानी। भावी विवश कंसहू मानी ॥
हरि कीन्हों चाहैं सो होई। ताहि मिटावनहार न कोई ॥
तिन्हैं सहित नृप घर फिरि आये। करि अगोट दोऊ रखवाये ॥
प्रथम पुत्र जब देवकि जायो। लै बसुदेव कंसपहँ आयो ॥

वालक देखि कंस हँसि दीनो। इन तौ कछु अपराध न कीनो ॥
अठवों गर्भ शत्रु है मेरो। सो दीजो तुम मोहिं सवेरो ॥
यह कहि अपनो पाप छमायो। तब वसुदेव हर्षको पायो ॥
ऐसे वाल फेरि जब दीन्हों। तब वसुदेव गमन हंसि कीन्हों ॥

तब ऋषि नारद कंसपहँ, लिये हस्ततल बीणा।
गुण गावत गोविन्दके, आये परमप्रवीणा ॥
उठ्यो देखिकै कंस, शीश नाइ पद वन्दिकै।
वैठाये परशंस, शुभ आसन ऋषि नारदहि ॥

समाचार जो कछु ह्वै आये। सो सब ऋषिको कंस सुनाये ॥
सुनिन्टपवचनविहँसि ऋषि बोले। तुम कत रहत शत्रुसों भोले॥
जाके भय तुम अति भय मानो। अठवों कौन सुतुम कछु जानो॥
जो वह प्रथमहि आयो होई। दैव चरित्र जान कछु कोई ॥
आठ लकीर खैंचि दिखराई। गिनतीमें सब आठौ आई ॥
यह समुझाय गये ऋषि ज्ञानी। कंसासुर उर अति भय मानी ॥
तेहि छण बालक फेरि मँगायो। लै वसुदेव तुरतही आयो ॥
लियो मूढ़ गहि करमें ताही। पटकत भयो शिलापर वाही ॥
याही विधि षट वालक मारे। मात पिता अति भये दुखारे ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी। तुम विन कासों करहि पुकारी ॥
यह सन्ताप मिटै कब भारी। वेगि लेहु प्रभु सुरति हमारी ॥
केहि विधि नाथ राखिये प्राना। करत कंस निरवंश निदाना ॥

विपति विनाशन दुखदमन, जन रञ्जन सुरराय।
अब हमको कोऊ नहीं, तुम बिन और सहाय॥
विनती प्रभुहि सनाय, मनमहँ दम्पति दुखित अति॥
होत न प्रकट जनाय, कंस असुरके त्रासते॥
भई भूमि सब अधिक दुखारी। बढ्यो पाप असुरनको भारी॥
सहि न सकी तब गोतनुधारी। शिव विरञ्चिपै जाय पुकारी॥
सकलसुरनमिलिकियोविचारा। हमते नहिं उतरै भुवि भारा॥
विनयकरिय चलि श्रीपतिपाहीं। कृपा करैं तब सब दुख जाहीं
भूमिसहित सुर सकल सिधारे। चीर सिंधु तट जाय पुकारे॥
जहं श्रीपति श्रीसहित निवासी। पुरुषोत्तमअविगति अविनासी
धेनु अग्र करि विनय सुनाई। जय जय जय त्रिभुवनके साईं॥
जय सुख कन्द सन्त हितकारी। जय जगवन्द्य भूमि भयहारी॥
जय जय असुर समूहनिकन्दन। जयजय भक्तनके उर चन्दन॥
जय जय जय प्रणतारतमोचन। दैत्यदलन सुरशोच विमोचन॥
जय जय जय प्रभु अन्तर्यामी। सुनिय विनय सचराचर स्वामी॥
करिये प्रभु सो वेगि उपाई। हरिये नाथ भूमि गरुवाई॥
धरिय मनुज तनु दनुजहति करिय धरणि उद्धार।
परशत पदपङ्कज मिटहिं, सकल भूमि अघ भार॥
पाहि पाहि भगवन्त, शरणागत वत्सल हरे।
क्षमा करहु अब कन्त, दीन दुखित जन जानि हरि॥
दीन वचन जब धेनु पुकारी। भई गिरा नभ मङ्गलकारी॥

जाहुसकलसुर वर भय त्यागो। धरिहौं नरतनु तुम हितलागो॥
प्रथम जन्म देवकि वसुदेवा। मोसन मांगिलियो करि सेवा॥
तुम सम पुत्र हमारे होई। मैं तिनको वर दीन्ह्यों सोई॥
तैसे नन्द यशोदा जानौं। दूधपियावन उनहि न मानौं॥
गर्भ देवकीके अवतरिहौं। बालचरित गोकुलमें करिहौं॥
तुमहू गोप वेष व्रज होऊ। मम सँग सुखपावो सब कोऊ॥
यहकहिसुरनविदाहरिकीन्हो। आयसुयोगशक्तिकहँ दीन्हों॥
सप्तम गर्भ देवकी केरा। तहां शेष मम अंश बसेरा॥
सो आकर्षण कै च्णा माहीं। राखौ गर्भ रोहिणी पाहीं॥
शक्ति जबहिं हरि आयसुपायो। ततच्णा ताहि वहीं पहुँचायो॥
हरि चरित्र कछु जान न कोई। जो कछु करन चहैं सो होई॥

तब कृपालु जनके सुखद, अविगति कमलाकन्त।
निज आगम देवकिउदर, दिय जनाय भगवन्त॥
तनुद्युति बढ़ी अपार, परम प्रकाशित भवन सब।
आनन मुकुर निहार, अति प्रसन्न मन देवकी॥

निजमुख मुकुर देवकी देख्यो। शरद चन्द्र पूरण सम लेख्यो॥
मिटगो तिमिरभ्रम अतिसुखपायो। जांन्यो कंस काल हरि आयो
प्रभु आगमन जानकर देवा। आये सकल जनावन सेवा॥
नभते गर्भ स्तुति सब करहीं। जय जय जय जय जय उच्चरहीं॥
जय ब्रह्मा शिव सेव्य सदाई। जय वेदान्त वेद सुरसांई॥
जय तीरथपद भवनिधिबोहित। प्रणतपाल जय दीननके हित॥

जय संकल्प सत्य गुणधामा। जय मन वाञ्छित पूरण कामा॥
जय गो द्विजहित नरतनु धारी। जय सन्तनपति गति अपहारी॥
जय कृपालु आनन्दवरूथा। वन्दत चरण सकल सुर यूथा॥
जय पुरुषारथ अमित अनूपा। महापुरुष सचराचर भूपा॥
जय अहीश नित नव गुण गावैं। तदपि नाथ गुण अन्त न पावैं
जो मुनि जन मन ध्यान न आवैं। भक्तअधीन वेद यश गावैं॥

अलख अरूप अनीह अज, प्रभु अद्वैत अनादि।
गर्भवास सो देवकी, कौतुकनिधि सर्वादि॥
किनहुँ न पायो भेव, शेष महेश गणेश विधि।
नमो नमो तिहि देव, परमविचित्र चरित्र शुभ॥

करि विनती सुर सदन सिधारे। परमानन्द मगन मन भारे॥
तब देवकिपति पास बखाने। कोमल वचन प्रेमते साने॥
हो पिय सो उपाय कछु कीजै। अबकै यह बालक रखिलीजै॥
बुधि बल छल पिय कीजे सोई। जामें कुलको नाश न होई॥
मैं मन वच अबके यह जाना। हैं मम उदर देव भगवाना॥
कहा करौं कछु यत्न न पाऊं। कौन भांति यह गर्भ दुराऊं॥
सत्य धर्म्म बरु जाय त जाऊ। पतियहि सुतहित करियउपाऊ॥
कर्म्म धर्म्म सब हरि हित भाखैं। सो हरितजि कहुँ धर्म्महि राखैं॥
सुनहु पिया अस को हितकारी। जो यह बालक लेहि उबारी॥
शिर ऊपर बैठे रखवारे। पायँन पड़े निगड़ अति भारे॥

कंस असुर अपवंश विनाशन । केहि विधिसों उबरै तियतासन ॥
ऐसो को समरथ जग पाई । जो इहि अवसर होय सहाई ॥

पट बालक वध सुरति करि, दम्पति दुखित विचार ।
अति आकुल भय कंसके, दृगन चलो बहि धार ॥
करुणासिन्धु दयाल, तात मात अति दुखित लखि ।
प्रगट भये तिहि काल, दुखमोचन लोचनसुखद ॥

योग शक्ति हरि आयसु पाई । प्रगटी नन्द भवन सो जाई ॥
ताके प्रकटतही नरनारी । भये नींदवश देह बिसारी ॥
भादवँ कारी निशि अति पावन । आठैं बुध रोहिणी सुहावन ॥
अखिल लोकपतिजनसुखदायक । आये जन्मलियो सुरनायक ॥
शीशमुकुट कल कुण्डल कानन । शरदमयङ्क सरिस शुभ आनन
चारु चरण पङ्कजदललोचन । चितवन सुखद तापत्रयमोचन ॥
कुटिल अलक भ्रुवमेचकताई । जन मन हरण परम सुखदाई ॥
पीतवसनतनु श्यामतमाला । उरश्रीवत्स चारु मणिमाला ॥
भुजा विशाल मनोहर चारी । शंख चक्र गद अम्बुज धारी ॥
अङ्ग अङ्ग सब भूषण नीके । परम विचित्र भावते जीके ॥
चरण सरोज उदित नखजोती । कमल दलन राखे जनुमोती ॥
परम प्रताप सुभग शिशुवेखा । अद्भुत रूप देवकी देखा ॥
देखि अमित छवि चकित मति, पति ढिग लिये बुलाय ॥
दम्पति परमानन्द मन, परे हर्ष सुत पाय ॥

भरे प्रेम जल नयन, अति सनेह आकुल शिथिल ।
बोले गदगद बयन, जोरि पाणि विनती करत ॥
प्रभुकिहिविधितुमगुणनबखानो । तुम मायावश तुमहिं न जानो
सहसानन जाके गुण गावैं । नेति नेति जेहि निगम बतावैं ॥
जाको भ्रूविलास अनयासा । अखिललोक उपजै अरुनासा ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावैं । कृपा करहु तब दरशन पावैं ॥
जो सर्वतेपर अज अविनासी । सो किमिकहिय उदर ममबासी ॥
परम विचित्र चरित्र तुम्हारे । मोहत हैं प्रभु मनहि हमारे ॥
तात मातके वचन सुहाये । सने प्रेम वश प्रभु मन भाये ॥
बोले तात मात सुखदानी । मधुर मनोहर अमृतबानी ॥
सुनहु मात मैं तुमहिं सुनाऊं । प्रथम जन्मकी कथा बताऊं ॥
तुम जांच्यो मोहिंकरतप भारे । तुम समान सुत होय हमारे ॥
जन हित विरद मोर श्रुति गायो । सो कैसे करि जात लजायो
ताते मैं बर तुमको दीन्हों । सो हम आय सत्य अब कीन्हों ॥
शिव ब्रह्मा सनकादि मुनि, ध्यान सकत नहिं पाय ।
सो मैं तुम्हरे प्रेम वश, दियों दरश निज आय ॥
कौतुक निधि सुर राय, करत चरित मुनिमनहरण ।
महा मोह उरभाय, दियो बहुरि पितु मात मन ॥
करहु तात अब वेग उपाई । हमहिं कंसते लेहु बचाई ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई । तहां यशोदा कन्या जाई ॥
मोहिं राखि कै यशुदा-पासा । कन्या लै आवहु अनयासा ॥

सो कन्या लै कंसहि दीजे। तात हमारो नाम न लीजे ॥
ऐसहि मातपिता समुझाई। भये तुरत शिशु यदुकुलराई ॥
देखि चरित सुनि प्रभुकी बाता। विस्मय हर्षविवशपितुमाता ॥
सुत उठाय उरसों लपटायो। प्रेम विवश लोचन जल छायो ॥
कहति देवकी पति सुनि लीजै। गमन वेगि गोकुलको कीजै ॥
जबलगि सुनहि न वह हत्यारो। मनवच क्रम न्टपको न पत्यारो
बनै नाथ उर धीरज धारे। नाहिन इतने भाग्य हमारे ॥
जो यह मुख नयनन पुट पीजे। ऐसे सुतको यश सुनि लीजे ॥
दर्शन सुखित दुखित महतारी। शोचत विकल कंस भयभारी ॥

अति अँधियारी अर्द्ध निशि, भट घेरे चहुँ ओर।
कौन भांति जैहैं दई, पायँ निगड़ अति घोर ॥
वर्षत अति जल जोर, घन गरजत चमकत चपल।
बीच यमुन अति घोर, पार कवन विधि पाइ हैं ॥

कहा करौं अब काहि पुकारौं। कौन भांति धीरज उर धारौं ॥
कंस सरोष तबहिं किन मारो। विनती करि पति वृथा उबारो ॥
ऐसो सुत बिछुरत महतारी। कौन भांति जीवै दुख भारी ॥
कृपा समुद्र भक्त सुखादनी। सुनत मातुकी आरतबानी ॥
कृपाकरी सब भ्रम भय टारे। गिरे निगड़ पायँनते भारे ॥
तब वसुदेव हरषि तिहि ठाहीं। लच्च धेनु मनस मन माहीं ॥
पुत्र गोद लै तुरत सिधाये। द्वार कपाट खुलै सब पाये ॥
रखवारे सब सोवत देखे। सपदि चले उर हरष विशेखे ॥

तबहीं मघवा वृष्टि निवारी । मन्द समीर भई श्रमहारी ॥
हरिमुख चन्द्रप्रभा तमनाशै । चणाचण तड़ित पन्थपरकाशै ॥
प्रभुपर शेष छांह फन छाई । आगे सिंह दहाड़त जाई ॥
सो वसुदेव न जानत भेवा । पहुँचे जाय यमुनतट देवा ॥

सरित देखि गम्भीर अति, मनमें शोचविचार ।
गोकुलके सम्मुख धंस्यो, प्रभु प्रताप उरधार ॥
यमुना पति पहिचानि, मन अनन्द हुलस्यो हियो ।
परसन हित पदपानि, अति प्रवाह ऊँचो उठ्यो ॥

गुल्फ जंघ कटिलों जल आयो । तबहरिकोकछुऊर्ध्व उठायो ॥
ज्यों ज्यों वसुदेव सुतहि उठावै । त्यों त्यों जल ऊपरको आवै ॥
नाक प्रयन्त नीर जब आयो । तब हरिपद अधको लटकायो ॥
परशि नीर हुंकारहि दीनो । तुरतहिं भयो गुल्फते हीनो ॥
भयो पार लैकै घनश्यामहिं । गये वसुदेव नन्दके धामहिं ॥
तहां सकल जन सोवत पाये । सुत लै यशुमति पाससिधाये ॥
कन्या तहां पुनीत निहारी । लई उठाय राखि दैत्यारी ॥
फिरि फिरि सुतको वदन निहारी । चले तुरत भय कंस विचारी
जो सम्पति निगमागम गाई । योगी जनन जानि नहिं पाई ॥
सनकादिक सरवस विधि प्राना । शङ्कर जासु धरत हैं ध्याना ॥
शारद नारदादि यश गावैं । सहसबदन हू पार न पावैं ॥
अहो विलोकहु भाग्य बड़ाई । सोई सोवत यशुमति माई ॥

वहां देवकी प्रेमवश, अति व्याकुल अकुलात।
बालक अरु वसुदेवकहँ, पठे बहुत पछितात॥
बैठत उठत अधीर, व्याकुल सोई सेजपर।
पोंछत नयनननीर, बोलि सकत नहिं कंसभय॥

मनमन सुर मनाय सनमानै। मत यह भेद दई कोउ जानै॥
रखवारे कहुँ जानि न जाहीं। मत कोउ दुष्ट मिलै मगमाहीं॥
याते अधिक शोच मोहि भारो। क्योंदुरिहै शशिमुख उजियारो
मग महँ यमुना अति गम्भीरा। केहि विधि पहुँचैंगे वहितीरा॥
गोकुल पहुँचे धौं मग माहीं। भई बेर पति आयो नाहीं॥
यहिविधि शोचविवश अकुलाई। इकक्षण कल्प समान बिहाई॥
पहुँचे वसुदेव तिहि क्षण जाई। बूझत उठी पुत्र कुशलाई॥
केहि विधि पुत्र राखिपति आये। समाचार वसुदेव सुनाये॥
कन्या दई देवकी जबहीं। द्वार कपाट गये लगि तबहीं॥
बेड़ी ह्वै गई पग ततकाला। कन्या रोय उठी तिहि काला॥
चहुं दिशि जागि परे रखवारे। तुरत कंस पहँ जाय पुकारे॥
सुनतहि उठि अति आतुर धायो। लीन्हें खड़ग तहां चलि आय

कन्यालै तब देवकी, आगे राखी आय।
दीन वचन आधीन ह्वै, कंसहि कहे सुनाय॥
अहो भ्रात यह दान, तुम हमकहँ अब दीजिये।
है कन्या जिय जान, याते भय तुमको नहीं॥

सुनत कंस भगिनीकी बानी । मृत्यु त्रासते शठ रिसमानी ॥
यामें कछू होय छल कोई । को जानै बिधना गति गोई ॥
यह विचार कन्या गहि लीनी । पटकनको मनसातिहि कीनी ॥
करते छूटिगई आकाशा । दिव्यरूप तहँ कियो प्रकाशा ॥
बोलति भई गगनते बानी । अरे मन्दमति अधम अज्ञानी ॥
ममहत्या तैं लई वृथाहीं । तेरो रिपु प्रगट्यो ब्रजमाहीं ॥
सर्प ग्रसित जिमि दादुर होई । मारयो खान चहत शठ सोई ॥
तैसे तू चह मारन मोहीं । आयो काल निकट शठ तोहीं ॥
ऐसे कहिकै स्वर्ग सिधारी । कंसहि शोच भयो सुनि भारी ॥
परयो देवकी चरणनमाहीं । मैं मारे तुव पुत्र वृथाहीं ॥
क्षमा करौ मेरे अपराधा । है विधिकी गति अलख अगाधा ॥
वसुदेवहु सन क्षमा कराई । निगड़ दिये पगते कटवाई ॥

गयो शोच व्याकुल सदन, परयो सेजपर जाय ।
जागतही बीती निशा, नींदपरी नहि ताय ॥
हरिके चरित अनूप, असुरविमोहन सुर सुखद ।
नर न परत भवकूप, सहज प्रेम गावहि सुनहि ॥

यशुदा जब सोवतते जागी । सुत मुख देखतही अनुरागी ॥
पुलक अङ्ग उर आनद भारी । देखि रही मुखशशि उजियारी ॥
गदगद कण्ठ न कछु कहि आयो । हर्षवन्त ह्वै नन्द बुलायो ॥
आवहु कन्त पुत्रमुख देखो । बड़ो भाग्य अपनो करि लेखो ॥
भये प्रसन्न आजु सब देवा । सफल भई सबहिनकी सेवा ॥

सुनत नन्द प्रिय तियकी वानी। प्रेम मगन तनु दशा भुलानी॥
हर्षित ह्वै उठि आतुर धायो। यशुमतिसुतको बदनदिखायो॥
देखतमुख उर सुखभयो जैसो। कहिनसकहिं श्रुति शारदतैसो॥
कहा कहौं तिहि छणको शोभा। मनहुं महा छवितरुके गोभा॥
आनँद मगन नन्द मनमाहीं। जानत नहिं हम को केहिठाहीं॥
रोय उठे तव नन्दके लाला। जागि परे सव ग्वालिनिग्वाला॥
जित तितते हर्षित उठि धाये। मनहुं रङ्क धन लटन आये॥

देहिं वधाई नन्दको, परें यशोदा पाव।
कहें पियारे लालको, नेक हमहिं दिखराव॥
अति हर्षित नँदराय, कह्यो वजावन सोहिलो।
नारि उठीं सव गाय, लाग्यो वजन वधावनो॥

सुरसिद्ध मुनिंदा परम अनंदा सुनि गोकुल हरि आये।
दुंदुभी वजावत मङ्गल गावत तियन सहित उठि धाये॥
विद्याधर किन्नर सुघर कण्ठवर करत गान सचुपाये।
गरजत तिहिकाला मधुर रसाला घनगति जननजनाये॥
वाजत करताला वरषत माला सुरतरुसुमन सुहाये।
सव करैं किलोलैं हर्षित वोलैं जय जय जय सुखपाये॥
नभमहँ धुनि होई सुन सव कोई भये सवन मन भाये।
सन्तन हितकारी असुर सँहारी आवत छिति सुखछाये॥
शिव ब्रह्मादिक मुनि सनकादिक परम प्रफुल्लित गाता।
गुणि गुण सव गावैं प्रभुहि सुनावैं आनँद उर न समाता॥

भए मन चीते, सब भय बीते प्रगटे दनुजनिपाता।
अति मनमहँ हर्षैं, पुनि पुनि वर्षैं, सुमन जो सुरतरु जाता॥
सुरतिय मनमाहीं, निरखि सिहाहीं यशुमतिके बड़भागा।
इनसम हम नाहीं पुण्यन माहीं कहैं सहित अनुरागा॥
योगी जेहि ध्यावैं ध्यान न पावै करि करि योग विरागा।
जो वेद न जानै नेति बखानै सो सुत ह्वै उरलागा॥॥

भरे परम आनँद सुर, उपजावत अनुराग।
बार बार वर्णन करैं, नंद यशोमति भाग॥
रहे सदन सुर भूल, गोकुलको उत्सव निरखि।
जन्मे मङ्गलमूल, ब्रजवासी हर्षित सबै।

ब्रजवासिन सबहिन सुनि पायो। नन्दमहरघर ढोटा जायो॥
परमानन्द लोग सब धाये। नन्दराय तब विप्र बुलाये॥
काढ़ि लग्न ग्रह योग सुधायो। अति विचित्र सब द्विजन सुनायो
करत वेद ध्वनि अति सुखपाई। देहिं नन्दको सकल बधाई॥
तब अस्नान महरि उठि कीन्हो। भालतिलक चन्दन लैलीन्हो॥
जातकर्म करि पितर पुजाये। भूषण बसन द्विजन पहिराये॥
गैया लच्च सवत्स सुहाई। बाढ़ी दूध नवीन मँगाई॥
सबविधि सकलअलंकृतकीन्हीं। करि सङ्कल्प द्विजनकोदीन्हीं॥
मुदित विप्र सब देहिँ अशीसा। चिरजीवहु सुत कोटि बरीसा॥
हँसि हँसि बहुरि महरि नँदराई। हित कुटुम्ब सब निकट बुलाई

वहु सुगन्धि मथि तिलक वनाये । भूषण वसन विविध पहिराये
हुते जु कुलमें वृद्ध जठेरे । हित सों पायँ परे सब केरे ॥

वन्दी मागध सूत गण, भरे भवन वहु आय ।
लै लै नाम बुलाय सब, परितोषे नँदराय ॥
मन वाञ्छित सव लेहिं, जो जाके भावै मनहिं ।
नन्द भरे रस देहिं, किये अयाचो याचकनि ॥

सुनि सुनि धाई व्रजकी नारी । लै करकमलन कञ्चन थारी ॥
मङ्गल साजसाज सव लीन्हें । सहज शृँगार सुभगतनु कीन्हें ॥
चारु चीरतनु दृग कजरारे । भालतिलक कुचशिथिलसभाँरे ॥
मांग सिंदूर तरोना कानन । रोरी रङ्ग किये कछु आनन ॥
अँगिया अँग कसे छविछाजै । विविधभांति उर हार विराजै ॥
अति आनन्द मगनमन फूलीं । अञ्चल उड़त सँभारन भूलीं ॥
निज निज मेल मिली सवगावैं । विहरत नन्द धामको आवैं ॥
इक भीतर इक आङ्गन माहीं । इक द्वारे मग पावत नाहीं ॥
सवको यशमति निकट वुलावैं । मुख उघारि सुतको दिखरावै ॥
देहिं अशीष परो शिशु पायँन । जीवहु जवलग नभ तारागन ॥
पूरण काम भयो व्रजसारो । धन्य यशोदा भाग्य तिहारो ॥
धन्यसो कोखि जहां सुत राख्यो । पुण्य तिहारो जात न भाख्यो ॥
धन्य दिवस धनि राति यह, धन्य लग्न तिथि वार ।
जहँ जायो ऐसो सुवन, थिर थाप्यो परिवार ॥

पुनि पुनि शीश नवाय, देहिं अशीश मनाय सुर ।
जियहु सुवन नँदराय, रूप अचल कुलको थुन्हो ॥
परमानन्द नन्द अनुरागे । चित्र विचित्र वस्त्र बहु माँगे ॥
सारी सुरँग कसबके लहँगे । अति चटकीले मोलन महँगे ॥
सिगरी बधू बोलि पहिराई । जो जैसी जाके मनभाई ॥
देहिं अशीश मुदित ब्रजनारी । फूलीं कमलकलीसी न्यारी ॥
एक रहसि निज निज गृह जाहीं । इक हुलसी आवैं गृह माहीं
एक कहैं एकनसों धाई । हौं यह बात भली सुनि आई ॥
महरि यशोदा ढोटा जायो । नन्दद्वार सखि बजत बधायो ॥
चलो वेगि सखि देखिय सोई । विधना चाहतही है जोई ॥
इक नाचैं इक ढोल बजावैं । एक नन्दको गारी गावैं ॥
एक साथिये द्वार बनावैं । फूलनसों सब गोकुल छावैं ॥
ध्वज पताक तोरण कलश, बंदनवार दुवार ।
गोपनके घरघर बँधे, तोरण मङ्गलचार ॥
नंद सदन सविचार, वर्णि सकै सो कौन कवि ।
लियो जहां अवतार, छबि सागर त्रिभुवनधनी ॥
ग्वाल वृंद सब सुनि उठि धाये । बाल वृंद सब निकट बुलाये
घसि बन धातु चित्र सब कीन्हें । गुञ्जा भूषित भूषण लीन्हें ॥
यद्यपि अरु भूषण तन माहीं । तदपि अहीरन गुञ्ज सुहाहीं ॥
एक कहैं एकन समुझाई । आज बनहिं कोऊ नहिं जाई ॥
गैया लेपन सहित बनावो । चित्र विचित्र वेगि लै आवो ॥

पूत नन्दके घर है जायो। भयो सबनके मनको भायो ॥
कितनो गहर करत बिन काजा। वेगि चलो सब सहित समाजा
दधि माखनके माट भराये। कछु इक हरदी रङ्ग मिलाये ॥
लिये शीशपर केतिक गावें। केतिक ताल मृदङ्ग बजावें ॥
मिलमिल निजनिज यूथनमाहीं। नंद सदन निरखत सब जाहीं
देखि नन्द अति आनँद पावें। हँसिहँसि सबको निकट बुलावें ॥
छुद्र छुद्र चरण भेंट धरि आगे। देहिं बधाई अति अनुरागे ॥

नाचत गावत मगन मन, भई सदन अति भीर।
मनु आये उत्साह सब, धरि धरि गोप शरीर ॥
देह धरे आनन्द, मनहुँ नन्द तिन मधि लसैं।
जन्मे आनँद कन्द, कहि न सकहि सुख सहसमुख ॥

इक नाचत इक गावत ठाढ़े। इक कूदत अति आनँद बाढ़े ॥
छिरकत एक दूध दधि डोलैं। एक कुलाहल करत कलोलैं ॥
मचो नन्द घर दधिको कांदौं। बरसत दूध दही जनु भादौं ॥
एक धाय एकन पै जाहीं। एकै मिलन डारि गलबाहीं ॥
एक एकके पायँन परहीं। इक दधि दूबाच्छत शिरधरहीं ॥
अति उछाह सबके मन माहीं। राजा राव गनत कछु नाहीं ॥
गोकुल मध्य देखिये जितहीं। करत गोप कौतूहल तितहीं ॥
एकै लूटि नन्दको लेहीं। एकै एकनको धन देहीं ॥
एकन हित करि नंद बुलावैं। पट भूषण तिनको पहिरावै ॥
एक कहैं हम तब कछु लेहैं। जब लालन मुख देखन देहैं ॥

एक जो एकन ते कछु लेहीं। ते निशंक एकन को देहीं॥
अति आनन्द मगन पशु पालक। नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक

गोकुलको आनंद सब, कापै वर्णो जाय।
जहां परम आनंदमय, लियो जन्म हरि आय॥
नित नव होत विलास, हरि मुकुन्दके जन्मते।
ब्रज सम्पदा सुपास, सुर भूलहिं कौतुक निरखि॥

जबते जन्म लियो हरि आई। सुख सम्पति ब्रज घर घर छाई॥
सब उदार सब परम प्रवीना। सब सुन्दर सब रोग विहीना॥
मुदित जहां तहँ सब ब्रजवासी। सब यशुमतिसुत प्रेम उपासी॥
नंद सदन वर्णों किमि जाई। शतसुरेश लखि विभ्रम छाई॥
अति प्रकाश मन्दिरके माहीं। फैलि रही हरि छबि की छाहीं॥
ग्वाल गाय गोपनकी भीरा। कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँ चीरा
भूमि बाग बन गिरि रमणीया। खग मृग सर सरिता कमनीया
विटपवेलि सब सहित फूल फल। दिशा प्रकाशित निर्मलजलथल
सुरभी सुर सुरभी सम तूला। भयो सकल ब्रज मङ्गल मूला॥
विभव भेद यह कोउ न जानैं। आदिहिते हम ऐसे मानैं॥
कृष्णजन्म आनन्द बधाई। सुर नर नाग तिहूं पुर भाई॥
ब्रजवासिनगण अधिक उछाहू। करि नहिं सकहिं सहसमुख काहू

ब्रजको सुख को कहि सकै, सुखमा बढ़ी अपार।
सुखनिधान भगवान जहँ, लियोमनुज अवतार॥

प्रकटे गोकुलचन्द, सन्त कुमुद वन मोदकर।
तम कुल असुर निकन्द, व्रज जन चारु चकोर हित॥
नित नव भोर नन्दके द्वारे। याचक जन सब होयँ सुखारे॥
गांव गांवते सुनि सुनि आवें। मन भायो सब कोऊ पावें॥
पांचदिवस इहिविधि सुखपायो। छठयोंदिवस छठौको आयो॥
मन्दिर सकल सुवास लिपायो। जहां तहां चित्रित करवायो॥
वीथी चारु सुगन्धि सिचाई। द्वारन बन्दनवार बँधाई॥
जानि कुटुम्ब मित्र हित जेते। नन्दराय न्योते सब तेते॥
ठौर ठौर बहु व्यञ्जन होई। भोजन कहँ आये सब कोई॥
गोपवधू सब बनि बनि आवैं। लालन को पहिरावनल्यावें॥
जरकसि कुरता भूषण टोपी। रत्न समेत प्रेम रँग ओपी॥
रोरी अच्छत पान मिठाई। धरि धरि कञ्चन थारिन लाई॥
गावहिं मङ्गल कोकिल बानी। नन्द भवन आवहिं हर्षानी॥
करि आदर यशुदा बैठावें। देखि श्याम घन सबसुखपावें॥
वृषभानादिक गोपवर, व्रजवासी समुदाय।
आये सब नँदराय गृह, भूषण वसन बनाय॥
अति आदर करि नन्द, शुभ्र आसन दीन्हें सबन।
सबके मन आनन्द, बजत दुन्दुभी नचत नट॥
कहूँ ग्वाल गावतहैं हेरी। कहूँ खिलावत गाय घनेरी॥
वंश प्रशंसा भाट सुनावैं। कितहूं ढाढ़ी ढाढ़िनि गावैं॥
देहिं गोपगण तिनको दाना। भूषण बसन धेनु मणि नाना॥

परजा सकल खिलौना ल्यावैं। अति अद्भुत कापै कहि आवैं॥
धरहिं नन्दके आगे आनी। राखहिं सब अतिशय सुखमानी॥
तिनहीं देहि निछावरि हरिकी। कोमल श्यामल सुन्दर बरकी॥
विश्वकर्मा पलना गढ़ि लायो। रत्न जटित शुभ रङ्ग सुहायो॥
लालनहित सो नन्द रखायो। विशुकर्मा सब वांछित पायो॥
ऐसे दिवस यामयुग आयो। तब सब गोपन नन्द जिमायो॥
छिरकि सुगन्ध पानकर दीन्हीं। तब सब गोपन भोजन कीन्हीं॥
मङ्गलमय रजनी जब आई। गायउठीं सब नारि सुहाई॥

---

## अथ कुरता-टोपी वर्णन।

कुरता टोपी पीत रँग, लालनको पहिराय।
ले उछंग पूजन छठी, बैठीं हर्षित माय॥
करि कुलको व्यवहार, करी आरती श्यामकी।
करति निछावरि नार, तन मन धन शशिमुख निरखि॥

नेग जोग सब नेगिन पायो। दियो सबनि यशुदा मनभायो॥
प्रातहि उठि लालन अन्हवायो। सुदिनशोधि पलना पहुड़ायो॥
निरखि निरखि यशुदा बलिजाई। अरुण चरण करकोमलताई॥
ब्रजवासी जीवन नंदलाला। मातुसकृत फल मदनगोपाला॥
नितनव मङ्गल होहिं सुहाये। मङ्गलनिधि जबते हरि आये॥
नंद सकृत वर्षाम्बु सोई। यशुमति सुकृत अकाश बनोई॥

तहँ घनश्याम श्याम तनु उनये । मंदहसनिदामिनिद्युतिजुनये ॥
गरजन मंद मधुर किलकारौ । व्रजजन मोरन आनन्दकारौ ॥
दादुर गुणगण गावहिं दासा । परमप्रीति मन परम हुलासा ॥
पलना पञ्चरँग मणि छविछाई । इन्द्रधनुष उपमा तिन पाई ॥
गज मुक्तनको लर लटकाई । सोइ मानों बगपांति सुहाई ॥
व्रज घर घर सुख सम्पति छाई । सोई मनहुँ भूमि हरिआई ॥

वर्षत परमानंद जल, नंद सदन जगमाहिं ।
ध्यान भूमि दृग सरित मग, जन उर सिंधु समाहिं ॥
पूरण होत सुनाहिं, यद्यपि निशि वासर भरन ।
बढ़त लहरि पुलकाहिं, हरिमुखशशि राका निरखि ॥

कंसहि वहां नींद निशि नाहीं । अति चिंता व्याकुल मनमाहीं
बढ्योनिकसि सभा उठि प्राता । मन्त्री बोलि कहहिं सबबाता ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो व्रजमाहीं । कौन भांति पहिचानों ताहीं ॥
जाते जाय वेगि वह मारो । ऐसो तुम कछु मन्त्र विचारो ॥
दिन दिन बड़ो होय अब सोई । को जानै फिरि कैसौ होई ॥
बोल्यो एक असुर सुनु राजा । क्यों डरपत इतनेके काजा ॥
मोपै एक मन्त्र सुनि लीजै । धर्म्म काज कछु होन न दीजै ॥
जप तप होम दान नहिं पावै । विप्रन साधुन असुर सतावैं ॥
जो यह देव होयगो कोऊ । सहि नहिं सकै प्रकट ह्वै सोऊ ॥
तब तेहिं असुर जाय संहारै । या विधि शत्रु तुम्हारो मारै ॥

बोलो एक बात यह नीको। औरो सुनो हमारे जीको॥
देश देशको असुर पठावो। बालक मासकके जे पावो॥

तिन सबहिनको वध करै, वचन न पावै कोय।
इनहींमें वह होयगो, मार्‍यो जैहै सोय॥
कह्यो कंस हर्षाय, कहे मन्त्र दोऊ भले।
पठवहु असुर निकाय, जायकरैं कारज सँभरि॥

या विधि असुर बिदा बहु कीन्हों। बाल वधनको आयसु दीन्हों॥
कह्यो जाय ब्रज बेगहि कोई। तहँके बालक मार सोई॥
कह्यो पूतना आयसु पाऊं। तौ यह कारज मैं करि ल्याऊं॥
सकल घोष शिशु जाय नशाऊं। जो कहिये तौ जीवत ल्याऊं॥
च्याणमें रूप मोहिनी धारौं। वशीकरण पढ़ि सबपर डारौं॥
घिसि कंकोल उरोजन लाऊं। ब्रजबासिनके बाल पियाऊं॥
तौ पूतना नाम कहवाऊं। जो नृपको कारज करि आऊं॥
तुरत कंस तेहि आयसु दीन्हों। सुनतहि वचन गवन तिन कीन्हों॥
ता दिन नन्द मधुपुरी आयो। राज अंश कछु नृपकहं ल्यायो॥
नृप दरबार ताहि पहुंचायो। समाचार बसुदेवको पायो॥
छोंड़ि वन्दिते नृपने राखे। हते मित्र सुनिकै अभिलाखे॥
मिलन गये तिनको नंदराई। उठि वसुदेव मिले हर्षाई॥

कुशल पूंछि करि परस्पर, वारम्बार सप्रीति।
बैठारे नंदराय ढिग, करिकैं आदर रीति॥

तव बोले नंदराय, सुनिय देव भावी प्रबल।
तासों कछु न बसाय, जगत भ्रमत जाके विवश॥
तुम अति कष्ट कंसते पायो। सुनि सुनि भयो बहुत पछितायो॥
आज देखिके चरण तिहारे। भये हमारे नैन सुखारे॥
तब बसुदेव कह्यौ मृदुबानी। अहो नंद तुम सत्य बखानी॥
कर्मरेख नहिं जात मिटाई। विधिकी गति कछु जात न पाई॥
सुन्यों नंद सुत भयो तुम्हारे। तब ते अति सुख भयो हमारे॥
तुमको जरा आय नियराई। बड़ी बैस विधि भयो सहाई॥
तब नँद हलधर जन्म सुनायो। प्रथमहिं तिन्हें रोहिणी जायो॥
तिनको उत्सव प्रगट न कीनों। कंस त्रास अपने उर लीनों॥
सुनि वसुदेव बहुत सुखपायो। तब ऐसे कहि वचन सुनायो॥
सुनहु नंद तुम नेके जानौ। कंस नृपति कृत नाहिं छिपानौ॥
ताते अब वे दोऊ बालक। अपने मानि करौ प्रतिपालक॥
अब तुम वेगि गोकुलहि जाहू। बालक हित पतियाहु न काहू॥

---

अथ पूतनावध लीला।

जित तित भेजे कंसके, करत असुर अनरीति।
प्रजा लोगके बालकन, ताते है अति भीति॥
गई पूतना आज, ब्रजके बालकघातिनी।
करि है कछू अकाज, वेग धाम सुधिलीजिये॥

सुनि वसुदेव वचन नंदराई। भये बिदा तुरतै भय पाई॥
निकसत शकुन अशुभ मगपायो। ताते अधिक शोच उरछायो॥
क्षिप्र चले कछु सुधि तन नाहीं। बालककी चिन्ता मनमाहीं॥
इहां पूतना ब्रजमें आई। रूप मोहनी प्रगट बनाई॥
गरल बांटि कुच सों लपटायो। ऊपर सुभग शृङ्गार बनायो॥
अतिही कपट छबीली सोहै। जो देखै ताको मन मोहै॥
इत उतह्वै नँद धामहि आई। देखि रूप यशुदा मन भाई॥
देखि रही मुख सुन्दरताई। कै यह नर कै सुरकी जाई॥
काकी वधू कौनकी बेटी। अबलौं ब्रजमें कबहुँ न भेटी॥
बिन पहिचाने आदर कीन्हों। बैठनको शुभ आसन दीन्हों॥
अहो महरि पालागन मेरो। हौं आई सुत देखन तेरो॥
हरि पलनापर मन मुसुकाई। यशुमति कछु गृहकाज सिधाई॥

तबहिं राक्षसी दुष्टमति, पलनाके ढिग जाय।
निरखि बदन मुख चूमिकै, लीन्हे उछङ्ग उठाय॥
दियो कमल मुखमाहिं, विष लपट्यो अस्तन तुरत।
पकर दुहू कर माहिं, लगे करन पय पान हरि॥

पय सँग प्राण खिंचे जब वाके। ह्वै गये अङ्ग शिथिल सब ताके॥
तब सो लगी छुड़ावन बालक। सो क्यों छुटै दुष्टकुलघालक॥
पयसँग प्राण खींचि हरि लीन्हा। पठै स्वर्ग जननीगति दीन्हा॥
परी मृतक ह्वै असुर सुनारी। योजनलौं निज तनु विस्तारी॥
यशुमति धाय देखि गुहरायो। पलनापर बालक नहिं पायो॥

त्राहि त्राहि करि ब्रजजन धाये। व्याकुल विपुल नन्द गृह आये॥
अति व्याकुल यशमति महतारी। ढूँढ़हिं श्यामहिं रोवत भारी
हरि ताकी छाती लपटाने। करत चरित जो अचरज साने॥
ढूंढ़त ढूंढ़त उर पर पाये। लै उठाय माता उर लाये॥
दुख सुख ताको कह्यो न जाई। जिमि मणि गई भुवंगन पाई॥
सुखित भई सब ब्रजकीबाला। कहति बच्यो अति नंदको लाला
नन्द यशोमति भाग बड़ेरो। कतको करवर टरी करेरी॥

आई अद्भुत रूप धरि, अति विपरीत कुमार।
कपट हेतु नहिं सहि सक्यो, तेहि मार्‍यो करतार॥
कहत यशोमति माय, पुनि पुनि सबके पायँ परि।
उबर्‍यो आजु कन्हाय, तुम पञ्चनके पुण्यते॥

बड़ो कष्ट यह सुतने पायो। आजु विधाता बहुत बचायो॥
कोउ कह भागवन्त नँदराई। कुलके देवन करी सहाई॥
कोउ कह नेक मोहिं सुत देरी। देखहुँ मुख मैं पुनि तू लेरी॥
कोउ मुख चूमि बलैया लेई। लै उछङ्ग पुनि यशुदहिं देई॥
बच्यो कान्ह सब ब्रज सुधिपाई। घर घर बजी अनन्द बधाई॥
तबहिं नन्द गोकुलमें आयो। देखि पूतनहिं अति जयपायो॥
जो बसदेव कही हो बानी। सो सब मनमें सांची जानी॥
तहँ सब ब्रजवासी जुरि आये। समाचार सब प्रकट सुनाये।
तब सुखपाय गये नँद धामहिं। देख्योजाय सुवन घनश्यामहिं॥
बदनविलोकि हर्षि उर लाये। बहुत दानदै देव मनाये॥

तब ब्रजबासी सकल बुलाये। अङ्ग पूतनाके कटवाये ।
बाहर एक ठौर सब कीन्हें। अग्नि लगाय फूंकि तब दीन्हें ॥

अति सुगन्ध ता अङ्गमें, कीन्हों अग्नि प्रकाश ।
हरि अस्पर्श प्रतापते, ब्रज सब भयो सुबाश ॥
रहे अचम्भव पाय, ब्रजबासी चकित सबै ।
चरण कमल चित लाय, नन्दसुवन महिमा सुनत ॥

हरि रोये माताकी कनियां। दूध पियाथो तब नँदरनियां ॥
पुनि पलना पौढ़ाय झुलावै। हुलरावै दुलराय मल्हावै ॥
लालनके हित नींद बुलावै। मधुरे स्वर जोई सोई गावै ॥
री लालनको आव निदरिया। तोहि बुलावत श्याम सुंदरिया ॥
जो करि कपट लालको आवै। तो अबकोलों विधि विनशावै ॥
अहो देवता या कुलकेरे। मैं पूजिहों कमलपद तेरे ॥
बेगि बड़ो करदे यह बालक। ब्रज जन प्राण पूतनाघालक ॥
द्वितियाके शशि लौं शिशुबाढ़ै। आंवां लो अरि उर नित डाढ़ै ॥
सोवै मेरो बाल कन्हाई। माता सुखको बलि बलि जाई ॥
सोवत देखि मौन गहि रहई। जागत देखि बहुरि कछु कहई ॥
अँग फरकाय अलप मुसुकाने। ता छबिको उपमा को जाने ॥
बार बार शिशु वदन निहारैं। यशुमति अपनो भाग्य विचारैं ॥

हुलरावत गावत मधुर, हरिके बाल विनोद ।
जो सुख सुर मुनिको अगम, सो सुखलेत यशोद ॥

कबहूँ लेत उछङ्ग, उर लगाय चूमत मुखहिं।
निरखि मनोहर अङ्ग, कबहुँ झुलावत पालने॥
दर्शनको नित सुर मुनि आवैं। बाल विनोद निरखि सुख पावैं॥
कहैं परस्पर सुर नर नारी। हरिके अद्भुत चरित निहारी॥
अलखअगोचर अज अविनासी। पुरुष पुरातन विश्व निवासी॥
जाको भेद न शिव मुनि जानैं। ब्रह्मा पढ़ि पढ़ि वेद बखानै॥
सो हलरावत नँदकी घरणी। पूरण भई पुरातन करणी॥
मन अभिलाष बढ़ावत भारी। हुलसत हँसत देत किलकारी॥
वर्षि प्रसून हर्षि मनमाहीं। धन्य धन्य कहि व्रज घर जाहीं॥
नित नव कौतुक होहिं अकासा। व्रजवासिन मन अमित हुलासा
यशुदा नित नव लाड़ लड़ावैं निरखि निरखि व्रज जन सुखपावैं
नित नव मङ्गल नँदके धामा। नित नव रूप श्याम अभिरामा॥
भक्तवछल भक्तन हितकारी। भक्तन हित नाना तनुधारी॥
भजत सन्त यह हृदय विचारी। जन व्रजवासी हैं बलिहारी॥
जब हरि मारी पूतना, सुनि डरप्यो नृप कंस।
प्रगट भयो व्रज शत्रु मम, यह जानी निससंस॥
बसो तासु उरमाहिं, ताही क्षणते अचल हरि।
भूलत इक क्षण नाहिं, शत्रु भाव लाग्यो भजन॥

---

अथ कागासुरवध लीला॥

कागासुर नृप निकट बुलायो। ताहि मतो सब कहि समुझायो

आवहु वेगि नन्द सुत मारी । करियहु कारज बुद्धि विचारी ॥
आयसु धरि शिर गर्व बढ़ायो । काग रूप तिहि असर बनायो ॥
वेगवन्त उठि गोकुल आयो । प्रेरित काल अवधि नियरायो ।
बैठ्यो नन्द धामपर आई । पलना पौढ़े बाल कन्हाई ॥
ताको आवतही हरि जान्यो । काग न होय असुर पहिचान्यो ॥
यशुदा हरिको सोवत जानी । कछु गृह कारजमें लपटानी ॥
तबहिं असुर पलनापर आयो । चाहत हरिको चोंच चलायो ।
कण्ठ पकरि हरिकरसों लीन्हों । चोंच मरोरि फेंकि तिहि दीन्ह
परयो जाय नृपपास उतान्यो । यह ब्रजवासी काहु न जान्यो ॥
तुरत कंस तिहि बूझन धायो । बीते याम बोल तब आयो ॥
सुनहु कंस वह बाल न होई । है अवतार महाबल कोई ॥

एक हाथसों पकरि मोहिं, फेंकि दियो तुम पास ।
ह्वै है तुम्हरो काल वह, मैं कीन्हों विश्वास ॥
अति डरप्यो महिपाल, कागासरके वचनसुनि ।
बढ़सों गयो विशाल, जम्यो जु उरमें शोच तरु ॥

सभा मध्य सब असुर सुनाई । बार बार शिरधुनि पछिताई ।
ब्रजमें उपज्यो मेरो काला । ताको अबहीं ते यह हाला ॥
दनुज सुता पूतना पठाई । ताको छुकछण मांफ नशाई ॥
कागासुरके ऐसे हाला । सोतो दिन दिन होत विशाला ॥
है कोउ बीर जु ताहि नशावै । मम कारज करि आप बचावै ॥

## शकटासुर वध लीला।

ऐसो कौन कहौं मैं जासों अब कै जाय भिरै जो तासों॥
असुरनको ये न्टपति सुनायो। शकटासुर मन गर्व बढ़ायो॥
उठि क पान न्टपति सों मांगे। कहा काम यह मेरे आगे॥
तव प्रताप तेहि पलमें मारौं। कहौतौ सब व्रजको संहारौं॥
कंस हर्सि तेहि वीरा दीन्हों। शूर सराहि बिदा तेहि कीन्हों॥
यहां श्याम पलना पर खेलैं। क रगहि पद अँगुठा मुख मेलैं॥
अपने मन यह करत विचारा। इह मम पद सन्तन आधारा॥

ये पदपङ्कज राखि उर, निरख शम्भु सुजान।
इनको रस मन मधुप करि, करत निरन्तर पान॥
पुनि इन पदको ध्यान, करत ब्रह्मसनकादि मुनि।
लच्छी अति सुख मान, उरते जक्ष टारत नहीं॥

इन पदपङ्कज रस अनुरागा। मगन सकल सुरनर मुनिनागा॥
ऐसो धौं का रस इन माहीं। सोतो मोहिं विदित कछु नाहीं॥
मोको यह रस दुर्लभ भारी। देखौं धौं मैं ताहि विचारी॥
ताते पद अँगुठा मुख मेलै। लैलै स्वाद मगन रस खेलै॥
त अन्तर शकटासुर आयो। पवन रूप काहु न लखि पायो॥
भारे शकट नन्द घर केरे। पलनाके ढिग हते घनेरे॥
तिनमें सो शठ आय समान्यो। नन्द सुवन तबहीं यह जान्यो॥
ताको हरि यक लात चलाई। गिरयो शकट तब अति हहराई॥

दनुज निधन काहू नहिं जान्यो । गिरग्रोशकट यह सबहिन मान्यो
सुनत शब्द सब व्याकुल धाये । नन्द आदि सब जुरि तहँ आये
यशुमति दौरि श्यामको लयऊ । सबके मन अतिविस्मय भयऊ ॥
कारण कहा कहैं नर नारी । गिरग्रो शकट आपुहिते भारी ॥

पलना ढिग खेलत हुते, कछुक गोपके बाल ।
तिनन कह्यो डारग्रो शकट, पलनाते नँदलाल ॥
सो नहिं करी प्रतीति, काहू बालककी कही ।
यह तौ कछु विपरीति, भई कुशल अति श्यामकी ॥

यशुमति अति मन मन पछितांई । भये आज कुलदेव सहाई ॥
बार बार उरसों सुत लाई । निरखि नंद पुनि पुनि बलि जाई ॥
मेरे निधनीके धन छैया । लगै मोहिं तेरी रोग बलैया ।
ऐसे वहु विधि लाड़ लड़ाये । पय पियाय पलना पौढ़ाये ॥
मन्द मन्द कर ठोंकि सुवावैं । कछु इक मधुर मधुर सुर गावैं ॥
सोवत श्याम शुभग सुंदर बर चौंकि चौंकि शिशु दशा प्रगट कर
लिये मातु छतियां लपटाई । जनु फणि मणि उर मांझ दुराई ॥
प्रात निरखिसुख आनँद कीन्हों । चूमि वदन सुतको पय दीन्हों
कोमल घाम अजिर जब आयो । तब सुत पलना पर पौढायो ॥
आप मथन दधि भवन सिधारी । नंदहि सुतके ढिग बैठारी ॥
निरखि नंद सुत आनँद भारी । कमल वदन छवि रहे निहारी ॥
चुटकी देदे सुतहिं खिलावैं । निरखिनिरखि मुख अति सुखपाव

किलकि उठे लखि तात मुख, कर पद दृग अनुराय ।
झपट झटकि उलटे परे, सुखनिधि त्रिभुवनराय ॥
सो छवि कहिय न जाय, निरखि नंद टेरत महरि ।
आप न सकत उठाय, अति कोमल मम सकुच मन ॥
नंदहि टेरत सुनि नँदरानी । तजी तुरत दधि मथन मथानी ॥
जाने महरि गिरे सुखदाई । ताते अति आतुर उठि धाई ॥
नंदहि देखि हँसतिहैं पासा । तब धीरज धरि कियो हुलासा ॥
उलटि परयो सुत देख्यो आई । उठि न सकत करसे जलगाई ॥
सो छवि निरखि मातु सुखपायो । तुरत मुदित उलटाय उठायो
उर लगाय मुख चुम्बन लागी । कहत आज मैं भई सभागी ॥
पेटकरियँन हरि उलटन लागे । डेढ़ मासके भये सभागे ॥
चिरजीवहु मेरे कुँवर कन्हाई । आज करों मैं अनँद बधाई ॥
नँदरानी व्रज नारि बुलाई । यह सुनि सब आनँद कर धाई ॥
हरिको निरखि परम सुख पायो । हरषित सबहिन मङ्गल गायो ॥
बांटो घर घर पान मिठाई । नंदसुवन व्रज जन सुखदाई ॥
धनि धनि व्रजको बाल सभागी । हरिके बाल चरित अनुरागी ॥
जननी अति आनँद भरी, निरखत श्यामल गात ।
जैसे निधनी पाय धन, मुदित रहत दिन रात ॥
धनि धनि व्रजको बास, धन्य यशोदा धन्य नँद ।
धनि व्रजवासी दास, जिनको मन या रस मगन ॥

---

## अथ तृणावर्त्तवधलीला ॥

धनि धनि ब्रजकी भूमि सुहाई । बाल चरित्त लीला सुखदाई ॥
यशुदा भाग्य न जात बखाने । त्रिभुवन पतिको सुतकर माने ॥
हरिको गोद लिये पयप्यावै । विविध भांति करि लाड़ लड़ावै ॥
कबहूँ हरि मुखसों मुख लावै । कबहूं हर्षित कण्ठ लगावै ॥
मो निधनीको धन सुत नान्हा । खेलत हँसत रहो नित कान्हा ॥
कबधों मधुर वचन कछु कैहैं । कब जननी कहि मोहि बुलैहैं ॥
कब नन्दहि कहि बाबा बोलैं । खेलत इत उत आंगन डोलैं ॥
कबधों तनक तनक कछु खैहैं । अपने कर लै मुखमें नैहैं ॥
कब विधि यह अभिलाष पुरावै । मनहीं मन कुलदेव मनावै ॥
किलकत हरि जननीकी कनियां । करत चरित्र भाव सुखदनियां
तृणावर्त्त हरि आवत जाना । पठयो कंस सहित अभिमाना ॥
भयो गरुव जननी अरगायो । सहि न सकी तब भुव बैठायो ॥

आप लगी गृहकाज कछु, राखि अजिर गोपाल ।
अति प्रचण्ड बौंड़र उठ्यों, गोकुलपुर तिहिकाल ॥
बातचक्र मिस आय, तृणावर्त्त पापी असुर ।
हरिको लियो उठाय, अन्धधुन्ध गोकुल कियो ॥

हरिको लैकै गयो अकासा । धूरि धुन्ध गोकुल चहुँपासा ॥
जहां तहां नर नारि छिपाने । प्रलय काल सम करि सब माने ॥
यशुमति दौरि अजिरमें आई । तहां न पायो कुवँर कन्हाई ॥
नद नद करि शोर लगायो । तेरो सुत अँध वायु उड़ायो ॥

ढोरो वेगि गुहार लगावो। ब्रजवासिनको टेरि बुलावो॥
अति व्याकुल खोजत नँदरानी जिततित फिरत भुवन बिलखानी
तृणावर्त्तको हरि यों कीन्हों। ग्रीव लिपट तिहि नीचे लीन्हों॥
कठिन शिलापर ताहि गिरायो। ताके ऊपर आपु न आयो॥
चूर चूर करि ताके गाता। कीन्हों भुक्ति मुक्तिके दाता॥
धूरि धुन्ध सब तुरत विनासी। खोजत हरिहिं विकल ब्रजवासी॥
ब्रजवनितन उपवनमें पाये। लिये उठाय कण्ठ लपटाये॥
अति आतुर यशुमति पै लाई। ह्वै गइ घर घर अनँद बधाई॥

लिये धायके मायने, छतियां रही लगाय।
नंद निरखि सुख पायके, मनसी बहुतिकगाय॥
बार बार ब्रजनारि, देहिं बसन भूषण मगन।
जित तित कहैं विचारि, नयो जन्म हरिको भयो॥

उबरे श्याम महरि बडभागी। देखहु धौं कहुँ चोट न लागी॥
रोग लेउँ बलि जाउँ कन्हाई। हरि हैं ब्रजके जीवन माई॥
भलो न प्रकृति यशोदा तेरी। इकलो हरिको छांड़त हेरी॥
घरको काज इनहुं ते प्यारो। बौरी अजहूं सुरति सँभारो॥
बहुत बच्यौरी आज कन्हाई। भयो पुरबलो पुण्य सहाई॥
यशुमति सबसों कहत लजानी। अब मैं सीख तिहारी मानी॥
मोहिं कहा हो यह सुखमाई। मैं तो रंक परी निधि पाई॥
अब मैं अपनो लाल चितैहों। एकौ क्षण काहू न पत्यैहों॥

ऐसे कहि सब सों नँदरानी । कीन्हीं विदा सकल सनमानी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै । देखि देखि सुख नयन सिरावै ॥
अति कोमल श्यामल तनु देखी । बार बार पछितात विशेखी ॥
कैसे बच्यो जाउँ बलिहारी । तृणावर्त्तको घात निवारी ॥

ना जानो किहि पुण्यते, को करि लेत सहाय ।
कियो काम सब पूतना, तृणावर्त्त यह आय ॥
मातु दुखित जिय जानि, कृपासिन्धु वत्सल भगत ।
बाल चरित सुखकानि, करन लगे सुन्दर परम ॥

खेलत मातु उछङ्ग कन्हाई । करत बाललीला सुखदाई ॥
जननी बेसर लटकत देखी । चितवत ताहि बिसारि निमेखी ॥
ताहि गहनको पाणि चलायो । तब जननी कछु वदन उचायो ॥
नहिं पहुँचे तब अति उकताई । सो छवि निरखि मातु बलिजाई
जननी वदन निकटकरि लीन्हों तबहरिहुलसिकिलकिहँसिदीन्हों
विहँसत चमकि परीं दुइदतियां । जनुयुग बिज्जु बीजकीपतियां
प्रमुदित निरखि यशोदा फूली । प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली ॥
बाहरते तब नंद बुलाये । परमानंद सहित उठि धाये ॥
हो पति सफल करो दृग आई । देखहु सुत मुख दतुलि सुहाई ॥
हर्षित हरिहिं गोद नँद लीन्हों । निरखितात मुखहरिहँसिदीन्हों
देखत वदन नयन सियराने । दूध दांत किधौं छविके दाने ॥
अहो महरि बड़ भाग्य तुम्हारे । सफल फले मन काज हमारे ॥

कछु दिन घट षटमासके, भये श्याम सुखदान।
अन्नपराशनके दिवस, बूझहु विप्र विहान॥
सुनि पुलके नँदराय, भये पराशन योग हरि।
प्रेम रह्यो उर छाय, सो सुख कापै जाय कहि॥

---

### अथ अन्नप्राशन लीला॥

प्रातकाल उठि विप्र बुलायो। राशि बूझि शुभ दिवस धारयो॥
यशुमति सो दिन आछो पायो। सखिन बोलि शुभ गान करायो॥
युवति महरको गारी गावैं। और महरिको नाम सुनावैं॥
मणि कञ्चनको थार मँगायो। भांति भांतिके बासन आयो॥
नंदघरनि ब्रजवधू बुलाई। जे सब अपनी जाति सुहाई॥
कोउ जिवनार कोऊ पकवाना। षटरसके बहु करत विधाना॥
बहु प्रकारके व्यञ्जन ठाने। जिनके स्वाद न जायँ बखाने॥
अति उज्वल कोमल शुभ नीके। कियोविविध विधि मनहुँअमीके॥
यशुमति नन्दहि बोलि कह्यो तब। बोलौ महर जाति अपनी सब॥
आय गये नंद सकल महर घर। ल्याये बोलि सबन आदरकर॥
बैठारे सब आनि अथाई। भीतर गये आप नन्दराई॥
यशुमति हरिको उबटि न्हवाये। सुन्दर पट भूषण पहिराये॥
तन झँगुली शिर चौतनी, कर चूरा दुहु पांय।
बार बार मुख निरखिकै, यशुमति लेति बलाय॥

ल बैठे नंदराय, धरो जानि शुभ गोद हरि।
लीन्हे सदन बुलाय, गोप सकल आनंदभरे॥

बैठे सकल गोपगण आई। अति आनंद मगन नंदराई॥
कनकथार भरि खीर धराई। मिसिरी घृत मधु डारि मिलाई॥
लगे नंद हरि मुख जुठरावन। गोप वधू लागीं सब गावन॥
आंगन बाजी विविध बधाई। शंख निशान भेरि सहनाई॥
षटरसके व्यञ्जन हैं जेते। हरिके अधर छुवाये तेते॥
तनक अधर जल पोंछि सुहाये। हरिको यशुमति पै पहुँचाये॥
हर्षवन्त युवती सचुपायो। लै लै मुख चुम्बति उर लायो॥
विप्रन वोलि दच्छिणा दीन्हीं। नाना वस्तु निछावरि कीन्हीं॥
गोपन संग महरि नंदराई। बैठे पनवारे पर जाई॥
अति रुचि सबहिन भोजन कीन्हों। बीरा बहुरि सबनको दीन्हों॥
गोप वधू सब महरि जिमाई। दैके पान सुगंधि सिंचाई॥
इहि विधि सुखबिलसैं ब्रजबासी। निरखैं श्यामसुभगशुभराशी॥

सुर सिहाहिं ललचाहिं मुनि, लखिब्रजजनके भाग।
धन्यधन्य कहि सुमन झरि, करहिं सहित अनुराग॥
नित नव मङ्गलचार, नित नव लीला श्यामकी।
को कवि वरणै पार, शेष न पावैं पार जिहि॥

नेति नेति जिनको श्रुति गावैं। तिनको ब्रजजन गोद खिलावैं॥
जो सुख नंद भवनके माहीं। तीनि लोक महं सो कहुँ नाहीं॥
नित्य नयो सुख यशुमति पावैं। नये नये नित लाड़ लड़ावैं॥

नयन ओट हरि करत न कैसे। जुगवत रहै फणिक मणि जैसे॥
निदरति निमिष होत पल ओटा। निरखतही सुख पावति ढोटा॥
तनक कपोल अधर अरुणारे। तनक तनक कच घूंघरवारे॥
कुटिल भृकुटि की रेख सुहाई। मसिबिन्दुक तापर सुखदाई॥
नयन नासिका भाल विशाला। कलबल बोलन परम रसाला॥
अल्पदशन चिबु कंदर ग्रीवा। तनघनश्याम मृदुलछबिसींवा॥
मातु निरखि नयनन सुखपावैं। प्रेम विवशमति गतिबिसरावैं
निरखिरूप यशुमति अनुरागै। कहत कहूं मम दीठि न लागै॥
तब अंचरातर लेत छिपाई। डारत वारि लोन अरु राई॥

कबहुँ झुलावति पालने, कबहुं खिलावति गोद।
कबहुं सुवावति पलंगपर, यशुदा सहित विनोद॥
नित प्रति व्रजकी वाम, आवैं यशुमतिके सदन।
मुदित निरखि घनश्याम, लै लै गोद खिलावहीं॥

इहि विधि विहरत बाल कन्हाई। कछु दिनमें सन्तन सुखदाई॥
लागे चलन घुटुरुवनि आंगन। लगे मातुसों माखन मांगन॥
खेलत मणिमय आंगन माहीं। देखि रहत लखि निज परछाहीं
कबहुँ तात कहि पकरन धावैं। जानुपाणि बिचरत छवि पावैं
कबहूं किलकि तात सुख पेखैं। कबहूं हँसि जननी तन देखैं॥
कबहुं बुलाव लेत नंदरानी। कबहुँ जननि ढिग आवत धाई॥
कबहूं किलकि अनत उठि भाजैं। गिरत परत घुटुवन छविछाजैं
कबहुँक जात जहां बलभाई। खेलत गोप बाल समुदाई॥

कबहुं कहत कछु खण्डित बाता। सुनत होत सुख पूरण गाता
कहन चहत कछु प्रगट न आवै। माखन मांगत सैन बतावै॥
मात समक्ष मथनीते लेई। कछु खवाय कछु कर धर देई॥
खेलत खात कान्ह मणिअंगना। डुलडुल करत घुटुरुवन रिङ्गना॥

कर चूरा पग पैंजनी, तन रञ्जित रज पीत।
उर हरि नख कटि किङ्किणी, मुख मण्डित नवनीत॥
होत चकित चितवाय, बजत पैंजनी शब्द सुनि।
सुर मुनि रहत लुभाय, बालदशाके चरित लखि॥

खेलत आंगन बालगोविंदा। तात मात उर करत अनंदा॥
चलत पाणि पदकी परछाहीं। प्रतिबिम्बत मणि आंगनमाहीं॥
मनहुँ सुभग छबि महितट पाई। जल भाजन जल लेत भराई॥
किधौं जानि पद कोमलतासन। धरि धरि देतकमलकेआसन॥
निरखि सुभगशोभासुखदनियां। लिये हरषि सादर नँद कनियां
नीलजलजतनु सुंदरश्यामा। सुभग अङ्ग सब छबिके धामा॥
अरुण तरुण नखज्योति सुहाई। कोमल कमल चरणसुखदाई॥
रुनु झुनु पैंजनि पायँन बाजैं। मनसिज यन्त्र सुनत सुरलाजैं॥
कटि किङ्किणी जटित खनकारी। पीत झङ्गुलिया सुभग सवांरी
कर कमलनि चूरा छबि छाजै। रुचिर बाहु भूषण अति राजै॥
कठला हार जो अङ्ग सुहाए। बिच बिच पदिक प्रवाल पुहाए॥
चारु चिबुकद्युति वरणि न जाई। गोलकपोल परम छबि छाई

अरुण अधर मधि दशन द्युति, प्रकट हँसनमें होति।
मानहु सुंदरता सदन, रूप रत्नकी ज्योति॥
मधुर तोतरे बैन, श्रवण सुखद मुनिमनहरण।
सुनत होत चित चैन, समुझत कछुक बनै नहीं॥
नाशा सुभग कमलदल लोचन। भाल विशाल तिलक गोरोचन
भृकुटिनिकटमसिबिन्दुकलाग्यो। मनुअलिशावकसोय न जाग्यो
लाल झँगुली शीश सुहाई। विविधि रङ्ग मणिगण लटकाई॥
बाल दशाके कच घुंघुरारे। छिटकि रहे कछु घूमघुमारे॥
मञ्जुल तारनकी चपलाई। बाल दशाकी ललित सुहाई॥
चन्द्र वदन सुखसदन कन्हाई। निरखि नंद आनँद अधिकाई॥
वदन चूमि उरसों लपटायो। सो सुख कापै जात बतायो॥
व्रजयुवती सब चितवत ठाढ़ीं। मनहुँ चित्रपुतरी लिखि काढ़ीं॥
प्रेम मगन नँद सुवन निहारैं। गृहकारजकी सुरति बिसारैं॥
व्रजयुवती हरिसों मन लावैं। नँद सुवन सबके मन भावैं॥
व्रजवासी प्रभु सबके नायक। प्रेम विवश जनके सुखदायक॥
बाल चरित लखि सुर सुख पावै। योग दशा सनकादि भुलावै
करत बाललीला ललित, परम पुनीत उदार।
सुन्दर श्याम सुजान हरि, सन्तनके आधार॥
कापै वरणो जाय, बाल चरित नँदलालको।
कह्यन सकहिं न गाय, शेष कोटि शारद सहस॥

## नामकरण लीला।

इकदिन श्रीवसुदेव विज्ञानी। पठये बोलि गर्गमुनि ज्ञानी॥
करि पूजा विधिवत बैठायो। युग पदकमल शीश तब नायो॥
बहुरि कह्यो सुनिये ऋषिराई। जबते भयो कंस दुखदाई॥
तबते गोकुल नँद अवासा। जाय रोहिणी कियो निवासा॥
जाके गर्भ जन्म सुत लीन्हों। कंस त्रासते प्रगट न कीन्हों॥
नाम करण ताको अबताई। भयो नाहि तुम बिना गुसाई॥
करिकै कृपा तहां प्रभु जइये। ताको नाम राखिकै अइये॥
सुनि बसुदेव वचन सुखपायो। हर्ष सहित मुनि गोकुल आयो॥
नँदराय ऋषि आगम जान्यो। अपनो बड़ो भाग्य करि मान्यो॥
चरण धोय चरणोदक लीन्हों। अर्घ्यासन अति हितकरि दीन्ह॥
बड़ी कृपा कीन्हीं ऋषिराजू। मो सम धन्य आन नहिं आजू॥
अति पुनीत भोजन बनवायो। विविध भांति ऋषिराय जिमायो॥

बहुरि महरि ऋषिरायसों, कह्यो जोरि करदोय।
किहि कारज प्रभु आगमन, कहौ कृपा करि सोय॥

तब बोले ऋषिराज, पठयो है वसुदेव मोहिं।
नामकरणके काज, सुभग रोहिणी सुवनको॥

सुनत नंद अति भये सुखारे। लै आये कनियां दोउ बारे॥
मुनि चरणन मेले दोउ भाई। दई असीष मुदित ऋषिराई॥
हरिकी छबि अति आनंदकारी। देखिरहे मुनि पलक बिसारी॥
प्रथम नंद बलहाथ दिखायो। जन्मदिवस मुनि पास सुनायो॥

देखि गर्ग उठि कियो विचारा । है यह शिशु सब जगत अधारा
अतिशुभ लक्षण बलको धामा । धरयो नाम तिनको बलरामा ॥
बहुरि नंद चरणन शिर नायो । कह्यो कि ऋषिमम भागन आयो
तुम सर्ब्बज्ञ अहो मुनि नाथा । देखिय यहि बालकको हाथा ॥
मुनिवर देखत चिन्ह भुलान्यो । प्रेममगन सब तनुपुलकान्यो ॥
पुनि पुनि हरिको बदन निहारो । बोल्यो मुनिवर सुरत सँभारो
धन्य नंद धनि महरि यशोदा । धनि धनि धन्य खिलावत गोदा
सुनहु नंद मैं सत्य बखानों । इनको तुम सुत करि मत जानों ॥

रूपरेख जाके नहीं, अलख अनादि अनूप ।
सो भक्तन हित अवतरयो, निज इच्छा अनुरूप ॥
इनते बड़ो न कोय, ये कर्त्ता सब जगतके ।
जो ये करैं सो होय, तुम सों हम सांची कहैं ॥

इनके नाम अमित जगमाहीं । तदपि कहौं मैं कछु तुम पाहीं ॥
इन कबहू वसुदेवके धामा । लियो जन्म सुंदर वर श्यामा ॥
ताते वासुदेव इक नामा । सो सुमिरत पावहि नर कामा ॥
कहिहैं कृष्ण बहुरि जगमाहीं । जाके सुमिरत पाप नशाहीं ॥
अरु ये जैसे कर्मनि करिहैं । तैसे नाम जगत विस्तरि हैं ॥
दुष्टदलन सन्तन सुखदाई । भूमिभार हरिहैं दोउ भाई ॥
तुम कबहू तप करि यह मांगा । तुमहि खिलावैं अति अनुरागा ॥
ताते सुत करि तुम इन पायो । मत जानौं इनको निज जायो ॥
ये अति सुखदायक व्रजकेरे । करिहैं अति आनंद घनेरे ॥

सुनि ऋषिमुख हरियश सुख राशी। आनंदे सब ब्रजके बाशी॥
सुनत नंद यशुमति सुख पायो। मुनिचरणनको शशीनवायो॥
बहुत भेंट लै आगे राखी। अस्तुति बहुत भांतिसों भाखी॥

बिदा भये ऋषिराज तब, नंदभाग्य बड़ भाखि।
चले मधुपुरीको हरषि, हरि मूरति उर राखि॥
कह्यो हर्षि ऋषिराय, सब वृत्तान्त वसुदेवको।
सुनत बहुत सुख पाय, ऋषिहि पूजि कीन्हे बिदा॥

यशुमति समुझि गर्गकी बानी। आपनिअति बड़भागिनि जानी
हरिको लै उरसों लपटायो। प्रमुदित अस्तनपान करायो॥
श्याम राम मुख निरखत मोदा। मातु रोहिणी और यशोदा॥
रवंकि रवंकि हरि बैठत गोदा। भावत हरिके बाल बिनोदा॥
हरिको गोदलिये दुलरावैं। पुनिपुनि तुतरे बोल बुलावैं॥
कबहुंक गावत दै करतारी। कबहुँ सिखावत चलन मुरारी॥
तनक तनक भुज टेक उठावैं। क्रम क्रम ठाढ़े होन सिखावैं॥
पुनि गहि भुज पद द्वैक चलावें। लरखरात लखि मनसुख पावैं
मनहीं मन यों विधिहि मनावै। कबधौं अपने पायँन धावै॥
कबहुँक छोढ़ि देत अंगनैया। खेलत मुदित तहां दोउ भैया॥
गौरश्याम बलराम कन्हैया। संगहि संग फिरत दोउ भैया॥
जिमि बछराके पाछे गैया। ब्रजबासी जन लेत बलैया॥

धवलधूरि धूसरित तनु, बाल विभूषण अंग।
अंजनरञ्जित दृग चपल, निरखत लजत अनंग॥

विहरत आनंद कंद, मणिमय आंगन नंदके ।
यदुकुल कैरवचंद, दहन दनुजकुल वन अनल ॥
कबहूं ठाढ़ि होति गहि मैया । कबहूं डोलत चलत कन्हैया ॥
कुलही चित्रविचित्र झँगुलिया । दमकिउठतदुइ ललितदँतुलिया
सुनि मनहरण मंजुमसि बिंदा । सुखद चारु लोचन अरबिंदा ॥
कलकल वचन तोतरे बोलै । गहि मणिखंभ डगन डगडोलै ॥
निरखनझुकि झांकत प्रतिबिम्बै । देत परम सुख पित अरुअम्बै
मथति जहां दधि नंदकीरानी । होत खरे तहँ टेकि मथानी ॥
मात तनिक दधि देति खवाई । लेत प्रीति सों सो सुखदाई ॥
छीर समुद्र जासु रजधानी । तनक दही सों तिन रुचि मानी ॥
तनिकसोवदनतनिकसीदँतियां तनिकसोअधरतनिकसीवतियां
तनकवदन दधि तनककपोलन तनक हँसनमनहरण अमोलन ॥
तनक तनक कर तनक माखन । तनकअँगुरिया तनकै चाखन ॥
तनक तनक भुज चरणसुहावे । तनक स्वरूप मनोज लजाये ॥
तनक विलोकन जासुको, सकल भुवन विस्तार ।
तनक सुने यश होतहै, तनक सिन्धु संसार ॥
तनक रहत नहिं पाप, तनक नाम जाके लिये ।
मिटत सकल भवताप, तनक कृपा जापै कराहि ॥

---

अथ वरसगांठलीला ॥

वरसगांठ लालनकी आई । द्विषट मासके भये कन्हाई ॥

फूली फिरत यशोमति माई। घरघरते सब बधू बुलाई॥
प्रमुदित मङ्गल गान करायो। आनँद उमगे तूर बजायो॥
आंगन सकल सुगंधि लिपायो। रचि रचि मोतिन चौक पुरायो॥
फूले फिरत नन्द सुख भारी। लिये गोपगण सकल हँकारी॥
द्वारन बन्दनवार बँधाये। ध्वजपताक रचि विविध बनाये॥
पान फूल फल डार रसाला। हरदि दूब दधि अक्षत माला॥
मङ्गल द्रव्य सकल मँगवाई। बहु मेवा बहु भांति मिठाई॥
यशुमति कान्ह उबटि अन्हवाये। अङ्ग पोंछि भूषण पहिराये॥
टोपी जरकसि पीत झँगुलिया। दमकत द्वै द्वै चार दँतुलिया॥
कठुला कण्ठ नखावघ नीको। किये भाल केशरको टीको॥
लटकत ललित ललाट लटूरी। वरणि न जाय बदन छबिरूरी॥

नैन आंजि भृकुटी निकट, कियो मातु मसि बिंद।
करि शृङ्गार हरि मुख निरखि, चूम्यो मुख अरबिंद।
लिये गोद सुखकंद, नँद बोलि यशुमति कह्यो॥
बोलहु भूसुर वृंद, लग्न घरी आवत चली॥

काहेको अब गहरु लगावत। विप्र बेगि काहे न बुलावत॥
नन्द क्षिप्र वर विप्र बुलाये। पद पखारि आसन बैठाये॥
लै उछंग लालन नंदराई। बैठे हर्षि चौकपर जाई॥
वेद मन्त्र विधिसहित पढ़ावत। बरसगांठि सुखसहितजुड़ावत॥
व्रजनारी सब बनि बनि आवें। मङ्गल तिलक श्यामको लावें॥
गावत मङ्गल कोकिलबैनी। हरि दर्शन प्यासी मृगनैनी॥

## अथ ब्राह्मण लीला।

चलत लागे पैं जनिके चायन। पुनि पुनि हर्षितलखिलखिपायन
विविध ग्वाल बालन सँगलीने। डगमगात डोलत रंगभीने॥
कबहू दौरि द्वार लों जाहीं। कबहू भजि आवैं घर मांहीं॥
ब्राह्मण एक नन्दके आयो। महाभाग हरिभक्त सुहायो॥
गोपनको सो पूज्य कहायो। पुत्रजन्म सुनिकै उठि धायो॥
यशुमति देखि आनन्द बढ़ायो। आदर करि भीतर बैठायो॥
पायँ धोय जल शीश चढ़ायो। पाक करनको भवन लिपायो॥
अहो विप्र विनती सुनि लीजै। जो भावै सो भोजन कीजै॥
धेनु दुहाय दूध लै आई। पांड़े रुचि करि खीर बनाई॥
घृत मिष्ठान्न खीर मिश्रित कर। कृष्ण भोग हित थार परसिधर॥
वेद मन्त्र पढ़िकै हरि ध्यायो। नयन मूँदि कै ध्यान लगायो॥
नैन उघारि विप्र जब देख्यो। श्यामहि आगे जेंवत पेख्यो॥

अहो यशोदा आपने, सुतकृत देखौ आय।
सिद्धपाक सब आयकै, डारयो कान्ह जुठाय॥
महरि जोरि युगपान, विनय करी द्विजराज सन।
बालक अति अज्ञान, बहुरि पाक विधिकीजिये॥

बहुरि दूध मिष्ठान्न मँगायो। ब्राह्मण फिरकर पाक बनायो॥
जबहीं ध्यान धरयो मन लाई। तबहीं लागे खान कन्हाई॥
ऐसेहि विप्र न जेंवन पावै। बार बार हरि छुइ आवै॥
तब यशुमति हरि सों रिस भाई। कतहि अचकरी करत कन्हाई

मैं इच्छाकरि विप्र जिमाऊं । बार बार भोजन वाऊं ।
यह अपने ठाकुरहि जिमावै । ताको तू गोपाल खिआवै ॥
मैया स्वहिं जिनि दोष लगावे । बार बार यह मोहिं बुलावै ॥
नयन मूंदि कर जोरि मनावै । बहुत भांति करि विनय सुनावै
लैलै नाम कहत प्रभु ऐये । खीर खांड़ यह भोग लगैये ॥
तब मैं रहि न सकों उठि धाऊं । याको दीन्हों भोजन पाऊं ॥
प्रेम सहित जब मोहिं बुलावै । तब नहिं रहत मोहिं बनि आवै
सुनत गूढ मृदुहरिके बयना । खुलि गये विप्र हृदयके नयना ॥

धनि धनि गोकुल नन्द धनि, धन्य यशोदा माय ।
धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, जहँ प्रगटे हरि आय ॥
सफल जन्म प्रभु आज, प्रगटभयो सबसु तफल ।
दीनबन्धु ब्रजराज, दियो दरश मोहिं कृपा करि ॥

बार बार कहि नँदके आंगन । लोटत द्विज आनन्द मगन मन ॥
मैं अपराध कियो बिन जाने । को जानैं किहि भेष समाने ॥
भक्तहेतु वश रहत सदाई । यहै नाथ तुम्हरी बड़याई ॥
जेजे शरण तुम्हारी आये । तेते भये पुनीत सुहाये ॥
पतित उधारन यश विस्तारा । अघ जारन इक नाम तुम्हारा ॥
देह धरत गो द्विज हित लागी । पायो दरश भयो बड़िभागी ॥
हितको चितको मानन हारे । सबके जियको जानन हारे ॥
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी । दीनदयालु कृपालु मुरारी
हँसत श्यास यशुमति ढिग ठाढे । प्रेम मगन मन आनँद बाढे ॥

निज जन जानि कृपा अतिकीन्हीं। प्रेम भक्ति हरि ताको दीन्हीं।
प्रेम मगन द्विज वारहि बारा। कहि जै जै जै नन्दकुमारा।
पुनि पुनि पुलकत देत अशीशा। विदा भयो घरको द्विज ईशा॥
देखि चरित यशुमति चकित, परी विप्रके पांय।
दिये रत्न वहु दक्षिणा, चले हर्षि द्विजराय॥
यशुमति लिये उठाय, गोद खिलावत कान्हको।
चितै वदन बलिजाय, आनँद निधि सुखको सदन॥

---

## अथ चन्द्रप्रस्ताव लीला।

शोभा मेरे हरिपै सोहै। मैं बलि बलि पटतरको कोहै॥
मेरो श्याम मनोहर जीवन। विहँसि श्याम लागे पयपीवन॥
ठाढ़ीं अजिर यशोदा रानी। गोदी लिये श्याम सुखदानी॥
उदय भयो शशिशरद रसुहावन। लागी सुतको मातु दिखावन॥
देखहु श्याम चन्द्र यह आवत। अति शीतल दृग ताप नशावत
चितै रहे हरि इकटक ताही। करते निकट बुलावत वाही॥
मैया यह मीठो कै खारो। देखत लगत मोहि यह प्यारो॥
देहि मँगाय निकट मैं लहौं। लागी भूख चन्द्र मैं खैहौं॥
देहि वेगि मैं वहुत भुखानो। मांगत हो मांगत विरुझानो॥
यशुमति हँसत करत पछितायो। काहे को मैं चन्द्र दिखायो॥
रोवत है हरि विनहीं जाने। अबधौं कैसे करिकै माने॥
विवध भांति करि हरिहि भुलावै। आन बताव आन दिखावै॥

कहति यशोदा कौन विधि,समझाऊं अबकान्ह।
भूलि दिखायो चन्द्रमैं, ताहि कहत हरि खान॥
अनहोनी क्यों होय, तात सुनो यह बात कहुँ।
याहि खात नहिं कोय, चन्द्रखिलौना जगतको॥

यहै देत नित माखन मोको। चण चण तात देत सो तोको॥
जो तुम श्याम चन्द्रको खैहो। बहुरो फिर माखन कहँ पैहो॥
देखत रहो खिलौना चन्दा। हठ नहिंकीजै बाल गोविन्दा॥
मधु मेवा पकवान मिठाई। जो भावै सो लेहु कन्हाई॥
पालागौं हठ अधिक न कीजै। मैं बलि रिसहीरिस तनुछीजै॥
खसि खसि कान्ह परत कनियांते। दे शशि कहत नंदरनियांते।
यशुमति कहति कहा धौं कीजै। मांगत चन्द्र कहांते दीज॥
तब यशुमति इक जलपटलीन्हों। करमें लै तिहिऊँचाकीन्हों॥
ऐसे कहि श्यामहिं बँहकावै। आव चन्द्र तोहिं लाल बुलावै॥
याहीमें तू तनु धरि आवै। तोहिं देखि लालन सुख पावै॥
हाथ लिये तोहिं खेलत रहिहै। नेक नहीं धरणीपर धरि है॥
जलपुट आनि धरणिपर राख्यो। गहिआन्योशशिजननीभाख्यो॥

लेहु लाल यह चन्द्र मैं, लीन्हों निकट बुलाय।
रोवे इतनेके लिये, तेरी श्याम बलाय॥
देखहु श्याम निहारि, या भाजनमें निकट शशि।
करी इती तुम आरि, जा कारण सुन्दर सुवन॥

ताहि देखि मुसक्याय मनोहर। बार बार डारत दोऊ कर॥
चन्दा पकरत जलके माहीं। आवत कछु हाथमें नाहीं॥
तब जलपुटके नीचे देखै। तहां चन्द्र प्रतिबिंब न पेखै॥
देखत हंसीं सकल ब्रजनारी। मगन बाल छवि लखि महतारी
तबहि श्याम कछु हँसि मुसकाने। बहुरो मातासों विरुझाने॥
ल्यौंगो री मा चन्दा ल्यौंगो। वाही अपने हाथ गहौंगो॥
यह तौ कलमलात जलमाहीं। मेरे करमें आवत नाहीं॥
बाहर निकट देखियत वाही। कहौ तौ मैं गहि ल्यावौं ताही॥
कहति यशोमति सुनहु कन्हाई। तव मुख लखि सकुचत उड़राई
तुम तिहि पकरन चहत गुपाला। ताते शशि भजि गयो पताला
अब तुमते शशि डरपत भारी। कहत अहो हरि शरण तुम्हारी॥
विरुझाने सोये दै तारी। लिय लगाय छतियां महतारी॥

लै पौढ़ाये सेजपर, हरिको यसुमति माय।
अति विरुझाने आज हरि, यह कहि कहि पछिताय॥
करसों ठोकि सुवाय, मधुरेसुर गावत कछुक।
उठि बैठे अतुराय, चटपटाय हरि चौंकिकै॥

---

अथ पुरातन कथा लीला॥

पौढो लाल कहत महतारी। कहौं कथा इक श्रवणनप्यारी॥
हर्ष यह सुनि मन बनवारी। पौढ़ि गये हँसि देत हुँकारी॥
नगर एक रमणीय सुहावन। नाम अवध अति सुन्दर पावन॥

बड़े महल तहँ अगम अटारी। सुन्दर विशद चारु गच ढारी॥
बहुत गली पुर बीच सुहाई। रहैं सदा सब सुगंधि सिंचाई॥
भाँति भाँति बहु हाट बजारू। अतिशय ँगार जनु विश्व शृँगारू॥
तहां नृपति दशरथ रजधानी। तिनके नारि तीन पटरानी॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा। तिन जन्मे सुत चार पवित्रा॥
राम भरत लक्ष्मण रिपुहन्ता। चारो अति सुन्दर गुणवन्ता॥
तिनमें राम एक व्रतधारी। अति सुन्दर जनके हितकारी॥
विश्वामित्र एक ऋषिराई। तिनहिं सतावें निशिचर आई॥
तिन नृप सों द्वै सुत लिय मांगी। अपनी रक्षाके हित लागी॥

राम लषण ऋषि लै गये, दनुज हते तिन जाय।
ऋषि दीन्हीं विद्या बहुत, तिनको अति सुख पाय॥
तहां जनक इक भूप, धनुषयज्ञ ताने रच्यो।
कन्या तासु अनूप, जुरे तहां भूपति अमित॥

ऋषि लैगये कुवँर तहँ दोऊ। जनकराय सनमाने सोऊ॥
धनुष तोरि भूपन सुख मारो। राम विवाही जनककुमारी॥
चारहु कुवंर व्याहि तहं आये। भये अवधपुर अनँद बधाये॥
रामहि देन लगे नृप राजू। सज्यो सकल अभिषेक समाजू॥
ताही समय कैकयी रानी। चेरीकी मतिसों बौरानी॥
वचन मांगि राजासों लीन्हों। बनको वास रामको दीन्हों॥
पुनि पितु वचन धर्म्म हितकारी। नारीसहित भये बनचारी॥
तिन्हैं चलत भ्राता सँग लाग्यो। उनके जात पिता तनु त्याग्यो

चित्रकूट गये भरत मिलन जब। दै पदपांवरि कृपा करी तब॥
युवती हेत कपट मृग मारा। राजिव लोचन राम उदारा॥
रावण हरण कियो तब नारी। सुनत श्यामघन नींद बिसारी॥
चौंकि कह्यो लक्ष्मण धनु देहू। देखि भयो यशुदहि संदेहू॥

संदेह जननी मन भयो हरि चौंकि धौं काहे परयो।
कहुँ दीठि खेलतमें लगी धौं स्वप्नमें कान्हर डरयो॥
बहु भांति देव मनाय पढ़ि पढ़ि मन्त्र दोष निवारही।
लै पियति पानी वारि पुनि पुनि राइ लोन उतारही॥
सांझहिते विरुझाय हरि, करी चन्दहित आरि।
झिझकि उठ्यो धौं ताहि ते, रह्यो सुरत उर धारि॥
बड़भागी नँदनारि, महिमा वेद न कहि सकैं।
हरिको बदन निहारि, बिसरावत त्रय ताप दुख॥

---

## अथ कर्णछेदन लीला।

प्रात नंद उठि हरिपै आये। मुखछवि देखनको अतुराये॥
निशिके द्वंद्व नैन अति आरत। हरुवै करि मुखते पट टारत॥
स्वच्छ सेजते बदन प्रकाश्यो। द्वंद्व तिमिर नयननको नाश्यो॥
मनहुं मथनपै निधि उहराई। फेण फोरि कै दई दिखाई॥
धाये व्रज जन चतुर चकोरा। इकटक रहे बदन शशि ओरा॥
फूली कुमुदिनिसी महतारी। कहत उठहु सुत मैं बलिहारी॥
माखन रोटी अरु मधु मेवा। जो भावै सो करहु कलेवा॥

सद माखन मिसरी तब आनी। कछु खवाय धोयो मुखपानी॥
देखि वदन छबि महरि सिहानी। कहति नन्दसों यशुमतिरानी
कनछेदन अब हरिको कीजै। कुण्डल सहित देखि मुखलीजै॥
बोलि विप्र शुभ दिवस गनायो। जातिकुटँब सब न्यौति बुलायो
कुल व्यवहार कियो सब राजा। विविध भांति बहु बाजन बाजा

बाजी बधाई विविध आंगन नारिमङ्गल गावहीं।
सुरनिरखि अतिशय हर्षि सुमननि वर्षि गोकुल छावहीं॥
करि प्रथम मुंडन शग्रामको पुनि कर्णवेधन विधि लई॥
धरिकै सुपारी पान ऊपर बहुरि गुर लीभे दई॥
हंसत सुरगण सहित विधि हरि मात उर अति धुकधुकी
अतिहि कोमल श्रवण वेधत सकत नहिं सन्मखतकी॥
भरि सींक रोचन देत श्रवणनि निकट करि अति चातुरी
द्वै दुर मंगाये कनकके कह कहौं छेदन आतुरी॥
देखि रोवत जननि लीन्हें विहंसि तबहीं झांकि अली।
हंसत नंद सब युवति गावत झमकि भीतर लै चली॥
कहत सुर वनिता परस्पर धन्य धनि ब्रजगामिनी॥
नहिं न इनको किंकिरी सम हम सकल सुरकामिनी॥
करत निछावरि ब्रजवधू, धन मणि भूषण चीर।
सकल अशीशत नंद सुत, जहँ तहँ याचक भीर॥
पहिरावत नँदराय, ब्रज युवतिन भूषण-बसन।
आनँद उर न समाय, मनहुँ उमग चहुं दिशि चल्यो॥

तिनहीं नवमुद मंगल ताके । मङ्गल मूरति हरि सुत जाके ॥
जेहि विधि तात मात सुखपावैं । सुखनिधान सोइ चरित उपाव
जाको भेद वेद नहिं पावें । नंदभवन सो काल छिदावें ॥
निज भक्तन हित नरतनु धारो । करत बाललीला सुखकारी ॥
हरि अपने रंगनि कछु गावें । नद भवन भूषण मन भावें ॥
तनक तनक चरणनसों नाचें । मन २ रीझि विविध विधि राचें ॥
कबहूं भुज उठाय गुहरावे । धौरी धूमरि गाय बुलावें ॥
कबहूं माखन लै मुख नावें । कबहुं खंभ प्रतिबिम्ब खवावें ॥
माखन मांगि दुहू कर लेई । एक भाग प्रतिबिंबहि देई ॥
तासों कहत लेत क्यों नाहीं । डारि देत काहे महिमाहीं ॥
दुरि देखत यशुमति महतारी । उर आनन्द करति अति भारी ॥

हरषि जननि मुख चूमिकै, लीन्हों गोद उठाय ॥
परमानन्द रस मगन मन, सो सुख किमि कहि जाय ॥
कौतुक निधि भगवान, करत चरित नित नित नये ।
सुन्दर श्याम सुजान, ब्रजवासिनके प्रेमवश ॥

---

अथ माटीखान लीला ॥

खेलत श्याम धामके द्वारे । सोहत ब्रज लरिका सगवारे ॥
अति अज्ञान सवनिमति भोरी । सबको प्रीति श्याम सँग जोरी
एक वैस सब परम सुहाये । करत बाल लीला सुखपाये ॥
गावत हँसत देत किलकारी । लखि लखि सुखपावतमहतारी ॥

निरखि रूप सब व्रजजन मोहै। कोटि काम नहिं पटतरसोहै॥
तनु पुलकितअति गदगदबानी निरखिमनहिमन महरि सिहानी
तबहिं श्याम घन माटी खाई। यसुमति देखि सांटि लै धाई॥
पकरी भुजा श्यामको जाई। कहति काह यह करत कन्हाई॥
उगिलहु वेगि वदनते माटी। नाहीं तौ मारत हौं सांटी॥
सबदिन झुठवतहै सब ग्वालन। मोसों अब कह कहिहौ लालन॥
तब मोहन कीन्हीं लँगराई। कहति कि मैं माटी नहिं खाई॥
झूठहि मोको लोग लगावै। माटी मोको नेक न भावै॥

झूंठ कहत तोसोंसबै, माटी मोहिं न सुहाय।
नहिं मानै जो मात तू, दिखराऊं मुंह बाय॥
दीन्हीं मुखहि उघारि, नयन मूंदि माता निकट॥
देखि चकित नन्दनारि, तनुकी सुरत रही नहीं॥

दिखरायो त्रिभुवन मुखमाहीं। नभशशि रवि तारा इकठाहीं॥
सर सागर सरिता गिरि कानन। सुर सुरनायकशिव चतुरानन॥
सकल लोक लोकप यम काला। महिमण्डलसब अगजग जाला
देखि चरित यशुमति अकुलानी। करते सांटि गिरतिनहिंजानी
बदन मूंदि तब दृग हरि खोले। डर समेत माता सों बोले॥
मैया मैं माटी नहिं खाई। यसुमति चकित रही अरगाई॥
कहत नन्दसों यसुदारानी। हरिकी कथा न जात बखानी॥
माटीके मिस करि मुख बायो। तीन लोक तामहँ दिखरायो॥
स्वर्ग पताल धरणि बन बागा। सुर नर असुर बिपुल खगनागा॥

अपर सृष्टि कहि जाति सुनाहीं। देखो सकल वदनके माहीं॥
मोको परत सांच सवजानो। जो कछु कह्यो गर्ग ऋषि वानो॥
चकित नंद सुनि अचरज वानो। मन मन करत विचार विनानो

नन्द कहत सुन वावरी, हरि अति कोमल गात।
अचरज तेरी वातको, पुनि पाछे पछितात॥
अचरज तेरी वात, को जानै देख्यो कहा।
कुशल रहो दोउ भ्रात, राम श्याम खेलत हँसत॥

कहति श्याम सों यशमति मैया। मैं तेरी वलिहारि कन्हैया॥
मैं अजान रिस वोच न जानो। वृथा श्याम तुमपर रिसियानों॥
जरहु हाथ जिन सांटि उठाई। वरहु आंखि जिन दीठि दिखाई
मधु मेवा दधि माखन मांठो। खात लाल तुम काहे माटो॥
सिगरोइ दूध पियो तुमन्यारे। वलको वांटि न देहु पियारे॥
कहत नंद सों यशुमति मैया। दुहो लालको ठाढ़ो गैया।
कजरीको पय पियो गुपाला। जो तेरि चोटो वढ़ैं विशाला॥
सव लरिकनमें तो तनु माहीं। वेगि वैस वल औ अधिकाहीं॥
मात वचन सुनिके अनुरागे। ज्यों त्यों करि पय पीवन लागे॥
खिन पीवत खिनखिन कचटोवै। देखिदेखि मुख हँसति यशोवै॥
मया कव वाढ़गी चाटो। यह तो है अवहीं लौं छोटो॥
तू जो कहतहि वललों ह्वै है। छोड़त गुहत गोड़लों जैहै॥

कितो वार भइ पय पियत, चोटो वड़ो न होहि।
कहि कहि झूठो वात नित, दूध पियावत मोहि॥

सुनि सुनि भोरी बात, सुन्दर श्याम सुजानकी॥
यशुमति मन न अघात, हँसि लीन्हें उर लाय हरि॥
भोरहिं महर यमुनतट धाये। दरशन करि अतिही सुखपाये॥

---

शालग्रामलीला।

करि अस्नान नन्द घर आये। पूजा हित यमुनाजल लाये॥
तुलसीदल अरु कमल पुनीता। प्रभु निमित्त आने अति प्रीता॥
पांय धोय प्रभु मन्दिर आये। करी दण्डवत प्रेम बढ़ाये॥
अस्थल लीपि पात्र सब धोये। पूजाके सब साज सँजोये॥
छाप तिलक सब अंग सवांरे। प्रभु पूजा विधि करन सम्हारे॥
कुवँर कान्ह खेलत ते आये। देखत पूजा विधि चित लाये॥
विधिवत देव नन्द अन्हवाये। चन्दन तुलसी फूल चढ़ाये॥
भूषण वसन अलंकृत कीन्हें। धूपदीप अति हित कहिं दीन्हें॥
पट अन्तर दै भोग लगायो। आरति चरणनि शीश नवायो॥
तबहीं श्याम विहँसि उठि बोले। कहत तातसों वचन अमोले
बाबा तुम जो भोग लगायो। सोतो देव कछू नहिं खायो॥
सुनि हरि वचन श्रवण सुखदाई। चितै रहे मुख हँसि नंदराई॥

कहत नन्द सुख पायकै, यों नहि कहिये तात।
देवनको कर जोरिये, कुशल रहो जिहि गात॥
हँसत श्याम सुखदानि, नंद स्वरूप न जानहीं।
रह्यो तिनहि सुत मानि, करत ब्रह्म लीला सगुण॥

देखत जननि तहां दुरि ठाढी। मगन प्रेमरस आनँद बाढी ॥
बैठे नन्द समाधि लगाई। तब यह लीला रची कन्हाई ॥
शालग्राम मेलि मुख माहीं। बैठि रहे हरि बोलत नाहीं ॥
ध्यान विसर्जन करि नँद जागे। शालग्राम न देखे आगे ॥
खोजत चकित चित्त नँदराई। इष्टदेव किन लिये चुराई ॥
इत उत खोजत पावत नाहीं। भयो बड़ो अचरज मनमाहीं ॥
बिहँसत हरिके मुखमें जाने। देखत महरि महर मुसकाने ॥
सुनहु तात जननी बलि जाई। उगिलहु शालग्राम कन्हाई ॥
मुखते तबहि काढि व्रजनाथा। दियो देवता नन्दके हाथा ॥
हरिके चरित कहत नहि आवै। बालविनोद मोद उपजावैं ॥
लखिलखि मातपितापुलकाहीं। देखि देखि सुर सिद्ध भुलाहीं ॥
धन्य धन्य सब व्रजके बासी। बिहरत जहां ब्रह्म अविनासी ॥

परते पर परब्रह्म जो, निर्गुण अलख अनूप।
सो व्रजभक्तन प्रेम वश, विहरत बालक रूप ॥
प्रेम मगन पितु मात, निशि दिन जात न जानहीं ॥
क्योंहूं मन न अघात, सुनत वचन देखत दरश ॥

---

## अथ अन्हवावनलीला।

यशुमतिशग्रामहिकह्योन्हवावन। सुनतहि मचलि परे मनभावन
उवटनलै आगे गहि बाहीं। लोटि गये हरि मानत नाहीं ॥
तब यशमति बहुभांति दुलारे। मैं बलि उठहु न्हवाऊं प्यारे ॥

उबटन पाछे धरयो चुराई। फुसलावत सुत श्याम कन्हाई ॥
मैं बलि ऐसी आरि न कीजे। जो चाहौ सो मोपै लीजै ॥
कहत लाल रोवै दुख पावै। ऐसो को जो तोहिं खिझावै ॥
अति रिसते मैं बलि तनु छीजै। सुन्दर कोमल अंग पसीजै ॥
बरजतही बरजत बिरुझाने। करिकरिक्रोध मनहि अकुलाने ॥
धरत धरत धरणी पर लोटे। गहि माताके चीर निझोटे ॥
गहि गहि अंगके भूषण तोरैं। दधि माखनके भाजन फोरैं ॥
धरयो तप्त जल जननी पासै। मानत नाहिं ताहि लखि त्रासै ॥
महर बांह धरिकै तब आने। जबहौं तेल उबटने साने ॥

तब दुचती करि मातुको, गिरत परत गये भाज।
नेक निकट लागे नहीं, मनमोहन ब्रजराज ॥
तब पुचकारे मात, सास भेद कहि कहि वचन ॥
मैं बलि आवहु तात, नहिं आवहु तो जानिहौ ॥

तुम मेरी रिसको हरि जानौं। मोको नीकी विधि पहिचानौं ॥
जो नहिं आवहु मदनगोपाला। आज तुम्हैं तौ बांधौं लाला ॥
तबहिं नन्द उतते चलि आये। कहतहरिहिकिनअतिहिखिझाये
लै कनियां उरसों लपटाये। बदन चूमि यशुमतिपहँ लाये ॥
कत खिझवत मोहनहिं अधानी। लै हिय लाय लिये नन्दरानी ॥
क्योहुँ यत्न करिकै जब पायो। तब उबटन हरिके अंग लायो ॥
पुनि तातो जल न्हान समोयो। दियो न्हवाय बदन शशिधोयो ॥
सरस बसन लैकै तनु पोछयो। बहुरो बदन सरोज अंगोछयो ॥

अंजन दोऊ दृग भरि दीन्हो । भ्रू पर चारु चखोडा कीन्हो ॥
सब अंगके भूषण मँगवाये । क्रम क्रम लालनको पहिराये ॥
ऐसी रिस नहिं कीजै कान्हा । अब कछु खाउँ जाउँ बलि नान्हा
तव तुतरात कह्यो काहेरी । जो मोको भावै सो देरी ॥

कहत जननि या वचनपर, भैया बलि बलि जाय ।
जोइ जोइ भावै लालको, सोइ सोइ ल्यावै माय ॥
किये अमित पकवान, मैं अपने सुतके लिये ।
सो सब कहौं बखान, जो भावै सो लीजिये ॥

सद माखन अरु दही सजायो । तुम्हरे हित पय औटि जमायो ॥
खोवा औट्यो मधुर मलाई । तापर मिसरी पीसि मिलाई ।
अरुकसार अति सरस सवाँरी । तामहिं सोंठि मिरच रुचिकारी
खीर बरा करिकै दधि बोरे । मानहुँ चंद्र अमी मधु खोरे ॥
खुरमा और जलेबी बोरी । जेहि जेंवत रुचि होत न थोरी ॥
अरु लडुआ बहुभांति सवांरे । जे मुख मेलत कोमल प्यारे ॥
अरु गूझा बहु पूरिन पूरे । अति सुवास उज्ज्वल अति रूरे ॥
पापर घेवर धीउ चभोरे । मिश्रि पीस तल ऊपर बोरे ॥
सुन्दर मालपुआ मधु साने । तप्त तुरत करि रोहिणि आने ॥
अतिहीं सुन्दर सरस अँदरसे । घृत दधि मधुमिलिस्वादनसरसे ॥
सरस सवांरी दाल मसूरी । अरु कीन्हीं सीरा घन पूरी ॥
पूरी सुनिकै हिय हरि हरषे । तब जेंवनपर मन करि करषे ॥

सुनत यशोदा तुरतही, लै आई हरषाय ।
बलदाऊको टेरिकै, लीन्हें नन्द बुलाय ॥
षटरसके परकार, जे वरणे यशुदा प्रथम ।
परसि धरे सब थार, जेंवत हरि बलवीर दोउ ॥

जेंवत एक थार दोउ बीरा । हरषि श्याम रुचि राख्यो सीरा ॥
तब शीतल जल लियो मँगाई । भरि झारी यशुमति लैआई ॥
जल अँचवावत नैन जुड़ाने । दोऊ हर्षि हर्षि मुसकाने ॥
तब जननी हँसि चुरू भराये । तनक तनक कछु मुख पखराये ॥
रचि रचि उजरे पान खवाये । अतिही अधर अरुण ह्वै आये ॥
ठाढे तहां सकल ब्रजदासा । लागि रहे जूठनिकी आसा ॥
तनक तनक कछु मोहन खायो । उबरयो सो ब्रजदासन पायो ॥
सखावृन्द प्रिय द्वार पुकारे । खेलन आवहु कान्ह पियारे ॥
तृषित दरश रस चातकदासा । हरि अब झरिनवघनछबिपासा ॥
विनय बचन सुनि हर्ष कृपाला । चले मनोहर चाल रसाला ॥
लघु लघु ललितचरण करताला । कमलनैन उर बाहु बिशाला ॥
चन्द्रबदन तनु छबि घनश्यामा । अंग अंग भूषण अभिरामा ॥

निरखत छबि नँदलालकी, थकित सकल सुरवृन्द ।
निश्चल चखन चकोर जनु, तकत शरदको चन्द ॥
अति आनन्द उमङ्ग, मिले सखनकों जाय हरि ।
क्रीडत कोटि अनङ्ग, क्रीडत बालक वृन्द सब ॥

खेलन दूरि गये कहुँ कान्हा। सखन संग धावतहैं नान्हा॥
बहुत अबेर भई घनश्यामहि। खेलतते आये नहिं धामहि॥
नंदहि तात मातु मोहिं कानन। योंहीं सुनत सुहात जु आनन॥
मन अवसेर करत महतारी। पलक ओट रहिसकत नन्यारी॥
देखत द्वार गलीमें ठाढी। सुतमुखदरश लालसा बाढी॥
ततछण हरि खेलनते आये। दौरि मातु लै कण्ठ लगाये॥
खेलन दूरि जात किन कान्हा। मैं बलि तुम अबहीं अति नान्हा
आज एक बन हाऊ आयो। तुम नहि आनत मैं सुनि पायो॥
इक लरिका भजि आयो तबहीं। सो वह मोसों कहिगयोजबहीं॥
वहतो पकरि लेतहै तिनको। लरिका करि जानतहै जिनको॥
चलहु भाजि चलिये निज धामहि यह सुनि टेरि लिये बलरामहि
कनियां करि लै आई धामहिं। बड़भागिनियशुमतिसुतश्यामहिं

रूपरेख जाके नहीं, विधि हर अन्त न पाय।
हाऊसों डरपाय तिहिं, यशुमति राखत ख्वाय॥
भाववश्य भगवान, भावइ करिकै पाइये॥
भक्तनके सुखदान, तिहि तैसे जैसे भजे॥

व्रज बीथिन खेलत मनमोहन। हलधर सुबल सुदामा गोहन॥
और गोप बालक बहु बारे। एक वयस सब हरिके प्यारे॥
बाल विनोद मोदमन दीने। नानारंग करत रस भीने॥
लागे हाथ मारि सब भाजैं। धावत धरत होड़ कर बाजैं॥
बरजत बलि हरि तू मति दौरे। लगिहै चोट गोड़ कैहु तोरे॥

तब हरि कह्यो दौरि मैं जानों। मेरो गात बहुत बलवानो॥
है श्रीदामा जोड़ हमारो। तासों मारि भजौं मैं तारो॥
बोलि उठ्यो तबही श्रीदामा। तारो मारि भजो तुम श्यामा॥
तबहीं श्याम भजे दै तारो। धरयो जाय श्रीदाम हँकारो॥
तब हरि कह्यो वदों नहि तोहीं। ठाढो भयो छुयो तब मोहीं॥
ऐसे कहि हरि ताहि रिसाने। कहतसखासबश्याम खिझाने॥
तबतो कह्यो दौर मैं जानौं। हारे श्याम बुरो अब मानौं॥

बोलि उठे बलराम तब, इनके माय न बाप।
हारि जीति जाने नहीं, लरिकन लावत पाप॥
ये हैं तनुके श्याम, झूठहिं झगरत सखन सँग।
रूठि चले हरि धाम, लखि उदास पूंछति जननि॥

मैं बलि क्यों उदास हरि आयो। कौने मेरो लाल खिझायो॥
मैया मोहिं दाऊ दुख दीन्हों। मोसों कहत मोलको लीन्हों॥
कहा करौं या रिसके मारे। मैं नहिं खेलन जात दुआरे॥
पुनिपुनि कहत कौन तेरिमाता। को तेरो तात कौन तेरो भ्राता
गोरे नन्द यशोदा गोरी। तुमतो कारे आये चोरी॥
मोसों कहत देवकी जाये। लै वसुदेव यहां निशि आये॥
मोल कछू वसुदेवहिं दीन्हों। ताके पलटे तुमको लीन्हों॥
ऐसे कहि कहि मोहिं खिझावै। अरु सब लरिकन यहै सिखावै
मोहींको तू मारन धावै। दाउहि कबहुँ न खीझि डरावै॥
रोष सहित सुनि बतियां भोरी। बढ़त मातु उर प्रीति न थोरी॥

सुनहु श्याम बलराम चवाई। झूठहि तोहि खिझावत जाई॥
मोहि गोधनकी सौंह कन्हैया। मेरो सुत तू मैं तेरि मैया॥

पाछे ठाढ़े सुनत सब, नन्द श्यामकी बात॥
लीन्हे गोद उठाय हँसि, सुन्दर श्यामलगात॥
व्रजको धरियो नन्द, सुनि मन हर्षे श्याम तब।
लीला नटवर चन्द, करत चरित जन मन हरन॥

---

अथ भोजन करन लीला।

भोजनके समये नँदराई। करे सुरति बलराम कन्हाई॥
कह्यो बुलाय लेहु दोउ भैया। मोसँग जेवैं आय कन्हैया॥
खेलत बहुत बेर भइ आजा। उन बिन भोजन कौने काजा॥
यशमति सुनत चली अतुराई। व्रज घर घर टेरत दोउ भाई॥
कहत बोलि लेवहु कोउ श्यामहिं। खेलत हैं धौं काके धामहिं॥
जेंवन सिद्ध सिरात धरोई। उन बिन नन्द न जेंवत सोई॥
ऐसे जननीके सुनि बैना। आये खेलतते सुखदैना॥
चलहु तात मैया बलि जाई। जेंवन को बैठे नँदराई॥
परथो घार धरयो मग हेरत। मैं तबहीं सों तुमको टेरत॥
दौरि चलहु आगे गोपाला। छांड़ि देहु गति मन्दमराला॥
चलहु वेगि दौरौ दोउ भाई। सो राजा जो आगे जाई॥
जो जैहै पहिले बल भाई। तौ हँसिहैं तोहि ग्वाल कन्हाई॥

आये दौरे श्याम तब, तुरतहि पायँ पखार।
बैठे जेंवन नन्दके, सँग दोऊ सुकुमार॥
कछु डारत कछु खात, कछु लपटानो पाणि दुहुँ।
सुभग सांवरे गात, बालकेलि रसवश खरे॥
बड़ो कौर मेलत मुख भीतर। आय गई तब मिरचि दशनतर॥
तीक्ष्ण लगी नैन भरि आये। रोवत बाहरको उठि धाये॥
रोहिणि फूंकि देत मुख माहीं। लिय लगाय उरसों गहि बाहीं
मधुर ग्रास लै तात निहोरे। लै बैठे फुसलाय अँकोरे॥
जेंवत कान्ह नन्दकी कनियां। छबि निरखत ठाढ़ी नँदरनियां॥
बेसनके व्यञ्जन विधि नाना। बरा बरी बहु शाक विधाना॥
मूंग ठरहरी हींग लगाई। दाल चनाकी पीत सुहाई॥
राजभोगको भात पसायो। उज्ज्वल कोमल सुगँध सुहायो॥
बेसन मिली कनिकको रोटी। सदघृत बोरी पतरी छोटी॥
आंब आदि बहु भांति सँधाने। दोउ भैया जेंवत रुचि माने॥
मिश्री दधि ओदन मिश्रितकर। लेत श्यामसुन्दर अपने कर।
आपुन खात नन्द मुख नावैं। सोछबि कहत कौनपै आवैं॥
भोजन कर अचमन कियो, लै झारी नँदराय।
अपने करसों श्यामको, दीन्हों बदन धुवाय॥
को करि सकै बखान, भाग्य यशोमति नन्दके।
ब्रह्म रह्यो रुचि मान, बालरूप जिनके सदन॥

———

## पयछुड़ावन लीला॥

बैठे श्याम मातकौ कनियां। पियत दूध सुन्दर सुखदनियां॥
बार बार यशुमति समुझावे। हरिसों अस्तन पान छुड़ावे॥
कहति श्याम तू भयो सयानो। मेरो कह्यो लाल अब मानो॥
दूध पियत देखत लरिका सब। हँसत तोहि नहि लाजलगतअब
जैहैं दांत बिगरि सब तेरे। अजहूं छांड़ि कह्यो करि मेरे॥
सुनत वचन मुसकाय कन्हाई। अंचरातर मुख लियो छिपाई॥
आये तबहीं सखा बुलावन। मात कह्यो खेलहु मनभावन॥
यह सुनि हर्षि उठे बनवारी। मांगत दे चौगान कहांरी॥
मथनीके पाछे कहि दीन्हीं। हर्षित श्याम तहांते लीन्हीं॥
ले चौगान बढ़ाकर आगे। चले सखन देखत अनुरागे॥
कहत सखनसों हरि हरषाई। खेलहुगे किहि ठांहर भाई॥
खेलत बनि है घोष निकासू। हरषि चले सब सहित हुलासू॥

कान्हर हलधर वीर दोउ, भये भुजा बर जोर।
श्रीदामा अरु सुबल मिलि, जुरे सखा इक ठोर।
और सखनके वृन्द, बांटि लिये जुरि जोट जुट।
अति आनँद नँदनन्द, दियो बटा ढरकाय महि॥

---

## चौगान खेलन लीला।

अपनी अपनी तन लै जाहीं। एक एक सन पावत नाहीं॥
इतते उत उतते इत घेरैं। बटा मारि चौगाननि फेरैं॥

दौरत हँसत खसत उठि मारैं। आप आपनी जीत बिचारैं॥
जम्यो खेल अति मगन कन्हाई। देखत सुर मुनि रहे लुभाई॥
जीतत सखा श्याम जब जाने। करो खेल कछु तब मचलाने॥
कहत सखा सब सुनहु गोपाला। रुगटैयांको कौन खियाला॥
श्रीदामासों हो तुम हारे। झूठी सौंहैं खाउ लला रे॥
खेलतमें को काको सैयां। तनक बसत हम तुम्हरी छहियां॥
अति अधिकार जनावत ताते। तुम्हरे अधिक गाय कछु जाते॥
अब नहि खेलहि संग तुम्हारे। भये सखा सब रिस करि न्यारे॥
खेल्यो चाहत त्रिभुवन राई। दियो दांव तब पीठि चढ़ाई॥

जाके गुणगण अगम अति, निगम न पावत ओर।
सो प्रभु खेलत ग्वाल सँग, बँधे प्रेमकी डोर॥
खेलत भई अबेर, जननी टेरत श्यामको।
आवहु धाम सबेर, सांझ समय नहिं खेलिये॥

सांझ भई घर आवहु प्यारे। बहुरि खेलिये होत सवारे॥
आपुहि जाय बांह गहि आने। सुभग श्यामतनु रज लपटाने॥
बोलि लिये यशुमति बलरामहिं। लै आई दोऊ सुत धामहिं॥
धूरि झारि तातो जल ल्याई। तेल परशि दोन्हें अन्हवाई॥
सरस बसन तनु पोंछि सवांरे। लै गोदी भीतर पगु धारे॥
करहु बियारू कछु दोउ भाई। पुनि तुमको राखौं पौढाई॥
सीरा पूरी सरस सवाँरी। और धरी मेवा बहु न्यारी॥
दीन्हीं परसि कनकको थारी। बलमोहन दोउ करत बियारी॥

मिसिरी मिलै दूध औटाई। लै याई तब रोहिणि माई॥
प्रेमसहित दोउ जननि जिमावत। देखि देखि छवि नैन जुड़ावत॥
खात खात मोहन अलसाने। बारहि बार श्याम जमुहाने॥
आरससों कर कौर उठावत। नैनन नींद झमकिझुकि आवत॥

उठहु लाल तब मातु कहि, धोये मुख अरविन्द।
पौढाये लै सेजपर, बल अरु बालगोविन्द॥
सोये बाल मुकुन्द, दोउ भैया सुख सेजपर।
जननी अति आनन्द, शोचत गुण गोपालके॥

माखन मोहनको प्रिय लागै। भूखो क्षण न रहत जब जागै॥
ताहि वदौं जो गहरु लगावै। नहिं मानै जो इन्द्र मनावै॥
मैं यह जानत बात श्यामकी। इग मीचे नवनीत खानकी॥
लै मथनी दधि धर्यो बिलोई। जबलगि लालन उठहिनसोई॥
भोर भयो जागहु नँदनन्दन। सङ्ग सखा ठाढे जगबन्दन॥
सुरभी पयहित वच्छ पियाये। पंछी तरुतजि चहुंदिशि धाये
चन्द्रमलिनउड़गणद्युतिनाशी। निशिनिघटीरविकिरणप्रकाशी
कुमुदिनि सकुची वारिज फूले। गुञ्जत मधुप लता लगि झूले॥
दरशन देहु मुदित नर नारी। व्रजवासी प्रभु जन सुखकारी॥
सुनि जननीके वचन रसाला। खोले इग राजीव विशाला॥
हँसत उठे सन्तन सुखदाई। मुखछवि देखि मातु बलि जाई॥
हरि कछु करहु कलेऊ प्यारे। मैं माखन मथि धरेउ सवारे॥

रोटी अरु माखन तनक, देरी मा मोहिं हाथ।
लै आई जननी तुरत, कछु मेवा धरि साथ॥
करत कलेऊ श्याम, माखन रोटी मानि रुचि।
त्रिभुवनपति सुखधाम, चारि पदारथ हाथ जेहि॥

---

## अथ माखन चोरी लीला।

मैयारी मोहिं माखन भावै। और कछू अति रुचि नहिं आवैं॥
मधु मेवा पकवान मिठाई। सो मोको नेकहु न सुहाई॥
ब्रजयुवती इक पाछे ठाढ़ी। हरिके वचन सुनत रति बाढ़ी॥
मन मन कहत कबहुँ अपने घर। माखन खात लखौं सुन्दर बर॥
बैठैं जाय मथनियां पाहीं। अपने करनि काढ़िकै खाहीं॥
मैं बरु देखहुँ कहूं छिपाई। कैसे मो घर जाहिं कन्हाई॥
हरि अन्तर्यामी सब जानें। ग्वालिनि मनकी प्रीति पिछानें।
गये व्यास ता ग्वालिनिके घर। ठाढे भये जाय द्वारे पर॥
इत उत देखत कोऊ नाहीं। तब पैठे ताके घर माहीं॥
हरिको आवत ग्वालिनि जान्यो परममुदित अतिही सुखमान्यो
रही दबकि दुरि डीठि लगाई। हरि बैठे मथनी ढिग जाई॥
देखौ माखन भरी कमोरी। खान लगे करि अति मति भोरी॥

चिते रहे मणि खम्भमें, हरि अपनो प्रतिछाहँ।
जानि दूसरो ग्वाल तिहि, प्रभु सकुचे मनमाहँ॥

तासों करत सयान, कहत लेहु आधो तुमहुँ ।
हम तुम एक समान, भलो बन्यो है संग अब ॥
प्रथम आज मैं चोरी आयो । तुमको देखि बहुत सुख पायो ॥
अब तुम मेरे सँग नित आवो । यह काहूको मतिहि जनावो ॥
सुनि सुनि हरिके सुखको बानी । उमँगि हँसी ब्रजयुवति सयानी
ग्रग्रास चौंकि मुख तासु निहारी । भाजि चले ब्रज खोरि मुरारी
अति आनंद ग्वालिनिमनमाहीं । पूंछत सखी परस्पर ताहीं ॥
पायो आज परो कछु तेरो । कहा तोहि अति आनन्द हेरो ॥
गदगद कंठ पुलक तनुतेरो । सो किन कहै कहा सुख हेरो ॥
तनु न्यारो जिय एक हमारो । हमैं तुम्हैं कछु भेद न न्यारो ॥
सुनहु सखी मैं तोहिं बताऊं । जो सुख भयो सो तोहिसुनाऊं ॥
यशुमति सुत सुन्दर सुकु गोरी । आयो आजु हमारे चोरी ॥
खम्भ निकट मथनीको माखन लियो निकासि लग्यो सो चाखन
मैं दुरि भीतर देखन लागी । वा मोहन छबिपर अनुरागी ।
देखि खम्भ प्रतिबिंबको, मन कछु सकुचे ग्रग्राम ।
अर्द्ध भाग तेहि देन कहि, प्रगट करो जिन नाम ॥
तब न रह्यो मोहि धीर, हँसी मनोहर वचन सुनि ।
कहा कहौं तुम वीर, मन हरि लीन्हों सांवरे ॥
मोहिं देखि तब गयो पराई । सखि सो छबि कछु वरणि नजाई
सुनि हरि चरित सखी अनुरागी । अतिसुख पायप्रेमरस पागी
कहत कि मैं देखन नहिं पायो । सोइ अभिलाष जासु उर छायो

हरि अन्तर्यामी सब जानैं । सबके मनको रुचि पहिंचानैं ॥
इहि विधि माखन प्रथम चुरायो । कीन्होंग्वालिनिकोमनभायो ॥
भक्त बछल संतन सुखकारी । पुनि मनमहँ यह बात बिचारी ॥
अब सब ब्रज घर माखन खाऊं । माखन चोर नाम कहवाऊं ॥
बालरूप मोहिं यशुमति जानैं । ग्वालिनि प्रेम भक्ति करि मानैं ॥
मित्रभाव करि ग्वाल बखानैं । प्रीति रीति सब मोसों मानैं ॥
इनहींके हित गोकुल आयो । करों सबनके मनको भायो ॥
यह विचार हरि निज उर ठाना । भक्ति कृपा अंबुधि भगवाना ॥
बाल सखा सब निकट बुलाई तिनसों हँसि हँसि कहतकन्हाई

माखन खइये चोरिकै, सब ब्रज घर घर जाय ।
कीजै बाल विहार यों, मेरे मन यह आय ॥
सुनि हरषे सब ग्वाल, देत परस्पर तारि सब ॥
भली कही नन्दलाल, तुम बिन यह बुधि को करै ॥

चले सखन लै माखन चोरी । एक बयस सबहिन मतिभोरी ॥
देख्यो झांकि झरोखा ओरी । मथति एकग्वालिनिदधिगोरी ॥
धर्यो मठा मथनीमें जानो । ऊपर माखनहै लपटानो ॥
ग्वालिनि गई कमोरी मांगन । पाई घात तबहिँ सुन्दरघन ॥
सखन समेत ताहि घर आये । दधिमाखन सबहिनमिलिखाये ।
छूछो मटको छांड़ि सिधाये । हंसत हंसत सब बाहर आये ॥
आय गई द्वारे सोइ बाला । घरसों निकसत देखे ग्वाला ।
माखन कर मुख दधि लपटानो । ग्वालिनि यहकछुभेद नजानो

देखि रही हँसि मुखकी शोभा। निरखि रूप लाग्यो मन लोभा
चमकि गये हरि सखन समेता। तबहीं ग्वालिनि गई निकेता॥
देखौ जाय मथनियां खाली। चकितविलोकतइतउत ग्वाली॥
मन हरि लीन्हीं मदनगोपाला। जान्यो ग्वालिनि हरिके ख्याला

घर घर प्रगटी बात यह, सखावृन्द लै साथ।
चोरी माखन खात हैं, नन्दसुवन व्रजनाथ॥
सबके मन अभिलाष, चोरी पकरन पाइये।
धरियो माखन राख, यहै ध्यान सबके हिये॥

कहत परस्पर ग्वालि सयानी। सब मोहनके रूप लुभानी॥
माखन खान देहु गोपालहि। मत बरजो कोउ श्यामतमालहि॥
तुम जानत हरि कछु नहिं जाने। वे मोहन हैं परम सयाने॥
कोऊ कहत पकरि जो पाऊं। तौ अपने गहि कंठ लगाऊं॥
एक कहत जो मेरे आवैं। तौ माखन हम हरिहि खवावैं॥
कहत एक जो मैं गहि पाऊं। तौ हरिको बहु नाच नचाऊं॥
कोउ कहत जो हरिको पैये। तौ गहि यसुमतिपै लै जैये॥
इक कह आजु हमारे आये। द्वारहिते मोहिं देखि पराये॥
इह विधि प्रेम मगन सब बाला। सबके हृदय ध्यान नन्दलाला
निशिवासुर नहिं नेक बिसारें। मिलिवे कारण बुद्धि विचारें॥
गये श्याम सूने ग्वालिनि घर। सखा सबै ठाढ़े द्वारेपर॥
देख्यो भीतर जाय कन्हाई। दधि अरु माखन धर्‍यो मलाई॥

सद माखन देख्यो धरयो, हरषे श्याम सुजान ।
सखा बुलाये सन दे, ले लै लागे खान ॥
इत उत चितवत जात, कछु संशय मनमें किये ।
बांटत दधि अरु खात, उठि झांकत हैं द्वारतन ॥

देखतसो ग्वालिनि अन्तरकरि । मगनभईअतिउरआनन्दभरि ॥
लीन्हीं बोलि सखी ढिगबासी । तिन्हैं दिखावत हरिसुखरासी
देखि सखी शोभा अति बाढ़ी । उठि अवलोकिओटकैठाढ़ी ॥
किहिविधिसों दधि लेत कन्हाई । सखन देत अरुआपुन खाई ॥
बदन समीप पाणि अति राजै । माखन सहित महाछबि छाजै ॥
ल उपहार जलज मनुजाई । मिलन चन्द्रसों बैर बिहाई ॥
गिरि गिरि परत बदनते ऊपर । दुइ दधिसुतकेबुन्दसुभगतर ॥
मनहुं प्रलयजल आगम हरषत । इन्दुसुधाके कणुका बरषत ॥
मुखछबि देखि थकित ब्रजनारी । कहत न बनै रही उरधारी ।
बालविनोद मोद मन फूली । भई शिथिल सब तनु सुधि भूली
बरजनको असफुरत न बानी । रही विचारि विचारि सयानी ॥
गये ठगौरी लाय कन्हाई । रहीं ठगीसी सब सुखपाई ।

विश्वभरण पोषण करण, कल्प तरोवर नाम ।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम विवश सुखधाम ॥
नित उठि करत विहार, ब्रजमें घरघर सांवरो ।
ब्रजजन प्राण उधार, माखन चोरी ब्याज करि ॥

गत्राम एक ग्वालिनि घर आये । चोरी करत पकरि तिन पाये ॥
कहन कगी तुम बहुत ढिठाई । अबतो बात परेही आई ॥
निशिवासरमोहिंबहुतखिझायो । दधि माखन सब मेरो खायो ॥
दोउ भुज पकरि कह्योकितजैहौ । दधि माखन दै छूटन पैहो ॥
ताके मुखतन चिते कन्हाई । बोले वचन मधुर मुसुकाई ॥
तेरीसौं मैं छुयो न राई । सखा खाय सब गये पराई ॥
चारु चितौनि चित्त उरझानो । उरते रोष जात नहिं जानो ॥
सुनत मनोहर हरिकी बतियां । लिये लगाय ग्वालिनी छतियां
बैठो श्याम जाउँ बलिहारी । मैं लाऊं दधि खाउ बिहारी ॥
हरिको लेन चली दधि गोरी । हरिहँसि निकसि गये व्रजखोरी
रही ठगीसी ग्वालिनि भोरी । मन लै गयो सांवरो चोरी ॥
हरि गये और ग्वलिनीके घर । देख्यो जाय न कोऊ भीतर ।

माखन काढि निशंक ह्वै, लागे खान कन्हाय ।
ग्वालिनि आवत जानिघर, तब उठि रहे छिपाय ॥
ग्वालिनि घरमें आय, मथनीढिग ठाढ़ी भई ।
भाजन रीतो पाय, चकित विलोकति चहुं दिशि ॥

अबहिं गई आई इन पावन । आयो माखन कौन चुरावन ॥
भीतर गई तहां हरि पाये । पकरी भुजा भये मन भाये ॥
तब हरि कहि निजनाम लजाये । नयनसरोज कछुक भरि आये ॥
देखि वदन छवि आनन्द हीके । दीन्हें जान भावते जीके ॥
भयो ग्वालिमन परमहुलासा । कहन चली यशुमतिके पासा ॥

जो तुम सुनहु यशोमति माई। हँसिहौ सुनि हरिकी लरिकाई॥
आज गये हरि मो घर चोरी। देखो माखन भरी कमोरी॥
मैं गइ आय अचानक जबहीं। रहे छिपाय सकुचिकै तबहीं॥
तब मैं कह्यों भवनमें को री। तब मोहिं कहि निजनाम निहोरी
लगे लेन लोचन भरि आंसू। तब मैं कानन तोरी सांसू॥
सुनत श्यामसबरोहिणिकनियां। सकुचत हँसत मंद मुसुकनिय
ग्वालि बिहँसि हरितनडरपायो। माखनचोर पकरि मैं पायो॥

करौ नोयको दामरी, बांधौ अपने धाम।
लाय लिये उर रोहिणी, बांधि सकै को श्याम॥
यशुमति उर आनन्द, बाल चरित सुनि श्यामके।
कहत सुनो नँदनन्द, ऐसो काम न करहु सुत॥

पुनि इक गृह गए नन्ददुलारे। देखिफिरे तहँ ग्वाल दुआरे॥
तब हरि ऐसी बुद्धि उपाई। फांदि परे पिछवारे जाई॥
सूनो भवन कहूं कोउ नाहीं। मानहु इनको राज सदाहीं॥
भांड़े मूंदत धरत उतारत। दधि अरु माखन दूध निहारत॥
रैनि जमायो गोरस पायो। लगे खान मनु आप जमायो॥
आहट सुनि युवती घर आई। झलकत देखे कुवँर कन्हाई॥
अंधियारे घर श्याम गये दुरि। दधि मटुकी ढिग बैठि रहे मुरि
सकल जीव उर अंतरवासी। तहां कछुक चेटक परकासी॥
ग्वालिनि हरिको इत उत हेरे। पावत नाहीं धाम अंधेरे॥
कहति अबहिं देख्योनंदनंदन। कितहिगयो पछितात मनहिंमन

गन्यो गोरस छिके चढ़ाई। ग्वाल कन्धचढ़ि लिये कन्हाई॥
माखन खाय दूध ढरकमायो। महीछिरकि बालकन रुवायो॥
और कहत सकुचत हौं बाता। कहा दिखाऊं तुमको गाता॥
हैं गुण बड़े श्यामके माई। इहां सकुचि लरिका ह्वै जाई॥
बरजत क्यों नहिं सुतहि अनेरो। कहा कहौं नितप्रतिको फेरो॥
जो कछु राखै दूरि दुराई। तहीं तहींते लेत चुराई॥
तापर देत बकहवन छोरो। बनबनफिरत वहौ चहुँ ओरो॥
चोरो अधिक चतुर बनवारो। सुनहु महरि हम इनते हारो॥
कहँ लगि इनके गुणन बखानों। तुम इनको सूधो मति जानों॥

सुनत ग्वालिनीके वचन, यशुमति हरितन देखि।
भये सकुच युत मुख निरखि, कोमल ललित विशेखि॥
कहत लगावत लोग, झूठहि सब मेरे सुतहि।
कब भये चोरी योग, पांच बरषके तनिकसे॥

इहिमिसि देखनको सब आवैं। चोरी मेरे सुतहि लगावैं॥
ऐसो तो मेरो न अन्याई। अतिहौ बालक कुवँर कन्हाई॥
छीके बँधे भवन अति ऊंचे। तहँ इनको कैसे भुज पहुँचे॥
कौनवेग इतनो ह्वै आयो। तेरो गोरस कैसे खयो॥
हाथ नचावत आवत दौरी। जोभन कहहि समुझिक बौरी॥
घरहो माखन भरो कमोरो। कबहूँ लेत न अँगुरिन बोरो॥
इतनो सुनत निरखि घनश्यामैं बिहँसि चलीग्वालिनि निज धामैं
हरिसों कहति महरि समुझाई। मैं बलि कहुँ जिन जाहु कन्हाई

तुम्हरे कारण षटरस नाना । करि करि राखैं विविध विधाना ॥
इतो उपाय करत कितजाई । परघर दधि माखनहिं लगाई ॥
ब्रजको बाढ़ो ग्वालि गंवारी । हाटबाट दधि बेंचनहारी ॥
नहिं कछु लाज न कानि विचारैं । बोलत वचन कटुक मुहं फारैं

झूंठो दोष लगायके, नित उठि आवत प्रात ।
सन्मुख वादति शंक तजि, विकट बनावत बात ॥
नौलख दुहियत गाय, दूध दही तेरे घनो ।
तू कित चोरी जाय, बुरो मानि हैं नन्दसुनि ॥

हरि माखन चोरी रस गौधे । कैसे रहैं प्रेमके बोधे ॥
एक ग्वालि घर सांझ अंधेरें अति श्यामल तनपरत न हेरे ॥
कछुकधरो गोरस तहं पायो । प्रथम सुरुचिकरि भोगलगायो ॥
कियो प्रगट दीपक गृह ग्वाली । तहं देखे भीतर वनमाली ॥
भुजा चारि धरिदरश दिखायो । ग्वालिनिलखिअतिअकरजपायो
दधि माखनके बूंद सुहाये । सुभग श्याम उर अति छविछाये ॥
मानहुं यमुना जलके माहीं । देखिपरत उडगण परछाहीं ॥
इहि छवि निरखि रही छकिग्वाली । बहुरों भये द्विभुज वनमाल
देखि चरित हरषीं ब्रजबाला । चकित विलोकति हर्षविशाला ॥
मन मन कहति कहा मैं देख्यो । यह जाग्रत के स्वप्न विशेख्यो ॥
प्रेम मगन तनुकी सुधि भूली । गदगद कण्ठ रोमावलि फूली ॥
मन हरि लीन्हों रूप दिखाई । चले वहांसे कुंवर कन्हाई ॥

देखि श्यामके चरित तव, व्रजनारी सुखपाय ॥
दोहिं हमारे पुरुष हरि मांगत विधिहि मनाय ॥
घर घर करत विलास, नाना भेष दिखाय हरि।
व्रजजन परमहुलास, देखिचरित गोपालके ॥

देखो श्याम ग्वालि इक ठाढ़ी। गोरस मथति प्रातछवि बाढ़ी ॥
डोलत तनु उघरयो शिरअंचल। वेणी चलत पीठपर चञ्चल ॥
यौवन मदमाती अठिलानी। करषत रजु दुहु करन मथानी ॥
इत उत अंग मोरिझकझोरी। गोरे अंग दिननकी थोरी ॥
मढ़ो उरोजन अंगिया गाढ़ो। मनहुं काम सांचे भरि काढ़ो ॥
रीझि रहे लखि नन्ददुलारे। लागे खेलन तासु दुआरे ॥
फिरि चितई ग्वालिनि द्वारेतन। परि गये दृष्टि श्यामसुन्दरघन
बोलि लिये हरुवे सूने घर। लिय लगाय उरसों सुन्दर वर ॥
उमंग अङ्ग अङ्गियां उर दरकी। तिहि अवसरसुधि रही न घरकी
तवहीं सुन्दर श्याम सुजाना। भये वरष द्वादश अनुमाना ॥
सो छवि देखि छकी व्रजनारी। बहुरि भये शिशुरूप विहारी ॥
हरिके कौतुक अति सुखदाई। देखि रही मति गति विसराई ॥

माखन लै तव श्याम मुख, लगत आपने पान।
अति आनन्द उमंग उर, [illegible]सरीग्वालि सुजान ॥
रसिक शिरोमणिश्याम, माखन खाय रिझाय तिय ॥
आये अपने धाम, छवि सागर नागर नवल ॥

मन हरि लीन्हों कुवँर कन्हाई। बिन देखे चण रह्यो न जाई॥
उरहनके मिस ग्वालि सयानी। आई देखन हरि सुखदानी॥
सुनहु महरि सुतके गुण जैसे। कहा कहौं कहि जात न तैसे॥
माखन खाय मही ढरकायो। चोली फारि अबहिं भजि आयो॥
गोरस हानि सही लै माई। अब कैसे सहि जात खुंटाई॥
बीचहिं बोलि उठे बनवारी। झूंठहिं मोहिं लगावत ग्वारी॥
खेलत ते मोहिं लियो बुलाई॥ दोउ भुज भरि लीन्हों उर लाई॥
मेरे कर आपने उर धारे। आपुनहीं चोली पुनि फारे॥
माखन आपहिं मोहिं खवायो। मैं कब दही मही ढरकायो॥
अति भोरीसुनिहरिकी बानी। यशुमति ग्वालिनिसों रिसियानी
जानति हौं जु कटाक्ष तिहारो। अति भोरो सुत मेरो बारो॥
दै दै दगा बुलावति ताही। सोइ सोइ करत जो भावत जाही॥

बोलि बोलि निज निज भवन, भेटति भरि भरि अंक॥
मोरे भोरे बालको, ग्वालिनि निलज निशंक॥
तापर उर नख लाय, फिरत दिखावति लाज तजि।
कान्हहिं दोष लगाय, आपुन अति भोरी भई॥

नित उठि उरहन लै उठि धावैं। बिना भीतही चित्र बनावैं॥
मिस करि करि मेरे गृह आई। रहत श्याम तनु दीठि लगाई॥
मेरो पांच वर्षको कान्हा। अजहु रोय पय मांगत नान्हा॥
कहँ तू यौवनकी मदमाती। हरिके सङ्ग फिरत अठिलाती॥
ग्वालिनि सुनत यशोमति बैना। मन हरिलीन्हों राजिवनैना॥

यावत रोष प्रीति मनमाहीं । उत्तर देत बनत कछु नाहीं ॥
कछु अनउत्तर कहि रिसियाई । चली भवन उर राखि कन्हाई ॥
यशमति यहैसिखावतिश्यामहिं । कितहो जात पराये धामहिं ॥
ये सब गोरसकी मदमाती । फिरत ढीठ ग्वालिनि इतराती ॥
नित उठि उरहन देत बिहाने । मुख सँभारि नहिं बात बखाने ॥
रुचि उपजै तुम्हरे मन जोई । मोपै मांगि लेहु किन सोई ॥
कहि कहि मधुर वचन निजताता । सुख उपजावत मेरे गाता ॥

अपनेहिं आंगन खेलिये, सखन सहित दोउ भाय ।
मोहिं सुख दीजै आपने, बालविनोद दिखाय ॥
सुन्दर घन ब्रजनाथ, कोटि काम शोभा हरण ।
गोपबाल लै साथ, करत बाल लीला ललित ॥

मथुरा जात लखी इक ग्वाली । चरचि लई ताको बनमाली ॥
बैठि रहे ताके पिछवारे । सखा संग लै नन्ददुलारे ॥
कहति परोसिन सों समुझाई । सुनि लीन्हीं सो कुवंर कन्हाई ॥
बेंचन जाति सखी हौं दहियो । लीलो मेरे घर तन चहियो ॥
सद माखन द्वै माट धरोई । सौंपि जाति हौं तोको सोई ॥
डरतो और कछू ब्रज माहीं । नन्दसुवन सखि आय न जाहीं ॥
यों कहि चलीग्वालिनी जबहीं । सखन सहित हरि पैठे तबहीं ॥
कछु ग्वालनकी आहट पाई । सो पुनि फेरि घरहिं फिरि आई ॥
देखि सखा सब चले पराई । पकरे ग्वालिनि धाय कन्हाई ॥
औरन जानि जान मैं दीन्हें । तुम कित जात अचकरी कीन्हें ॥

बांह पकरि लै चली लिवाई। कहत यशोमति देखहु आई॥
उरहन देत सदा रिस मामो। अब अपनो सुत आय पिछानो॥

वहै उरहनो नित्यको, सत्य करनके काज।
मैं गहि ल्याई श्यामको, बांह पकरिके आज॥
हरि बैठे निज धाम, खेलत जननीके निकट।
कौतुकनिधि घनश्याम, करत चरित संतन सुखद॥

यशुमतिसुनि ग्वालिनिकी बानी। देखन चली सुतहि अकुलानी॥
गये तहां ह्वै सुता पराई। देखि यशोमति अति रिसियाई॥
तेरे आंखि न मति हिय माहीं। बदन देखि पहिचानत नाहीं॥
देखहुरी याकी गति माई। या कन्याको कहत कन्हाई॥
लैं जो मेरे सुतको नामा। सूधो करि पायो है श्यामा॥
तू गहि बांह कौनको ल्याई। खेलत मेरे धाम कन्हाई॥
रही बाल हरिको मुख चाही। समुझि समुझि मनमें पछिताही॥
बांह पकरि मैं घरते ल्याई। कीन्हें कैसे चरित कन्हाई॥
जात बनै ना कछु कहि जाई। रही ग्वालि ठगिसी सकुचाई॥
महरि कहत चलि जाहि इहांतें। मैं जानत सब तुम्हरी बातें॥
हरिके चरित कहा कोउ जाने। ग्वालिनि तन हरि मुरि मुसकाने॥
हरितें हारि चली गृह ग्वाली। बुधि करि जीते श्याम तमाली॥

बहुरि गये इक ग्वालिघर, मनमोहन घनश्याम॥
सखन सहित हरषित भये, सूनो पायो धाम॥

सब घर लियो ढँढोरि, माखन खायो चोरि हरि ।
भाजन डारे फोरि, गोरस दियो लुढ़ाय महि ॥

सोवति लरिकन चुटकि जगाये । मही छिरकि डरपाय रुवाये ।
बड़ो माट इक घीको पोखा । बहुत दिननको चिकनो चोखा ॥
सोऊ फोरि कियो बहु टूका । चले हँसत सब मिलि दै कूका ॥
आय गई ग्वालिनि तिहि काला । निकसत धरिपाये नन्दलाला
देख्यो घर बासन सब फोरे । रोवत बाल मही सों बोरे ॥
दोऊ भुज गाढ़ेही लीन्हें । जाय महरि ढिग ठाढ़े कीन्हें ॥
कहति सरोष यशोमति आगे । अब पति रहिहै या ब्रज त्यागे ॥
ऐसे हाल किये गृह मेरे । सुनो महरि लच्छण सुतकेरे ॥
माखन खाय दही ढरकायो । मही छिरकि बालकन रुवायो ॥
बासन फोरि धरे सब घरके । उपज्यो पूत सपूत महरके ॥
घीको माट युगनको राख्यो । सोऊ फोरि टूक करि नाख्यो ॥
चलौ देखाऊं घरको हाला । राखहु बांधि आपनो लाला ॥

जननी खीजति कान्हको, करत फिरत उतपात ।
नित उठि उरहन सहति हौं, तू नहिं मानत तात ॥
बड़े बापके पूत, चोर नाम प्रगट्यो जगत ।
उपज्यो पूत सपूत, नाम धरावत तातको ॥

जननीके खीझत हरि रोये । भरि आये नैननके कोये ॥
झूठहिं मोहिं लगावत धगरी । मेरे ख्याल परी हैं सिगरी ॥
यशुमति रोवत देखि कन्हाई । बदन पोंछि लीन्हों उर लाई ॥

कहति सबै युवतिन यह भावै। नितही नित उठि भोरहि आवै॥
मेरे बारहि दोष लगावैं। झूठहि उरहन मोहि सुनावैं॥
कबहिं गयो तेरे दरवाजे। दूध दही माखनके काजे॥
धनमाती इतराती डोलैं। सकुचति नाहिं सँभारि न बोलैं॥
मेरो कान्ह तनकसो माई। ताहि रुवावत झूंठ लगाई॥
कब हरि तेरो माखन लीन्हों। मेरे बहुत दई को दीन्हों॥
कहा भयो घर गयो तिहारे। लियो तनक दधि बालक बारे॥
ग्वालिन सुनि यशुमतिकीबानी। कहतिमहरितुमउलटिरिसानी
नित उठि होय जासुकी हानी। सो क्यों कहे आन नँदरानी॥

तुम कछु लावत औरही, लेहु आपनो गाउँ।
जहाँ बसे नहिं पति रहै, तजन कह्यो सो ठाउँ॥
पूतहि देत पठाय, भँड़िहाई घर घर करन।
उरहन देत रिसाय, को बसिहै ऐसे नगर॥

सखा भीर लै पैठत धाई। आप खाय तो सहिये माई॥
जो कछु गोरस घर में पावै। कछु डारै कछु सखन लुटावै॥
कहँ लौं सहैं नित्यकी हानी। कबलौं करैं नन्दकी कानी॥
इक दिन मेरे मन्दिर आयो। मोको देखत वदन बिरायो॥
जब मैं सन्मुख पकरन धाई। तबके गुण कह कहौं सुनाई॥
भाजि रह्यो दुरि देखत जाई। मैं पौढ़ी अपने गृह आई॥
हरैं हरैं आये शिरहाने। चोटी पाटी बांधि पराने॥
सुनि मैया याके गुण मोसों। ये सब झूठ कहति हैं तोसों॥

खेलनते मोहिं लियो बुलाई। मोपै दधिको चौंटि कढ़ाई॥
टहल करौं मैं याके घरकी। यह सोवै पतिसङ्ग निधरकी॥
सुनतवचनयशुमतिमुसुकानी। ग्वालिनिहँसि मुख मोरिलजानी
सुनहु महरि सुतके गुणकाने। समुझहु हैं भोरे कै स्याने॥

करत फिरत उतपात अति, सब व्रज घर घर जाय।
नित उठि खेलत फागसो, गरियावत न लजाय॥
बाहर तरुण किशोर, बोलत वचन विचित्र वर।
इहां होत शिशु भोर, तुम अचरज मानत नहीं॥

योंकहिगई ग्वालिनीधामहिं। यशुमति पुनिर सिखवतश्यामहि
घर गोरस जनिजाहु पराये। तात रिसात उरहनो लाये॥
लघु दीरघता कछु नहिं जाने। झगरो आय झूंठ तब ठानै॥
नौ लख धेनु दूधकी तेरे। और बहुत बन चरैं अनेरे॥
तू कित माखन खात चुराई। छांड़ि देहु अब यह लरिकाई॥
यों कहि जननी कण्ठ लगायो। सुन्दरश्याम हरष तब पायो॥
खेलन गये बहुरि नँदलाला। किये जाय पुनि सोई ख्याला॥
अपर ग्वालि उरहन लै आई। आई यशुमति पै रिसियाई॥
तेरो कान्ह मेरो माखन खायो। सखनसहित अबहींभजिआयो॥
मैं गइ यमुन भरनको पानी। दुपहर जोस सून घर जानी॥
गयो भवनमें खोल किवारो। छीकनते दधि लियो उतारो॥
खाय लुटाय बहाय परानैं। बारकई बरजो नहिं मानैं॥

कीन्हों अतिही लाड़िलो, लाड़लड़ाय बहूत ।
अबहीं ते ये ढँग करत, जायो नोखो पूत ॥
सुनि ग्वालिनिके बैन, कहत यशोमति कान्हसों
सिखयो मानत है न, लै सँटिया डाटति भई ॥

माखन खात पराये घरको । मेरे रहत जहां तह ढरको ॥
नितप्रति मथियत सहस मथानी । तेरे कौन वस्तुकी हानी ॥
कितने अहिर जियत घर मेरे । बेंचत खात महो बहुतेरे ॥
पूत कहावत नन्द महरको । चोरी करत उघारत फरको ॥
मैया मैं नहिं माखन खायो । मेरे बदन सखन लपटायो ॥
भाजन ऊंचे छिकन चढ़ायो । समुझ देख मैं कैसे पायो ॥
मैं ये नान्हें हाथ पसारौं । किहि विधि माखन लियो उतारी ॥
मुख दधि पोंछत कहत कन्हाई । दोना पाछे पौठि दुराई ॥
डारि सांटि यशुमति मुसकानी । गहि उर लाय लिये सुखदानी
बाल विनोद मोद मन मोह्यो । निरखत वदन हासयुत सोह्यो ॥
भक्ताधीन वेद यश गावै । सो हरि भक्ति प्रताप दिखावै ॥
यशुमति को मुखनिरखि अगाधा । बिसरी शिव मुनि ब्रह्म समाधा

धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रज की गाय ॥
जिनको माखन चोरि हरि, नित उठि घर घर खाय ॥
रहे सकल सुर भूल, ब्रजविलास हरिको निरखि ।
हरषहिं बरषहिं फूल, धन्य धन्य ब्रज धन्य कहि ॥

आई कहत और इक ग्वाली। सुनहु यशोमति सुतकी चाली॥
भाजि गये मेरे भाजन फोरी। माखन खाय मही महि ढोरी॥
हांक देत पैठत घरमाहीं। काहू विधि करि मानत नाहीं॥
सखा संग कीन्हें इक ठोरी। नाचत फिरत सांकरी खोरी॥
बाट घाट कोउ चलन न पावै। गारी दै दै सबन बुलावै॥
गोरस हानि करत है सिगरो। कहँ लगि कीजैनितउठिझगरो॥
घरघर करत फिरत सुत चोरी। ऐसी विधि बसिहै ब्रज कोरी॥
सुनत गोपिकाकी रिसबानी। कहत श्यामसों नन्दकि रानी॥
तू नहि मोहि डरात मुरारी। बकत बकत तोसों पचि हारी॥
षटरस भरे धरे घरमाहीं। सो तू खात पियत क्यों नाहीं॥
परघर चोरी को नित जाई। देत उरहनो ग्वालि सदाई॥
मोको रूपण कहत सब आई। तेरे घर ढोटहु न अघाई॥

सुनि सुनि लाजनि मरति मैं, तू नहि मानत बात।
अब तोहि राखों बांधिकै, जानी तेरी घात॥
सुनि री ग्वालिनि बात, कहे देत अब तोहिं मैं।
जबहीं पावहु घात, मेरी सौं यहि मारियो॥

अबते मोको बहुत खिझाई। सांटिन मारि करौं पहुनाई॥
अजहूं मानि कह्यो करि मेरो। तू घर घर मति फिरै अनेरो॥
जननी रिस लखि श्याम डराने। अब नहिं जैहौं धाम बिराने॥
यों कहि निकरि गये हरि द्वारे। खेलत सखन संग गलियारे॥
तबहीं ग्वालि और इक आई। सो यशुमतिसों कहत सुनाई॥

मारि भजत काहूके लरिका। खोलत हैं काहूको फरिका ॥
काहूको दधि माखन खाई। काहूके घर करत भँड़ाई ॥
गारी देत सकुच नहिं माने। गैल चलत हठ झगरो ठाने ॥
कह कहु हरिके गुणनि बलैये। तोसों उरहन देत लजैये ॥
कछु टोनासो पढ़िकरि आई। जोइ भावत सोइ करत कन्हाई
पीताम्बर ओढ़त शिर नाई। अञ्चल दै दै मुरि मुसुकाई ॥

तेरीसौं तोसों कहति, मैं सकुचति यह बात।
तेरो मुख हरि लखतही, सकुचि तनिक ह्वै जात ॥
नेक दिखावहु आंखि, नहिं अबते यह ढँग भले।
कब लगि कहिये राखि, करत अचकरी श्याम अति ॥

---

अथ दामरी-बन्धन लीला।

यशुमति सुनि हरिके गुणगाथा। रिस करि उठी सांटि लै हाथा
कहति जो ऐसी रिसमें पाऊं। तौ हरिकी गति तुमहि दिखाऊ
कैसे हाल करौं हरिकेरे। लागे तात आज ह्वै मेरे ॥
छांड़ौं नहीं आज बिन मारे। भये श्याम अब बहुत दुलारे ॥
इहि अन्तर आई इक गोपी। बांह गहे हरिकी मुख कोपी ॥
भली महरि सूधो सुत जायो। चोली हार खोलि दिखरायो ॥
किन नहिं सुतको लाड़ लड़ायो। कौने नहीं कठिन करि जायो
तेरो कछुक अधिक री माई। बरजत नाहिन नेक कन्हाई ॥

यशमतिहरिको भुजगहि लीन्हों। कहति बहुरि अपनो ढंग कीन्हों
हरुवें मँटिया ह्वै क लगाई। आज बान्धि मेटौं लँगराई॥
गहे भुजा सुतको बिततानी। इत उत रजु खोजत नँदरानी॥
हरि जननी उर कोप निहारी। मन मन विहँसत कौतुककारी॥

अग्नि प्रेरि त्रिभुवन धनी, दियो चीर उफनाय।
यशुमति लखि तजि हरि भुजा, लगी सँभारन जाय॥
इहि विधि भुजा छुड़ाय, दधि भाजन फोरन लगे।
माखन मुँह लपटाय, गोरस दियो लुढाय सब॥

रिसमें रिस औरै उपजाई। जानि जननि अभिलाष कन्हाई॥
देखि यशोमति अति रिस पागी। पकरि श्यामको बांधन लागी॥
गर्व जानि नहिं दाम समाई। सब रजु द्वै आंगुरि घटि जाई॥
पुनि पुनि यशुमति और मगावै। हरिके तनु सब ओछी आवै॥
देखि यशोमति रिस अति बाढ़ी। मन पछिताल ग्वालिनी ठाढ़ी
देखि सखी यशुमति बौरानी। हरिको बांधन चहत सयानी॥
हरिको त्रिभुवनपति नहिं जानै। जिनते सकल कलेश नशानै॥
अखिल ब्रह्माण्ड उदरमें जाके। बांधति महरि उदर रजु ताके॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी। इनहूँ जिनको गति नहिं जानी
जलथल जिनकी ज्योति समानी। कही गर्ग सब प्रकट बखानी
मुखमें त्रिभुवन दियो दिखाई। ताहूपर परतीति न आई॥
तिनहिं देख बांधति नँदरानी। अचरज कथा न जाति बखानी

आप बँधावत प्रेमवश, भक्तन छोरत फन्द ।
वदत वेद वाणी विदित, भक्तबछल नँदनन्द ॥
जननिहिं अति रिस जान, यमलाअर्ज्जुन सुरति करि ।
दीनबन्धु भगवान, जनहित गये बँधाय प्रभु ॥

जननीके मनकी रुचि जानी । आप बँधायो शारँगपानी ॥
कहत यशोमति लै कर डोरी । बांधों तोंहि सकै को छोरी ॥
ल लै रज्जु ऊखलसों जोरै । हरि लखि बदन नैन जल ढोरै ॥
यह सुनि ब्रजयुवती उठिधाई । देखि श्यामको सब मुसुकाई ॥
कहति इन्हें कोऊ मत छोरो । बहुरि श्याम जब माखन चोरो ॥
ऊखल बांधि यशोमति डोरी । मारन को सँटिया कर तोरी ॥
सांटी देखि ग्वालि पछितानी । विकल भई मन अति अकुलानी
कहति यशोमतिसों सब गोपी । ऐसी कहा पूतपै कोपी ॥
कहा भयो जो बालकपाहीं । ढरकि गई मथनी महि माहीं ॥
घर घर गोकुल दई दिवारी । तू बांधत हरिको भुजकारी ॥
ऐसी तोहि बूझियत नाहीं । गोरस लगि बांधत सुत बांहीं ॥
चूक परी हमते इहि भोरें । उरहन दियो बकस कर जोरे ॥

बार बार जोवत वदन, हुचकिन रोवत श्याम ।
वज्रहुते तेरो हियो, कठिन अहो नंदवाम ॥
कित रिस करति अचेत, छोर उदरते दावँरी ।
डार कठिन कर बेत, लोचन भरि भरि लेत हरि ॥

जाहु चलो अपने अपने घर । तुमहिं सबै मिलि ढीठकियोवर ॥
बन्धन छोरनको अब आई । मोको मति बरजौ कोउ माई ॥
मोहिं आपने बाबाको सौं । अब न पत्याउँ श्यामको बौसों ॥
देखि चुको मैं इनके ख्याला । उपजे बड़े नंदके लाला ॥
मैं देवन हित पय औटायो । कोरी मटुकी दही जमायो ।
जावन दियो न पूजन पायो । सो सब फोरि भूमि ढरकायो ॥
तिहि घर देव पितर कहु काके । भयो कान्हसो सुत घर जाके ॥
कहत एक सुन यशमति बौरी । दधिकारण सुत बांधत दौरी ॥
तैं यह सीख कौनपै लीन्हीं । इतनी रिस बालकपै कीन्हीं ॥
जो अतिहो अचकरो कन्हाई । तऊ कोषिको जायो माई ॥
नेक देखि धों हरिहि निहारो । कैसे डरत लकुटि डर भारी ॥
शोभित सजल सांवरे लोचन । नीरजदल अति ओस भरे जन॥

नमित वदन सूखत अधर, कछुक सकुचमें रोस ।
सांझ होत जिमि बात वश, शोभित पंकज कोस ॥
निरखि नयन सुख देत, हरिपै सर्वस वारिये ।
प्रकटे नन्द निकेत, को जानै किहि पुण्यवश ॥

एक कहति जो आयसु पाऊं । तौ माखन निज घरते लाऊं ॥
जिहि कारण कीन्हीं रिस हरिते । अजहुं न डारत सँटियाकरते
देखि डरात तोहिं हरि कसे । सकुचत जलज शीतभय जैसे ॥
वेगि छोरि बन्धनपट त्यागो । ले लगाय उर श्याम सभागो ॥
कहन लगीं अब वहि वहि बानी । माखन मोहिं देतिहैं आनी ॥

मानों मेरे घर कछु नाहीं। तब नहिं उरहन देत लजाहीं॥
ढोटा मेरो तुमहिं बँधायो। उरहन दै दै मूड़ पिरायो॥
रिसहीमें मोको गहि दीन्हों। सबको ज्ञान जानि मैं लीन्हों॥
बोली अपर एक ब्रजनारी। देखहु यशुमति सुतहि निहारी॥
मुखछबि कोटिचन्द्र बलिहारी। यह हैं साह कि चोर बिहारी॥
नाहिन तरुण किशोर कन्हाई। कितहिकरत इनसों रिसमाई॥
कहा भयो जो उरहन आने। बालक हरि अबहीं कह जाने॥

अमित असित जो लासते, चपल सजल दृगकोर।
मनहुँ मीन बंसी विधे, करत सलिल झकझोर॥
लै उठाय उर धारि, छोरि उदरते दावँरी।
प्राण दीजिये वारि, मोहन मदनगोपालपर॥

तेरो कठिन हियो है माई। कहत एक ग्वालिनि समुझाई॥
ऐसो माखन दधि बहि जाई। बांधे कमलनयन जेहि लाई॥
जो मूरति शिव ध्यान लगावैं। सपनहुँ सुर नहिं देखन पावैं॥
निगमनहूं खोजत नहिं पाई। सोतैं दै करताल नचाई॥
याहीते तू गर्व भुलाई। घर बैठे तेरे निधि आई॥
काहूको सुत रोवत देषी। लेत धाय उर लाय विशेषी॥
अब यह कित सीखी चतुराई। निज सुतसों इतनी कठिनाई॥
कहत एक देखहु नन्दनारी। कबके ऊखल बधे मुरारी॥
गयो सुधाते सुख कुम्हिलाई। अति कोमल तनु श्यामकन्हाई॥
भई बेर बीते युग यामा। हरिके निकट आय गो धामा॥

तू लागी गृहकारजमाहीं । है निरदयी दया कछु नाहीं ॥
घरको काज इनहुं ते प्यारो । यशुमति नेक न हृदय विचारो ॥

जलजलोल लोचन सजल, भये त्रासते दीन ।
चितवत तेरे वदन तन, मनमोहन आधीन ॥
केतिक गोरस हान, जाको तोरत कान तू ।
वारि दीजिये प्रान, रोम रोमपर श्यामके ॥

हरिको देखि सखा इक धायो । तिन हलधरसों जाय सुनायो ॥
अहो राम तुम्हरो लघु भैया । बांध्यो आज यशोदा मैया ॥
काहूके लरिकहिं हरि मारयो । यशुमति पै तिन जाय पुकारयो ॥
तबते हरिहि बांधि बैठायो । छोड़ति नाहिन सबहि छुड़ायो ॥
सो हम तुमहिं जनावन आये । हलधर सुनत तुरत उठि धाये ॥
माता डर तन अतिहि त्रसाये । हरिहिं देखि लोचन भरि आये ॥
कहत भले दोउ भुजा बँधाये । ऊखलसों बांधे हरि पाये ॥
मैं वरजे कइ बार कन्हाई । आजहुँ छोड़ि देहु लँगराई ॥
दोउ कर जोरि कहत री मैया । काहेको बांध्यो मेरो भैया ॥
श्यामहि छोड़ि बांधि बरुमोहीं । और कहा कहिये अब तोहीं ॥
मेरो प्राण अधार कन्हाई । ताको भुज मोहिं बँधी दिखाई ॥
कौन काज गोरस धन धामा । जिहि कारण बांध्यो घनश्यामा ॥

छूतो और जो तनक कोउ, आज देखतो सोय ।
तू जननी कछु वश नहीं, जो कछु करै सो होय ॥

तेरे बश हरि आहिं, को जानै किहि पुण्यते।
तू पहिचानत नाहिं, गोरस हित बांधत हरिहि ॥
सुनहु बात हलधर तुम मेरी। करन देहु सेवा इनकेरी ॥
माखन खात पराया जाई। प्रगटत चोरी नाम कन्हाई ॥
तुमहीं कहो कमी किहिकेरी। नवनिधिको मेरे घर ढेरी ॥
हौं हारी बरजत दिनराता। मानत नाहिन मेरी बाता ॥
कहा करौं हरि अतिहि खिझाई। भयो बहुतही ढीठ कन्हाई ॥
मेरो कह्यो तनक नहि मानै। नित उठि टेक आपनी ठानै ॥
भोर होत उरहन लै आवै। ब्रजयुवतिनते मोहिं लजावै ॥
जहँतहँ धूम मचावत जाई। घर नहिं रहते तनक कन्हाई ॥
तुमहू दोष देत हो मोहीं। कान्हरते प्यारो दधि तोहीं ॥
तोहिं तजि और कहौं किहि मैया। औरको मेरो मान रखैया ॥
तेरोसौं जननी सुन मोहीं। उरहन देत झूठ सब तोहीं ॥
है सब ब्रजको श्याम पियारो। श्याम सकल ब्रजको रखवारो॥
दधि माखन पय कान्हको, कान्हाको सब गाय।
मोहू को बल कान्हको, तू नहि जानत माय ॥
बलदाऊकी बात, सुनि हँसिके यशुमति कह्यो।
तुम एकमति दोउ भ्रात, जानत मैं तुम्हरे चरित ॥
हरिहि देखि हलधर मुसकाने। यह तुम गति तुम बिनको जाने
को तुम छोरन बांधनहारा। तुम छोरत बांधत संसारा ॥
कारण करन करत मन माने। अतिहित यशुमति हाथ बिकाने

असुरसँहारन जनदुखमोचन। कमलापति राजीव विलोचन॥
भक्तनके वश रहत सदाई। ताहीते कछुओ न बसाई॥
हरि यमलार्ज्जुन तरुतन हेरे। मनमें कहत दास ये मेरे॥
अबहीं आजु इन्हें उद्धारौं। दुसह शाप मुनिवरको टारौं॥
इनहींके हित भुजा बँधाई। परसि विटप अब देहुँ गिराई॥
दारुण दुख इनको सब टारों। इहि मिसिकरि बंधन निरवारौं॥
भक्तवछल हरि दीनदयाला। करुणासिन्धु अगाध कृपाला॥
भक्ताधीन वेद यश गावें। पावनपतित नाम कहवावें॥
भक्तहेतु नाना तनुधारी। करत चरित भक्तन सुखकारी॥

ब्रजवासी प्रभु भक्ति हित, आप बँधायो दाम।
ताही दिनते प्रकटहै, दामोदर सो नाम॥
नंद नंदन घनश्याम, जनरंजन भंजन विपति।
मेटत जिनको नाम, पाप शाप लय ताप दुख॥

यशुदा बाहर छांड़ि कन्हाई। लगी मथन दधि भीतर जाई॥
कहत वचन रसरिस लपटाने। खात फिरत दधि धाम बिराने॥
षटरस छांड़ि आपने धामा। चोरी प्रकट करत हैं श्यामा॥
मारि भजत ब्रजलरिकन जाई। जहां तहां ब्रज धूम मचाई॥
रहौ तुमहुँ हलधर चुप साधी। इनको मेटन देहु उपाधी॥
ऊखलसों बांधे बनवारी। कहत यशोमति सो ब्रजनारी॥
कान्हहु ते तोहि माखन प्यारो। अरी देखि तरसत हरि बारो॥
डारि देहि मथनी नन्दरानी। ह्वै है हरिकी भुजा पिरानी॥

दूध दही हरिपै सब वारो । मोहन जीवन प्राण हमारो ॥
हरुवे बोलि उठी नन्दरानी । जाहु सबै तुम युवति सयानी ॥
मैं खीझत लरिकहि गुण काजे । तुम कित जुरत दई बिन काजे ।
लरिकहि त्रास दिखावत रहिये । अबहींते अवगुण नहिं चहिये ॥

युवति चलीं बिलखाय सब, कहत यशोदहिं पोच ।
मूरुखसों कहिये कहा, करत प्रेमवश शोच ॥
कहा करों बलि जाउँ, कहत चलीं सब श्यामसों ।
धरत यशोदहि नाउँ, अति कठोर मानत नहीं ॥

तबहिं श्यामसुन्दर यह ठानी । युवती धाम गई सब जानी ॥
गृहकारज जननी अटकायो । आप यमलअर्जुन पहँ आयो ॥
परसत पात उठे झहराई । परे शब्द आघात सुहाई ॥
उखरे मूल सहित अरराई । दिये धरणि दोउ तरुन गिराई ॥
भये चकित सब ब्रजके बासी । रहेसकुचितनसुधि बुधि नासी ॥
कोइ भूमि कोइ तकत अकासा । रहे घड़ी इक लौं जकि त्रासा ॥
याही अन्तर युगल कुमारा । प्रगटे धनदतनय सुकुमारा ॥
नारद शाप पाय दोउ भाई । भये हुते ब्रजमें तरु आई ।
हरिके परसत निज गति पाई । भये पुनीत मिटी जड़ताई ॥
तिन्हें कृपालु अनुग्रह कीन्हों । चारिभुजाकरि दरशन दीन्हों ॥
देखि दरश अति पुलक शरीरा । परे चरण दोउ बन्धु अधीरा ॥
बार बार पदरज शिरधारी । जोरि पाणि अस्तुति अनुसारी ॥

अनुसारि अस्तुति युगुल प्रेमानँदमगन सन्मुख खरे ।
जै जै भगत हित सगुण सुन्दर देह धरि आवत हरे ॥
जो रूप निगमन नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे ।
सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उरधरे ॥
धनि धन्य व्रज धन गोप गोपी गाय दधि माखन मही ।
धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही ॥
धनि धनि उरहनो देत नित उठि धन्य अनख बढावही ।
धन्य जननी बाँधि राखति जाहि वेद न पावही ॥
धन्य सो तरु जासुको रजु श्याम सुजन बँधाइयो ।
धन्य सो तृण जासु ऊखल धनि सुजन गढि लाइयो ॥
धन्य ऋषि धनि शाप दीन्हयों अति अनुग्रह सो कियो ।
जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दरशन दियो ॥
अब कृपा करि देहु वर प्रभु चरण पङ्कज मति रहै ।
जहां जन्महिं कर्मवश तहँ एक तुम्हरी रति रहै ॥
दीनबन्धु कृपालु सुन्दरश्याम श्रीव्रजनाथ जू ।
राखिये निज शरण अब प्रभु करिय हमहिं सनाथजू ॥
बार बार पद नाय शिर, विनती प्रभुहिं सुनाय ।
प्रेम मगन निरखत वदन, हर्ष सहित दोउ भाय ॥
साधु साधु कहि नाम, भक्तिदान तिनको दियो ।
विदा किये घनश्याम, हर्षि गये निज पुर युगल ॥
वृक्षशब्द सुनि यशुमति धाई । देखे अजिर न कुँवर कन्हाई ॥

परे बिटप महि लखि अकुलानो। यमलार्जुन तरुवर यह जानो॥
आरत महरि पुकारन लागी। बांधे हरि मैं परम अभागी॥
सुनत शोर ब्रज जन उठि धाये। नन्द द्वार सब आतुर आये॥
देखि गिरे तरु मनहिं डराने। ढूंढ़त श्यामहि अतिहि सकाने॥
बारबार सब करहिं विचारा। गिरे कौन विधि विटप अपारा॥
देखे दुहुँ तरु बीच कन्हाई। रहे बसित ऊखल लपटाई॥
धाय लिये भुज छोरि उठाई। ब्रज युवतिन उर लीन्हें लाई॥
कहत सबै नन्दहि बड़भागी। बचे श्याम कहुँ चोट न लागी॥
कबहूँ बांधत मारत कबहूँ। देत दोष यशुमतिको सबहूँ॥
नयन नीर भरि दौरि यशोदा। लियो लगाय कण्ठ भरि गोदा॥
जरहु सो रिस जिनतुमकोबांध्यो। जरहु हाथ जिन जेवरि सांध्यो

नन्द मोहिं कहिहैं कहा, देखत तरुवर आय।
कुशल रहो अब भ्रात दोउ, मैं लै मरहुँ बलाय॥
श्याम रहे लपटाय, अलि सभीत उर मातुके।
बार बार बलि जाय, यशुमति मन पछितात अति॥

ब्रज युवती लै लै उर लावैं। निरखि वदन तन मन सुख पावैं॥
मुख चूमत यह कहि पछिताहीं। कैसे बचे अगम तरु माहीं॥
बड़ो आयु हरिको है माई। जहां तहां विधि होत सहाई॥
प्रथम पूतना मारन आई। पय पीवत वह तहां नशाई॥
तृणावर्त लै गयो उड़ाई। आपहि गिरयो शिलापर जाई॥
कागासुर आवत नहिं जान्यो। सुनो कहति जिय लेत परान्यो॥

शकटासुर पलना ढिग आयो। को जानै तिहि काहि गिरायो॥
कौन कौन करवर विधि टारो। ऊखलसों बांधे महतारो॥
तहँते उवरयो आजु कन्हाई। ऊपर वृक्ष परे भहराई॥
सबहिन पेलि करत मनभाई। पुण्य नन्दके बच्यो कन्हाई॥
भुजपर बन्धन-चिह्न निहारी। कहत यशोमति सों ब्रजनारी॥
ये गुण यशुमति अहहिं तिहारे। सकुची महरि निरखि हरि प्यारे

तबहिं नन्द आये घरहिं, दोउ तरु गिरे निहारि।
श्याम चपल बांधे सुने, देत महरिको गारि॥
बांधति है बिन काज, मेरे हरि बारे सुतहिं।
कुशल करी विधि आज, शोचत नँद लखि तरुवरन॥

तबहिं तात कहि धाय कन्हाई। लिये नंदकनियां सुखपाई॥
चूमि वदन उरसों लपटाये। प्रेम पुलकि लोचन भरि आये॥
मेरे लाल मैं तुमपर वारी। काहेको बांधे महतारी॥
कैसे गिरे वृक्ष अति भारी। चली नाहिं कहुँ तनक बयारी॥
बार बार शोचत नँदराई। पूछत तैं कछु लखो कन्हाई॥
श्याम कही मैं कछू न जानों। ऊखल ढिग मैं रह्यो छिपानो॥
कहत नन्द हरि वदन निहारी। बड़ी आज विधि करवर टारी॥
बहुत दान हरि हाथ दिवायो। द्विज चरणन लै लै सुत नायो॥
देहिं अशीश विप्र सुखमानी। भये प्रसन्न नन्द सुनि बानी॥
तबहीं श्याम जननिपहँ आये। हर्षि यशोमति कण्ठ लगाये॥

भूखो भयो आज मेरो बारो । काको सुख धौं प्रान निहारो ॥
लाई उरहन ग्वालिनि भिनहीं । यह सब कियो पसारो तिनहीं

पहिले रोहिणि सों कह्यो, तुरत करो जिवनार ।
ग्वाल बाल सब बोलिकै, बैठे नन्दकुमार ॥
वेगि लाउरी मात, भूख लगी मोको बहुत ।
आज न खायों प्रात, सुनत वचन यशुमति हँसी ॥

रोहिणिचितैरहीयशुमतितन। शिरधुनिधुनिपछितातिमनहिंमन
परसहु हरिहि विलम्ब न लावहु । भूखे हरि किनबेगिजिमावहु॥
बहु व्यञ्जन बहु भांति रसोई । कहँ लगि बरणि कहै कबि कोई ॥
परसत जाति यशोमति मैया । जेंवत श्याम सखा बल भैया ॥
जो जो व्यञ्जन यशुमति राखे । तनक तनक मोहन सब चाखे ॥
श्याम कह्यो अब मात अघानो । अब मोको शीतल जल आनो ॥
अँचवन करि अँचये दोउ भैया । अति सुख पायो लखि दोउ मैय॥
सहित सुगन्धि पान कर लीन्हें । बांटि सकल ग्वालनको दीन्ह
भ्राता सहित आप हरि खाये । अधिकै अधर अरुण ह्व आये ॥
निरखत बदन मुकुरके माहीं । ब्रजबासी जन बलि बलि जाहीं
भोजन करत भयो सुख जेतो । वरणि सकै नहि शारद तेतो ॥
जो सुख नन्द भवनके माहीं । सो सुख तीनि लोकमें नाहीं ॥

सुख यशुमति अरु नन्दको, को करि सकै बखान ।
सकल सुखनको खानि हरि, जहां रहै सुख मान ॥

कोटि कोटि ब्रह्मण्ड, इक इक रोम विराट तन ।
सो अपने भुजदण्ड, लिय उछंग यशुमति हरषि ॥
यशमति कहत श्यामसों प्यारे । सुनहु बात मेरि नन्ददुलारे ॥
अपनेही आंगन तुम खेलो । मेरो कह्यो कबहुँ नहि पेलो ॥
कहत चोर ब्रज वनिता तोहीं । सुनि सुनि लाज लगत है मोहीं
ताते रोष होत मन मेरे । तब बांधत मारत जिमि चेरे ॥
हलधर आज कहत है मोहीं । झूठहिं नाम धरत सब तोहीं ॥
ग्वालिनि हँसत कहत इक ऐसे । चोरी नाम फिरत अब कैसे ॥
चोर कहत युवती सब मोको । झूठहिं आय कहत सब तोको ॥
मैं खेलों बाहर जहँ जाई । चितै रहत सब मेरी घाई ॥
अपने घर सब मोहिं बुलावें । मुख चूमति गहि गहि उर लावें ॥
माखन मोहिंनिजकरन खवावें । हाथ जोरिकै विधिहि मनावें ॥
देखत जबहि लेत मोहिं टेरी । मैं नहि जाउँ सोंह मोहिं तेरी ॥
यशमति निरखि वदन मुसकानी । उनको बात सबै मैं जानी ॥

---

## आंखमिचौनी लीला ।

टेरि लेहु सब निज सखन, अरु भैया बलराम ।
सुख दीजे मेरे दृगन, चलहु आपने धाम ॥
यह सुनि हर्ष बढ़ाय, बोलि लिये हलधर सखा ।
खेलहिं आंख मुँदाय, कहत सबनसों मुदित हरि ॥
हलधर कह्यो आंख को मूंदै । हरषि कह्यो हरिजननि यशोदै ॥

हरि अपनी तब आंख मुँदाई। जहां तहां सब रहे लुकाई॥
कान लागि जननी समुझाये। हैं घरमें बलराम छिपाये॥
बलदाऊको आवन देहौं। श्रीदामाको चोर बनैहौं॥
इत उतमें सब बालक आई। यशुमति गात छुवत सब धाई॥
श्याम छुवनके कारण धावत। अति अकुलात छुवन नहिं पावत
धाये सुबल छुवत तब श्यामा। गह्यो जाय तिरछे श्रीदामा॥
कहत नन्दकी सौंह जनाये। जननी ढिग भुज गहि लै आये॥
हँसि हँसि कहत सखासों रामा। अबतो चोर भयो श्रीदामा॥
हर्षित कहत यशोदा मैया। जीत्यो है मेरो पूत कन्हैया॥
जाकी माया जगत खिलावै। ब्रह्मा जाको अन्त न पावै॥
ताहि यशोदा खेल खिलावै। बालक जिमि बचनन फुसलावै॥

जाके उर त्रैलोक थल, पञ्च तत्त्व चौखान।
सो बालक ह्वै खेलई, यशुदाके गृह आन॥
दुर्लभ जप तप योग, ज्योतिरूप जग धाम हरि।
धन्य सो ब्रजके लोग, बालक करि मानत तिन्हैं॥

कहत भई यशुमति महतारी। भई रात अब सुनहु मुरारी॥
करहु बियारू अब कछु प्यारे। बहुरि खेलियो होत सबारे॥
मोको तो कछु रुचि नहिं आवै। तू कहि भोजन कहा बतावै॥
बेसन मिली कनिककी पूरी। कोमल उज्ज्वल हैं अति रूरी॥
अबहीं ताती तुरत बनाई। रोहिणि तुम्हरे हेत कन्हाई॥
निबुआ आम करौल सँधानो। जासों तुम अतिही रुचि मानो

बलके सङ्ग बियारू कीजै । मेरे नयननको सुख दीजै ॥
तनक तनक धरि कञ्चन थारी । लै आई रोहिणि महतारी ॥
श्याम राम मिलिकरतबियारी । अति अनन्ददोउ जननिनिहारी
खात खात दोऊ अलसाने । सुख जँभात जननी पहिचाने ॥
जल अँचवाय कमल मुख धोई । बांह पकरि पलँगा लै सोई ॥
सोवत राम श्याम दोउ भैया । हरुवे पांय पलोटति मैया ॥

सोये श्याम सुजान हरि, सुखसों बीती रात ।
बहुरि कलेऊके लिये, जननि जगाये प्रात ॥
दियो कलेऊ प्रात, माखन प्यारे श्यामको ।
मुदित निरखि दिन रात, यशुमति हरिके चरितको ॥

---

## वृन्दावनगमन लीला ।

महर महरि यह मनहिं विचारी । गोकुल होत उपद्रव भारी ॥
जबते जन्म भयो हरिकेरो । नितहिं होत उतपात घनेरो ॥
आकस्मात गिरो तरु भारी । बच्यो बड़ेनके पुण्य मुरारी ॥
तातें अब तजियें यह गाऊं । बसियें चलि कहुँ उत्तम ठाऊं ॥
नन्दराय तब गोप बुलाये । समाचार ये सबनि सुनाये ॥
सबहिनके मनमें यह आई । बसिये अनत कहूं अब जाई ॥
नितहिं उपाधि नई जिहि ठाहीं । बसिबो भलो तहांको नाहीं ॥
नन्द कह्यो मैं मनहिं विचारी । है इक ठाउँ बहुत सुखकारी ॥

वृन्दावन गोवर्द्धन पासा। तहँ सबको सब भांति सुपासा॥
तहां गोपगण सब सुख पैहैं। बनमें गोधन वृन्द चरहैं॥
यह विचार सबके मन भायो। चलिवेको शुभ दिवस धरायो॥
वृन्दावन सब चले गुवाला। पांच बरषके मदनगोपाला॥

शकट सौज सब साजिकै, गोधन दिये हंकाय।
चले गोप गोपी हरषि, वृन्दाबन समुदाय॥
निरखि अनूपम ठाम, शकट दिये सब छोरिकै।
सबके मन बस आराम, बसे सकल वृन्दाविपिन॥

बसे सकल वृन्दावनमाहीं। अति आनन्द गोप मनमाहीं॥
गाय वच्छ सबही सुख पायो। चरत निकट तृण हरित सुहायो॥
हलधर धेनु चरावन जाहीं। मनमोहन लखि मनहिं सिहाहीं॥
प्रात चले सब गाय चरावन। जननीसों बोले मनभावन॥
मैं हू गाय चरावन जैहौं। बड़ो भयो अब नाहिं डरैहौं॥
सङ्ग सखा अरु हलधर भैया। इनके सङ्ग चरैहौं गैया॥
बालन सङ्ग यमुन तट माहीं। खेलहिं गे सब वटकी छाहीं॥
अपनी रुचि मनके फल खैहौं। तेरीसों यमुना नहिं न्हैहौं॥
ऐसी अबहिं कहो जिन बारे। देखहु अपनी भांति ललारे॥
तनक पायँ चलिहो किहि भांती। गैयन आवत ह्वै है राती॥
प्रात जात गैयन लै चारन। आवत सांझ लखौ सब ग्वारन॥
तुम्हरो कमलवदन मुरझै है। रेंगत घाम सांझ दुख पैहै॥

तेरीसों मोहिं घाम नहिं, लागत भूख न नेक ।
कह्यो कान्ह मानत नहीं, करै आपनी टेक ॥
चले चरावन गाय, ग्वाल बाल बलदेव बन ।
हेरो टेर सुनाय, गोधन करि आगे लिये ॥

हेरो टेर सुनत लरिकनकी । गये दौरि हरि अति रुचि मनकी ॥
इत उत यशुमति जबहिं निहारी । दृष्टि न परे श्याम बनवारी
बनतन जान्यो जात कन्हाई । टेरत यशुमति पीछे धाई ॥
जात चले गैयन सङ्ग धावत । बलदाऊको टेरि बुलावत ॥
पीछे जननी आवत जानी । फेरि फेरि चितवत भय मानी ॥
हलधर आवत देखि कन्हाई । ठाढ़े किये सखा समुदाई ॥
पहुँची जननि भये सब ठाढ़े । रिस करि दोउभुज पकरे गाढ़े ॥
बल कह जान देहु सङ्ग मेरे । बनते ऐहैं आज सवेरे ॥
कह्यो यशोमति बलहिं निहारी । देखत रहियो मैं बलिहारी ॥
ग्वाला सङ्ग गये बनहिं कन्हाई । यशुमति यहै कहत घर आई ॥
देखो हरि कैसो ढङ्ग लीन्हों । अपनो टेक पर्‌यो सोइ कीन्हों ॥
आज जाय देखहु बन माहीं । कहां परोस धर्‌यो तिहि ठाहीं ॥

माखन रोटी और जल, शीतल छाक बनाय ।
दई वेगही ग्वाल सङ्ग, यशुमति बनहिं पठाय ॥
चिन्तामणि सुर भेक, पञ्च सुधारस कल्पतरु ।
अनुदिन जाके एक, खात छाक सो ग्वाल सङ्ग ॥

वृन्दावन खेलत नन्दलाला । भयो हिये आनन्द बिशाला ॥
जहँ जहँ ग्वाल गाय सङ्ग जाहीं । तहँ तहँ आप फिरत बनमाह ॥
बलदाऊसों कहत कन्हाई । नित ल्यावहु मोहिं सङ्ग लिवाई ॥
आज मल्ह करि आवन पायो । जननी तुम्हरे कहे पठायो ॥
काल्हि कौन विधिकरि बनऐहौं । यशुमति पै आवन नहिं पैहौं ॥
सोवत बोलि लीजियो मोको । सौंहें नन्दबबाकी तोको ॥
पुनि पुनि विनयकरत सुखदाई । बलसों सखन समेत सुनाई ॥
संध्या समय निकट जब आई । घरकहँ चलौ कह्यो बल भाई ॥
गैयन घेरि करी यकठौरी । चले सदन सब गावत गौरी ॥
आवत बनते धेनु चराई । ग्वालन मध्य श्याम सुखदाई ॥
जिहि जिहि भाँति ग्वालमुखभाखैं । सुनिसुनि मनमोहनउर राखैं ॥
नान्हें स्वर पुनि आपुनि गावैं । तारी देत हँसत सुख पावैं ॥

मोर मुकुट बनमाल उर, पीताम्बर फहराय ।
गो-पदरज छबि वदनपर, आवत गाय चराय ॥
छुटी अलक छबि देत, जलज वदनपर मधुप जनु ।
आवत सखन समेत, नन्दसुवन ब्रज प्राणधन ॥

देखत नन्द यशोदा ठाढ़े । रोहिणि अरु ब्रज जन सुख बाढ़े ॥
गायन सङ्ग श्याम जब आये । लै बलाय जननी उर लाये ॥
आज गयो हरि गाय चरावन । मैं बलि जाउँ तनकसे पांवन ॥
मो कारण कछु बनते लाये । तुमको मिलि मैं अति सुख पाये ॥
आंचरसों सब अँग अँग झारे । बदन पोंछि मुख चूमि दुलारे ॥

खाउ कछुक जो भावे मोहन। दे री माखन रोटी सोहन॥
दिये जिमाय तुरत दोउ भैया। अति आनन्द मगन मन मैया॥
कहत जननिसों श्री व्रजनाथा। प्रात नितहि जैहौं बल साथा॥
मैं अपनी अब गाय चरैहौं। तेरे कहे घरहि नहिं रैहौं॥
ग्वाल बाल गायनके माहीं। नेकहु डर लागत मोहिं नाहीं॥
आज न सोवों नन्द दुहाई। रहिहौं जागत कहत कन्हाई॥
सब मिलि गाय चरावन जाहीं। मैं क्यों रहौं बैठि घर माहीं॥

सोय रहौ अब श्याम तुम, जननि कहै चुचकारि।
प्रात जान कहिहौं तुम्हें, बनको मैं बलिहारि॥
ज्यों त्यों राखे खाय, प्रात देन बन जान कहि।
जननी दाबत पांय, श्रमित जानि बन गमनके॥

बहुते दुख हरि सोय गयोहै। ज्यों त्यों करि मन बोध लयोहै॥
सांझहि ते लाग्यो इहि बातें। जान कहत बन उठि पुनि प्रातें॥
यह लै संग लागि बलरामहिं। गये लिवाय आज बन ग्रामहिं॥
अब तो सोय रह्यो करि ऐसे। प्रात विचार करे धौं कैसे॥
कहत नन्द बलके सँग जाई। इत उत आवन दे फिरि धाई॥
भोर भयो यशुमति कह प्यारे। जागहु मोहन नन्ददुलारे॥
बीतीनिशि रवि किरण प्रकाशी। शशिमलीनउडुगणद्युति नाशी
सुनहु शब्द बोलत खगमाला। खोलहुअम्बुजनयन विशाला॥
सुनत श्याम जननीकी बानी। जागि उठे सन्तन सुखदानी॥
लाई तुरत कलेऊ मैया। माखन रोटी खात कन्हैया॥

टेरत ग्वाल सखा सब द्वारे। आये तबके होत सकारे॥
खेलहु ब्रज भीतरही प्यारे। दूर कहूं मति जाहु ललारे॥

टेरि उठे बलराम तब, आवहु धाय कन्हाय।
जात ग्वाल बनको सबै, चलहु चरावन गाय॥
श्याम जोरि दोउ हाथ, जननी सों हाहाकरत।
जैहैं ग्वालन साथ, गोचारन वृन्दाविपिन॥

टेरत मोहिं दाऊरी मैया। जैहौं बनहिं चरावन गैया॥
बनफल तोरि देत मोहिं जाई। आपुन घेरत गैयन धाई॥
जैहौं अरु ग्वालन सँग नाहीं। मोहि खिझावत वे बन माहीं॥
मैं अपने दाऊ सँग रैहौं। देखत वृन्दावन सुख पैहौं॥
आगे दै लावत मग माहीं। तू क्यों जान देत मोहिं नाहीं॥
लीन्हों यशुमति बलहिं बुलाई। सुनहु लाल हरिके गुण आई॥
कहत यशोमतिसों बल भैया। जान देहु मोसंग कन्हैया॥
अपने ढिगते नेकु न टारौं। जिय परतीति नेक नहिं धारौं॥
तू काहे डरपति मनमाहीं। जान देत हरिको क्यों नाहीं॥
हँसी महरि सुनि बलकी बानी। जाहु लिवाय कहत नँदरानी॥
मैं बलिहारी तुम्हरे मुखको। तुमहूं कहत श्यामके सुखको॥
अति आनंद भयो हरि धाये। दोऊ संग खरकमैं आये॥

धाय धाय भेंटत सखन, उर अति हर्ष बढ़ाय।
पठयो मैया मोहिं बन, चलहिं चरावन गाय॥

कहत सखा सुख पाय, चलहु श्याम देखौ बनहिं ।
बनमाला पहिराय, करत चित्र बन धातु तन ॥
चले बनहिं सब गाय चरावन । सखा सङ्ग सोहत मनभावन ॥
ग्वाल बाल सब कछुक सयान्हे । नंदसुवन तिनमें कछु नान्हे ॥
गाय गोप गोसुत बन जाई । तिनके मध्य श्याम सुखदाई ॥
हरिसों सखा कहत समझाई । छोड़ि कहूँ जिन जाहु कन्हाई ॥
वृन्दावन अति सघन विशाला । जैहौ भूलि कहूं नन्दलाला ॥
सुनत श्यामघन तिनकी बाता । मन मन हँसत कहत जगताता
तुम्हरो सङ्ग न छांड़त राई । बनहि डरात बहुत मैं भाई ॥
जात चले सब हर्ष बढ़ाये । खेलत श्याम सङ्ग सुख पाये ॥
कोउ गावत कोउ वेणु बजावै । कोउ नाचत कोउ कूदत आवै ॥
देखि देखि हरि अति हर्षाहीं । हँसत सखन सों दै गलबाहीं ॥
भली करो तुम मोको लाये । आज यशोमति हर्ष बढ़ाये ॥
इहि विधि गोधन लै सब ग्वाला । यमुनातट पहुँचे नन्दलाला

दई धेनु बगराय सब, चरत आपने रंग ।
गाय चरावत नंदसुत, मिलि ग्वालनके संग ॥
उर मुक्तनकी माल, शीश मुकुट कटि पीतपट ।
हाथ लकुटिया लाल, डोलत ग्वालन सङ्ग प्रभु ॥

---

## वत्सासुरवध लीला।

खेलत श्याम सखनके माहीं। यमुनाके तट तरुकी छाहीं॥
वत्सासुर तिहिं अवसर आयो। पठयो कंस काल नियरायो॥
वत्स रूप धरि आय समान्यो। कृष्ण ताहि आवतही जान्यो॥
बल तन चितै कह्यो मुसकाई। तुम याको जानत हौ भाई॥
यह तो असुर वत्स ह्वै आयो। हमको मारन कंस पठायो॥
हलधरहू देख्यो धरि ध्याना। कहत सांच तुम श्याम सुजाना॥
ग्वालनहूं सों कहत कन्हाई। बछरा घेरि करो इक ठाई॥
लाये घेरि वत्स सब ग्वाला। वह नहिं घिरहिं चपल विकराला॥
बार बार हरि ओर निहारै। दांव घाल मन माहिं विचारै॥
तब हरि कह्यो याहि मैं ल्यावत। तुमतौ याको छुवन न पावत॥
हाथ लकुटिया लै हरि धाये। वत्सासुरके सन्मुख आये॥
हरिको जबहिं जुदो करि पायो। असुर कोप करि मारन आयो

धायो असुर करि क्रोध मारन श्यामके सन्मुख गयो।
ह्वै गयो निष्पाप तबहीं योग्य सुरपुरके भयो॥
धायके हरि चपरि ताको पकरि पायँ फिराइयो।
पटक्यो धरणि तनु असुर प्रगट्यो फेरि श्वास न आइयो॥

वत्सासुर सुरपुर गयो, अधम असुर तनु त्याग।
सुर हर्षत बर्षत सुमन, गगन सहित अनुराग॥
धाय परे सब ग्वाल, चकित कृष्ण बल देखिकै।
धन्य धन्य नँदलाल, कहत परम आनँद भरे॥

असुर देखि सब अचरज पायो । कहत हमैं हरि आज बचायो ॥
बछरा करि हम जान्यो याही । यह तो असुर भयानक आही ॥
आज सबनि धरिकै यह खातो । और कौन पै जात निपातो ॥
हरषि हरषि हरिको उर लायो । असुर निकन्दन नाम सुनायो ॥
कहत ग्वाल धनि धन्य कन्हाई । धन्य धन्य ब्रज प्रगटे आई ॥
यह ऐसो तुम अति सुकुमारा । केहि विधि भुजन फिराय पछारा
सबहीके देखत पलमाहीं । मारयो असुर डरे तुम नाहीं ॥
अबलौं हम न तुमहिं पहिचान्यों । हौ तुम बड़े सबनते जान्यों ॥
कोउ वनमाल आनि पहिरावैं । कोउ बनधातु रगरि तनु लावैं ॥
कोउ कुण्डल शिर मुकुट सँवारैं । अलकावलिकोउ तिलक सुधारैं
जाल भुजनपर कोउ बलिहारैं । तनु देखत कोउ वदन निहारैं ॥
वनफल तोरि धरत कोउ आगे । कहत खाउ मीठे अति लागे ॥

> इहि विधि हरिको पूजिकै, ग्वाल बाल हरषाय ।
> सांझ निकट आवत चले, घरको धेनु चराय ॥
> परम मुदित सब ग्वाल, असुर मारि आवत घरहिं ।
> गावैं शब्द रसाल, ब्रजवासी प्रभुके गुणन ॥

सखन मध्य सोहत नँदनंदन । जलद श्याम तनु चित्रित चंदन
मोर मुकुट पट पीत सुहावन । इन्द्रधनुष दामिनिहिं लजावन ॥
मुक्तमाल वनमाल विराजै । वक शुक अवलि मनहुँ छवि छाजै ॥
हाथ लकुट कल कुण्डल कानन । कोटि काम छवि शोभित आनन
कुटिल अलक भ्रुव नैन विशाला । गोपदरज कन द्युति छविजाला।

बल मोहन बनते बनि आवैं। निरखि निरखि ब्रजजन सुखपावैं॥
सखन सहित हरि धामहिं आये। हरषि यशोमति कण्ठ लगाये॥
कहत ग्वाल सुनु यशुमति मैया। है तेरो रणवीर कन्हैया॥
वत्स रूप एक दानव बनमें। आय समान्यो बछरागनमें॥
हम ताको कछु जानि न पायो। सो वह हरिको मारन धायो॥
क्षणहीं माहिं ताहि हरि माऱ्यो। हम देखत महिपटकि पछाऱ्यो॥
यह कोउ बडो पूत तैं जायो। भाग हमारे ब्रजमें आयो॥

सुनि ग्वालनके वचन ते, वत्सासुर को घात।
यशुमति सबके पायँ परि, बार बार पछितात॥
भयो महरि उर त्रासु, बचे आज हरि असुरते।
मैं न बिगाऱ्यो कासु, भयो सहायक आनि हरि॥

यशुदा शोच करत तू जाये। यह तो ख्याल कान्हके भाये॥
परबत तुल्य विकट तनु जाही। कियो प्राण बिन क्षणमें ताही॥
तुम्हरो रक्षाको यह नाहीं। हम सबको रक्षक यह आहीं॥
याके चरणकमल चित लैये। बार बार याको बलि जैये॥
ग्वालन यों हरिके गुण गाने। ब्रजजन सब आश्चर्य भुलाने॥
लीलासागर हरि सुखदानी। मोहे सब नरनारि सुबानी॥
हँसि जननी सों कहत कन्हाई। देख्यों मैं वृन्दावन जाई॥
अति रमणीक भूमि द्रुम नीके। कुञ्ज सघन निरखत सुख जीके॥
अति कोमल तृण हरित सुहाये। यमुनाके तट बच्छ चराये॥
बनफल मधुर मिष्ठ अति नीके। भूख मिटी खाये तिनहींके॥

सखन सङ्ग खेलत बटछाहीं । बनमें मोहि लगत डर नाहीं ॥
रोहिणि सहित यशोदा माता । मुदित सुनत हरिकी मृदु वाता
मोहि लियो मन जननिको, मधुरे वचन सुनाय ।
वत्सासुरको शोच उर, चणमें दियो मिटाय ॥
लगे दुहन सब गाय, जहँ तहँ हर्षित गोपगण ।
गये तहां हरि धाय, गाय दुहन चाहत सिखन ॥

---

## धेनुदुहनको लीला ।

धेनु दुहत हरि देखत ग्वालन । कहत मोहि सिखवो गोपालन ॥
मैं दुहिहौं मोहि देहु सिखाई । बैठि गये तिनसङ्ग कन्हाई ॥
कैसे गया थनहिं लगावत । कैसे नोय पगन अटकावत ॥
घुटरुन गहत दोहनी कैसे । मोहिं बताय देउ तुम तैसे ॥
कैसे धार दूधकी होई । देहु दिखाय मोहि सब कोई ॥
कहत ग्वाल तुम सुनो कन्हाई । भई अवार आज अति भाई ॥
तुमको सिखवैं दुहन सवारे । अब कहुं लगिहै चोट तुम्हारे ॥
श्याम कह्यो सबही समुझाई । भोर दुहौं निज नन्द दुहाई ॥
मेरी सों मोहि लीजो टेरी । मैं दुहिहौं निज गाय सवेरी ॥
दुष्ट दलन सन्तन सुखदाई । ठाढ़े गैयन मांझ कन्हाई ॥
आवहु कान्ह सांझको वेरिया । कहत जननि यह बड़ीऊ बिरिया
लरिकाई कछु छांड़त नाहीं । सोवहु लाल आय घर माहीं ॥

आये हरि यह सुनतही; जननि लिये अँकवार।
लै पौढ़ाये सेजपर, अजिर चांदनी चार॥
कहत कहत कछु बात; सोय गये वश नींदके।
कहत यशोमति मात, सोय गयो हरि अजिरहीं॥
दोउ जननी हरुवैके हरिको। सेज सहित लीन्हें भीतरको॥
बहुत आज हरि सोय गयो है। अतिहि नींदके वशहि भयोहै॥
नेक न बैठत थिर घर माहीं। खेलनमें मन रहत सदाहीं॥
रोहिणि कहत देउ किन सोवन। खेलत हारि गयो मनमोहन॥
माता हरुवै पवन ढुरावति। निरखि वदन सुन्दर सुख पावति॥
प्रात जगावत नंदकि रानी। उठहु श्यामसुन्दर सुखदानी॥
नाहिन इतो सोइयत लाला। सुन सुत प्रात समय शुचिकाला॥
उग्योतरणि कुमुदिनि सकुचानी। घरघर ग्वालिनिमथतमथानी॥
बार बार टेरत सब ग्वाला। सांझ कह्यो तुम दुहन गोपाला॥
होत अबार गाय सब ठाढ़ी। भरि भरि चीर भार थन बाढ़ी॥
वत्स पुकारत आरत ताई। दुहत नाहि तुम सौंह दिवाई॥
तुम्हरे लिये ग्वाल सब ठाढे। देखत वाट प्रेम उर वाढ॥
यह सुनतहि तुरतहि उठे, शशिमुख ते पट टार।
धेनु दुहन सीखन चले, मोहन नन्दकुमार॥
लाउ रोहिणी मात, वेगि तनकसी दोहनी।
कह्यो सिखावन तात, आज मोहिं गैया दुहन॥
रोहिणि तुरत दोहनी लाई। घर घरते देखन सब आई॥

झटपट आसन बैठि कन्हाई । गोधन कर लीन्हों सुखदाई ॥
धार अनतहीं जात निहारी । हंसे नन्द यशुमति महतारी ॥
चितैचोरचितहरि हंसिदीन्हों । व्रजवासी जनबलिबलिकीन्हों॥
किये यशोमति आनँद भारी । दियो दान विप्रनहिं हँकारी ॥
गावत मङ्गल व्रजकी नारी । दुही गाय सन्तन हितकारी ॥
अति आनन्द मगन नन्दराई । बैठे प्रमुदित गोप अथाई ॥
लिये गोद सुन्दर घनश्यामहिं । व्रजके जीवन जन सुखधामहिं॥
आयो तहां एक बनजारो । मूंगा मोती बेंचनहारो ॥
तिहिं लखि अटके नन्दकुमारा । देहि देहि कहि बारम्बारा ॥
दीरघ मोल कह्यो व्यापारी । रहे ठगे सब गोप निहारी ॥
करपर राखि रहे हरि मोती । देत नहीं लखि सुन्दर ज्योती ॥

---

## मोतीबोनेकी लीला ।

मुक्ता लै हरि घर गये; बये अजिर बलबीर ।
आल बाल थल रोपिकै, पुनि पुनि सींचत नीर॥
हँसत यशोमति मात, कहत करत मोहन कहा ।
यह नहिं जानत बाल, ये करता सब जगतके ॥

भये तुरत शाखा दल तामें । यशुमति अजिर मुक्तफल जामें ॥
फूलत फूलत न लागी वारा । ब्रह्मादिक नित करत विचारा ॥
सुर नर मुनि कोउ मरमनजानें । देखि देखि अति अचरज मानें

नन्द भवन हरि मुक्त जमाये। ब्रजवनितन गुहि हार बनाये ॥
ब्रजवासी यह प्रभुकी लीला। सब गुण समरथ सब गुणशीला ॥
क्षणमहँ जासु रजायसु माया। प्रकट करत ब्रह्माण्ड निकाया ॥
ब्रह्मादिक जेहि पार न पावैं। नन्द अजिर सो ख्याल बनावैं ॥
जाको महिमा लखै न कोई। निरगुण सगुण धरे वपु सोई ॥
लोक रच नाशै प्रतिपारै। सो ग्वालन सँग लीला धारै ॥
शिव विरञ्चि मुनि ध्यान न आवैं। ताहि यशोमति गोद खिलावैं
अगम अगोचर लीलाधारी। सो वृन्दावन कुञ्जविहारी ॥
बडे भाग्य सब ब्रजके वासी। जिनके सँग विहरत अविनासी ॥

धनि धनि ब्रजके नारि नर, धनि यशुदा धनि नन्द।
विहरत जिनके सदनमें, ब्रह्म सच्चिदानन्द ॥
कहि कहि देव सिहायँ, धन्य धन्य ब्रज बाग बन।
जहां चरावत गाय, सकल सुरन शिरमुकुटमणि ॥

---

अथ बकासुरवध लीला ॥

प्रात चले उठि गाय चरावन। हलधर सुन्दरश्याम सुहावन ॥
देखत छबि ब्रजसुन्दरि ठाढी। करत परस्पर आनँद बाढी ॥
देखु सखी ब्रज ते बन जाहीं। बल मोहन ग्वालनके माहीं ॥
रोहिणसुत छबि गौर सुहाई। यशुमतिसुवन श्याम सुखदाई ॥
ओढे नील पीतपट सोहैं। सो छबि निरखि वदन मन मोहैं ॥

युगल जलद घन दामिनि जानौं । जो रतिनाथ परस्पर मानौं ॥
शीश मुकुट कल कुण्डल कानन । अलकें बिथुरि कपोलन आनन ॥
सखन मध्य सोहत नँदलाला । मन्द हँसनि दृग कमल विशाला ॥
कटि किंकिणि करलकुट सुहाये । जात चले वन मनहिं चुराये ॥
रहीं थकित लखि सब ब्रजनारी । गये वनहिं विहरत वनवारी ।
वन वन फिरत चरावत गैया । हलधर श्याम सखा इक ठैया ॥
करत विहार विविध वनमाहीं । बाल केलि रस वरणि न जाहीं ॥

कबहूं गावत सखन सँग, कबहुँ बजावत बेनु ।
धौरी धूमरि नामलै, कबहुँ बुलावत धेनु ॥
कबहुँ नचावत मोर, सुन्दर श्यामल जलद तन ।
गरज मुरलि घन घोर, बरषत परमानन्द जल ॥

खेलत विविध खेल मनभावन । श्रीवृन्दावन परम सुहावन ॥
तृषित जानि गैयन नँदलाला । कह्यो चलहु जल देन गुपाला ॥
लेहु बुलाय सुरभिगण टेरी । सुनत ग्वाल सब लाये घेरी ॥
गोधन वृन्द हांकि सब लीन्हों । ग्वालन गमन यमुनतट कीन्हों ॥
तहां बकासुर छल करि आयो । माया रचित स्वरूप बनायो ॥
एक चोंच भूतल महँ लाई । एक रही आकाश समाई ॥
मगमें बैठ्यो वदन पसारी । ग्वालन देखि भयो भय भारी ॥
बालक जात हते जे आगे । ताहि देखि सो पाछे भागे ॥
कहत भये सब हरिसों आई । आगे एक बलाय कन्हाई ॥
आवत नितहि ग्वाल इहि ठाहीं । ऐसो कबहुँ लख्यो हम नाहीं

तबहिं कृष्ण ताको पहिचान्यों। यहै बकासुर मैं यह जान्यों॥
पलमें आज याहि मैं मारौं। असुर चोंच धरि वदन बिदारौं॥

निडर श्याम आगे भये, चले बकासुर पास।
कहत सखा सब श्याम सों, नहिं जीवनकी आस॥
अबहूं नहीं डरात, बचे किते उतपातते।
चले कहां हरि जात, हम बरजत मानत नहीं॥

तबहरि कह्यो चलहु तेहि पासा। सबमिलि मारिकरहिं बकनासा
जब हरि संग चले सब ग्वाला। देख्यो जाय बकहि विकराला॥
ताके निकट गये सब जबहीं। लियो लीलि हरिको बक तबहीं॥
जान्यो असुर काज मैं कीन्ह्रयों। तबहीं वदन मूंदि कै लीन्ह्रयों
ग्वाल पुकारत आरत भागे। बलसों आय कहन सब लागे॥
हम बरजत हठि गये कन्हाई। लीन्हें लीलि असुर बक धाई॥
हरि चरित्र कछु जानि न जाहीं। उपजी आगि असुर तनुमाहीं
लाग्योजरन भयो अति व्याकुल। हरिकोउगिलिदियोअतिआकुल
बहुरों पकरनको मुख बायो। चोंच पकरि हरि चीरि बहायो॥
मरत चिकार असुर अति भारी। व्याकुल भये ग्वाल भय भारी॥
ग्वालन बिकल देखि बलरामा। कहत असुर मारयो घनश्यामा॥
टेरि उठे उत कुँवर कन्हाई। आवहु सखा वृन्द सब धाई॥
बक विदारि हरि सखनको, टेरत आवहु धाय।
चोंच फारि मारयों असुर, तुमहूं करौ सहाय॥

गये सखा सब धाय, सुनत श्यामके वचन वर ।
निरखि नयन सुख पाय, पुनि पुनि भेंटत पुलक तन ॥
कहत परस्पर सखा सयाने । ये कोउ ब्रज प्रगटे हम जाने ॥
इन्हें नाहिं कोउ घात करैया । ये हैं असुरनके दलवैया ॥
जब ते इन्हें यशोमति जाये । तबते असुर कितेकउ आये ॥
तृणा पूतना शकटा मारे । तब ये रहे बहुत ही बारे ॥
हम देखत वत्सासुर मारयो । किलक बात यह बका बिदारयो ॥
इनके गुण कछु जानि न जाहीं । हम अपने जिय डरे वृथाहीं ॥
धनि यशुमति जिन इनको जाये । धनि हम इनके सखा कहाये
बकहि मारि सुन्दर घनश्यामा । यमुना तट आये सुखधामा ॥
सुरभीगण सब नीर पियाये । सखन समेत आप प्रभु आये ॥
घसि वन धातु चित्र तन कीन्हों । मोरमुकुट माथे धरि लीन्हों
वनमाला रचि सखन बनाई । प्रेम सहित हरिको पहिराई ॥
वनफल मधुर गोप लै आये । सखन सहित हरि भोग लगाये ॥
बल मोहन घरको चले, जानि सांझको बेर ।
लीन्हीं गैया घेरि सब, मुरली की धुनि टेर ॥
चले बजावत बेन; ग्वाल वृन्दके मध्य हरि ।
अँग अँग छबिको एन, ब्रज जन मोहन साँवरो ॥
सुनि मुरली की टेर रसाला । देखन को धाई ब्रजबाला ॥
कहत परस्पर अति सुख पावत । देखु सखी वनते हरि आवत॥
नाना रङ्ग सुमनकी माला । श्याम हिये छबि देत विशाला ॥

मोरपच्छ शिर मुकुट विराजै। मधुर मधुर मुख मुरली बाजै॥
भृकुटी बिकट निकटसुखदाई। तिलक रेखछविबरणि न जाई॥
कुण्डल लोलअलक घुंघरारी। निरख सखीलागतअति प्यारी॥
नाशा निकट अधर अरुणाई। जनुशुक विम्बहि चोंच चलाई॥
मन्द हँसनि घन दामिनि जैसे। दुरि दुरि प्रगट होत हैं तैसे॥
तनु घनश्याम कमल दल नैना। बोलत मधुर मनोहर बैना॥
मुख अरविन्द मन्द सुर गावत। नटवर रूप सखन मन भावत॥
सब अँग चन्दन खोरि बनाये। गुञ्जमाल मन लेत चुराये॥
या मोहन छबि पर बलि जैये। नन्द नदन देखत सुख पैये॥

ग्वाल बाल गोधन लिये, हरि हलधर दोउ भाय।
सांझ समय बनते चले, आये धेनु चराय॥
रांभति धाई गाय, बत्स सुरति कर पय स्रवत।
हरषि यशोदा माय, कहति श्याम आवत घरहि॥

इतनी कहत श्याम घर आये। जननी दौरि हरषि उर लाये॥
ब्रजलरिका सब तुरतहि धाये। महरि महर पद शीश नवाये॥
ऐसो पूत धनत्र तुम जायो। इनको गुण कछु जात न गायो॥
आज गये बन गाय चरावन। चले यमुनतट जलहि पियावन॥
तहां असुर इक खग तनुधारी। रह्यो यमुनतट वदन पसारी॥
एक चोंच महि सों लपटाई। एक रह्यो आकाश लगाई॥
हम बरजत पहिले हरि धायो। ताके मुखमें जाय समायो॥
हम सब डरपि भजे बल पासा। अति व्याकुल तनु भयो निसासा

कैसे धौं हरि बाहर आयो । चोंच फारि तेहि मारि गिरायो ॥
सुनत नन्द यशुमति व्रजनारी । चकित चित्तरहे हरिहिं निहारी
यशुदा कहति कहा कोउ जानै । नित प्रति होत आनको आनै ॥
भयो आज कोउ सुकृत सहाई । विधिको गति कछु जानि नजाई

जन्म भयो है श्यामको, तबते यहै उपाधि ।
कहा सरयो हमरे यतन, बिधि गति अगम अगाधि ॥
किन धौं करौ सहाय, कोजानै भावी प्रबल ।
को मेरे पछिताय, करौ अयानी बूझ बिन ॥

ले बलाय छतियां हरि लाये । प्रेम सलिल लोचन भरि आये ॥
में बलि जाउँ कहत कछु खाहू । तुम कितगाय चरावन जाहू ॥
नन्द महर सो पिता तुम्हारे । मोसौ मात जाय बलिहारे ॥
खेलत खात रहो अपने घर । दधि माखन पकवान विविधबर ॥
निरखि वदन सुनि वचन तुम्हारे । लोचन श्रवण सिरात हमारे
दुष्ट दलन भक्तन सुखदानी । बोले मधुर मातुसों बानी ॥
मैया मैं न चरैहों गैया । अब बन मेरो जात बलैया ॥
मोसों सबै ग्वाल बन जाई । गाय विरावत हैं बरिआई ॥
दौरत मेरे पांय पिराहीं । जब मैं बैठि रहौं तरुछाहीं ॥
जो न पत्याय बूझ बल भाई । देहिं आपनी सौंह दिवाई ॥
यह सुनतहि यशुमति रिसियानी । गारि देत ग्वालन दुखमानी
मैं पठवत लरिकहि बन जाई । आवहि तनिक मनहिं बहलाई ॥

जानहिं कहा चरायकै, अबहीं मोहन गाय।
अति बारो मेरो सुवन, मारत ताहि रिगाय॥
हरि जनके सुखदाय, को जानै हरिके चरित।
मधुरे वचन सुनाय, मोहि लियो मन मातको॥

---

## चकई भवँराखेलन लीला।

कछुक खाय हरि निशिको सोये। प्रातजगाय जननिमुखधोये॥
कियो कलेऊ कछु सुखदाई। जननी सों बोले हर्षाई॥
दे मैया भँवरा चकडोरी। खेलत रहिहौं ब्रजकी खोरी॥
हर्षि जननि आरे पर भाखे। तुम हित नये मोल लै राखे॥
लै आये हरि तुरत निकारी।भये मगन अति रंग निहारी॥
बार बार हर्षित सुख भाखै। मैया बिन अरुको लै राखै॥
विहँसि चले फेरत चकडोरी। खेलन सखन सङ्ग ब्रज खोरी
जैसे आप सखा सब तैसे। सुन्दर कोटि मनोभव जैसे॥
निरखि निरखि छवि गोपकिशोरी। बार बारडारत तृण तोरी॥
सबहिन को मनमोहन भावै। सब ब्रजतिय हरिसों मनलावै॥
यह वासना करैं ब्रजबाला। होहिं हमारे पति नँदलाला॥
हरि अन्तर्यामी सब जानैं। सबके मनकी रुचि पहिचानैं॥
चित दै जो हरिको भजे, कोऊ कौनहुँ भाव।
ताको तैसेई सदा, प्रकटत त्रिभुवन राव॥

भक्तनके सुखदान, भक्तवत्सल भगवान हरि।
नारि पुरुष नहिं मान, प्रेम भावके वश सदा॥

गोपिनके यह ध्यान सदाई। नेक न अन्तर होहिं कन्हाई॥
हरि उनके मनकी रुचि जानी। करहिं बात उनके मनमानी॥
मारग चलत तिन्हैं हठि रोंकै। खेलत मांझ जहां तहँ ठोंकै॥
चकई भँवरा डोरि फिरावैं। तिनके भूषण सों अरुझावैं॥
काहू सों हरि वदन सकोरैं। काहू सों दृग वदन मरोरैं॥
काहू सों अँखियां मटकावैं। आप हँसैं अरु उन्हैं हँसावैं॥
युवतिनके मन बसैं कन्हाई। देखे विन एक पल न सुहाई॥
हरिको खेलन मांझ खिझावैं। खट कौरी दै गारी गावैं॥
गेंद उरोजन माहिं दुरावैं। इहि विधि हरिसों अङ्ग छुआवैं॥
कंचुकि फारि आपुही लेहीं। यशुदहि जाय उरहनो देहीं॥
अन्तर भुज गहि हरिहि दुरावैं॥ कहैं चलौ नंदरानि बुलावैं॥
यशुमति पै तुमको लै जैहैं। कुटिल भौंह किय हम न डरैहैं॥

यों व्रजवनितन नेहवश, आनन्द छवि घनरास।
रसिक पुरन्दर सांवरो, व्रजमें करत विलास॥
अब वरणौं सुखखानि, हरि वृषभानु कुमारिको।
प्राण एकही जानि, प्रथम मिलन दोउ देहको॥

---

## राधाजूके प्रथम मिलनको लीला।

खेलन हरि निकसे ब्रज खोरी। मेघ श्याम तनु पीत पिछोरी॥
श्रवणन कुण्डलकी छबि छाजै। मोर पखनको मुकुट बिराजै॥
दशन दमक दामिनि द्युति थोरी। हाथ लिये फेरैं चकडोरी॥
गये यमुनके तट मनमोहन॥ नाहीं तहां सखा कोउ गोहन॥
औचक दृष्टि परी तहँ राधा। प्रेम राशि गुण रूप अगाधा॥
नयन विशाल भाल दिय रोरी। नील वसन तनुकोछबि गोरी॥
वेणी पीठ करत झकझोरी। अति छबि पुञ्ज दिननिकी थोरी
सङ्ग लरिकिनी आवत देखी। चितै रहे मुख रोक निमेखी॥
रीझि रहे घनश्याम कन्हाई। अनुपम छबि लखि रहे लुभाई॥
नयन वयन मिलि परी ठगोरी। बूझत श्याम कौन तू गोरी॥
रहत कहां काकी है बेटी। अबलौं नहीं कबहुं ब्रज भेटी।
काहेको हम ब्रज तन आवैं। खेलत रहत आपने गावैं॥

सुनत रहत श्रवणन सदा, नंदढोटा ब्रज माहिं।
घर घरते नित चोरिकै, माखन दधि लै खाहिं॥
बिहँसि कह्यो घनश्याम, तुम्हरो कहा चुराय हैं।
आवहु किन ब्रजधाम, नितहि खेलिये सङ्ग मिलि॥

रसिक शिरोमणि नागर दोऊ। प्रीति पुरातन जान न कोऊ॥
ब्रजवासी प्रभु कुञ्जबिहारी। बातन मुर लई हरि प्यारी॥
प्रथम सनेह दुहुन मन जान्यो। गुप्त प्रेम शिशुता प्रकटान्यो॥
कहत श्याम मन कत सकुचावहु। खेलन कबहुँ हमारे आवहु

दूर नहीं कछु सदन हमारो । अवगन सुनियत बोल पुकारो ॥
लीजो मोहिं टेरि नँदपोरी । कान्ह नाम मेरो सुनु गोरी ॥
सूधो वहुत देखियत तुमहूं । ताते साथ कीजियत हमहूं ॥
तुम्हं वबा वृषभानु दुहाई । घरी पहर खेलहु इत आई ॥
गैया गिनन नन्द जब जैहैं । तिनके सङ्ग हमहुं उत ऐहैं ॥
जो तुम गाय दुहावन ऐहौ । खरक मांझ तौ मोका पैहौ ॥
रसिक शिरोमणि जाननराई । इमि प्यारी संकेत बुलाई ॥
सुनत गूढ़ हरिकी मृदुबानी । मनहीं मन प्यारी मुसुकानी ॥

गुप्त प्रीति प्रकटी नहीं, दोउअन हृदय छिपाय ।
मनमोहन प्यारी चली, वरको नयन चलाय ॥
चली सदन सुकुमारि, मनमें उरझो सांवरो ।
जानी बड़ी अवारि, मात त्रास उर आनिकै ॥

कहत सखिन सों चली कुवँरिवर । को जैहै खेलन इनके घर ॥
चलो वेग अपने घर जाहीं । भई अवार यमुनतट माहीं ॥
वचन कहत ऊपर सुख माहीं । हृदय प्रेम दुख मन हरि पाहीं ॥
गई भवन वृषभानु कुमारी । जननी कहति कहां हुति प्यारी ॥
अबलौं कहां अवार लगाई । गैया खरक देख मैं आई ॥
ऐसे कहि मातहि वहराई । अन्तर गति वस रहे कन्हाई ॥
विरह विकल तन गृह न सुहाई । सुन्दरश्याम मोहनी लाई ॥
खान पान कछु नेक न भावै । चञ्चल चित्त पुलकि तनु आवै ॥
मात पिताको मानत त्रासा । नयनन हरि दर्शनकी आसा ॥

कहत दोहनी दै मोहिं मैया। जे हौं खरक दुहावन गया॥
अहिर दुहत तब गाय हमारी। जब अपनी दुहि लेत सवारी॥
घरी एक मोहिं लगि तहँजाई। तू मति आउ खरक अतुराई॥

लई मात सों दोहनी, चली दुहावन गाय।
मन अटक्यो नँदलालसों, गई खरक समुदाय॥
मग मग सोचत जाय, कब देख्यों वह सांवरो।
जिन मन लियो चुराय, खरक मिलन मोसों कह्यो॥

देखे जाय तहां हरि नाहीं। भई चकित प्यारी मन माहीं॥
कबहूं इत कबहूं उत डोलै। प्रेमबिकल कछु मुख नहिं बोलै॥
देखे नन्द सङ्ग हरि आवत। ललकि लगे लोचन सुख पावत॥
देखी श्याम राधिका ठाढ़ी। लई बुलाय प्रीति अति बाढ़ी॥
कह्यो महर लखि खेलहु दोऊ। दूरि कहूं मति जैयो कोऊ॥
सुनि वृषभानुसुता इत आई। अपने साथ खेलाउ कन्हाई॥
हरि तन रहियो नेक निहारें। कोई कहूं गाय जिन मारे॥
नन्द बबाकी बात सुनो हरि। जाहु न मो ढिगते कतहूं टरि॥
महर सौंपि हमको तुम दीन्हों। राधे हरिहि बांहगहि लीन्हों॥
तुमको कहूं जान नहिं देहौं। जोजैहौतौ पकरि लै ऐहौं॥
मेरी बांह छोड़ दे राधा। कहत श्याम ऊपर मन साधा॥
तुहरी बांह न तजौं कन्हाई। महर खीझिहैं हमको आई॥

परम नागरी राधिका, अति नागर ब्रजचन्द।
करत आपनी घात दोउ, बँधे प्रेमके फन्द॥

समुझि पुरातन नेह, व्रजविलास हित तनु धरे।
चलन चहत बन गेह, युगल विहारी कुञ्जके ॥
तबहिं श्याम घन घटा उठाई। गरज मेघ कहि चहुँ दिशि छाई
पवन झकोर चली झकझोरी। चपला चपल चमक चहुँ ओरी
ह गइ भूमि सकल अँधियारी। तसिय तरु तमाल द्युतिकारी ॥
इमि देखिकै कुवँर कन्हाई। कह्यो राधिका सों नँदराई ॥
कान्है सङ्ग लिये घर जा री। भई अकाश घटा अति भारी ॥
लिये बांह गहि कुवँर कन्हाई। चले युगल बन घर हरषाई ॥
नवल राधिका नवल विहारी। पुलक अङ्ग मन आनँद भारी ॥
नवल नेह नवरँग मन भायो। नवल कुञ्जवन सुभग सुहायो ॥
नवल सुगन्ध नवल तरु फूले। गुञ्जत भ्रमर मत्त रस भूले ॥
सुभग यमुन जल पवन झकोरै। उठत श्याम छवि कुञ्जहिंडोरै ॥
वनज विपुल वहुरङ्ग सुहावन। चारु विचित्र पुलिन अति पावन
गये युगल तहँ रसिक रसीले। नागर नवल प्रेम रस गीले ॥

विहरत विविध विलास वन, युगल रूपको रास।
गुण गावत मुनि वेद विधि, अहिपति पति कैलास ॥
अति रहस्य सुखदाय, वनविहार नँदलालको।
क्यों सुक है कवि गाय, वेद भेद पावै नहीं ॥

---

श्लोक गीतगोविन्द।

मेघैर्मेदुरमम्बरं वनभुवःश्यामास्तमालद्रुमै,
नक्तम्भीरुरयं त्वमेवतदिमं राधेगृहम्प्रापय।
इत्थं नन्दनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुञ्जद्रुमं,
राधामाधवयोर्ज्जयंति यमुनाकूलेरहः केलयः॥

चले सदन प्रभु कुञ्जविहारी। गृह पठई अंकम दै प्यारी॥
प्यारीको सारी हरि लीन्हीं। पीत पिछौरी प्यारीहि दीन्हीं॥
चादर जहँ तहँ दिये उडाई। आये सदन श्याम सुखदाई॥
रही यशोमति हरिहि निहारी। ओढे देखि शीशपर सारी॥
मन धौं कहत कहां यह पाई। पीत पिछौरी कहां गवांई॥
यशुमति तुरत आँखि पहिचानी। ब्रजयुवतिन मुरयेयहजानी॥
पूछत हरिहिबिहंसि नँदरानी। तरुणिनको सिखईबुधिठानी॥
पीत पिछौरी किनहिं बिसारी। यह तो लाल लियनकी सारी॥
जानि लई जननी हरि जानी। तब इक बुद्धि तुरत उर आनी॥
मैं ल गाय गयो यमुना री। तहं वह भरति हती पनिहारी॥
बिडरी गाय भजीं सब नारी। बची बँसुरिया बहुत सवारी॥
हौं लै भजो औरकी सारी। सो लै चादर गई हमारी॥

पीत पिछौरी लै भजी, मैं पहिचानत वाहि।
मैया री मैं जायकै, घर लै आवत ताहि॥
हरि माया को जानि, पीताम्बर ताको कियो॥
जननि देखायो आनि, कहत लै आयो ताहिसों॥

राधा गई सदन समुहाई। हाथ दोहनी दूध भराई॥
परम प्रीति हरि वसन दुरायो। जननी द्वारहिते गुहरायो॥
औरकि और कहय सुख बानी। जननी दौरि देखि भय मानी॥
कहत दीठि लागी कहुँ बारी। उर लगाय पछितात निहारी॥
बूझत नेह विकल महतारी। कहा भयो राधा तोहिं प्यारी॥
अबहीं खरक गई तू नीके। आवत कौन व्यथा भइ जीके॥
इक लरिकिनी सङ्गही मेरे। कारे डसी आय तिहि नेरे॥
मुर्छि परी वह धरणि मँझारी। मैं डरपी अपने जिय भारी॥
श्याम वरण इक ढोटा आयो। कहत सुनो वह नँदको जायो॥
कछु पढिके उन तुरतहि झारी। जानत नहीं कौनको बारी॥
मेरे मन भरि त्रास गयोरी। अब कछु नीको नेक भयोरी॥
अति प्रवीण वृषभानु दुलारी। यह कहि समुझाई महतारी॥

सुनि जननी राधा वचन, उरसों लीन्हीं लाय।
कहत टरी करिवर बडी, वार वार पछिताय॥
एक सुता है तात, पायो देवन द्वार परि।
भई आज कुशलात, बची सर्प्पते लाडिली॥

खीझी कछुक कुवँरि पै जननी। घर नहिं रहत फिरत भइ हरनी
कितनो कहत ताहि मैं हारी। दूर कहूँ बाहर जिन जा री॥
हैं लरिकिनी सबन घरमाहीं। तोसी निडर कहू कोउ नाहीं॥
कबहूँ खरिक कबहुँ बन जाई। कबहूं फिरत यमुनतट धाई॥
त्रितै अकाश धरत पग धरनी। बात कहत लागत तोहि जरनी

सात वरषकी भई कुमारी । बहुत महर वृषभानु दुलारी ॥
आज कुशल कुलदेवन कीन्हीं । विधि बचाय विषधरते लीन्हीं ॥
शीतल जल लै तुरत न्हवाई । अङ्ग अँगोछि बसन पहिराई ॥
बारहि बार कहत कछु खा री । अब कहुँ खेलन दूरि न जा री ॥
यह सुनि हँसी मनहिमन प्यारी । हृदयध्यान हरि कुञ्जविहारी ॥
कहत दूर अब कलहुँ न जहौं । गावँ घरहि खेलत नितरहिहौं ॥
जिनके गुणन विरञ्चि भुलाने । तिनके चरित कहा कोउ जाने ॥

जनरञ्जन भञ्जन कलुष, राधा नन्दकुमार ।
गुप्त प्रकट लीला करत, ब्रजमें युगल विहार ॥
देखि अनूपम बाल, मात पिता गुरु जन हरिहि ।
असुर लखत विकराल, नव किशोर चित चोर तिय ॥

सर्ब रूप सब घटके वासी । सब विधि करन सकल सुखरासी ॥
सर्ब भाव सब फलके दायक । सर्वोपर सब गुणके लायक ॥
सर्ब आदि सब अन्तर्यामी । सबते परे सकलके स्वामी ॥
माया ब्रह्म कृष्ण अरु राधा । प्रेम प्रीति दोउ परम अगाधा ॥
छवि शृङ्गार मनहुँ इक जोरी । करत विहार श्याम अरु गोरी ॥
बसे श्याम श्यामा उर माहीं । देखे विन भावत छण नाहीं ॥
खेलन मिसु वृषभानुकिशोरी । आई नन्द महरिकी पौरी ॥
टेरत मधुर वचन सकुचाई । घर भीतर हैं कुवँर कन्हाई ॥
सुनत श्याम कोकिलसमबानी । अति आतुर राधा पहिचानी ॥
मातासों कछु कलह करत धरि । तुरतहिसो बिसरायदियो हरि

तू पहिचानति इनको मया। कहत बारही बार कन्हैया॥
मैं यमुना तट काल्हि भुलान्यों। बांहपकरि मोको इन आन्यों॥

तू सकुचति आवति इहां, मैं दै सौंह बुलाय।
अति नागर जननी हृदय, दियो प्रेम उपजाय॥
भीतर लेहु बुलाय, कहत मात हरिसों निरखि।
चले श्याम सुखदाय, लखि प्यारी आनँद भयो॥

न सैन लखिदोउ सुखपायो। विरहताप दुख दूर इनआयो॥
मनहीं मन आनन्द अति भारी। भये मगन दोउ रूप निहारी॥
कहत श्याम राधा किन आवै। तुमको यशुमति माय बुलावै॥
बांह पकरि लाये बनवारी। यशुमति बोलि निकट बैठारी॥
देखि रूप मानमांझ सिहानी। बूझत नन्दमहर की रानी॥
व्रजमें तोहिं न कबहुं निहारी। कौन गांव है तेरो प्यारी॥
को तेरो तात कौन महतारी। कहा नाम तेरो है प्यारी॥
भूलि गयोहै काल्हि कन्हाई। भलो करी तू कर गहि ल्याई॥
धन्य कोषि जिन तो कहँ धरी। धन्य घरी तू जिहि अवतरी॥
देखि रूप यशुदा अभिलाषी। सवितासों विनती करि भाषी॥
नयन विशाल वदन शुभ छोटो। भलो बनो है सुन्दर जोटो॥
बार बार बूझत हरषाई। है तू कौन महरकी जाई॥

मैं बेटी वृषभानुकी, तुमको जानत माय।
बहुत बार मिलनो भयो, यमुनाके तट आय॥

अब मैं लीन्हीं जान, वे तो कुलटा हैं बड़ी।
हैं लांगर वृषभान, गारि देत हँसि नँदघरणि॥

राधा बोलि उठी इत आई। करी कछू बाबा लङ्गराई॥
ऐसो समरथ कब उन पायो। हँसि यशुमति राधा उर लायो॥
कहति महरि कीरति हम जोटी। अब कौजत है तेरी चोटी॥
यशुमति राधा कुवँरि सवाँरी। प्रेम सहित बारनि निरवारी॥
बड़े बार कोमल अति कारे। लै फुमलासुत ऐंछि सवाँरे॥
मांग पारि वेणी रचि गूथी। मानहुं सुंदर छविकी यूथी॥
गोरे वदन बिन्दु करि वन्दन। मानों इन्दुमध्य भुवनन्दन॥
सारी नई सुरङ्ग निकारी। यशुमति अपने हाथ सवांरी॥
वदनपोंछि अञ्चलसों दीन्हों। उरआनन्द निरखिछबि कीन्हों॥
तिल चावरी बतासे मेवा। कुवँरि गोद भरि विनवति देवा॥
कह्यो कान्ह सँग खेलहु जाई। यह सुनि कुवँरिमनहिं हरषाई॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी राधा। खेलत दोउ छविसिन्धु अगाधा॥

छबि सिन्धु परम अगाध दोऊ नन्द सदन विराजहीं।
लखि रूप कोटिक कामरति घन दामिनी द्युति लाजहीं॥
यशुमति विलोकति चकित देखति रूप मन आनँदभरी।
सोइ भाव देख्यो दुहुनके उर जोइ अभिलाषा करी॥
खेलत दोउ आगरन लगे, भरे परम अहलाद।
मानहुं घन अरु दामिनी, करत परस्पर वाद॥

अमिय वचन रसमूल, अकथनीय छवि अमित गुण।
रही यशोमति भूल; युगलकिशोर विहार लखि॥
चली महरि सों कहि सुकुमारी। सदन आपने जानि अवारी॥
यशुमति निरखिकह्यो हरषाई। खेल्यो करिहरिसङ्ग नितआई॥
बोलि उठे मोहन सुन राधा। तू कत सकुच करै जिय बाधा॥
मैं बोलत तू आवत नाहीं। जननी सों डरपति मनमाहीं॥
तोको लखि मैया सुख पावै। देखि किती करि छोह बुलावै॥
सुनि मोहनके वचन सयानी। चितै रही सुख मन मुसकानी॥
विहँसि चली वृषभानु दुलारी। हरि मूरति उर टरत न टारी॥
गई सदन बूझत महतारी। कहां हुती अबलौं री प्यारी॥
वेणी गूंथि मांग किन कीन्हीं। वेंदी भाल लाल किनदीन्हीं॥
खेलत रही नंदके द्वारो। यशुमति बोलि निकट बैठारी॥
बूझन नाम लगी पुनि मेरो। बाबाको पूछेउ अरु तेरो॥
मोहिं चितै पुनि सुतहि निहारी। कछु सविताासोंगोदपसारी॥
मेरी शिर वेणी गुही, वेंदी लाल बनाय।
पहिराई निज हाथसों, सारी नई मँगाय॥
तिल चावरि दै गोद, विधना सों विनती करी।
उर करिकै अति मोद, तोहिं विहँसि गारी दई॥
विहँसि कह्यो तोको नंदरानी। वह जैसी तैसी हम जानी॥
तोहिं नाम धरि धरयो बबाको। कह्यो धूत वृषभानु सदाको॥
तबमैं कह्यो ठग्यो कब तुमहीं। हँसि लपटानलगी तबहमहीं॥

सुनि कीरति राधाकी बातें। सरल स्वभाव भरी शिशुतातें॥
कहत ज्वाब तें नीको दीन्हों। बेटी दांव आपनो लीन्हों॥
जो कुछ मोहि कह्यो नन्दघरणी। सो सब है उनहींकी करणी॥
हँसि हँसि कीरति कहत सुभाये। मनमें अति आनन्द बढ़ाये॥
फेरि फेरि यशुदाकी बातें। बूझत है जननी राधातें॥
सुनि सुनि बरसाने की नारी। गांवत यशुमति को हित गारी॥
सुनि बातैं कीरति मुसक्यानी। नन्दरानीके जियकी जानी॥
मेरी सुता विमल चपलासी। वे हरि मेघ श्याम छविरासी॥
बाढ्यो उर आनन्द हुलासो। कीरति गई समुझि पति पासो॥

समुझि पतिके पास कीरति गई अति आनंद भरी।
प्रीति रीति जनाय हित सों बात सब परगट करी॥
भयो अति उत्साह दम्पति हरषि मन आनन्द भरे।
नित्य दूलह श्याम श्यामा वेद गुण गावत खरे॥
युगल किशोर स्वरूपवर, वृन्दावन रसखान।
नव दुलहिन दूलह सदा, राधा श्याम सुजान॥
दूलह दुलहिन चार, मांडव वृक्षा विपिनके।
गावत नित्य विहार, शेष महेश गणेश विधि॥

कहत यशोमति सों हरि प्यारे। जहँ तहँ रहत खिलौना डारे॥
राधा जिन लै जाय चुराई। आवत सांझ सकार सदाई॥
चितै रहत मुरलीको घाहीं। मेरो प्राण बसत इहि माहीं॥
तेरे भाये नेक न माता। राखु उठाय मान मो बाता॥

बलहूको पतियाय न राई । राखु खिलौना सबहिं छिपाई ॥
कहत जननि हँसि लालन मेरे । को ले जाय खेलौना तेरे ॥
नेक सुनन ताको जो पाऊँ । वाको ब्रजते बास नभाऊँ ॥
बिन देखे तू काको कहि है । सो कहु कैसेके प्रगटै है ॥
आवतहो राधा लै जहै । फिर तू पाछेते पछितैहै ॥
अजहूं राखु उठाय सवारो । मांगेते पुनि देहै गारो ॥
जननी हरिकी बतियां भोरी । श्रवण सुनत रुचि होत न थोरी ॥
टेव आपने सुतकी जानै । बिरझाने क्योंहूं नहिं मानै ॥

संतति है हरि के हरषि, महरि खिलौना जान ।
भौंरा चकई मुरलिका, गेंद बटा चौगान ॥
यशुमति सुखकी रास, नन्दभवन भूषण परम ।
ब्रजमें करत विलास, ब्रजवासी जन जाहिं बलि ॥

कहत श्यामसों यशुमति मैया पियहु दूध कछु लेहुं बलैया ॥
आज सवार दुही मैं गैया । सोई दूध प्याव मोहिं मैया ॥
और दूध रुचि मोहिं न आवै । जा तू कोटि यतन करि प्यावै ॥
जननी तबहिं सौंहू करि ल्याई । यह धौरीको दूध कन्हाई ॥
तुमते और कौन मोहिं प्यारो । औटि धरयो तुम्हरे हित न्यारो
तातो जानि वदन नहिं ल्यावै । फूँकि फूँकि जननी पय प्यावै
पय पीवत मोहन अलसाये । सुन्दर सेज जननि पौढ़ाये ॥
प्रात जगावत नन्दकि रानी । उठहु लाड़िले शारँगपानी ॥
भोर भयो जागहु मेरे प्यारे । ठाढ़े ग्वाल बाल सब द्वारे ॥

हरहु ताप मुखकमल दिखाई। करौ कलेऊ मिलि दोउ भाई॥
सद माखन दधि रुचि जमायो। माँगि लेहु जो मन भायो॥
सखावृन्द सब लेहु बुलाई। उठहु लाल जननी बलि जाई॥

तब हँसि चितये सेजते, उठे श्याम सुखदान।
यशुमति जलझारी लिये, मुख धोयो निज पान॥
बोलि उठे बलराम, उठे सबारे आज हरि।
हरषि मिले घनश्याम, दाऊजू कहि आलसों॥

द्वारे सों सब सखन बुलायो। देखि वदन सबहिन सुख पायो॥
सखन सहित सुन्दर सुखदाई। कियो कलेऊ कछु दोउ भाई॥
गैयन लै बन चले गुवाला। संग चले मोहन नँदलाला॥
टेर सुनत बालक सब धाये। घर घरके बछरन लै आये॥
सखा कहत सब सुनहु कन्हैया। चलहु आज वृन्दावन भैया॥
यमुना तट सब वच्छ चरैहैं। वंशीवट खेलत सुख पैहैं॥
भली कही हँसि कह्यो गोपाला। चले सकल वृन्दावन ग्वाला॥
कोउ टेरत कोउ घेर लै आवैं। कोउ सुरभीगण जोर चलावैं॥
कोउ शृङ्गी कोउ वेणु बजावैं। कोउ परस्पर होरी गावैं॥
होरी टेर सुनत मनमोहन। कहत मोहिं सिखवहु निज गोहन॥
हरि ग्वालन सँग टेर उठाई। हँसे सकल पूरी नहिं आई॥
कहत श्याम अबकै फिरि लीजो। अबकै जाय तबै हँसि दीजो॥

गावत खेलत हँसत सब, सखा वृन्द गो साथ।
पहुँचे वृन्दावन सघन, वृन्दावनके नाथ॥

फिरत चरावत धेन दीनबन्धु दुःख दलन।
कृष्ण कमल दल नैन, सबै अङ्ग सुन्दर सुखद॥

---

## अथ अघासुरवध लीला।

तहां अघासुर बनमें आयो। कंस राज करि कोप पठायो॥
ताके एक बहिन द्वै भैया। मारे प्रथमहिं कुवँर कन्हैया॥
एक पूतना जो ब्रज आई। बत्सासुर अरु बक दोउ भाई॥
तिनको बैर असुर उर धारी। कियो गर्व मनमें अति भारी॥
आज राजको कारज कीजै। और बैर भाइनको लीजै॥
गिरि समान अजगर तनुधारी। परयो असुर मग बदन पसारी
बन घन नदी रची मुख माहीं। मायाकृत पहिचानत नाहीं॥
वाही मग निकसे नँदलाला। गाय बच्छ लीन्हें सब ग्वाला॥
हरि अन्तर्य्यामी जिय जानी। कपट रूप यह लखि अभिमानी॥
याको आज तुरत संहारों। असुर मारि भूभार उतारों॥
ग्वालन अहि पर्वत करि जान्यो। तासु बदन गिरि कन्दर मान्यो
देखि सुहावन तृण हरियाई। गाय बच्छ बैठे सब धाई॥
गाय बच्छ ग्वालन सहित, सब मुख गये समाय।
कहत परस्पर आज बन, सुरभी चरहिं अघाय॥
सब मुख गये समाय, असुर सकोरयो बदन तब।
अन्धकार गयो छाय, मानों घन घेरो निशा॥

अति अकुलाय उठे तहँ ग्वाला । गाय बच्छ सब विकल विहाला
कहत परे धौं हम कहँ आई । त्राहि त्राहि घनश्याम कन्हाई ॥
सबके प्राण गये इहि बारा । तुम बिन कौन उबारनहारा ॥
श्रवण सुनत प्रभु आरत बानी । भये दुखित चिन्ता उर आनी ॥
दीनबन्धु भक्तन सुखदाई । पैठे आप अघामुख आई ॥
अघा असुर उर अति हरषाई । लियो ओंठ सों ओंठ लगाई ॥
विद्याधर मुनिवर गन्धर्वा । अति भय विकल मगन सुर सर्वा ॥
तबहि कृष्ण मन बुद्धि उपाई । अविगत गति भक्तन सुखदाई ॥
मुखते देह दुगुण विस्तारी । रुँधी श्वास भौ त्रास देवारी ॥
सक्यो नहीं तब असुर सँहारी । कियो शब्द आघात पुकारी ॥
फूटि गये शिर दशन दुवारी । निकसी प्राण ज्योति उजियारी ॥
सो वह ज्योति स्वर्गको धाई । बहुरि आय हरि मांझ समाई ॥

वाही मग अघ वदनते, निकसे गोकुलराय ।
कहत सखन आवहु निकसि, मैं करि लई सहाय ॥
अतिहि सकाने ग्वाल, गाय बच्छ व्याकुल सकल ॥
मिट्यो तिमिर तिहि काल, जहँ तहँ हर्ष वचन सुनि ॥

धन्य कान्ह धनि धनि पितुमाता । जिन आयो सुतको ब्रजत्राता
गिरि सम असुर सर्प तनु धारी । ताहि हन्यो तुम हौ असुरारी
कहत कान्ह तुम करी सहाई । तब मारयो मैं असुर अन्याई ॥
जो तुम मेरे संग न होते । तौ यह मारयो जात न मोते ॥
देखि अघासुर वध सुर ज्ञानी । वर्षि सुमन कहि जै ज बानी ॥

विद्याधर किन्नर गन्धर्वा। अति आनन्द गुण गावत सर्वा॥
अघा असुरको करत बड़ाई। हरि मधि जाकी ज्योति समाई॥
करत अनेक यत्न मुनि धामा। अन्तकाल दुर्लभ हरि नामा॥
सो हरि अन्तकाल जगपावन। वसे आप अघमुख दुखदावन॥
इहि सम और कौनके भागा। कहत देव सब अति अनुरागा॥

जै जै जै प्रभु जगत हित, जगत्राता जगदीश।
जाको मारनहू प्रगट, तारन विश्वा बीश॥
हरषि सुमन वरषाय, जय जय धुनि नभ करत सुर।
गाय ग्वाल सुख पाय, अति आनँद निरखत हरिहि।

तवहि सखन सों बिहँसि कृपाला। बोले करुणासिंधु गोपाला॥
चलहु सकल वंशीवट छाहीं। आई ह्वैहै छाक तहांहीं॥
भोजन करिये सब मिलि जाई। वछरा हांकि लेहु अगुवाई॥
हर्षि चले तहँते वलबीरा। आये सब वंशीवट तीरा॥
वंशीवट अति सुभग सुहावन। और चहूँ दिशि बहु द्रुम पावन॥
चरत वच्छ सब वनके माहीं। बैठे आय श्याम वट छाहीं॥
आस पास गोपनके वालक। मध्य श्यामसुन्दर जगपालक॥
मोरमुकुट कल कुण्डल कानन। कोटि काम छवि मोहन आनन॥
गेरुकादि चित्रित तनु श्यामा। पीत वसन वनमाल ललामा॥
वाहु विशाल लकुट कर लीन्हें। गुञ्जनके आभूषण कीन्हें॥
सखा वृन्द सब सुन्दर सोहैं। निरखत रूप मदन मन मोहैं॥
प्रेम मगन मन परम हुलासा। करत परस्पर हास विलासा॥

तहां छाक घर घरनते, आई भरि भरि भार ।
यशुमति पठये कान्हको, व्यञ्जन बहुत प्रकार ॥
छाक पठाई मात, हरषि कहत हरि सखनसों ।
दधिलवनी बहुभांत, सब मिलि भोजन कीजिये ॥
बन भोजन विधि करत कन्हाई । छाक सबै इक ठावँ रखाई ॥
जलते पुरइन पात मंगायो । दोना बहु पलाशके लायो ॥
कछु फल वृन्दावनके नीके । लिये मंगाय भावते जीके ॥
बैठे मण्डल जोरि गोपाला । मध्य श्यामसुन्दर नन्दलाला ॥
भांति भांति व्यंजन रस पागे । परसि धरे सबहिनके आगे ॥
कछुक हथेरिनपर धरिलीन्हीं । शाकखोलिअंगुरिनबिचकीन्हीं॥
मुरली मुकुट कांख तर लीने । भोजन करन लगे रस भीने ॥
मधु मङ्गल पर सैन्य सुदामा । सुबल सुखमना अरु श्रीदामा ॥
अपर अनेक गोप सुत लीने । जेंवत सब मिलि श्याम प्रवीने ॥
लेत परस्पर कौर छिडाई । कबहुं किलनको देत कन्हाई ॥
कबहूं काहू देन बुलावें । डहँकि ताहि अपने मुख नावें ॥
मीठे खाटे स्वाद बखानैं । हास विलास करत सुख मानैं ॥
देखत सुरगण सिद्ध मुनि, चढ़े विमान अकाश ॥
लखि कौतुक चक्रित सबै, गये कमलभव पास ॥
कह्यो ब्रह्मसों जाय, कहत जाहि बर ब्रह्म तुम ॥
सो ग्वालन सङ्ग खाय, छोरि छोरि करते कवर ॥

## ब्रह्माके मोहकी लीला ।

हरि माया मोहे सब प्रानी । कह ब्रह्मा कह सुर मुनि ज्ञानी ॥
सुनि विरंचि सुरगणकी बानी । भयो मोह उरमें यह आनी ॥
गोकुल जन्मि कौन यह आयो । मैं कछु वाको भेव न पायो ॥
परचौ लै देखौं प्रभुताई । बाल बच्छ हरि ल्यावों जाई ॥
जो सर्वज्ञ ईश भगवाना । लेहैं तुरत मँगाय सुजाना ॥
यह विचार विधि मन ठहरायो । चल्यो तुरत वृन्दावन आयो
देखि सरित वनमें अति पावन । पुष्प लता द्रुम परम सुहावन
अति रमणीक कदम चहुं पासा । वंशीवट मधि सुखद निवास
गोपमण्डली मण्डन मोहन । भोजन करत सखनसँग गोहन ॥
देखि विरञ्चि चकित भ्रम भारी । बछरा हरि लीन्हें बन झारी
हरि अन्तर्य्यामी सब जानी । विधिके मनकी रुचि पहिचानी
तब पठये द्वै ग्वाल कन्हाई । लावहु वत्स घेरि सब जाई ॥

ग्वाल सकल वन ढूंढ़िके, फिरि आये हरिपाहिं ।
कहत बच्छगे दूरि कहुँ, खोज पाइयत नाहिं ॥
तब हँसि कह्यो कन्हाय, तुम सब यहँ बैठे रहो ।
मैं धौं देखौं जाय, चले आप बहराय तब ।

जबगे दूर बनहि जनत्राता । तबहीं बालक हरे विधाता ॥
प्रभुलीलाको गम कछु नाहीं । गर्वित गयो लोक निजपाहीं ॥
निज माया सों करि मति भोरी । राखे बाल बच्छ इक ठोरी ॥
गुणसागर नागर नँदनन्दन । वंशीवट आये जगवन्दन ॥

दीनबन्धु भक्तन हितकारी। यह अपने मन मांझ विचारी ॥
बाल बच्छ जो ब्रज नहिं जैहैं। मात पिता इनके दुख पैहैं ॥
ताते रूप सबन को धारौं। या बिधि तिनको दुःख निवारौं ॥
बाल बच्छ विधि लै गये जेते। भये श्याम तब आपुन तेते ॥
वैसइ रूप बयस गुणशीला। वैसिय बुद्धि पराक्रम लीला ॥
रङ्ग रेख जैसो जिहि माहीं। अङ्ग चिह्न अन्तर कछु नाहीं ॥
बोलनि हँसनि चलनि चतुराई। हेरन टेरन फेरन राई ॥
भूषण बसन लकुट कर जैसे। भये श्याम तब आपुन तैसे ॥

मारन उद्धारन यदपि, हैं समर्थ भगवान।
तदपि जान निज दास विधि, करी तासुकी कान ॥
अपनो करि विधि जान, अनजानत ढीठो करो।
ताते कीन्हें आन, मन भायो विधिको कियो ॥

कह्यो श्याम सब सखन बुलाई। लावहु घेरि वत्स सब जाई ॥
ब्रजको चलहु सांझ नियराई। हर्षि चले बालक समुदाई ॥
चहूं पास सब सखा सुहाये। मध्य श्याम बछरन अगुआये ॥
वेणु विशाल रसाल बजावत। अपने अपने रंग सब गावत ॥
रांभति गाय बच्छ हित लागीं। देखत ब्रजयुवती अनुरागीं ॥
मोरमुकुट कुण्डल बनमाला। हँसनि मनोहर नयन विशाला ॥
गोपदरज मुख पर छबि छाई। मनहुं चन्दकला अमिय निकाई
ब्रजवनिता सब तन मन वारत। निरखि रूप भेंटत चितहारत
पहुँचे ब्रजहिं श्यामसुन्दर वर। गये बच्छ बालक निज निज घर

गोसन ग्वाल बाल हर्षाई। लीन्हें तात मात उर लाई॥
परम प्रीति करि भोजन दीन्हों। कृष्ण चरित काहू नहिं चीन्हों
यशुमति कहत सुतहिमिलिप्यारे। वनहिरात कतकरत ललारे॥
मैं सवेर घरको चल्यो, सखा करत सब रात।
देखि अगम वनमें डर्‌यो, वे डरपावत जात॥
बार बार पछिताय, लै बलाय यशुमति कहत।
ल्यावहि गाय चराय, कालहि जायँ वेई सब॥
यह सुनिकै हँसि कहत कन्हाई। कालहि चरावन जात बलाई
लागी भूख वहुत मोहि है री। भोजनको तुरतहिं कछु दै री॥
सुनत तुरत माखन लै आई। तब लौं खाहु जननि बलि जाई॥
है जल तप्त घामको प्यारे। तेलपरशि तन न्हाहु ललारे॥
जाते वनको श्रम मिटि जाई। भोजन करहु बहुरि दोउ भाई॥
तव जननी गहि बांह न्हवाये। जेंवनको बलराम बुलाये॥
अति रुचि सों जेंवत दोउ भाई। परम प्रीति परसत हैं माई॥
जेइँ उठे अचमन तब कीन्हों। बीरा दहुंन रोहिणी दीन्हों॥
जानि उनींदे सेज बिछाई। जननी पौढ़ाये दोउ भाई॥
श्याम राम सोवत दोउ भैया। सुख पावत निरखत दोउ मया॥
अधम रह्यो विधि गव नशायो। ब्रजवासिन कछु भेद न पायो॥
बाल वत्स हरि नये उपाये। सब जानत वेई हैं आये॥
बाल वत्स नव स्रुत तिन्हैं, ब्रजवनिता अरु धेन।
पूरव प्रीतिहुते अधिक, करत रहत उर चैन॥

ब्रज मङ्गल भगवान, ब्रह्म सच्चिदानन्द प्रभु।
भक्तनके सुखदान, लगे देन सुख घरन घर॥
तब विरंचिके मन यह आई। ब्रजके लोगन देखों जाई॥
ह्वै हैं करत विलाप कलापा। बिन बच्छन गैयन सन्तापा॥
आय बिरंचि तुरत तहँ देख्यो। घरहीघर सब कौतुक पेख्यो॥
जहँ तहँ दुहत गाय पशुपालक। खेलत निज निजघर सबबालक
देखि विरँचि चकित मनमाहीं। है यह ब्रज के धौं वह नाहीं॥
मैं विधना सब सृष्टि उपाई। यह रचना धौं किनहिं बनाई॥
कैधौं हौं यहि भ्रमहि भुलाना। हैं हरि अविनाशी नहिं जाना॥
अन्तर्यामी जानत सबहीं। वालवच्छ धौं ल्याये तबहीं॥
अति संभ्रम विधिज्ञान भुलायो। गयो फेरिनिजलोकहिधायो॥
देखे वत्स बाल जहँ राखे। चकित बहुरि ब्रजको अभिलाखे॥
त्यच भूतल त्यग लोक सिधारो। बालवत्स दुहुँ ठौर निहारो॥
वर्ष दिवस इहिभाँति बिताई। भयो थकितअति उरभ्रमछाई॥
मोहविकल अति देखिकै, सुन्दर श्याम सुजान।
प्रकट कियो जन जानि निज, विधिके उरमें ज्ञान॥
हृदय भई तब शुद्धि, ये पूरण अवतार प्रभु।
धिक धिक मेरी बुद्धि, बैर बढ़ायो कृष्णसों॥
मैं मतिहीन भेव नहिं जान्यो। मोहविवशप्रभुसों छल ठान्यो॥
यह अपराध बहुत मैं कीन्ह्यों। निजअज्ञानन प्रभुको चीन्ह्यों॥
भई गलानि बहुत मन माहीं। सन्मुखहोय सकत विधिनाहीं॥

भयो शोच उरमांझ विशेषा। प्रभु प्रभाव तब परगट देषा॥
बालक वत्स सहित सब साजू। कृष्णरूप सबलख्यो समाजू॥
शिव ब्रह्मादिक देव अनेका। देखे अधिक एकते एका॥
चरण कमल वन्दत प्रभु केरे। गावत गुण गन्धर्व्व घनेरे॥
देखिचकित चित भर्म नशान्यो। पूरणब्रह्म कृष्ण पहिचान्यो॥
शरण शरणकहिअति अतुराई। पर्‌यो चरणकमलनपर जाई॥
अनजानत मैं करी डिठाई। क्षमा करहु त्रिभुवन के राई॥
मैं प्रभु तुम प्रताप नहिजान्यो। तुम्हरी माया मांझ भुलान्यो॥
चूक परी मोते निज भोरे। नाथ न बनै तुम्हैं मुख मोरे॥

मैं अपराधी हीनमति, पर्‌यो मोहके जाल।
ममकृत दोष न मानिये, तुम प्रभु दीनदयाल॥
कह जानौं तुव भेव, मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो।
तुम देवनके देव, आदि सनातन अजित अज॥

जो जनते बिगरै बिन जाने। सो अपराध न प्रभु कछु माने॥
जो शिशु अज्ञ दोष उरमाहीं। माता कबहूं मानत नाहीं॥
तोष पोष ताको वह करई। विकसत चित्त अंकल भरई॥
रुदरसनादल जोरिस होई। कहौ कौनपर कीजे सोई॥
निजतनु व्याधि पीर जनपावै। यदपियतन करि नहीं बचावै॥
तैसेहीं प्रभु मोको कीजै। क्षमि ममदोष शरणगहि लीजै॥
तुम जाने बिन जीव सदाहीं। उत्पत्ति परलय मांझ समाहीं॥
तुम करि कृपा जनावहुजाको। सो जानै तुम्हरी प्रभुताको॥

मविधि एक लोकको सांई। जिमि कृमि गूलरमांझ गोसांई॥
तुम्हरे रोम रोम प्रति गाता। कोटि कोटि ब्रह्माण्ड विधाता॥
कोटि खद्योत प्रकाश कराहीं। रवि सम क्योंहूं होहिं सुनाहीं॥
अब प्रभु बनै सँभारे तोहीं। राखिय चरण शरण निज मोहीं॥

अतिही अगम अगाध हरि, अविगति गतिको जान॥
तासुपार चाहौं लह्यो, मैं विधि अति अज्ञान॥
करिय विरदको लाज, मम कृत दोष न मानिये।
दीनबन्धु ब्रजराज, शरणागत पालन हरे॥

जब विधिकहीदीनबहुबानी। शरणशरणकहि अति भयमानी॥
तब नहिं बाल वत्स कछु देखे। एकै रूप कृष्ण विधि पेखे॥
कृपा करी तब श्री ब्रजनाथा। हस्तकमल परश्यो विधिमाथा॥
अभय कियो विधि सोच मिटायो। चरण कमलते शीश उठायो
बार बार पद कमल निहोरी। अस्तुति करत दुहूं कर जोरी॥
जो जग धाम श्याम सुखराशी। ज्योति स्वरूप सबै उरवासी॥
गुणगण अगम निगमनहिं पावैं। ताहि यशोदागोद खिलावैं॥
धर जल अनलअनिल नभछाया। पांचतत्त्वमिलि जगतउपाया॥
कालडरे जाके भय भारी। सो ऊखल बांधे महतारी॥
जग करता पालन संहरता। विश्वम्भर सब जगके भरता॥
ते गैयन सङ्ग ग्वालन माहीं। ब्रजमें हँसि हँसि जूठनिखाहीं॥
बड़े भाग्य ब्रजवासिन केरे। तिनके प्र म रहत तुम घेरे॥

रहत जिनके प्रेम घेरे, धन्य व्रजवासी सबै।
ब्रह्म एक अनीह अविगति, घरन घर जिनके फबै॥
धन्य श्रीवसुदेव देवकि, पुत्र करि जिन पढ़यो।
धन्य यसुमति नन्द जिन, पय प्याय गोद खिलाइयो॥
धन्य व्रजके गोप जिन सङ्ग, धन्य गाय चरावहीं।
चार मुख मैं कहा वरणौं, सहस मुख नित गावहीं॥
धन्य बालक वच्छ तिनते, नाथ यह दरशन लियो।
परसि चरण सरोज मस्तक, पाप तजि पावन भयो॥
अब देहु व्रजको वासमुहिं, प्रभु आश यहमेरे हिये।
रेणु तृण द्रुमलता खग मृग, होहिं जो तुम्हरे किये॥
यह नित्य व्रज लीला तुम्हारी, तुम अनुग्रह ते लहौं।
महल श्रीवृन्दाविपिनको, अमित मित सककी कहौ॥
लोक म्वहिं न सुहात अब प्रभु, आनविधि कोउकीजिये।
मोहिं ग्वालनको करौ भृत, खाय जूठनि दीजिये॥
बार बार मनाय युग पद, नाथ पद बर मांगहूं।
ह्वैरहौं वृन्दा विपिन रज, चरण पङ्कज लागहूं॥
करि अस्तुति गद्गद वचन, दृगजल पुलक शरीर।
परत्रा चरण पङ्कज बहुरि, विधि अति प्रेम अधीर॥
तब हँसि बोले श्याम, गर्व प्रहारी भक्त हित।
जाहु आपने धाम, वचन हमारो मानि अब॥
और काहि अबकरौं विधाता। तुमही कर्म धर्मके दाता॥

तुमते है यह सब संसारा । मम मायाको नाहिन पारा ॥
तातेअबमम आयसु कीजै । ब्रजकी जायप्रदच्छिणा दीज ॥
जाते तनुके पाप नशाहीं । बहुरि जाहु लोकहि सुखमाहीं ॥
हरि उरहार विविध पहिरायो । बिदाकियो सब शोचनशायो ॥
प्रभु आयसु माथेपर धारो । पाय प्रसाद हरषि सुखचारो ॥
ब्रज दाहिन फिर पाप नशाये । बाल वत्स प्रभु पहँ पहुंचाये ॥
बार बार चरणन शिर नाई । विधि निज लोक गये सुखपाई ॥
ग्वालन यहकछु मर्मनजान्यो । वाहि समय सबहिन मनमान्यो ॥
हरिसों कहतबिलम्ब कहलाई । हम तुम बिना छाकनहिखाई ॥
तुमसब भोजन मांझ भुलाने । वत्स जाय बन दूर हिराने ॥
खोजत खोजत कोहूं पाये । सो मैं ले तुमपहँ पहुंचाये ॥

अब राखौ सब घेरिकै, दूरि निकसि नहिं जाहिं ॥
तब सुचिते ह्वैके सबै, रुचि सों भोजन खाहिं ॥
ऐसे कहि ब्रजराय, सखन सहित भोजन कियो ।
बहुरि यमुन तट जाय, जल अँचयो धोयोबदन ॥

सन्ध्या समय चले घर ग्वाला । मध्य श्यामसुन्दर नन्दलाला ॥
वत्स घेरि आगे करिनीके । कांधनपर धरि लीन्हें छीके ॥
जन जन शृङ्ग बजावत गावत । बनते बने ब्रजहिं हरि आवत ॥
घर आये ब्रज मोहन लाला । कहत यशोमति सों सब ग्वाला ॥
अहो महरि बन आज कन्हाई । महा दुष्ट इक मारयो जाई ॥
उरगरूप निगले शिशु बच्चा । करी आज सबको हरिरच्छा ॥

गिरिकन्दर सम तिन मुखवायो । पैठिश्यामतिहितुरत नशायो ॥
याके बल हम बदत न काहू । फिरत सकल वन सहित उछाहू ॥
जीते सबै असुर वन माहीं । यह काहू ते हारयो नाहीं ॥
वीते वर्ष कहत सब ग्वाला । आज अघा मारयो नन्दलाला ॥
यह प्रभू लीला अपरम्परा । कौन कौन को भुरै न पारा ॥
यशुमति सुनि चकित पछिताई । मैं बरजत वन जात कन्हाई ॥

केती करवरते बच्यो, तऊ न नेकडरात ।
अति विचित्र गति ईशकी, जानी जात न बात ॥
खीभति यशुमति मात, मानत नहिं मेरो कह्यो ।
श्याम मनहिं मुसकात, अब वनमें नहिं जाइहौं ॥

हरिकी लीला कहत न आवै । सुरनर असुर सबहिं भरमावै ॥
पय पीवत पूतना नशाई । पटक्यो तृणा शिलापर जाई ॥
तीन लोक मुखमें दिखराये । यमला अर्जुन वृक्ष ढहाये ॥
वत्सासुर बक बहुरि नशायो । अघामारि विधिगर्व नवायो ॥
यशुमति यह पुरुषारथ देखो ॥ तापरखिझपछितात विशेखो ॥
अघा मारि आये नन्दलाला । घरघर कहत फिरत सब ग्वाला ॥
सुनि सुनि व्रजयुवतीउठिधाई । चकितविलोकतहरि मुखआई ॥
मन मन करत यहै अनुमाना । इनकी सरि कोऊ नहिं आना ॥
येई हैं व्रजके रखवारे । येई हैं पतिप्राण हमारे ॥
कहत परस्पर सुनहु सयानी । हैं ये जगपति हम यहजानी ॥

प्रेम मगन ब्रजके नरनारी । लहत परम सुख हरिहि निहारी ॥
ब्रज मोहन सुन्दर सुखरासा । भोजन मांगत यसुमतिपासा ॥
खाहु लाल जो भावई, रुचि सों सखन समेत ॥
सद माखन व्यंजन सरस, करि राखे तुमहेत ॥
देरोटी नवनीत, और मोहिं भावै नहीं ।
दियो मात अति प्रीत, खात हँसत मिलि सखन सङ्ग ॥

———

## गोदोहन लीला ।

हँसि जननी सों कहत कन्हया । दोहनि दे दुहिहौं मैं गया ॥
नन्द बबा मोहिंदुहन सिखायो । ग्वालन को सरदुहन चढायो ॥
धौरी धूमरि काजरि गैया । तुरतहि दुहिल्यावों दे मैया ॥
भयो मोहिं बल माखन खाई । अब न डरात बूझ बल भाई ॥
तोहिं नहीं पतियारो आवै । बैठि ऊठिकर भाव बतावै ॥
अँगुरी भाव देखि हँसि माता । उरलगायलिये सांवलगाता ॥
कहत कहां इतनीबुधिपाई । हर्षि निरखि मुखबलि बलिजाई ॥
ले दोहनी दई करमाता । हर्षित चले दुहन सुखदाता ॥
बछरा छोरि तुरत थन लायो । मात दुहत लखि हर्ष बढ़ायो ॥
सखा परस्पर कहत कन्हाई । हमहु ते तुम करत बड़ाई ॥
दुहन देहु कछुदिन मोहिं गैया । तब करियो मेरी सरि भैया ॥
जबलगि एक दुहैं। तबताई । दश न दुहैं। तो नन्द दुहाई ।

सखा कहत सब झूठही, नन्द दुहाई खात।
प्रात साथहम दुहहिंगे, देखहिं को अधिकात॥
कह्यो कान्ह हर्षाय, भली कही तुम बात यह।
प्रात दुहहिंगे गाय, हम तुम होड़ लगायके॥

श्रीवृषभानु कुवँरि मन माहीं। श्याम सुरतच्छ बिसरतनाहीं॥
दरश लालसा दृगन न थोरी। देखोइ चहत वहोरि बहोरी॥
उठे प्रभात दोहनी लिन्हीं। सुरत श्याम दर्शनकी कीन्हीं॥
जननी देखि कह्यो दुलराई। जातिकित राधा अतुराई॥
खरकहिं जात दुहावन मैय्या। दुहत सबेर ग्वाल सब गैय्या॥
कल्हि तनकमैं बिलम्ब लगाई। उठे अहिर सबमोहिं रिसाई॥
गई गाय सब वत्स पियाई। रीती दोहनिलै फिरि आई॥
तुमहूं खीझन लगि तब मोहीं। जात सवार आजकहि तोहीं॥
ऐसे कहि जननी समुझाई। घरते चली ब्रजहि ससुहाई॥
नन्द सदन आई हरिप्यारी। दुहत गाय गृह द्वार बिहारी॥
दुहत परस्पर अति सुखपायो। निरखि बदन छबिहर्ष बढ़ायो॥
राधहि देखि महरि नन्दरानी। लई बुलाय निकट हर्षानी॥

दम्पतिको सुख देखिके, मुदित यशोमति माय।
वारवार लखि युगल छबि, मनहींमन बलिजाय॥
महरिमुदित मुसकाय, मथन कह्यो दधिकुंवरिसों।
भान दुहाइ दिवाय, आयसुते ठाढ़ो भई॥

नीते पाणि मन अति अनुरागी। रीतोइमाट विलोवन लागी॥

तैसइ भई श्याम गति भोरी। मनलाग्यो जहं कुवँरि किशोरी॥
वृषभहिंसों लोई लै लैय्या। बिसरि गई ठाढ़ी कित गैय्या॥
दम्पति दशा देखि नन्दरानी। रही चकित नहिं जात बखानी॥
राधासों कहि प्रगट जनायो। किन यह तोको मथन सिखायो॥
निजघर मथति ऐसहि जानी। कै मेरे घर आय भुलानी॥
मैंनहि मथनकबहुं दधिकीन्हों। तुम मोहिंसोंह बबाकी दीन्हीं॥
ताते मथन करन मैं लागी। तुम्हरो वचन सको नहिं त्यागी॥
तब नन्दघरनी मथन बतायो। राधे हरि तन ध्यान लगायो॥
दुहन श्याम गैय्या बिसराई। लैय्या वृषभ पाव अटकाई॥
दोहनि श्याममांग तबलीन्हीं। तुरत सखा इक लै करदीन्हीं॥
कहत दुहौ हरि करो चढ़ाई। हँसत गोप बालक समुदाई॥

हँसत कहत हरिसों सब, कह तुमरहे लभाय।
सुनत सखनकी बात नहिं, प्यारीसों चितलाय॥
प्रिया वदन दृगलाय, रहे श्याम इकटकनिरखि।
देह दशा बिसराय, भूलि गये सब चतुरता॥

यशुमति कहत राधिकहि टेरे। येढंग हैंरी प्यारी तेरे॥
ऐसो हाल मथत दधि तेरो। हरि भयो मानहु चित्र चितेरो॥
तेरो मुखसमशशि नहिं आजै। नयननलखि खञ्जनगतिलाजै॥
चपलाहूते चमकत हैरी। करिहै कहा श्यामको तैंरी॥
मेरो कह्यो सुनत कछु नाहीं। है धौं कहा गुनत मनमाहीं॥
इकटकदीठि तबहिं तेल्याई। तनकी सुरति सबै बिसराई॥

अवहीं ते ऐसे ढँग योहीं। अवहीं बहुत होन है तोहीं॥
ऐसे ढँगहि लगायो श्यामहिं। काज नहीं कछु तेरे धामहिं॥
चितयोमतिहि करैटकलाई। हिलिमिलि खेलश्यामसङ्गआई॥
कैरह वैठि आपने धामहि। धेनु दुहनदे मेरे श्यामहिं।
देखत तोहि श्याम सुधिजाई। तू चितवति तनु सुधिबिसराई॥
सूधेरहि जो ईहाँ वु आवे। ऐसो ढँग मोकोनहि भावै॥

करत अचकरी आयतू, यह नहिं मोहिं सुहाय।
सूधे खेलहि श्याम सङ्ग, कैतू इत मति आय॥
ऐसे महरि रिसाय, सीख दई हरि भाव तेहिं॥
तव कछु मन सुधि पाय, बोली अति भोरे वचन

मोहिं खीझतिवरजत सुतनाहीं। नितउठि मोहिंवुलावनजाहीं
मोहिं कहत विन तोहिं निहारे। रहत न मेरे प्राण सुखारे॥
छोह लगत मोको सुनि बानी। तब आवत मैं ह्यां घरजानी॥
सुख पावति आवति मैं तातें। तुम कछु लावत औरहिं बातें॥
यशुमति सुनि प्यारीकी बानी। भोरे भाय समुझि सकुचानी॥
बांहपकरि उरसों लै लावति। प्यारो मनसों रोष मिटावति॥
हँसत कहत मैं तोसों प्यारी। मनमें कछू विलग जनि लारी॥
सिखवत तोहिं सीख गुणकारी। मैं तेरी जैसे महतारी॥
सुनियत महरि सुघर अधिकाई। गृह कारज कछु तोहिं सिखाई
सुनि यशुमतिके वचन सप्रीती। बोली अति नागरि भ्रिगुरीती

मैय्या मोसों टहल करावै। खीझत जात देखि जो पावै ॥
सुनि यशुमति राधाकी बानी। श्रीवृषभानु लाड़िली जानी ॥

अति सप्रेम दुलरायकै, लई बहुरि उर लाय।
श्रीराधाके चित्तते, दीन्हों क्षोभ मिटाय।
कापै बरणी जाय, हरि प्यारीकी चतुरता।
लीन्हीं सहज सुभाय, बातनहीं यशुमति भुरै ॥

कहत सखा हरिसों मुसकाई। दुहत कहा तुम आज कन्हाई ॥
काल्हि दुहत रहे होड़लगाई। बिसर गई सब आज बड़ाई ॥
गिरति दोहनी कम्पित हाथा। नोवत वृषभ वत्सलै साथा ॥
सुनि ग्वालनके वचन गोपाला। कछुक सकुचिबिहँसे नंदलाला
वत्स छोरदियो खरिक चलाई। आप जननिसों कहत कन्हाई ॥
मुरली मुकुट देहि पट मेरो। सुनि आऊं दाऊ मोहिं टेरो ॥
जननी हरखि तुरत सब दीन्हों। लै हरि मुकुट शीश धरिलीन्हों
चारु पीत पट कटि लपटाई। कर मुरली लै मधुर बजाई ॥
मुरलीमें कहि प्यारी प्यारी। गये बुलाय खरिक सुखकारी ॥
लखि प्यारी हरिकी चतुराई। कहति यशोमति सों अतुराई ॥
जाति घरहि प्रातहि मैं आई। खरिक दुहावनको निजगाई ॥
पायो ग्वाल खरिक कोउ नाहीं। खोजति मैं आई इत माहीं ॥

इहां अजिर गैय्या दुहत, देखे आय कन्हाय।
तनके दोहनि तनक कर, देख रही चित लाय ॥

सुनि अति सरस सुभाय, सने प्रेम प्यारी वचन ।
यशुमति मन सुखपाय, कहत कुंवरि सों जान घर ॥
जा प्यारी घर आवत रहियो । हमरो मिलन महरि सों कहियो
यह सुनि कुंवरि चली हर्षाई । मन हरि लीन्हों कुंवर कन्हाई
गई खरिक करदोहनि लीने । चितवत मग जहँ श्यामप्रवीने ॥
तहां मिली बहु सखी सहेली । बूझति राधहि कहा अकेली ॥
प्रात दुहावन मात पठायो । तहां खरिक कोउ अहिर न पायो ॥
इत आई मैं ग्वाल बुलावन । जात खरिक अब गाय दुहावन ॥
बोलि उठे हरि तब इत आवो । हम दुहि देइँ दोहनी लावो ॥
दुहन देन कहि श्याम बुलाई । सुनत गई प्यारी सुखपाई ॥
कहति सखी सब मन मुसुकाई । कहां प्रीति इन आय लगाई ॥
बरसाने यह ब्रजहि कन्हैया । आई कहां दुहावन गैया ॥
हरि मुखलखि वृषभानुकिशोरी । प्रेम विवशभइ तन सुधि भोरी
मोहन लई दोहनी करते । प्रिया प्रीति रस वश भइ बरते ॥
धेनु दुहावत लाड़िली, दुहत नन्दको लाल ।
सो सुख कापै जाय कहि, देखत ब्रजकी बाल ॥
बछरा पद अटकाय, गोथन लीन्हों हाथ हरि ।
प्रिया बदन दृग लाय, दूध धार छांड़त छलन ॥
दुहत धेनु अतिही छबि बाढ़ी । प्यारी पास दुहावन ठाढ़ी ॥
एक धार दुहनी में डारे । प्यारी तन इक धार पखारे ।
हरि करते पय धार छुटाहीं । लसत छीट प्यारी मुख माहीं ॥

मनहुँ मयङ्क कलङ्क पखारी। शोभित जहँ तहं चन्द्र सुधारी॥
कै धौं पय निधि खोरि मयङ्का। लसत सुधासह खोय कलङ्का॥
लसतनीलपट कनक किनारी। मोरत मुखहिं मुदित मन प्यारी
मनहु शरद शशि सुधा उदारा। घनदामिनि घेरयो इक बारा॥
इहि बिधि रहसत बिलसत दोऊ। हेत हिये थोरे नहिं कोऊ॥
मनहुँ उभय आनन्द सर भारी। मिलन चहत मर्यादबिसारी॥
हाव भाव रस दम्पति पूरे। निरखत ललितादिक दुर दूरे॥
इहि विधि श्रीवृषभानु दुलारी। हरि पै धेनु दुहावत प्यारी॥
बिलसत ब्रजबिलास ब्रजप्यारे। ये सुख तीन भुवनते न्यारे॥

दुही कुंवर नंद लाड़िले, श्रीराधाकी गाय।
दोहनि देत न हंसि प्रिया, मांगत हाहाखाय॥
त्यों त्यों हंसत कन्हाय, ज्यों ज्यों प्रिय हाहाकरत।
सो सुख वरणि न जाय, अटके दोऊ प्रेम रस॥

फिर हाहाकरि कहत कन्हाई। अबक देहौं नन्द दुहाई॥
फेरि करी हाहा हँसि प्यारी। दई दोहनी बिहँसि बिहारी॥
हाव भावकरि मनहरिलीन्हो। कुवँरिहिकान्हबिदातबकीन्हों॥
यह छबि निरखि सखी हर्षानी। चली अग्रहै कछुक सयानी॥
प्यारी निरखिश्यामसुन्दरको। चलनचहतपगचलत न घरको॥
अन्तरनेक न हरिसों भावै। पुरजनसकुच बहुरि सकुचावै॥
धिक यहलाज कहत मन माहीं। निरखन देतश्यामजो नाहीं॥
कछु दिन ज्यों त्यों और बिताई।दूर करौं पुनि इहि दुखदाई॥

यह विचार मनमें ठहराई। चली सदन उर राखि कन्हाई॥
मुरिमुरि नन्द नन्दन तन हेरे। आवति विरह बिथा तन घेरे॥
आगे धरत परत पग नाहीं। मन फेरत मनमोहन पाहीं॥
चितवत श्याम खरिक महँ ठाढे। प्यारी तनमन आनन्दबाढे॥

भये दृगनते ओट दोउ, गये सदन सुखरास।
विरह विकल प्यारी गई, ज्यों त्यों सखियन पास॥
सखियन आवत देखि, श्रीवृषभानु कुमारिको।
उर आनन्द विशेषि, हर्षिसबै ठाढीभई॥

बूझति सबै सखी मुसकानी। कहहु राधिका कुवँरि सयानी।
और अहिर तुम्हरे कित प्यारी। हरि दुहि दीन्हीं गाय तुम्हारी
यह सुनिचकितभईमति भोरी। गिरीधरणि मुरझायकिशोरी॥
देखि सखी सब आतुर धाईं। लई उठाय कुवँरि उरलाईं॥
क्यों नागरि गिरी मुरझाई। दूध दोहनी दई गिराई॥
यह बाणी कहि सखिन सुनाई। कारे मोहिं डसीरी माई॥
भई विकल कछुतनु सुधिनाहीं। कहत सखीसब आपसमाहीं॥
अबहीं देखत नीके आई। कहा भयो कारे कित खाई॥
यहतो कारो कुवँर कन्हाई। हमहूं को जिन फूकलगाई॥
जाको मुर मुसकन विष वांको। याके रोम रोम विष ताको॥
तन मन दृगन सांवरो छायो। देह गेह सब नेह भुलायो॥
सब सखियन मन यह ठहराई। लैराधिकहि सदन पहुंचाई॥

लेहु महरिकीरति सुता, अपनी देखहु आय।
कहुंकारे याकोडसी, गिरी धरणि मुरझाय॥
ल्यावहु गुणी बुलाय, वेग यत्न याको करहु।
गयो बदन कुम्हिलाय, ज्यों त्यों हमलाई इहां॥
जननी सुनत उठी अकुलाई। रोवति धाय कंठ लपटाई॥
प्रात गई नीके उठि घरते। मैं बरजी मान्यो नहिं अरते॥
अतिहि हठीली कह्यो न मानै। सोई करतिजु मनमें आनै॥
डरी मात लखिअङ्ग सब जूड़े। अतिही शिथिल स्वेदजलबूड़े॥
महरि नगर ते गुनी बुलाये। सुनत सकल आतुर उठि धाये॥
मन्त्र यन्त्र बहु भांति जगावें। थके सकल कछु भेद नपावें॥
गारुड़िहरिजोरहे मनमाहीं। महरिबिकल अतिमनपछिताहीं॥
फिर फिर बूझतसखिन बुलाई। कह प्यारी कहि तुमहिंसुनाई॥
कहतसखी सबपरम सयानी। सुनहु महरि इतनीहम जानी॥
हम आगे यह पाछे आई। गिरि धरणि दुहनी ढरकाई॥
यही कह्यो कारे मोहिं खाई। तब हम आतुर लई उठाई॥
सो कारो हमहूं पुनिदेख्यो। लग्योसबनविषयाहिविशेख्यो॥
सो अब हम तुम सों कहैं, मानिलेहु यहबात।
बडो गारुड़ो रायहै, नन्दमहरको तात॥
ल्यावहु ताहि बुलाय, देखतही विष जायगो।
तुरतहि लेहि जिवाय, हमनीके यह जानहीं॥
देखहु धौं यह बात हमारी। एकहि मन्त्र जियावहिं कारी॥

त्रिभुवन गुनो और नहिं ऐसो। है वह नन्द महरको जैसो॥
कीरति महरि सुनी यह वानी। अपने मनहिं सांचकर मानी॥
इकदिन राधा हू यहवानी। मोसों कही हती यहजानी॥
कीरति चली नन्दके धामहिं। बोलन आतुर गारुड़ि श्यामहिं॥
महरि यशोदहि जाय पुकारो। अहो गारुड़ी सुवन तुम्हारो॥
मेरी सुता लाड़िली गोरी। विह्वल विकल परी मतिभोरी॥
प्रातहि खरिक दुहावन आई। तहाँ कहुँ कारे डसिखाई॥
नेक पठै सुत काज विचारो। यह यश ह्वै है बड़ो तुम्हारो॥
सुनि यशुमतिकीरतिकी बानी। कहतमहरि तुम भई अयानी॥
मन्त्र यन्त्र कह जानै मेरो। अतिही बाल वर्ष षट केरो॥
किन तुमको दीन्हों बहँकाई। यह तुमबूझो गुणिन बुलाई॥

मैं चक्रित तुम वचन सुनि, यह आचरजकी बात।
श्याम भयो कब गारुड़ी, तुम आई अतुरात॥
अबलों सुनी न कान, भयो श्याम कब गारुड़ी॥
बालक अति अज्ञान, यन्त्र मन्त्र जानै कहा॥

महरि गारुड़ी कुवँर कन्हाई। इक दिन राधा मोहिं सुनाई॥
एक लरकिनी कारे खाई। जाको तुरतहि श्याम जियाई॥
ताते मैं आई अतुरानी। पठवहु सुतहि नेक नँदरानी॥
है मम कुवँरि विकल अधिकाई। प्रात खरिक कारे कहुँ खाई॥
बडो धर्म यशुमति यह लीजे। वेगि बुलाय कान्हको दीजै॥
यह सुनि कै यशुमति मुसकाई। अबहिं हती मेरे घर आई॥

है राधा मोहन कछु कारन। चुप ह्वै मन में लगी विचारन॥
वहां सखी ललितादि सयानी। प्यारिहि देखि हृदय अनुमानी॥
याही डसी बंशीधर कारे। चितवनफण मुसकन विषधारे॥
प्रेम प्रीति दवडारत जारे। लगे न मन्त्र गुणी सब हारे॥
थके सकल करि विविध उपाई। यह विष मोहन बिन नहिंजाई
सखी एक हरि पास पठाई। तिन मोहन सों जाय जनाई॥

अहो महरिके लाडिले, मोहन श्याम सुजान।
कित सीखे यह गौदुहन, हम सों कहौ बखान॥
दुहि दीन्हीं जिहिगाय, आज भोरहीखरिकमें।
वेग विलोकौ जाय, निज नयनन ताकी दशा

जबते दुहि दीन्हीं तुम गैय्या। अहो अनोखे गाय दुहैय्या॥
घर लौं कुवँरि जान नहिं पाई। बीचहि धरणि गिरी मुरझाई
देखत संग सखी सब धाई। जैसे तैसे गृह पहुँचाई
सो अब तनुकी सुधिन सम्हारै। परी बिकल नहिं दृगन उघारै॥
सकसकात तनु स्वेद बहाई। उलटि पलटि भरिलेत जभाई॥
कहति मोहिं कारे अहि खाई। कियो यत्न बहु गारुडि आई॥
ताहि कछु उपचार न लागै। तुम्हरो नाम लेतकछु जागै॥
हौं पठई इक सखी सयानी। यह विष तुम्हरोनिश्चय जानी॥
यह कारो अहि रूप तुम्हारो। मुसकनिविष ता ऊपर डारो॥
अब जो चाहौ ताहि जियावो। बेगि चलो जिन गहर लगावो॥

अतिहि विकल वह विरह अधीरा। दरश दिखाय हरो तनुपीरा
तुम अश्विनीकुमार कन्हाई। वेगि चलो हरि लेहु जिवाई॥

नजर दीठ इकरावरी, टेर कहत हमकान्ह।
नहिं जागति तो देहिंगी, नन्द द्वार सब प्रान॥
व्याकुल जननी तास, वरनि महर वृषभानुकी।
गई यशोमति पास, वेगि जाय सुधि लीजिये॥

कीरति आगम सुनत कन्हाई। कीन्हीं बिदा सखी मुसकाई॥
जो कहुँ डसी भुजङ्गम प्यारी। तो हम आय देहिं गे झारी॥
ऐसे कहि हरि सदनहि आये। देखि यशोमति निकट बुलाये॥
तू कछु जानत मन्त्र कन्हैया। बूझति विहँसि यशोमति मैया॥
कीरति महरि बुलावन आई। कुवँरि राधिका कारे खाई॥
आनहुँ झारि वेगि सङ्ग जाई। कुवँरि जिवाये अतिहि भलाई॥
गारुड़ी भयो भले सुत जानी। आज सुनी श्रवणन यहबानी॥
मैय्या एक मन्त्र मैं जानों। तेरी सों कहि सत्य बखानों॥
अहिकाट्यो मो दृष्टि जुआवै। मोपै क्योंहू मरण न पावै॥
जननि कह्यो सुत जाहु कन्हाई। देहुराधिकहि जाय जिवाई॥
जननी वचन सुनत ब्रजनाथा। चले हर्षि कीरतिके साथा॥
चलीमहरि हरिसङ्ग लिवाई। गइ वृषभानु पुरा समुहाई॥

रुदितमहरि लखिकुवँरिको, अतिहिगई कुम्हिलाय।
शिथिल अँग बानी निरखि, लीन्हीं कण्ठ लगाय॥

तबहिं श्यामके पांय, परी कुंवरि लैकै महरि।
मोहन देहु जियाय, अति व्याकुल मेरी सुता॥
आये गारुडि कुंवर कन्हाई। कुंवरि कानते यह सुनि पाई॥
धन्य धन्य आपनको जानी। हृदय हर्ष दृग आनन्द पानी॥
प्रगट रोम तनु स्वेद बढ़ाई। विह्वलदेखि जननि अकुलाई॥
अन्तर भाव भेद हरि जाने। रसिक शिरोमणि मनमुसकाने॥
तब कछु पढ़िकै कुंवर कन्हाई। मुरलि अंगसों दई छुवाई॥
ततच्छण लोचन कुंवरि उघारे। सन्मुख सुन्दर श्याम निहारे॥
निरखत दृगन परम सुखलीनो। सकुच संभारिवसन सम कीनो
बूझत बात जननि सों प्यारी। आज कहा यह है महतारी॥
जननी कहति हरषि उरलाई। तोहिं मरतते कान्हजिवाई॥
करत लाज तू कारी प्यारी। करिवर बड़ी आज विधि टारी॥
यों कहि महरि हृदय अनुरागी। नंदसुवनके पायंन लागी॥
बड़ो मन्त्र तुम कियो कन्हाई। सुता हमारी मरतजिवाई॥
उर लगाय मुख चूमिकै, पुनि पुनि लेत बलाय।
धन्यकोषि यशुमति महरि, जहां अवतरे आय॥
कछु मेवा पकवान, कह्यो खान घनश्याम सों।
बिदा कियो दै पान, कीरति श्याम सुजानको॥
महरि मनहिं मनमें अनुमानी। जोरी भली विधाता बानी॥
ब्रज घर घर यह बात चलाई। बड़ो गारुड़ी कुंवर कन्हाई॥
सखी कहत हरिसों मुसकाई। भले भले हो गारुड़ि राई॥

प्रगट्यो गारुड़ नाम तुम्हारो। भले आज तुम विषहिं उतारो॥
जननि कहति मेरो अति बारो। अबधौं कौन करै निरवारो॥
जान्यों कठिन वसन ब्रजकारो। अब यह मन्त्रहिं मतिहि बसारो
फिरकारो कहुँ करहिं पसारो। हमतबलैं हैं नाम तुम्हारो॥
यह गारुड़ी कहां तुम पाई। प्यारी एकहि टेर जिवाई॥
अब हम जानी बात तुम्हारी। जाहु आपने सदन बिहारी॥
रसिक मुकुटमणि कुञ्ज बिहारी। हँसिवशकीनी घोष कुमारी॥
विवश भई सब ब्रजकी बाला। गये सदन मोहन नंदलाला॥
ब्रजविलास विलसत ब्रज प्यारो। ब्रजवासी जनको रखवारो॥

कारो सुत नंदराय को, जाकी लीला नित्त।
तिनहींको हरि डसतहैं, जिनको उज्ज्वलचित्त॥
धन्य धन्य ब्रज बाल, धनि धनि ब्रजके ग्वाल सब।
जिनके सँग नँदलाल, दुहत चरावत गाय नित॥

प्रात होत बल मोहन लाला। गाय बच्छ सबलै सँग ग्वाला॥
चले चरावन ब्रज बन माहीं। क्रीड़ा करत सकल मग जाहीं॥
देखि मुदित सब ब्रजकी बाला। वृन्दावन गये मदनगुपाला॥
गैया बगर गई बन माहीं। बैठे कान्ह कदमकी छाहीं॥
सखालिये सँग सुबल सुदामा। क्रीड़ा करत सहित बलरामा॥
ग्वाल जहां तहँ गाय चरावैं। आनँद भरे कृष्ण गुण गावैं॥
करत विहार विविध सबग्वाला। गये दूरि बन सघन विशाला॥
कोऊ गैयन घेरन धायो। कोऊ बछरनलै बिलगायो॥

हलधर रहे कहूं वनजाई । आप अकेले रहे कन्हाई ॥
मनमन कहत श्याम सुखदाई । सखारहे कत बन बिरमाई ॥
गौरांभन कहुं सुनियत नाहीं । गये निकसि धौं कित वनमाहीं ॥
आलस गात जानि मनमाहीं । बैठे बंशीबटकी छाहीं ॥

सखावृन्द हलधर सहित, लियेबच्छ अरुगाय ।
वृन्दाबन घन छांडिकै, रहे ताल वन जाय ॥
मन हरषे सब ग्वाल, देखि भूमि सुन्दर परम ।
फरे विपुल तरु ताल, अति रसमय मीठे मधुर ॥

---

## धेनुकवध लीला ॥

गोधन वृन्द दिये बगराई । लगे खान फल मन हरषाई ॥
अँचयो वल रसताल रसाला । बाढ्यो उर आनंद बिशाला ॥
सुरत नन्दनन्दनको आई । कह्यो सखन सों कहां कन्हाई ॥
ल्यावहु घेरि जाय सबगैया । चलो बेगि जहँ कुवँर कन्हैया ॥
सुनत सखा हलधरकी वानी । वनमें श्याम अकेले जानी ॥
आतुर गैयन घेरन धाये । टेर दई सब ग्वाल बुलाये ॥
तहां असुर इक धेनुकनामा । खरके रूप रहै वनधामा ॥
सोयो हुतो विटप की छाया । सुनत शोरकर तामस धाया ॥
अति बलवान बिशाल कराला । परम भयङ्कर मानहुँ काला ॥
दाऊ कहि सब ग्वाल पुकारे । भाजे जित तित भयके मारे ॥

असुर महाबल गर्व बढाई । बलके सन्मुख गरजो आई ॥
मत्त तालके रस बलराई । देखि असुर मन रिस उपजाई ॥

बलसँभारिउठिकोपकरि, असुरप्रचारगोजाय ।
अग्रज भ्राता श्यामको, तिहुँ पुर जासु बड़ाय ॥
बलको आवत जानि, असुर जोरि दोऊ चरण ।
चपर चलाई आनि, बहुरोहठठाढ़ो भयो ॥

बहुरो फिरि मारनको धायो । बल जूको तामस तब आयो ॥
जबहिं असुर फिरि चरण चलायो । गहिलीन्हों करिकोप फिरायो
पटक्यो लै तरुताल हिलाई । भयो प्राण बिन तरुहिं गिराई ॥
तरुसों तरु टूटे भहराई । उठ्यो सकल बन घन घहराई ॥
और बहुत धेनुक परिवारा । कीन्हों बल सबको संहारा ॥
मारयो असुर महा दुखदाई । ग्वाल बाल सब करत बड़ाई ॥
आये सब बृन्दावन माहीं । जहँ तहँ श्यामहिं टेरत जाहीं ॥
चढ़ि चढ़ि द्रुमन पुकारत ग्वाला । आवहुहो मोहन नँदलाला ॥
ल्याये घेरि मिलीं सब धेनू । आवहु मधुर बजावहु बेनू ॥
कोमल चरण कहूं मति धावहु । कण्टक कठिन महो द्रुत आवहु
ऐसे हरिको टेरत जाहीं । तृषित भये सब बनके माहीं ॥
ग्वालबाल सब यमुनहिं आये । बलरस मत्त न पहुँचन पाये ॥

गोप गाय अँचवत भये, कालीदहको नीर ।
निकसत सब अकुलायके, बैठि गये जल तीर ॥

परे सकल मुरझाय, जहां तहां विष झारते।
ग्वाल बच्छ अरु गाय, भये मनों बिन प्राण सब॥
हरि ठाढे बंशीवट छाहीं। बारहिं बार कहत मन माहीं॥
अबहिं रहे सब संग चरावत। निकसि गये धौं कित वनधावत॥
गौरांभन ग्वालनके बैना। अनकत कछु न सुनत बन ऐना॥
तरु चढि इत उत गैयन हेरत। लै लै नाम सखन को टेरत॥
कालीदह तन आहट पाई। शोधलेत उत चले कन्हाई॥
बन घन ढूंढत हरि तहं आये। गाय ग्वालसब मुर्छित पाये॥
मनमैं ध्यान करतही जान्यो। काली अहि ह्वां आय समान्यो॥
रहत इहां खगपति भयमानो। अंचयो इन ताको विषपानो॥
अमीदृष्टि प्रभु सकल निहारे। तुरत उठे सब भये सुखारे॥
देखि कृष्णको अति सुखपाई। मिले सकल प्रेमातुर धाई॥
बोले हरि मृदुवचन सुहाये। तुम सब मोहिं छोड़ि कै आये॥
कितते कित इत निकसे आई। मैं वन ढूंढि रह्यो पछिताई॥
खोज लेत आयो इहां, देखे सब बेहाल।
मुरछि परे काहे धरणि, भयो कहा जञ्जाल।
गाय बच्छ अरु ग्वाल, उठे एकही बार पुनि।
कहा कियो इह ख्याल देखि मोहिं अचरज भयो॥
सुनि हरि वचनपरमसुखदाई। कहत सखासब सुनहु कन्हाई॥
अंचयो तृषितयमुन जलआई। तबहिं गिरे सबतट अकुलाई॥
कारण हम कछु जन्यो नाहीं। भये प्राण बिन सबछण माहीं॥

इह हम जानी कुवंर कन्हाई। तुमहीं हमहिं जिआयो आई॥
हौ तुम व्रज जनके रखवारे। जहां तहां तुम हमहिं उवारे॥
तव हरि वलदाऊ को हेरो। कह्यो चलहु वन होत अंधेरो॥
सखा वोलि ल्याये वलरामहिं। हंसे देखि सुन्दर घनश्यामहिं॥
वड़ीदेर भइ तुम्हें कन्हैया। रहे अकेले वनमें भैया॥
चलहु वेगि अव घरको जाहीं। लेहु लिवाय गाय वन माहीं॥
हेरो देत चले सव ग्वाला। गावत गुण सुन्दर गोपाला॥
गोधन आगे दये चलाई। सखन मध्य मोहन वलभाई॥
चले व्रजहि व्रज जन सुखदाई। निरखिवदनछविमदन लजाई॥

सुनि व्रज सुन्दरि परस्पर, कहत सुरलि सुर घोर॥
आवत वन वसि अहर निसि, आगम नन्दकिशोर॥
धाई गृहतजि काज, निरखनको मन भावतो।
सुन्दर सुत व्रजराज, लाज साज सव छोंडिकै॥

वे देखे आवत वल मोहन। सुवल सुदाम सुदामा गोहन॥
मेघश्याम तनु गैयन पाछे। शीश मुकुट कटि कछनी काछे॥
कमल वदन कर वेणु वजावैं। गौरी राग मिले सुरगावैं॥
नयन विशाल कमल ते आछे। कोटि मदन कौ छविको वाछे॥
कुण्डल श्रवणवदन छवि छाई। गोरज छवि कहंचन्द्र छिपाई
निरखि मुदितसव व्रजकी वाला। पहुँचे आयसदन नन्दलाला
व्रज जीवन वल मोहन भैया। निरखि जननि दोउलेत वलैया॥
ग्वाल कहत धनियशुदामाता। धनिधनि वलमोहन दोउभ्राता॥

नरतनु धरे देव ये कोऊ । ब्रज अवतार लियो इन दोऊ ॥
येहैं सब ब्रजके रखवारे । गाय गोपके राखन हारे ॥
गर्द्दभ रूप असुर इक भारो । ताहि आज हलधर वन मारो ॥
हम सब यमुनातट मुरझाई । तहां कान्ह सब मरत जिवाई ॥

अब हम काहु डरत नहिं, येहैं हमैं सहाय ।
बल मोहनके बल फिरत वन वन चारतगाय ॥
परत गाढ जब आय, तब तब होत सहाय हरि ॥
चिरजीवैं दोउ भाय, यशुमति ये तेरे कुवँर ॥

यशुमति सुनिग्वालन की बानी । कहयोगर्ग सबसत्य बखानी ॥
नितनव चरित सुनत हरि केरे । हैं कोऊ ये बड़न बडेरे ॥
धन्य धन्य ये ब्रजमें आये । धन्य धन्य हम सुत करि पाये ॥
अतुलित कर्म दुहुनके जानी । दोउ जननी मन मांझ सिहानी ॥
श्याम राम दोऊ नन्दरानी । लिये लाय छाती हरषानी ॥
भूखे जानि तुरत अन्हवाये । षटरस व्यंजन सरस जिमाये ॥
भोजन करि अँचये दोउ भाई । लीन्हें पान संत सुखदाई ॥
पौढे सेज दास हितकारी । ब्रज बासी जन है बलहारी ॥
चिन्तामणि हरि जन सुखदानी । कालीकी चिन्ता उर आनी ॥
ग्वाल गाय नित वनको जाहीं । दुखपावत कालीदह माहीं ॥
विषधरको रहबो जलमाहीं । बृन्दाबन ढिग नीकोनाहीं ॥
कालिहिकाढि इहां ते दीजै । यमुनाको जल निर्मल कीजै ॥

यह विचार मनमें करत, भये नींद वश श्याम ।
यशुमति हरि पौढायकै, आपलगी गृह काम ॥
खरैं न बोलन देत, घरमें काहूको महरि ।
बल मोहनके हेत, जागि परैं मति नींदते ॥
शिव सनकादि दिवसनिशिध्यावैं । कबहूं जाको अन्तनपावैं ॥
ब्रह्म सनातन आनँद खानौ । सोनँद गृह सोवत सुखदानौ ॥
देखो नन्द कान्ह अतिसोवत । अमित जानिबनके सुखजोवत ॥
मानत नाहिं कहो किन कोऊ । आप हठीले भैया दोऊ ॥
करसों पोंछत सुभग शरीरा । कहियत यहै प्रेमकौ पीरा ॥
निजपलका तहँ लियो मँगाई । सोये हरिके ढिग नन्दराई ॥
यशुमति हू पौढी तहँ आई । निशिबीते अधिकौ अधिकाई ॥
जागि उठे तब कुवँर कन्हैया । कहां गई मोढिगते मैया ॥
सँग सोवत जान्यो बल भाई । अतिही श्याम उठे अकुलाई ॥
जागेनँद अरु महरि यशोदा । हरिको ऐं चिलियो नन्दगोदा ॥
काहे झिझकिउठयो अनयासा । तुरतहिदीपक कियोप्रकासा ॥
सपने गिरो यमुन जल जाई । काहू मोकौ दियो गिराई ॥
नित प्रति मैं बरजतरहौं, तूहठि यमुना जाय ।
सुधि रह गई अन्हानकी, जिन हो लाल डराय ॥
कोरे लै नन्दराय, पौढाय निज सङ्ग तब ।
वृन्दावन तू जाय, किहि कारण जित तित फिरत ॥
अब तू वृन्दावन जनि जाई । तहां कौनधौं रहत बलाई ॥

सोये दम्पतिबीच कन्हाई। तुरतहि गई नींद फिरि आई॥
सपनो सुनि जननी अकुलानी। कहत नन्द सों यशुदारानी॥
देख्यो धौं कह सुपन कन्हाई। या ब्रजके जीवन दोउ भाई॥
यहै यत्न इनको अब कीजे। गाय चरावन जान न दीजे॥
गृहसम्पत्ति द्वै लनक ढोटौना। इनहीं लौं बन भोग ठठौना॥
ये बनजाल चरावन गैयां। हँसीकरत ब्रज लोग चगैयां॥
दम्पति आपसमें इहि भांती। करत विचार बीति गइ राती॥
तारागण सब गगन छिपाने। गयो तिमिर अम्बुज बिकसाने॥
उठियशुमति लागीगृहकाजा। भूलिगयो निशिशोच समाजा॥
प्रात स्नान यमुन नित जाई। नन्दहि तुरतहि दियो उठाई॥
मथनहारिग्वालिनिसबजागीं। जिततितदहीबिलोवनलागीं॥

हरि प्यारी सुरभीनको, जम्यो उदधि बिलगाय।
सो हरि हित माखन लिये, मथति यशोदा माय॥
सदमाखन निज पानि, मथत तुरत मथनी धर्‍यो॥
बड भागिनि नन्दरानि, माखन प्यारे लाल हित॥

लगी जगावन हरिको आई। उठहु तात माता बलि जाई॥
प्रगट्यो तरणिकिरणि महिछाई। खोलि देहु मुखकलकन्हाई॥
सखा द्वार सब तुमहिं वुलावैं। तुम कारण सब धाये आवें॥
उठि तिनको मिलिकै सुखदिजै। होत अबार कलेऊ कीजे॥
तबहरि उठिकेदरशन दीन्हों। मातानिरखि मुदितमनकीन्हों॥
दाऊ जू कहि श्याम पुकार्‍यो। नीलाम्बरगहि मुखते टार्‍यो॥

मनु घनते शशि भयोनियारो। प्रगटयो सुन्दर मुख उजियारो॥
हँसत उठे सुन्दर दोउ वीरा। गौर श्याम अति सुभग शरीरा॥
शयन भवन ते बाहर आये। लखि दोउ जननि परम सुखपाये॥
दतवनले दोउवन कर दीन्हीं। चौकी बैठि मुखारी कीन्हीं॥
मातननिज निजकर मुखधोयो। नयननको आरस सब खोयो॥
अँचरन सों मुख कमल अँगोछे। उर लगाय सब अंगन पोछे॥

करहु कलेऊ लाल दोउ, तब कहुं बाहर जाउ।
मथ्यो तुरत मीठो मधुर, माखन रोटी खाउ॥
दई दुहन को माल, रोटी अरु माखन मधुर।
हरषि परस्पर खात, माता अन्तर हेतु लखि॥

---

## कालीदमन लीला।

ऋषि नारद हरि भक्त सयाने। प्रभुके मनकी रुचि पहिचाने॥
गावत गुण हरि परम हुलासा। गये तुरत मथुरा नृप पासा॥
देखि कंस आदर अतिकीन्हों। करिदण्डवत बरासनदीन्हों॥
नारद कह्यो कुशल नृपराई। कछुक शोचवश परतलखाई॥
तुम प्रताप मुनि कुशल सदाई। एक शोच मोहि बडो गुसाई॥
येदोउ व्रजमें नन्दकुमारा। जानि परत मोहिं कोउ अवतारा॥
कहत जिन्हें बलराम कन्हाई। तिनकी गति मति जानि न पाई॥
तृणावर्त्तसे दैत्य पठाये। सो उन पलइक माहि नशाये॥
बकी पठायदई पहिलेही। ऐसनकी बल सब लेलेही॥

उनते भयो नहीं कछु काजा। यह सुनि समुझिहोतमोहिं लाजा
अब मुनितुम कछु कहु विचारा। जिहिविधिमारहुँ नंदकुमारा॥
मुनि हरिके गुण नीके जाने। सुनिन्टपवचनमनहि मुसकाने॥

तब बोले मुनि न्टपति सों, सत्य कही तुम तात।
वेदोक्त अवतार हैं, इन गति जानि न जात॥
हैं ये तुम्हरे काल, प्रगट भये ब्रज आयकै।
नन्द गोपके बाल, तुम इनको राखो मतिहि॥

एक बात मेरे मन आवै। करहु कंस तुमको जो भावै॥
कालो अहि रह्यो यमुना आई। तहां कमल फूले बिपुलाई॥
फूल तहां ते मांगि पठावहु। दूत पठै नन्दहि डरपावहु॥
यह सुनि ब्रजके लोग डरैहैं। यहै बात वेऊ सुनि पैहैं॥
जैहैं अवशि फूलके काजा। तहां घात करिहै अहिराजा॥
यह सुनि कंस बहुत सुखपायो। भलो मन्त्र मुनि मोहिं बतायो॥
धनिधनि कहि पुनिर शिरनावत। हरषि चले मुनि हरिगुण गावत
तबहिं कंस इकदूत बुलायो। ब्रजहिं नन्दके पास पठायो॥
दीन्हों ताको पत्र लिखाई। कहियो यहै नन्दको जाई॥
कोटि कमल कालीदह केरे। पहुँचावहुलै कालहि सबेरे॥
कंसराज अति काज मँगाये। बनिहै तुमको तुरत पठाये॥
चल्यो दूत आतुर ब्रज धाई। जानि लई सब कुवँर कन्हाई॥

आप रहे ता दिन घरहिं, बनहिं पठाये ग्वाल।
ब्रजबासी जनके सुखद, ब्रज जीवन नँदलाल॥

दूतहिं आवत जान, आप गये वहराय हरि।
सुन्दरश्याम सुजान, खेलत ग्वालन संग मिलि॥
आये नन्द यमुन जल न्हाये। पैठत सदन छींक भइ बांये॥
महर मलिन मन अशकुनजान्यो। आज कहा उर शोच समान्यो
तबहीं चल्यो दूत जव आयो। नन्द महर घरही में पायो॥
बोललिये पाती कर राखी। नृपकी कही मुखागर भाखी॥
कालीदहके फूल मँगाये। ता कारण अति डाट पठाये॥
जो नहिं मोको फूल पठावहु। तौकोउ ब्रजमें रहन न पावहु॥
गोप नन्द उपनन्दजितेका। डारौं मारि न राखौं एका॥
जो नहिं कालहि कमल मैं पाऊँ। दोउ सुत तेरे बांधि मँगाऊँ॥
यह सुनि नन्द गये मुरझाई। और गोप सब लिये बुलाई॥
तिन सबको सब बात सुनाई। परी आय यह अति कठिनाई॥
कोटि कमल कालीदह माहीं। कहौ कौन धौं काढ़न जाहीं॥
कह्यो फूल जो कालहि न पाऊँ। तो सुत तेरे बांधि मँगाऊँ॥
मेरे सुत दोउ नृपति डर, खटकत हैं दिनरात।
आज कही यह वालसो, बल मोहन पर घात॥
चढ़िहैब्रजपर धाय, कालहि कंस अति कोप करि॥
वन्यो मरण अब आय, को राखै कित जइये॥
मुहिं अपने जियको डर नाहीं। शोच श्याम बलको उर माहीं॥
अब उबार देखियत नहिं कोई। बल मोहनहिं राखि को गोई॥
बरु मोहिं राखै बांधि नृपाला। रहैं सदन बल मोहन लाला॥

नन्द वचन सुनि सब ब्रजबासी। भये दुखित मन परम उदासी
काहू पै कछु बात न आई। अति भय त्रसित गये मुरझाई॥
चकित महा ब्रजबासी ठाढे। मानहुँ चित्र चित्र लिखि काढे॥
नन्दघरनि ब्रजनारि बिचारैं। अति व्याकुल नयनन जल ढारैं॥
ब्रजहिं बसत सबजन्मसिरान्यो। इहिविधिकंस न कबहुँ रिसान्यो
कालीदहके फूल मँगाये। कहौ कौन विधि जातसोपाये॥
अतिहि शोचवश सब नरनारी। भये कंस भय बहुत दुखारी॥
कोउ कह शरण चलो सब जाहीं। शरण गये कहिये कछु नाहीं
कोउ कह देहु जितो धन चाहैं। ऐसे सब मिलि बुद्धि उपाहैं॥

यहै शोच सब मिलि परे, नहीं कहूं निरवार।
ब्रज भीतर नंद भवनमें, घर घर यही विचार॥
अन्तर्य्यामी जानि, खेलत ते आये घरहिं।
देखतही नंदरानि, दृग भर लिये लगाय उर॥

चितवत माता कुंवर कन्हाई। बूझत कत रोवत दुख पाई॥
बूझहु जाय तात सों बाता। मैं बलि जाउँ बदन जलजाता॥
तुमहीं काज कंस अकुलाई। बाहर मति कहुँ जाहु कन्हाई॥
जाय तातको शोच मिटावो। अपने मधुर वचन सुनावो॥
आयो श्याम नंद पै धायो। जान्यो मात पिता दुख पायो॥
बूझत नंदहि कुंवर कन्हैया। तात दुखित कत तुम अरु मैया॥
मासों बात कहो किन सोई। कहा शोच वश हो सब कोई॥
नंदलाल कनियां बैठारे। कहा कहौं तुम सों मैं प्यारे॥

जबते जन्म भयो सुत तेरो। करत कंस तुम सों अरभोरो॥
केतीकरवर टरीं तुम्हारी। कुलदेवन कीन्हीं रखवारी॥
प्रथमहि अधम पूतना आई। शकट तृणा पुनि आयो धाई॥
वत्स वकाअघपुनि दुख दीन्हों। सबते तोहिराखि विधिलीन्हों॥

कालीदहके फूल अब, पठये भूप मँगाय।
सबते यह गाढो परी, कोकरि लेय सहाय॥
जो नहिं आवैं फूल, लिख्यो कस मोहिं ढाटिक।
करौं ब्रजहि निर्मूल, बांधि मंगाऊं तव सुतन॥

बबा तुम काहे दुख पाई। कहत कोन धौं कर सहाई।
सो देवता ब्रजहिके माहीं। रहत हमारे सङ्ग सदाहीं॥
लीन्हों जिन सब ठोर बचाई। करिलेहैं सोइ देव सहाई॥
सोई कंसहि फूल पठैहैं। ब्रजवासिनको शोच मिटैहैं॥
कंस केश गहि सोई मारै। असुर मारि भूभार उतारै॥
सब मिलि सोई देव मनावो। अपने मनते शोच मिटावो॥
सुनत महर हरि मुखकी बानी। भये सुखी धीरज उर आनी॥
इष्टदेव को शीश नवायो। जहां तहं तुम शराम बचायो॥
शरण शरण प्रभु शरण तुम्हारी। अबहूं करहु सहाय हमारी॥
जाते कंस त्रास मिटि जाई। रहैं सुखी बलराम कन्हाई॥
मात पितहिं हरि इहि ढंगलाई। आप चले खेलन हरषाई॥
सखन मध्य गये कुवंर कन्हाई। कह्यो खेलिये गेंद मंगाई॥

श्रीदामा यह सुनतही, गयो धाम निज धाय।
अपनो गेंद ले आयकै, दीन्हों हरिको आय॥
चलो खेलिये धाय, बाहर घोष निकासके।
जहँ कोउ आय न जाय, गेंद खेल बनिहै तहां॥
सखन सङ्ग लै बाहर जाई। रच्यो गेंदको खेल कन्हाई॥
इक मारत इक भाजत जाहीं। रोकि लेत इक बीचहि माहीं॥
आपसमांझ परस्पर मारै। नाना रँग करिकै किलकारैं॥
भाजत मारत दूजो जाहीं। मारत धाय बहुरि सो ताहीं॥
श्याम सखनकों खेलत माहीं। यमुना तट तन लीन्हें जाहीं॥
आपुन जात कमलको लालन। सखा सङ्ग लीन्हें सब ग्यालन॥
को जानहिं यह हरिके ख्याला। यमुना निकट गये सब ग्वाला॥
श्याम सखाको गेंद चलाई। अङ्ग मोरि सो गयो बचाई॥
परी गेंद यमुना जल माहीं। ह्वै गयो खेल भङ्ग तिहि ठाहीं॥
पकरी धाय फेंट श्रीदामा। मेरो गेंद देहु तुम श्यामा॥
जान बूझ तुम गेंद गिराई। बनिहै दीन्हें गेंद मंगाई॥
और सखा मोको मति जानो। मोसो मतिहि ढिटाई ठानो॥
सखा हँसत सब तारि दै, भली करी तुम कान्ह।
दीन्हीं गेंद बहाय जल; देहु श्रिदामहिं आन्ह॥
सकल लोक शिरताज; पार न पावैं ब्रह्म शिव।
ताहि गेंदके काज, फेंट पकरि झगरत सखा॥
छांडि देहु मेरि फेंट सुदामा। रारि बढावत थोरेहि कामा॥

वदले गेंद लेहु तुम मोसों। फेंट न गहौ कहौं मैं तोसों॥
छोटो बड़ो न जानत काहू। करत बराबर पकरत वाहू॥
हम काहेको तुमहिं बरावर। तुम उपजे अब बड़े नन्दघर॥
ऐसे हम अब गये बिलाई। तुमहुं बराबर नाहिं कन्हाई॥
सुनहु श्याम हम तुम इक जोटा। कहा भयो तुम नँदके ढोटा॥
गेंद दियेही वनै मंगाई। मोसों चलि है नाहिं ढिठाई॥
मुंह संभारि बोलत नहिं मोसों। करिहौं कहा धुताई तोसों॥
पुनि पुनि करत बराबर आई। तैं नहिं जानत मोरि धुताई॥
प्रथम पूतना शकटा मारयो। कागासुर अरु तृणा पछारयो॥
वत्स वकासुर वनके माहीं। मारयो सो कह जानत नाहीं॥
अघ मारयो पुनि देखत तोहीं। ऐसे धूत न जानत मोहीं॥

तुम मारे सो सांच सब, कतहौ लाल डराहु।
कंस कमल अब देहु तब, हमहिं मारियो जाहु॥
कालिहिहि परि है जानि, पकरि मँगैहै कंस जब।
देत फूल किन आनि, बहुत अचकरी करि रहे॥

सांच कहौं मैं सुनु श्रीदामा। आयो इहां फूलके कामा॥
कितक बापुरो कंस बतायो। जाके भय तुम मोहिं डरायो॥
केश पकरि गहि ताहि पछारों। देखहुगे तुम देखत मारों॥
कोटि कमल तिहि आज पठाऊं। व्रजते ताको त्रास नशाऊं॥
कालीदह जल पियत मरे सब। गहि ल्याऊं सोई कालो अब॥
लीन्हीं रिस करि फेंट छुड़ाई। चढे कदमपर धाय कन्हाई॥

भौचे सखा हँसन सब लागे। श्रीदामाके डर हरि भागे॥
रोय चले श्रीदामा घरको। जाय कहत मैं महरि महरको॥
टेरत कहि कहि सखा कन्हाई। लेहु गेंद मैं ल्यावत जाई॥
यह कहि नटवर मदनगोपाला। कूदि परे जलमें नँदलाला॥
हाय हाय करि सखा पुकारे। भये श्याम बिन बहुत दुखारे॥
रोवत चले ब्रजहि सब धाई। श्रीदामाको दोष लगाई॥

कोमल तनु अति सांवरो, साजे नटवर साज।
जलमें पैठि गये तहां, जहां सोवत अहिराज॥
यहि अंतर हरिमाय, भूखे ह्वै हैं जानि हरि।
खेलतते अब आय, मोसों भोजन मांगिहैं॥

यशुमति चली रसोई कारन। तबहीं छींक उठी इक ग्वारन॥
ठिठकि रही उर सोचत ठाढी। भलो नहीं कछु चिंता बाढी॥
आई अजिर निकसि पछिताई। चली बहुरि सो दोष मिटाई॥
मांजारी तब पंथ कटाई। बहुरो यशुमति बाहर आई॥
व्याकुल भई निकरि गइ द्वारे। कहँ धौं खेलत मेरे बारे॥
बायें काग दाहिने खर खर। सुनि आई अति व्याकुल फिर घर॥
छण बाहर छण आंगन माहीं। टेरत हरिहि शांत मन नाहीं॥
तबहीं नन्द चले घर आवत। देख्यो श्वान श्रवण फटकारत॥
दहिने काहू रोय सुनायो। माथेपर ह्वै काग उड़ायो॥
सन्मुख गररी करत लराई। डरे नन्द अशकुन बहु पाई॥

आयोघरमन मलिन विशेखौ। व्याकुल मलिनवदनतिय देखौ॥
बूझत यशुदहि नन्द डराई। काहे तव मुख गयो भुराई॥

चली रसोई करन हों, छींक भई मुहि आज।
आगे ह्वै मंजारि पुनि, गई दूसरे भाज॥
तबते मो जिय शोच, हरि धौं खेलत हैं कहां।
समुझ कंस कृत पोच, मेरे मनमें त्रास अति॥

नन्द कहत पैठत घर माहीं। मोहिं शकुन नीके भय नाहीं॥
आज कहा यह समुझि न जाई। हैं धौं कित बलराम कन्हाई॥
महरि महरसों आय जनाई। यमुना बूडे कुवँर कन्हाई॥
सुनि दम्पति बूझत अकुलाई। कैसे कहां कहौ समुझाई॥
खेलत कदम चढे हरि धाई। कूदि परे कालीदह जाई॥
सुनतहि परी धरणि महँमैया। कीन्हों सपनो सत्य कन्हैया॥
रोवत नन्द यमुनतट आये। बालक सब नन्दहि सँग धाये॥
ब्रजघर जहां तहां यह बाता। ब्रजवासी धाये बिलखाता॥
कहां पर्‍यो गिरि कुवर कन्हाई। दई बालकन ठौर बताई॥
त्राहि त्राहि करि नन्द पुकारे। गिरे धरणि नहि अङ्ग सँभारे॥

लोटत अति व्याकुल धरणि, दृगन चलत जल धाय॥
कहत श्याम तुम दियो दुख, मोको वैस बुढ़ाय।
लोग उठे सब रोय, दीन बचन सुनि नन्दके।
कहत बिकल सब कोय, हरि तुम ब्रज सूनो कियो॥

नन्दहि गिरत सबहि गहिराख्यो । तात्तणको दुखजात न भाख्यो
कहत गोप नन्दहि समुझाई । बन्यो मरण सबहो को आई ॥
हरि बिन को जीवै ब्रजमाहीं । कहौ कान्ह किहि जीवन नाहीं ॥
मोहमगन अति यशुमति मैया । टेरत मेरे लाल कन्हैया ॥
आज कहां तुम बेर लगाई । माखन धरयो खाउ किन आई ॥
अति कोमल तुम्हरे मुख योगू । जे वहु लाल लेहुँ मैं रोगू ॥
धौरी दूध धरयो औटाई । तुम निजकर दुहि गये कन्हाई ॥
सद माखन अतिहित मैं राख्यो । आज नहीं तुमनेकहु चाखयो ॥
प्रातहिते मैं दियो जगाई । दँतवन करि जु गये दोउ भाई ॥
मैं चितवत तव पन्थ कन्हाई । देखत आज अबार लगाई ॥
बैठो आय सङ्ग दोउ भैया । तुम जे वहु मैं लेहुं बलैया ॥
शोकसिन्धु बूडत नँदरानी । तनुकी सुधिबुधि सबै भुलानी ॥

ब्रजयुवती सुनि महरिके, वचन प्रेम आधीर ।
अकुलानी रोवत सबै, बढ़ी कठिन उर पीर ॥
बरजत यशुदहि ग्वाल, यह कहि कहि हरि हैं भले ॥
सुत वियोग बिकराल, जात नहीं कहि मातको ॥

चौंकि परी तनुकी सुधि आई । रोवत देखे लोग लगाई ॥
तब जानी दह गिरे कन्हाई । पुत पुत कहिके उठि धाई ॥
ब्रजवनिता सब सङ्गहि लागीं । श्यामवियोग व्यथा सब पागीं ॥
कान्ह कान्ह कहि सकल पुकारैं । तोरत लट उरसों कर मारैं ॥
अति व्याकुल यमुनातट जाई । गिरी धरणि यशुमति अकुलाई॥

मूरछि परी तनु दशा भुलाई। प्राण रह्यो हरि सुरति समाई॥
व्रजवासी सब उठे पुकारी। जल भीतर कह करत मुरारी॥
सङ्कटमें तुम करत सहाई। अब क्यों नाहिं बचावत आई॥
मात पिता अतिही दुख पावैं। रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं॥
आय गये हलधर तेहि काला। देखी जननी विकल बिहाला॥
नाक मूंदि जल सींचि जगाई। जननी कहि कहि टेर लगाई॥
वार वार जब हलधर टेरयो। भयो चेत कछु बलतन हेरयो॥

कहत उठी बलरामसों, बनहिं तज्यो लघु भ्रात।
कान्ह तुमहि बिन रहत नहिं, तुमसों क्यों रहि जात॥
मगन शोचसरमांझ, कहत लै आवहु कान्ह कोउ।
भूखे ह्वै गइ सांझ, आज कछू खायो नहीं॥

कबहुँ कहत वन गयो कन्हाई। कबहुँ बतावत घर समुहाई॥
कान्ह कान्ह कहि टेर लगावै। कित खेलत कहि लाल बुलावै॥
अतिही मोह विकल नँदरानी। करत बोध हलधर मृदु बानी॥
कत रोवत तू यशुमति मैया। नीके हैं धरु धीर कन्हैया॥
श्यामहि नेक कहूं डर नाहीं। तू कत डरपत है मनमाहीं॥
तेरी सौं मैं कहत पुकारे। वह काहूके मरे न मारे॥
जिन कालो भय होहु दुखारी। तू अपने मन देखु विचारी॥
पाहले बकी कपट करि आई। तब दिन दशके हते कन्हाई॥
शकटा तृणावर्त्त पुनि आयो। तू देखत हरि तिन्हैं नशायो॥
वत्स बका अघ बनमें मारे। विषजलते सब सखा उबारे॥

अब वे काली नाथि लै ऐहैं। कमल पठाय कंसको दैहैं ॥
मोहिं भरोसो कान्हर केरो। मानौं सत्य कह्यो सुनु मेरो ॥

मोहिं दुहाई नन्दकी, अबहीं आवत श्याम।
नाग नाथि ले आवहीं, तौ कहियो बलराम ॥
सुनि हलधरके बैन, अति उदार हरिके चरित।
भयो कछुक उर चैन, जो कछु करहिं सु सोह सब ॥

बांह पकरि बलको बैठाई। लै बलाय उर रही लगाई ॥
अति कोमल तनु धरे कन्हाई। पहुँचे कालीके ढिग जाई ॥
हरिको देखि उरगकी नारी। रहीं चारु मुखचिह्न निहारी ॥
कहत कौन तू इत कित आयो। अति कोमलतनु काको जायो ॥
बारहि बार कहति अकुलाई। वेगि भाज इतते किन जाई ॥
देखै नाग जागके जबहीं। ह्वै है भस्म छणकमें तबहीं ॥
सुनत नागनारीकी वाणी। बोले हँसि हरि शारँगपाणी ॥
पठयो मोहिं कंस नृपराई। तू याको अब देहि जगाई ॥
कंस कहा तू इनहिं बतैहै। एक फूंकमें तू जरि जैहै ॥
अजहूं भाजि कह्यो करि मेरो। लगत छोह देखत तनु तेरो ॥
मरहु कंस जिन तोहिं पठायो। तू कत इहां मरणको आयो ॥
बालक जानि दया अति मेरे। दुख पैहैं पितु माता तेरे ॥

अरी बावरी सर्प्पसों, कहा डरावत मोहिं।
जैसो मैं बालक प्रकट, अबहिं दिखावहुँ तोहिं ॥

तू किन देत जगाय, देखौं मैं याके बलहि।
यापै कमल लदाय, लै जैहौं इहि नाथि ब्रज॥
सुनत वचन अहिनारि रिसानी। छोटे वदन कहत बड़ि वानी॥
खगपतिसों सरवर जिन ठानी। ताहि कहत नाथन अज्ञानी॥
देखतही ह्वै है जरि छारा। केतिक तू बपुरो सुकुमारा॥
बपुरो मोहिं कहत अहिनारी। बोलत नाहिन बात सँभारी॥
अबहीं तोहिं बपुरि करि डारौं। एकहि लात खसम तुव मारौं॥
सोवत काहू मारिय नाहीं। चलि आई है बात सदाहीं॥
ताते तू पति देहि जगाई। देखौं मैं याकौ मनुसाई॥
जो पै तोहिं मरन बुधि आई। तौ तूही किन लेत जगाई॥
तब हरि झटकि ताहि दै गारी। दाबी चरण पूंछ अहिकारी॥
मसकी नेक धरणिसो लाई। कालौ उरग उठ्यो अकुलाई॥
धायो जानि गरुड भय बाढ्यो। देख्यो बालक आगे ठाढ्यो॥
तबहिं क्रोध करि गर्व बढायो। झटकि पूंछ अति रिसकरि धायो
दांव घात लाग्यो करन, सहसौ फन फटकार।
वार वार फूँकार कर, डारत विषकी झार॥
जरत यमुनको नीर, जात फेन उतरात विष।
परसत नाहिं शरीर, अरिमदमोचन श्यामके॥
कियो युद्ध बहु उरग अघाई। मुरे नहीं नेकहु यदुराई॥
कहत परस्पर अहिकी नारी। देखहु यह बालक अति भारी॥
विषज्वाला जल जरत यमुनको। याके तनु परसत नहिं तनको॥

यह कछु मन्त्र यन्त्र धौं जाने। अति कोमल विष नेक न मानै॥
सहसौ फनन करत अहिघाता। अबलौं बच्यो पुण्य पितुमाता॥
तब अहिराज श्याम तन हेरी। कहत पूंछ दाबी इन मेरी॥
अतिहि क्रोधकरि आतुर धाई। हरिके अंग गयो लपटाई॥
नखते शिखलौं अहि लपटाई। कहत करी इन बहुत ढिठाई॥
कौतुकनिधि हरि सब गुण खानी। दियो दांवइहि अहिको जानी॥
तिहि अवसर सुर मुनि गन्धर्वा। अति व्याकुल आये ब्रजसर्वा॥
उरग नारि मन मन पछिताहीं। हरिको रूप समुझि मनमाहीं॥
कहैं गर्व करि अति यह आयो। कालविवशपगइतहिंचलायो॥

कालो हरिसों लिपटकै, गर्व कियो मनमांह।
कहत मोहि जानत नहीं, मैं सर्पनको नाह॥
भंजन गर्व गोपाल, गर्व भरे सुनि अहि वचन।
कीन्हों वपुष विशाल, विकल भयो अहिराजतन॥

जबहिं श्याम तन अति विस्तारो। टूटन लग्यो अंग सब सारो॥
शरण शरण तब उरग पुकारो। मैं नहिं जान्यो रूप तिहारो॥
जीवदान प्रभु मोको दीजै। अपनी शरण राखि मोहिं लीजे॥
यह वाणी सुनतहि भगवाना। सकुचि गये हरि कृपानिधाना॥
यहे वचन गजराज सुनायो। गरुड छांड़ि ताके हित आयो॥
यहे वचन सुनि द्रुपदसुताको। बसन बढाय दियो पुनि वाको॥
यहे वचन सुनि लाक्षाघरते। लीन्हें राखि पाण्डवन जरते॥
यह वाणी सहिजात न श्यामहिं। दीनबन्धु करुणाके धामहिं॥

लीनो अंगसँकोच कृपाला। देख्योविकल शिथिल जवव्याला॥
पगसों चापि नाक धरि फोरी। लीन्हों नाथ हाथ गहि डोरी॥
कूदि चढ़े हरि ताके शीशा। मन मन करत विचार अहीशा॥
मैं यह सुन्यो हतो विधिपाहीं। कृष्णाऽवतार होहि ब्रजमाहीं॥

ते गोकुलमें अवतरे, म जान्यो निरधार।
ये अविनाशी ब्रह्म हैं, ब्रजहि कृष्ण अवतार॥
किये बहुत फन घात, बार बार पछितात मन।
अस्तुति करत लजात, रह्यो दीन ह्वै सकुचि अति॥

देख्यो व्याल विहाल कृपाला। दियो दरश निज दीनदयाला॥
देखि दरश मन हर्ष बढाई। बोल्यो दीन वचन अहिराई॥
मैं अपराध कियो बिन जाना। क्षमो नाथ तुम क्षमानिधाना॥
तामसयोनि कीटविष जानौं। कौन भांति तुमको पहिचानौं॥
अब कीन्हों प्रभु मोहिं सनाथा। दीन्हों दरश जगतके नाथा॥
अशरणशरण नाथ तव बाना। कहत सन्त सब वेद पुराना॥
ते अपराध क्षमा सब कीजे। अब प्रभु शरण राखि मोहिं लीजे॥
आज धन्य यह मेरो माथा। जापर चरण दिये मम नाथा॥
अब ये चरण परसि प्रभु तेरे। मिटे दोष दुख अघ सब मेरे॥
जो पदकमल पुनीत तुम्हारे। निशि दिन रहत रमा उर धारे॥
शिव विरञ्चि सनकादिक ध्यावैं। जे पद योगी ध्यान लगावैं॥
जे पदपद्म सलिल सुरसरिता। तीन लोककी पावन करता॥

जिन पदपङ्कज परसते, गति पाई ऋषिनारि।
सुर नर मुनि वन्दित तिन्ह, सन्तत प्राणअधारि॥
फिरत चरावत गाय, श्रीवृन्दावन जे चरण।
भक्तनके सुखदाय, व्रजवासी जनदुखहरण॥

जे पदपङ्कज परम सुहाये। प्रभु मैं आज सुलभ करि पाये॥
गरुड़ त्रास ते इत भजिआयो। भलो कियो मोहिं गरुड़ सतायो॥
जाते दरश भयो प्रभु तेरो। अब भय ताप मिट्यो सब मेरो॥
आज भयो मैं नाथ सनाथा। गह्यो नाथ मम प्रभु निज हाथा॥
सुनत दीन कालीकी बानी। दीनबन्धु अतिशय सुखमानी॥
फनप्रति चरणसरोज छुवाये। ताके सब सन्ताप नशाये॥
तब व्रजनाथ भक्तहितकारी। यह अपने मनमाहि विचारी॥
कालीको व्रजदेश दिखैये। कमलभार यापै लै जैये॥
ह्वै हैं व्रजके लोग दुखारी। करौं जाय अब तिनहिं सुखारी॥
कमल कंसको देउ पठाई। कालहि चढ़ैगो व्रजपर आई॥
लीन्हें अहिपर कमल लदाई। चले व्रजहि व्रजजन सुखदाई॥
लियो नाथ गहि अहि उचकाई। फनपर ठाढ़े कुवँर कन्हाई॥

उरग नारि कर जोरिकै, प्रभुके सम्मुख आय।
करत विनय अति दीनह्वै, पति हित हरिहि सुनाय॥
इत यशुमति उर माहि, उठी लहर अति प्रेमकी।
कान्हर आयो नाहिं, कहत रोय बलरामसों॥

कहत राम सुनु यशुमति मैया। अबहीं आवत कुवँर कन्हैया॥

नेक धीर धरु मति अकुलाई । यह सुनिकै वलकौ वलि जाई ॥
पुनि यहकहतकान्ह नाहिनअव । झूठहिं मोहिंप्रबोध करतसब ॥
भई विनासुत व्याकुल मैया । कहत कहां मेरो वाल कन्हैया ॥
गिरी धरणि व्याकुल मुरझाई । रोय उठे सब लोग लुगाई ॥
व्रजवासी सब भये विहाला । कहत कहाँ मोहन नँदलाला ॥
तुम विन यह गति भई हमारी । आवत नहीं धाय वनवारी ॥
प्रातहिते जलमांझ समाने । तुमहि विना युगयाम विहाने ॥
अवको वसै जाय व्रजमाहीं । छग छग जीवन तुमहि विनाहीं ॥
अति व्याकुल रोवत नँदराई । विकल मनहुँ फणि मणी गवाँई ॥
यशुमति धाय चलत जल माहीं । राखति व्रजयुवती गहि वाहीं
हलधर सवहिनको समझावैं । विना श्याम कोउ धीर न पावैं ॥

कहत यशोदा नन्दसों, छग छग वारहिं वार ॥
और किते दिन जियहुगे, मरत नहीं मोहिं मार ।
करि देखहु मन ज्ञान, ऐसे दुखमें मरण सुख ॥
नन्द भये विन प्रान, मुर्छि परे सुनि तिय वचन ॥

तवहिं धाय वल पिता जगायो । वार वार कहि कहि समुझायो ॥
वृथा मरत काहे सव कोई । कान्हर मारनहार न कोई ॥
हलधर कहत सुनहु व्रजवासी । वे अन्तर्य्यामी अविनासी ॥
सव गुणसागर आनंदरासी । रमा सहित जलहीके वासी ॥
मेरो कह्यो सत्य करि मानो । आवत श्याम धीर उर आनो ॥
यमुनाके भीतर तिहि काला । उठ्योसलिल झकझोर विशाला ॥

बोलि उठे आतुर बलरामा। वे देखो आवत घनश्यामा॥
सुनत वचन लखिकै उठि धाये। यमुना नीर तीर सब आये॥
कोउ जलमें कोउ बाहर ठाढे। दरशआतुर विरहानल डाढे॥
प्रगट भये जलते तेहि काला। ब्रजजनजीवन नँदके लाला॥
कमलभार कालीपर लीन्हें। नटवर बेष मनोहर कीन्हें॥
भये सुखी सब ब्रजके बासी। लखि हरिबदन परमसुखरासी॥

हरिवदन लखिकै राशि सुखको, मुदित ब्रजवासी भये॥
मनहुँ बूडत नाव पाई, परम उर आनँद छये।
मात पितु लखि जो भयो सुख, जात सो कापै कह्यो।
पुलक तन मन हरषि गदगद, प्रेम जल लोचन बह्यो॥
चकित हरितन लखत इकटक, मिलनको आतुर हियो।
श्याम निरतत अहिफननपर, खौर चन्दन तनु कियो॥
श्रवण कुण्डल लोल लोचन, चारु मुकुट बिराजहीं।
मनहु मरकत गिरिशिखर मणि, मोर तापर राजहीं॥
पीतपट कटि काछनी उर माल मणि भूषण सजे।
नृत्य ताण्डव करत फण प्रति, व्योम दिवि दुन्दुभि बजे॥
भई जयध्वनि गगन वर्षहिं, सुमन सुर आनँद भरे।
गन्धर्व गुणगण गगन गावत, तान तालन अनुसरे॥
उरगनारी श्याम सन्मुख, करत अस्तुति आवहीं।
नाथ अब अपराध क्षमि करि,करि कृपा पति पावहीं॥
राखे चरण निज शीश याके, अति बड़ाई दून लई।

ऐसी बडाई औरको प्रभु, नाहिं तुम कबहूं दई ॥
शेष इक ब्रह्माण्ड भरि शिर, राखि मन गर्वित कियो।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड तव तन,अधिक इन यह भरि लियो
सुर असुर नर नाग खग मृग, कीट जन सब रावरे।
क्षमिय अब अपराध अहिके, सुभग सुन्दर सांवरे ॥
सुनि अहिनारिनके वचन, करुणामय यदुराय।
उतरि परे अहिशीशते, यमुना केतट आय ॥
तटपर कमल धराय, कालीको आयसु दियो।
उरगद्वीप अब जाय, करहु बास निर्भय सदा ॥

तब कालो कह सुनहु कृपाला। तव बाहन डर डरत विशाला ॥
धनि ऋषिशाप दियो है ताहीं। ताते आय सकत ह्यां नाहीं ॥
तबमैं भागि बच्यो इत आई। नातरु लेत मोहि सो खाई ॥
चरणचिह्न लखि तब फण मेरे। परिहै गरुड़ आय पग तेरे ॥
तू अब मति खगपतिहि डराई। अपने द्वीप करहु सुख जाई ॥
वाते वडो कौन सुख नाथा। अभयदान पद परस्यो माथा ॥
जे पदकमल भजन परतापा। जन प्रहलाद मिटे सन्तापा ॥
ते पदचिह्न शीशपर धारी। जन्म जन्मको भयो सुखारी ॥
उरगिन सहित नाइ पद माथा। गयो उरगद्वीपहि अहिनाथा॥
जै जे ध्वनि नभ सुरन बखानी। धन्य धन्य जनके सुखदानी ॥
शरण राखि कालो अहि लीन्हों। जलते काढि कृपाकरि दीन्हों
फनपर चरण चिह्न प्रगटाई। कठिन गरुडको त्रास मिटाई ॥

॥ धन्य धन्य प्रभु धन्य कहि, मुदित सुमन वर्षाय।
॥ गये देव निज निज सदन, हृदय परम सुख पाय॥
द्वीप पठायो व्याल, सुरगण सुरलोकहि पठै।
॥ आयो निकसि गोपाल, व्रजवासी जन सुखकरन॥
धाय मिले सगरे व्रजवासी। विरहताप तनुकी सब नासी।
माता दौरि कण्ठ लपटानी। पुलक रोम तन गदगद बानी॥
नयन नीर अति प्रेम अधीरा। उर लगाय मेटत उर पीरा॥
कहि कहि मेरो बाल कन्हैया। दुहू करनसों लेत बलैया॥
धाय नन्द उरसों लै लाये। गये प्राण मानहुं फिरि आये॥
गदगद बैन नयन जल ढारी। कहत जन्म फिरि भयो तुम्हारो॥
बार बार उरसों लपटावत। दारुण उरको ताप नशावत॥
प्रेमाकुल देखो बल माता। मिले रोहिणीसों सुखदाता॥
निरखि वदन कह यशुमति मैया। मैं बरजौं नित तुमहिं कन्हैया
यमुना नीर न्हान मति जाहू। तुम बरजो मानत नहि काहू॥
मैं निशि सपने मांझ डरान्यो। सोई कछू आय प्रकटान्यो॥
कंस कमलके फूल मँगाये। व्रजवासी सब अतिहि डराये।
मैं गेंदहि खेलत यहीं, आयों यमुनातीर।
॥ मोहि डारि काहू दियो, कालीदहके नीर
॥ देखो उरग विशाल, जाय तहां मैं डरो अति।
॥ तब पूछ्यो मोहि व्याल, किन पठयो तोको इहां॥
जब ऐसे मैं ताहि बतायो। कमल काज मोहि कंस पठायो॥

यह सुनतहिं अहि उठयो डराई। मोको फनपर लियो चढाई॥
कमल लियो निज पीठि लदाई। आपुहि आय गयो पहुँचाई॥
ऐसे जननी बोधि कृपाला। सुनत बचन सब ब्रजकी वाला॥
लै लै हरिको उरसों लावैं। कठिन विरहकी शूल मिटावैं॥
श्याम विना बहुतै दुख पायो। सो हरि तिनको ताप नशायो॥
लखे सखा सब आरत बाढ़े। प्रेमातुर मिलवेको ठाढ़े॥
गये दौरि तिन पास कन्हाई। मिले धाय सब कण्ठ लगाई॥
कहत सखा धनि धन्य कन्हैया। जो तुम कह्यो कियो सोइ भैया
तुमहो सब ब्रजके सुखदानी। कंस मारिहो तुम हम जानी॥
कहा भयो जो तुम हौ बारे। हैं तुम्हरे गुण सबते न्यारे॥
भलो यदपि सिंहनको छोटो। कौन काज गज लम्बो मोटो॥

तुम हमपर रिस करि गये, सो अब देहु भुलाय।
यह सुनतहि हरि हँसि उठे, मिले बहुरि हरषाय॥
जब हलधर अरु श्याम, मिले बिहँसि दोउ मनहिं मन।
निरखि मगन नर बाम, भेद न कोऊ जानहीं॥

सब कोउ कहत धन्य बलरामा। तुमजो कहौ करौ सोइ श्यामा॥
तब हरि कह्यो नंदसों जाई। मेरे मनहि बात यह आई॥
आज बसैं सब यमुना तीरा। अति रमणीक सुगन्ध समीरा॥
इहां कीजिये भोग विलासा। होत प्रात सब चलहि अवासा॥
कमल पठाय कंसको दीजे। सुनहु तात अब विलंब न कीजे॥
गोप जाय आवैं पहुँचाई। कालहि चढ़ै नतु ब्रजपर धाई॥

यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो । सब ब्रजवासिनके मन भायो ॥
तुरत ग्वाल बहु घरन पठाये । षटरस भोजन बहुत मँगाये ॥
यमुनातीर गोप समुदाई । भोजन कियो बहुत सुख पाई ॥
नंदराय तब शकट मँगाये । कोटि कमल तिनपर लदवाये ॥
बहुत भार दधि घृतके कीन्हें । ते अहिरन कांधे धरि लीन्हें ॥
अपनी सरि जे गोप सुहाये । तिनहिं संग करि नृपहिं पठाये ॥

> बहुत विनय करि कंसको, दीन्हों पत्र लिखाय ।
> कहियो मेरी ओरते, नृपसों ऐसी जाय ॥
> गयो कमलके काज, कालीदह मेरो सुवन ।
> तुव प्रतापते राज, आप गयो पहुँचाय अहि ॥

कोटि कमल नृप मांगि पठाये । तीनि कोटि तहँते हैं पाये ॥
सो राखे जलमांझ सजाई । आयसु होय [illegible] देउँ पठाई ॥
तब गोपन सों कुवँर कन्हाई । ऐसे बो नर ना मुसकाई ॥
नृपसों लीजो नाम हमारो । यह कारज हँसि कियो तुम्हारो ॥
कमल शकट दधि घृतके भारा । चले गोप बुल नृपके द्वारा ॥
राजद्वार शकटन पहुँचाई । जाय पौरियन खबरि जनाई ॥
तुरत पौरिया भीतर धाई । समाचार सब नृपहिं सुनाई ॥
सुनत बात यह मनहिं डरान्यो । आप निकसि आयो अतुरान्यो
देखी शकट भीर अति भारी । भयो चकित सुधिबुद्धि बिसारी ॥
कमल देखि भय भयो बिशाला । लगे ताहि मनु व्याल कराला॥

नंदविनय तव गोपन भाषी। दीन्हों पत्र भेंट सब राषी॥
गोपन वहुरि कह्यो नृपराई। नंदसुवन यह कह्यो कन्हाई॥

हम कालीदह जाय यह, कियो राजको काम।
नृप हमको जानत नहीं, कहियो मेरो नाम॥
सुनत श्याम सन्देश, देखि कमल अति भय विकल।
भीतर गयो नरेश, मन बाढ़ी चिन्ता विपुल॥

मनहीं मन यह करत विचारा। यासों मेरो नाहिं उबारा॥
दैत्य गये ते सबहि नशाये। काली ते ऐसे बचि आये॥
ताहीपर कमलन लै आये। सहस शकट भरि मोहिं पठाये॥
कबहुं कहत गोपनको मारों। इनको हांते तुरत निकारों॥
फेर कछू मनमें भय पावै। करत विचार न कछु बनि आवै॥
पुनि सँभारि धीरज कीन्हों। गोपन बोलि भीतरहि लीन्हों॥
हृदय दुखित ऊपर मानौ। पहिराये दीन्हें मनमानौ॥
शिरोपाव नन्दहुको हों। कहियो काज बड़ो तुम कीन्हों॥
तेरे सुत बलराम क ई। एक दिवस देखिहों बुलाई॥
यह सुनि अति पुरुषारथ कीन्हों। कालीदहके फूलन लीन्हों॥
यह कहि विदा किये सब ग्वाला। भयो कंस उर शोच विशाला॥
मनहीं मन शोचत हरिके गुन। रह्यो काठ ज्यों भीतरही घुन॥

तब दावानल बोलिकै, कह्यो मरम सब ताहि।
देखों मैं तेरे बलहि, तू अब ब्रजको जाहि॥

जाय कीजियो छार, ब्रज सब ब्रजवासिन सहित ।
बचहिं न नन्दकुमार, ऐसो यत्न विचारि उर ॥
दावानल सुनि नृपकी बानी । चल्यो रिसाय गर्व उर आनी ॥
करौं भस्म इक पलमहँ जाई । सहित गोप नँदसुवन कन्हाई ॥
नृपको काज आज करि आऊं । जो कहुँ एक ठौर सब पाऊं ॥
इहां गोप कमलन पहुँचाई । आये यमुनतीर हरषाई ॥
नन्द तुरत सब निकट बोलाये । सुनत सकल ब्रजजन जुरि आये
गोपन कही नन्दसों आई । लिये कमल नृप अति सुखपाई ॥
दियो हर्ष तुमको पहिरायो । मुदित नन्द लै शीश चढ़ायो ॥
अपने सब पहिराव दिखाये । लखि सब ब्रजवासिन सुख पाये ॥
हरिको नाम सुन्यो जब राजा । हरषि कह्यो कीन्हों उन काजा
इक दिन ब्रज मोहन दोउ भाई । देखहुं गो मैं इहां बुलाई ॥
यह सुनि नन्द बहुत सुख पायो । हरषि भूप मो सुतन बुलायो ॥
करी कृपा अति नृप हरिपाहीं । सब नर नारि हरषि मनमाहीं

कहत श्याम बलरामसों, हँसि हँसिकै यह बात ।
नृप हम तुम देखन लिये, कह्यो बुलावन तात ॥
ब्रजजन परम हुलास, इक सुख हरि अहिते बचे ।
मिटयो कंसको त्रास, दतिय कमल पठये नृपहि ॥

## दावानल वर्णन लीला ।

यहि विधि ब्रजजन अतिसुखपायो । खानपानकरिदिवसबितायो

सोये सब मिलि यमुना तीरा। राखि हृदय सुन्दर बलबीरा॥
वहां असुर दावानल आयो। चाहत है सब ब्रजहि जरायो॥
देखे सब ब्रजजन इक ठाहीं। कियो हर्ष अपने मनमाहीं॥
प्रकटौ दावानल चहुँ ओरा। अतिहि प्रचण्ड पवन झकझोरा॥
दशहूं दिशिते घेरत आवै। तृण तरु खग मृग जीव जरावै॥
जागि परे सब ब्रजनरनारी। कहैं चहूं दिशि लगी दवारी॥
भये चकत सब अति मनमाहीं। काहू दिशि मग दीखत नाहीं॥
चहत चलन भजि नहीं निकासू। लेत सबै भरि शोच उसासू॥
आय गई दव अतिहि निकटहीं। चले कहत सब यमुनातटहीं॥
अब न देखियत कहूं उबारा। बढ़ौ अनल पहुंचौ नभ झारा॥
ब्रजके लोग अतिहि अकुलाने। जरे सकल मनमांझ डराने॥

अति विकल सब डरे ब्रज जन, देखि अनल भयावनो।
भई धर नभज्वाल पूरण, धूम धुन्ध डरावनो॥
लपट झपटत जरत तरुवर, गिरत महि भहरायकै।
उठत शब्द अघात चहुँ दिशि, बढ़त झार झहरायकै॥
फटत फल फूटत पटकदल, जरत बरत लता घनी।
कांस चटकत बांस पटकत, अँगनि उचटत नभतनी॥
हरिण मोर वराह वन पशु, विकल पन्थ न पावहीं।
जरत जहँ तहँ जीव खग मृग, विपुल जित तित धावहीं॥

दावानल अति क्रोध करि, लियो दशहुँ दिशि घेर।
उठी अनल ज्वाला प्रबल, मानहुँ अचल सुमेर॥

धूम धुन्ध विकराल, भयो अँधेरो गगन सब ।
बिच बिच चमकत ज्वाल, तड़ितमाल जनु सघनघन ॥
भये देखि ब्रजलोग दुखारे । तब सब हरिको शरण पुकारे ॥
कहत श्याम तुम करो सहाई । जरत सकल ब्रज लेहु बचाई ॥
तृणा शकट बक अघ तुम मारे । कंस त्रासते तुमहि उबारे ॥
जहँ जहँ परो गाढ हम आई । तहां तहां तुम करो सहाई ॥
अब हरि यत्न कछू सो कीजे । हमहिं बचाय अग्निसे लीजे ॥
व्याकुल गोप नन्द मनमाहीं । करत बिचार बनत कछु नाहीं ॥
यशुमति सबहिन कहत पुकारे । दई पर्यो है ख्याल हमारे ॥
नाना रूप असुर बहु आये । कोउ खग कोउ पशुरूप बनाये ॥
कोऊ पवनरूप ह्वै आयो । भयो तहां कोउ पुण्य सहायो ॥
आज उरगसों बच्यो कन्हाई । मरु करि मन न्टपत्रास नशाई ॥
अब यह बाढी अग्नि अपारा । होत सकल ब्रजको संहारा ॥
किमि बचिहैं यह बालक दोऊ । मोहिलखिपरतउपाय न कोऊ
सुनि जननीके वचन प्रभु, लखि सब ब्रज बेहाल ।
कह्यो सबन धीरज धरो, मति डरपो लखि ज्वाल ॥
कौतुकनिधि गोपाल, को जानै तिनके गुणनि ।
दुख सुख जिनके ख्याल, जनके हितकारक सदा ॥
तब हरि कह्यो डरो मति कोई । बिनवहु देव बहुरि सब सोई ॥
जिन सहाय कीन्हो अबताई । सोई करै सहाय सदाई ॥
हरि हँसि सबसों आँखि मुँदाई । करि गये अग्निपान सुखदाई

ह्वै गइ चहुं दिशि शीतलताई। रह्यो न अग्निलेश कहुँ राई॥
खोलि देहु दृग सब हरि बोले। सुनतहि तुरत सबन दृग खोले॥
देखि चकित सब ब्रजनरनारी। कहत धन्य धनि तुम बनवारी॥
धरणि अकाश बराबर ज्वाला। लपट झपट अतिही बिकराला॥
नहीं बरस्यो नहिं सींच्यो काहू। गयो बिलाय कहां धौं दाहू॥
कैसे यह सब अग्नि बुझानी। हम यह कछू न काहू जानी॥
तब हँसि बोले कुवँर कन्हाई। वह करनी यह कहि न सुहाई॥
तृणकी आग प्रथम वह्नि जागै। फिरि तिहि बुझत बिलम्ब न लागै॥
सुनत श्यामकी कोमल बानी। भये सुखी सब त्रास नशानी॥

जीव जन्तु खग मृग जिते, भये सुखी ततकाल।
द्रुम बेली तृण हरित सब, प्रफुलित बन सुखमाल॥
श्याम सहायक जाहि, ताहि कहो डर कौनको।
यह न बड़ाई वाहि, पांच तत्त्व उनके किये॥

कहत परस्पर ब्रजकी नारी। हैं सखि बडे बीर बनवारी॥
देखत कोमल श्याम सलोना। यह सखि जानत हैं कछु टोना॥
नाथ्यो नाग पतालहि जाई। लायो तापर कमल लदाई॥
मांगे कमल कंस नृपराई। कोटि कमल तिहि दिये पठाई॥
दावानल नभ धरणि बराबर। घेर लिये ब्रजके नारी नर॥
नयन मुँदाय कहा धौं कीन्हीं। रह्यो नहीं कछु ताको चीन्हीं॥
ये उतपात मिटे उनहींपै। और न होय सकै किनहीं पै॥
यह कोउ सखी बड़ो अवतारा। है यहही कर्त्ता संसारा॥

लखि हरिचरित यशोदा मैया । चकित निरखि मुख लेतबलैया॥
लखि सुत चरित मुदित नँदराई । करत गोपगण सकल बड़ाई॥
कहत देव मुनि अति अनुरागा । हैं ब्रजवासिनके बड़ भागा ॥
जिनके संग श्याम सुखशीला । करत रहत नित नव रसलीला ॥

एक दिवसनिशि यमुनतट, बसि सब गोपी ग्वाल ।
होत प्रात निज निज सदन, आये सहित गोपाल ॥
हरि जनके सुखकार, विलसत विवध विलास ब्रज ।
सन्तन प्राणअधार, ब्रजबासी जन जाहिं बलि ॥

हरि ब्रजजनके दुख बिसरावन । करत चरित सुरमुनि मनभावन॥
तुरत सकल ब्रज लोग भुलाये । कौन कंस कब कमल मँगाये ॥
कब हरि यमुना जलहि समाये । कालीनाग नाथि कब लाये ॥
कब दावानल जारन आयो । एक दिवस निशि कहाँ बितायो ॥
नहिं जानत कछु नंद यशोदा । करत श्याम सोइ बालविनोदा ॥
माखन माँगत कुवँर कन्हाई । बार बार जननीसों जाई ॥
आतुर दधिहि मथत नँदरानी । सद माखन हरिको रुचि जानी ।
कहत तनक तुम रहत ललारे । तुम्हैं देउँ नवनीत पियारे ॥
मैं बलि भूख लगी तुम भारी । बात बनावत सुतहि दुलारी ॥
बूझत बात काहुकी कान्हहिं । कहत श्यामसों सुनत न कानहिं ।
झूठहि देत हुँकारी जननी । भूल गई सब हरिकी करनी ॥
तबलौं मथि दधि माखन कीन्हों । तुरतहि लै सुतके कर दीन्हों

लैलै अधरन परसि करि, माखन रोटी खात।
करत प्रशंसा मधुर कहि, सुनत प्रफुल्लित मात॥
जो प्रभु अलख अपार, दुर्लभ शिव सनकादिकहँ।
धन्य नन्दकी नार, ताको सुत करि मानई॥

---

## प्रलम्बासुरवध लीला॥

नित नवलीला करत कन्हाई। तात मात व्रजजन सुखदाई॥
मुदित सकल व्रजके नर नारी। निशिदिन हरिमुखचन्द निहारी
इक दिन श्याम राम दोउ भाई। खेलत सखन संग बन जाई॥
नाना विधि सब करत कलोलैं। भाँति भांतिकी वाणी बोलैं॥
कबहूं मोर हंसकी नाई। बोलत हँसत श्याम सुखदाई॥
कबहूं मधुरे स्वर सब गावैं। मध्य श्यामघन वेणु बजावैं॥
कबहूं चढत तरुनपर जाई। कूदि परत गहि डार नवाई॥
नाना विधिके खेलन खेलैं। बालविनोद मोदरस केलैं॥
तहां प्रलम्ब असुर इक आयो। कंस ताहि दै पान पठायो॥
सो छल रूप गोपवपुधारी। मिल्यो आय सब सखन मँझारी॥
ताको ग्वाल न काहू जान्यो। यहतौ असुर श्याम पहिचान्यो॥
बलदाऊको दियो जनाई। ताहि हतनको रच्यो उपाई॥
सखा बुलाये निकट सब, तिनहिं कह्यो नँदलाल।
फल बुझाय अब खेलिये, भये मुदित सुनि ग्वाल॥

द्वै बालक करि राय, सखा लिये तब बाँटि सब।
आधे इक दिशि आय, आधे एक दिशा भये ॥
निज निज जोट सखनजुरिलीन्हों। हलधर जोट दनुजसगकान्हा
आपसमें यह होड़ लगाई। जो हारै सो पीठि चढ़ाई॥
भाण्डीर बनलौं लै जाही। फेर इहां पहुँचावै ताही॥
फलको नाम बुझावन लागे। बूझि दियो बल सबते आगे॥
चले सखा चढ़ि चढ़ि निज जोरी। चढ़े दनुज बल घींच मरोरी
भांडीर बन पहुँचे जाई। फिरे सखा सब ठांव कुवाई॥
असुर चल्यो लै बलको आगे। प्रकट्यो दनुज शरीर अभागे॥
तब बलदेव कोपकरि भारी। मुष्टि एक ताके शिर मारी॥
विकसि गयो शिर गिरयो अधीरा। उतरि परे तब श्रीबलवीरा॥
भयो पलकमें सो बिनप्राना। देखत सुर मुनि चढ़े विमाना॥
भई गगनते जय जय बानी। फूलन की वर्षा वरषानी॥
बहुबिधि अस्तुति बलहिं सुनाई। मुदित सकल सुर मुनि समुदाई
ग्वाल बाल चकित सबै, दौरि गये बल पास।
मृतक असुर तनु देखिक, तब मन कियो हुलास॥
धन्य धन्य बलराम, धन्य तुम्हारे मात पितु।
बड़ो कियो यह काम, कपट रूप मारयो असुर॥
यह शठ गोप भेष बनि आयो। हम काहू इहिं जानि न पायो॥
जो यह शठ नहिं जात निपातो। तो काहू लरिकहिं लै जातो॥
हो तुम बड़े बीर दोउ भाई। जहँ तहँ हमको होत सहाई॥

वनके दुष्ट सकल तुम मारे । हो तुम हम सबके रखवारे ॥
ताहि कहो काको डर भैया । जासु मीत बलराम कन्हैया ॥
देत ग्वाल सब बलहि बड़ाई । धन्य धन्य ब्रजजन सुखदाई ॥
दुष्ट मारि बल मोहनलाला । आये सदन सहित सब ग्वाला ॥
ग्वालन कही आय सब बाता । सुनत चकित ब्रजजन पितुमाता ॥
करत सकल बलराम बड़ाई । जननी मुदित लिये उर लाई ॥
बल मोहन दोउ वीर निहारी । दोऊ जननि जात बलिहारी ॥
भूखे जानि वनहिते आयो । दोउ भइयन भोजन करवायो ॥
जो सुख लहत नन्दकी रानी । सो शारद नहिं सकै बखानी ॥

सुतसनेह यशुमति मगन, निशि दिन जात न जान ।
करत चरित सन्तन सुखद, भक्तबछल भगवान ॥
नित नव परम हुलास, ब्रजबासी हरिसँग लहत ।
बिलसत विविध विलास, बाट घाट गृह बन सघन ॥

## पनिघट लीला ।

पनिघट यमुनाके तटमाहीं । ठाढ़े श्याम कदमकी छाहीं ॥
सखा वृन्द चहुँ ओर बिराजैं । कोटि काम छवि निरखत लाजैं ॥
शीश मुकुट की लटक सुहाई । सुरँग खौर केशर छवि छाई ॥
कुंडल झलक अलक घुंघरारी । कण्ठ कनक कण्ठी द्युतिकारी ॥
चटकीली लटकी बनमाला । परसति चरणसरोज बिशाला ॥
मुक्तमाल मणिमाल सुहाई । उर बिशाल पै अति छवि छाई ॥

अरुण अधर दशनन द्युति नीको। मृदु मुसकान मोहनी जीको॥
चटकीलो पटपीत बिराजे। कटितट क्षुद्रघंटिका राजे॥
भुज विशाल भूषण युत सोहै। कर मुद्रिका मुदित मन मोहै॥
तनु घनश्याम रसीले नैना। हँसि हँसि कहत सखनसों बैना॥
कनक लकुटिसों पग लपटान्यो। भूषण सहित न जात बखान्यो॥
गहि द्रुमडार तिरोछे ठाढे। अङ्ग अङ्ग अनुपम छबि बाढे॥

कबहुं बजावत अधर धरि, करि मुरलीध्वनि घोर।
निकट बुलावत बनमृगन, कबहुं नचावत मोर॥
रहे गगन घन छाय, सुखद छांह शीतल किये।
वर्षा ऋतुको पाय, निरखत सुत नँदरायको॥

हरित भूमि चहुँ ओर सुहाई। मनहुँ काम मसनन्द बिछाई॥
बहत समीर धीर सुखदाई। शीतल अधिक सुगन्ध सुहाई॥
बहत यमुन बाहुलते पूरो। परत भवँर जहँ तहँ छबि रूरो॥
उठत श्याम जल सुभग तरंगा। छबितरङ्ग जिमि हरिके अङ्गा॥
या छबिसों पनिघट हरि ठाढे। सङ्ग गोप बालक हित बाढे॥
यमुना जल तिय भरन न जाहीं। ग्वाल भीर देखत सकुचाहीं॥
हरिके गुण मनमें सब जानैं। रोकत टोकत शंक न मानैं॥
ताते जाय सकत कोउ नाहीं। दरश लालसा अति मनमाहीं॥
सबके अन्तर्यामि कन्हाई। युवतिनके मनकी गति पाई॥
तब इक बुद्धि रची नँदलाला। रसिकशिरोमणि मदनगोपाला॥

सघन एक तरुतर बैठाई । पनिघटते सब और मिटाई ॥
आप रहे द्रुम ओट छपाई । हेरत युवतिन मग चित लाई ॥

इहि अन्तर आवत लखी, युवती इक घनश्याम ॥
आप रहे द्रुम ओट हरि, यमुनातट गइ बाम ॥
नागरि जलहिं हिलोर, भरि गागरि शिर धरि चली ॥
पाछेते चितचोर, घट लै दियो लुढाय महि ॥

गही चतुर ग्वालिनिभुज हरिकी । पाई कनक लकुटिया करकी
सबसों तुम करि रहे ढिठाई । तैसेहि मोसों लगत कन्हाई ॥
देन लगे तब हरि हँसि गागरि । लेतनहीं ग्वालिनि अति नागरि
कहत कि रीतो घट नहि लेहौं । जलभरि देहु लकुटि तब देहौं ॥
कहा जो तुम नँदसुवन कन्हाई । हमहू बड़े बापकी जाई ॥
एक गांव बस बास हमारो । मैं नहि सहिहौं कह्यो तुम्हारो ॥
एक कहौ तो दश मैं कैहौं । मैं कछु तुम सौं डरपि न जैहौं ॥
यह सुनि हँसि दीन्हें नँदलाला । लियोचोरिचितमदनगोपाला
कहत लकुटिया दे री मेरी । मैं भरि देहौं गागरि तेरी ॥
देखत रूप सुनत मृदुबानी । ग्वालिनि तनुकी दशा भुलानी ॥
लागी हृदय मदनकी सांटी । मन परि गयो प्रेमकी घांटी ॥
करते लकुटि गिरत नहिं जान्यो । बिवश भईचित चेत हिरान्यो ॥

तब घट भरि हरि भावते, दीन्हों शीश उठाय ।
नेकहुँ सुधि ता तन नहीं, चली व्रजहि समुहाय ॥

किये दृगनमें धाम, सुन्दर नटनागर सुखद।
जित देखत तित श्याम, पंथ ताहि दीखै नहीं॥

उतै अपर ग्वालिन इक आई। कहत कहा तू रही भुलाई॥
सूधे पंथ चलत है नाहीं। कहा शोच तेरे मनमाहीं॥
अबहीं हँसति भरन जल आई। कहा चली इत आप गवाँई॥
ताको देखि कहत सुनु आली। मोपै श्याम मोहनी घाली॥
मैं जल भरन अकेली आई। मेरी गागरि कृष्ण लुढाई॥
तब मैं कनक लकुटिगहिलीन्हीं। उन मोतनलखिकै हँसिदीन्हीं॥
वहै हँसनि मोहि परी ठगौरी। तबहीं ते मैं ह्वै गइ बौरी॥
कहा कहौं तोसों अब आली। मेरे चित वह चितवन शाली॥
बस्यो श्याम मेरे दृग माहीं। और कछू मोहिं दीसत नाहीं॥
सुनत बात वह ग्वालि सयानी। आप विलोकनको अवुरानी॥
ताहि बाँह गहि घर पहुंचाई। आप गई जलको अतुराई॥
देखयो जाय श्यामतहँ नाहीं। इत उत लखिशोचति मनमाहीं

हरि देखत तरु ओट ह्वै, ग्वालिनि मन दुख पाय।
चली नीर भरि गागरी, बार बार पछिताय॥

मनके जाननहार, देखि ग्वालिनी बिकल अति।
प्रकटे नन्दकुमार, आय अचानक निकटही॥

गहि लीन्हीं अङ्कमभरि ग्वारी। ताके तनुको तपनि निवारी॥
ता तन चितै कह्यो तू को री। तोहिं कबहुं देखयों नहिं गोरी॥
मन हरि लीन्हीं रूप दिखाई। बहुरि भये तरु ओट कन्हाई॥

मिलि हरिसों सुख पायो ग्वालौ। छकौ प्रेमरस लखि बनमाली
नहिं जानत मैं को कित आई। भई मगन मन तनु बिसराई॥
घरको पंथ भूलि गइ नागरि। इत उत फिरत शौशलिये गागरि
और सखी इक उतते आई। देखि दशा तिन निकट बुलाई॥
कहा फिरै भूली मगमाहीं। बूझत सखी सुनत कछु नाहीं॥
चौंक पड़ौ सपने ज्यों जागौ। तासों बचन कहन तब लागौ॥
श्याम वदन इक मिल्यो ढुटौना। तिन मोको कछु कीन्हों टोना
मैं भरि गागरि शोश चढाई। औचक मोहिं अङ्क भरि लाई॥
मोसों कह्यो कौन तू गोरी। देखौ नाहिं कबहुं ब्रजखोरी॥

ऐसे कहि चितयो विहँसि, मैं लखि रही भुलाय।
तबहिं भयो अन्तर कह्न, मेरो चित्त चुराय॥
कही सखीसों बात, ग्वालिनि लाज बिसारिक॥
निरखि नन्दको तात, भई जलदकी बूँद जिमि॥

सो सखि सावधान करि ताको। चली आप आतुर यमुनाको॥
देखि श्याम युवती ढिगआई। टाढ़े तरुको ओट कन्हाई॥
तासु अङ्ग छवि रहे निहारी। गोरे वदन चूनरी कारी॥
छूटी अलक वदन छविछाई। मनहुँ जलज अलि अवलि सुहाई
हाथन चूरी चारु बिराजैं। कनक मुँदरियन अति छबि छाजैं॥
सहज शृङ्गार उरोज उठोहैं। अङ्ग अङ्ग सुठि सुन्दर सोहैं॥
ग्वालिनि हरिको देख्यो नाहीं। जाने कहां गये वनमाहीं॥
जल भरि चली मनहिं पछिताई। गागरि नागरि शीश उठाई॥

औचक श्याम गही लट आई। यह कहि कहां चली अतुराई॥
चिबुक परस उरसों कर लायो। ग्वालिनि मनहिंहर्षि अतिपायो
ऊपर कहत बङ्क करि भौंहन। छांड़ि देहु मेरी लट मोहन॥
उर परसत कछु सङ्कुचन मानत। और ग्वालि सी मोको जानत

छांड़ि देहु लट देखिहै, ब्रजयुवती कोउ आय।
हाहा मैं पायँन परति, तुमको नन्द दुहाय॥
इतनेहीको मोहि सौंह दिवावत बावरी॥
पहिचान्यों नहिं तोहिं, तातें मुख देखत तनक॥

यों कहि श्याम छांड़ि लटदीन्हीं। मुरिमुसकानिनारिवशकीन्हीं॥
चली भवनमन हरिहरि लीन्हीं। जिय यहकहतिकहा हरिकीन्हीं
पगद्वै चलत ठिठकि रहि जाई। भूलिगई मारग जिहि आई॥
प्रेम मगन तनु सुधि बिसराई। रहे दृगनमें श्याम समाई॥
गृह गुरुजनकी सुधि जब आई। तब कछु जियमें गई लजाई॥
ज्यों त्यों करि पहुँची गृहमाहीं। उरतें श्याम टरत क्षण नाहीं॥
सखी संगकी बूझत आई। कहां यमुनतट बेर लगाई॥
और दशा भइ है कछु तेरी। कहति नहीं हमसों सखि हे री॥
कहा कहों तुमसों री आली। मोह्यो मोहि श्याम वनमाली॥
सुनहु सखीरी वा यमुना तट। मैं जल भरत्रो अकेली पनिघट॥
लै गगरी शिर मारग डगरी। कितहूं ते आयो मो ढिग री॥
औचक आनि गही लट मेरी। कह्यो नेक मुख देखन देरी॥

मैं मृदु वचन अमोल सुनि, देखि वदन जलजात।
जकौ चकौ सौ ह्वै रही, उन परस्यो मो गात।
प्रफुलित हिये गुवारि, मनमोहनके रस विवश।
कुलकौ लाज विसारि, कही सखिन सों बात सब॥
सुनत बात सब सखी सयानी। श्याम विलोकनको अतुरानी॥
इक क्षण श्याम न विसरत काहू। सुनत भयो यह अधिक उछाहू॥
घर घरते धाई सब नागरि। लेलै आई जलकी गागरि॥
चलीं यमुनतट अति अतुराई। देख्यो कुवँर नंदको जाई॥
मोर मुकुट कटि कछनी सोहै। कुण्डल चटक लटक मन मोहै॥
पीत वसन लखि तड़ित लजाई। नयन विशाल अधर अरुणाई॥
देखत कह्यो सखिन ढिग जाई। ठगत फिरत हौ नारि पराई॥
ताहि ठग्यो कैसे ठग चीन्ह्यों। तुमरो कहो कहा ठगि लीन्ह्यों॥
कौन ठग्यो कहि कहा बखानै। औरहिके ठग तुमको जानै॥
कहा ठग्यो सो हम नहिं मानैं। कहौ नाम धरि तब हम जानैं॥
सर्वस ठगत पलकके माहीं। कहा ठग्यो सो जानत नाहीं॥
ठगके लक्षण मोहिं बतावहु। कैसे मोको ठग ठहरावहु॥
ठगलक्षण हमपै सुनहु, फांसी मृदु मुसकान।
रूपठगौरीते ठगत, व्रजतिय मन धन प्रान॥
फिरत विकल बेहाल, लोक लाज कुलकानि तजि।
ठगौ नंदके लाल, भई विदित तिहुँ लोक तिय॥
अपने लक्षण मोहिं लगावहु। जैसे तुम सब चितहि चुरावहु॥

कहति कि प्रकटी तिहुँ पुर बाता। ब्रजतिय ठगत नन्दको ताता॥
यह अति कहति कहत सब कोई। सुर नर मुनि वेदहु नहिं गोई॥
तीन लोकको ठाकुर जोई। ब्रजवनितन वश कीन्हों सोई॥
यों सुनि सब ग्वालिनिमुसुकानी। कही सखी सुनि हरिकी बानी॥
हरि तुम बात उलटि यह ठानत। तुम्हरी नागरता हम जानत॥
अतिहि कान्ह तुम करत ढिठाई। छांड़ि देहु अब यह लँगराई॥
काहूकी ढारत हौ गगरी। काहू लट गहि करत अचगरी॥
काहूको अङ्कम भरि लावत। ब्रज लोगनपै सबन हँसावत॥
तुमते मग कोउ चलन न पावत। बाट घाट डरपत सब आवत॥
यमुना भरन देत नहिं पानी। बहुत अचगरी अब तुम ठानी॥
कहो तो यशुदहि जाय सुनावैं। फेरि तुम्हैं ऊखल बँधवावैं॥

यह सुनि हरि रिस करि उठे, इँडुरी लई छुड़ाय।
कहो जाय सब मातसों, लीजो मोहिं बंधाय॥
मोहिं कहत ठग चोर, आप भई साहुनि सबै।
डारी गागरि फोर, कहत जाहु चुगुली-करन॥

तब युवती सब हरि ढिग आई। कहत इँडुरी देहु कन्हाई॥
नहिं तो तुमको गहि लै जैहैं। यशुमति पास न नेक डरै हैं॥
बाट घाट तुम करत ढिठाई। काहु न नेक डरात कन्हाई॥
इंडुरी लै फोरी सब गागरि। आज मिटावैं तुम्हरी लागरि॥
तब हरि चढ़े कदमपर जाई। इँडुरी दीन्हीं जलहि बहाई॥
वदन सकोरत भौंह मरोरत। मुरि मुसकनि सबकोचितचोरत॥

कहत कहौ मैयासों जाई। सब मिलि लीजो मोहिं बुलाई॥
तुम सब जुरि मोहिं मारन धाई। तब म इँडुरी जलहि बहाई॥
ऐसो करि तुम मोको पायो। मानहु मोको मोल मँगायो॥
यह सुनि युवति कहत मुसुकाई। कहति यशोमतिसों हमजाई॥
वे दिन विसरि गये मनमोहन। बांधे मात ऊखलो गोहन॥
खांई रहो तो वदहि कन्हाई। जाउ कहू तो नन्द दुहाई॥

कान्हहि सौंह दिवायकै, लै उरहन सब बाम।
ऊपर रिस अन्तर सुखी, चलीं नन्दके धाम॥
मथति महरि निज धाम, दधि माखन हरिके लिये।
तिहि अन्तर व्रजबाम, आवत देखी भोर अति॥

मैं जानति हरि इनहि खिझाई। ताते सब उरहन लै आई॥
कहत युवति सब रिस भरि आई। ऐसो ढीठ कियो सुत माई॥
भरन देत नहिं यमुना पानी। रोकत आय करत कुलकानी॥
काहूकी गागरि ढरकावै। इँडुरी लै जलमाहिं बहावै॥
काहूको घट डारत फोरी। गारी देत सहै नित खोरी॥
महरि कहत तुमसों सकुचाहीं। हरिके गुण तुम जानत नाहीं॥
अब नाहीं व्रजवास हमारो। करत अचकरो सुवन तुम्हारो॥
नेक नहीं सकुचत मन माहीं। महरिसुतहि तुम बरजत नाहीं॥
यशुमति सबहिन कहत निहोरी। कहा करौं सो तुमहि कहोरी॥
जो हरिको मैं ह्यां गहि पाऊं। तो तुम सबको अबहिं दिखाऊं॥

तुमहू जानति हौ गुण हरिके। ऊखलसों बांधे म धरिके॥
मारन लगी साँटि लै जबहीं। वर्ज्यो मोहि तुमहि तब सबहीं॥

अब घर आवहि जबहि हरि, तबहि करौं सोइ हाल।
लरिकाईते अचकरी, मैं जानत गोपाल॥
अब जा पकरन जाउं, ताहि गहन पाऊं कहां।
सुनतहि मेरो नाउं, को जानै भजि जाय कित॥

यह अपराध चमो सब हमको। यहै कहत हौं मैं अब तुमको।
इहि विधि युवतिन बोध कराई। महरि सबनको घरन पठाई॥
इतते घरन चलीं सब ग्वाली। उतते घर आवत वनमाली॥
है गई भेंट बीच मग आई। तुरत नयन हरि गये लजाई॥
मात बुलावत जाहु कन्हाई। बहुत बड़ाई करि हम आई॥
निरखि बदन हँसि कह्यो कन्हाई। मैं समुझाय लेउं गो माई॥
सकुचतही आये घर मोहन। द्वारहिते लागे हरि जोहन॥
देखि जननि घर कारज लागी। गोपिन उरहनके रिस पागी॥
भीतर रोहिणि पाक बनावै। कहि कहि तिनसों बात सुनावै॥
हरुवै हरुवै तब हरि जाई। सुनत आप पाछे चित लाई॥
यहै कहति यशुमति रिसिआई। गयो कहांधौं भाजि कन्हाई॥
पनिघट रोकत धूम मचावत। यमुनाजल कोउ भरन न पावत॥
गारि देत बेटिन वहुन, वै आवत त्यां धाय।
हाहा मैं सबको करति, क्योंहू खोट छुटाय॥

ढूँढरी देत बहाय, सबकी गागरि फोरिकै ।
कितधौं गयो पराय, यह कहि कहि धिरवत सुतहिं ॥
जाति पांतिसों कह लँगराई । मारेहु मानत नाहिं कन्हाई ॥
तब पाछेते हरि उठि बोले । मधुर वचन कोमल अति भोले ॥
तू मोहीं को मारन जानै । उनके गुणन नाहिं पहिचानै ॥
कहति जु वै मानत तू सोई । तिनके चरित न जानत कोई ॥
कदम तीरते मोहिं बलावैं । बातैं गढि गढि आप बनावैं ॥
मटकत गिरै श्रीशते गगरी । नाम लगावत मेरे सगरी ॥
फिरि चितई देखे हरि पाछे । सुन्दर श्याम पीतपट काछे ॥
कह तू कहां रह्यो मो पाहीं । मैंकह तोको जानत नाहीं ॥
हरि मुख देखतही नँदनारी । तुरतहिं भूलि गई रिस भारी ॥
कहत कि उरहन सब लै आवैं । झूठहि खोरि कान्हको लावैं ॥
म जानत गुण उन सबहीके । बातन जोरि बनावत नीके ॥
वे सब योवनकी मदमाती । फिरत सदा हरिसों अठिलाती ॥
कहां श्याम मेरो तनक, वे सब योवन जोर ।
अब उरहन जो आवहीं, तौ पठऊं मुख मोर ॥
तू कित उन ढिग जात, मैं बरजत मानत नहीं ।
लावत झूठी बात, वे सब ढीठ गुवालिनी ॥
यह कहि चूमि सुतहि उर लायो । मनमोहन मन हर्ष बढायो ॥
ब्रज घर घर यह बात जनाई । पानघट रोकत कुवँर कन्हाई ॥
श्याम वरण नटवर वपु काछे । मुरली मधुर बजावत आछे ॥

करत अचकरी जो मन भावै। यमुना जल कोउ भरन न पावै॥
बैठत आप कदमको डारी। सबन बुलावत दै दै गारी॥
काहूकी गागरि गहि फोरै। काहूकी इँडुरी गहि बोरै॥
काहूको अङ्कम गहि लावै। काहूको घट भूमि लुटावै॥
नयन सैन दै चितहि चुरावत। काहू सों मन अपनो लावत॥
ब्रजयुवती सुनि सुनि उठि धावैं। बिनहरिदरशन चण फल पावैं
कोउ बरजैकोउ कहै कोटि विधि। सबकें ध्यान श्यामसुन्दरनिधि
मन क्रम वचन तिन्हें रति हरिसों। नातो नेह न मानत घरसो॥
निशि दिन जागत सोवत माहीं। नन्दनदन चण बिसरत नाहीं

यह लीला सब करत हरि, ब्रजयुवतिनके हेत।
कृष्ण भजे जो भाव जिहि, तेहि तैसो फल देत॥
चिन्तामणि जेहि नाम, चिन्तित फलदायक जनन।
सबौहको सब वाम, जसो को वैसो सदा॥

सुनि यह श्रीवृषभानु दुलारी। पनिघट ठाढे कुञ्जबिहारी॥
देखनको चित अति अतुराई। कह्यो सखिनसों कुवँरि बुलाई॥
चलहु यमुनतट ल्यावहि पानी। सुनत बात यह सब हरषानी॥
इक इक कलश सबन गहि लीन्हों। तुरत गमन यमुनातट कीन्हों
देखे तहां कुवँर नँदलाला। सुन्दर श्यामल नयन बिशाला॥
प्यारी मन अति हर्ष बढाया। प्यारिहि देखि श्याम सुख पायो
रहे रीझि हरि दीठि लगाई। भरयो नीर प्यारी मुसकाई॥
चली घरहि यमुनाजल भरिकै। सखिन मध्य गागरि शिर धरिकै

मन्द मन्द गति चलति सुहाई । मोहन मनहिं मोहनी लाई ॥
चले श्याम संगहि उठि लागे । विवश भये प्यारी रस पागे ॥
सखियन बीच नागरी सोहै । गागरि शिर पै हरिमन मोहै ॥
डुलत ग्रीव लटकत नकबेसर । वन्दन बिन्दु आड़ दिये केसर ॥

लोचन लोल विशाल अति, मुरि मुरि चितवत आय ।
भृकुटी धनुष कटाच्छ शर, हरि हग मगन लगाय ॥
अँग अँग छवि समुदाय, मानहुँ सेना कामकी ।
अंचल ध्वज फहराय, ठिठकि चलत हरि मन हरत ॥

रीझे श्याम निरखि छवि प्यारी । संगहि चले लाल बनवारी ॥
कबहुँक आगे जात कन्हाई । कबहुँ रहत पीछे चित लाई ॥
नाना भांतिन भाव बतावैं । प्यारिहि निज अभिलाष जनावैं ॥
कनक लकुट लै करके माहीं । आगे पन्थ संवारत जाहीं ॥
देखत जहां प्रिया परछाहीं । तहां मिलावत निज तनु छाहीं ॥
छवि निरखत तनु वारि जनावै । पीतांबर लै शीश फिरावै ॥
कबहुँ श्याम पाछे रहिजाहीं । निरखत कुंवरिहि छवि ललचाहीं
गागरि ताकि काँकरी मारैं । उचटि उचटि तिय अञ्चन पारैं ॥
ओट पीतपट शीश नवाई । इहि मिस निकसत ढिग ह्वै आई ॥
प्यारी अपने जिय अनुमाने । मेरे हित हरि भावन ठाने ॥
सखियन मध्य नागरी जाई । नहिं पावत लग लगन कन्हाई ॥
किपी चरित तब रसिकबिहारी । सखिन सहित मोही सुकुमारी ॥

मिस करि निकसे निकट ह्वै, निरखि वदन मुसकाय।
मन हरि लीन्हों सबनको, दियो काम उपजाय॥
भई विवश सुकुमार, अङ्ग उमँग आँगी दरकि।
मोहे नंदकुमार, सुधि बुधि बिसरी देहकी॥

सखिन संग पहुँची घर आई। अटकि रह्यो मन हरि सँग जाई॥
पुनि पुनि उर यह करत विचारा। कैसे मिलहिं श्याम सुकुमारा॥
गागरि निज निज गृह पहुँचाई। बहुरि सखी प्यारी ढिग आई॥
बार बार सब कहत निहोरी। चलिये यमुना जलहि बहोरी॥
तिनको उत्तर देत न प्यारी। चित उरझ्यो चितवनपर वारी॥
ठगि सी रही मनहिं मन शोचै। प्रेमविवश दृगबारि बिमोचै॥
देखि दशा बूझत सब ग्वारी। कहा भयो तोको री प्यारी॥
शोचति कहा कहै किन सो री। काहू लयो चोर कछु चोरी॥
उत्तर हमैं देत क्यों नाहीं। कहा ठगीसी है मनमाहीं॥
गहिगहि भुजा कहति सब गोरी। चलहि न यमुना आवहि खोरी॥
तब सखियन वृषभानुदुलारी। लीन्हीं सबन निकट बैठारी॥
जलजनयन जल भरि अनुरागी। हरिके चरित कहन सब लागी॥

कहो सखी कैसे चलैं, वा यमुनाकी ओर।
गैल न छांड़त सांवरो, रसिया नंदकिशोर॥
धरै न कोऊ नाँव, इह शंकनि डरपत हियो।
एक भांतिको गांव, वह चञ्चल मानै नहीं॥

मोको देखत जहां कन्हाई । मेरे संग लगत उठि धाई ॥
इत उत नयन चुराय निहारै । मोको मगमें आनि जुहारै ॥
आगे चलत लकुट कर लाई । मेरो पन्थ सवांरत जाई ॥
सो वहु मोहि निहोरो लाई । फिर चितवै मोतन मुसकाई ॥
जवमें यमुनाको जल भरिकै । चलति गागरी शिरपर धरिकै ॥
तव घटमें वह काँकरि मारै । उचटि लगत तब अङ्ग निहार ॥
मेरे उर अञ्चर फहराई । सो वह देखि देखि ललचाई ॥
कवहूं पीताम्वर शिर फेरै । वार वार करि मोतन हेरै ॥
कवहुं आपनि छवि दरशावै । मेरे चितको आनि चुरावै ।
जव देखौं तव मोतनु हेरै । नेक नहीं दृग इत उत फेर ॥
जहां जाति मेरी परछाई । तहां मिलाय रहत निज छाई ॥
जवलग लागन पावत नाहीं । तव वाको जिय अति अकुलाहीं ॥

मो तनु छवै हरि चले, ताहि भरत है अंक ।
हौं सकुचत वोलों नहीं, लोकलाजको शंक ॥
व्रज घर घर यह शोर, को जाने कहियत कहा ।
चितवत यह चितचोर, विवश होत सखि प्राण तव ॥

कहिये कहा सखी जिय जैसी । भइ गति सांप छछून्दर कैसी ॥
घरते निकसत वनि नहिं आवै । लोकलाज कुलकानि मिटाव ॥
जो घर रहौं रह्यो नहिं जाई । तनु घरमें मन जहां कन्हाई ॥
कितो करों आवत इत नाहीं । वँध्यो पीतपट आंचरमाहीं ॥
अव तो मेरे मन यह रांची । करिहौं प्रीति श्यामसँग सांची ॥

ब्रजके जोग हँसौ किन कोई। कुलमर्य्याद जाउ किन सोई॥
कहा लाभ सो कहहु सयानी। जामें होय जीवकी हानी॥
सोनो कहा कान जिहि टूटै। अंजन कहा आंखि जिहि फूटै॥
कहा कांच संग्रहते होई। जो अमोल मणि करते खोई॥
विष सुमेर कहु कौने काजा। सुखद बूँद इक ओषधि राजा॥
कुलकी कानि कांचकी चाई। चिन्तामणिकी खानि कन्हाई॥
कहा लेहुँ कह तजौं सयानी। सिखवहु मोहि सखी जिय जानी

मोको अब सूझै नहीं, बिनु वह मृदु मुसुकान।
कापै न्यारो होत री, चूनो हरदी सान॥
मेटि लोककी कानि, पतिव्रत राखौं श्यामसों।
यहै बनी अब आनि, भलो बुरो कोऊ कहो॥

सुनत गोपिका राधा बानी। हरि अनुराग सिन्धु मन मानी॥
गदगद कण्ठ पुलकि तनु आये। लोचन जलज प्रेम तनु छाये॥
भई प्रेमवश गोपकुमारी। लोक सकुच कुलकानि बिसारी॥
बारहि वार कहत ब्रजनारी। धन्य धन्य वृषभानुदुलारी।
हम सब तोसों सत्य बखानै। तैं हरि भली भांति पहिचानै॥
यह मोहन सबको मन मोहै। तिय लखि विवश न होय सुकोहै
अङ्ग अङ्ग प्रति अति छवि छाजै। समताकाम कोटि द्युति लाजै
सुवन श्याम दोउ पाणि पकरिकै। करत वेणुधुनि अधरन धरिकै
तब यह दशा सबनकी होई। जड़ चेतन मोहन सब कोई॥
बन मृग निकट धाय सब आवैं। खग ह्वै मौन न अङ्ग डुलावैं॥

तृण गहि दन्त धेनु रहि जाहीं। थनते छीर पियत बछ नाहीं॥
यमुना बहिवेते रहि जाई। जलचर प्रकटत बाहर आई।

जड़चेतन चेतन जडहि, सुनत होत कल बैन।
कै विष कै मद कैं अमी, किधौं भरयो रस मैन॥
गृह वन कछु न सुहाय, सुनत श्रवण वह मधुर धुनि॥
गृहकारज विसराय, चकित थकित रहियत सब॥

बाट घाट जहँ मिलत कन्हाई। मोहत सुन्दर रूप दिखाई॥
नई नई छवि छण छण माहीं। झलकावत सब अङ्गन माहीं॥
ऐसो को जु देखि नहिं मोहै। नन्दसुवन सम सुन्दर को है॥
वह सखि सवहीके मन भावै। सब कोउ वाहि देखि सुख पावै॥
लोकलाज कुल कौने कामहिं। जो पावैं सुन्दर वर श्यामहिं॥
पै यह मोहिं अगम अति लागै। यह सुख मिलै नहीं बिन भागै॥
इनको गर्ग कह्यो नँदपाहीं। विना सुकृत ये प्रापत नाहीं॥
तुमह इनको तप करि पायो। ऐसे नन्दहि गर्ग सुनायो॥
कहँ सखि इतनो भाग हमारो। जो वर पावहि नन्ददुलारो॥
तातो मो मनमें यह आवै। कीजे जो सबके मन भावै॥
तप कीजे हरिके हित लागौ। पूजि गौरिपतिसों वर मांगौ॥
नन्द सुवन सुन्दर वर पावैं। और सकल कामना नशावैं॥

जप तप संयम नेमते, प्रभु प्रकटत पाषान।
ताते अब तप कीजिये, और उपाय न आन॥

कीजै यह दृढ नेम, प्रात जाय यमुना नदी।
पूजहिं सब करि प्रेम, तौ पावहिं पति कारि हरिहि॥
तप करि योगी जन हरि ध्यावैं। मनवाञ्छित फल तपकरि पावैं
सकल कामनाके शिवदाता। कहत वेद विधि पण्डित ज्ञाता॥
हमको मनवाँछित सखि एहा। नन्दसुवन पदकमल सनेहा॥
सुनत सप्रेम सखी की बानी। श्रीवृषभानुसुता हर्षानी॥
यहै मन्त्र सबके मन मान्यो। धन्य धन्य कहि ताहि बखान्यो॥
कहत सबै कीजै सखि सोई। जा विधि नन्दनन्दन हितहोई॥
वृथा जन्म जग जान न दीजे। यशुमतिसुतसों हित करि लीजै॥
यहै मन्त्र सबहिन दृढ कीन्हों। नँदनन्दन सों पतिव्रत लीन्हों॥
धन्य धन्य व्रज गोपकुमारी। जिनके हित पति कृष्णमुरारी॥
मन वच क्रम हरिसों मन मानी। लोकलाजतिनका सम जानी॥
इकच्चण भ्रम न डरते टरहीं। नेम धर्म व्रत हरि हित करहीं॥
जिनको यश शारद श्रुति गावैं। व्रजवासी जन कहा बतावैं॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिहू, व्रजयुवतिन मनमाहिं।
सदा एक तुरिया रहत, और अवस्था नाहिं॥
ऐसो कौन प्रवीन, चहै प्रेम व्रजतियनको।
हरि छवि जल मन मीन, बिछुरि सकत नहिं एक पल॥

---

अथ चीरहरण लीला।

भवन रवन सबहिन बिसरायो। व्रजयुवतिन हरिसों मन लायो॥

यहै वासना सब उर जामी । होय गुपाल हमारो स्वामी ॥
कामवासना करि उर ध्यायो । हरिके हेत तपहि मन लायो ॥
षटदशसहस गोपकी कन्या । करन लगीं तप हरि हित धन्या ॥
रहत क्रियायुत तप को साधे । छाँड़ि दई सब भोग उपाधे ॥
प्रातकाल यमुनाजल न्हाहीं । प्रहर प्रयन्त रहैं जलमाहीं ॥
जपहि उमापति हर वृषकेतू । सुन्दरश्याम कृष्णपति हेतू ॥
शीत भीत मनमें नहिं ल्यावैं । नयन मूंदिके ध्यान लगावैं ॥
वार वार यह कहैं मनाई । हम वर पावहि क्वँर कन्हाई ॥
जलते वहुरि निकसि सब आई । पूजहि गोपेश्वर शिव जाई ॥
चन्दन विल्वपत्र जलधारा । अक्षत सुमन सुगंध अपारा ॥
प्रीति सहित सब शिवहि चढ़ावैं । धूप दीप करि अस्तुति गावैं ॥

करहि अस्तुति गान वहु विधि, पाणिपंकज जोरहीं ।
वार वार नवाय मस्तक, प्रेम सहित निहोरहीं ॥
जय महेश कृपालु शिव, आनन्दनिधि गिरिजापते ।
कैलाशपति कल्याण अग जग, नाथ सर्व नमामि ते ॥
जटाजूट त्रिपुण्ड शशि कल, गङ्गयुत शोभित शिरे ।
कमलनयन विशाल सुन्दर, चारु कुण्डल श्रुति धरे ॥
नीलकण्ठ भुजङ्ग भूषण, भस्म अङ्ग दिगम्बरे ।
अर्द्धङ्ग गौरि विशाल उर, शिरमालधर करुणाकरे ॥
कपूर गौर प्रसन्नआनन, पञ्चवक्त्र त्रिलोचने ।
कामप्रद सुखधाम पूरण, काम शोच विमोचने ॥

भगवानभव भवभयहरण, भूतादि पति शंभू हरे।
प्रणत जन पूरण मनोरथ, जगतपति मन्मथअरे॥
वृषभ वाहन त्रिपुरअरि, मृगराज बर छालाम्बरे।
शूलपाणि त्रिशूल मूलन, मूलकर शिवशंकरे॥
सुर असुर नर नाग तव पद, वन्दि मनवांछित लहैं।
पूजते पदकमल प्रभु हम, कृष्ण पति चाहति अहैं॥
तुम सर्वज्ञ सुजान शिव, जानत जन मन पीर।
परम दान दीजे हमैं, सुन्दर बर बलवीर॥
यह बरदान न आन, शिव तुमसों चाहत अहैं।
कृष्ण कमलपद ध्यान, रहै हमारे उर सदा॥

यहि विधि व्रजतिय नेम निबाहैं। शिवको पूजि कृष्ण पति चाहैं
नितप्रति प्रात यमुन जल खोरैं। प्रीतिरीति सों मन नहिं मोरैं
सविता सों बहु भांति निहोरैं। गोद पसारि युगल कर जोरैं॥
तेजराशि दिनमणि जगस्वामी। जगतचक्षु सब अन्तर्य्यामी॥
प्रणत मनोरथ पूरणकारी। हमपर होहु दयालु मुरारी॥
काम हमारे तनुहिं जरावै। नन्दसुवन बर हमको भावै॥
होय हमारो पति नँदलाला। करहु कृपा सो दीनदयाला॥
ऐसे हरि हित गोपकुमारी। करैं नेम व्रत तप तनुधारी॥
गेह देहकी सुरति बिसारी। कृश तन भई परम सुकुमारी॥
वर्ष दिवस यों कहत बिहान्यों। प्रभु अन्तर्य्यामी सब जान्यों॥
मोहित शिव पूजत व्रजनारी। और कामना सकल निवारी॥

सकल भावके हरि हैं ज्ञाता । सकल देवद्वारा फलदाता ॥
देखि नेम यह प्रेममय, गोपिनको गोपाल ।
भये प्रसन्न कृपालु चित, जनहित दीनदयाल ॥
मो कारण जल न्हात, भये जलहिमें प्रकट हरि ।
सुन्दर श्यामल गात, नव किशोर वर वपु धरे ॥
न्हात जहां युवती सब आछे । मींजत पीठि सबनके पाछे ॥
चकित सबन पाछे हरि हेरो । देख्यो कान्ह कुवँर नँदकेरो ॥
मनमें हर्षित भइं सब नारी । ब्रत फल प्रकटे कुञ्जबिहारी ॥
नवलकिशोर ध्यान मन लायो । सोई प्रगट रूप दरशायो ॥
दृष्टि परतही सकल लजानी । लागी अङ्ग दुरावन पानी ॥
एक एकको भेद न जानैं । हरिको सब अपने ढिग मानैं ॥
कहत लाज लागत नहिं तुमको । बिना बसन देखत हो हमको ॥
हँसि निकसे तब कुवँर कन्हाई । चीर हार लै चले पराई ॥
हाँक देत सब शपथ दिवावैं । फिरहु बसन भूषण हम पावैं ॥
डारि वसन भूषण तब दीन्हें । गोपिन तुरत दौरिकै लीन्हें ॥
चीर फटे भूषण सब टूटे । लेत न बनै तहां नहिं छूटे ॥
एक एककी लाज लजाहीं । बसन अभूषण पहिरत जाहीं ॥
लगे श्याम ढीठी करन, यह कहि कहि पछितात ।
अन्तरगति आनन्द अति, झूठहि खीझत जात ॥
लोगन कहत सुनाय, कान्ह करत लँगराइ अति ।
यशुमतिके ढिग जाय, कहत चलो कहिये सबै ॥

चलीं यशोमति पै सब ग्वारी। प्रेमविवश तनु दशा बिसारी ॥
पुलक अङ्ग अङ्गिया दरकानी। टूटे हार लिये निज पानी ॥
चीर चीर नख घात बनाई। यहि मिस करि उरहन लै आई ॥
देखो महरि श्यामके ये गुन। ऐसे हाल किये सबके उन ॥
चोली चीर हार दिखराये। टेर करत इतको भजि आये ॥
और बात इक सुनहु न माई। ढीठ भयो अति कुवँर कन्हाई ॥
बिना बसन हम न्हाति जहां सब। मींजत पीठ जाय पाछे तब ॥
और कहत तुमसों सकुचावैं। उर उघारिकै तुमहिं दिखावैं ॥
महरि विचारत कहत कहा सब। भयो श्याम यहिलायकधौंकब
सुनि युवतिनके मुख यह बानी। बोली बिहँसि नंदकी रानी ॥
बात कहो सो जो निबहै री। बिना भीत नहिं चित्र लहै री ॥
तुमको कहत लाज नहिं आवति। चोरी रहौं छिनारो लावति ॥

तुम चाहति हो गगनते, गहन तरैया बाम।
सो कैसे करि पाइ हो, तुम लायक नहि श्याम ॥
मैं बूझी सब बात, तुमसों हौं कहि हौं कहा।
वृथा फिरत अठिलात, मष्ट करौ सुनिहै जगत ॥

यहि अन्तर हरि आय गये घर। शीश मुकुट लीन्हें मुरली कर।
अति कोमल तनु भूषण सोहैं। बाल भेद देखत मन मोहैं ॥
जननी बोलि बांह गहि लीनी। कहत सबनिसों रिसरसभीनी
देखहु री तुम सब इत आवो। इनहींको अपराध लगावो ॥
देखहु समुझि लाज नहि आवत। इनहींके नख उरन दिखावत

मेरो कान्ह अबहि सुत वारो । तुम कोउ औरहि जाय निहारो ॥
देखत हरिहि युवतिभइ भोरी । कहत महरि कछु तुमहिं न खोरी ॥
देन उरहनो तुमको आई । नीको पहिरावन हम पाई ॥
आपसमें सब कहत सुनाई । देखहु री यह भाव कन्हाई ॥
यमुनातीर मिले जब आई । कहां गई तबको तरुणाई ॥
इनके गुण ऐसे को जानै । और करत औरैही ठानै ॥
घर आवतही भये नन्हाई । ऐसे मनके चोर कन्हाई ॥

देखि चरित नँदलालके, भई बाल मति भोर ।
सुधि बुधि मन कछु थिर नहीं, कहत औरको और ॥
सकुची बहुरि संभारि, विवश देखि अपनी दशा ।
चलीं घरन ब्रजनारि, हरि मुखकमल निहारिकै ॥

गई घरन ब्रज गोपकुमारी । चित हरि लीन्हों मदनमुरारी ॥
नेक न मन लागत घरमाहीं । धाम कामकी सुधि कछु नाहीं ॥
मात पिताको डर नहिं मानो । गारि देत कोउ सुनत न कानो ॥
प्रात होतही गोपकुमारी । गई यमुनतट सब सुकुमारी ॥
देखत जहां जाय नँदनन्दन । मोरमुकुट शोभित तनु चन्दन ॥
मकराकृतकुण्डल उर बनमाला । पीतवसन दृगकमल विशाला ॥
दरश देखि अंखियां ढपतानी । भई सुखी उरतपन बुझानी ॥
कहत परस्पर मिलि सब ग्वाली । यमुना निकट गये बनमाली ॥
कौन भांति करि आज अन्हैबो । बनत नाहिं अब यमुना ऐबो ॥
कैसे करि हम बसन उतारें । कान्ह हमारी ओर निहारें ॥

भिजत पीठ औचकही आई । वसन अभूषण लै भजिजाई ॥
कहो फेरि कसे तब पावैं । अब नहिं कान्ह घाटपै आवैं ॥

कहत सकुचकी बात सब, ऊपर मन आनन्द ।
अन्तर गतिके वृत्तको, जानत सब नँदनन्द ॥
जानी जान नराय, लाजान्तर युवती करत ।
सो अब देउँ मिटाय, अन्तर भलो न प्रेममें ॥

और बात यक श्याम विचारी । ये जल भीतर न्हात उघारी ॥
जो तिय जलमें नांगी न्हाई । ताको दोष होत अधिकाई ॥
ताको दोष नाश तब पावै । नाँगी परपति सम्मुख आवै ॥
सो इनको यह दूषण टारौं । और लाज अन्तर निरवारौं ॥
करौं आज इनसों विधि सोई । इनको हित मम कौतुक होई ॥
जो कछु चूक दासते होई । आप सुधारि लेत हरि सोई ॥
अन्तर प्रभुको नेक न भावै । भजै निरन्तर जब हरि पावै ॥
अन्तर रहित भक्ति हरि प्यारी । कहत वेद सब सन्त पुकारी ॥
तब हरि मन यह कियो विचारा । इनके बसन हरौं इक बारा ॥
प्रभु सबकी तब दृष्टि बचाई । कदमवृक्ष चढि रहे लुकाई ॥
जब गोपिन हरि देख्यो नाहीं । चकित विलोकीं इत उतमाहीं ॥
जाने सदन गये नँदलाला । न्हान चलीं तब सब ब्रजबाला ॥

धरे उतारि उतारि सब, तटपर भूषण चीर ।
नग्न होय अस्नान हित, पैठीं यमुना नीर ॥

ग्रीवालौं जलमाहिं, पैठि करति अस्नान सब ।
मुख छवि कही न जाहिं, कनक कञ्ज फूले मनहुँ ॥
वार वार बूड़त जलमाहीं । प्रेम सहित मन मुदित नहाहीं ॥
शिवसों विनती करत निहोरी । कबहूं रवि वन्दैं कर जोरी ॥
यहै कामना करि सब ध्यावैं । नँदनन्दनको पति करि पावैं ॥
कामातुर सब गोपकुमारी । धरैं ध्यान उर कुञ्जविहारी ॥
मूँदहिं नयन दरश चित लावैं । शब्द विचार श्रवण सुख पावैं ॥
भुज जोरत अंकम हित लागी । मगन प्रेमरस तिय बड़भागी ॥
प्रभु अन्तर्य्यामी सब जानैं । देखैं कदम चढ़े सुख मानैं ॥
कहत धन्य धनि व्रजकी बाला । मेरे हित तप करत विशाला ॥
प्रीति रीति सबकी पहिचानी । चरण चणकी सेवा हरि मानी ॥
काहू भाव मोहिं कोउ ध्यावै । मोहिं विरद राखे बनि आवै ॥
कियो बहुत श्रम ममहित कारण । अब इनको दुखकरौं निवारण ॥
उपजी कृपा समुझि जनपीरा । उतरे तरुते श्रीबलबीरा ॥
प्रेम मगन युवती सबै, रहीं ध्यान मन लाय ।
हरि सब भूषण वसन लै, चढ़े कदमपर जाय ॥
भूषण वसन अपार, सोरह सहस वधूनके ।
हरे एकही वार, लै राखे तरु नीपपर ॥
कर्यो नीपतरु अति विस्तारा । फूले सुमन सुगन्ध अपारा ॥
लै लै वसन डार अटकाये । जहां तहां भूषण लटकाये ॥
नीलाम्बर पाटाम्बर सारी । श्वेत पीत चूनरि अरुणारी ॥

जहां तहां शाखनप्रति सोहैं । देखत छबि बसन्त मन मोहैं ॥
सो तरुशाखा परम सुहाई । बैठे छबिको राशि कन्हाई ॥
युवती सुकृति तरुण धरिमानो । पर्यो सुकृति पूरण फलजानो
देखत कदम चढे नँदलाला । बसन बिना जलमें सब बाला ॥
ध्यान करतते जब सब जागीं । तब जलबाहर निकसन लागीं ॥
जलते निकरि आय तट देख्यो । भूषण बसन तहां नहिं पेख्यो ॥
इत उत चितै चकितभई भारी । सकुचिगई फिरि जल सुकुमारी
नाभि प्रयन्त नीरमें ठाढी । भुज लगाय उर चिन्ता बाढी ॥
कँपत शीतमें अति अकुलानी । बार बार कहि कहि पछितानी॥

ऐसो को भूषण बसन, सबके एकहि बार ।
तटते लये चुरायकै, लगी न नेक अबार ॥
हम जानत यह बात, अम्बर हरि हरि लैगये ।
और कौनको गात, जो ब्रजमें ढीठो कर ॥

दीन होय तब युवति पुकारी । हौ कहँ श्याम जाहि बलिहारी ॥
दरश दिखाय बिनय सुनि लीजै । अम्बर देहु कृपा अब कीजै ॥
थरथर कांपत अँग सुकुमारी । देखि श्याम नहिं सके संभारी ॥
बोलि उठे तब मदनगोपाला । कहा कहत मोसों ब्रजबाला ॥
कतहो जलमें मरत जड़ाई । लेहु बसन भूषण इत आई ॥
तुम पट भूषण सुरति बिसारी । तब मैं लै कीन्हीं रखवारी ॥
अब अपने पट भूषण लीजै । रखवारी कछु हमको दीजै ॥
जब ऐसे हरि बोल सुनायो । तब सबको मन धीरज आयो ॥

सुनि हरि वचन सकल हरषानी। लखे कदम ऊपर सुखदानी॥
कहत सुनो सखि हरिकी बातैं। बसन चुराय करैं ये घातैं॥
हम सब जलके बीच उघारी। मांगत हैं हमसों रखवारी॥
तब हँसि बोलीं व्रजकी बाला। सुनहु श्यामसुन्दर नन्दलाला॥

तन मन धन अर्पों तुम्हें, है जु तुम्हारे पास।
अब अम्बर दीजे हमें, जानि आपनो दास॥
तब हँसि कह्यो कन्हाय, जो तन मन मोको दियो।
लेहु बसन ह्यां आय, तौ मानो मेरो कह्यो॥

सुनहु श्यामघन बात हमारी। नग्न कौन विधि आवें नारी॥
हम तरुणी तुम तरुण कन्हाई। बिना बसन क्यों देह दिखाई॥
यह मति आप कहां धौं पाई। आज सुनी यह बात नवाई॥
पुरुषजात यह कहत न जानहु। हाहा ऐसो मन जनि आनहु॥
कहत श्याम जो नग्न न ऐहौ। तौ तुम पट भूषण नहिं पैहौ॥
जो तन मन दीन्हों तुम मोही। तौ राखत कित लज्जा द्रोही॥
यह अन्तर मोसों जनि राखौ। मानि लेहु तुम मेरो भाखौ॥
शीत सहत कत नवलकिशोरी। लाज देहु जलहीमें बोरी॥
जलते निकसि वेगि इत आवो। हाथजोरिमोहि विनय सुनावो॥
ज्यों जलमें रविते कर जोरो। त्यों ह्वै सन्मुख मोहिं निहोरो॥
यह सुनि हँसीं सकल व्रजनारी। ऐसी बात न कहौ मुरारी॥
हाहा लागहिं पांय तिहारे। पाप होत है जाड़न मारे॥

छांडि देहु यह टेक हरि, बरु भूषण तुम लेहु।
शीत मरत हम नीरमें, बसन हमारे देहु॥
दूषण होत अपार, जो तिय अँग देखहि पुरुष।
ताते नन्दकुमार, नारी नग्न न देखिये॥

तुमको छोह होत नहि राई। बडे निठुर हो कुवँर कन्हाई॥
ऐसो करो जो तुमको सोहै। आज तुम्हारो पटतर को है॥
आजहिते हम दासि तिहारी। कैसे अंग दिखावहिं नारी॥
अंग दिखाये भूषण पैहौ। नातरु जलमें बैठी रैहौ॥
मेरे कहे निकसि सब आवो। शीरमें मो भलो मनावो॥
कत अंतर राखत हो हम सों। बार बार मैं भाषत तुमसों॥
लेहु आप अपने पट भूषण। यह लागै हमको सब दूषण॥
मो हित तुम कीन्हों तप भारी। अब कत लज्जा करत हमारी॥
मैं अन्तर्य्यामी सब जानो। करिहौं तुम्हरे मनको मानो॥
अब पूरण तप भयो तुम्हारो। अन्तर इतो दूरि करि डारो॥
सुनि यह मोहनके मुख बानी। सब युवती मनमें हरषानी॥
तब सबहिन यह बात विचारी। अबतो टेक परे बनवारी॥

कहत परस्पर मिलि सबै, हरि हठ छांड़त नाहिं
बसन बिना कैसे बनै, कौन भांति घर जाहिं॥
चलो लीजिये चीर, इनहीं को हठ राखिकै।
मनमोहन बलबीर, जो कछु कहैं सो कीजिये॥

यह विचारि जल बाहर जाई। बैठि गई तट अतिहि लजाई॥
बार बार हरि निकट बुलावें। त्यों त्यों अधिक लाज को पावें॥
कहत श्याम अम्बर अब दीजे। हाहा इतनो हठ नहिं कीजे॥
बहत समीर शीत अति भारो। मानेंगी उपकार तुम्हारो॥
हम दासी तुम नाथ हमारे। हम सबकी पति हाथ तुम्हारे॥
कहत श्याम यह तजो सयानी। छांड़हु लाज करहु मम बानी॥
अपने बसन लेहु ह्यां आई। देहौं तुमको नन्द दुहाई॥
अबहू सकल लाजको त्यागे। करहु शृङ्गार आय मो आगे॥
तब सबहिन यह मनमें जानी। करिहैं श्याम आपनी ठानी।
कर कुच अङ्ग ढाँकि भई ठाढी। बदन नवाय लाज अति बाढी
गई कदमतर हरिके पासा। कहति देहु अब हमको बासा॥
हरि बोले यों बसन न पावो। हाथ जोरि मोहि बिनय सुनावो॥

जो कहिहौ करिहैं सबै, हँसि बोलीं व्रजबाम।
लहैं दांव हमहू कबहु, सुनो श्याम अभिराम॥
उभय कमलकर जोरि, सलज सहास निहारि हरि॥
मागत सकल निहोरि, कहत देहु अब बसन प्रभु॥

लखि युवतिनकी प्रीति कन्हाई। रीझे भक्तनके सुखदाई॥
धन्य धन्य बोले गोपाला। निश्चय प्रीति करी तुम बाला॥
देखि निरन्तर गोपकुमारी। दीन्हें बसन अभूषण डारी॥
अति आतुर सब पहिरन लागीं। प्रेम प्रीतिके रस मति पागीं॥
तब हँसि बोले कुञ्जविहारी। मैं पति तुम मेरी सब प्यारी॥

अन्तर शोच दूरि करि डारो। मेरो कह्यो सत्य उर धारो॥
शरद रात तुम आश पुरैहौं। अंकम भरि सबको उर लैहौं॥
अब तप करि तुम मत तनु गारो। मैं तुमते क्षण होत न न्यारो
करसों परश सबन सुख दीन्हों। विरहताप तनुको हरि लीन्हों
विदा करी हँसि नँदके लाला। निज निज सदन गई ब्रजबाला॥
गोपिन उर अति हर्ष बढ़ायो। मन मन कहति कृष्ण बर पायो॥
ब्रजबासी जनके सुखदाई। आये अपने सदन कन्हाई॥

इहि विधि ब्रजसुन्दरिनको, हित करि सुन्दरश्याम।
ब्रजविलास बिलसत विविध, सकल लोक अभिराम॥
सुन्दरघन सुखरास, सब विधि करि सबके सुखद॥
नित नव करत विलास,मुदित सकल ब्रजलोग लखि।

---

## वृन्दावन वर्णन लीला।

हरि लखि मात पिता सुख पावैं। बाल भाव बहु लाड़ लड़ावैं॥
नवलकिशोर शुभगतनु श्यामा। निरखतमुदित सकल ब्रजबामा
ग्वाल बाल सब समकरि जानैं। सखा प्राण प्रीतम करि मानैं॥
नित उठि गाय चरावन जाहीं। क्रीड़ा करैं विविध ब्रजमाहीं॥
इक दिन सोवत सदन कृपाला। आये द्वार बुलावन ग्वाला॥
चलहु श्याम बन धेनु चरावन। यहसुनि जननी लगीजगावन॥
उठहु तात मैया बलि जाई। टेरत ग्वाल बाल बल भाई॥
बदन दिखाय सबन सुख देऊ। दँतवन करि कछु करहु कलेऊ॥

भई वेर बनको नँदलाला । अब मति सोवहु मदनगोपाला ॥
देखनको छवि अति अतुराई । सखा द्वार सब टेर लगाई ॥
सोवत ते हरि जागत नाहीं । सुनत बात आलस मनमाहीं ॥
कबहूं वसनढांपि मुख सोवैं । कबहुं उघारि जननि तनु जोवैं ॥
खोलतनयन पलकझुकि आवैं । सोछबिनिरखि मातु सुखपावैं

उठो लाल जननी कह्यो, तब चितये हँसि मन्द ।
पट गहि पुनि पुनि फेर मुख, तबहिं उठे ब्रजचन्द ॥
कबके टेरत ग्वाल, बलदाऊ यह कहि उठे ।
बनको भई अवार, गई गाय आगे निकसि ॥

यह सुनि तुरतहि उठे कन्हाई । यशुमति जल झारी भरि लाई
दुहुं भैयन करवाय मुखारी । पोंछे मुख जननी निज सारी ॥
करहु कलेऊ अब कछु प्यारे । एक थार दोउ सुत बठारे ॥
दधि माखन रोटी अरु मेवा । करत प्रात दोउ भ्रात कलेवा ॥
करत निकट बैठे मनमोदा । दृग सुख लूटत महरि यशोदा ॥
मात प्रेमते अति तृपताई । अँचवन कर जु उठे दोउ भाई ॥
द्वारे टेर उठ्यो इक ग्वाला । बनकहँ वेगि चलहु नँदलाला ॥
बल मोहन आवहु दोउ भैया । आगे निकसि गई हैं गैया ॥
ग्वाल वचन सुनिअति अतुराई । कछु अँचयो कछु नहिं दोउभाई
मुरली मुकुट लकुट पट लीन्हों । निकसि दौरिबनहीं मनदीन्हों
केतिक दूरि गई चलि गैया । ग्वालहि बूझत जात कन्हैया ॥
कछु बन पहुँची ह्वै हैं जाई । कछु मग मिलिहैं कुवँर कन्हाई ॥

बन पहुँचत सुरभी लई, बल मोहन दोउ धाय ।
कहत सबन सों जात कित, हमहू पहुँचे आय ॥
तुम आये अनुराय, जेंवत पर लखिके हमें ।
तुम सँग रहत बलाय, अब हम दूरि चराय हैं ॥

यह सुनि सखा धाय सब आये । हरिको अंकम भरि उर लाये ॥
तुमहो सबहिनके सुखदाई । हमको तजि मति जाहु कन्हाई ॥
आज कुमुदबन चलहु चरावन । शीतल सुखद सघन अति पावन ॥
सुनत कह्यो अति हर्ष कन्हाई । नीको कहो बात यह भाई ॥
अपनी अपनी गाय बुलावो । एक ठौर करि सबन चरावो ॥
यह सुनि ग्वाल सुरभिगण घेरत । लै लै नाम गाय सब टेरत ॥
धौरी धूमरि राती कबरी । पियरी गोरी गैनी कजरी ॥
खैरी पुलही रोची चौरी । धूरी हमरी मुंडी भोरी ॥
लीली कपिली सुवरन जेती । लाखी निकही रतनी तेती ॥
ऐसे सुरभी टेरि बुलाई । सब मिलि चले कुमुदबन धाई ॥
तब बल कह्यो दूरि मति जाहू । नन्द रिसैहैं अरु यशुदाहू ॥
बलको कह्यो मानि सुखदाई । बोलि लिये सब सखा कन्हाई ॥

कहत सबन समुझाय हरि, कौन कुमुदबन जाय ।
बुरो मानिहैं नन्द सुनि, और यशोदा माय ॥
लावहु गाय फिराय, चलिये वृन्दावन सुखद ।
सुरभी चरत अघाय, वंशीवट यमुना निकट ॥

यह कहि श्याम चले अगुवाई। फेरी गाय ग्वाल सब धाई॥
वृन्दावनहिं चले मनमोहन। हर्षित सखा वृन्द तब गोहन॥
करत कुलाहल आनन्द भारी। पहुँचे वृन्दावन वनवारी॥
सुरभीगण चहुं दिशि बगराई। कहत सखासब हर्ष बढ़ाई॥
जा दिन अघ हति श्याम सिधाये। ता दिनते या वन अब आये
देखत वन सब भये सुखारी। बहत मनोहर त्रिविध बयारी॥
विटपनकी शोभा चित दीन्हें। देखत श्याम सखन सँग लीन्ह
नव किसलयदल सुमन सुहाये। मनहुँ वसन्त शृँगार बनाये॥
मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी। फलके भार रहीं नव डारी॥
मनहुं देखि श्यामहि सुखपाई। देत भेंट तरु शीश नवाई॥
सुमन भँवर गुंजत छवि पावें। अस्तुति मनहुं मधुरसुर गावें॥
एक पांव ठाढे सब आगे। जहँ तहँ थकित मनहुं अनुरागे॥

वेलि विविध लपटीं ललित, फूलि रहीं बहु रङ्ग।
शोभित सहित शृँगार जिमि, नारि पतिनके सङ्ग॥
हालि उठत सब पात, मन्द पवन लागत कबहुं।
आनँद उर न समात, बार बार पुलकत मनहुं॥

कुञ्ज पुञ्ज मंजुल सुखदाई। शीतल सुमन सुगन्ध सुहाई॥
हरि विश्राम हेत वन जानो। रचे विचित्र सदन बहु मानो॥
बोलत हैं कल खग बहु रङ्गा। कीर कपोत कोकिला भृङ्गा॥
मनहु भेरि सब आनँद गावैं। जहँ तहँ वरही नृत्य दिखावैं॥
तरुदल खरक पवन गति साजे। मधुर सुरन बाजत ज्यों बाजे॥

क्रीड़त मरकट शुभगति लीने। करत कला ज्यों नट परवीने॥
मृगगण चितवत आनन्दबाढ़े। मनहुं तमाशगीर सब ठाढ़े॥
पाय श्यामघन हित वनराई। करी मनहु आनन्द बधाई॥
वनशोभा कछु वरणि न जाई। ऋतु वसंत जहँ रहत सदाई॥
जहां स्वभाव काल गुण नाहीं। वैरभाव नहिं खग मृगमाहीं॥
सदा एकरत परम प्रकाशी। परम सुखद आनंदकी राशी॥
चिन्तामणि सब भूमि सुहावन। कोयलविमल शुभगअतिपावन

शोभा वृन्दाविपिनकी, वरणि सक अस कौन।
शेष महेश गणेश विधि, पार न पावत तौन॥
महिमा अमित अपार, श्रीवृन्दावनधामकी।
जहँ नित रहत बिहार, परब्रह्म भगवान हरि॥

देखि श्याम बन भये सुखारी। बैठे तरुतर विपिनविहारी॥
वृन्दावनकी करत बड़ाई। बलदाऊसों कहत कन्हाई।
मैं यह बन देखत सुख पावत। वृन्दावन मोको अति भावत॥
कामधेनु सुरतरु विसरावत। रमा सहित वैकुण्ठ भुलावत॥
यह यमुनातट यह बन यावत। ये सुरभी अति सुखदसुहावत॥
यह सुख त्रिभुवन कितहुँ न पावत। ताते मैं तनु धरि इतआवत
दाऊजू तुम सच कर मानों। यह वृन्दावन जड़मति जानों॥
चितवनमें आनँद की रासा। प्रेम भक्तिको यहां निवासा॥
परमधाम मम परम सुहावन। पावनहू ते पावन पावन॥
जे तरु वृन्दावनके माहीं। कलपवृक्ष तिनकी सरि नाहीं॥

कल्पवृक्षके तरु जब जाई । तब मांगे वांछित फल पाई ॥
वृन्दावन तरु चिंतित जोई । प्रेम भक्ति मम पावत सोई ॥

जाके वश मैं रहत हौं, अपनी प्रभुता त्याग ।
प्रेम भक्तिसों लहत नर, वृन्दावन अनुराग ॥
श्रीमुख वरण्यो श्याम, श्रीवृन्दावनको महत ।
सुख पायो बलराम, सुनत कान्हके वचन वर ॥

सखावृन्द सुनि श्रीमुख बानी । प्रेममगन तनु दशा भुलानी ॥
चितवतहरिमुख पलक बिसारी।जिमिचकोरगणशशिहिनिहारी
कहतचकितसबअतिसुख पावत । निजलीला हरि प्रगटजनावत
पुनिपुनि पुलक कहत शिरनाई । सुनहु श्यामघन कुंवरकन्हाई॥
बार बार तुमको कर जोरैं । हमहिं कान्ह तुम तजहु न भोरैं ॥
जहां जहां तुम तनुधरि आवो । तहां तहां जनि चरण छुड़ावो ॥
तब हँसि बोले कुंवर कन्हैया । व्रजते तुम्हैं न टारौं भैया ॥
तुम मेरे मनको अति भावत । तुमते मैं बहुतै सुख पावत ॥
या व्रजसम त्रिभुवन कहुं नाहीं । तुम्हरे ढिग मैं रहत सदाहीं ॥
मैं तुम हेत देह यह धारी । तुमते व्रजलीला विस्तारी ॥
है यह व्रज मोको अति प्यारो । ताते कबहूं होत न न्यारो ॥
ऐसे हरि ग्वालनके माहीं । गुप्त बात कहि कहि समुझाहीं ॥

मधुर वचन सुनि श्यामके, सखावृन्द सुख पाय ।
प्रेम पुलकि तनु मुदित मन, रहे सबै गहि पाय ॥

धनि धनि धनि तुम श्याम, धनि ब्रज धनि वृन्दाविपिन
तुम्हरे गुण अभिराम, हम सब अज्ञ न जानहीं ॥
सुनहु श्याम घन नन्द दुलारे । तुम प्रभु हम सब दास तुम्हारे ॥
दुर्लभ यह हरि सङ्ग तुम्हारो । कबधौं फेरि गोपतनु धारो ॥
ना जानिये बहुरि ब्रजनाथा । कब तुम फिरिहो सुर मुनिसाथा
कब तुम छाक छौनिके खैहो । कबधौं फिरि एसे सुख दैहो ॥
बलि बलि जइये श्याम तुम्हारी । अब इक विनती सुनहु हमारी
सुन्दर मुरली नेक बजावो । अधरसुधारस श्रवणन प्यावो ॥
तुम्हें नन्दकी सौंह दिखावें । मुरलीधुनि सुनि हम सुख पावें
तुम्हरे मुख यह बाजत नीको । हम सबको जीवन है जीको ॥
सुनत सखनकी कोमल बानी । प्रेम सुधारससों लपटानी ॥
गुण गम्भीर गोपाल कृपाला । भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला ॥
भये प्रसन्न भक्त सुखदाई । चितये कमलनयन समुदाई ॥
करते लकुट निकट धरि दीन्हों । पाछे मुरलीको गहि लीन्हों ॥
पकरि दुहू कर अधर धर, मधुर मुरलि धुनिगान ।
मोहि लियो चर अचर नभ, जल थल श्याम सुजान ॥
भई थकित गति पौन, यमुनाजल लीन्ही शयन ।
ह्वै गये खग मृग मौन, रहे जहां तहँ चित्रसे ॥
उपजावत गावत गति सुन्दर । राग रागिनी ताल विविध बर ॥
सखावृन्द सुनि तनमन वारैं । निरखतमुखछबि पलकबिसारैं ॥
चलत नयन भ्रकुटी पुट नासा । करपल्लव मुरली सुरश्वासा ॥

मानहुँ निरतक भाव बतावैं। शुभ गति नायक सैन सिखावैं॥
कुंचित अलक वदन छवि देई। मनहुँ कमलरस अलिगण लेई॥
कुण्डल झलक कपोलनमाहीं। मनहु सुधारस मकर भ्रमहीं॥
दशनदमक मोतिन लर ग्रीवा। मनहु सकल शोभाकी सींवा॥
तिलक विचित्र भालछवि छाजै। मनहु महा छविदशन बिराजै॥
चमकत मोरचन्द्रिका चारू। मनहु सकल शृँगार शृँगारू॥
श्याम गात उर गजमणि माला। सँग शोभित वनमाल विशाला॥
मरकत गिरि मनु सुरसरिधारा। बैठौ पङ्गति कौर किनारा॥
कटि पटपीत तड़ितद्युति हारी। पदपङ्कज नूपुर रुचिकारी॥

ग्रीवा लटकन मुरकि पर, शोभित छविसमुदाय।
प्रेममगन निरखत मुदित, गोपबाल सुख पाय॥
सुन्दरश्याम सुजान, देत परम सुख सखनको।
वारत तन मन प्रान, धन्य धन्य कहि ग्वाल सब॥

रीझत ग्वाल रिझावत श्यामा। लेत मुरलिमें सबको नामा॥
हँसत ग्वाल सब दै कर ताला। लेत हमारो नाम गोपाला॥
कहत श्याम अब तुमहुँ बजावो। ऐसे हमको गाय सुनावो॥
हँसि मुरली तिनके कर दीन्हीं। अधरन धर अमृत रस लीन्हीं॥
ल लै निज कर सकल बजावत। हरिके स्वरको रूप न पावत॥
आस पास सोहत सब बालक। मधि प्रभु प्रीति रीतिके पालक॥
हँसि हँसि सबके चित्त चुरावैं। सब मिलि प्रेमानन्द बढावैं॥
जैसे श्रीमुरलीधर गायो। काहू पै सो रूप न आयो॥

हँसि हँसि कहत परस्पर भाई। हरिकौ सम को सकै बजाई॥
चतुरानन पञ्चानन ध्यावैं। सहसानन नव नित गुण गावैं॥
सुर नर मुनि कोउ पार न पावैं। सो ग्वालन सँग बेणु बजावैं॥
व्रजवासी जनको प्रतिपाला। भक्त वश्य प्रभु दीनदयाला॥

कारण करण अनन्त गुण, निगम नेत जिहि गाव।
सो ग्वालन सँग गावहीं, देखहु भक्ति प्रभाव॥
वृन्दावन की रेनु, ब्रह्मादिक बांछित सदा।
जहां श्याम सुखदेनु, ग्वालन सँग चारत सुरभि॥

---

## द्विजपत्नीयाचन लीला वर्णन।

विहरत वृन्दावन बनवारी। विविध भांति लीला अनुसारी॥
कबहूं सखन संग मिलि गावैं। कबहूं मुरली मधुर बजावैं
कबहूं गैयन घेरत धाई। कबहूं यमुनाके तट जाई॥
करत कुलाहल आनँद भारी। देत दिवावत रसकी गारी॥
ऐसे लीला करत अपारा। भये चुधारत गोपकुमारा॥
कहत भये तब हरिसों जाई। हमको चुधा लगी अधिकाई॥
यह सुनि प्रभु भक्तन हितकारी। अपने मन यह बात विचारी॥
सुनि सुनि मेरे गुणगण गाना। करत रहत द्विजतिय मन ध्याना
तिनको दरशन आज दिखाऊं। तिनके मनकी ताप नशाऊं॥
तब हरि ग्वालन कह्यो बुझाई। यज्ञ करत त्यां द्विज समुदाई॥

तिनके निकट जाउ तुम भाई। प्रथम प्रणाम कीजियो जाई॥
कहियो हमको कृष्ण पठायो। तुमपै भोजन मांगन आयो॥

यह सुनि ग्वाल गये तहां, जहां विप्र समुदाय।
यज्ञ करत अहमिति लिये, विद्याको बल पाय॥
ग्वालन करी प्रणाम, कह्यो तिन्हैं कर जोरि कै।
हमै पठाये श्याम, मांग्यो है भोजन कछू॥

वनमें राम कृष्ण दोउ भया। आये इतहि चरावन गैया॥
वे कछु आज भये हैं भूखे। यह सुनि विप्र गये ह्वै रूखे॥
कह्यो यज्ञ हित करी रसोई। अहिरन पहिले देय न कोई॥
यह सुनि ग्वाल सकल फिरि आये। हरिसों तिनके वचन सुनाये
सुनि हलधरतन चिते कन्हाई। बोले वचन मन्द मुसुकाई॥
ये द्विज धर्म कर्म लपटाने। बिना भक्ति मोको नहिं जाने॥
तब ग्वालनसों कह्यो मुरारी। जाउ जहां इनकी सब नारी॥
उनको है दृढ़ भक्ति हमारी। वे मानैंगी कही तुम्हारी॥
उनसों भोजन मांगहु जाई। कहियो भूखे भये कन्हाई॥
तब द्विजनारिन ढिग ये आये। हाथ जोरि तिनके शिर नाये॥
कह्यो राम अरु कुवँर कन्हैया। वनमें भूखेहैं दोउ भैया॥
मांग्यो है कछु भोजन तुमसों। आज्ञा देहु सो कहिये उनसों॥

ग्वालनके सुनि वचन सब, हर्षि उठीं द्विजवाम।
कहत हमारो भाग्य धनि, भोजन मांग्यो श्याम॥

करत रहीं नित ध्यान, सुनि सुनि जिनके गुण श्रवण।
सफल जन्म निज जान, तिनको भोजन लै चलीं॥
षटरसके व्यञ्जन विधि नाना। कोमल भांति अमित पकवाना॥
खीर खांड़ सिखरन दधि न्यारो। माखन लियो श्यामको प्यारो
कहँलग वरणों कहौं प्रकारा। प्रेम सहित लीन्हें भरि थारा॥
बहुते ग्वालनके कर दीन्हें। बहुते अपने शिर धरि लीन्हें॥
नयनन दरश लालसा बाढ़ी। उपजी चाह हृदय अति गाढ़ी॥
चलीं पतिनकी कानि बिसारी। देखनको प्रभु गोपविहारी॥
ग्वालनसों पूछत यह बाता। कित हैं हरि जनके सुखदाता॥
जिनके पुरुष हते घरमाहीं। तिनको जान देत सो नाहीं॥
कहत जात तुम कित अतुराई। लोकलाज तनु दशा भुलाई॥
तिनसों कहत भई ते नारी। हमको श्रीगोपाल हँकारी॥
भोजन मांग्यो है हमपाहीं। तिनहिं देन ग्वालन सँग जाहीं॥
तिनको दरश देखि सुख पैहैं। बहुरि तिहारे घर हम ऐहैं॥
यह सुनि पति अति क्रोध करि, तिनहिं दिखायो त्रास।
कहत भई तुम बावरी, बैठति नाहिं अवास॥
जिनके उर नँदलाल, बसे लकुट मुरली लिये।
तिनहिं न भय यम काल, कौन भांति रोके रुकहिं॥
हरिपै हमैं जान पिय देहू। कहा रोंकि अपयश शिर लेहू।
देखन देहु नन्दके लालहि। त्रिभुवनपति प्रभु मदनगोपालहि॥
इतनी बात मानि पिय लीजै। हाहा हमैं दान यह दीजै॥

वे हैं यज्ञपुरुष भगवाना । अन्तरयामी कृपानिधाना ॥
करत यज्ञ विधि तिन्हैं बिसारी । कहा सरैगी बात तिहारी ॥
कहँलगि कहौं वात समुझाई । जात दरशकी अवधि बिहाई ॥
जो तुम स्वामी जानत नाहीं । तो हम सत्य कहैं तुमपाहीं ॥
मनतो मिल्यो जाय नँदलालहि । करिहौ कहा रोकिकै खालहि ॥
लेहु सँभारि देह यह सारी । जासों पिय तुम कहत हमारी ॥
को राखै इतने जञ्जालहि । मिलिहैं प्राण यशोदालालहि ॥
जो निश्चय नहि श्याम सनेहा । तौ यह कौन काजकी देहा ॥
सव सखियनके आगे जाई । देखोंगी छवि कुवँर कन्हाई ॥

ऐसे देह अरु गेह तजि, पतिकी कानि निवारि ।
पहुँचो सवते प्रथमही, जो रोकौं व्रजनारि ॥
कठिन प्रेमको पंथ, तहां नेमकी गम नहीं ।
कहत सकल सदग्रन्थ, जहां नेम तहँ प्रेम नहिं ॥

ऐसे भोजन लै द्विजवाला । पहुँचो बन जहँ मोहनलाला ॥
नटवरभेष चित्त तन कीन्हें । ठाढे सखा सङ्ग भुज दीन्हें ॥
मोरमुकुट वैजन्तीमाला । कर मुरली दृगकमल विशाला ॥
कुण्डल अलक तिलक झलकाहीं । कोटिकामछवि पटतर नाहीं ॥
मुख मृदुहसनि लसनि पटपीरो । निरखत नयन तापभयो सीर
भोजन लै हरि आगे राखे । अपने भाग्य धन्य करि भाखे ॥
तिन्हैं देखिहरि मनसुखमान्यो । वचनन करि तिनकोसनमान्यो
तिन सों वहुरो कह्यो कन्हाई । गृहपति तजि तुम कितइतआई ॥

कहियत विप्र वेद अधिकारी। हो तिनकी तुम पतिव्रत नारी॥
वे सब यज्ञ करत बनमाहीं। तुम बिन यज्ञ होय है नाहीं॥
यह तुम कछु भलो नहिं कीन्हों। पतिको कह्योमानि नहिं लीन्हो
पतिआयसु तिय पाले जोई॥ चारि पदारथ पाव सोई॥

पति देवता सुतीय कहँ, वेद वचन परमान।
जाहु वेगि तुम पतिनपहँ, ताते यह जिय जान॥
सुनि हरि वचन प्रमान, कर्म धर्म मानो सुखद।
द्विजतिय परम सुजान, बोलीं सब कर जोरि कै॥

सुनहु श्यामघन अन्तर्यामी। तुमहीं सकल जगतके स्वामी॥
यज्ञपुरुष तुमहीं सुखधामा। तुमहीं सबके पूरणकामा॥
बिबिध यज्ञ करि तुमको ध्यावें। तुमते चारि पदारथ पावें॥
सकल धर्मते शरण तुम्हारी। है सब जीवनको सुखकारी॥
यह हम सुनी पतिन मुख बानी। कहत वेद इतिहास बखानी॥
ताते शरण तुम्हारी आई। यह दूषण नहिं हमैं गुसाई॥
तव मायावश सकल भुलाने। ताते पतिन न तुम पहिचाने॥
तिनको दोष छमा प्रभु कीजै। हमको शरण आपनी दीजै॥
चारि पदारथहू ते भारी। है प्रभु दरशन शरण तुम्हारी॥
ताते नहीं निरादर कीजै। अपने चरण शरण रख लीज॥
सुनि प्रभु द्विजपत्नीकी बानी। भये प्रसन्न भक्त सुखदानी॥
धन्य धन्य प्रभु तिनको भाख्यो। हितकरि तिनको भोजनराख्यो॥

दै अपनी दृढ भक्ति हरि, तिन्हैं कह्यो घर जाहु ।
ह्वै हैं तुम्हरे दरशते, शुद्ध तुम्हारे नाहु ॥
हरि आयसु धरि माथ, पाय भक्ति वरदान वर ।
राखि हृदय व्रजनाथ, चलीं हर्षि द्विजतिय सदन ॥

नन्द नदनको करत वड़ाई । द्विजपत्नी सब घरको आई ॥
देखत तिन्हैं विप्र समुदाई । भये पुनीत विमल मति पाई ॥
धन्य धन्य कहि तियन वखानी । आप कहत हम अतिअज्ञानी ॥
जिनके हेतु यज्ञ हम कीन्हो । तिन मांग्यो भोजन नहिं दीन्हों ॥
हम विद्या अभिमान भुलाने । अविगतिको गति कैसे जाने ॥
परब्रह्म प्रभुजन सुखदाई । भक्तन हित प्रगटे प्रभु आई ॥
तिनको हम पहिचान्यो नाहीं । बार बार यह कहि पछिताहीं ॥
हैं ये तिय अतिशय बड़भागी । कृष्णचरणपङ्कज अनुरागी ॥
ब्रह्मादिक खोजत हैं जिनको । देख्यो जाय प्रगट इन तिनको ॥
ऐसे वहु विधि तियन सराहीं । आदर करि लीन्हीं घरमाहीं ॥
प्रेम प्रीति करि जो हरि ध्यावैं । सो नर नारि अभयपद पावैं ॥
नरनारी कछु नाहिं विचारा । प्रभुको केवल प्रेम पियारा ॥

भाव तियनको धारि उर, तहँ हरि कृपानिकेत ॥
सखन सहित भोजन करत, रुचिसों प्रीति समेत ॥
ब्रह्मलोक लौं शोर, ग्वालनके सँग खात हरि ।
छीनि छीनिकै कौर, करत परस्पर हास रस ॥

अति हितभोजन तहँ हरिकीन्हों। सखावृन्दको अति सुख दीन्हों॥
वनमें फिरत चरावत गैया। बैठे आय कदमकी छैया॥
भये सखा सिगरे इक ठाहीं। गैयां बगर रहीं बनमांहीं॥
दुपहर घाम जानि मनमाहीं। लागे चलन सघन बनछाहीं॥
बैठे ग्वालबाल चहुं ओरिया। आगे धरीं दूधकी घरियां॥
मध्य श्यामसुन्दर नँन्दनन्दा। उडुगणमें जिमि पूरणचन्द्रा॥
मोरमुकुट कटि कछनी काछे। कोटि कामकी छबिको बाछे॥
कबहूं मुरली मधुर बजावें। कबहुं सखन मिलि सारँग गावें॥
कोऊ सखा नृत्यको करहीं। कोऊ टिटकारी उच्चरहीं॥
करत केलि ऐसे बनमाहीं। देखि देखि सुरवृन्द सिहाहीं॥
कोऊ ताल बजावत नीके। उपजावत कोउ आनद जीके॥
कहत धन्य ये ब्रजकी बाला। विहरत जिन संग कृष्णकृपाला॥

धन्य विटप धनि भूमि यह, धनि बृन्दावनचन्द॥
धनि ब्रज कहि वर्षें सुमन, रीझ रीझ सुरवृन्द॥
मन मन देव सिहाहिं, बन विहार हरिको निरखि॥
श्रीवृन्दावनमाहिं, हम न भये द्रुमलता तृण॥

श्रीदामा सब कह्यो बुझाई। खेलहिमें सब रहे भुलाई॥
गैयां कितहिं चरत को जानें। यह सुनिकै सब खेल भुलाने॥
जित तित हेरनको उठि धाये। गयां जाय घेरि लै आये॥
जे सुरभी आईं नहिं जानी। चरत सघन बन मांझ समानी॥
तिनको तरु चढ़ि कान्ह बुलाई। मुरलीटेर सुनत उठि धाई॥

ऐसी गैयां श्याम सधाई। मुरली सुनि सब हरिपै आई॥
जब जब गैयन श्याम बुलावैं। हूं हूं करि सब हरिपै आवैं॥
तिनपर कर फेरत मनमोहन। पीतांबर सों भारत छोहन॥
करत प्यार तिनपर बनमाली। हस्तकमलकी सब प्रतिपाली॥
हरिको निरखि गायसुख पावैं। तिनके भाग्य कहत नहिं आवैं॥
जब हरि गैयन करसों परसैं। लखि लखि कामधेनु मन तरसैं॥
कहत कहा जो कामद कीन्हों। हमको विधि ब्रज जन्म न दीन्हों

धनि धनि ब्रजकी धेनु ये, चारत त्रिभुवननाथ।
भारत पोंछत दुहत नित, हित करि अपने हाथ॥
मनहीं मन पछिताहिं, कामधेनु ब्रजधेनु लखि।
हम न भई ब्रजमाहिं, हरिपदपङ्कज परसती॥

ऐसी लीला करत अनेका। बनमें ललित एकते एका॥
वृन्दावन सब दिवस बितायो। संध्या समय निकट अब आयो॥
तब हरि कह्यो चलो अब गेहू। गैयां सब आगे करि लेहू॥
पहुंची सांझ आय नियराई। बनमें करहु अबेर न भाई॥
यह सुनि गाय सबन अगुवाई। भली बात यह कही कन्हाई॥
बनते निकरि चले सब ग्वाला। ब्रज आवत नटवर गोपाला॥
सुरभीवृन्द गोपबालक संग। अति आनंद गावत नाना रँग॥
अधर अनूप मुरलि सुरकारी। ऊँचे सुरन बजावत गौरी॥
सुन्दर श्रवन सुनत ब्रज धाई। गृहकारज तिय तजि सब आई॥
कहत परस्पर मोहन आवत। देखि देखि छवि अति सुख पावत॥

पूर्णकला उदित शशि जैसे। कुमुदिनि सर फूलीं तिय तैसे॥
नयन चकोर रहे टक लाई। दिवस विरहकी ताप नशाई॥

प्रेममगन आनन्द अति, कहत सकल व्रजबाम।
देखहु सखि यशुमति सुवन, शोभित अति अभिराम॥
श्यामल तनु पटपीत, जलजमाल बरही मुकुट।
लई मनों इन जीत घनदामिनि बगधनुष छवि॥

भृकुटि बिकट दृग चञ्चलताई। अति छविदेति वरणि नहिंजाई॥
धनुष देखि बिच खंजन जानों। उड़न करत डरि उड़त न मानो॥
प्रफुलित नयन शरद अंबुजसे। मनो कुण्डलि रविकरके परसे॥
गोपदरज परागछवि छाई।। तामधि अलि बैठ्यो जनु आई॥
एक कहत देखहु वह शोभा। अतिसुख देत लसत मन लोभा॥
कमलवदन मुरली रस लेई। कुटिल अलक ऐसे छवि देई॥
मानो अलिगण साजी सैना। सहि न सकत चाहत निज ऐना॥
अधरसुधा लगि अति दुख पाई। मुरलीसों मनु करत लड़ाई॥
शोभित नाशा परम सोहाई। तामें सखि उपमा यह पाई॥
मनहुं अनङ्ग सहायक आयो। तिलप्रसूनशर ताहि चलायो॥
सुनि यह युक्ति सकल हर्षाई। निरखत हरिमुख छवि सुख पाई
कृपादृष्टि हरि सबन निहारी। आये व्रजजनमन सुखकारी॥

कहत मुदित मन युवतिजन, धनि धनि सखि वे मोर।
जिनके पंखनको मुकुट, कीन्हों नँदकिशोर॥

धनि धनि सखि वे बांस, जाको मुरली अधर धरि।
हरि पूरत निज सांस, को पुनीत ताके सदृश॥
निज निज सदन गये सब ग्वाला। आये घर हलधर गोपाला॥
देखि दुहू मातन सुख पायो। हरषि दुहुनको कण्ठ लगायो॥
काहे आज अवार लगाई। यह कहि बार बार बलि जाई॥
रोहिणिसों कह यशुमति मैया। भूखे ह्वै हैं दोऊ भैया॥
मैं दोउनको देत न्हवाई। तुम भोजनको करहु चढ़ाई॥
निकट लये मुरली कर लीन्हीं। हरि करते लकुटी धरिदीन्हीं॥
नीलाम्बर पीताम्बर लीन्हों। मुकुट उतारि श्याम तब दीन्हों॥
प्राण समान यशोमति जानी। धरयो सँभारि सदन नँदरानी॥
छोरति अँग भूषण महतारी। मुक्तमाल बनमाल उतारी॥
कटि किंकिणि अङ्गद भुज छोरै। निरखि गात आनंदन ओरै॥
पट लै दोउनके अँग झारे। उर लगाय लीन्हें अति प्यारे॥
तुम दोउ मेरे गायचरैया। और न कोऊ टहलकरैया॥
लीन्हें तुमहिं बिसाहि मैं, तब अति रहे नन्हाय।
सुनि हँसि हरि बलसों कहत, कहत झूठही माय॥
यह तो समुझि न जाय, सांच झूठकी बात कछु।
यशुमति लेत बुलाय, मैं चारी हँसि हँसि कहत॥
सुमनासुत अंगन परसाई। तपत तरणिको जल ल आई॥
परम प्रीति दोउ सुत अन्हवाये। सरस वसन तनुपोंछि सुहाये॥
षटरस भोजन जाय जिमाये। यशुमतिके सुख जायँ न गाये॥

शीतल जल कपूर रस रचयो। लै झारी दुहु भैयन अँचयो॥
भोर भयो मुख धोय उठे जब। पौरे पान दये जननी तब॥
बीरा खात मुदित दोउ भाई। ब्रजवासिन जूँठनि सब पाई॥
यशुमतिके सुख कौन गनावे। शारदहू कहि पार न पावै॥
धन्य नन्द धनि यशुमति माता। महिमानहिं कहि सकै विधाता
ब्रह्म सनातन हैं प्रभु जोई। जिनके पुत्र कहावत सोई॥
जो प्रभु सकल विश्वके स्वामी। तीनि लोकपति अन्तरयामी॥
विश्वम्भर निज नाम कहावै। ताहि यशोमति माय खवावै॥
रात सुवावै प्रात जगावै। बालक ज्यों फुसलाय लड़ावै॥

रहत मगन गुण श्यामके, निशि दिन आठौ याम।
महरि महरके प्राणधन, मोहन सुन्दरश्याम॥
हरि छ्ण बिसरत नाहिं ब्रजके नरनारी जिनहिं।
मगन प्रेम मनमाहिं, निशि दिन जात न जानहीं॥

---

## गोवर्द्धन लीला।

कृष्णप्रेम ब्रज लोग समाने। देव पितर सब लोक भुलाने॥
कार्त्तिक शुदि परिवा जब होई। इन्द्रहि पूजत ब्रज सब कोई॥
ताकी सुधि बुधि सबन भुलाई। सबके मनमें ध्यान कन्हाई॥
सो तिथि अति समीप जब आई। तब यशुमतिके उर सुधिआई
कहत नँदसों नन्दकि रानी। सुरपति पूजा तुमहिं भुलानी॥
जाकी कृपा बसत ब्रजमाहीं। एकहु वस्तु कमी कछु नाहीं॥

जाकी कृपा दूध दधि गाई । सहस मथानी मथत सदाई ॥
जाकी कृपा पुत्र हम पाये । जासु कृपा सब विघ्न नशाये ॥
भई सकल व्रजमांझ बड़ाई । कुशल रहौ बलराम कन्हाई ॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे । गोप गाय व्रजके रखवारे ॥
तिनकी तुम सब सुरति भुलाई । रहे दिवस पांचक अब आई ॥
कहो सकल गोपनके राई । इन्द्रयज्ञकी करो चढ़ाई ॥

भली दिवाई मोहिं सुधि, कहत महरिसों नन्द ।
भूलि गये हम देवको, काज मोहवश मन्द ॥
हाथ जोरि नँदराय, विनय करत सुर रायसों ।
तुमको गयो भुलाय, क्षमा कीजियो मोहिं प्रभु ॥

तबहिं नन्द उपनन्द बुलाये । श्रीवृषभानु सहित सब आये ॥
सबको देखि नन्द सुख पायो । महरि महर कहि शीश नवायो॥
अति आदर सबहीको कीन्हों । सादर सबको बैठक दीन्हों ॥
मनहीं मन सब शोध कराहीं । कंस कछू मांग्यो तो नाहीं ॥
राजअंश उनको जो होई । बिन मांगे हम दीन्हों सोई ॥
बूझत नन्दहि सब सकुचाये । कौन काज हम सबन बुलाये ॥
तबहिं नन्द सबको समझायो । मैं तुमको यहि काज बुलायो ॥
सुरपति पूजाके दिन आये । सो तुम सबहिन मिलि बिसरायो ॥
मैंहू राजकाज लपटानो । निशिदिन लोभहिं मांझ भुलानो ॥
इन्द्रयज्ञकी सुरति भुलानी । अति समीप दिन पहुँचो आनी ॥

ताते अब सब करो चढाई। इन्द्रयज्ञ कीजै सुखदाई॥
इन्द्रहिको हम सदा मनावैं। तिनहीं ते ब्रजजन सुख पावैं॥

यह सुनि मन हर्षे सबै, देवकाज जिय जान।
हम सब भूले सुरपतिहिं, मन लागे पछिनान॥
भलो करो नँदराय, तुम हमको दीन्हीं सुरति।
सुरपतिको शिर नाय, क्षमा करावत पाप सब॥

बिदा होय सब गोप सिधाये। घर घर बाजन लगे बधाये॥
पूजाकी विधि करत सबैमिलि। जिहिंजिहि भाँति सदाआईचलि
अमितभाँति पकवान मिठाई। होत घरनि घर बरणि न जाई॥
नन्दमहर घर बजत बधाई। गावत मङ्गल अति हर्षाई॥
नेवत करत यशोदा आतुर। आठौ सिद्धि घरहि अति चातुर॥
मैदाके अनेक पकवाना। बेसनके बहु करत विधाना॥
घृत मिष्ठान्न सबै परिपूरण। मिश्री करत पाकको चूरण॥
विविध भांति पकवान मिठाई। कहँलगि नाम कहौं सब गाई॥
और नारि ब्रजकी सँग लागी। घृतपक करत सबै अनुरागी॥
जहां तहां कहु चढी कढाई। यशुमति सबन सराहत जाई॥
जो सामा मांगति हैं जोई। रोहिणि ताहि देतिहै सोई॥
महरि करति रचि और निहारे। धरत जोरि विधि न्यारे न्यारे॥
सैंति सैंति अति नेमसों, धरति अछूते जात।
श्याम कहू परसैं नहीं, यह मनमाहि डरात॥

शङ्क करत मनमाहिं, सुरपति पूजा जानि जिय।
यशुमति जानति नाहिं, सब देवनके देव हरि॥
खेलत ते सन्तन सुखदाई। भीतर आये कुवँर कन्हाई॥
जननी कहति इहाँ जनि आवै। लरिकनको यह देव डरावै॥
रहे ठिठुकि आंगनहि डराई। मनहीं मन हँसि कहत कन्हाई॥
मैया री मोहिं देव दिखैहै। इतनो भोजन वह सब खैहै॥
यह सुनि खीझि कहति है मैया। ऐसी बात न कहौ कन्हैया॥
जोरि जोरि कर देव मनावै। बालकको अपराध छमावै॥
वाहर चले श्याम अनखाई। युवति कहैं हरि गये रिसाई॥
जान देहु हरि अबहिं अयाने। देवकाज बालक कहँ जाने॥
कुइहैं कहूं श्याम यह भोजन। उनकी पूजा जानै को जन॥
और नहीं हम काहू जानैं। कै सुरपति कै गोधन मानैं॥
यह कहि कहि इन्द्रहि शिर नावैं। राम श्यामकी कुशल मनावैं
और देव नहिं तुमहिं सरीशा। कहँ नहिं कृपा करौ सुरईशा॥
ऐसे सुरपति यज्ञहित, यशुमति करति विधान।
द्वारे वैठे नन्द जहँ, गये तहांको कान्ह॥
जुरे नन्द ढिग आय, ब्रजके जे उपनन्द सब।
वैठे अति सुख पाय, करत बात विधि यज्ञकी॥
दीपमालिका रचि रचि साजत। पुहुपमाल मण्डली विराजत
ढोल निशान बाजने वाजैं। मुदित ग्वालगण जित तित राजैं॥
गैयन चित्र विचित्र बनावैं। अंगन आभूषण पहिरावैं॥

सात वर्षके कुवँर कन्हाई । खेलत मन आनंद बढ़ाई ॥
द्वारन युवती चित्र बनावैं । मङ्गल गान मुदित मन गावैं ॥
सथिया रचि पुनि थापहिं हाथा । पूजा देखि हँसे ब्रजनाथा ॥
मो आगे सुरपतिको पूजा । मोते और देवको दूजा ॥
ब्रजवासी मोको नहिं जानैं । मो अच्छत सुरपतिको मानैं ॥
अब यह मेटौं यज्ञ बिहाने । लीन्हों भाग बहुत दिन याने ॥
ब्रजवासिनपै आप पुजाऊं । गिरि गोवर्द्धन नाम धराऊं ॥
यह बिचार मनमें ठहराई । गये नन्द ढिग कुवँर कन्हाई ॥
हर्षि नन्द कनिया पौढ़ाये । वदन चूमि उरसों लपटाये ॥

तब हरि बोले नन्दसों, मधुर मन्द मुसकाय ।
करत पुजाई कौनकी, बाबा मोहिं बताय ॥
कौन देव सो आहि, काहेको पूजत तिन्हैं ।
मैं नहिं जानत ताहि, कहौ मोहिं समुझाय सब ॥

नन्द कह्यो तब सुनहु कन्हाई । इन्द्र सकल देवनको राई ॥
तिनको पूजत गोप सदाई । कुलमें यहै रीति चलि आई ॥
ताते तिन्हें पूजियत ताता । जाते कुशल रहो दोउ भ्राता ॥
या पूजाते सुरपति हरषैं । ह्वै प्रसन्न तब जल वे बरषैं ॥
तृण अनाज उपजत है जाते । गाय गोप सुख पावत ताते ॥
याते सदा यज्ञ यह कीजे । जो गोधन धन कबहुं न छीजे ॥
तब हरि कह्यो सुनो नँद ताता । ऐसे तुम जो कहौ यह बाता ॥
जहां इन्द्र पूजत नहिं प्रानी । तहां कहा वर्षत नहिं पानी ॥

जब हरि ऐसे वचन सुनायो। तब नन्दहि उत्तर नहिं आयो॥
सुनि हरिवचन रहे सकुचाई। मनहिं कहत चतुरङ्ग कन्हाई॥
है बालक अबहीं अति नान्हा। देवकार्य कह जानै कान्हा॥
तब चुचकारि कह्यो नँदराई। सदन जाउ तुम कुवँर कन्हाई॥

ऐसेमें जिन जाहु कहुँ, भीड़ बड़ी है तात।
को जानै किहि भावको, कित धौं आवत जात॥
सोय रहौ गोपाल, मेरे पलँगा जाय तुम।
मैंहूं आवत लाल, पाछेते तुम्हरे निकट॥

तब हरि मन इक बुद्धि उपाई। बैठे ओर महरि ढिग जाई॥
तिनको हरि यों कहि समुझायो। आज मोहिं सपनो इक आयो॥
पुरुष पुनीत एक अति चारू। चार भुजा तनु सुभग शृँगारू॥
तिन मोसों यों कह्यो बुझाई। इन्द्रहि पूजे कहा बड़ाई॥
मैं तुमको इक देव बताऊं। गिरिगोवर्द्धन प्रगट दिखाऊं॥
यह पूजा तुम इनहिं चढ़ावो। जाते मुँह मांगे फल पावो॥
तुम आगे भोजन वह खैहैं। प्रगट आपनो रूप दिखैहै॥
चार पदारथके ये दाता। अन धन गोधन केतिक बाता॥
ऐसे देव छांड़ि घरमाहीं। तुम पूजत सुरपतिहि वृथाहीं॥
कोटि इन्द्र क्षणमें वे मारैं। क्षणहीमें पुनि कोटि सवांरैं॥
गोवर्द्धनसम देव न दूजा। करहु जाय इनहींकी पूजा॥
ताते मो मनमें यह आई। पूजहु गोवर्द्धन सब जाई॥

चकित गोप सब वचन सुनि, कहत अकथ यह बात।
सुने न अबलौं देव कहुँ, प्रगट होयके खात॥
सुनी बात यह नन्द, सोचत सब उपनन्द मिलि।
कहा कहत नँदनंद, समुझि परत नहिं सपन यह॥

सुनि यह बात सबन ब्रज पाई। देख्यो ऐसो सपन कन्हाई॥
सुरपति पूजा देत मिटाई। गोवर्द्धनको करत बड़ाई॥
कोऊ कहत कान्ह कह सांचो। कोऊ कहत बात यह कांचो॥
बालक जानै कहा पुजाई। कोऊ कहत कहै को भाई॥
कोऊ इन्द्रहि कहत सकाने। हमतो कछु यह बात न जाने॥
हलधर कहत सुनो ब्रजवासी। को महिमा जानत अविनासी॥
इनको बालक करि मति जानों। जो हरि कह्यो सत्यकरि मानों
नन्द निकट जो गोप सयाने। हरिको बल प्रताप सब जाने॥
कहत नन्दसों ते सुख पाई। कीजै सोइ जो कहत कन्हाई॥
कहत नन्द तब सबन सुनाई। मेरे हू मनमें यह आई॥
हरिको स्वप्न झूठ नहिं होई। है प्रतीति मेरे मन सोई॥
कालीको स्वप्नो हरि देखो। भयो प्रातही तासु विशेखो॥

तातै सोई कीजिये, कान्ह कहैं जोइ बात।
सब ब्रजवासी पूजिये, गोवर्द्धन चलि प्रात॥
यहै मन्त्र ठहराय, बूझत हरिसों हरषि सब।
कहो कान्ह समझाय, कौन भांति गिरि पूजिये॥

हर्षि कान्ह तव सवन बुलायो । इन्द्रयज्ञ हित तुम जो वनायो ॥
वहु व्यञ्जन पकवान मिठाई । सो सब शकटन लेहु भराई ॥
नाचत गावत सहित हुलासा । चलहु सकल गोवर्द्धन पासा ॥
तहां जाय गिरिवरहिं मनाई । पूजहु बहु विधि मंगल गाई ॥
मांगि मांगि तुमसों गिरि खैहैं । मुँहमांगे तुमको फल देहै ॥
मेरो कह्यो सत्य तुम जानों । मेरो स्वप्न झूंठ मति मानों ॥
यह परचो तुम आंखिनदेखो । तबहि मोहि सांचो करि लेखो ॥
जो चाहो ब्रजकी ठकुराई । तौ पूजो गोवर्द्धनराई ॥
कान्हर जो कछु आज्ञा दीन्हीं । सबहिनबात मानि सो लीन्हीं ॥
कइहि परस्पर सब सुख पाई । चलहु गोवर्द्धन कहत कन्हाई ॥
ब्रज घर घर सब होत कुलाहल । फिरत गोप आनन्द उमाहल ॥
मिलत परस्पर अंकम देलै । शकटन साजत भोजन लै लै ॥

वहु व्यञ्जन पकवान वहु, बहुत मिठाई पाक ।
रस गोरस मेवा विविध, अमित भांतिके शाक ॥
षटरसके सब भोग, कछु शकटन कछु कांवरिन ।
गृह गृहते ब्रजलोग, लै लै गिरि पूजन चले ॥

नन्दमहरके घरको सामा । कहँ लगि वरणि वताऊं नामा ॥
सहस शकट पकवान मिठाई । रस गोरस वहु भार भराई ॥
नन्द सदनते लै वहु ग्वाला । चले अग्र उर हर्ष विशाला ॥
पट भूषण सव गोपन साजे । भांति अनेक बाजने वाजे ॥
नन्दमहर-अरु महरि जितेका । और गोप वहु भीर अनेका ॥

बलदाऊ अरु कुवँर कन्हैया। सुभग शृङ्गार किये दोउ भैया॥
सखावृन्द सुन्दर सब लीन्हें। कोटि काम छबि लज्जित कीन्हें॥
शोभित नन्दमहरके साथा। चले सकल पूजन गिरिनाथा॥
यशुमति अरु रोहिणि महतारी। नन्दगांवकी अरु जे नारी॥
भूषण वसन सवांरि सवांरी। चलीं हर्षि उर आनँद भारी॥
पुरवृषभानु आदि जे ग्रामा। चलीं सकल गोपनकी बामा॥
श्रीराधा वृषभानुदुलारी। ललतादिक सब गोपकुमारी॥

नौसत साज शृँगार अति, पट भूषण बहुरङ्ग।
यथ यथ जुरिके चलीं, कीरति जूके संग॥
सबके मन यह काम, देखनको हरिरूप दृग।
परम मुदित सब वाम, सबके मनमोहन बसे॥

चन्द्रवदनसी सब मृगनयनी। सकल सुघर सब कोकिलवयनी॥
नवयौवनमें सबहि प्रवीना। सबको मनमोहन आधीना॥
चलीं सकल गोवर्द्धन याहीं। भई भीर अति मारगमाहीं॥
शकट वृन्द अरु गोपसमूहा। जात चले युवतिनके यूहा॥
कौतुक करत गोपगण राजैं। ताल मृदंग अनेकन बाजैं॥
कोउ गावत कोउ नाचत जाहीं। कोउ ठाढे मग पावत नाहीं॥
कोऊ शकटन साजि सवांरे। कोऊ एकन एक पुकारे॥
गावत मङ्गल गोपकुमारी। निरखि श्याम छबि होत सुखारी॥
होत कुलाहल अति मगमाहीं। कोऊ बात सुनत कछु नाहीं॥
कौतुक श्याम देखि हर्षाहीं। अति उत्साह सबन मनमाहीं॥

सखन संग खेलत हरि जाहीं । सबको सुरति श्यामके माहीं ॥
ब्रजवासिनकी भीर सुहाई । उपमा मोप वरणि न जाई ॥

उपमा न मोपै जात वरणी, भीर अति सुन्दर भई ।
वढ्यो आनँदसिन्धुको सुख, विविध तन धर सोहई ॥
छवि उजागर नगरके घौं, सुकृत पुञ्ज सुहावने ।
तिन मध्य सबके श्यामनायक, सकल लायक पावने ।

नंदमहर उपनंद सब, श्याम राम दोउ भाय ।
पहुँचे गोवर्द्धन निकट, निरखि शिखर सुख पाय ॥
उतरे सहित समाज, चहूँ ओर ब्रजलोग सब ।
मधि शोभित गिरिराज, कोटि काम शोभा सरस ॥

चहुँ दिशि फेर कोश चौरासी । उतरे घेर सकल ब्रजवासी ॥
ब्रजवासिनकी भीर अपारा । लगे चहूँ दिशि चारु बजारा ॥
वस्तु अनेक वरणि नहिं जाई । विन मोलहि सब सौंज विकाई ॥
ठौर ठौर ब्रजयुवती गावैं । जहँ तहँ नटवा नाच दिखावैं ॥
कहूं विदूषक हांस हँसावैं । हर्ष मांझ अति हर्ष बढ़ावैं ॥
नर नारी सब परम हुलासा । अति आनन्द उमँग चहुँ पासा ॥
बूझत पूजन विधि नँदराई । अधिकारी तहँ कुवँर कन्हाई ॥
कह्यो कृष्ण तब विप्र बुलाई । प्रथम यज्ञ आनंद कराई ॥
पूंछि वेद विधि तिनसों लीजे । वाही विधि गिरि पूजा कीजे ॥
तवहि विप्र नँदराय बुलाये । आदर सहित गोप लै आये ॥

हरिको कह्यो मानि तिन लीन्हों। प्रथम अरम्भ यज्ञको कीन्हों॥
परम रुचिर वेदिका बनाई। सामवेद धुनि द्विजवर गाई॥

देखनको धाये सबै, व्रजके नर अरु वाम।
भयो देवता गिरि बड़ो, ताहि पुजावैं श्याम॥
बड़े महर उपनन्द, नन्द आदि ठाढे सबै।
कहत जो कछु नँदनन्द, करत सकल सोई तहां॥

पञ्चामृत बहु कलश भरायो। डारि शिखरते गिरि अन्हवायो॥
बहुरो लै गङ्गाजल ढारयो। चन्दन वन्दन तिलक संवांरयो॥
भूषण वसन बिचित्र चढाये। सुमन सुगन्ध माल पहिराये॥
धूप दीप करि आरति साजीं। घण्टा शङ्ख झालरैं बाजीं॥
करत वेदधुनि बिप्र सुहाई। चकृत नभ लखि सुरसमुदाई॥
सुरपति पूजा कृष्ण मिटाई। थाप्यो गिरि ब्रज तिलक चढाई॥
देखि इन्द्र मन गर्व बढ़ायो। ब्रजवासिनके मन कह आयो॥
पूजत गिरिहि मोहि बिसराई। गिरि समेत ब्रज देउँ बहाई॥
पावहि मन अपमान सजाई। देखौं तब को करत सहाई॥
अब देखौं मैं इनको करनी। उपजी है इनको बुधि मरनी॥
गिरिको पूजत प्रेम बढाई। सपनेको सुख लेत मनाई॥
कितक बार पुनि इनको मारत। ऐसे सुरपति मनहि विचारत॥

कह्यो कृष्ण तब नन्दसों, भोजन लेहु मँगाय।
गिरि आगे सब राखिकै, अरु यह विनय सुनाय॥

यह सुनिकै नँदराय, लावहु ग्वालनसों कह्यो।
लीन्हीं तहां मँगाय, सामग्री सब भोगकी॥
नाना भांति जात पकवाना। विविध मिठाई अमित समाना॥
षटरस व्यञ्जन बहु तरकारी। दही दूध सिखरन रुचिकारी॥
मधु मेवा फल फूल अनेका। सुन्दर स्वाद एकते एका॥
खीर आदि बहु भांति रसोई। कहँ लगि बरणि सकै सब कोई॥
मूंग भात अरु बरा पकोरी। बहुतक दधि बोरी अरु कोरी॥
कियो अन्नको कूट सुहावन। जैसो गिरिगोवर्द्धन पावन॥
परसि परसि गिरि आगे राखत। जैसो विधिसों मोहन भाषत॥
गिरि पूजत जिहि भांति कन्हाई। तैसे सब ब्रजलोग लुगाई॥
गिरिगोवर्द्धनके चहुँ पासा। कीन्हों बहु विधि सहित हुलासा॥
ठौरहि ठौर वेदिका राजै। अन्नकूट चहुँ ओर विराजै॥
तिनमधि गोवर्द्धनगिरि पावन। परम अनूप स्वरूप सुहावन॥
चन्दन केशरि रोरी हाथा। शोभित अति चहुँदिशि गिरिमाथा
गिरिगोवर्द्धन रायकी, छबि नहिं परत लखाय।
व्रजवासी जनके हिये, ध्यान परम सुखदाय॥
महिमा अमित अपार, श्रीगोवर्द्धन अचलकी।
जेहि पूजत करतार, शारद विधि नहिं कहि सकैं॥
प्रातहिते परसत भोजन सब। गयो ढरकि युगयाम तरणि तब॥
कह्यो श्यामसों तब नँदराई। जेवहि गिरिसों कहौ कन्हाई॥
तब हरि कह्यो सबन समुझाई। भोग समर्पहु घराट बजाई॥

मनमें कछू खटक जिन राखो। दीन वचन मुखते कहि भाखो॥
नयन मूंदिकै ध्यान लगावो। प्रेम सहित कर जोरि मनावो॥
हरि गोपन पूजा सिखरावैं। अपनी पूजा आप करावैं॥
जिनपर कृपा करत नँदनंदन। तिनसों आप करावत बन्दन॥
सबनमानिहरि कह्यो जो लीन्हों। बहुविध गिरिआराधनकीन्हों
तब प्रगटे गोवर्द्धननाथा। यज्ञपुरुष प्रभु श्रुतिके माथा॥
सहसभुजा तनु श्याम तमाला। मोरमुकुट वैजन्तीमाला॥
नख शिख भूषण परम सुहाये। अङ्ग अङ्ग छवि झलकन छाये॥
भये देखि ब्रजलोग सनाथा। दियो दरश गोवर्द्धननाथा॥

जय जय जय कहि देव मुनि, वर्षत सुमन अकास।
ब्रजवासी जय जय करत, भये अनंद हुलास॥
सहसौ भुजा पसारि, लागे भोजन करन गिरि।
देखत ब्रजनरनारि, अति अद्भुत हरिके चरित॥

कहत मुदित सब लोग लुगाई। कान्हहिको शोभा गिरिराई॥
जैसे कान्ह श्यामतनु सोहै। तैसोई गिरिवर मन मोहै॥
तसेइ कुण्डल तैसेइ माला। तैसेइ चञ्चल नयन विशाला॥
तैसोइ मुकुट पीतपट तैसो। नख शिख रूप कान्हको जैसो॥
द्वै भुज हरिके परम सुहाई। गिरिको भुजा सहस अधिकाई॥
देखि दर्श गिरिवरके रूरे। नँद यशोदा आनँद पूरे॥
कहत कि बड़े देव हम पाये। देखहु परकट दरश दिखाये॥
ऐसो देव सुन्यो नहिं देख्यो। जीवन जन्म सफल करि लेख्यो॥

ललिता राधहि कहत बुझाई। मैं यह बात समुझि है पाई॥
यह लीला सब श्याम बनावैं। आपुहि जेंवत आप जिमावैं॥
मैं जानी हरिकी चतुराई। इन्द्रहि मेटि आप बलि खाई॥
हैं इनके गुण अगम अगाधा। मेरी बात मान तू राधा॥

इतहि नंदको कर गहे, गोपनसों बतरात।
उत आपहि धरि सहस भुज, रुचिसों भोजन खात॥
श्रीराधा सुख पाय, मुदित विलोकति श्यामछबि।
भक्तनके सुखदाय, नित नव करत विनोद ब्रज॥

इत गोपन सँग हर्षित राहीं। उत सबहिनको भोजन खाहीं॥
ग्वालिनि एक विलोकनहारी। रहि वृषभानु सदन रखवारी॥
तासु नाम वदरीला गायो। तिन घरहीते भोग लगायो॥
प्रेम सहित वह विनय सुनाई। सबके अन्तरयामि कन्हाई॥
ऐसे प्रीति क्षुधित बनवारी। लई तासु वलि भुजा पसारी॥
भोजन करत परम रुचि मानी। गुणसागर लीला यह ठानी॥
कहत नँदसों कुँवर कन्हाई। मैं जो बात कही सो आई॥
अब तुम गिरिगोवर्द्धन जाने। मेरे वचन सत्य करि माने॥
तुम देखत भोजन सब खायो। परगट तुमको दर्श देखायो॥
तुम्हरी भक्ति भाव पहिचानी। गिरि तुम्हरी पूजा सब मानी॥
तुम अब मांग्यो चाहौ जोई। मांगि लेहु इनपै सब सोई॥
नँद कहत धनि धन्य कन्हाई। यह पूजा तुम हमहिं बताई॥

प्रीति रीतिके भावसों, भोजन सबके खाय ।
ह्वै प्रसन्न अति नँदसों, तब बोले गिरिराय ॥
लेहु नँद वरदान, अब जो तुम हमसों चहौ ।
मैं लीन्हों सुख मान, बहुत करी तुम भक्ति मम ॥

भली करी तुम मेरी पूजा । सेवक तुमते और न दूजा ॥
तेरे सुत बल मोहन भाई । इनको कुशल अनन्द सदाई ॥
मैंहीं इनको स्वप्न दिखायो । मैंहीं सुरपति यज्ञ मिटायो ॥
अब जो सुरपति तुमहिं रिसाई । जल बर्षै ब्रज ऊपर आई ॥
तौ तुम अपने जिय मति डरियो । कान्ह कहै सोई तुम करियो
अब तुम मम प्रसाद ले खाहू । अपने अपने घर सब जाहू ॥
ब्रजमें बसो निशंक सदाहीं । और कछू मांगो हम पाहीं ॥
यह सुनिचकित सकलब्रज नारी । भोजनकियोप्रथम गिरिधारी
अब बोलत सुख वचन प्रमाना । ऐसे परतक्ष देव न आना ॥
नंद कह्यो कह मांगौं स्वामी । देखि दरश भयो पूरण कामी ॥
सकल सिद्धि सुख तुम्हरो दीन्हों । कृपासिन्धु मैं तुम्हरो कीन्हों
मोहविवश प्रभु तुमहिं बिसारे । भूलि फिरयों देवनके द्वारे ॥

फिरयों भूल्यो देवद्वारन नाथ तुमहिं बिसारके ।
पूजा तुम्हारी कहा जानैं हम अहीर गँवारके ॥
आपही करि कृपा दीन्ह्यों स्वप्न ग्राममहिं आयके ।
दई बालकको बड़ाई नाथ यह अपनायकै ॥

अब हमें डर कौनको प्रभु शरण तुम्हरी पायके।
इन्द्र कह करिहै हमारो नाथ ब्रजपर आयकै॥
तुमहिं कर्त्ता हौ सबनके तुमहिं सबके ईश हौ।
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड तुम्हरे रोमप्रति जगदीश हौ॥
श्याम हलधर दास तेरे कुशल ये दोऊ रहैं।
करि कृपा यह देहु प्रभु हम और कछु नाहीं चहैं॥
सुतन लै दोउ डारि गिरिपद आप नँद चरणन परे।
विहँसि गिरि लखि प्रीति पङ्कजपाणि दुहुँ माथे धरे॥

नन्द गोप उपनन्द सब, श्रीवृषभानु समेत।
बार बार गिरिराजके, चरण परत अति हेत॥
करि सबको सनमान, दै प्रसाद निज पाणिसो।
सबन कह्यो घरजान, ह्वै प्रसन्न गिरिराज तब॥

चलहु घरन तब कह्यो कन्हाई। भये प्रसन्न देव गिरिराई॥
भली भांति पूजा तुम कीन्हीं। गिरिवरराज मान सब लीन्हीं॥
दोउ कर जोरि भये सब ठाढे। भक्तिभाव सबके मन बाढे॥
हरि करि परिकरमा सब गिरिको। परसत चरणचलत ब्रजघरको
देखि चकित गण गंध्रव सुर मुनि। कहत धन्यब्रजवासी गुणगुनि
धन्य नन्दको सुकृत पुरातन। धन्य धन्य पर्व्वत गोवर्द्धन॥
करत प्रशंसा सुर मुनि पुनि पुनि। वर्षि सुमन करिकरि जैजै धुनि
निज निज लोकन देव सिधाये। ब्रजबासी सब ब्रजको धाये॥
मुदित सकल ब्रजलोगलुगाई। गोवर्द्धनकी करत बड़ाई॥

कहत धन्य यशुमतिको जायो। बड़ो देवता कान्ह पुजायो॥
अब इनते ब्रजमें सुख पैहैं। गोप गाय सब सुखसों रैहैं॥
वर्ष वर्ष प्रति इन्द्र पुजायो। कबहूं प्रगट दर्शन हि पायो॥
प्रगट देत हैं दर्श गिरि, सबके आगे खात।
परम हर्ष नर नारि सबे, सबके मुख यह बात॥
खेलत नित नव ख्याल, भक्तपाल नँदलाल ब्रज।
दुष्टनके उर शाल, सुर नर मुनि मोहत निरखि॥
इन्द्र देखि गोवर्द्धन पूजा। कियो क्रोध भो सम को दूजा॥
ब्रजवासिन मोको बिसरायो। मेरो बलि लै गिरिहि चढायो॥
नेक नहीं शङ्का उर आनी। कछु कानि मेरी नहिं मानी॥
तेंतिस कोटि सुरनको नायक। मेघवर्त्त सब मेरे पायक॥
कियो अहीरन मम अपमाना। काधौं इन अपने मन जाना॥
जानि बूझि इन मोहिं भुलायो। गिरिहिथापिशिरतिलकचढायो
काहू उन्हें दियो बहँकाई। मरणकाल ऐसी मति आई॥
तुरत उन्हें अब देहुँ सजाई। देखौं धौं को करत सहाई॥
पर्वत पहिले खोदि बहाऊं। ब्रजजन मारि पताल पठाऊं॥
फूलि फूलि भोजन जिन कीन्हों। नेक न राखौं ताको चीन्हों॥
सकल गोप यह नयनन देखैं। बड़े देवताको फल लेखैं॥
ता पाछे ब्रज देउं बहाई। भुवपर खोज रहे नहिं राई॥
ऐसे सुरपति क्रोध करि, मनमें गर्ब बढाय।
प्रलयकालके मेघ सब, लीन्हें तुरत बुलाय॥

तिनहिं कह्यो सुरराय, व्रजपर वर्षो जाय तुम।
पर्व्वत प्रथम मिटाय, पुनि बोरहु व्रजलोक सब॥

मोसों अहिरन करी ढिठाई। मेरी बलि पर्वतहि खवाई॥
ता कारण मैं तुमहिं बुलाये। सैन समेत जाहु सब धाये॥
गिरि समेत सब देहु बहाई। भूतल खोज रहै नहिं राई॥
सुरपति वचन सुनत घन तमके। कापर क्रोध करत प्रभु मनके॥
केतक गिरिव्रज हमरे आगे। तुम प्रभु क्रोध करत केहि लागे॥
क्षणहीमें व्रज खोदि बहावैं। डुंगरको घर नाम मिटावैं॥
होत प्रलय प्रभु हमरे पानी। रहत अक्षयवट तनक निशानी॥
आप क्षमा कीजै सुरराई। हम करिहैं उनकी पहुनाई॥
यह सुनि सुनासीर सुख पायो। हर्षि पान दै तिनहिं चढायो॥
चले मेघ सब शीश नवाई। आये व्रजके ऊपर धाई॥
क्षणहीं में रवि गगन छिपाने। देखत ही देखत अधिकाने॥
कीन्हों शब्द गरज घन भारी। अतिही घटा भयावन कारी॥

अतिही भयानक घटाकारी कज्जलहु पटतर नहीं॥
घेरि लीन्हों व्रज चहूँ दिशि पवनप्रलय झकोरहीं॥
गर्जत गगन घन घोर तड़पत तड़ित वारहिं वारहीं॥
होत शब्द अघात व्रजनरनारि चकित निहारहीं॥
गये वन जे गाय ते ते धाय फिरि व्रज आवहीं।
अन्धधुन्ध अपार खोजत धाम पन्थ न पावहीं॥

सैंतत जहां तहँ वस्तु सब नर नारि मन शोचत महा।
बैर सुरपतिसों कियो अब होन धौं चाहत कहा॥
उमड़ि घुमड़ि घहराय घन, परन लगे जल जोर।
टेरत सुतको मात पितु, ब्रज गलबल चहुं ओर॥
ब्रजजन सकल विहाल, बिललाने जित तित फिरत।
श्याम करत यह ख्याल, देखि देखि मनमें हँसत॥

अति व्याकुल जहँ तहँ नरनारी। कहत देत पर्वत को गारी॥
आये पूजि गोवर्द्धन जाई। सुरपति निज कुलदेव मिटाई॥
दीन्हों गिरिवर यह फल भारी। लेहु सबै अब गोद पसारी॥
चढ्यो प्रचारि कोपि सुरराई। देत पलकमें ब्रजहि बहाई॥
जो पै बड़े देव गिरिराजू। तौ किन आय बचावत आजू॥
नन्दसुवन यह पूजा ठानी। ताते इन्द्र चढ्यो रिस मानी॥
कहति यशोमति सों ब्रजबाला। कहा काम यह कियो गोपाला॥
सुरपति हैं कुलदेव हमारे। ब्रजते मेटि दिये ते न्यारे॥
चढ्यो आय ब्रज ऊपर सोई। अब सहाय काहे न गिरि होई॥
घन गर्जत तर्जत अति भारी। देखि देखि डरपत नरनारी॥
सकल विकल भयमन पछिताहीं। लरिकन दुरवत गोदनमाहीं
भये शोच वश सब ब्रजलोगा। कहत बन्योअब मरण सँयोगा॥

देखि देखि ब्रजकी दशा, नन्द महरि पछितात।
किधो निरादर इन्द्रको, मनमें बहुत डरात॥

श्याम राम दोउ भाय, लिये निकट शोचत महरि।
जुरे गोप तहँ आय, मनहीं मन मुसुकात हरि॥
कहत कृष्णसों सब ब्रजवासी। सुनहु श्यामसुन्दर सुखरासी॥
तुमतो सुरपतियज्ञ मिटायो। ब्रजवासिन पै गिरिहिं पुजायो॥
तुम्हरे कहे अहो ब्रजमण्डन। सुरपतिमान कियो हम खण्डन॥
ताहीते सुरराज रिसाई। दिये प्रलयके मेघ पठाई॥
वर्षत ते मघवाके पायक। विषम बूंद लागत जनु शायक॥
भीजत गाय गोप गोसुत सब। घरिक माहिं बूड़त है ब्रज अब॥
राखि लेहु अब ब्रजके नायक। तुमहीं यह दुख मेटन लायक॥
दावानलते राखे जैसे। अब जलते राखो प्रभु तैसे॥
वकीविनाशन शकट सँहारन। तृणावर्त वत्सासुर मारन॥
अघमर्दन बकवदनविदारन। तुमहीं ब्रजजनके दुखटारन॥
दीजै अभय वेगि नँदलाला। बर्षत मेघ महा-विकराला॥
राखि लेहु बूड़त ब्रज खेरो। अब चितवत हरि सब मुख तेरो॥
जब जब गाढ़ परी हमैं, तब तुम कियो उबार।
इहि अवसर अब राखिये, मोहन नन्दकुमार॥
ब्रजजनके सुखदान, देखि विकल ब्रजलोग सब।
हँसि बोले तब कान्ह, धरहु धीर उर डरहु मति॥
चलहु सकल मिलि गिरिके पाहीं। उनकोध्यान धरहुमनमाहीं॥
करि लेहैं ब्रजराज सहाई। रहि हैं सुरपति मन पछिताई॥
यह कहि हरि गोवर्द्धन आयो। अभय बांह दै सबन बुलायो॥

गाय वत्स ब्रजलोगलुगाई। गये सकल हरिके सँग धाई॥
सबहीके देखत गहि धरते। उचकि लियो गिरिवर हरि करते।
छिगुली छोर बाम कर राख्यो। तब हरि ब्रजबासिनते भाख्यो॥
करी सहाय देव गिरिराया। आवहु तुम सब इनकी छाया॥
गाय गोप गोसुत नरनारी। भये सकल छणमाहि सुखारी॥
चकित देखि सब लोग लुगाई। कहत धन्य तुम कुवँर कन्हाई॥
प्रेम उमँग उर आनँद भरिके। परसत चरण धाय सब हरिके॥
कान्ह कहत देखहु गिरिराई। कीन्ही केहि विधि तुरत सहाई॥
भक्तन हित हरि गिरिहि उठायो। तब ते गिरिधर नाम कहायो॥

परेउ तबते नाम गिरिधर, वाम कर गिरिवर धरयो॥
देखि व्याकुल सकल ब्रजको, शोच इकछणमें हरयो॥
करत जय जय गोप गोपी, सकल मन आनँद भरे।
श्याम सबके मध्य ठाढे, करज नख गिरिवर धरे॥
परि अखण्डित धारमूसल, सलिलकी वर्षा करे।
अन्ध धुन्ध अकाश चहुँ दिशि, सबन झकझोरत खरे॥
वज्रनीर गँभीर पुनि पुनि, गरज पर्वतपर गिरे।
करत अति उतपात ब्रजपर, मेघपरलयको करे॥
बार बार चपला चमकि, झकझोरत चहु ओर।
अरर अरर आकाशते, जल डारत घनघोर॥
हरि जनके सुखदाय, गिरि कीन्हों विस्तार अति।
सब ब्रज लियो बचाय, बूंद न आवत भूमिपर॥

कहत गोप सब मनहिं डराई। गिरिवर नीके धरहु कन्हाई॥
महाप्रलय पर्वत यह भारो। अति कोमल भुज तनक तुम्हारो॥
नखते गिरिवर धरि को धारै। ऐसे बल बिन कौन सम्भारै॥
देखि नन्द व्याकुल मनमाहीं। महा भार गिरि कोमल बाहीं॥
दावत भुजा यशोमति मैया। वार वार मुख लेति बलैया॥
देखि भार मन अति दुख पावै। पुनि पुनि गोवर्द्धनहिं मनावै॥
नाथ आपनो भार सँभारो। करियो कान्हरको रखवारो॥
पय पकवान मिठाई मेवा। बहुरि पूजिहौं तुमको देवा॥
मात पितहि हरि देखि दुखारो। तब इक बुद्धि करी गिरिधारो॥
कह्यो नन्द सों निकट बुलाई। तुमहू सब मिलि करहु सहाई॥
लै लै लकुट राखि गिरि लेहू। मति राखहु उरमें सन्देहू॥
गोवर्द्धनगिरि भयो सहाई। आप कह्यो मोहिं लेहु उठाई॥

यह सुनि जहँ तहँ गोप सब, रहे लकुटि गिरि लाय।
कहत श्याम तब नन्दसों, भले लियो उचकाय॥
ठाढे ढिग बलराम, देखि देखि लीला हँसत।
कौतुकनिधि सुखधाम, करत चरित सन्तनसुखद॥

सात दिवस बीते यहि भांती। वर्षत जल जलधर दिन राती॥
कोपि कोपि डारत जलधारा। मिटी न व्रजकी नेकु लगारा॥
जरत जलद जल बीचहि अंबर। बसेइ गिरि बैसइ व्रजसुन्दर॥
धर जल पवन अनल नभजाको। सुरपति कहा करिसकै ताको॥
भये जलद जलते सब रीते। रह्यो एक गुण द्वै गुण बीते॥

कहत बात आपस में बादर । पठयो इन्द्र हमैं दै आदर ॥
कह्यो देहु ब्रज जाय बहाई । कहि हैं कहा जाय अब भाई ॥
महाप्रलय जल वर्षे आनी । ब्रजमें बूंद न पहुँच्यो पानी ॥
बादर मनहि भये सब कादर । अब करिहैं सुरराज निरादर ॥
अति भय तनुकी दशा भुलाने । गये इन्द्रपै सब खिसियाने ॥
कहत मेघ सुरपतिके पाहीं । सुनहु देव हम कहत डराहीं ॥
कै मारो कै शरण उबारो । ब्रजपै जोर न चलत हमारो ॥

सात दिवस परलय सलिल, हम वर्षे ब्रज जाय ।
ब्रजवासी भाये नहीं, निदरयो हमैं बनाय ॥
निघट गयो सब वारि, एक बूंद पहुंचो न घर ।
यह अचरज अति भारि, कहत लगत लज्जा हमैं ॥

यह सुनि चकित भयो सुरराई । पुनि पुनि बूझत मेघ बुलाई ॥
कहा भयो परलयको पानी । यह कछु ब्रजको बात न जानी ॥
सुरपति मन यह करत विचारा । पर्वतमें कोउ है अवतारा ॥
तउ सुरेश सब देव बुलाये । आज्ञा सुनत तुरत सब आये ॥
देवन आय सबन शिर नायो । कौन काज सुरराज बुलायो ॥
तबहीं देवनसों सुरराई । ब्रजवासिनकी बात सुनाई ॥
बीते वर्ष देत हैं पूजा । सो अब देव कियो उन दूजा ॥
मोहिं मेटि पर्वतको थाप्यो । ताते मैं अति रिस करि कांप्यो ॥
दिये प्रलयके मेघ पठाई । आवहु ब्रज गिरि सहित बहाई ॥
ते वर्षे परलय जल जाई । ब्रजमें नीर न पहुंचो राई ॥

आये मेघ हार सब रोई। कारण कहा कहो सो मोई॥
देवन कह्यो सुनो सुरईशा। प्रगटयो व्रजहि ब्रह्म जगदीशा॥

तुम जानत प्रभु भूमि जब, दुखित पुकारी जाय।
कह्यो लेन अवतार तब, सो बिहरत व्रज आय॥
कहै इन्द्र पछिताय, मै भूल्यो जान्यो नहीं।
कीन्ही बहुत ढिठाय, भय करि मन व्याकुल भयो॥

मै सुरपति जिनहींको कीन्हो। तिन आगे चाहौं बलि लीन्हो॥
रवि आगे खद्योत उजेरो। तैसी बुद्धि भई है मेरो॥
कीन्ही बहुतै मैं अधिकाई। कहा करौं अब मन पछिताई॥
सुरन कही सुनिये सुरराई। व्रजहि चलौ नहिं आन उपाई॥
वे हैं प्रभु दयालु करुणाकर। क्षमा करैंगे श्री सुन्दरबर॥
सुनि विचार कीन्हो सुरराजा। यद्यपि वदन दिखावत लाजा॥
तद्यपि वै स्वामी मैं दासा। करिहैं कृपा अवशि मोहि आशा॥
अब नहिं बनत रहे मुख गोई। शरण गये जो होय सो होई॥
यह विचार मनमें ठहराई। चल्यो शरण सुर सङ्ग लिवाई॥
कामधेनु करि अग्र सुहाई। शोचत चल्यो व्रजहि समुहाई॥
अति सकोच सुरपति मनमाहीं। आगे धरत परत पग नाहीं॥
जगतपिता सों करी ढिठाई। कहि हौं कहा वदन दिखराई॥

शरण शरण कहि चरण परि, परिहौं जाय उताल।
शरणागत पालन विरद, तजिहैं नाहि गोपाल॥

दीन वचन सुनि कान, करिहैं कृपा कृपालु प्रभु ।
यहै करत अनुमान, सुरनायक आयो ब्रजहि ॥
देखि सुरनकी भीर अहीरा । अति डरपे उर भये अधीरा ॥
दौरि कृष्णसों जाय सुनायो । सुरपति आप सैन सजि आयो ॥
कहत श्यामहँसिमतिहि डरावो । गिरिवरतजिकतहूं मतिजावो ॥
ब्रज बाहर सेना सब राखौ । वाहनते उतर्यो सहसाखौ ॥
सकुचत चल्यो कृष्णके पासा । कछुक दुखित मन कछुक उदासा
धाय पर्यो चरणनपर जाई । कृपासिन्धु राखो शरणाई ॥
बिसर्यो तुमहिं तुम्हारी माया । अब तुम बिननहिं औरसहाया ॥
शरण शरण पुनि पुनि कहि बानी । धोये चरण नयनके पानी ॥
राखि राखि त्रिभुवनके राई । मोते चूक पड़ी अधिकाई ॥
मैं अपराध कियो अनजानी । क्षमा करो प्रभु जनसुखदानी ॥
जो बालक पितसों बिरुझाई । लेत पिता तेहि गोद उठाई ॥
ऐसोहि मोहिं करो जनत्राता । जैसे सुतहित पितु अरु माता ॥
व्याकुल देखि सुरेश अति, दीनबन्धु यदुराय ।
अभय कियो कर माथ धरि, भुज गहि लियो उठाय ॥
लीन्हों हृदय लगाय, देखि दीनता इन्द्रको ।
शिर नहिं सकत उठाय, बार बार परशत चरण ॥
कहत इन्द्रसों कुवँर कन्हाई । तुम कत सकुचत हो सुरराई ॥
हम तुमसों कीन्हो अधिकाई । तुम्हरी पूजा हम सब खाई ॥
भली करी ब्रज वर्षे पानी । हम कछु तुमसों रिस नहिं मानी ॥

यह दीन्ही मेरी ठकुराई। तुम नहिं जानत करी ढिठाई॥
कहा भयो जो मेघ पठाये। मैं सब ब्रजके लोग बचाये॥
तुम कछु उरमें शोच न आनो। मैं तुमसों कछु बुरो न मानो॥
भली करी ब्रज देखन आये। तुम मेरे मनमें अति भाये॥
अपने मनको शोच मिटाई। देवन सहित करौ सुख जाई॥
सुनि हरि वचन देवगण हर्षे। जय जय करि कुसुमाजलि वर्षे॥
पुलकि अङ्ग मुख गदगद बानी। कहतधन्य प्रभु जनसुखदानी॥
अशरण शरण तुम्हारो बानो। यह लीला सब तुमहीं जानो॥
धन्य धन्य सब ब्रजके वासी। जिनके प्रेम-विवश अविनासी॥

प्रभुहिं देखि अनुकूल मन, धीर कियो सुरराय।
मिटी त्रास उरते तऊ, बार बार पछिताय॥
कहत बारहीं बार, तुम गति अगम अगाध प्रभु।
मैं भूल्यो संसार, जान्यों ब्रज अवतार नहिं॥

प्रभु आगे चाहौं मैं पूजा। मोते मन्द और को दूजा॥
अहो नाथ तुम प्रभु मैं दासा। रवि आगे खद्योत प्रकासा॥
मेरो गर्व कितक यह बाता। कोटिन इन्द्र तुम्हारे गाता॥
मैं अपराध कियो यह भारी। प्रभु राख्यो निज ओर निहारी॥
दीनबन्धु तुम जन हितकारी। विरद बखानत वेद पुकारी॥
कृपा करी प्रभु-दरशन पाये। भयो सुखी तनु ताप नशाये॥
ये दिन वृथा गये बिन काजा। तुमको नहिं जान्यो ब्रजराजा॥

धन्य धन्य प्रभु गिरिवरधारी। भंजन विपति भक्त हितकारी॥
दैत्यदलन प्रभुभार उतारन। सन्तधेनुद्विजहित तनु धारन॥
अब प्रभु मोहि कृपा यह करिये। गिरिवरधर गिरिधरपर धरिये॥
सुनि विनती हरि भये सुखारी। तब गिरि करते धरयो उतारी॥
सुरन सहित सुरराज अनन्दे। कामधेनु लै प्रभुपद वन्दे॥

करत अस्तुति जोरि सुरकर, धेनु आगे राखिकै।
वन्दि प्रभुपद पुलकि पुनि पुनि, नाम गोविंद भाखिकै॥
जै जै कृपालु मुकुन्द माधव, कृष्ण अगणित गति हरे।
गोपपति राजीवलोचन, करज नख गिरिवर धरे॥
वासुदेव व्रजेन्द्र यदुपति, कंसअरि सुररञ्जने।
हरण भवभय भार महि, अहिराज विषमदगञ्जनं॥
बकी तिरणावर्त वत्सासुर, बका अघनाशनं।
अतिहि दुष्ट अरिष्ट धेनुक, असुर वंश विनाशनं॥
चोरि माखन खात व्रज घर, भंजि तरु जन दुख हरे।
योगिजन जप तप न पावत, धन्य व्रज जन वश करे॥
धन्य गोकुल धन्य यमुना, धन्य व्रज वृन्दावने।
धन्य गोपी गोप यशुदा, नन्द गिरि गोवर्द्धने॥
फिरत चारत धेनु निज पद, पन्नफणि अहिप्रति धरे।
शकटभंजन भक्तरंजन, रास निर्त्तत गुण भरे॥
जनक सुरसरि शिवसनकधन, श्रीनहीं छांडत घरी।
परसते पद भयो पावन, जयति, जै जै जै हरी॥

करि अस्तुति मन हर्षि अति, परो शक्र प्रभुपांय।
ह्वै प्रसन्न सुरधेनु युत, विदा कियो यदुराय॥
पुनि पुनि प्रभुपद वन्द, सुरलोकहि सुरपति गयो।
व्रजजन परमानन्द, चकित विलोकत श्यामतन॥

कहत गोप सब आपसमाहीं। इन सम और जगत कोउ नाहीं॥
सात वर्षको बालक जोई। ताहि इतो बल कैसे होई॥
हैं ये पारब्रह्म भगवाना। करत चरित्र देह धरि नाना॥
दैत्य किते छल करि करि आये। ते तब इन कौतुकहि नशाये॥
इन्द्र मेटि गिरिवरहि पुजायो। तामें निज स्वरूप प्रगटायो॥
इन्द्रप्रलय घन दियो पठाई। सात दिवस व्रज बरषे आई॥
अति विस्तार बड़ो अति भारो। लीन्हों गिरिवर करपर धारो॥
एक बूँद व्रजमें नहिं आई। लीन्हों सब व्रज लोक बचाई॥
हारि मानि सुरपति भय पाई। आनि परयो चरणन शिर नाई॥
कामधेनु देवनको ल्यायो। ताहि अभय करि फेरि पठायो॥
अचरज बात जात नहिं बरणी। मानुसों यह होय न करणी॥
परे गोप हरि चरणन आई। कहत धन्य तुम कुँवर कन्हाई॥

हम तुमको जानैं नहीं, हौ तुम त्रिभुवनराय।
व्रजवासिन सुख देनको, व्रजमें प्रगटे आय॥
तुम करि लेत सहाय, परत जहां सङ्कट विकट।
लीन्हों हमैं बचाय, विषते जलते अनलते।

करत विचार युवति सब ठाढीं। प्रेम उमँग मन आनँद बाढी॥
कैसे गिरिवर लियो उठाई। अति कोमलतनु श्याम कन्हाई॥
लेत धरत जान्यो नहिं काहू। धन्य धन्य हरिको यह बाहू॥
सातदिवस परलय जल ढार्‍यो। इन्द्र परत चरणन जब हार्‍यो॥
करत सखा धनि धन्य गुपाला। कैसे गिरि कर धर्‍यो विशाला॥
यह करतूति करत तुम कैसे। हम सँग सदा रहत हौ जैसे॥
गाय चरावत हो मिलि हमसों। केतिक बल है बूझत तुमसों॥
धाय चरणगहिं यशुमति मैया। मुख चुम्बति अरु लेति बलैया॥
अति बस नेह नयन भर पानी। तनु पुलकित मुख गदगद बानी
कैसे कर जु धर्‍यो गिरि ताता। अति कोमल भुज तुम दिनसाता
बिहँसि मातसों कहत कन्हैया। तेरी सों सुनु यशुमति मैया॥
मैं न उठावत री श्रम पायो। नेक छुयो उठि आपुहि आयो॥

अब गिरिको पूजो बहुरि, सबसों कह्यो कन्हाय।
बूड़तते राख्यो उनहिं, कीन्ही बहुत सहाय॥
यह सुनि हर्ष बढाय, बहुरो गिरि पज्यो सबन।
अति हर्षित नँदराय, दिये दान विप्रन विपुल॥

अच्छत रोरी पान मिठाई। पुष्पहार दधि दूध सुहाई॥
यशमति रोहिणि अरु ब्रजनारी। सजि सजि लाई कञ्चन थारी
हरिको तिलक कियो दोउ माता। पुलकि प्रेम परिपूरण गाता॥
बहुतक द्रव्य निछावर कीन्हीं। भुज गहि लाय कण्ठसों लीन्हीं॥
ब्रजतिय हरिको तिलक बनावैं। फूलमाल गलमें पहिरावैं॥

इहि मिष अङ्गपरसि सुखपावैं । निरखि वदनछवि विधिहिमनावैं
होहिं हमारे पति गिरिधारी । मनमोहन सुन्दर वनवारी ॥
यह कामना सकल उर धारी । हरि छवि निरखति गोपकुमारी ॥
कह्यो नन्दसों तब गिरिधारी । सुनहु तात अब बात हमारी ॥
गोवर्द्धनको करो प्रणामा । चलिये अब सब निज निज धामा ॥
यह सुनि सबन गिरिहिं शिर नाई । चले व्रजहिं मन हर्ष बढ़ाई
आये सदन सकल व्रजवासी । सहित श्यामसुन्दर सुखरासी ॥

घर घर व्रज आनन्द सब, गावत मङ्गलचार ।
आये सुरपति जीति हरि, गिरिधर नन्दकुमार ॥
व्रज मङ्गल व्रज मोद, व्रज आभूषण गिरिधरन ।
नित नव करत विनोद, व्रजवासी व्रजदास हित ॥

---

## नन्दएकादशी-वरुणलीला ।

इन्द्रहि जीति श्याम घर आये । व्रज घर घर आनन्द बधाये ॥
ता दिन दशमी भई सुहाई । कार्त्तिक शुक्लएकादशि आई ॥
भक्तिमुक्तिदायक अति पावन । पाप शाप सन्ताप नशावन ॥
नन्दएकादशि व्रत प्रतिपालें । वेद विदित सब धर्म सँभालैं ॥
प्रथमहिं दशमी संयम कीन्हो । बहुरि एकादशिका व्रत लीन्हो ॥
निराहार निर्जल दृढ़ नेमा । नारायण पदपङ्कज प्रेमा ॥
और काज कछु मनहिं न लायो । भजनकरत सबदिवस वितायो॥
निशि जागरण करणविधिठानी । प्रभु मन्दिर सौंप्यो निजमानी

पाटम्बर वर दिव्य बिछाये। विविध पुनीत सुगन्ध सिंचाये॥
बांधी बन्दनवार सुहाई। सुमन सुगन्ध माल लटकाई॥
चौक चारु बहुरङ्गन पूरयो। सिंहासनतहँ राख्यो रूरयो॥
शालग्राम तहां पधराये। भूषण वसन विचित्र बनाये॥

धूप दीप नैवेद्य करि, प्रभुपर पुष्प चढ़ाय।
करी आरती प्रेमसों, घण्टा शङ्ख बजाय॥
प्रभु पदनायो माथ, करि परदक्षिण दण्डवत।
तुम त्रिभुवनके नाथ, जोरि हाथ अस्तुति करी॥

आदर सहित करी नँदपूजा। प्रेम भक्ति उर भाव न दूजा॥
करत कीर्त्तन भजन सप्रीती। तीनि याम यामिनि जब बीती॥
तबहिं महरि नँदराय बुलाई। कह्यो यशोमतिसों समुझाई॥
एक दण्ड द्वादशी सकारे। पारन की विधि करो सबारे॥
यह कहि नन्द यशोमति पाहीं। लै झारी धोती कर माहीं॥
गये न्हान यमुनाके तीरा। सङ्ग नहीं कोउ तहां अहीरा॥
झारी भरि यमुनाजल लीन्हो। बाहर जाय देहकृत कीन्हो॥
ल माटी कर चरण पखारी। अति उत्तम सो करी मुखारी॥
अचमन लै बैठे नँद पानी। वरुण दूत जल बाजत जानी॥
नन्दहि लै गे पकरि पताला। वरुण पास पहुँचे ततकाला॥
जान्यो वरुण कृष्णाके ताता। भयो हर्ष मन सुणि यह बाता॥
अन्तर्य्यामी प्रभु घनश्यामा। नन्द लेन ऐहैं मम धामा॥

अथां वरुण अति हर्ष मन, पुनि पुनि पुलकित गात।
नन्दहि आये भृत्य मम, भलो भई यह बात ॥
सो प्रभु कृपानिधान, ऐहैं धनि धनि भाग्य मम।
जाहि धरत मुनि ध्यान, निगम नेति जिहि गावहीं ॥

हर्ष सहित नन्दहि जलराई। भीतर महलन गये लिवाई ॥
सादर विनय वचन बहु भाखे। धीरज दै नीके नन्द राखे ॥
रानी सवन नन्दको देख्यो। जन्म सफल अपनो करि लेख्यो ॥
कहत कि धनि धनि भाग्य हमारे। नन्द हमारे सदन पधारे ॥
जिनके सुत त्रैलोक्यगुसाईं। सुर नर मुनि सबहीके सांई ॥
चितवत पन्थ वरुण मन लाये। करुणामय अब आवत धाये ॥
यशुमति शोच करत मनमाहीं। भई वेर आये नँद नाहीं ॥
खबर लेन तब ग्वाल पठाये। यमुनातट नहिं नन्दहि पाये ॥
झारी धोती तटपर देखी। भये शोच सब ग्वाल विशेखी ॥
इत उत खोजि ग्वाल फिरि आये। कहत महरिसों नन्द न पाये
झारी धोती तटपर पाई। सुनत महरि मुख गयो कुराई ॥
निशा अकेले आज सिधाये। काहू जलचर धौं धरि खाये ॥

अति व्याकुल यशुमति भई, उठी रोय अकुलाय।
सुनि धाये व्रज लोग सब, नन्दहि खोजत जाय ॥
यमुना तट वन गांव, नन्द नन्द टेरत सवै।
ढूंढ़ि फिरे सब ठांव, भये विकल व्रज लोग सब ॥

सोवतते हरि हलधर आये। रोवत मात देखि दुख पाये॥
बूझत जननी सों दोउ भैया। कत रोवति है यशुमति मैया॥
बिलखि यशोमति वचन सुनाये। यमुनातट कहुं नन्द हिराये॥
यह सुनि हरि बोले सुनु माता। अबहीं आवत हैं नन्द ताता॥
मोसों कहि गये अबहीं आवन। मति रोवै मैं जात बुलावन॥
प्रभु सर्वज्ञ सकलके स्वामी। जलथलव्यापक अन्तरयामी॥
जाने नन्द वरुणके धामा। वरुण प्रीति पुनि लखि घनश्यामा॥
वरुणलोक हरि तुरत सिधाये। सुनत वरुण आतुर उठि धाये॥
देखत दरश परश सुख पायो। चरणसरोज आय शिर नायो॥
कहत आज धनि भाग्य हमारे। त्रिभुवनपति मम धाम पधारे॥
पाटम्बर पांवड़े बिछाये। महलन बंदनवार बँधाये॥
रतनजड़ित सिंहासन धारयो। तापर सादर प्रभु बैठारयो॥

बैठाय सादर प्रभुहिं धोवत, कमलपद निज कर गहे।
जे पद सरोज मनोजअरिउर, सर सदा प्रफुलित रहे॥
जे पद पदम पदमालया उर, रहत निज भूषण किये॥
पाय ते पदजलज जलपति, प्रेम परि पूरण हिये॥
विविध भांति प्रभु पूजिकै, वरुण कह्यो गहि पांय।
कृपासिंधु अति कृपा करि, दरश दियो मुहिं आय॥
मैं कीन्हो अपराध, सो प्रभु उर नहिं आनिये।
क्षमासमुद्र अगाध, क्षमा करहु निज जानि जन॥

जलरक्षक जे दूत कृपाला। ते लै आये नन्द पताला॥

यह कारज मैं उनको कीन्हों। तिन दूतन प्रभु नन्द न चीन्हों ॥
यदपि कियो उन पातक भारी। हैं वे सकल दण्ड अधिकारी ॥
तदपि दूत वे मो मन भाये। जिनते प्रभुके दर्शन पाये ॥
देखि नाथ शुभ दरश तुम्हारा। मैं मान्यों उनको उपकारा ॥
अब प्रभु हम सब शरण तुम्हारी। राखि लेहु श्रीगिरिवरधारी ॥
पायँन परीं आय सब रानी। बड़भागिनि आपुनको जानी ॥
रानिन सहित वरुण अनुरागे। अस्तुति करत जोरि कर आगे ॥
धन्य नन्द धनि धन्य यशोदा। धनि धनि तुमहिं खिलावतगोदा
धनि ब्रज गोकुलके नरनारी। पूरण ब्रह्म जहां अवतारी ॥
गुणातीत अविगति अविनाशी। ब्रज विहार विलसत सुखराशी
शेष सहसमुख वरणि न जाई। सहज रूपको करत बड़ाई ॥

करि अस्तुति रानिन सहित, पुनि पुनि धरि पदशीश।
लै प्रभुको नन्दराय ढिग, तबहिं गयो जलईश ॥
हरषि उठे नन्दराय, देखि श्यामको शशिबदन।
लखि प्रभुको प्रभुताय, रहे मुदित चकित चितय ॥

करत सनहिमन नन्द विचारा। यह कोउ आहि बड़ो अवतारा ॥
भयो नन्द मन हर्ष अपारा। ब्रह्म करत मो सदन विहारा ॥
तबहिं कृपा करि जन सुखदाई। वरुणहिं दै जलराज बड़ाई ॥
जाय नन्दको कर गहिलीन्हों। चलहु तात ब्रजकहिं हँसिदीन्हों
कह्यो प्रणाम वरुण सुख पाये। नन्द सहित हरि ब्रजगृह आये ॥
नन्द आय ब्रजको जब देख्यो। तब वह चरित स्वप्नसों लेख्यो ॥

देखि नन्दको ब्रज नरनारी । गयो दुःख सब भये सुखारी ॥
बूझत नन्दहि गोप सयाने । कितहिं गये तुम हम नहिं जाने ॥
हारे खोजि सकल ब्रजवासी । भये बहुत तुम बिना उदासी ॥
नन्दमहर तब सबसों भाख्यो । कालहि एकादशि ब्रत मैं राख्यो
आज द्वादशी थोड़ी जानी । रैनि अछत गयो यमुना पानी ॥
कटिलौं गयो यमुन जलमाहीं । लै गये वरुण दूत गहि बाहीं ॥

वरुण लोकते जायकै, लाये मोहिं गोपाल ।
ये प्रगटे ब्रज आय कोउ, उत्तम पुरुष विशाल ॥
महिमा कही न जात, कोटि भांति बरणी वरुण ।
सांच कहत मैं बात, इनको नर अति मानियो ॥

भयो अधीन बहुत जलराई । परयो चरणकमलनपर आई ॥
रानिन सहित धोय पद पूजे । जानि जगतपति भाव न दूजे ॥
ब्रजनरनारि सुनत यह गाथा । कहत भये सब सकल सनाथा ॥
यशुमति सुनत चकित यह बानी । कहत कहा यह अकथकहानी
प्रभुकी मायामें अरुझानी । कहति नन्दसों यशुदारानी ॥
मैं बरजत निशि न्हान सिधाये । कुशल परी पुण्यनते आये ॥
हरिको चूमि लियो उर लाई । लाये नन्दहि खोजि कन्हाई ॥
विप्रन बोलि दियो बहु दाना । घर घर बँटी मिठाई पाना ॥
गावत मङ्गल नारि सुहाई । बाजो नन्द अवास बधाई ॥
नन्द कहत यशुमति सुन बोरी । तू अब कितहि करत मन भोरी

जाको त्रिभुवनपति सो ताता। ताहि सदा मङ्गल दिन राता॥
कह्यो गर्ग मुनि वाणी जोई। प्रगटत जात बात सब सोई॥
इनते समरथ और नहिं, ये हैं सबके नाथ।
ब्रजवासी आनन्द सब, सुनि सुनि हरि गुण गाथ॥
धनि धनि ब्रजनरनार, कहत हमारे भाग्य सब।
हम सँग करत विहार, श्रीवैकुण्ठनिवास हरि॥

---

## वैकुण्ठदर्शन लीला।

कहत परस्पर सब ब्रजवासी। हरिहैं श्रीवैकुण्ठनिवासी॥
सो वैकुण्ठ अहे धौं कैसो। जन्म मरन भय जहां न ऐसो॥
जाको वेद पुराण बखाने। हरि जहँ बसत सदा सुख माने॥
जो हरि हमहिं दिखावैं सोई। तौ बड़भाग्य होइँ सब कोई॥
यह मनसा सबके मन आई। जानि लई भक्तन सुखदाई॥
तबहिं कृपा करि सब ब्रजलोका। पहुंचाये वैकुण्ठ विशोका॥
धर्मधाम जो वेदन गायो। दिव्य दृष्टि है सबन दिखायो॥
देखत भूलि रहे सब ग्वाला। पुर वैकुण्ठ अनूप विशाला॥
भूमि वज्रमणि द्युति छविछाई। परम प्रकाश वरणि नहिं जाई॥
वापी कूप तड़ाग अमीके। विविध रतन बांधे तट नीके॥
रत्नकी सोपान सुहाई। जहां देव मुनि रहत लुभाई॥
फूले कमल विपुल बहुरङ्गा। करत शब्द खग गुञ्जत भृंगा॥

कल्पवृच्छके बाग वन, सुगम सुगन्ध अपार।
खग मृग सब तेजोमयी, दिव्य स्वरूप उदार॥
मन्दिर बरणि न जाहिं, चिन्तामणिमय खचित सब।
तैसे ताहि लखाहिं, जैसी जाकी भावना॥

सकल चतुर्भुज तहँके वासी। शुद्ध सतोगुण सब सुखरासी॥
रामसहित तहँ प्रभु सुखशीरा। शोभित नव जलदान शरीरा॥
भूषण वसन दिव्य परकाशी। सुन्दर सकल सकल अविनाशी॥
वदन प्रकास हास सुखकारी। कोटि चन्द्र कीजै बलिहारी॥
मणिन जटित शिर मुकुट बिराजैं। भूषण वसन अनूपम राजैं॥
दिव्य पारषद्द चवँर डुलावैं। नारद तुम्बर गुण गण गावैं॥
चकित विलोकत सब व्रजबाला। जान्यो प्रभुप्रभाव तिहि काला
चारि भुजा तहँ प्रभुहि निहारी। शङ्ख चक्र गद अंबुजधारी॥
द्विभुज कान्हको रूप न देख्यो। मुरली लकुट पाणि नहि पेख्यो
नाहिं मुकुट शिर मोरपखौवा। कटि काछनी न गुञ्ज हरौवा॥
नहीं भेष नटवर गोपाला। भये विरहवश तब सब ग्वाला॥
व्रजवासी सो रूप उपासी। ता स्वरूप बिन भये उदासी॥

अकुलाने दृग सबनके, देखनको तिहि काल।
मोरपङ्खधर गुञ्जधर, मुरलीधर गोपाल॥
व्रज बासिनके ध्यान, नटवर वेष गोपालको।
अमित रूप भगवान, तदपि उपासन रूप यह॥

विरह विवश हरि ब्रजजन जाने । तबहीं तुरत सकल ब्रज आने ॥
कान्ह देखि सब भये सुखारी । रहे चकित शशिवदन निहारी ॥
कहत सबै मन अचरज पाये । कहाँ गये हम कैसे आये ॥
देख्यो स्वप्न सबै इक बारा । किधौं सांच यह करत विचारा ॥
यह चरित्र सब मोहन करहीं । पुर वकुण्ठ दिखायो हमहीं ॥
धन्य धन्य हम सब ब्रजवासी । ब्रह्म हमारे संग विलासी ॥
हरिके चरण परश सब धाई । करत गोप सब मुखन बड़ाई ॥
हँसि हँसि सबसों कहत कन्हाई । रहे कहां तुम सकल भुलाई ॥
आज कहां ऐसो तुम देख्यो । सो किन मोसों कहत विशेख्यो ॥
हम कह देखत नन्ददुलारे । तुमहीं सकल दिखावनहारे ॥
भूतल नाक पताल निहारो । सकल जगत तुम्हरो विस्तारो ॥
यह सुनि श्याम मन्द मुसकाई । दिये सकल पुनि मोह भुलाई ॥

करत चरित्र विचित्र प्रभु, ब्रजवासिनके माहिं ।
लखि लखि शिव ब्रह्मादि सुर, मुनि जन मनहिं सिहाहिं
अति आनँद ब्रजलोग, हरिके नित नव चरित लखि ।
सबको सब सुखयोग, ब्रजवासी प्रभु नन्दसुत ॥

सदा श्याम भक्तन सुखदाई । भक्तन हित अवतार सदाई ॥
सङ्कटमें जन जहां पुकारैं । तहां प्रगटि तिनको निस्तारैं ॥
सुख भीतर जिनसुमिरण कीन्हों । तिनको तहाँ दरश हरिदीन्हों
सुख दुखमें जो हरिको ध्यावैं । तिनको नेक न हरि बिसरावैं ॥
देव दनुज खग मृग नरनारी । भक्त विवश सबते गिरिधारी ॥

चितदै भजै भाव जो जैसे। ताको होत प्रकट हरि तैसे॥
ब्रह्मा कोट आदिके स्वामी। प्रभु हैं निरलोभी निःकामी॥
वेद पुराण साखि सब बोलैं। भाववश्य सबके सँग डोलैं॥
काम भाव ब्रज गोपी ध्यावैं। मन बच क्रम हरिसों मन लावैं॥
इक छण हरिको नाहिं बिसारैं। भौन काज चित हरिसों धारैं॥
गोरस लै निकसैं ब्रजमाहीं। जहां श्याम तेहिं मारग जाहीं॥
तिनके मनकी प्रीति विचारी। रीझे गोपीजनमनहारी॥

नवसत साजि शृँगार तन, गोरस लै ब्रजनारि।
बेंचन इहि मग आवहीं, मोसों प्रीति विचारि॥
अब इन संग विहार, करौं दान दधि लायके।
यह मन कियो विचार, हरि ब्रजमोहन लाड़िले॥

---

## दान लीला।

दधिको दान रचौं इक लीला। भक्तनको सुखदायक शीला॥
दधिदानी निज नाम धराऊं। ब्रजयुवतिन मन सुख उपजाऊं॥
श्याम सखन तब लियो बुलाई। सबसों कहि यह बात सुनाई॥
ब्रजयुवती नित गोरस ल्यावैं। या मारग ह्वै बेंचन जावैं॥
तिन्ह खिझाय दान दधि लीजै। गोरस खाय जान तब दीजै॥
यह सुनि सखा उठे हरषाई। भली बात तुम श्याम सिखाई॥
सबहिन मन अति हर्ष बढ़ायो। कहत श्याम दधिदान लगायो
तबहिं जाय घेरयो बन घाटा। आवत नित ग्वालिनि यहि बाटा,

कह्यो श्याम सबसों समुझाई। रहो तरुनकी ओट लुकाई॥
जाहीं ग्वालिनि दधि लै आवैं। घेरि लेहु कोउ जान न पावैं॥
यह सुनि सखा घेरिकै बाटा। बैठे ठाटि ठगनको ठाटा॥
उत्तते बनि बनि ग्वालि नवेली। बेंचन दधिहि चलीं अलबेली॥

हँसत परस्पर आपमें, चली जाहिं जिय मोर।
पाय घातमें सघन सब, घेरि लई चहुँ ओर॥
देखि अचानक भीर, चकित रहीं चहुँदिशि चितै।
सहमी कछुक शरीर, कितते आये ग्वाल सब॥

शङ्कित ह्वै ग्वालिनि भई ठाढ़ी। मनहुंचित्र कीसी लिखिकाढ़ी
हाथ पांव अँग भये अडोले। कछू वदन ते वचन न बोले॥
तहँ हँसि ग्वालिनि दियो जनाई। मतिडरपो जिय कान्हदुराई
इहां चोर ठग कोऊ नाहीं। अभय कान्हको राज सदाहीं॥
आवत जात न भय कछु कीजे। दधिको दान लगै सो दीज॥
नाम कान्हको जब सुनि पायो। तब युवतिनमन धीरज आयो॥
बोलीं बिहँसि तबहि व्रजबाला। कहां तुम्हारे प्रभु नंदलाला॥
चोरी करि नहिं पेट अघायो। अब बनमें दधिदान लगायो॥
तब अति बालक हते कन्हाई। सही जु कछु कीन्हीं लरिकाई॥
होउ जो कछु वा धोखेमाहीं। परिहै समुझि अबहि छणमाहीं॥
प्रगट भये तब कुवँर कन्हाई। देखि सबन बोले मुसकाई॥
रहि युवती तुम पोच सदाई। करि आई हौ बहुत ढिठाई॥

तबलौं हम लरिका हुते, सही बात अनजान।
सो धोखो अब मेटिके, छांडि देहु अभिमान॥
हम मांगत दधिदान, तुम उलटो पलटौ कहत।
करत नंदकी आन, दिये पाइहो जान सब॥

तब बोलीं ग्वालिनि मुसकाई। अब तुम डर हम तजो ढिठाई॥
नन्दहुते कछु तुम्हें कन्हाई। भयो जानिये तब अधिकाई॥
कालहि हि चोरि चोरि दधि खाते। घर घर देखतही भजि जाते
रातिहि भयो स्वप्न कछु आई। प्रातहि भई आज ठकुराई॥
भलो कही नहि ग्वालिनि बानी। तुम यह बात कछु नहि जानी
पिता चरित धन धाम जु होई। पुत्रकाज आवत है सोई॥
तुमसी प्रजा बसाई गांवहि। तौ हम ठाकुर क्यों न कहावहिं॥
कह्यो तबहि ग्वालिनि झहराई। बात सँभारे कहत कन्हाई॥
ऐसो को वहि गयो हमारे। जो परजा ह्वै बसहि तुम्हारे॥
कंस नृपतिके सब कहवावैं। कहा भयो जु बसत इक गावैं॥
जो तुम याते हो गरुवाने। तौ अब तजि हैं गांवँ बिहाने॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो वनमाली। कहा बात यह कहत गुवाली॥

गांवँ हमारो छांडिके, बसिहौ का पुर माहिं।
ऐसो को तिहुं लोकमें, जो मेरे वश नाहिं॥
का गनतीमें कंस, जाके हम कहवावहीं।
देहु दानको अंस, रारि करत बेकाजही॥

बड़ी बात छोटे मुखमाहीं । आप सँभारि कहत हौ नाहीं ॥
तीनि लोक अस कंस भुआला । भयो तिहारे वश्य काहि काला ॥
यह तुम बात कहौ तिनमाहीं । जो कोउ तुमको जानत नाहीं ॥
हम इन बातन भय नहिं मानैं । जैसे हौ तुम तैसे जानैं ॥
हमसों लीजे दान सवाई । पहिले थैली लेहु मँगाई ॥
पीताम्बर बोझन फटि जैहै । तब पाछे पछितावो ऐहै ॥
ऐसे कहि ग्वालिनि मुसुकानी । तब बोले हरि दधिके दानी ॥
तू ग्वालिनि हमको कह जानै । हम नहिं झूठी बात बखानै ॥
झूठी हौ तुमहीं सब ग्वारन । सरत होति हौ विनहीं कारन ॥
अजहूं मानि कह्यो किन लेहू । लेखो करो दान अमदेहू ॥
नन्द सौंह यों जान न देहौं । बहुरो छोरि दही सब लेहौं ॥
काहेको अठिलात कन्हाई । छांडि देहु मोहन लरिकाई ॥

पहिली परिपाटी चली, नई चली क्यों आज ।
जानि पाइहैं कंस जो, तौ पुनि होय अकाज ॥
हँसी घरी द्वै चारि, बीतन लाग्यो यामयुग ।
वनमें रोको नारि, बाढ़ि जाइ है बात पुनि ॥

कहा कंस कहि मोहिं सुनावो । अबहीं वाको जाय बुलावो ॥
लरिका कहि कहि मोहिं बखानत । मेरी लरकाई नहिं जानत ॥
मारि पूतना स्वर्ग पठाई । तृणावर्त महि दियो गिराई ॥
वत्सा बका अघासुर मारयो । गिरिगोवर्द्धन करपर धारयो ॥
ऐसो है मेरी लरिकाई । जानि बूझि तुम देत भुलाई ॥

तुमहीं हँसी करति हौ ग्वारी। देत देवावति हो हठि गारी॥
बात जानिके भाषत नाहीं। आपहि बैठीं हौ बनमाहीं॥
चोरी सदा बेंचि दधि जाहू। बिना दान क्यों होत निबाहू॥
अबतो आज पकरि मैं पाई। सब द्योसनको लेहुँ चुकाई॥
सबै भली तुम करी कन्हाई। बधे असुर सो सुनी बड़ाई॥
गिरि धाय्रो बलखाय हमारी। जानी हम सब बात तुम्हारी॥
मांगि लेहु अबहू दधि खाहू। होत दान सुनि हमको दाहू॥

हमैं कहत हौ चोरटी, आप भयो जो साह।
बड़े भये चोरी करत, अब लूटत हो राह॥
लेहु दही बलिजाउं, हमको होत अबार अब।
लिये दोनको नाउं, एक बूंद नहिं पाइहो॥

यह तुम मोको कहा सुनाई। दधि माखन सब लेहुं छिनाई॥
यौवन रूप अङ्ग जो तुम्हरो। ताको दान लेउंगो सिगरो॥
कञ्चन भार युवति तुम सगरी। आवति जाति हमारी डगरी॥
दही मही मोको दिखरावो। ताहि न यौवन रूप बतावो॥
अङ्ग अङ्गको दान गिनावो। लेखो करि सब मोहिं चुकावो॥
यह सुनि सब ग्वालिनि मुसकानी। भये कान्ह तुम ऐसे दानी॥
अङ्ग अङ्गको दान चुकावत। यौवन रूपहि दीठि चलावत॥
जानि परी प्रगटी लरकाई। यसुमति सो अब कहिहौं जाई॥
उर आनँद ऊपर रिस करिकै। चलीं सबै मटुकी शिर धरिकै॥
तब हरि पीताम्बर कटि कसिकै। धयो धाय आंचरपट हँसिकै

रिसके मटुकी लई छुड़ाई। दधि माखन सब दियो लुटाई॥
गहि गहि भुजा सबन झकझोरी। अँगिया फारि तनीगहितोरी॥

कहत कह्यो मानत नहीं, ढीठ भई सब आय।
दान देत झगरो करत, यौवन रूप लदाय॥
जो कहिहौ घर जाय, जननी नहीं पत्याय है।
आवहुगी पछिताय, निवहौगी पुनि कालहि किमि॥

भये कान्ह तुम निपट दुलारे। देखहु फारे बसन हमारे॥
तापर मांगत यौवन दाना। यह अबलों कहुं सुन्यो न काना॥
दधि माखन सब छियो लुटाई। चलो कहैं यशुमतिसों जाई॥
यहकहि ग्वालिचलींसबरिसभरि। अबहिंमगावत हैं तुमको धरि
यह सुनि हरि हँसि भौंह सिकोरी। गई उरहनो लै सब गोरी॥
यशुमति सों सब जाय सुनायो। कहा महरि सुतको सिखरायो॥
अतिही कान्ह भये अब ढेतर। रोंकत युवतिनको बन भीतर
दही दूध सब छियो लुटाई। मांगत योवनदान कन्हाई॥
चोली फारि हार सब तोरे। गहि गहि आंचर पट झकझोरे॥
ऐसो को कुल भयो महरिके। यौवनदान लियो जिन अरिके॥
नित उतपात जात सहि नाहिन। कहँलगि पीयर बन द दाहिन
कैसे गोरस बेंचन जैये। हरिपै मारग चलन न पैये॥

सुनत ग्वालिनीके वचन, बोली यशुमति मात।
मैं जानी तुम सबनके, उर अन्तरको बात॥

आप फिरत इतरात, कहत श्याम ईतर भयो।
उरन लाय नखघात, उरहनको दौरी फिरत॥

दशहि बरषको कहां कन्हाई। कहँ सब तुम मातो तरुणाई॥
दोष लगावत श्यामहिं आनी। कैसे धौं कहि आवत बानी॥
हरिपर फिरत सबै भहरानी। यौबन मदमाती अठिलानी॥
तुमको लाज लगति है नाहीं। जाहु सबै बैठो घरमाहीं॥
अहो महरि ऐसो नहिं कीजै। बिन बूझे गारी नहि दीजै॥
सुत ऐसो मग चलन न देहो। मांगत दान लूटि दधि लेहो॥
तुमहूं खीझ करत सुत ओरी। ऐसे ब्रजमें बसि है को री॥
तजिहैं आजहि गांव तिहारो। बहुरि न सुनि हो नाम हमारो॥
ऐसे कहा कहत डर पाई। बसत नहीं किन अनतहि जाई॥
मेरो कहा कछु घटि जैहै। झूंठो बात नहीं कोउ सैहै॥
यौबन दिन द्वै सबहिन बोरी। तुम बांधति आकाशहि डोरी॥
मोसों कहति आप तुम जैसी। को पतियाय बात सुनि तैसी॥

बोलत नहीं सँभारि तुम, सब मिलि भई गवांरि।
ऐसी कैसे हरि करैं, वृथा बढ़ावति रारि॥
महरि मनहि रिसियाय, हम झूँठी भाषैं नहीं।
जो तुम नहिं पतियाय, बूझि न देखो आनसों॥

तुम सुतके कर्मन नहिं जानो। हठ करि टेक आपनी मानो॥
दश गायन करि कहा बड़ाई। अहिर जाति सब एकहि माई॥
महा ढीठ हरि मानत नाहीं। वनमें झगरत गहि गहि बाहीं॥

सखा और सँग लीन्हे डोलै। वन कुञ्जनमें करत कलोलैं॥
नेकु सकुच शंका नहिं आनैं। सोई करत जो कछु मन मानैं॥
यह सुनि कहत नन्दकी नारी। कहत गैलकी वात इहांरी॥
और चली कह इहां जातको। मुहिं रिस सुनि अनमेलबातको॥
कहां वसत तुम कहां कन्हाई। कव हरि बांह गही वन जाई॥
कहत वात नहिं नेक लजाहू। सुनि हैं कहौं तिहारे नाहू॥
मेरो कान्ह अवहि अति वारो। तुम नहिं अपनी ओर निहारो॥
ऐसी वात कहति हौ आई। झूंठो दोष सह्यो नहिं जाई॥
नेकु नहीं डर करत ईशको। मनो भयो हरि वर्ष वीशको॥

धन्य धन्य तुम कहति हौ, मोको आवति लाज।
माखन मांगत रोय हरि, दोष देति विन काज॥
सुनहु महरि तुम वात, हरि सीखे टोना कछू।
वनहिं तरुण ह्वै जात, वालक ह्वै आवत घरहि॥

एक दिवस किन देखौ जाई। वनमें तरुकी ओट छिपाई॥
हैं हरि दशके वीश वरखके। देखहु अपने नयन निरखके॥
जाहु चली मैं सव देखयो है। एक एक छिन करि लेखयो है॥
दश अरु वीश वनावन आई। दीठ लगावति है घर माई॥
जरहिं वरहिं ये आंख तुम्हारी। जो हरिको नहिं सकत निहारी
आप करत ढिग चरचा जाई। मोको साखि दिखावन आई॥
अहो महरि कहिये का तुमसों। कहे विलग मानतहौ हमसों॥
सुतकी कानि मानि तुम लीन्हीं। गारी कोटिक हमको दीन्हीं

हमैं कहा मोहन प्रिय नाहीं। जीवहु युग युग हरि ब्रजमाहीं॥
कहा करैं जब बहुत रिझावैं। तब हम तुमहिं कहनको आवैं॥
भलो बोध हमको तुम कीन्हों। उलटहि दोष हमारो दीन्हों॥
सुतको हटकत नेक न माई। हमहींसों रिस करति सदाई॥

कहा करो तुम आय सब, कहत अटपटी बात।
मोको यह भावै नहीं, तरुणिन यहै सुहात॥
मन आपन शुधि लेहु, तुम तरुणी हरि तरुण नहिं।
समुझि उरहनो देहु, ऐसो मोसों मति कहो॥

महरि वचन सुनि ग्वालिनि सगरीं। निरउत्तर ह्वै घरको डगरी
यह यशुमति गोपिनको झगरो। कृष्णप्रेमरससागर सगरो॥
कहत सुनत भक्तन सुखदाई। ब्रजवासीजन जीवन गाई॥
ब्रज घर घर सबहिन सुनि पाई। मोहन दधिको दान लगाई॥
सब गोपिन मिलि रुचि उपजाई। ज्यों दधि लै जहां कन्हाई॥
यह अभिलाष सबन मन बाढ़यो। राखयो गुप्त न बाहिर काढ़यो
श्याम सखनको लियो बुलाई। कह्यो सबनसों यों समुझाई॥
कालहि उठहु सब ग्वाल सवेरे। चलिके वृन्दावन मग घेरे॥
प्रातहि यमुनाके तट जाई। तरु चढ़ि चढ़ि सब रहो लुकाई॥
ब्रजयुवती मिलि आपसमाहीं। नित प्रति दधि बेंचनको जाहीं
राधा चन्द्रावलिको यूथा। ललितादिक नागरी बरूथा॥
गोरस लै जबहीं सब आवैं। घेरि सबन तब दान चुकावैं॥

सुनि मन हर्षे ग्वाल सब, भली कही हरि बात।
सांझ भई चलिये सदन, कालहि उठहिंगे प्रात॥
निज घर घर सब आय, मात पिताको सुख दियो।
सोये सुखसों जाय, रुचिसों भोजन खायके॥

प्रात उठे सब गोपकुमारा। जहँ तहँ बोले खुले किवँरा॥
सुनी श्याम ग्वालनकी बानी। जागतहू सोवत पटतानी॥
नँदद्वार वैठे सब आई। आवहु उठि घनश्याम कन्हाई॥
ग्वाल टेर सुनि यशुदा माता। दिये जगाय श्याम सुखदाता॥
मात वचन सुनि अति अतुराई। उठे सेजते कुँवर कन्हाई॥
लै पटपीत मुकुट शिर धारी। मुरली कर लै चले मुरारी॥
सखन सहित यमुनातट आये। कहत सबनसों अति सुख पाये॥
भली करी उठि प्रातहि आये। मैं जानत सब तुमन बुलाये॥
आवत ह्वैहैं अब व्रजभामिनि। घर घरते दधि लै गजगामिनि॥
हँसे सखा सब तारि वजाई। मनमें अति आनन्द वढ़ाई॥
कहत सबनसों हँसि नँदलाला। जाय द्रुमन सब चढ़ो गुवाला॥
मुँह मूँदे सब रहो छिपाने। जिहि विधि युवति न कोऊ जाने॥

जवहीं जान्यो युवति सब, आई वनहिं मँझाय।
कूदि परो तब द्रुमनते, दे दे नंद दुहाय॥
शङ्ख शब्द वहराय, कीजै मुरली शृंग धुनि।
डरन जाहिं अकुलाय, जैसे युवतीगण सबै॥

घेरि सखन इहि विधि डरपाई । बहुरि तिन्हैं कहियो समुझाई ॥
नितहिं हमारे मारग आई । दधि माखन बेंचत ही जाई ॥
हरिको दान मारि नित जावो । आजदिये बिन जान न पावो ॥
ऐसे श्याम सखन समुझावत । अपने मनकी प्रीति बढ़ावत ॥
व्रजवनितन लखिकै सुख पाऊं । तुमसों नाहिन कछू दुराऊं ॥
यहि मारग बेंचन दधि आवैं । अन्तरगति मोसों हित लावैं ॥
आवत ह्वैहैं बन सब बाला । करत बात ऐसे नँदलाला ॥
प्रात उठीं सब गोप किशोरी । चित्र विचित्र वसन तनु धोरी ॥
अङ्ग अङ्ग आभूषण साजें । केश सवांरि चारु दृग आंजें ॥
अङ्गिया अंग अनूप सवांरी । चित्र विचित्र बसन तनु धारी ॥
बेंदीं भाल मांग मोतिनकी । अङ्ग अङ्ग छवि नग ज्योतिनकी ॥
दशन दमक अधरन अरुणाई । चिबुक नीलकनकी छबि छाई ॥

गोरे तनु मुख छबि सदन, नव यौवन व्रजनारि ।
लै लै दधि निकसीं सबै, सुखमा बढ़ी अपारि ॥
व्रजके खेडे जाय, भई ग्वालि इकठौर सब ।
निज निज यूथ बनाय, दधि मटुकी शिरपर धरे ॥

बचन दही चलीं व्रजनारी । षटदश सहस गोप सुकुमारी ॥
सबके मन मग मिलहिं कन्हाई । कहत न एकहि एक जनाई ॥
करत जाहिं गुणगान विहारी । पग नूपुरकी धुनि अति भारी ॥
हरि जानी युवती आवत जब । कह्यो सखन द्रुम जाय चढ़ो अब
सुनत श्यामके मुखसों बैना । धाय चढ़ी द्रुम बालकसैना ॥

पञ्चसहस्र सखा समुदाई। जहां तहां द्रुम रहे लुकाई॥
कछुक ग्वाल सङ्ग राखि कन्हाई। निकसि गये आपुन अगुवाई॥
ठाढ़े भये घेरि वनघांटी। लैं लै करन सुमनकी सांटी॥
इहि अन्तर आई व्रजनारी। देखत वन लाग्यो कछु भारी॥
पाछेही ते लई हँकारी। कहत तिन्हें अबहीं तुम हारी॥
एकसंग जुरि भई तरुणि तब। इतउतचकित चलीं चितवतसब
आगे दृष्टिपरे नँदनंदन। मुकुटशीश तनुचर्चित चन्दन॥

लिये सखा सङ्ग मग गहे, ठाढ़े यमुनातीर।
ठिटुकि रहीं युवती सबै, लखि ग्वालनकी भीर॥
भयो हर्ष उरमाहिं, कहत वचन मुख भय सहित।
आगे कैसे जाहिं, मगमें ठाढो सांवरो॥

कोऊ कहत चलत क्यों नाहीं। कोऊ कहत घरहि फिरि जाहीं॥
कोउ कहै का करै कन्हाई। इनहूं सों कहँ जाहिं पराई॥
कोऊ बोलि उठी व्रजबाला। लूटि लई हमैं कालहि गुपाला॥
अतिही ढीठ भयो है कान्हा। मांगत है गोरसको दाना॥
सुनि ऐसे मोहनको ख्याला। घरको फिरीं सकल व्रजबाला॥
तब हरि ग्वालन सैन बताई। कूदहु विटपन ते झहराई॥
जात फिरीं युवती व्रजगांवहिं। घेरि लेहु कोउ जान न पावहिं॥
तब ग्वालन वनमें पहुँचाई। झार झराय तरु डार हलाई॥
शङ्ख मृदङ्ग मुरलि करतारी। कीन्हें शब्द सबन यक वारी॥
चकित हुमन चितईं सब वाला। डारन डारन देखे ग्वाला॥

कूदि कूदि तरु तरुते धाई । घेरि लई ललना सब जाई ॥
कहा नितहि दधि बेंचन जाहू । आज पकरि पायो सब काहू ॥

दान लगत ह्यां श्यामको, सो सब लेहि चुकाय ।
अब लौ देहैं जान तब, तुमको नन्द दुहाय ॥
दधि लै जात प्रभात, आवति हो निशि बेंचिकै ।
दान मारि नित जात, भलो करत यह बात नहिं ॥

ठाढे यमुना तीर कन्हाई । जाहु चलो निज दान चुकाई ॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो इकग्वाली । नई बात इक सुनहुरिआली
मांगत दधिको दान मुरारी । सिख पठाये हैं महतारी ।
सो ये सखा लेन सब आये । यमुनातटते श्याम पठाये ॥
काहेको सब मिलि इतराहू । सूधे अपने मारग जाहू ॥
दधि माखन कछु चाहत कोऊ । सूधे मांगि लेत किन सोऊ ॥
सूधी बात कहो सुख होई । बांधत कहा अकाश खरोई ॥
दान बजार हाटमें पावो । इह निज कान्हैं जाय सुनावो ॥
बोले सखा सुनहुं री ग्वारी । हमजानी अब बात तुम्हारी ॥
गांवँ बसेकर यह दुख होई । नहिं सकाज चीन्हे सों कोई ॥
मारग अपनो दान उगाहू । कहत मांगि किन हमपै खाहू ॥
हाट बाट सब हमहि उगैहैं । अपनो दान तुमहुंपै चैहैं ॥

लेखो करि सब कान्हको, दीजै दान जगात ।
चलो जाहु सुखसों डगर, फेरि कहै कोउ बात ॥

तुमको कैसो दान, कौन कान्ह मांगत कहा ।
परि है अबहीं जान, रोकत हो बनमें तियन ॥
आये तबहीं निकट कन्हाई । संग सखनको और सुहाई ॥
बोलि उठीं लखि नागरि सगरी । कहा श्याम तुम करत अचगरी
नारिनको रोंकत हो बनमें । जैहै बात दूरिलों छनमें ॥
आजहि दान पहिरि तुम आये । कहा छापकरि तुमहि पठाये ॥
वैसो चाल चलो नँदलाला । चलत बाप तुम्हरो जिहि चाला ॥
वृथा न रारि करहु बनमाहीं । छांडि देहु दधि बेचन जाहीं ॥
कहत कान्ह दधिदान न देहौ । बिना दान दीन्हे नहिंजैहौ ॥
लेहौं छीनि दूध दधि माखन । देखत हौ हरिहौ सब आंखन ॥
मात पितालों उघटत बानी । नहि जानत मोको दधिदानी ॥
जात नितहि निज बेंचि चुराई । सब दिवसनको लेहुं भराई ॥
मांगत छाप कहा दिखराऊं । काको तुमको नाम बताऊं ॥
ऐसो को मोको नहि जानत । एक नहीं मोको तुम मानत ॥
नीके हम जानत तुम्ह, गोद खिलाये कान्ह ।
वे दिन अब बिसराय सब, भये जगाती आन ॥
करहु नहीं लगि बात, जो निबहै सुख पाइये ।
ऐसी क्यों सहि जात, नितहि हमें दधि बेंचनो ॥
अजहूँ मांगि लेहु दधि देहैं । खाहु सहज में हम सुख पैहैं ॥
दान वचन तुम हमहि सुनायो । यहै हमें सुनिके नहि भायो ॥
होत अबार जान अब दीजे । नई रीति मोहन नहि कीजे ॥

गोरस लेत प्रात सब कोई । बहुरि धरयो हरिहै ऐसोई ॥
दान दिये बिन जान न पैहौ । जबदैहौ तबहौं सब जैहौ ॥
तुमसों बहुत लेन है हमको । सो नहिं अबहि सुनावत तुमको ॥
नितहि हमारे मारग आवत । मोको कबहूं नाहिं जनावत ॥
दिन दिनको लेखो भरि लेहौं । अबतौ तुम्हें जान तब देहौं ॥
ऐसो हठ कह करत गुगारो । वनमें रोंकत नारि परारी ॥
आये दान पहिरि तुम कापै । चलहु न हम सब चलि हैं तापै ॥
तुम अपने घरहीके राजा । सबको राजा कंस विराजा ॥
जो कहुँ सुनत नेकु सो पैहै । बहुरि सँभार अबहिं परि जैहै ॥

हम गुहरावैं जाय कहँ, बसत तुम्हारे गाँव ।
ऐसी विधि जो कहत हौ, को रहि है यहि ठांव ॥
करत फिरत उतपात, लिये सखा सँग सतके ॥
नाहिंन नेकु डरात, कठिन कंसको राज है ॥

यह सुनि कान्ह उठे रिसिधाई । लीन्हौं कछु दधि दूध छिनाई ॥
बसन छोर तरुसों उरझाये ॥ कछु दधि भाजन भूमि लुढाये ॥
कहत जाय कंसहि गुहरावो । आजहि मोहिं हजूर बुलावो ॥
मारौं एक पलकमें वाही । मोको कहा बतावत ताही ॥
अब तौ मोसों बैर बढायो । लेहौं दान आपनो भायो ॥
मेरे हठ क्यों निवहन पैहो । लेखो अब धौं कैसे जैहो ॥
तुम देखत रहि हौ हम जैहें । गोरस बांच बहुरि घर ऐहैं ॥
बोले ज्वाब न तुमको देहैं । नेकहु तुमसे नाहिं डरेहैं ॥

सुनि गृहते जन ऐहैं जबहीं । नहिं सँभारि सकिहौ हरितबहीं ॥
एक बूंद गोरस नहिं पैहौ । देखत ऐसेही रहि जैहौ ॥
धरिकैं यशुमतिपै लै जैहैं । तहां श्याम पुनि वचन न ऐहैं ॥
मानो कह्यो हमारो अबहूं । हमपै दान न पैहौ कबहूं ॥

गृहजन कहा बतावहू, कंसहि तौहु बुलाय ।
देखतहौ तुम सबनके, पूजा करौं बनाय ॥
जैहो धौं केहि भांति, अब देखहुँगो मैं तुम्हैं ।
बात कहत अनखाति, सूधे देतौ दान नहीं ॥

जो मानत नहिं कंसहि राजा । तो अब भये तुमहिं ब्रजराजा ॥
तौ सिंहासन बैठत नाहीं । गाय चरावन कत बनमाहीं ॥
मोरपखनको मुकुट उतारो । नृपकिरीट माथेपर धारो ॥
पहिरत कहा गुंजके हारा । नृप भूषण किन करत शृङ्गारा ॥
छत्र चमर शिर ऊपर राजै । तजहु मुरलि अब नौबत बाजैं ॥
हमहूं यह लखिकै सुख लीजे । सङ्गहि सङ्ग काज कछु कीजे ॥
झगरत कहा दहीके काजा । लखि हमको उपजतहै लाजा ॥
ओछी बुद्धि तुम्हारी तीकी । तुम्हते चित रजधानी नीकी ॥
मेरो दासन दास कहावै । सपनेहूं यह ताहि न भावै ॥
कंस मारि शिर छत्र धराऊं । कहा तुच्छ यह साध पुराऊं
ब्रजमें मेरो राज सदाई । और इहां काकी ठकुराई ॥
तम कछु राज बड़ो करि मानो । मेरी प्रभुताको नहिं जानो ॥

हमहू जानतहैं तुमहिं, लरिकाईते कान्ह।
काहेको अपने वदन, कीजत बहुत बखान॥
फिरत चरावत गाय, कांधेकामरि कर लकुट।
देखीहै ठकुराय, कत बढि बढि बातें करत॥

यह कमरी कमरी तुम जानो। जितनी बुधि तितनो अनुमानो॥
यापर वारौं चीर पटम्बर। तीनलोकको यह आडम्बर॥
ब्रह्मा भूल्यो जाहि निहारो। सो कमी कस निदरत ग्वारो॥
कमरीके बल असुर सँहारौं। कमरीते संतन उद्धारौं॥
या कमरीते सब सुख भोगा। जाति पांति यह मम सब योगा॥
सुनत हँसी सब ब्रजकी बाला। यह तुम सांच कही गोपाला॥
धनि धनि यह कामरी तुम्हारी। सब विधि तुम्हें निवाहनहारी
यहै ओढिके गाय चरावो। यहै सेज करि भूमि बिछावो॥
याहीते वर्षाऋतु टारो। शिशिर शीत याते निवारो॥
याते ग्रीषम घाम बचावों। यहै उठगनो शीश बनावों॥
यहै जानि यह गृह हमटाटो। यहै सिखावत सब परिपाटी॥
हमजो कहन चहतही तुम सों। कही सो तुम अपने मुख हमसों॥

कही जात अपनी प्रगटि, नीके हम हँसाय।
तापर मांगत दान दधि, युवतिन रोकि कन्हाय॥
कामरि ओढनिहारि, तुम्ह न छाजत पीतपट॥
कारे तनुपर चारि, कारी कामरि सोहई॥

मोसों बात सुनो व्रजतिय अब । सत्य कहत उपमा न जगत सब
वालक यह तिय सुख नहिं दीज । इनसों बहुत हेतु नहि कीज
मूड चढत नेकहि चुचकार । जो मन करै सोई करि डार ॥
सोई गुण प्रगटत तुम जाहू । कतक कहत मैं तुम अठिलाहू ॥
जानहु कहा हम तुम ग्वारी । सदा छांछकी बेचनहारी ॥
सुनहु कान्ह हम तुमको जानैं । नन्दमहरके सुत पहिचानैं ॥
धेनु दुहत पुनि तुमको देखै । गाय चरावतहू बन पेखै ॥
चोरी करी वहौ पुनि जाने । खरिका खोलत फिरत विराने ॥
ये ढँग छांड़ि भये अब दानी । यहै बात अब सबहिन जानी ॥
और सुनहु यशुमति अब बांधे । ऊखलसों दोऊ भुज साधे ॥
तब सहाय करि हमहिं बचाये । करके बन्धन जाय छुडाये ॥
जानत यहै रहत व्रजमाहीं । हम ते दूरि बसत कछु नाहीं ॥

कहत कहा तुम बावरी, हँसी लगत सुनि बात ।
कब जनमत देख्यो हमै, कौन मात को तात ॥
कबै चराई गाय, कत चोरी पकरयो हमैं ।
कब बांधे हम माय, दुही गाय किन कौनकी ॥

तुम जानहु मुहिं यशुमति जाये । यशुमति नन्द कहांते आये ॥
मैं पूरण अविगति अविनासी । बांधे सब मायाकी फांसी ॥
यह सुनि हँसी सकल व्रजबाला । ऐसेउगुण जानत गोपाला ॥
जैसे निदरयो तुम सब काहू । तैसे निदरत मात पिताहू ॥
तुमको यशुमति महर न जाये । तौ तुम कहौ कहांते आये ॥

घर घर माखन चोरयो नाहीं। बांधे मात न ऊखलमाहीं॥
हाहा करि हम नाहिं छुड़ाये। ग्वालन संग न बच्छ चराये॥
नहीं गाय तुम दुही हमारी। ये सब बातें झूंठ तुम्हारी॥
भक्तहेतु जन्मत जगमाहीं। कर्म्म धर्म्म के मैं वशनाहीं॥
योग यज्ञ मनमें नहिं ल्याऊं। दीन गोहारि सुनत उठि धाऊं॥
भावाधीन रहौं सब पासा। और नहीं कछु मोको वासा॥
ब्रह्मा कीट आदिके माहीं। व्यापक हौं समान सब ठाहीं॥

कहां कहांकी बात कहि, डरपावत हौ नारि।
स्वर्ग पतालहि एक करि, बांधत बारहि बार॥
इहां सुनावत काहि, जो लायक तो आपको।
कौन प्रकृति यह आहि, बनमें रोकत हो तियन॥

केतक दधिको दान कन्हाई। जिहि कारण युवती अटकाई॥
दधि माखन सबही तुम लेहू। रीतो जान हमैं घर देहू॥
जो तुम याहीमें सुख पावो। काहेको बहु बात बनावो॥
दधि माखन कह करौं तिहारो। सकल बणिजको दान निवारो॥
जो जो बणिजनितहिं तुमलावो। लेखो करि सब मोहिं चकावो॥
अब ऐसे कैसे घर जैहौ। जबलग लेखो मुहिं न बुझैहौ॥
करत बणिज तुम नये बनाये। नित उठि जात जगात बचाये॥
सुनि वाणी हरि नागर नटकी। दै दै सैन युवति सब सटकी॥
मनहींमन अति हर्ष बढाई। बोलीं हरिसों सब मुसकाई॥
ऐसे कहौ बणिजको अटके। अबलौं श्याम कहां तुम भटके॥

हमहूं कहि मनमांझ लजाई। कह मांगत दधिदान कन्हाई॥
बणिजहेतु रोको अब जानो। तबहीं क्यों न कहो यह बानो॥

हँसि बोली राधा कुवँरि, कहा बणिज हमपास।
कहो श्याम सो नाम धरि, देहि दान हम तास॥
भूले कहा कन्हाय, बणिज कौन युवती करत।
कासों लियो चुकाय, सो हमको बतलाइये॥

कहो तुमहि बूझत कह हमहीं। लै लै नाम बतावो तुमहीं॥
तुम जानत मैंहूं कछु जानौं। तुमते माल सु नाहि छिपानौं॥
हारि देहु जापर जो लागै। फिर न कछू तुमसों कोउ मांगै॥
इतनेहीं को लरत वृथाहीं। देखो समुझि सबै मनमाहीं॥
कहत परस्पर ग्वालि सयानी। समुझत हो कछु इनकी बानी॥
इनहींसों बूझो सब कोऊ। कहा बतावत सुनिये सोऊ॥
हरिकी गूढ़ मधुर रस बातैं। सुनि सुनि सुख पावत सब जातैं॥
मन मन हर्ष भई सब सुन्दर। जानैं हरि सब रसिक पुरन्दर॥
तब बोलीं हँसिकै ब्रजबाला। कहत नाहि क्यो तुमहि गुपाला॥
कहा माल देख्यो हमपाहीं। जिहि कारण रोको बनमाहीं॥
बैल लदाये देख्यो हमको। कहौ हमैं बूझति हैं तुमको॥

लौंग जायफर लायचौ, गिरी छुहारे दाख।
कह लादे हम जात हैं, सो कहिये किन भाख॥
दीजै बणिज बताय, ताको देहि जगाति हम॥
तुमको नन्द दुहाय, जो अब वेग कहो नहीं॥

कन्हाई, कौन वणिजकहि मोहिं बतावो। लोनमिरच कहिकहि बहँकावो
बानी। तुमतौ माल गयंद लदायो। महिष वृषभ कहि मोहिं सुनायो॥
बड़े मोलको वस्तु जो होई। कैसे दुरत दुरावे सोई॥
मो आगे तुम कहा छिपावो। देहो दान जान तब पावो॥
भये चतुर हरि तुम अब जानी। दधिको दान मेटि यह ठानी॥
देतो दही कछुक हम छोहन। खाते लै ग्वालन सँग मोहन॥
इन बातन अब खोयो सोऊ। यह कहि युवति हँसीं सब कोऊ॥
श्याम कही मैं जानत तुमको। सूधे दान न देहो हमको॥
दधि माखन तो लेहौं छोरी। उठिके भुज गहि गहि झकझोरी॥
तब पीताम्बर झटक्यो प्यारी। कहत भये तुम ढीठ मुरारी॥
हरि रिसकरि अंकम गहि लीन्ही। इहि मिस भेंट प्रेमकी कीन्ही
टूटि गई प्यारी उर माला। तब घेरे युवतिन नँदलाला॥

गहि गहि अंकम लेत सब, झगरत रसहि बढ़ाय।
हँसत सखा सब तारि द, पकरे गये कन्हाय॥
हांक दई नँदलाल, तबहिं सखन ललकारिक।
धाय परे सब ग्वाल, लीन्हे श्याम छुड़ाय तब॥

रिसकरि बोले ग्वाल सयाने। भई ढीठ हरिको नहिं जाने॥
हम भइ ढीठ भलो तुम कीन्हों। देहौं ज्वाब दईको चीन्हों।
वन भीतर रोकी सब बाला। देखौ हमैं कियो जञ्जाला॥
बात कहनको एहू आवत। बड़े सुधर्मा आप कहावत॥

ऐसो साथ सखा को भरि सब । आवहुगे नृप जीति सब तब ।
जानी बात तुम्हारी सबकी । तजहु ख्याल लरिकाई तबकी ॥
जो युवतिनको हाथ लगैहौ । कियो आपनो तौ तुम पैहौ ॥
जो यह बात घरन सुनि पैहैं । मात पिता हमको कह कैहैं ॥
तोरयो मुक्ताहार कन्हाई । घरहि कहा कहिहैं हम जाई ॥
आपन भई सबै तुम भोरी । हरिको दोष लगावत गोरी ॥
जब तुम झपटो पीत पिछोरी । तब उन मोतिनकी लर तोरी ॥
मांगत दान श्याम कबसेती । तुम अठिलात ज्वाब नहि देती ॥

लेहि झोरि सबते अबहि; देखतही रहि जाह ।
झकझोरा झोरी करत, नँदनन्दनहि डराहु ॥
को त्रिभुवनके माहि, मोहनकी सरि दूसरो ।
तुम सब जानत नाहि, नन्दनँदन व्रजराज सुत ॥

कहा बड़ाई इनकी सरिमें । इनको जानति नीके करि मैं ॥
नृपतित्रास वसुदेव निकारे । नन्द यशोमतिने प्रतिपारे ॥
आये हैं शुभ घरके माहीं । कान्ह वदत ताहिते नाहीं ॥
पहिले जब उन भुजा झकोरी । तब हम झटकी पीत पिछोरी ॥
याते ढीठ कही तुमको हम ॥ ग्रामहि भिरकनहार भई तुम ॥
इतनेपर मानत नहि हारी । तबते हम देतही गारी ॥
बहुत सही हम बात तुम्हारी । वणिज करत अरु झगरत ग्वारी ॥
व्रज ऊपर मनमोहन दानी । अबलौं तुम यह बात न जानी ॥
बोलि उठे तब कुवँर कन्हाई । अब नहि छोड़ौं नन्द दुहाई ॥

अब तौ दांव आपनो लेहौं। तबहीं जान सबनको देहौं॥
कोन बात यह कहत कन्हाई। माँगत कहा जानि नहिं जाई॥
फिरि फिरि करि करि नन्द-दुहाई। डरपावत हो हमको आई।
डरपावहु तुम जाय तिन्ह, जो कोउ तुम्हैं डराहिं।
यहँ डरपावत कौनको, तुमते घटि हम नाहिं॥
जैहैं यशुमतिपाहिं, तोरयो हार भलो करो।
यहौ बनत प नाहिं, इतनो धनकहँ पाइहौ॥
एक हार मोहि कहा बतावो। सब अँग भूषण काहि दुरावो॥
मोती माँग जराऊ टीको। करणफूल वेसर नग नीको॥
कंठश्रिरी दुलरी तिलरी गर। तापर और हार जो चौसर॥
सुभग हमेल बिजौठा बाजू। कंकण पहुँचिन मुंदरिन साजू॥
कटि किंकिणि नूपुर पग देखो। जेहरि बिछिया ये सब लेखो॥
शोभा साज और अँगमाहीं। सबको नाम लेत क्यों नाहीं॥
याहूमें कछु बांट तुम्हारो। अचरज आय सुनो री भारो॥
भूषण देखि न सकत हमारो। याही लिये भयो घटवारो॥
आपनहू कछु दई गढाई। महरि यशोमति के नन्दराई॥
आई पहिरि जितो हम याहीं। याते दूनों है घरमाहीं॥
देखि परत कछु बहुत लुभाने। बनधौं सूनो लखि ललचाने॥
बांटि कहा तौलो सब मेरो। जोलौं तम नहिं दान निवेरो॥
आभूषणको कह कहत, बहुत वस्तु तुम पास।
मानो मैं जानत नहीं, सो किन करत प्रकास॥

लेहौं सबको दान, समुझि लेहिंगे बांटि पुनि ।
पैहौ तबहीं जान, मैं तुमसों सांचौ कहत ॥
भये श्याम ऐसे रसनागर । युवतिनमें अब होत उजागर ॥
कालिहिहि गाय चरावन जाते । छाक मांगि ग्वालन सँग खाते
कांधे कामरि लकुटी हाथा । वनमें फिरत बछरुवन साथा ॥
आज पीतपट कटि कसि आये । लै कर लकुटी बड़े कहाये ॥
भये कछु अब नवल सुजाना । मांगत युवतिनसों वह दाना ॥
देहौ दान कि झगरति हौ तम । बहुत तुम्हारी बात सुनी हम ॥
प्रथम दान जनजाल निवरिये । ता पाछे तुम हमहिं निदरिये ॥
कहत कहा निदरेसे हौ तुम । सहजहि बात कहति तुमसो हम
आदिहिते तुमको पहिचानें । दान कहा सो हम नहिं जानें ॥
ग्वालिनिचलींसबैरिस करि करि । दधिमटुकी माथेपर धरि धरि
तब हरि गहि अंबर झकझोरी । जाति कहां हौ री बनिजारी ॥
इतनो वणिज लिये तुम जाहू । बिना दान क्यों होत निबाहू ॥
नाम तुम्हारे वणिजके, सब मैं देहुँ बताय ।
देहु दान तब मोहिं तुम, देखहु सब ठहराय ॥
सब क्यों छोड्यो जात, एक होय तौ छोड़िये ।
तुम विचारि यह बात, देखहु अपने चित्तमें ॥
एतो वस्तु लिये तुम जावो । दान देति मेरो खिझरावो ॥
मत्तगयन्द तुरङ्गम तमसों । कैसे दुरत दुराये हमसों ॥
हंस मोर केहरि मृगवारे । कनक कलश मदरससो भारे ॥

चमर सुगन्ध कपोत कीरवर। कोकिल विद्रुम वज्र धनुष शर॥
एतौ धन खग मृग तुमपाहीं। कैसे निबहत दान बिनाहीं॥
सुनि यह चकित कहति व्रजवाला। कहा बतावत तुम नँदलाला
तिनको नाम लेत हमपाहीं। जो हम सपने देख्यो नाहीं॥
कहां तुरङ्गम गज हम पाये। कब हम कंचनकलश गढ़ाये॥
मानसरोवर हंस रहाहीं। चमर धनुष शर कहा कहाहीं॥
ये सब हमपै कहां बतावो। जहां होय तहँ दान चुकावो॥
इतनो सबै तुम्हारेपाहीं। करि विचार देखौ मनमाहीं॥
अपने सब अँग अंग निहारो। यौवन रूप और है न्यारो॥

करहु निबेड़ो बेग सब, काहे करत अबेर।
कहो तुम्हैं कछु हम कहैं, घरको जाहु सबेर॥
दीजै दान चुकाय, अब जान्यो अपनो बणिज।
कहौ फेरि समुझाय, जो कछु धोखो होय चित॥

चमर चिकुर भ्रू धनुष सँभारे। शर कटाक्ष मृग दृग कजरारे॥
कंठ कपोत कोकिला बानी। रद हीरा शुक नाक बखानी॥
अधर सधर विद्रुमसो जानो। है मयूर घूंघटपट मानो॥
कंचन कलश उरोज निहारो। यौवन मदसों भरो विचारो॥
कटि केहरिके रूप सुहाई। हंस गयंद चाल छवि छाई॥
सौरभ अङ्ग सुगन्ध सुहायो। यौवन रूप न जात बतायो॥
इतनो है सब वणिज तिहारो। होय अंश सो देहु हमारो॥
खरो किये निबहौगी कैसे। लेहौं दान देहुगी जैसे॥

यह सुनि हँसि बोलीं व्रजनारी। अब समुझी हरि बात तुम्हारी
मांगत ऐसो दान कन्हाई। जानि परी प्रगटी तरुणाई॥
याही लालच अंक भरतहौ। पुनि पुनि गहि आंचर झगरतहौ॥
अपनी ओर देखि तो लीजे। ता पाछे बरियाई कीजे॥

याही लालच फिरत हौ, सखा लिये बन सङ्ग।
घेरत हौ युवतीनको, प्रगट्यो अङ्ग अनङ्ग॥
बैठि रहौ घर जाय, यह मति चितमें मति धरौ।
घटि मर्यादा जाय, ऐसी बातन सों लला॥

यह सुनि बिहसिकह्यो बनमाली। कत हमपर रिसकरत गुवाली
सूधे हम इक बात बखानी। तुम कत शोर करत अनखानी॥
कबहुँ घटावति हौ मर्यादा। कबहुँ जोड़ सोड़ करत विवादा॥
प्रातहिंते झगरत बिन काजे। दान निबेर जात नहिं साजे॥
हरि यों कबते भये सयाने। उलटहिं तुम हमपर सतराने॥
बेटी बहू बड़े घरकी हो। कत बिलम्ब बनमें करती हो॥
बूझिय तुमसों हम जो कखाने। सो तुम कह आगे सतराने॥
कहिये मोहन बात बिचारी। कहवावत सर्वज्ञ बिहारी॥
परगट ऐसो दान सुनावत। हमरो व्रज उपहास करावत॥
परे बात महराने जाई। तुमहिं लाज कै हमहि कन्हाई॥
व्रजमें जो ये बात सुनेंगे। जाति पांतिके लोग हँसेंगे॥
जान देहु अब हमहिं गोपाला। कहियो प्रात फेरि नँदलाला॥

बोलि उठ्यो इक सखा तब, सुनहु ग्वालिनो बात।
प्रीति करत नँदलालसों, कत बावरी लजात॥
हरिसँग करहु विहार, नवल श्याम नवला तुमहुँ।
हँसन देहुँ संसार, भलो मनावो कान्हको॥
सुनि बोलीं ब्रजयुवति रिसाई। कहवावत यह बात कन्हाई॥
आपुन यौवनदान बनावत। तापर जोइसोइ सखन सिखावत॥
बनमें सबन घेरि बैठाई। करत श्याम तुम अति लँगराई॥
भूलि गये वे दिवस कन्हाई। घर घर माखन खात चुराई॥
खीझतहो दृगनीर चुवाते। उर डारत घरको भजि जाते॥
बांधे ऊखल जबहिं यशोदा। हमहिं छुड़ाय लिये तब गोदा॥
अब भये बड़े बड़ी चतुराई। ताते यौवनदान सुनाई॥
लरिकाईकी बात बखाने। कैसो भई कहा हम जानें॥
कब धौं खायो माखन चोरी। मैया धौं बांध्यो कब डोरी॥
नेकहु ताको सुधि नहिं जाने। मान अमान न तब हम माने॥
भले बुरेको ज्ञान न होई। अपनो पर कछु समझ न कोई॥
खेलत खात हर्ष हियमाहीं। बालपनेके दिवस बिहाहीं॥
अपनी सूरति करत नहि, न्हात यमुनके तीर।
कदम चढ़ाये सबनके, जब मैं भूषण चीर॥
जलमें रहीं छिपाय, बिना वसन नांगी सबै।
पुनि पुनि हहा कराय, दिये वसन मैं सबन तब॥
बिना बसन बाहर सब आई। हाथ जोरि मोहिं विनय सुनाई

कैसो भांति भई तब सबको । सो सुधि भूलि गई अब तबको ॥
मोको कहति चोरि दधि खायो । ऊखलसों हम जाय छुड़ायो ॥
भेद वचन जब कहे बिहारी । सुनिकै हँसि सकुचीं ब्रजनारी ॥
कहत भये अति निलज कन्हाई । ऐसी कहत न सकुचत राई ॥
जाहु चले लोगनके आगे । झूठी बात बनावन लागे ॥
करत हँसी तुम सबन सुनाई । निज निज गृह सब कहिहैं जाई
झूठी बात कहा हम जानें । हम तो सांची सदा बखानें ॥
जैसी भांति भजै मोहिं कोई । मानत मैं ताको तैसोई ॥
जो झूठो मोको तुम जानौ । तौ कत मेरे हित तप ठानौ ॥
जो तुम अपने मन ये ठानी । मैं अन्तरयामी सब जानी ॥
अब क्यों इतो निठर मन कीन्हों । काहे दान जात नहिं दीन्हों

दान सुने रिस होति है, यह नहिं हमैं सुहाय ।
भली बुरी अरु जो कहो, सो सहि लेहिं कन्हाय ॥
छांड़ि देहु सब जाहिं, सुनिये मोहनलाल अब ॥
भई वेर वनमाहिं, मात पिता खिझिहैं हमैं ।

काहेको तुम करत अवारी । दधि बेंचहु घर जाहु सवारी ॥
मैं कह करौं तुम्हैं यह भावत । लेखो करि नहिं दान चुकावत
शुद्ध स्वभाव समुझि सब कोई । लेखो करि देहो मोहि जोई ॥
तब सोइ तुमसों मैं लै लेहौं । तबहीं तुम्हैं जान पुनि देहौं ॥
काहेको हम सों हरि लागत । जानि न परत कहा तुम मांगत ॥
बातन कछु जनावत नाहीं । लेखो कहा करत हमपाहीं ॥

निपटहिं परे हमारे ख्याला। इन बातन कह पावत लाला॥
अब तुम निपट करी बहुताई। सुनि हँसिहैं ब्रजलोग लुगाई॥
मारग जनि रोकहु हम जाहीं। घरते लीजो दान उगाहीं॥
अबलौं यह कीन्हो तुम लेखो। हम तुम्हरो विचार सब देखो।
मोको ऐसी बुद्धि सिखावत। कर कंकण दर्पणहि दिखावत॥
तुम्हरी बुद्धि दान हम लेहैं। काहेन तुम्हें जान हम देहैं॥

आप भई हौ चतुर सब, मोको करति गँवार।
उगहत फिरिहैं दान हम, ठाढ़े ह्वै हैं द्वार॥
तुम्हैं देहुँ घर जान, फेरि कहो पाऊं कहां।
जो नहिं पैहौं दान, नृपहि ज्वाब कह देउँगो॥

भली भई नृप मान्यो तुमहूं। चलिहैं कंसछिपै अब हमहूं॥
तबते लेन कहत हैं दानहिं। नन्दमहरको करि करि आनहिं॥
हमहूं अबलौं ऐसो जानो। भये श्याम घरहीते दानो॥
अब जान्यो तुम कंस पठाये। नृपते दान पहिरि तुम आये॥
सुनि हरि ये गोपिनके बयना। हँसे कछु तिरछे करि नयना॥
सो छवि निरखि कहत सब नारी। कहा हँसे सुख मोरि मुरारी
सोई कहो मनहिं जो आई। तुमको यशुमति महरि दुहाई॥
और सौंह तुमको गोधनकी। सांची बात कहो तुम मनकी॥
हँसे कहा हम सों कछु रीझे। कैधौं कछु मनही मन खीझे॥
यह सुनि अधिक हँसे गोपाला। कह्यो सुदामासों नँदलाला॥

यह अचरज इनको तुम हेरो। कहत कहा तुम हँसि मुख फेरो॥
ऐसी बातन सौंह दिवावत। ताते अधिक हँसी मोहिं आवत॥

तब श्रीदामा तियनसों, बोलि उठ्यो मुसकाय।
हँसत श्याम तुम समझिकै, बूझत सौंह दिवाय॥
हम न दिवावैं आन, हँसहु तुमहु निज संग मिलि।
यहै आन सी बान, थोरेमें खिसियात तुम॥

सहज हँसत नाहिन सकुचैये। नाहिन लोगन सौंह दिवैये॥
वेहैं दानी प्रभु सबहीके। देहु दान मांगत कबहीके॥
हम जानत वे कुँवर कन्हाई। प्रभु तुम्हरे मुख अब सुनि पाई॥
होति नहीं प्रभुता इहि भांती। दही महीके भये जगाती॥
वे ठाकुर तुम्हरी सेवकाई। जाने प्रभु अरु सब प्रभुताई॥
दधि खाये अरु भूषण तोरे। छांड़ि देहु अब दई निहोरे॥
जो कछु बचो सोऊ अब लीजे। वेगिहि जान हमैं घर दीजे॥
तब हँसि बोले श्याम सुजाना। तुम घर जाहु देइकै दाना॥
आयो हौं पठयो मैं जाको। देउँ कहा लैकै पुनि ताको॥
अबहीं पठवै मोहिं बुलाई। तब ताके सनमुख को जाई॥
तुम सुख करो जाय घरमाहीं। नृपको गारि सारको खाहीं॥
जब नृपवर मोको अटकावै। तब पुनि तुम बिन कौन छुड़ावै॥
लेत नाम सुख नृपतिको, जा मुख निदर्यो जाहि।
आपुन तो नृप नृपनके, अब कह समुझे ताहि॥

लियो कंसको नावँ, ऐसी तुम्हैं न बूझिये।
भले श्याम बलि जावँ, जिहि निंदिये तिहि वन्दिये॥
जब हम कंस दुहाई दीन्ही। तबतो नृपवर अति रिस कीन्ही॥
अबै कहा नृपकी सुधि आई। जो तुम ऐसे डरे कन्हाई॥
कहा कह्यो कछु जान न पायो। कब हम कंसहि शीश नवायो
कब हम नाम कंसको लीन्हो। कंसत्रास कब धौं हमकीन्हो॥
निपट भई तुम ग्वारि गवांरी। बसत हमारे गांव मँझारी॥
कितक कंस जाको हम जानैं। कहा त्रास ताको उर आनैं॥
तुम्हरे मनै बात यह आवत। कंस नृपतिके हम कहवावत॥
तौ तुम कहो कौन नृप जाके। आपुन कहवावत हौ ताके॥
ताको नाम हमहु सुनि पावें। हमहूँ पुनि ताके कहवावें॥
या संसार लोकत्रयमाहीं। दूजो कंस नृपतिते नाहीं॥
सो नृप बसत कहां सोउ जानें। तौ हम सब ताहीको मानैं॥
यह सुनि हम अब अति डरपायो। कैधौं झूठहि हमहि डरायो
जा नृपके हम हैं धरी, को नहिं जानत ताहि।
जड़ चेतन नर नारि सब, तिहूं भुवन वश जाहि॥
बसत सुमनपुर माहि, कहँ लगि तिन्हैं प्रशंसिये।
सब मानत हैं जाहि, तिन पठयो मुहि पान दै॥
सुनत गूढ़ मोहन की बानी। बोलीं ब्रजसुन्दरी सयानी॥
जाति तुम्हारे नृपकी पाई। अबलौं राखो कहूं छिपाई॥
जसे तुम तैसे वोऊ हैं। एक रूप गुणके दोऊ हैं॥

यह अनुमान कियो मनमें हम। एकै दिन जन्मे दोऊ तुम॥
जैसी प्रजा तैसई राजा। बन्यो भलो अब संग समाजा॥
चोरी ठगी निपुण गुण दोऊ। या पटतरको और न कोऊ॥
बोलत नाहिन बात सँभारी। ठगति फिरति ठगती तुम सारी
भई ढीठ नहि नेकु विचारी। आवत मुख सोई कहि डारी॥
अपने गुण औरन पर डारी। जाति जनावत दै दै गारी॥
हम भई ठगिनी अरु बटपारी। तुम भये कान्ह सुधर्मी भारी॥
अपने नृपको यहै सुनावो। ऐसिय चुगुली जाय लगावो॥
राजा बड़े जान यह पाई। ल्यावहु हमपर धौंस चढ़ाई॥

तुमतो ठग आछे बने, बनमें रोको नारि।
हमें कहौ काको ठग्यो, को हम डार्‍यो मारि॥
तुमहीं जानत श्याम, यन्त्र मन्त्र टोना ठगी।
ठगत फिरत सब वाम, आपन ढँग औरन कहत॥

मौन गहौ बातें सब पाई। यहै जानि हमपर चढ़ि आई॥
जो चाहो सोई कहि डारो। हम नहि मानहि बिलग तिहारो॥
तुम मोहींको दोष लगायो। मैंतो नृपको पठयो आयो॥
यौवन रूप लिये तुम इतहीं। आवत हौ इहि मारग नितहीं॥
लोचन दूतन जाय सुनायो। तब नृप रिस करि मोहिं बुलायो॥
शैशव महलनते नृपराई। बैठ्यो सिंहासन तरुणाई॥
तुरतहि मोहिं दान पहिरायो। दै बीरा तुम पास पठायो॥
तिनको नाम अनङ्ग भुवाला। उनको दान देहु ब्रजबाला॥

तिनको आनि कहत हौं कीन्हें। पैहौ जान दानके दीन्हें ॥
सुनि यह मोहन की मुख बानी। प्रेम सिंधु युवती मगनानी ॥
काम न्टपतिकी फिरी दुहाई। अटक्यो यौवन रूपहि आई ॥
को हम कहां रहति कहँ आई। यह सुधि बुधि तनु दशा भुलाई

त्रसित भई डर मदनके, नयन मूंदि धरि ध्यान।
कहत कान्ह अब शरण हम, लीजै सरबस दान ॥
ऐसे कहि मनमाहिं, देहदशा भूली सबै।
लेहु श्याम बलि जाहिं, यह धन तुम हित सञ्चियो ॥

यौवन रूप नाहिं तुम लायक। सकुचत तुम्हैं देत ब्रजनायक ॥
नवल किशोर रूप गुणआगर। अहो श्यामसुन्दर बर नागर ॥
यह यौवनधन तुम ढिग ऐसे। जलधि निकट जलकणिका जैसे ॥
ध्यानमग्न इहि विधि ब्रजनारी। मनहींमन विनवत बनवारी ॥
अन्तरयामी हरि सब जानैं। मनहींको करणी सब मानैं ॥
मनहीं सबन मिले सुखदाई। तनुको सुरति सबन तब आई ॥
खुलि गये नैन ध्यानते तबहीं। देखे मोहन सन्मुख सबहीं ॥
तब जान्यो हम बनमें ठाढ़ी। सकुचि गई अति अचरज बाढ़ी ॥
कहति परस्पर आपसमाहीं। कहां हुती हम जानत नाहीं ॥
श्याम बिना यह चरित करै को। ऐसी विधि करि मनहि हरै को
रहीं चकितसी सब ब्रजनारी। बोलि उठे तब कुञ्जविहारी ॥
कहा ठगीसी हौ ब्रजबाला। पर्‌यो कहा उर शोच विशाला ॥

करयो दान लेखो कछू, रहौं जहां तहँ शोच।
प्रगट सुनावो सो सुहौं, दूरि करौ संकोच॥
बहुरि न रोकै कोय, या बनमें कोऊ तुम्हैं।
निशि वासर भय खोय, सुखसों आवहु जाव नित॥

हम और रोकै सो को है। रोकनहार सुवन नँदको है॥
टोना डारत शीश हमारे। आप रहत ठांढ़े ह्वै न्यारे॥
जाके काम नृपतिको जोरा। ठगत फिरत युवतिन बरजोरा॥
सुनहु श्याम बूझिय नहिं ऐसी। तुमको बानि परी यह कैसी॥
कैसेहू अब कृपा करो हरि। जाहिं सबै अपने अपने घरि॥
दान मान घरको सब जाहू। बहुरि न मैं रोकौंगो काहू॥
मैंहूँ जानत हौं कछु लेखो। तुमहूँ आप समुझि मन देखो॥
पिछिलो देहु निबेर आज सब। आगे पुनि दीजो जानो जब॥
अब मैं भलो कहत हौं तुमको। जो मानो ग्वालिनि तुम हमको॥
को जानै हरि चरित तुम्हारे। अहो रसिक बर नन्ददुलारे॥
हमरो सर्वस मन अपनायो। अजहूँ दान नहीं तुम पायो॥
लेखो करि लीजो मन भायो। खाहु कछू दधि हम सुख पायो॥

सद माखन लाई तुम्हैं, सखन सहित मिलि खाहु।
सुख पावैं हम देखिकै, लीजै दान उगाहु।
अब दधिदानी नाउँ, तुम्हरो प्रकट बखानिहैं।
खाहु दही बलि जाउँ, ल्याई हम तुम्हरे लिये॥

तब हरि हँसि सब सखन बुलाई। बठे रचि मण्डली सुहाई॥

दोना बहु पलाशके लाये। शोभित सबके करन सुहाये॥
सुन्दर हरि सुन्दर सब ग्वाला। सुन्दर दधि परसति ब्रजबाला॥
भक्त भावके हाथ बिकाने। ग्वालन सङ्ग खात रुचिमाने॥
निज निज मटुकिनते सबग्वारी। देति करति उर आनँदभारी॥
श्याम पतूखिनसो मुखनावैं। निरखि निरखि ग्वालिनि सुखपावैं
धन्य धन्य आपुनको जान्यो। सफल जन्म सबहिन करिमान्यो॥
कहत धन्य यहदधि अरु माखन। खात कान्हजाको अभिलाषन
जो हम साध करत ही मनमें। सो सुख पायो हरि सँग बनमें॥
अति आनंद मगन सब ग्वारी। नंदनँदन पर तन मन वारी॥
प्यारीसों माखन हरि मांगत। देखों तुम्हरो कैसो लागत॥
औरनकी मटुकीको खायो। तुम्हरे दधिको स्वाद न पायो॥

श्रीवृषभानुकुमारि तब, दधि ल्याई मुसकाय।
अपने कर अधरन परस, दीन्हों बिहँसि खवाय।
प्यारीको दधि खाय, अलप चितै मोहन बिहँसि।
मधुरे कह्यो सुनाय, मीठो है यह सबनते॥

गोपिनके हित माखन खाहीं। प्रेमविवश नहिं नेक अघाहीं॥
वैसिय गोरस भरी कमोरी। परसत सबै होत नहिं थोरी॥
ग्वालन सहित श्याम दधि खाहीं। परम हर्ष सबके मनमाहीं॥
हँसत परस्पर सखा सयाने। मीठो कहि कहि स्वाद बखाने॥
हरि हँसि सबके चितहि चुरावैं। परमानन्द सबन उपजावैं॥

विलसत व्रजविलास बनवारी । दधिदानी प्रभु कुञ्जबिहारी ॥
सुरगण तियन सहित नभमाहीं ।निरखिनिरखिमनमाहिं सिहाहीं
धनि धनि व्रजकी युवति सभागी । खात ब्रह्म जिनते दधि मांगी
जा कारण शिवध्यान लगावैं । शेष सहसमुख जाको गावें ॥
मन बुधि वचन अगोचर जोई । जाको पार न पावै कोई ॥
नारदादि जाके गुण गावैं । निगम नेति कहि अन्त न पावैं ॥
गुणातीत अविगति अविनाशी । सो प्रभु व्रजमें प्रकट बिलासी

प्रकटे सो प्रभु व्रजमें बिलासी, जाहि मुनि जन ध्यावहीं ।
योग जप तप नेम संयम, करि समाधि लगावहीं ॥
रूप रेख न वरण जाके, आदि अन्त न पाइये ।
भक्तवश सो ब्रह्म पूरण, गोपवल्लभ गाइये ॥
कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जाके, रोम प्रति श्रुति गावहीं ।
कीट ब्रह्म प्रयन्त जल थल, आप सब उपजावहीं ॥
आप कर्त्ता आप हर्त्ता, आपहीं पालन करैं ।
खात सो प्रभु दान दधि लै, गोपिकनके मन हरैं ॥
धन्य व्रज धनि गोप गोपी, धन्य बन पावन मही ।
धन्य मोहन दान मांगत, दूध दधि माखन मही ॥
धन्य व्रज यक पलकको सुख, और यह त्रिभुवन नहीं ॥
कहत सुर मुनि हरषि पुनि पुनि, सुमन सुन्दर वर्षहीं ॥
कान्ह गोपी ग्वाल द्वै नहिं, एकही बहु तन धरे ।
भक्त जनहित विरद जाको, अमित लीला विस्तरे ॥

ब्रजविलास हुलास हरिको, नित्य निगमागम कहै।
दास ब्रजवासी सदा यह, गाय आनँद पद लहै॥
दान चरित गोपालको, अति विचित्र रसखान।
वेद भेद पावै नहीं, कवि किमि करै बखान॥
गावत सुनत सुजान, दधि दानी लीला रुचिर।
प्रेम भक्तिको दान, ब्रजवासी जन पावही॥

ब्रजललना यों हरिहि सुनावें। दूध दही माखन अरु लावैं॥
मटुकिनते लै लै हम देहैं। खाहु श्याम तुम हम सुख लैहैं।
गोरस बहुत हमारे घर घर। लीजै दान पाछिलो भर भर॥
यह गोरस जो तुमने खायो। सोलो दान आजको आयो॥
लेहु सब अपनो करि लेखो। फिर न पायहौ माँगे सेखो॥
श्याम कही अब भई हमारी। मनहि भई परतीत तुम्हारी॥
प्रीति भई हमसों तुमसों अब। लैहैं माँगि चाहिहैं जब तब॥
निधरक अब बेचहु दधि जाई। घाट बाट कछु डर नहिं राई॥
ग्वालिनि भई श्यामवशमाहीं। घरको जात बनत है नाहीं॥
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी। कहत एकसों एक विचारी॥
सुनहु सखी मोहन कह कीन्हों। दान लियो कै मन हरि लीन्हों
यह तो हम नहिं वदी सयानी। बूझो धौं इनसों यह बानी॥

बूझनको उमँगीं सबै, मोहनसों यह बात।
निकट जात रहि जाति पुनि, सकुच मगन ह्वै जात॥

मनहीं मन सकुचात, कहिये कैसे श्यामसों ।
कहत बनत नहिं बात, प्रेमविवश तरुणी सबै ॥
सुनो बात मोहन इक हमसों । ढीठो बहुत कियो हम तुमसों ॥
क्षमा करो सो चूक हमारी । अहो श्याम हम दासि तुम्हारी ॥
हँसि हँसि कहीकटुक हम बानी । तुम्हैं खिझावनहित मनमानी
कछू हमारे उरसों नाहीं । अति आनँद तुमसों मनमाहीं ॥
दधिको दान और जो जान्यो । सबै तुम्हारो कर हम मान्यो ॥
कहीं श्याम तुमयह कहकीन्हीं । दानलियो के मन हरि लीन्हीं
हम तुमसों कछु भेद न राख्यो । कीन्हीं सबै तुम्हारो भाख्यो ॥
यह करणी तुमहीं अब जानो । भली बुरी जो कछु करि मानो॥
जो जासों अन्तर नहिं राखै । सो तासों क्यों अन्तर भाखै ॥
नन्दनदन तुम अन्तरजानी । वेद उपनिषद साखि बखानी ॥
सुनहु बात युवती सब मेरी । तुमहित करि राख्यो महि घेरी ॥
तुमते दूर होत मैं नाहीं । रहत तुम्हारे निकट सदाहीं ॥
तुम कारण वैकुण्ठ तजि, प्रकटत हौं ब्रज आय ।
वृन्दावन तुम्हरो मिलन, यह न बिसार्‍यो जाय ॥
एक प्राण द्वै देह, अन्तर कहूं न जानिहो ।
यह न नयो अब नेह, कत भूतल ब्रजवास बसि ॥
अब घर जाहु दान मैं पायो । जानत यह लेखो निपटायो ॥
हँसि हँसि जो भावत बनवारी । कहत भई तब ब्रजकी नारी ॥
घर तन मनहिं बिना कित जाई । करत कहा मोहन चतुराई ॥

सब तनपर मनहीं है राजा। जो कछु करै होय सो काजा॥
सो तो मन राख्यो तुम गोई। घरको जान कौन विधि होई॥
इन्द्रियगण मनके आधीना। चलत नहीं पग नैन विहीना॥
जो तुम प्रीति करी मनमोहन। तो दुविधा क्यों लाई गोहन॥
यह तौ तुम जानौ ब्रजनाथा। घर हम जाहिं देहु मन साथा॥
मन भीतरमें बास बनायो। तुमहीं लै मोहिं तहां छिपायो॥
कहत कहा यह दोष तुम्हारो। अजहूं तजौ होहु मैं न्यारो॥
लेहु आपनो मन घर जाहू। लोक लाज डर जो पछिताहू॥
तौ अब हमैं छांडि किन देहू। हम करिहैं अन्तर निज गेहू॥

जाते घटती होय निज, तजि दीजै सो बात।
दीन्हा मनमें बास तब, अब मनको पछितात॥
जब मन दीन्हों मोहि, तबहीं लीन्हीं मोहि तुम।
जो लेहौ मन खोहि, तौ मैंहूं जैहौं अनत॥

सुनहु श्याम ऐसी नहि कहिये। सदा हमारे मनमें रहिये॥
तुमहि बिना ध्रक मनअरुध्रकघर। तुमबिनध्रक कुलकान लाजडर
ध्रक तुम प्रेमबिना पितुमाता। तुमविहीनध्रक सुत पितु भ्राता॥
ध्रक जीवन तुमबिन संसारा। ध्रक सुख तुमबिन नन्दकुमारा॥
ध्रक रसना तुम गुण नहिगावै। ध्रक श्रुति तुम्हरीकथान भावै॥
ध्रक लोचन जिन तुम न निहारे। ध्रकविचार जो तुम न विचारे
ध्रक दिन रात तुम्हें बिन जाई। ध्रक श्वासा तुमबिनाविहाई॥
सो सब ध्रक जामें तुमनाहीं। तन मन धन तुमबिना वृथाहीं॥

ऐसे कहि तनु दशा विसारी । भई सनेह मगन सब ग्वारी ॥
कबहूं घरतन जान विचारैं । कबहूं हरिकौ ओर निहारैं ॥
दधि भाजन लै शिरपर धारैं । कबहूं धरणी फेर उतारैं ॥
रीतो मटुकिनमें कछु नाहीं । कबहुं विचार रहत मनमाहीं ॥

विहँसि कह्यो तब सांवरे, जाहु घरन ब्रजनारि ।
सकुचत पिछिले दानको, मैं लेहौं निरवारि ।
ऐसे वचन सुनाय, सखन सहित हरि बन गये ॥
लै गये चित्त चुराय, युवतिन दान मनायकैं ॥

इति पूर्वार्द्ध समाप्त ।

---

# ब्रजविलास उत्तरार्द्ध ।

---

गोपिनके प्रेमकी उन्मत्त अवस्था ।

रीतो मटुकी शिरपर धारी । चलीं सबै उठि गोपकुमारी ॥
एक एकको सुधि कछु नाहीं । जानति नहीं कहां हम जाहीं ॥
जड़ चेतन कछु नहिं पहिचानैं । वन गृह कछू विचार न मानैं ॥
लोक वेद मर्यादा दोऊ । आप सहित भूलीं सब कोऊ ॥
बचत दधि बनहीमें डोलैं । लेहु दही कबहूं कहि बोलैं ॥

कहत द्रुमन बोलत क्यों नाहीं। लैहो दधि क हम फिरि जाहीं॥
तरु तरुसों पूंछत यहि भांतो। बनमें फिरत प्रेमरस मातो॥
मिलत परस्पर विवश निहारो। कहति फिरत क्यों बनमें नारो॥
तिन्हैं कहति अपनो सुधि नाहीं। सो कछु नहिंसमुझतमनमाही
दधि भाजन रीते शिर धारैं। भरो प्रेम तनु दशा बिसारैं॥
कबहूं यमुनाके तट जाहीं। फिरति कबहुं कुञ्जनके माहीं॥
कबहूं वंशीबट तट आवं। ठाढ़ी ह्वै तहँ हरिहि बुलावैं॥

लीजै गोरसदान हरि, कहँ धौं रहे छिपाय।
डरन तुम्हारे जात नहिं, तुम दधि लेत छिनाय॥
लेहु आपनो दान, पुनि रिस करि उठि धायहो।
हमैं न देहो जान, बनमें हम ठाढी सबै॥

बैठि गईं मटुकी धरि सबहीं। जानति घरसे आईं अबहीं॥
सखा सङ्ग लीन्हें हरि ऐहैं। दधि माखनको दान चुकैहैं॥
दधिहि दुरावत अंचर तरिकै। दौठि गईं मटकिनमें परिकै॥
रीतो मटको सबन निहारो। गईं भभरि उरमें सब नारो॥
जहां तहां कहि उठीं गुवाली। गोरस ढरकायो कहुं ग्वाली॥
कोउकोउ कहतकान्ह ढरकायो। कोउकह सखनसङ्ग हरि खायो
भईं सुरति कछु तब तनुमाहीं। गईं घरहि हम तबते नाहीं॥
सकुच भईं कछु गुरुजन डरते। प्रातहिते हम आईं घरते॥
रहो कहां तबते बनमाहीं। यहतो सुरत हमै कछु नाहीं॥
जब हरि सखन सँग दधि खाईं। गये बहुरि बन कुवँर कन्हाईं॥

तबलौं कौतो सुधि हम पाहीं। भई कहा पुनि जानति नाहीं॥
जानिपरी हमको तो यों री। डारि गये शिर श्याम ठगोरी॥

श्याम विना यह को करै, लायो दधिको दान।
तनु सुधि भूली तबहिते, वाकी मृदु मुसक्यान॥
मन हरि लीन्ह्यो श्याम, ता बिन निबहैं कौन बिधि।
ऐसे कहि सब बाम, घरको चलन विचारहीं॥

मन हरिसों तन घरहि चलावैं। ज्यों गजमत्त चलन छवि पावैं॥
श्यामरूप रसमदसों भारयो। कुलमर्याद महावत टारयो॥
करमनेहबन्धनसों तोरयो। मुरै न लाज कुञ्जको मोरयो॥
गुरुजन अङ्कुश जो सुधि आवै। तब तनु घरको पांव चलावै॥
ऐसे गई सदन व्रजबाला। नहिं भावत क्षण बिन नँदलाला॥
बूझत गुरुजन जब कछु जिनसो। औरै बात बतावति तिनसों॥
गारी देत सुनत नहिं कोऊ। श्रवण शब्द हरि पूरे दोऊ॥
मात पिता बहु त्रास दिखावैं। नेक नहीं सो उरमें ल्यावैं॥
बार बार जननी समुझावति। काहेको तुम हमहि हँसावति॥
जहां तहां काहे तुम जाओ। नहिं अपनी कुलकानि लजाओ॥
दधि बेंचो घर सूधे आवो। काहे इतनो विलम लगावो॥
बूझे ज्वाब देति तुम नाहीं। बसो कहा तुम्हरे मनमाहीं॥

ऐसे सिखवत मात पितु, सो न करति कछुकान।
लागत हैं तिनके वचन, उरमें बाण समान॥

तिन्हैं कहत मनमाहिं, धृक धृक इनकी [illegible]द्रिको ।
जिन्हैं श्याम प्रिय नाहिं, तिन्हैं बनै त्यागे भले ॥
जिनको हरिकी प्रीति नभावै । तिनको सुख जान विधि दिखराव
ऐसे विनय करति विधिपाहीं । गुरु जनको निंदति मनमाहीं ॥
नेक नहीं घरसें मन लागत । बिसरत श्याम न सोवत जागत ॥
नयन श्याम दरशन रस अटके । श्रवन वचन रसते नहिं भटके
रसना श्याम बिना नहिं बोलै । मन चञ्चल संगहि सँग डोलै ॥
नासा अंग सुगन्ध लुभानी । सुरत श्यामके रूप समानी ॥
चरण चलन चाहत दिशि तेही । जिहिदिशिसुन्दरश्यामसनेही
लोकलाज कुलकानि मिटाई । रँगी श्यामके रंग सुहाई ॥
प्रात चली दधि लै व्रजमाहीं । इन्द्रियगण मन बुधिवश नाहीं
तनुलै निकसीं बेंचन गोरस । रसनासें अटक्यो हरिको यस ॥
दधिको नाम भूलि गई बाला । कहत लेहु कोऊ गोपाला ॥
भीजि रह्यो मनमोहनको रस । व्यापि गई उरमाहि दिशा दस ॥
फँसी सबै खगवृन्द ज्यों, हरिछबि लटकन जाल ।
तरफरात तामें परी, निकसि सकति नहिं बाल ॥
बोलत मुख न सँभार, पान किये जिमि वारुणी ।
विथुरी अलक लिलार, पग डगमग जित तित परै ॥
दधि बेंचत व्रजबीथिन डोलैं । अलबल बचन बदनते बोलैं ॥
गोरस लेन बुलावत जोई । तिनकी बात सुनत नहिं कोई ॥
चण कछु चेत करत मनमाहीं । गोरस लेत आज कोउ नाहीं ॥

बोलि उठत पुनि लेहु गोपालहिं । अटकि रह्यो मनवा हरिख्यालहिं
लेहु लेहु कोऊ वनमाली । गलिन गलिन यों बोलति ग्वाली ॥
कोउ कह श्याम कृष्ण बनवारी । कोउ कह लाल गोवर्द्धनधारी ॥
कोउ कह उठति दान हरि लायो । कबहूं भई कि तुमहिं चलायो
देह गेहको सुरति बिसारी । फिरति शीश मटुकी दधि धारी ॥
जाहि देहकी सुधि कछु होई । दधिको नाम लेत तब सोई ॥
इहि विधि वेंचतही सब डोलैं । आप बिकानी बिनहीं मोलैं ॥
श्याम बिना कछु और न भावै । कोऊ कितनो कहि समुझावै ॥
हरि दरशन बिन मति भइ भोरी । अन्तर लगी सुरतकी डोरी ॥

पकरयो पूरण नेह उर, जित देखैं तित श्याम ।
समुझाई समुझत नहीं, सिख दै थाक्यो ग्राम ॥
ज्यों दीपक घरमाहिं, बाहर नहिं देख्यो परै ।
गुप्त होत सो नाहिं, जब तृण छ दावा भयो ॥

इहि विधि मगन सकल व्रजनारी । कृष्णप्रेमरसमद मतवारी ॥
सकल प्रेमकी मूरति पूरी । कोऊ तिनमे नाहिं अधूरी ॥
एक दशा सबहीको जानो । कहँ लगि सबको प्रेम बखानो ॥
तिनमें श्री वृषभानुदुलारी । सकल शिरोमणि हरिकी प्यारी ॥
नेक नहीं हरिते सो न्यारी । तिनकी कथा कहत विस्तारी ॥
दधिभाजन माथेपर धारै । लेहु श्याम कहि वचन उचारै ॥
बूझति तिन्हैं और व्रजनारी । वेंचत कहा फिरत तू ग्वारी ॥
प्रातहिते लीन्हें दधि डोलै । मुखते नाम कान्हको बोलै ॥

कहा करत यह हमें बतावो । कछु हमको निज बात सुनावो ॥
उफनत तक्र चुवत अँगमाहीं । ताकी सुरति तोहि कछु नाहीं ॥
इतते उत उतते इत जाई । बुधि मर्यादा सबै मिटाई ॥
मैं जानौ यह बात बनाई । तेरो मन हरि लियो कन्हाई ॥

तिन्हें कहत मुहिं नन्दघर, कहाँ सुदेहु बताय ।
जहाँ बसत वह सांवरो, मोहन कुवँर कन्हाय ॥
है धौं याही गांव, कैधौं कहुँ अन्तर बसत ।
कान्हर जाको नांव, मैं खोजत वाको फिरौं ॥

बहुत दूरते हौं मैं आई । मोहि देहु नँदसदन बताई ॥
नन्दहिके द्वारे पर ठाढो । बूझत अति संभ्रमता बाढ़ो ॥
लोकलाज कुलकी सब नासी । मन बँधि गयो प्रेमकी फांसी ॥
तब यक सखी परम हितकारी । हरिकी प्यारीकी अति प्यारी ॥
प्यारीको निज ढिग बैठाई । शिक्षा वचन कहत समुझाई ॥
अहो राधिका कुवँरि सयानीं । क्यों ऐसी अब भई अयानी ॥
ऐसे प्रगट प्रेम नहिं कीजे । देखि विचारि धीर उर दीजे ॥
हँसि हैं लखि सब ब्रजनरनारी । एकहि बार लाजतैं डारी ॥
ऐसे कहा फिरत बितरानी । मात पिता गुरुजनहिं भुलानी ॥
जो पै कृष्णप्रेम धन पैये । राखिय गुप्त न प्रकट जनैये ॥
ऐसी तोहिं बझिये नाहीं । समुझ देख अपने मनमाहीं ॥
अजहूं चेत बात सुन मेरी । कहत कुवँरि तेरे हितकेरी ॥

कृष्णप्रेमधन पायकै, प्रकट न कीजे बाल।
राखिय उर यों गोयकै, ज्यों मणि राखत व्याल॥
तू अति नागरि नारि, पायो नागर नेह जो।
तौ कत देखि उघारि, कहि हैं तोहिं गवांरि सब॥

मैं जो कहति सुनति कै नाहीं। दैहै ज्वाब कछू मोपाहीं॥
कहिहै वचन कि मौनहिं रैहै। घर अपने जैहै कि न जैहै॥
लोगन मुख सुनि हैं पितु माता। व्रजमें प्रकटी है यह बाता॥
मानैंगी मम वचन कि नाहीं। कै फिरिहै ऐसेहि व्रजमाहीं॥
जो यह प्रीति श्याम सों जोरी। लाज किये ह्वै है कह थोरी॥
ध्यान श्यामको धरि उरमाहीं। लाज छांड़ि कत भ्रमत वृथाहीं॥
मुख तौ खोल सुनहुं तुम बानी। कैसी कहति परै कछु जानी॥
कहा कहत मोसों तुम आली। मन मेरो लीन्हों वनमाली॥
तवते मोको कछु न सुहाई। जित देखौं तित कुवँर कन्हाई॥
अवलौं नहिं जानत मैं को हो। कहा कहत है अवतें मोही॥
कहां गेह को पितु अरु माता। कहँ दुरजन को गुरुजन भ्राता॥
कहां लाज कहँ कानि वड़ाई। तू कह कहत कहांते आई॥

बार बार तू कहत कह, मैं नहिं समुझति बात।
मेरे मनमें घर कियो, वा यशुमतिके तात॥
रहत न मेरी आन, अपनी सों मैं कर थकी।
तूतो बड़ी सुजान, कहा देत सखि दोष मोहिं॥

मेरे हाथ नहीं मन मेरो। सुनै कौन सखि सिखवन तेरो॥

इन्द्रियगण मनकी अनुगामी। सब इन्द्रिनको मन यह स्वामी॥
सो मन हरि लीन्हीं ब्रजनाथा। इन्द्रिय गई सबै मन साथा॥
अब मेरे वशमें कोउ नाहीं। रही जाय सब हरिके पाहीं॥
नयन दरशके लोभ लुभाने। श्रवण शब्दके माहिं समाने॥
अब ये फिरत न मेरे फेरे। कहा होत सिखये सखि तेरे॥
मेरे हाथ हाथमें नाहीं। कौन करै घूंघुटपट छाहीं॥
अबतो प्रकट भई जग जानी। वा मोहनके हाथ बिकानी॥
मन मान्यो मोहनसों मेरो। जग उपहास करै बहुतेरो॥
मेरे मन अब बस्यो कन्हाई। कै लघुता कै होहु बड़ाई॥
मैं अपनो मन हरिसों जोरयो। नाच कछ्यो तब घूंघुट छोरयो॥
अब तो मेरे मन यह मानी। मिल्यो श्यामसों ज्यों पय पानी॥

मेरो मन हरि सँग बस्यो, लोकलाज कुल त्याग।
और ताहि सूझै नहीं, भो जहाजको काग॥
ऐसे सखिहि सुनाय, मौन गही पुनि नागरी।
देह दशा बिसराय, मगन भई रस श्यामके॥

जाय परयो मन वाही ख्यालहि। बोलिउठीकोउ लेहु गोपालहि
कहत सखीसों तूको आली। कहँ वह दधिदानी वनमाली॥
नंदसदन सखि मोहि बताओ। नंद नँदन प्रिय वेगि मिलाओ॥
विरहविवश अति व्याकुल बाला। मन हरि लीन्हों नँदके लाला
दधि मटुकी लीन्हें शिर डोलै। द्वारे आय नन्दके बोलै॥
इत उत जात तहीं फिरि आवै। लेहु कान्ह दधि टेरि सुनावै॥

भ्रम भ्रम विवश भई सब ग्वाली। चली बनहि खोजन वनमाली
वंशीवट यमुनातट जाई। कहत दान दधि लेहु कन्हाई॥
फिरतविकल बनबन दधि लीन्हें। तन मन हरिको अर्पण कीन्हें
कीन्हीं दिनकर प्रेम प्रकाशा। लोकलाज डर तमकर नाशा॥
तनुकी दशा वरणि नहिं जाई। रोम रोममें रहे कन्हाई॥
प्रेम अधिक ब्रजगोपकुमारी। गावत वेद पुराण पुकारी॥

कृष्ण राधिकाके चरित, अति पवित्र सुखखान।
कहत सुनत भवभयहरण, रसिक जननके प्रान॥
रसिकशिरोमणि राय, गोपीजन मनके हरण।
कहौं सु अब सुखदाय, रसलीला जो ब्रज करी॥

देखि दशा राधाकी ग्वाली। शिक्षा करति हती जो आली॥
चकित रही मनमांझ विचारी। या शिर श्याम ठगौरी डारी॥
गई सखी सो हरिप धाई। कहइ सुनहु प्रभु कुवँर कन्हाई॥
ढूंढ़ति फिरति तुम्हैं इक नारी। अति सुन्दरी नवल सुकुमारी॥
पहिरे नीलाम्बर अति सोहै। मुखद्युति चन्द्र निरखि मन मोहै
प्रातहिंते लीन्हें दधि डोलै। लेहु गोपाल वदनते बोलै॥
भ्रमत भ्रमत अति विकल भई है। वंशीवटकी ओर गई है॥
मन वच कर्म जान मैं पाई। तुममें वाको प्राण कन्हाई॥
ताहि मिलो कबहुं सुखदाई। कहत सखी करिकै चतुराई॥
तुमबिन विरह विकल अति बाला। मिलहुवेगि ताको नँदलाला

सुनत श्याम मन हर्ष बढ़ायो। सांची प्रीति जानि सुख पायो॥
हरि हँसि विदा सखीको कीन्हों। आप दरश प्यारीको दीन्हों

परम हर्ष दोऊ मिले, राधा नन्दकुमार।
कुञ्जसदन मोहति मनो, तनु धरि छबि शृंगार॥
श्यामा अरु घनश्याम, कोटि काम रति द्युतिहरण।
ब्रजवासी उर धाम, युगुल किशोर बसो सदा॥

सोहत कुञ्ज कुटी सुखरासी। पिय घनश्याम बाम चपलासी॥
विरहताप तन दूर निवारी। बोली मोहनसों तब प्यारी॥
कहा कहौं तुम सों सुन्दरघन। कहत लजात बाम मनहींमन॥
होत चवाव सकल ब्रजमाहीं। सुनत श्रवण सहि जात सु नाहीं
जा दिन तुम गैया दुहि दीन्हीं। हाहा करि दुहनी मैं लीन्हीं
सहज गही बहियां तुम मेरी। मैं हँसि तनक वदन तन हेरी॥
तादिनते गृह मारग जित तित। करत चवाव सकल ब्रजजननित
यहै कहै ब्रजमें सब कोऊ। राधा कृष्ण एक हैं दोऊ॥
यह सुनि घर गुरुजन दुख पावें। कटुक वचन कहि त्रासदिखावें
निकसत द्वार जबहिं तुम आई। रहत सबै तब देखि लुगाई॥
निंदत तुमको मोहिं सुनाई। सो मोपै हरि सह्यो न जाई॥
कहत मनहिं सबको तजि दीजे। इन विमुखनको सङ्ग न कीजे

धिक धिकते नर नारि हरि, जिन्हैं न तुम पद प्रेम।
हित करि तुम जाने नहीं, कहा निबाहे नेम॥

मैं लीन्हीं दृढ़ नेम, सुनहु श्यामसुन्दर सुखद।
तुम पदपङ्कज प्रेम, यहै पतिव्रत पारिहौं॥

हरि तुम विन यह कासों कहिये। व्रजवसि काके बोलन सहिये
ताते विनय करति तुमपाहीं। वा पैंडे तुम आवहु नाहीं॥
जो आवो तो मुहि न जनावो। मुरलीधुनि मोको न सुनावो॥
मुरलीधुनि सुनि सुनहु कन्हाई। विन देखे मुहिं रह्यो न जाई
प्रेमाकुल सुनि प्रियकी बानी। बोले बिहँसि श्याम सुखदानी
सांच कहत व्रजके नरनारी। तुम नेकहु मोते नहिं न्यारी॥
कहन देहु गुरुजन कह जाने। वै अपने सब सुरत भुलाने॥
प्रकृति पुरुष एकै हम दोऊ। तुम मोते कछु भिन्न न कोऊ॥
उभय देह लीलाहित ठानी। घटहै भेद नहीं कछु पानी॥
जल थल जहां तहां तनु धारो। तुमतजि कहूं रहत नहिं न्यारो
देह धरेको यहै विचारा। मानिय कुल कुटुम्ब व्योहारा॥
लोकलाज गृह छांड़ि न दीजै। मात पिता गुरुजन डर कीजै॥

प्रीति पुरातन राखि उर, जाहु प्रिया अब धाम।
प्रकट न कीजै बात यह, कहत विहँसि कै श्याम॥
सुनत श्यामके वैन, हर्ष भई मन नागरी।
भयो हिये अति चैन, प्रीति पुरातन जानि जिय॥

अति आनन्द भई मन प्यारी। तव जान्यो हरि पति मैं नारी॥
भूलि गई काहे पछितानी। यह महिमा हरिकी जिय जानी॥
युग युग प्रभुलीला विस्तारी। जान लई वृषभानुदुलारी॥

हरिमुख अलप चितै मुसकानी। रही परम आनँद उर मानी
कहत सुनहु प्रिय अन्तर्य्यामी। तुम कर्त्ता हौ जगके स्वामी॥
मात पिता गुरुजन हित भाई। कहा नाथ यह नई सगाई॥
जो कर्त्ता औरै सुनि पाऊं। तौहौं प्रभु तिनको पतियाऊं॥
अरु परतीत जगतकी जानौं। तौ परमित छूटत डर मानौं॥
जो जाको सो ताहिको जानै। कैसे औरनको मन मानै॥
अब नहिं तजौं कमलपद पासा। मन मधुकर कीन्हों जब बासा
यह सुनि हरि प्यारी उरलाई। बहुविधि करि प्रबोध समुझाई॥
तनु धरि लोक वेद विधि कीजे। प्रीति रीति उरमें धरि लीजे॥

कहत श्याम अब जाहु घर, तुमको भई अबार।
प्रीति पुरातन गोय उर, करिये जग व्यवहार॥
परम प्रेम उर लाय, घर पठई हरि भावती।
चली संग सुख पाय, फिर फिर चितवत श्यामतन॥

चली सङ्ग सुख लूट किशोरी। लसत अंग मरगजी पटोरी॥
गजगति जाति भवन सुख पाई। रहे रीझि छबि निरखि कन्हाई
प्यारी मन आनन्द बढ़ाये। सुख भर चली लूटसी पाये॥
मनहि कहत अति उमँग उछाहू। यह धन प्रकट करौं नहिं काहू
सखियनहू नहिं भेद जनाऊं। कृष्णप्रेमधन गुप्त दुराऊं॥
श्याम कह्यो सोई उर धरिहौं। प्रीति पुरातन प्रगट न करिहौं॥
ऐसे मनहिं बिचारति जाहीं। तहँ इक सखी मिली मगमाहीं॥
अङ्ग अङ्ग छबि लखि मुसकानी। कहति बिहँसि प्यारीसों बानी

कहु फूलीसी आवति राधा । आज रूप कछु अङ्ग अगाधा ॥
वदन सिकोरति मोरति भौहैं । कहति कछु मनहीं मनमो हैं ॥
देखियत कछु अङ्ग रसभीने । सुलभ मनोरथ हरि सँग कीने ॥
हमसों सो सब बात उघारो । दुरत न गन्ध दुरावनहारो ॥

फिरत हती व्याकुल अवहिं, जिनके दरशन लाग ।
कहां मिले नँदनंद सो, धनि धनि तेरो भाग ॥
नहिं पावत हैं जाहि, योगीजन जप तप किये ।
वश करि पायो ताहि, तैं कसे कहु नागरी ॥

कहा कहति सखि भई बावरी । करन कछू चाहत चबाव री ॥
तू हँसि कहत सुनो जो कोऊ । सोतो सांचि मानिहै सोऊ ॥
चकित होति सुनि अचरज तेरो । है चबाव पुनि घर कहुँ मेरो ॥
ऐसो होय कहति तू जैसे । गुरु जनमें निवहौं पुनि कैसे ॥
कहा भेद कछु तोसों मोसों । मैं दुराव करिहौं सखि तोसों ॥
को नँदनन्द कहति तू जिनको । मैं कबहूं देख्यो नहिं तिनको ॥
के गोरे कै वरण सांवरे । रहत ब्रजहिंके अनत गांवरे ॥
मैं तो नहिं जानति वे जैसे । तू बहु बात मिलावति कैसे ॥
जाहि चली जानी मैं तोको । कहा भुरावति है तू मोको ॥
अबहीं फिरति हती बौराई । आजहि पढ़ि लीन्हीं चतुराई ॥
याही व्रज हम तुम अरु वोऊ । दूर नहीं जो है कहुँ कोऊ ॥
परिहो कबहूं फंद हमारे । करिहैं तबहि जुहार तुम्हारे ॥

निपुण भई उनके मिले, वह सुधि गई भुलाय।
आवति हैं बन कुंजते, बातैं कहति बनाय॥
रीझे श्याम सुजान, कहे देति अँगकी पुलक।
मोसों करत सयान, सगिबगि रही सनेहजल॥

हँसत कहत कैधौं सत बानी। तेरी सौं मैं कछुअ न जानी॥
कह्यो कहा मुहि बहुरि सुनावे। तोहिं सोंह मेरी जु दुराव॥
कबहू कछू भाव यह पायो। तैं देखयो के किनहु सुनायो॥
ऐसौ कहत और जो कोऊ। सुनतौ मोपै उतर न सोऊ॥
बूझत मोहिं लगावत लाही। सपनेहू देखयो नहिं जाही॥
ऐसौ मोहिं कहौ जिन कोई। झूठौ बालनिपर दुख होई॥
उचटाये पैहै कछु मोसों। बहुरि नहीं बोलोंगी तोसों॥
तोते और काहि हित पैहों। जाते हितकी बात जनैहों॥
यह परतीत न तोको होई। मैं राखति तोते कछु गोई॥
चतुर सखी मनमें जब जानी। मोतें तौ कछु नाहिं छिपानी॥
त्रास भई याते मनमाहीं। ताते बात कहति यह नाहीं॥
तब यह कही हँसत मैं तोसों। जित मनमें दुख मानै मोसों॥

मानी तेरी बात अब, कहँ तू कहँ वे श्याम।
हमहु उन्हें जाने नहीं, बसत कौन धौं गाम॥
हम आगेकी आइ, भई सयानी लाडिली।
हँसत कह्यो घर जाइ, तैं नहिं हरि कबहू लखे॥

सकुच सहित वृषभानुदुलारी। गई सदन गुरुजन डर भारी॥
जननी कहत कहां हति प्यारी। डोलति फिरति अजहुं है वारी॥
घर तुहि तनक देखियत नाहीं। दधि लै जात फिरत बनमाहीं॥
श्यामसङ्ग बैठति है जाई। आज तोहिं फिरवत हो माई॥
काहेको उपहास करावति। दधिहि बेंचि सूधे किन आवति॥
वृथा करति मैया रिस मोसों। को अब बात कहै री तोसों॥
ऐसो को वढ़ि गई विधाता। श्यामसङ्ग फिरि है सुनि माता॥
कोनें बात कही यह तोसों। ताको नाम लेहि किन मोसों॥
धन्य मात धनि धनि तू माई। ऐसी बात कहति मुहँ लाई॥
तू परघर जया चया कित जाई। मैं बरजति नहिं नेकु डराई॥
श्यामा श्याम सकल ब्रजमाहीं। ह्वै रहे लाज लगति तुहि नाहीं॥
वड़े महरिकी सुता कहावति। काहेको पितु मात लजावति॥

खेलनको मैं जाउं नहिं, कहा कहति री मात।
मोपै जात सही नहीं, यहै अनोखी बात॥
घर घर खेलन जात, गोपनकी सब लरकिनी।
तू मोहीं रिसिधात, तिनके मात पिता नहीं॥

मनहीं मन समझति महतारी। अवहीं तो मेरी है वारी॥
कहा भयो तनु वाढ़ भई है। लरिकाई अवहीं न गई है॥
झूठहि बात उड़ी यह सारी। श्यामा श्याम कहत नर नारी॥
खेलत देखि कहत सब कोऊ। अवहीं तो बालक हैं दोऊ॥
सुनत सुतामुख रिसकी बानी। मनहीमन कीरति मुसक्यानी॥

तब गहि उर लाई चुचकारी। परबोधति उरसों रिस टारी॥
खेलहु सङ्ग लरिकिनिनमाहीं। खेलनको मैं बरजत नाहीं॥
श्यामसङ्ग सुनि होत दुखारी। झूठहि लोग लगावत गारी॥
जाते कुलको दूषण होई। सुनि प्यारी कीजै नहिं सोई॥
अब राधा तू भई सयानी। मेरी सीख लेहि जिय मानी॥
जननीके मुखकी सुनि बानी। श्रीवृषभानु सुता मुसकानी॥
मन मन विनय करत हरिपाहीं। सुनहु श्याम तुम सब घटमाहीं

मात पिता मानत मनहिं, लोकलाज कुलकान।
नहिं जानत तुमको सुखद, जगत ईश भगवान॥
लेत तुम्हारो नाव, सकुचति हौं इनके निकट।
यह समुझत पछताव, तुम बिमुखनमें क्यों रहौं॥

तुम मोहि कह्यो कानिकुल राखो। क्योंविषखायसुधाजिनचाखो
जिन्हैं नाथ तुम पद दृढ़ प्रेमा। कैसे तिनसों निबहत नेमा॥
अहो श्याम मैं मन क्रम बानी। नाथ तिहारे हाथ बिकानी॥
ऐसे कृष्ण हृदयमें आनी। बोली जननीसों हँसि बानी॥
तू अब कहति कहा मोकोंरी। अकथ बात है मां कछु तोरी॥
अब हरिसङ्ग न खेलौं जाई। जा कारण तू मोहि सुगाई॥
आवन दे बाबा घरमाहीं। यह सब बात कहौं उनपाहीं॥
देति गारि मुहि श्याम लगाई। ऐसे लायक भये कन्हाई॥
रोकी मोकों कालहि गलीमें। सखिन सङ्गमें जाति चली मैं॥
लागे कहन बँसुरिया मेरी। तू लै गई चुराय सो दे री॥

छूठि आटैं मोसों है जिनसों। मोहिं लगावति है तू तिनसों॥
सुन सुन कर राधाकी बानी। मुख निरखत जननी मुसकानी॥

कहति मनहिं मन अबहिंलों, नहीं गई लरि काय।
बारेहीके ढँग सबै, अपनी टेक चलाय॥
अब जैहै मचलाय, कापै जाय मनाय पुनि।
हारि मानि रहि माय, बालकबुधि जिय जानिकै॥

बोलि लई हँसिकै दुलराई। पुनि पुनि कहि मेरी रिस हाई॥
कंठ लगाय लई अति हितसों। रहीचकितशोभा लखि चितसों
चतुरशिरोमणि हरिकी प्यारी। परम चतुर वृषभानुदुलारी॥
बातनहीं माता बहराई। नीके राखि लई चतुराई॥
कृष्णप्रेमधन पाय छिपायो। सङ्ग सखी तिनहूं न जनायो॥
जैसे कृपन महाधन पावै। धरत दुराय न प्रगट जनावै॥
सखी मिली जो मारगमाहीं। कह्यो जाय तिन सखियनपाहीं॥
सुनहु सखी राधाकी बातैं। कैसी आज करी उन घातैं॥
वृन्दावन ते अबहीं आई। हर्ष सहित मैं लखि मग पाई॥
और भाव अङ्ग छवि छाई। श्यामहिं मिली भई मन भाई।
मोको देखतही हँसि दीन्हीं। मैं हूं हर्ष मनहिंमन कीन्हीं॥
जब मैं कही मिले हरि तोसों। तब रिस करि फेरयो मुख मोसों

मोसों तब लागी कहन, को हरि काको नांव।
क गोरे कै सांवरे, बसत कौनसे गांव॥

मैं तो जानत नाहिं, लेत नाम तू कौनको।
लखे न सपनेहुंमाहिं, सांच कहति कै हँसति मुहिं॥
ऐसे कहि टेढो करि भौहैं। चितई नेकु न मोतन सोहैं॥
वह निधरक मै सकुच गई री। और कहौं तौ करत खई री॥
तब मैं यह कहि घर पठई री। मैं झूठी तू सांच भई री॥
दोऊ एक भये अब आई। हमहूं सों यह बात दुराई॥
घर धौं जाय कहा अब कैहै। कैसी धौं तहँ बुधि उपजैहै॥
सुनिके बात सखी मुसुकानी। प्यारिहि देखनको अतुरानी॥
कहत सबै जबहीं हम जैहैं। तबहीं जाय प्रगट करिदैहैं॥
कहा रहै यह बात छिपानी। दूध दूध पानी सों पानी॥
आंखिन देखतही लखि जैहै। कैसे हमसों बात छिपैहै॥
अपनो भेद नहीं वह कैहै। सुनिहौं कैसे गाल बजैहै॥
लखहु चरित जाय तुम वाको। राधा कुवँरि नाम है जाको॥
मैं बूझ्यो करि बहु चतुराई। नेकहु थाह न वाकी पाई॥
बड़े गुरूकी बुधि पढो, कहू नहीं पतियात।
एकौ बात न मानिहै, सौ सौ सौहैं खात॥
रहिहै सब पछिताय, सुनत वचन वाके बदन।
अब जैहै रिसियाय, बातन बैर बढ़ाइहौ॥
कहा बैर हमसों वह करिहै। बातन कैसे हमहिं निदरिहै॥
औरनसों जो करती टारौ। तो हमहूं जानती सयारौ॥
वाकी जाति भले हम पाई। हमहीं सों यह बात चराई॥

परिहै जब मेरे फंद आई । दूरि करौं वाकी लँगराई ॥
जो नहि हमसन भेद कहैगी । पुनि कैसेके निबहैगी ॥
हमसों बैर किये कह पैहै । बहुरि लिये मटुकी शिर ऐहै ॥
चलो सबै देखे घर ताको । है निधरक कैधौं डर वाको ॥
बूझे बात कहा धौं कैहै । हम सों मिलिहै कै दुरि जैहै ॥
रिस करिहैं कैधौं हँसि बोलै । बात छिपावै कैधौं खोलै ॥
सहज स्वभाव किधौं गरबानी । यह कहि चलीं अली सबस्यानी
गई निकट राधेके जबहीं । जान गई नागरि मन तबहीं ॥
ये सब मोपर रिस करि आई । तब इक मनमें बुद्धि उपाई ॥

काहूको कीन्हों नहीं, आदर करि चतुराइ ।
मौन गही बोलत नहीं, बैठि गई निठुराइ ॥
लखि सब सखी सुजान, बैठि गई ढिग आपई ।
और बात बखान, आपसमें लागीं करन ॥

राधा चतुर चतुर सब आली । चतुर चतुरकी भेंट निराली ॥
उन तौ गही मौन निठुराई । इन लखि लई तासु चतुराई ॥
सुहांचही आपसमें कीन्हीं । याकी बात सबै हम चीन्हीं ॥
कहा भेद हमसों यह भाखै । उलटे हमहीं पर रिस राखै ॥
बूझहु याहि खुनट करि कोई । कहा आज इन मौन लयोई ॥
हमसों कहा ओट इन लीन्हीं । साठ सई हमहीं कर दीन्हीं ॥
एक सखी तब बिहँसि सुनायो । कहौ मौनव्रत किन सिखरायो
धनि वह गुरु मन्त्र जिन दीन्हों । कान लगतही ऐसो कीन्हों ॥

कालहि और परभातहिं औरै। अबहिं भई कछु और कि औरै॥
सुनि यह बात सबै हम धाईं। चकित भईं देखन तोहिं आईं॥
कहा मौनको फल अब कहिये। सुनैं कछू तो हमहूं गहिये॥
इक सँग सबै भईं तरुणाईं। मन्त्र लियो तब हम न बुलाईं॥

अब तुमहीं को हम करैं, गुरु देहु उपदेश।
हमहूं राखैं मौनव्रत, करैं तुम्हें आदेश॥
हमको कियो अजान, चतुर भई तू लाडिली।
कहँ सीख्यो यह ज्ञान, ऐसी विधि लागी करन॥

रहत एक सँग हम तुम प्यारी। आजहिं चटक भई तू न्यारी॥
कहा भयो तोहिं किनहि सिखाई। नई रीति यह कहां चलाई॥
हम तो तेरे हित की करिहैं। और कहै तासों सब लरि हैं॥
सुनत कुवँरि सखियनकी बानी। बोली करत सबै यह जानी॥
गुणआगरी नागरी सयानी। बोली सहित निठुरई बानी॥
तुम प्रीतम कै बैरिनि मेरी। बूझति तुम्है कहो सखि हेरी॥
वाको कहति जु गैल मिली री। नहीं कहो उन मोहिं भली री
कह्यो मोहिं तुम श्याम मिले री। मैं चक रही सोंह मोहिं तेरी॥
मेरे अँग छबि और बताई। तब मैं भई बहुत दुखदाई॥
जिनको मैं सपने नहिं जानो। फिरि फिरि तिनकी बात बखानो
मेरो कछु दुराव है तुमसों। तुमही कहो सखी सब हमसों॥
कहां रहति मैं कहां कन्हाई। घर घर करत चवाव लुगाई॥

और कहैं तो मोहिं कछु, नहिं व्यापहि मनमाहिं।
तुमही कहौ जो बात यह, तौ दुख होय कि नाहीं॥
तमपर रिस मो गात, ताते आदर नहि कियो।
सुन प्यारीकी बात, रहीं सबै मुखतन चिते॥

बोली एक सखी तिनमाहीं। हमतौ तोहि कह्यो कछु नाहिं॥
ताहीपर होती रिस आई। जिन यह तोसों बात चलाई॥
प्रथमहि हमें प्रकट यह करती। हमहूं ताहीसों सब लरती॥
क्यों सखि प्यारिय दोष लगावै। झूठी बातन बैर बढावै॥
तेरे श्याम कहां इन देखे। काहे को सपनेहूं पेखे॥
भेदहि भेद कहत सब बातैं। दे दे सैन करत सब घातैं॥
प्यारी सबके मनकी जानै। सबसों रूखे वचन बखानै॥
कौन कौनको मुख सखि गहिये। जाको जो भावै सो कहिये॥
मनते गढि गढि बात बनावै। झूठीको सांचो ठहरावै॥
विना भीतही चित्रित केरो। बातन गहि आकाशहि फेरो॥
नेक होय तौ सबही सहिये। झूठी सबै सुनत उर दहिये॥
आवत बोलि न सुनि सुनि बातें। रहियत मौन सबनते तातें॥

वृथा झेर मोसों करत, कहि कहि झूठी बात।
भलो नहीं उपहास यह, मैं सकुचत दिन रात॥
मिल सखी जो श्याम, और कहा याते भली।
सुनियत हैं अभिराम, नन्दमहरको सुवन अति॥

कैसे हैं वे कुवँर कन्हाई। जिनको नाम लेत यह माई॥
नयनन भरि मैं देखे नाहीं। सुनियत सदा रहत ब्रजमाहीं॥
कहति लजाति बातइक तुमको। इक दिनमोहिं दिखावहु उनको
देखहुँ धौं कैसे हैं तिनको। तुमसब मोहिं कहति हो जिनको॥
सुनि वृषभानुसुता की बानी। हँसीं सबैं गोपिका सयानी॥
सुनु प्यारी तुम्हें सीख हमारी। कहम देहिं कहिं करें कहा री॥
तोको झूठ कहे कइ पैहैं। आपन को वे पाप कमैहैं॥
यह काहू पै जात छपायो। नेक सुगन्ध न दुरत दुरायो॥
मैं काहेको कान्हहि देखो। खरक दुहावनहू नहिं पेख्यो॥
सुनहु सखी राधाकी बानी। कहत कछु यह अकथ कहानी॥
रहति सदा ब्रजगांव मँझारी। इन नहिं देखे री गिरिधारी॥
जो हम सुनी रही सो नाहीं। ऐसेहि बायु बही ब्रजमाहीं॥

सुनु प्यारी अब तोहिं हम, दिखरैहैं नँन्दनन्द।
तब वदिहैं यह राखिहो, देखि उन्हें छलछन्द॥
जब ऐहैं इत श्याम, तब हम तोहिं बतायहैं।
ताहि देखि हैं बाम, है उनहूं अभिलाष अति॥

तब तू चीन्हि लीजियो उनको। कहति नहीं देखे मैं जिनको॥
हैं कैसे कारे कै गोरे। सुन्दर चतुर किधौं अति भोरे॥
तोहिं देखि ओऊ सुख पैहैं। मेरे हित बांसुरी बजैहैं॥
नाना भाव करैंगे जबहीं। हम सब तोहिं दहैंगी तबहीं॥
तुमहौ चतुर राधिका जैसे। वेऊ श्याम चतुर हैं तैसे॥

हँसनि कहति सब गोपकिशोरी। चिरजीवहु यह सुन्दर जोरी॥
कबहू तो फँद परिहो आई। तबहीं देहि चिन्हाय कन्हाई॥
सुनतव्यंग्य सखियनको बानी। मन मन बिहँसत कुवँरिसयानी
चतुराई नीके गहि राखी। सखियनसों हँसि ऐसे भाखी॥
जो तुम जियमें औरे जानो। मेरी बात प्रतीत न मानो॥
जो अब मोहिं श्यामसँग पावो। तब कीजो अपनो मन भावो॥
कान्ह पीतपट बेसर मेरी। लीजो छोरि तबहिं गहि ए री॥

यह सुनिकै सब हँसि उठीं, प्यारी बदन निहारि।
आईही अति गर्व कर, चलीं सखी घर हारि॥
कहति परस्पर जात, निडर भई अति राधिका।
कबहू तौ हम घात, परिहैं दोऊ आयकै॥

तौसहु दिन जो चोर चोरैहै। साहहु पकरि केहू दिन पैहै॥
बोली एक सखी तब तिनसों। भेद लियो चाहति तुम उनसों
दूर धरो मनते यह भाई। बैठि रहो अपने घर जाई॥
अति बर बोल गई कह कीन्हों। कैसो निठुर भई कछु चीन्हों॥
वह नहिं फन्द तुम्हारे आवै। छन्द बन्द वाके को पावै॥
वह सबहिनमें बडी सयानी। मेरी बात लेहु तुम मानी॥
बोली अपर सखी सुन मोसों। लीक खेंचि भाषत मैं तोसों॥
फेर फार देखो हम धरि हैं। ऐसे कैसे हमहिं निदरिहैं॥
अबतो भेद कियो है प्यारी। हमहू को यह रिस है भारी॥
तब लगि मनमें धीर न लै हैं। जबलग चोरी पकरि न पैहैं॥

निशि बासर अब हम सब कोऊ। श्यामा श्याम देखिहैं दोऊ॥
ताही दिन तिनसों हम लरिहैं॥ जादिन नीके पकरि निदरिहैं

सब ब्रजगोपिनके बसी, बात यहै मन आन।
हरि राधा दोऊ मिलैं, निशि बासर यह ध्यान॥
सबहिन मुख यह बात, और कछू चरचा नहीं॥
नन्दमहरको तात, सुता महर वृषभानुकी॥

यहै चबाव करति सब गोपी। हमसों बात राधिका लोपी॥
लरिकाईते हम सब जाने। कीन्ही प्रीति श्यामसों याने॥
तब सतभाव न हती भुठाई। अब हरिसंग सीखी चतुराई॥
आज मौन धरि कियो दुराऊ। सदा होत किहि भांति बचाऊ॥
दिन द्वै चार भोर अब टारो। रहो स्वभाव भोर जिनि पारो॥
करन देहु इनको लँगराई। आपुहि बात प्रगट ह्वै जाई॥
तब इक सखी कही यों बानी। कहा कहत तुम बात अयानी॥
तुम जु कहति वह जानति नाहीं। हैं हम सब वाके नखमाहीं॥
सात बरसते प्रीति लगाई। तुम तो आज जानि है पाई॥
वाको चतुराई किन जानी। मौन कबहिंधौं पीवत पानी॥
हरिके ढंग सिखी सब वोऊ। हैं बारह बानी वै दोऊ॥
देखहु कालहि केहु पतियानी। फिरि आई हम सब खिसियानी

ऐसे सब ब्रजसुन्दरी, मिलिके करति चबाव।
राधा हरि उरमें बसे, और न बात सुहाव॥

यह रस जान अनूप, व्रजवासी प्रभु प्रेमको।
करिकै कृपा स्वरूप, होय रहीं व्रजकी तरुणि॥

श्रीराधा प्रातहि तहँ आई। जहां जुरी सब सखिन अथाई॥
आवति लखि सब रहीं चुपाई। पेखत वदन गई सकुचाई॥
करति हुती उनहींकी वातें। सकुचि गई तरुणी सब तातें॥
आनि आदर करिकै वैठारी। कही कहां तू आई प्यारी॥
कहा हमारी सुधि तैं लीन्हीं। वड़ी कृपा कछु हमपर कीन्हीं॥
मैं कह आज अनोखे आई। तुम जु करति आदर अधिकाई॥
पहुनी करि करिये पहुनाई। मैंतो आवति जाति सदाई॥
कैसी कहति वात तू प्यारी। वैठनको नहिं कहैं कहा री॥
तू आई करि कृपा हमारे। हमहूं कहा मौनव्रत धारे॥
तव हँसि वोली कुँवरि सयानी। करी तर्क मोसों तुम जानी॥
ता दिनको वदलो यह कीन्हों। मोसों दांव आपनो लीन्हों॥
यह सुनि हँसीं सकल व्रजनारी। कहन लगीं सब सुनु री प्यारी

दांव वात जानति तुमहिं, हमतौ शुद्ध स्वभाव।
तोहिं मान आई सदा, तैसे मानति भाव॥
तुम राखी मन लाय, तादिन वात भई जु वह।
हम डारी विसराय, मान लई तेरी कही॥

चोर सबै चोरी करि जानैं। ज्ञानी सब मन ज्ञानहि मानैं॥
सुनि यह कुवँरि मनहि मुसकानी। कह्यो सखी यह सांच वखानी
जैसी जाके मनमें होई। वात कहति मुख तै सो सोई॥

मैं तो साँच कही तुमपाहीं। कैसे धौं हरि जानत नाहीं॥
हरषि सखिन तब उरसों लाई। कहत कहा तू रिस भरि आई॥
हँसति कहति तोसों हम प्यारी। तू मति मानैं बिलग कहा री॥
तुमहीं उलटी पुलटी भाखौ। तुमहीं रिस करि उरमें राखौ॥
तुमहीं हरिको नाम बखानौ। तब मैं सुन्यों कछु तुम मानौ॥
जब हरिसंग मोहिं कहुँ लहियो। तब मनभावै सो कछु कहियो॥
अब कैसे अस्नान चलौगी। कै मोसों कछु फेरि लरौगी॥
वहै बात गठिबन्धन कीन्हीं। नहिं भूलिहौ जानि मैं लीन्हीं॥
गहि गहि सबकी भुजा उठाई। चलहु न्हान कबकी मैं आई॥

यहि विधि हास हुलास करि, सखिन संग सुकुमारि।
चली न्हान यमुना नदी, श्रीवृषभानु कुमारि॥
सकल रूपकी रास, नवनागरि मृगलोचनी।
भरी अनन्द हुलास, कृष्णप्रेममें एक मति॥

---

## स्नान लीला।

चलीं यमुन सब नवलकिशोरी। कनक वरण तनु कोमल गोरी॥
करत परस्पर सब सुकुमारी। हास विलास कुतूहल भारी॥
गई यमुनतट गोपकुमारी। सँग सोहति वृषभानुदुलारी॥
देखि श्याम जल लहरि सुहाई। पैठीं सलिल न्हान अतुराई॥
श्यामा सहित न्हात सब नारी। विहरत जलविहार सुखकारी॥
कण्ठप्रमाण नीरमें ठाढी। छिरकत जल अति आनन्द बाढी॥

करति विविधविधि हासविलासा। एक एक गहिकरति हुलासा
लै लै करसों नीर उछारैं। निरखि परस्पर मुखपर डारैं॥
मानौं शशिसेना सजि आये। लरत जलज जल अस्त्र बनाये॥
सुनि तहँ श्याम युवति मनरञ्जन। आये कोटि कामद्युतिभंजन॥
निरखत तट ठाढ़े छवि भारी। यमुना जल विहरत व्रजनारी॥
कबहुं मधुर कल वेणु बजावैं। नान्हे सुरनमाहिं कछु गावैं॥

काछे नटवर भेषवर, चर्चित चन्दन अङ्ग।
ठाढ़ उमंगि कदम्बतै, कीन्हें अङ्ग त्रिभङ्ग॥
तन घन सुन्दर श्याम, व्रजतीयन चातक सुखद।
नखशिख अति अभिराम, ध्यान काम पूरण सकल॥

पदनख इन्दु प्रभा द्युतिहारी। चरण कमल शीतल सुखकारी॥
जानु जंघ अति सुभग सुहाई। करभ रम्भ लखि रहत लजाई॥
कटि पीत पट काछनी काछे। केशर कमलन पटतर आछे॥
क्षुद्रावली कनक छवि छाई। नाभिगंभीर वरणि नहिं जाई॥
मनहुं मराल बालकी श्रेनी। सर समीप सोहति सुखदेनी॥
बड़े बड़े मोतिनकी माला। बिच रोमावलि झलक विशाला॥
मनहुं गंग बिच यमुना आई। चलीं धार मिलि तीन सुहाई॥
बाहुदण्ड दोउ तट कमनीया। चन्दन अङ्ग रेत रमनीया॥
बनमाला तरु तीर सुहाये। फूलि रहे पचरङ्ग छवि छाये॥
कम्बु कण्ठ त्रयरेख सुहाई। तीनि भुवन शोभा जनु छाई॥

चिबुक चारु गाढो मन मोहै। मुख छबिसिन्धु भंवर जनु सोहै॥
अधर दशन द्युति वरणि न जाई। तडितबिम्बकहंवहछबिछाई॥

शुक नाशा खञ्जन नयन, भ्रुकुटि काम कोदण्ड।
मणिकुण्डल रबि छबि हरत, सोहत शीश शिखण्ड॥
उपमा गई लजाय, निरखि श्यामको रूपवर।
जहँ तहँ रही छिपाय, पटतरको पहुँची नहीं॥

उपमा हरितन देखि लजानी। दुरी भूमि कोउ बन कोउ पानी॥
कोटि मदन अपनो बल हारे। मुकुट लकुट भ्रूमटक निहारे॥
कुण्डल निरखि भ्रमतरबिरहहीं। तपन हृदय चण धीर न गहहीं॥
अलक नाशिका करपदनयनन। अलिशुककमल मीन खञ्जनगन
लखि सकुचाय रहत बनमाहीं। कहत हमैं कबि कहत वृथाहीं
दशन दमक दामिमी लजानी। चण प्रकटत चणरहत छिपानी॥
समुभात सधर अधर अरुणाई। बिद्रुम बन्धू बिम्ब लजाई॥
गगन रह्यो शशि वदन निहारी। घटत घटत नित शोचत भारी
चारुकण्ठ लखि अति सकुचानो। रहत शंख जलमांझ छिपानो
बाहु देखि अहि बिवर समाने। केहरि कटि लखि बनहि पराने॥
गज गति गुलफ निरखि शरमाई। ऊंची आंख न सकत उठाई
निज इच्छा छबि हरि बपु धारी। दीन्हीं पटतर मेटि मुरारी॥

अनुपम छबि कबि क्यों कहै, बिन उपमा आधार।
ब्रजतिय मोहन मनहरण, सुन्दर नन्दकुमार॥

अधर मनोहर बैन, मन्द मन्द बाजत मधुर।
उपजावत मन मैन, ब्रजसुन्दरि नव नागरिन ॥
जलविहार करि गोपकिशोरी । निकरि चलीं तटको सब गोरी
जानु जंघ जललों सब आई । चुवत नीर अचरन छबि छाई ॥
परे दृष्टि मोहन तटमाहीं । ठाढे कदम विटपकी छाहीं ॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी । पंगु भई मति गति बहरानी ॥
इतहि लाज सखियनकी आई । दरशन हानि न उत सहि जाई ॥
मनहि ज्ञान करि यह अनुमानी । लेहैं आज सखी सब जानी ॥
जानि गई यह अली सयानी । जानि बूझि सब भई अयानी ॥
बहुरो न्हान लगीं सब पानी । रहीं इतै करि आनाकानी ॥
प्यारी कबहुँ श्याम तनु हेरैं । कबहूं दृष्टि सखिनते फेरैं ॥
जानी सबै न्हात जलमाहीं । मेरी दिशि चितवत कोउ नाहीं ॥
तब मनमें यह बात विचारी । देखि लेहुँ अब छबि गिरिधारी॥
यह दरशन कबधौं फिरि होई । ललकि लगी अँखियां हठि दोई
निरखति श्यामा श्याम छबि, पार निमेषन मोर ।
नैन वदन शोभित मनों, द्वै शशि चारि चकोर ॥
करत मुदित दोउ पान, रूप माधुरी अमियरस ।
तृप्त न क्योंहू मान, विवश भये मन दुहुँनके ॥
यद्यपि सकुच सखिनको गाढो । तदपि रुको न चितवन बाढो ॥
उमँगि गई सरिताको नाहीं । सन्मुख श्याम सिंधुके माहीं ॥
भरो सलिल अनुराग अथाहा । भवँर मनोरथ लहर उछाहा ॥

कुलमर्याद करार ढहाये । लोकसङ्कुच तरु तीर बहाये ॥
धीरज नाव गही नहिं जाई । रहे थकित पल पथिक डराई ॥
इकटक घोर अखण्डित धारा । मिली श्यामछबिसिंधु अपारा ॥
कहति सखी सब आपसमाहीं । नयन सैन दै दै मुसकाहीं ॥
देखहु री प्यारी उत अटकी । ना जानिये कौन अँग लटकी ॥
कालिहि हमहिं कैसे निदरी है । मेरे चित अब खुटक परी है ॥
बात कहत सेलै सुख बुलसी । देखहु अब देखत किमि हुलसी ॥
सुन्दरि पियके रूप लुभानी । वे बातें अब सबहि भुलानी ॥
इकटकरही नेक नहि मटकी । को जानै काहूके घटकी ॥

भई भाव भोरे कछू, देखतही सुखदाय ।
चित्र पूतरी सी रही, देह दशा बिसराय ॥
उत वे रहे लुभाय, नागर नवलकिशोर बर ।
प्यारी सुख दृग लाय, नैन नहीं मटकत कहूं ॥

औरै भाव भई सखि प्यारी । बढ्यो प्रेम अंकुर तरु भारी ॥
गई तासु जर सप्तपताला । पहुँच्यो अन्तर शिखर विशाला ॥
वचन पल्लव अवलोकन शाखा । सब जग छांह छई अभिलाखा ॥
गुणविधि सुमन सुगन्धि निकाई । लगी जाइ आनन्द सुहाई ॥
पूरण आसन बनि भरभारा । फल लाग्यो बर नन्दकुमारा ॥
रहे रीझि तन मन धन वारैं । अरस परस दोउ खूब निहारैं ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई । प्यारी देखे कुवँर कन्हाई ॥
वेई हैं सुन्दर सुखदाई । जिनकी ब्रजमें होत बडाई ॥

हपैं कहनहौ मोहिं दिखावहु। देखि लेहु अब मन सुख पावहु॥
बहुत लालसाहौ मन तेरे। ताहीते हरि आये नेरे॥
पूजो आश दरश अब पाये। हमहीं इनको बोलि पठाये॥
राखौ चीन्हि इन्हें अब नीके। ये मनभावन हैं सबहीके॥

भले शकुन आई इहां, भयो तुम्हारो काज।
अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हें ब्रजराज॥
भयो नागरिहि शोच, सुनि सुनि सखियनके वचन।
कहत करी मैं पोच, इन जानी अब बात सब॥

मैं हरितन लखि रूप लुभानी। सो ये देखि सबै मुसकानी॥
काल्हि कही इनसों मैं वैसे। देखौ आज मोहिं इन ऐसे॥
इन आगे मो बात न यानी। अब ये करत मोहिं बिन पानी॥
मोहीपर मेरी चतुराई। परी उलटि उर अति सकुचाई॥
कहत सखिनसों ज्वाब न आयो। तब मनमें हरि पियको ध्यायो
अहो श्यामसुन्दर सुखदानी। मैं प्रभु तुम्हरे हाथ बिकानी॥
अब सहाय सुन्दर तुम कीजे। मेरी बात नाथ रख लीजे॥
ऐसो उत्तर देहु जनाई। जाते मेरी पति रहि जाई॥
ऐसो हरिको सुमिरि सयानी। तब इक बात मनहिं मन ठानी॥
उरमें भयो बुद्धि परकाशा। तब कीन्हों मनमांहिं हुलासा॥
सखिन कह्यो अब घर चल प्यारी। रूई यमुनतट बहुत अबारी
कलको न्हान इहां हम आई। ऐसे कहि कहि सब पछिताई॥

कियो दरश तुम श्यामको, घर चलिहौ कै नाहिं।
चौन्हि रहो मिलियो बहुरि, यह कहि सब मुसुकाहिं॥
तब सखियनके साथ, चली सदनको नागरी।
उरमें धरि ब्रजनाथ, प्रेममगन बोली नहीं॥

हँसि बूझति इक गोपकुमारी। कहो श्याम कैसे हैं प्यारी॥
भाये री तेरे मनमाहीं। हैं सुन्दर कछु केधौं नाहीं॥
कै हमसों फिरि बात लुकैहौ। कै अब मनको सांच जनैहौ॥
हम बरणो जैसे तुहिंपाहीं। कहु तैसे हरि हैं कै नाहीं॥
कहति मनहिं वृषभानुदुलारी। मेरे ख्याल परीं सब ग्वारी॥
बातन बातन करति उघारो। ये चाहति अबहीं निरवारो॥
मोहू ते ये चतुर कहावैं। मोको बातनमांझ भुलावैं॥
ऐसे इनसों वचन बखानो। इनको चातुरता गहि मानो॥
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई। कह करिहैं मोसों चतुराई॥
प्यारी पियके गर्वगहेली। अङ्ग अङ्ग सुखपुञ्ज भरेली॥
मन्द मन्द गति हस सुहाई। पग द्वै चलत ठिठुकि रहि जाई॥
मगन श्यामरस मुख नहिं बोलै। धरणी चरण नखन करि छोलै

चितवत सूधे नेक नहिं, काहू तन अनखाय।
रही गर्व पिय श्यामके, गरबीली गरवाय॥
सखिन कह्यो मुसकाय, क्यो प्यारी बोलत नहीं।
कै हमसों अनखाय, लियो मौनव्रत आज पुनि॥

कै कछु बात कही नहिं जाई । कै तेरो मन हस्यो कन्हाई ॥
कबहुँ जान पहिचान न तेरी । देखतही दृग तिनहिं ढरे री ॥
सांची बात कही अब प्यारी । शोच परयो मन तोहि कहा री ॥
कहा रहीही हरिहि निहारी । इकटक नैन निमेष बिसारी ॥
सुनि सुनि सब सखियनकी बानी । बोली हरिभावती सयानी ॥
कहा कहति तुम बात अलेखे । मोसों कहति श्याम तुम देखे ॥
मैं देखे कैधौं नहिं देखे । तुमतौ बार हजारक पेखे ॥
तुमहीं हरिको रूप बतावो । मो आगे सब कहि समुझावो ॥
कैसे बरण भेष हैं कैसे । अङ्ग अङ्ग बरणौ तुम तैसे ॥
तब इक सखी कह्यो मुसकाई । हमतौ ऐसे लखे कन्हाई ॥
छन्द बन्द कछु हमहि न आवै । सांची बात सबनको भावै ॥
देखे हम नँदनन्दन जैसे । बरणि बतावहुं तुमको तैसे ॥

श्याम सुभग तनु पीतपट, चटकीली द्युति कारि ।
शोभित घनपर दामिनी, मनु चपलई बिसारि ॥
मन्द मन्द मुखदात, गरजत मुरली मधुर धुनि ।
चितवत अरु मुसकात, बरषत परमानन्दजल ॥

त्रिविध सुमन दल उरमें माला । इन्द्रधनुष मनु उदित बिशाला ॥
मुक्तावली बीच मनमोहैं । बाल मराल पांति जनु सोहैं ॥
अङ्ग अङ्ग छवि रूप सुहाई । कदमतरे ठाढे सुखदाई ॥
देखत मोहन बदन बिभागा । उपजत है अँखियन अनुरागा ॥
लोचन नलिन नये छवि छाजैं । ता मधि पुतरी श्याम बिराजैं ॥

मनहु युगल अलि भाग निवारे। पियत मुदित मकरन्द सुखारे
तामहँ चितवनमें जु सुहाई। गूढ भाव सूचित सुखदाई॥
अधर विम्ब जनु दाडिमदाना। शुक नासिका देखि ललचाना॥
भृकुटी धनुष तिलक शिरधारी। मानहु मदन करत रखवारी॥
मोर चन्द्र शिर सुमन सुहाये। कामशरन मनु पच्छ लगाये॥
गड़त आनि युवतिन मनमाहीं। निकसत बहुरि निकासे नाहीं
बारिजबदन मनोहर बानी। बोलनि मनहुँ सुधारस सानी॥

कुण्डल झलक कपोल छबि, श्रमसीकरके दाग।
मानहुँ मनसिज मकर मिलि, क्रीडत सुधातड़ाग॥
भरे रूपरस राग, ऐसे शोभाके उदधि।
बिन अँखियनको भाग, अवलोकत हरिको बदन॥

अङ्ग अङ्ग सब छबिके जाला। हम देखे इहि भांति गोपाला॥
कछु छल छिद्र नहीं हम जानै। जो देखें सो सांच बखानै॥
सांचहि झूंठ करै जो कोई। तौ वह झूंठ आपही होई॥
हम इतननिमें नहीं दुराऊ। कहत यथारथ सब सतभाऊ॥
यामें जो कोउ झूंठो मानैं। ताको बात विधाता जानैं॥
हम तौ श्याम निहारे ऐसे। तोहिं लगैं प्यारी कहु कैसे॥
तुम देखे में सांच न मानौं। अपनी सो गति सबको जानौं॥
जिनको वारपार कछु नाहीं। द्वै अँखियन देखे किमि जाहीं॥
जो तुम सब अँग अङ्ग निहारे। धनि धनि तो ये नैन तिहारे॥
मैं तौ लखि इक अङ्ग भुलानो। भरि आये दोउ आंखिन पानो॥

कुण्डल झलक कपोलन छाहीं । रही चकित उतनेके माहीं ॥
रूंधे नीर नैन टक लाई । पहिचाने नहिं नेक कन्हाई ॥

मैं तबते अपने मनहिं, यहै रही पछिताय ।
देखनको छवि श्यामकी, चहियत नयन निकाय ॥
अति छवि अँखिया दोय, उमँगि चलत तापर सलिल ।
कैसे दरशन होय, सखी श्यामके रूपको ॥

द्वै लोचन तुम्हरे द्वै मेरे । तुम देखे हरि मैं नहिं हेरे ॥
तुम प्रति अँग विलोकन कीन्हों । मैं नीके एकौ नहि चीन्हों ॥
काहू को षटरस नहिं भावै । कोउ भोजनको दुख पावै ॥
अपने अपने भाग्य निकाई । जो बोवै सोइ लुनै बनाई ॥
जैसे रंक तनक धन पाये । होत निहाल आपने भाये ॥
मोहिं तुम्हैं अन्तर है भारो । धनि तुम सब हरि अंगनिहारो ॥
तुम हरिकी सङ्गिनि व्रजबाला । ताते दरश देत नँदलाला ॥
सुनहु सखी राधा चतुराई । आपहि निन्दति हमहि बड़ाई ॥
आपुन भई रंक हरि धनको । हम कहति धनवन्त सबनको ॥
हम हरिकी संगति सब ग्वारी । आपुहि निर्मल होत नियारी ॥
धनिधनि धनि लाड़िली पियारी । धकधक धकधक बुद्धि हमारी
तू पूरण हम निपट अधूरी । हमहिं असन्त सन्त तू पूरी ॥

धनि धनि तेरे मात पित, धन्य भक्ति धनि हेत ।
तैं पहिचान्यो श्यामको, हम सब ग्वारि अचेत ॥

धनि यौवन धनि रूप, धनि धनि भाग सुहाग तव।
तू मोहन अनुरूप, चिरजीवहु जोड़ी अचल ॥
जैसे तैं हरि रूप बखान्यो। है तैसोई यह हम जान्यो ॥
देखनको हरि रूप उजेरो। आंखि चाहिये जैसी तेरी ॥
तैं जु कहत लोचन भरि आये। सो हरि तेरे नयन समाये ॥
अति पुनीत अस्थल शुभ जानी। करी श्याम अपनी रजधानी ॥
कियो बास हरि तुव दृगमाहीं। और बात दूजो कछु नाहीं ॥
ऐसे श्याम सङ्ग ब्रजबाला। कहति परस्पर गुण गोपाला ॥
तहां अचानक हरि पुनि आये। कटि कछनी नट भेष बनाये ॥
मुरली अरुण अधरपर राजै। कलधुनि मन्द मनोहर बाजै ॥
आप गये तिरछे मगमाहीं। भावाधीन सकल रहि नाहीं ॥
तरुतमाल तनु तरुण कन्हाई। ठाढ़े भये आय सुखदाई ॥
थकित भई सब ब्रजकी बाला। लगीं विलोकन नन्दको लाला ॥
रत्न जटित पग पांवरी, नूपुर मन्द रसाल।
चरण कमलदल निकट मनु, बैठे बाल मराल ॥
उदित चरणनख चंद, जनु मणि व्योम प्रकाश करि।
सुर नर शिव मुनि वृन्द, विरहताप,ब्रजतिय हरण ॥
जानु काम शत छबि न सवाँरे। युवतिन करि मन बुद्धि विचारे
युगुल जंघ छवि परम पुनीता। रम्भा खम्भ मनहुं विपरीता ॥
ठाढ़े धरणि एक पग लाये। कञ्चन दण्ड एक लपटाये ॥
तन त्रिभंगकी लटक सुहाई। अटकि रही युवतिन मन भाई ॥

ब्रजयुवती हरिपद मनलावैं । निरखति मुनिदुर्लभ सचुपावैं ॥
कुलिशाङ्कुश ध्वजाचिह्न निकाई । इकटक रहीं चितै चित लाई ॥
अरुण तरुण पङ्कजदल चारू । मानहुँ सुखमा करत बिहारू ॥
कटि केहरिको कटिहि लजावै । सूक्षम सुभग कहति नहिं आवै ॥
तापर कनक मेखला सोहै । मणिनजटित सुन्दर मन मोहै ॥
मनहु बालकन सहित मराला । बैठे पंगति जोरि रसाला ॥
किधौं मदनके सदन सुहाई । बांधी बन्धनवारि बनाई ॥
ब्र तिय निरखि निरखि सुखलेहीं । नैनन पलक परन नहिं देहीं

शोभित नाभि गँभीर अति, मानहुँ मदन तड़ाग ।
रोमावलि तटपर लसत, रस शृँगारको बाग ॥
ब्रजतिय रहीं निहारि, शोभा नाभि गँभीरकी ।
मन नहिं सकति निवारि, पर्‍यो जाय गहरे खसकि ॥

उदर उदार बरणि नहिं जाई । रोमावलि तापर छबि छाई ॥
रहीं अटकि छबि तासु निहारी । परखत बनत न निरखत नारी ॥
कोऊ कहति कामको सरनी । कोऊ कहति योग नहिं बरनी ॥
कहति एक अलि बालक पांती । जुरि बैठे सब एकहि भांती ॥
कोउ कह नीरद नील सुहाई । सूक्षम धूमधार छबि छाई ॥
एक कहति यह रविकी जाई । मरकतगिरि उरते प्रगटाई ॥
उदर भूमि शोभित सोइ धारा । जाति नाभि ह्रद अगम अपारा
दुहुँ दिशि फेन स्वातिसुतमाला । उपजत सुखमय लहर विशाला
शोभा बरणि सकति ब्रजनारी । रहीं विचारि विचार विचारी

उर मुक्तनकी माल विराजै। तामधि कौस्तुभमणि छबि छाजै॥
निर्मल नभ मानहु उडराजौ। शशिहि घेरि बैठौ छबि साजौ
भृगु पद देखि श्याम उरमाहीं। मनहुं मेघ भीतर शशि छाहीं॥
पीत हरित सित अरुण रँग, चटकीली वनमाल।
प्रफुलित ह्वै छबिकी बँवरि, मानहुँ चढ़ी तमाल॥
छबि बरणी नहिं जाय, कंबुकंठ मणि कंठकी।
ब्रजतिय रही लोभाय, हरि उरबर शोभा निरखि॥
वृषभकन्ध भुजदण्ड सुहाई। निंदत अहि गजसूँडि निकाई॥
करपल्लवन मुद्रिका सोहै। वाहु विभूषण लखि मन मोहै॥
जनु शृँगार विटपकी डारी। फूलि रही उपजत छबिभारी॥
हरि मुख निरखत गोपकुमारी। पुनि२ प्रणमि करति बलिहारी
कहति परस्पर अति मन लोभा। देखहु सखी मदनकी शोभा॥
चिबुक चारु अधरन अरुणाई। पान रेख तापर छबि छाई॥
मंद हँसन द्युति दशन निकाई। उपमा काप जात बताई॥
अनुपम छबि चित लेत चुराये। जगमोहनी हमारे भाये॥
गोल कपोल अमोल नवीने। मानहुं मुकुर नीलमणि कीने॥
बाजत मुरली करकी फेरन। चंचल नयन चपलकी हेरन॥
मणिन जटित कुण्डलकी डोलन। प्रतिबिम्बित सब मुकुर कपोलन
सो छबि कापै जात बखानी। लखि ब्रजतिय बिन मोल बिकानी
सुभग नाशिका चपल दृग, कुटिल भृकुटिकी रेख।
जनु युग खंजन बीच शुक, उड़ि न सकत धन देख॥

घुंघुरारे कच श्याम, वारिजमुखढिग भ्रमर जनु ।
शीश मुकुट अभिराम, कोटि काम शोभाहरण ॥
रूप सुधानिधि वदन विराजै । दुहु कर अधर मुरलिका बाजै ॥
मानहु युगल कमल पद माहीं । लेत भराय सुधा शशि पाहीं ॥
हरि मुख निरखत नयन भुलाने । इकटक रहे रुपति नहिं माने ॥
घोषकुमारि लखति नँदनन्दन । श्याम सुभगतनु चिर्चित चन्दन
कनक वरण पटपीत विराजै । देखि सखी उपमा यह राजै ॥
निर्म्मल गगन शरद घनमाला । तापर अस्थित दामिनिजाला ॥
अङ्ग अङ्ग छविपुञ्ज सुहाये । निरखति युवती जन मन लाये ॥
कोऊ भाल तिलक छवि अटकी । मुकुटलटकछविपर कोउलटकी
कोउ अलक लखति चितलाई। कोउलखि भ्रुकुटिमुरति बिसराई
कोउलोचनछबि लखिललचानी । चितवनमें कोऊ उरझानी ॥
कोऊ कुंडलझलक लुभानी । कोउकपोलद्युतिनिरखिबिकानी ॥
कोउ नाशा कोउ अधर निकाई । कोउ रद चमकनिमांझलुभाई
कोउ बोलति कोउ मृदु हँसति, कोउ मुरली धनिलीन ।
कोउ मुरलीपर ग्रीव कोउ, लटकन पर आधीन ॥
चारु चिबुक दर ग्रीव, कोऊ गड़ि तामें रहीं ॥
हरि मुख शोभा सींव, थकीं निरखि जहँ सो तहीं ।
कोउ सुन्दर उर बाहु विशाला । निरखि थकीं कोउ भूषण बाला
कोउ कटि कोउ पटपीत निहारी । जंघ गुलुफपर कोउ बलिहारी
युगल कमलपद नखको शोभा । ब्रजवासी जन मनको लोभा ॥

हरि प्रतिअङ्ग निरखि ब्रजनारी। देह गेहकी सुरति बिसारी ॥
अति आनन्द मगन मन भूली। शशिमुखलखिजनुकुमुदिनिफूली
किधौंचकोर रहे टकलाई। पियत सुधा छवि शीतलताई ॥
कै रवि कुण्डल छविहि निहारी। विकसत कमल मदन वरनारी
कै चकईगण मन सुख मानी। निरखि रहीं अति रति हर्षानी ॥
कैधौं नव घनतन छवि देखी। भई चातकी मुदित बिशेखी ॥
किधौं मृगी मुरली धुनि मोही। श्याम लखति युवती द्रुम सोही
हरि छविअरुझनिमें अरुझानी। सुरझ न सकतियुवतिबितानी
रूपराशि सुखराशि कन्हाई। प्रेमराशि जनके सुखदाई ॥

छविसागर सुखकी अवधि, गुणमन्दिर रसखान।
मोहि लियो मन तियनको, रसिकनरेश सुजान ॥
मुरली मधुर बजाय, प्यारी प्यारी नाम कहि ॥
अनुपम छवि दरशाय, गये सदन आनन्दघन ॥

रहीं ठगीसी गोपकुमारी। मन हरि ले गये नवल बिहारी ॥
पुनिपुनि कहतिभई सुख मानी। धनि धनिराधा कुवँरि सयानी
बड़ भागिनि तोसों नहिं प्यारी। तेरेही वश री गिरिधारी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा। धनि जोरी धनि प्रीतिललामा
एक प्राण द्वै देह तुम्हारे। तुम विन रहि न सकत हरि न्यारे ॥
तोको देखि बहुत सुख पावैं। मुरलीमें तेरे गुण गावैं ॥
तेरी प्रीति सांच हरि जाने। ताते तेरे हाथ बिकाने ॥
मन वच क्रम निर्मल तू प्यारी। दुराचारनी हम सब नारी ॥

जैसे घट पूरण नहिं डोलै। होय अवधिलौं सो ढकढोलै॥
परम सुजान नारि तैं धीरा। राख्यो परखि हृदय हरि हीरा॥
धनी न अपने धनहिं बतावै। धरत छिपाय न प्रकट जतावै॥
धन्य सुहाग भाग तुव प्यारी। कृष्ण सदा पति तू है नारी॥

सुनि सुनि वाणी सखिनकी, प्यारी जिय अनुराग॥
पुलकि रोम गदगद हियो, समुझि आपनो भाग॥
वचन कह्यो नहि जाय, प्रीति प्रकट चाहत कियो।
हरि उर रहे समाय, बाहर करत प्रकाश नहिं॥

सुनहु सखी तुम करति बड़ाई। सुनि सुनि मेरो मन सकुचाई॥
मोहिं कहति श्यामहिं तैंजान्यो। हरिकोभले परखि पहिचान्यो॥
तबते यहौ शोच मनमाहीं। कैसे हरि पहिचाने जाहीं॥
नयन दोय छवि अमित अगाधा। तापर पलक करति है बाधा॥
क्षणहीमें भरि आवत पानी। श्याम स्वरूप परै किम जानी॥
मरू करम अँग लखिये कोई। पलक परत औरै छवि होई॥
क्षण क्षणमें शोभा लपटावै। कहौ सखी उर कैसे आवै॥
देखनको दृग अति अकुलाहीं। प्रगट लखत पहिचान न जाहीं॥
यह सखि नहीं परति कछु जानी। विरह सँयोग लाभ कै हानी॥
कै दुख सुख कै समरस होई। मुहिं समुझाय कहौ सखि सोई॥
घृततें होम अग्नि रुचि जैसे। मिटति नहीं नयननिगति तैसे॥
उत छवि खानि नई छविवाने। इत लोभी दृग तृप्त न माने॥

बिन पहिचाने कौन विधि, करौं श्यामसों प्रीति।
नहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति॥
यह जानी मैं बात, हैं आनँदकी खानि हरि।
पहिचाने नहिं जात, कहा करौं द्वै लोचननि॥

बड़ो क्रूर विधना यह आली। सम क्रम परी देखत वनमाली॥
कर पद उदर ग्रीव कटि कीनी। मुख रद श्रुति नाशा शुभ दीनी
भाल शिखर नख केश बनाये। अधर जीव अरु वचन सुहाये॥
रचि पचि रुचिर अंग सब कीने। रोम रोम प्रति नयनन दीने
जो व्रज दीनो जन्म हमारो। देखन को मनमोहन प्यारो॥
तौ कत नयन दिये शठ सोऊ। विधि ते निठुर और नहिं कोऊ
जो विधिनाको वश करि पाऊं। तौ अब पद्धति और चलाऊं॥
रोम रोम प्रति नैन बनावैं। इकटक रहैं पलक नहिं लावैं॥
तौ कछु बनै कह्यो सखि तेरो। होय मनोरथ पूरण मेरो॥
हरि स्वरूप लखि जानि न जाई। वह छवि द्वै लोचन न समाई
मैं पचि हारि रही बहुतेरो। एकहु अङ्ग न नीके हेरो॥
जो देखों तो प्रीति करो री। देखनहीको साधन गोरी॥

दुरत दुराये कौन विधि, सखि तुमसों यह बात।
देखे बिन नँदनन्दके, धीरज धरत न गात॥
उड्यो फिरत दिन रात, इन नयननके सँग लगे।
क्षण नहिं मग ठहरात, आक रुई जिमि वातवश।

सुनु री सखौ दशा यह मेरी। जबते हरि मूरति मैं हेरी॥
सकुहि फिरौं दरश नहिंपाऊं। मनहौमन पुनि पुनि पछिताऊं
जब मैं अपने जिय यह आनी। निकट जाय हरि छविपहिचानी
तब प्रतिबिंब मेरोई आई। होत तहां मोको दुखदाई॥
मेरे मन हरि मूरति भावै। सन्मुख दृष्टि तहां यह आवै॥
मेरिय देह होत मुहिं वैरी। कितौ दुरावति दुरत न है री॥
मैं अन्तर तजि लखत कन्हाई। यह अति अन्तर देत बढ़ाई॥
सखौ दोष नहिं काहू केरो। करत श्याम यह सब झकझोरो॥
नीके दरश न कबहूं देही। नइ नइ छवि भरि मन हरि लेही॥
चपलाहू ते चपल घनेरी। दशन चमक चौंखत है ए री॥
कबहूं अङ्गन मुकुर बनावैं। कबहूं कोटि अनङ्ग लजावैं॥
कैसे सब छवि देखि जु पइये। कौन भांति यह साध पुरइये॥

> मगन दरस रस लाडिलौ, पुनि पुनि पुलकितगात।
> छम मान तिय देखि छवि, कहत लखे नहिं जात॥
> लौन्हौं सखियन जान, हरि रँग रातौ लाड़लौ।
> सुन्दर श्याम सुजान, रोम रोम याके रमे॥

कहति धन्य प्यारी बड़भागी। नीके तू हरिसँग अनुरागी॥
तू है नवल नवल हरि ओऊ। रूप अगाध सिंधु तुम दोऊ॥
हम जानी यह बात सुगाधा। तू हरिकी अर्द्धङ्गिनि राधा॥
मिले तोहिं करि कृपा कन्हाई। दिये सकल दुख दूरि मिटाई॥
कहु प्यारी हमसों अब सांची। कहे बनै यह बात न कांची॥

छांडि देहु अब यह चतुराई। कहां मिले कहु तोहि कन्हाई॥
खरक मिले कै कुंजनमांही।कै दधि बेंचन जात जहांही॥
कै जब उरग डसनते बाचो। कहु कैसे तू हरिरँग राचो॥
सुनि सखियनकी बात सयानी। बोली परम नागरी बानी॥
कबरी श्याम मिले नहिंजानौं। सुनहु सखी मैं सांच बखानौं॥
गृह वन कुंज सुरति नहिंमोही। दधि बेंचन कै खरकबिमोही॥
आजकै कालहिकहौं कह आली। कियो बास उरमें बनमाली॥

नयननते क्षण टरत नहिं, नीके लखे न जात।
कहा कहौं तुमसों सखी, यह अचरजकी बात॥
मिले मोहिं जब श्याम, सुनो सखी तुमसों कहौं।
करि कै उरमें धाम, तबते मन मेरो हर्‍यो॥

मैं यमुना जल भरन सिधाई। औचक हरि तह परे लखाई॥
मोतन चितै रहे मुसकाई। कहा कहौं सखि नैन निकाई॥
जीत आपने बल जनु कीनी। शरद सरोजनकी छबि हीनी॥
जीते सकल रूप गुण जाती। नीलकोकनद अरु सतपाती॥
पैनिशि मुद्रित दिवसप्रकाशे। क्षण प्रतिहोत मलिन द्युतिनाशे॥
वे आनन्दकन्द सुखमूले। रहत दिवस निशि छबिसों फूले॥
निरखि नयनमें दशा भुलाई। उन मुसकान मोहनी लाई॥
शिथिल अङ्ग भये जैसे पानी। तबहीते उन हाथ बिकानी॥
सूधे मारग गई भुलाई। ज्यों त्यों करि पहुंची घर आई॥

ता दिनते अँखियां ये मेरी । सुख दुख भूलि गई हरि चेरी ॥
बसीं जाय वा चितवनमाहीं । अब वह छबि छण बिसरत नाहीं ॥
कै इन नैननि आय समानी । यह चितवन कछु जात न जानी ॥

नहिं जानत हरि कह कियो, मन्द मधुर मुसकाय ।
मन समुझत रीझत नयन, मुख कछु कह्यो न जाय ॥
तबते कछु न सुहाय, कासों कहिये बात यह ।
अमल पर्यो दृग आय, अवलोकत हरि विधुवदन ॥

निकसे सखी एक दिन आई । द्वार हमारे कुँवर कन्हाई ॥
मैं ठाढ़ीही अजिर अकेली । देखि रही छबि यह अलबेली ॥
चंचल नयन चितै चित चोरै । सुभग भ्रुकुटि बिब बंक मरोरै ॥
कोटि मदन तनुद्युति सँगवाही । फेरत कमल कमलकर माहीं ॥
मोहित लागि भये तहँ ठाढ़े । कियो भाव कछु आनद बाढ़े ॥
ले कर कमल भावसों लायो । पीताम्बर निज शीश फिरायो ॥
मैं गुरुजन डर शंका आनी । बोलि न सकी कछू मुखबानी ॥
प्रेमसहित तेरे हरि आये । वैसहि उनको फेरि पठाये ॥
तूतौ चतुर हुती अति नारी । सेवा कछू करी नहिं प्यारी ॥
गुप्त भाव तोसों हरि कीन्हों । बातन मुरै नहीं क्यों लीन्हों ॥
काहे कमलभाव सों लायो । काहे पीताम्बरहिं फिरायो ॥
मैं कछु उत्तर तिन्हें जनायो । घर आये केहि विधि बिसरायो ॥

कहा करौं गुरुजन सखी, भये मोहिं दुखदाय ।
सकुचि रही तिनकी सकुच, सुख कछु वचन बनाय ॥

इतनो कियो सयान, मैं तब बैठी कर परशि।
उर लाई हित मान, सन्मुख करि करि आरसी॥
अन्तर्यामी चतुर कन्हाई। जानि लई मेरी चतुराई॥
आपन हँसि उत पाग सँवारी। रहे कमल हिरदयपर धारी॥
रहे चिते अति हित चितलाई। मोते सखी न कछु बनि आई॥
कहा करौं कछु दोष न मेरो। नयो नेह उत गुरुजन घेरो॥
रही देखि मन आनँद धरिकै। दियो कमल उर आसन करिकै॥
आंचर फेरि निछावरि कीनों। अर्द्ध सलिल आंखिनसों दीनों॥
उमँगि कलशकुच प्रगट भये री। टूटि टूटि कुचबंद गये री॥
अब मनहोत लाज अति भारी। सखी समुझि करणी वहसारी
ऐसी मेरी मति अज्ञानी। प्रभुसों मङ्गल करि मैं मानी॥
अति सुख मान गये सुखदाई। तबते मो मन कछु न सुहाई॥
कहति सखी राधा सुनि मेरी। सेवा मान लई हरि तेरी॥
अब काहे पछितात अनेरी। तो हित श्याम जात करि फेरी॥
नीके कीन्हे भाव सब, तू अति नागरि वाम।
उन लीन्हे सब जानिकै, चतुर शिरोमणि श्याम॥
भावहिको सनमान, गुरुजनके मधि चाहिये॥
गये श्याम हित मान, अब प्यारी चाहति कहा॥
तेरे वशहि भये दधिदानी। हम यह बात भले करि जानी॥
तैं बंदी उन पाग सवांरी। उनको तुम उन तुमहिं जुहारी॥
मिली आरसीमें तुम उनको। उन उर धरी कमल मिस तुमको॥

जानै कहा भेद यह कोऊ। एक प्राण है तनु तुम दोऊ॥
सुनहु सखी मोहन सुखरासी। अँखियां रहति दरशकी प्यासी॥
निकसत जब सुन्दर इत आई। कमलनयन कर बेणु सुहाई॥
ना जानिये सखी तिहि काला। सब तनु श्रवण विलोचन जाला॥
सुरत शब्द प्रति रोमन माहीं। नखशिखज्यों चखदेख्यो चाहीं॥
इतने पर समुझत नहि बैना। चितै रहत ज्यों चित्रित मैना॥
सुनहु सखी यह सांचकि सपनो। कै दुखसुख कै संभ्रम अपनो॥
कहा करौं गुरुजन डर मानो। मन मेरो उन हाथ बिकानो॥
जबते द्वार दरश,मोहि दीन्हों। तबते मन अपनो करि लीन्हों॥

भाग्यदशा आये सदन, मेरे श्याम सुजान।
मैं सेवा नहि करि सकी, गुरुजनको डर मान॥
यहै चूक जिय जान, मोहन मन हरि लै गये।
अब लागो पछितान, फेरि कौन विधि पाइये॥

जबते प्रीति श्याम सों कीन्हीं। तबते नींद हगन तजि दीन्हीं॥
फिरत सदा चित चक्र चढ़्योसो। रहतिहिये अतिशोचबढ़्योसो॥
मिलहि कवन विधि कुवँर कन्हाई। यहै विचार विचारत जाई॥
यह दुख सखी कौनसों कहिये। पशु वेदन ज्यों आपहि सहिये॥
सुन प्यारी तू हरि रँगरांची। बात कहैं तोसों हम सांची॥
तोतें चतुर और नहि कोऊ। तुम अरु श्याम एक भये दोऊ॥
वाकी नहीं कछु अब बांची। कहौं बात मैं रेखा खांची॥
ऐसी भई आप तू भारी। उनको मन तैं नाहि लियो री॥

तैं उनको मन प्रथम चुरायो। तब उन तेरोहू अब पायो॥
अब काहेको करत सयानी। नन्दनन्दन वर तू पटरानी॥
तोसी और कौन बड़भागी। तेरे सङ्ग श्याम अनुरागी॥
विलसी श्याम संङ्ग सुख मानी। अब कत वृथा रहत बौरानी॥

श्याम करी मोहिं बावरी, मन करि लियो अधीन।
बनसी ज्यों वाकी पलक, अटके मो दृगमीन।
अब मोहिं कछु न सुहाय, मन मेरो मेरो नहीं।
लियो श्याम अपनाय, रूप ठगोरी डारि शिर॥

बार बार मैं तोहिं सुनाई। तेरे मन यह बात न आई॥
अपनीसी बुधि जानत मेरी। मैं पाई इतनी कहँ ए री॥
देखतही हरि रूप लोभानी। मोते सुधिबुधि सबहि हिरानी॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी। गदगद वचन श्याम रस पागी॥
पुनिपुनि कहति यहै मुख बानी। मन हरिलियो छैल दधिदानी
तब इक सखी सखीसों बोली। तू कत होति जानकै भोली॥
यह पुनि पुनि मनको निदरानी। गुप्तबात तिन प्रगट बखानी॥
तुम जानत श्यामा है छोटी। है यह ज्ञान बुद्धिकी मोटी॥
रहत सदा हरिके सँगमाहीं। हमसों कहत करति सो नाहीं॥
किये रहति हमसों हठ ओटी। बात कहत मुख चोटी पोटी॥
भये श्याम याहीके वश अब। देखि छकैं बेदी छोटी छब॥
भली बनी सुन्दर अब जोटी। वे खोटे उनते यह खोटी॥

कहति सखी यह कहा तू, निपट गवांरी बात।
को प्यारी सम दूसरी, जाकेवश बलभ्रात॥
रूप शील गुणधाम, यह सबमें ब्रज आगरी।
दृढ़ ब्रत लीन्हों श्याम, धन्य न याते और कोउ॥
प्रीति गुप्त ही की है नीकी। कहो बात सखि अपने जीकी॥
मैं रीझी यापर अति भारी। क्यों खोटी जो कृष्ण पियारी॥
जो हरि कोटि मदन मन मोहैं। सो मोहन याको मुख जोहैं॥
जसे श्याम नारि यह वैसी। भेद करै सो सखी अनैसी॥
नागरि नवल नवलके नागर। सुन्दर यह जोरी छबिसागर॥
सुनहु सखी ऐसे पै राजैं। एक प्राण द्वै तनु सुख काजैं॥
एकहु पलक कबहुं नहिं न्यारे। सोवत जागत जान हमारे॥
पूरब नेह नयो वह नाहीं। देखहु सखी समुझि मनमाहीं॥
मेरो कह्यो मानि यह लीजै। इनसों भाव प्रीति करि कीजै॥
इनकी प्रीति प्रीतिके माहीं। बिना प्रीति ये जान न जाहीं॥
जबलग इनसों प्रीति न मानै। तबलग इनकी प्रीति न जानै॥
इनकी प्रीति लख्यो जो चाहौ। तौ करि इनसों प्रीति निबाहौ॥
सखी वचन सुनि सखिनके, भयो हिये अति चैन॥
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन॥
धनि धनि तेरो ज्ञान, तैं इनको जान्यो भले।
हम सब निपट अजान, बात कहत औरै कछू॥
हम इनको ऐसे नहिं जाने। ये ब्रज आय गुप्त प्रगटाने॥

श्यामा श्याम एक हैं ए री । तैं इतने उपहास सहे री ॥
वे दोउ एक दूसरौ तू री । तेरिहु प्रीति श्यामसों पूरी ॥
इनसों तेरी प्रीति पुरानी । तब ते प्रीति पुरातन जानी ॥
धन्य श्याम धनि धनि तुव श्यामा । हम सब वृथा भई बिनकामा
श्याम राधिका सहज सनेही । सहज एक दोऊ हैं देही ॥
सहज रूप गुण पूरणकामी । सुन्दर सहज सहज घनश्यामी ॥
देखि दुहूँनकी प्रीति विशाला । भई विवश सब ब्रजकी बाला ॥
श्यामा श्याम रङ्ग रस पागीं । सोवत ते मानहु सब जागीं ॥
उपजी प्रीति दुहूँनकी सांची । । दूरि गई दुविधा मति कांची।
भई युगल रस वश सब गोपी । लाज शंक मर्यादा लोपी ॥
सबके नन रूप रस अटके । श्रीश्यामावर नागरनटके ॥

नवल नागर श्याम श्यामा, प्रेम मन सबके फँसे ।
नयन नासा श्रवण रसना, अङ्ग प्रति दोऊ बसे ॥
उठत बैठत चलत सोवत, जगत निशि बासर घरी ।
नहीं बिसरत ध्यान कबहूं, सकल ब्रजकी सुन्दरी ॥
गई सकल निज निज सदन, युगल प्रेम रसलीन ।
बिछुरत नहिं एकौ घरी, जसे जल अरु मीन ॥
रहे श्याम उर छाय, बिन देखे दृग कल नहीं ।
गृह कारज न सुहाय, गुरुजन त्रास न सुरति कछु ॥

वे कछु कहैं करैं कछु औरैं । सासु ननँद तब मारन दौरैं ॥
कहैं यहै पितु मात सिखायो । ऐसोई ढँग तुम्हैं बतायो ॥

कहा तुम्हारे मन यह आई । अपनी सुधि बुधि कहां गवांई ॥
तुम कुलवधू लाज नहि आवै । कहँ लगि कोउ तुम्हें समुझावै॥
कबको यमुना न्हान गई हो । ऐसी अब तुम निडर भई हो ॥
तुम राधाको सङ्ग करति हो । हरिके पाछे वही फिरति हो ॥
वड़े महरको सुता कहावै । यह सब बात उन्ह बनि आवै ॥
उनको सब उपहास उठावत । व्रज घर घर प्रति यही कहावत ॥
ऐसे तुमहू नाम धरे हो । व्रजलोगनमें हमें हँसैहो ॥
हम अहीर व्रजपुरके वासी । ऐसे चलो होय नहि हांसी ॥
लोकलाज कुलकानिहिं करिये । फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये
ऐसे कहि गुरुजन समुझावैं । लाज काज मर्याद सिखावैं ॥

सुनि युवती गुरुजन वचन, विहँसि रहीं धरि मौन ॥
हरि राधा उपहासकी, महिमा जानै कौन ॥
कहत तैसिये बात, जैसी मति जाके हिये ।
सुख उलूकही रात, रविको तेज न मानहीं ॥

विषको कीट विषहि रुचि मानै । कहा स्वादरसस्वादहि जानै ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन । नन्दनन्दन सुर श्रुति शिवको मन
तिनको महिमा कह ये जानैं । जिनके गुण मुनि गर्ग बखानैं ॥
धनि धनि राधा कुंवरि सयानी । श्यामहिं मिली कर्म्ममनबानी
श्याम कामके पूरणहारें । पूरण करि तिनको उर धारें ॥
धन्य धन्य श्यामा बनवारी । यह रसलीला व्रज विस्तारी ॥
ऐसे गोपीगण करि ध्याना । करत श्याम श्यामा गुणगाना ॥

श्याम रूप श्यामा अनुरागी। रोम रोम ताही रँग पागी॥
गई सदन मन लागत नाहीं। मनमोहन बिन क्षण युग जाहीं॥
मनहीं मन गुरुजनपर खीजै। इन विमुखनको सङ्ग न कीजै॥
कौन भांति करि इनसों छूटौं। क्यों वह दरश सरस सुख लूटौं॥
बार बार जिय अति अकुलाई। कैसेहु हरिबिन रह्यो न जाई॥

धृक गुरु जन कुलकानि धृक, धृक लज्जा धृक धाम
धृक जीवन बहु दिननको, बिनु सुन्दर घनश्याम॥
पलक कलप सम जाय, ब्रजवासी प्रभु दरशबिन।
सदन न नेक सुहाय, मन हरि लीन्हों सांवरे॥

---

## बाटमिलन लीला।

श्रीवृषभानुकुँवरि वर गोरी। कृष्ण प्रेम उनमत्त किशोरी॥
तनु विह्वल मन हरिके पासा। दुरत न हृदय प्रेम परकासा॥
चली यमुन जल आप अकेली। रूपराशि गुणराशि नवेली॥
दृगन श्याम दरशनकी आसा। मनहींमन यह करति हुलासा॥
चितको चोर अबहिं जो पाऊं। तौ उरको सन्ताप नशाऊं॥
राखौं बांधि हृदयसों लाई। भुजको दृढ़ करि दाम बनाई॥
जैसे लियो चोरि मन मेरो। तैसे लेउँ छोरि उन केरो।
छांड़ों नाहिं करै जो कोरी। ऐसे जान विचारति गोरी॥
इतते प्यारी यमुनहिं जाई। उतते आवत घरहिं कन्हाई॥

नील जलद तन शोभित आछे। नटवर भेष काछनी काछे॥
दूरिहिते देखतही जान्यो। जीवन प्राण तुरत पहिचान्यो॥
रही मनोहर वदन निहारी। कोटि मदन जापर वलिहारी॥

मन आनँद हुलस्यो हियो, रोम पुलक दृग वारि।
बोली गदगद वचन मुख, तनु विह्वल न संभारि॥
चित चोरे कहँ जात, मैं ढूंढति तवते तुम्हें।
कहँ सीखी यह वात, अहो नंदके लाड़िले॥

जानत जैसे माखन चोरी। तव वह वात हती कछु औरी॥
वालक हते कान्ह तव तुमहूं। भोरी सहज हुती मन हमहूं॥
मुख पहिचान मान सुख लेती। यशुमति कान जान तव देती॥
वसो वास सब व्रज इक ठौरी। गोरस काज कान नहिं तोरी॥
अब भये कुशल किशोर कन्हाई। भई सजग हम सब तरुणाई॥
माखनते अव चितकी चोरी। लागे श्याम करन वरजोरी॥
नखशिख अँग चितचोर तुम्हारो। लीन्हों मन धन छीनिहमारो
सो अव जात कहां तुम लीन्हें। भुजा पकरि ठाढ़े हरि कीन्हें॥
तुमको नीके करि हम चीन्हें। वनि है अव मेरो मन दीन्हें॥
व्रजमें ढीठ भये तुम डोलत। मोसों सूधे वचन न वोलत॥
अब तो मोहि वूझि घर जैहो। विना दिये मन जान न पैहो॥
प्यारी यों झगरति पियपाहीं। देह गेहको सुधि कछु नाहीं॥

सोच करी कुललाज तव, सन्मुख आई धाय।
बखसि नागरी चूक यह, मोहिं कह्यो समझाय॥

चित लै गयो चुराय, चूक परी हरिते बड़ी।
छांड़ि देहु डरपाय, बड़े महरिकी कुवँरि तुव॥

कुलकी लाज अकाज कियो री। कहा करौं अति जरत हियो री
तब यौं कहति पीयसों प्यारी। सुनहु प्राणपति गिरिवरधारी॥
देखे बिना तुमहिं दुख पाऊं। सो यह तुम बिन काहि सुनाऊं॥
गुप्त रहन मोको तुम भाख्यो। सो आयसु मैं शिर धरि राख्यो॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती। प्राणनाथ तुमहित सब भांती
तुमते विमुख जननके माहीं। रह्यो जात मोपै प्रभु नाहीं॥
मात पिता अति त्रास दिखावैं। निंदत मोहिं नेक नहिं भावैं॥
भवन मोहिं माटीसों लागै। इक छण शोच नाहिं उर त्यागै॥
कहँलगि अपनी विपति बताऊं। तुमबिन सुखकोअनत न ठाऊं
सुन्दरश्याम कमल दललोचन। करहु कुसङ्गतिको दुख मोचन
अब यह विनय श्याम सुनि लीजे। चरणन ते न्यारी नहि कीजे
कुलकीकानि कहाँ लगि मानो। यह मन मोहन तुमहिं लुभानो

मन लुभानो तुमहिं मोहन, और तेहि भावै नहीं।
बिन लखे गिरिधरण सुन्दर, कहूं सुख पावै नहीं॥
लोक डर कुललाज गुरुजन, कानि कहँलौं कीजिये।
सिंह शरण कृपालु जंबुक, त्रास क्यों सहि जीजिये॥
निरखि श्याम प्यारी वदन, सुनिकै वचन सिहाय।
प्रेम अधीन विलोकि अति, हर्षि लई उर लाय॥

शीतल पङ्कज पान, परश हरयो तनु विरहदुख ।
प्रेम विवश भगवान, बोले प्यारीसों हरषि ॥
कत दुख पावति हो तुम प्यारी । यह लीला तुमहित विस्तारी॥
बसत सदा मैं तुम मनमाहीं । तुम मम उरते बाहर नाहीं ॥
श्रीवृन्दावन वन सुखकारी । है विहारथल तुम्हरो प्यारी ॥
शीतल सघन कुञ्ज छवि धामा । हम तुम सङ्ग मिलैं तहं भामा
दीजो सैन मोहि कहँ आई । तब तुमपै ऐहौं मैं धाई ॥
जब गृह जाउ आइहैं कोऊ । यों सङ्केत बद्यो हित दोऊ ॥
व्रज यमुना मग विच दोउ ठाढ़े । प्रेम सकोच अतिहि मन बाढ़े
बिछुरत बनत न रहत तहांहीं । चितवत सखिन चपल चहुँघाहीं
तबहिं युवति व्रजते कछु आई । कछु यमुनाते व्रजमें जाई ॥
दुहूँ दिशि तरुणिन आवत जानी ! मनहीं मन राधिका लजानी
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई । मिले हांक दै ग्वालन जाई ॥
रहे कहां तबते सब ग्वाला । ऐसे टेरि कह्यो नँदलाला ॥
गये भाव करि श्याम यह, लियो नागरी जान ।
कहि हौं यहैं सखीनसों, कीन्हीं यह अनुमान ॥
देखि सखी मोहि सङ्ग अबहि आय सब बूझिहैं ।
जानति इनको रङ्ग, मन मन शोचति लाड़िली ॥
उन युवतिन मोहनको देख्यो । जात राधिका ढिगते पेख्यो ॥
कहन लगीं आपसमें बातें । देखहु सखि प्यारीकी घातें ॥
बात करति मिलि सङ्ग विहारी । हमहिं लखत दीन्हे हैं टारी ॥

बूझतही कछु बुद्धि उपैहै। सांची एकहु नाहिं जनैहै॥
इतहु उतहुते आई नारी। कहति कहाँ तू जाति पियारी॥
अबहिं लखे तुव ढिग बनवारी। कहां गये पछितात कहा री।
कहा दुराव बनत अब कीन्हें। हमहू ते तबहीं लखि लीन्हें।
कान्ह कहा बूझतहै तुमको। सांची बात कहौ तुम हमको॥
मन लै गये तुम्हारे चोरी। सो पायो अपनो तुम गोरी॥
श्यामहिं मिलि अपनो मनलीन्हों। देखत हमैं टारिक्यों दीन्हं।
सदा चतुरई फबतिउ नाहीं। अबतो आइ परी फँदमाहीं॥
हमहिं बहुत तुम निदरि रहोहौ। कहाँ रहत हरि कित निबहौहौ

कहत रही जब तबहिं तुम, हरिसँग देखहु मोहि।
तब कहियो जो भावही, लीन्हों बेसरि खोहि॥
अब हम लेहिं छिनाय, बेसरि देहौ कै नहीं।
को करिहौ चतुराय, और कछू हमसों अबहुँ॥

तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी। तुम सब भई अजान कहाँ री॥
मैं मूरख तुम चतुर बड़े री। ऐसेहि बेसरि लैहौ मेरी॥
यही कहन मोको तुम आई। इत उतते मिलि उठि तुम धाई॥
बेसरि एक लेहुगी को को। पीताम्बर दिखरावहु मोको॥
पीताम्बर अरु बेसरि लीजे। प्रगट जाय तब ब्रजमें कीजै॥
तारी एक बजति कर दोऊ। इतनो ज्ञान करो सब कोऊ॥
सुनु राधा तोसों हम हारी। धन्य धन्य तेरी महतारी॥
तेरे चरित कहा कोउ जानैं। बश कीन्हों घनश्याम सुजानै॥

अबही रारि बढ़ायो तिनको । हम देखे तेरे ढिग उनको ॥
तापर निदरति है तू हमसों । कहत न बनत हमैं कछु तुमसों ॥
अंग अँग विरचि कपट चतुराई । निज करविधनातोहि बनाई ॥
इतनी बुद्धि श्यामके नाहीं । जितनी है प्यारी तोहि माहीं ॥

श्याम भले अरु तुम भली, राज करहु घर जाय ।
बेसरि छोरति हैं सखी, बिन काजे उठि धाय ॥
जान्यो तुम्हरो ज्ञान, दौरि परीं मोपर सबै ।
जो तुम हती सुजान, गहती बांह दुहूनकी ॥

कहु प्यारी साँची अब हमसों । कछु तौ श्याम कहत हैं तुमसों ॥
हाहा बात कहो सो प्यारी । भेद कहो तो सौंह हमारी ॥
तुव ढिगते मोहन हम हेरत । गये उतै ग्वालनको टेरत ॥
तू क्यों ठिठकि रही मगमाहीं । कहा कह्यो मोहन तुवपाहीं ॥
सहज होय हमसों यह भाखो । उरमैं कछु रोष मति राखो ॥
मैं यमुनातट जात रहीरी । ब्रजते आवत तुम्हैं लखी री ॥
परखन लगी तुमहि मगमाहीं । तिरछे आय गये हरिपाहीं ॥
मैं तुमहीं तन रही निहारी । उन पूछो म्वहि ग्वाल कहां री ॥
मैं सुनि सन्मुख दीठि न खोली । हां नाहीं कछु मुख नहिं बोली
ग्वालन टेरत गये कन्हाई । तुम मेरी वेसरि को धाई ॥
सुनि यह बात युवति सकुचानी । कछु तो परति साँचसी जानी
ग्वालन टेरत गये कन्हाई । यह तो हमहुँ श्रवण सुनि पाई ॥

तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुनु लाड़िली सुजान।
हम मानी तेरी कही, तू मति रिस जिय आन॥
लीन्ही कण्ठ लगाय, अति निर्मल तू लाड़िली।
झूठहि करत चवाय, ब्रज घर घर तेरो सबै॥

अब चलिये यमुनाके धामा। सङ्ग चलैं हमहूं सब श्यामा॥
चूक परी हम सों यह तेरी। नाम लियो बेसरिको ए री॥
अहो सखी तुम निपट अनैसी। जानति हो मोहिं आपहि जैसी॥
झूठहि धाई दोष लगावन। अब लागीं मोको दुलरावन॥
चणक बुद्धि तुम्हरी धौं कैसी। हो तुम बड़ी पेटकी जैसी॥
यह सुनि हँसत चलीं ब्रजनारी। गई यमुनते गृहको प्यारी॥
ऐसे सखियनको बहरायो। कृष्णसनेह न प्रगट जनायो॥
नागरि श्यामा श्याम सनेही। चतुर श्याम श्यामाके तेहीं॥
श्यामा श्याम वसत तनु मांही। वसत श्याम श्यामा मनपांही॥
नंद सँकेत गये घर दोऊ। मात पिता कछु जान न कोऊ॥
कैसे हू करि दिवस बितायो। निशि न घटै रस बिरह सतायो॥
अति आतुर दोऊ मनमाहीं। क्यों हूँ नींद परति है नाहीं॥

विरह नदी निशि तम सलिल, पैरत थके निहारि।
बूड़ो मणि तमचर कह्यो, मिल्यो पार भिनसारि॥
सुनि तमचुरको टेर, अति आनन्द दुहून मन।
अतिही उठे सवेर, लगी चटपटी मिलनको॥

## संकेतमिलनकी लीला।

श्याम उठति लखि जननी जागी। हरि मुखकमल निरखि अनुरागी॥
बूझति मात जाउँ बलि प्यारे। आज कहा तुम उठे सवारे॥
उत्तम जल भरि दीनी झारी। अति आतुर हरि करी मुखारी॥
विवस श्याम प्यारी रस छाके। मगन ध्यान वृषभानुसुताके॥
उत वृषभानुसुता सुकुमारी। उठी प्रात वह भाव विचारी॥
ग्रीवासों मोतीलर तोरी। आंचर बांधि मातकी चोरी॥
यहै व्याज अपने उर धार्यो। कुञ्ज धाम बन जान विचार्यो॥
आंगन गई भवन फिरि आई। गई भवनते फिरि अँगनाई॥
जात बनै न रह्यो नहिं जाई। इत उत फिरत भवन बितताई॥
मनहिं कहत कब मिलहु कन्हाई। कालहि गये बनधाम बुलाई॥
मात कह्यो क्यों उठी सवारी। जाति कहां प्रातहि तू प्यारी॥
आज कहा इत उत तू डोलै। मुखते कछू वचन नहिं बोलै॥

अति नागरि मोतीलरी, राखी प्रथम दुराय।
ताही मिसि करिकै सकुच, बोलति नहीं डराय॥
पुनि पुनि चितई मात, लखी ग्रीव भूषण विना।
तब जानी यह बात, खोई कहुं मोतीलरी॥

जननी भई तबहि रिसहाई। कण्ठलरी तैं कहां गँवाई॥
मोतिनको गजरा छवि छायो। बड़े मोलको परम सुहायो॥
तेरे लिये महर बनवायो। मैं तोको हित करि पहिरायो॥
कौने लियो कहां तैं गेर्यो। कालहिहि तेरे तौ गर हेर्यो॥

बूझे तोहिं जवाव न आवै। कह शोचति किन बेग बतावै॥
सुनि राधिका मातकी बानी। मन विहँसत ऊपर भय मानी॥
बोलति नहीं हृदय डरपाई। कहति भली बुधि मोको आई॥
अबहीं मोको खोज पठै है। या मिसि जान श्यामपै है॥
कहत मातसो तब भय मानै। मोहिं नहीं सुधि कहाँ हिरानी॥
कालहि सखिन सँग यमुना न्हाई। तहां कहूं धौं तिनहिं चुराई॥
कैधौं गिरी कतहु जलमाहीं। यह तो मैं कछु जानति नाहीं॥
कालहिहिते शोचति पछिताई। तेरे डरते कह्यो न जाई॥

नेकु नींद नहि निशि परी, तेरीसों सुनि मात।
याही डरते आज हौं, उठी बड़े परभात॥
सुनत सुताके बैन, महरि चकितमुख लखि रही।
कृष्णप्रिया गुण ऐन, कोऊ पार न पावई॥

तब जननी करि क्रोध कहीरी। मैं बरजति तोहिं हार रही री॥
फिरति नदी बन डगरनमाहीं। काहूको शंका तोहि नाहीं॥
बहुत तात तोहि लाड़ लड़ाई। नीखी सुता महरकी जाई॥
बरजति मैं जु करति तू सोई। भली करी मोतिनलर खोई॥
एक एक नग परम सुहायो। लाख टका दै मैं जु मँगायो॥
जाके हाथ परो सो दैहै। घर बैठे निधि पाय गँवैहै॥
भरि भरि नयन लेति है माता। मुखते कछू न आवति बाता॥
रीतो गरो निहारति जबहीं। हियो उमँगि आवत है तबहीं॥
कहा करों जो खोइ गई री। तू कित खोजत बिकल भई री॥

लैहों और मँगाय नवा यों। देनि नहीं क्यों और दवासों॥
करिहै कहा सौति जो राखै। ता दिन तेहि कितकधौं माखै॥
रोवति कहा और है नाहीं। दे निकासि पहिरों गरमाहीं॥

सुन राधा तेरो नहीं, अब पतियारो मोहि।
चौकी हार हमेल कछु, नहि पहिराऊं तोहि॥
लाख टकाकी हानि, करी आज तैं लाड़िली।
अब नहि देहों आनि, जबलौं वह लावै नहीं॥

अबतो घर बैठन जब पैहो। जलज सरोज खोज लै ऐहो॥
जाधौं देखि कहू जो पावै। तबहीं तोहि भलाई आवै॥
यमुना गई सङ्ग तब को हो। बूझति नहीं जाय किन ओहो॥
कौन कौनको तोहि बताऊं। कहँ लग सबके नाम गनाऊं॥
चन्द्रावलि ललितादिक नारी। हतीं सकल ब्रजगोपकुमारी॥
देखहु जाय यमुनतट धौरी। जहां राखि मैं न्हाति रही री॥
युवमी एक रही टक लाई। पूछि देखिहौं वाको जाई॥
जैहै कहां जलजलरि मेरी। तिनहीं लई भली सुधि एरी॥
आज अबेर लगैगी मोहीं। ढूंढोंगी ब्रज घर घर ओहीं॥
ऐसे करि माना मति भोरी। हरषि चली वृषभानुकिशोरी॥
निधरक चली सदनते प्यारी। मन अटको बन कुञ्जविहारी॥
मनहीं मन यों शोचति जाई। कैसे हरिसों देहु जनाई॥

बार बार नँदनन्द इत, आतुर जोहत राह।
प्यारी मुखशशि उदैको, नैन चकोरन चाह॥

भरे विरहरसमांहि, छणमें घर द्वारे छणक।
फिर फिर आवहिं जाहिं, लगी चटपटी प्रेमकी॥
जननी करति रसोई आतुर। लखि लखि जात श्यामघन चातुर
कहा अबेर करति तू मैया। भूख लगी मोहिं कहत कन्हैया॥
यसुमति कह्यो तात बलिजाई। अब बिलम्ब नहिं बैठहु आई॥
सखा सङ्ग सब लेहु बुलाई। बोलि लेहु अरु हलधर भाई॥
सादर कह्यो श्याम बत्त भइयो। दाऊगो जेंवनको अइयो॥
मोको अबहिं नहीं रुचि मैया। सखन सङ्ग तुम खाहु कन्हैया॥
सङ्ग सखन लै तब मनमोहन। जेंवनको बैठे सब गोहन॥
षटरस व्यञ्जन सरस सँवारे। परसि धरे रोहिणि पनवारे॥
श्याम सखन को आगसुदीन्हीं। आपुनहू कर कौरहि लीन्हीं॥
तबहीं कोकिलके सम बानी। बोलि उठी राधा सुखदानी॥
नन्दमहर पिछवारेहिं आई। छूटहिं ललिताको गुहराई॥
वृन्दावन मग जाति अकेली। आवहु वेगि तुमहुं सँग हेली॥
बिन जेंये मोहन उठे, करते कौर गिराय।
जेंवतही छांड़े सखा, चले बनहिं अतुराय॥
देखि चकित दोउ भात, चौंकि रहे सिगरे सखा।
कहति कहां चले जात, अति आतुर गोपाल तुम॥
अबहीं ग्वाल गयो कह मोही। बनमें गाय बियानी ओही॥
म जेंवन बैठो बिसराई। सो सुधि मोहिं अबहि ह्वै आई॥
तुम जेंवहु मैं देखहुँ जाई। करो श्याम तिनसों चतुराई॥

लीही मेरी गाय वियानी । यह कहि चले हर्ष उर आनी ॥
हँसत सखा सब मन मनमाहीं । नहीं गाय बछरा ह्यां नाहीं ॥
है प्यारी रानी ह्वै राधा । हम जानी यह बात अगाधा ॥
जननी नहीं कछू यह जानी । बार बार कहि कै पछितानी ॥
भूखे श्याम गये उठि धाई । राज करौ यह गाय वियाई ॥
दई सैन ह्वै वन श्रीश्यामा । पहुंचे जाय तहां घनश्यामा ॥
देखत हर्ष भये मन दोऊ । फूले अङ्ग समात न कोऊ ॥
मिले धाय गहि अङ्कम माला । कनकवेलि जनु लगी तमाला ॥
मिलि बैठे दोउ कुञ्ज सुहाई । कोटि काम रति छबिहि लजाई ॥

नवल कुञ्ज नवनागरी, नव नागर नँदनन्द ।
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमँगि आनन्द ॥
विलसत मदन विलास, कोटि मदनगणके मथन ।
युगल रूपकी रास, नित्य विलास विलासनिधि ।

नागर श्याम नागरी श्यामा । शोभित कुञ्ज कुटी छबिधामा ॥
चितवत दुर दुर नैन लजौहैं । सो छबि बरणि सकै कवि को हैं
रीझे श्याम नागरी छबिपर । नागरि निरखत श्याम सुभगवर॥
देहदशाकी सुरति विसारैं । अरस परस दोउ रूप निहारैं ॥
शोभित वदन महा छबि छाये । शिथिल अङ्ग श्रमविंदु सुहाये ॥
इन्द्रिय वर राजीव कमल जनु । फूलि रहे मकरन्द भरे मनु ॥
बैठे कुञ्जद्वार सुखदाई । कोमल किसलय सेज सुहाई ॥
लटकति चहूँदिशिकुसुमित बेली । फूलि रही तरुडार नवेली ॥

हरित भूमि छबि बरणि न जाई । बहत समीर सुखद पुरवाई ॥
आये उमहि मेघ सुखकारी । परत बूँद शीतल श्रमहारी ॥
भीजत सुरँग चूनरी सारी । मन सकुचत लखि रसिकबिहारी ॥
बूँद बरावत मोहन पातन । हँसि हँसि करत प्रेमकी बातन ॥

भीजे रस रँग प्रेम सुख, जल भीजे दोउ गात ।
भीजे अम्बर कुञ्जगृह, श्यामा श्याम सुहात ॥
यह अचरजकी गाथ, को माने को कहि सकै ।
गोपसुताके साथ, रमत ब्रह्म द्रुमकुञ्जतर ॥

इह विधि करि विलास बनमाहीं । कह्यो श्याम श्यामाकेपाहीं
अब गृह जाहु सांझ नियराई । मात पिता करिहैं दुचिताई ॥
यह रस रीति गुप्तकी नीकी । तुम प्यारी अति मेरे जीकी ॥
करते कौर डारि मैं आयो । तुम्हरो बोल सुनत उठि धायो ॥
मेरे प्राण बसत तुमपाहीं । इक क्षण तुमको बिसरत नाहीं ॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी । करति मनहिं मन आनँदभारी
अति सनेह बोली सकुचाई । सुनहु प्राण प्रियतम सुखदाई ॥
कहा करौं पग जात न घरको । मन अटक्यो नहिं मानत डरको ॥
दृग तुमको देखत सुख पावैं । गृह गुरुजन मोहि नेकु न भावैं ॥
बरजहु अपनी चितवन तुम हरि । और मन्द मुसकान मनोहरि ॥
तुम्हरी नेकु सहज यह बानी । सहियत हैं हम सर्वसयानी ॥
वशीकरन हैं इनके माहीं । बिवश भयो मन मानत नाहीं ॥

ऐसी विधि परगट करत, दम्पति निज अनुराग।
भये परम आनन्द रस, वदत आपने भाग ॥
श्याम लई उर लाय, प्रिया वोधि पठई घरहिं।
चले आप सुख पाय, सुन्दर घन सुखके सदन ॥
करति जननि अवसेर विशाला। पहुँचे सदन श्याम तिहिकाला
लीन्हें धाय लाय उर मैया। कहति लालको लेहुं बलैया ॥
करते कौर डारि उठि भागे। सुनत गाय व्यानी अनुरागे ॥
लीही गाय आपनी व्यानी। ताते प्रीति अधिक उर आनी ॥
वह तौ नाहिन मेरी गैया। वृन्दावन भरम्यों सुन मैया ॥
गोवर्द्धन यमुनातट सारो। वृन्दावन ढूंढत सब हारो ॥
कोऊ सखा सङ्ग तहँ नाहीं। फिरयों अकेलो बनके माहीं ॥
युवती एक मिली धौं कोही। सो पहुँचाय गई घर मोही ॥
सुनि यशुदा मन अति अकुलानी। धोये पद लै तातो पानी ॥
तुरत श्यामको भोजन दीन्हों। निरखि मुखारविंद सुख लीन्हों
लीलासागर कुँवर कन्हाई। सदा सदा भक्तन सुखदाई ॥
व्रजवासी प्रभु सब गुणआगर। नन्दनँदन सुन्दर सुखसागर ॥
अति श्रीकीरतिनंदनी, रूपराशि गुणखान।
चली श्याम सुख दै भवन, नागरि नवल सुजान ॥
लई खोलि कै हाथ, आंचरते मोतीलरी।
सखी मिली यक साथ, वूझत कहँ तू लाड़िली ॥
तासों व्योरा कहि समुझायो। गई हती यह काज बतायो ॥

कह्यो सखी तब सुन री प्यारी । ऐसी निधरक भई कहा री ॥
ब्रज घर घर तू फिरति अकेली । सङ्ग नहीं कोउ सखी सहेली ॥
मोको सङ्ग बोलि नहि लीनी । ऐसी तैं करनी यह कीनी ॥
प्रातहि गई अबहिं तू आई । बीती दिवस निशा नियराई ॥
पायो हार किधौं पुनि नाहीं । देखहुं मोहिं साध मनमाहीं ॥
चतुर सखी मनमें यह जानी । मिलवति है यह झूठी बानी ॥
यह तौ गई श्यामके पासा । आवति है करि भोग विलासा ॥
कह प्यारी किन हार चुरायो । कैसे जाय कहांते पायो ॥
ब्रजयुवतिन सबहिन मैं जानौ । कहौ तौ सबके नाम बखानौं ॥
ताको नाम लेहि किन लीन्हों । प्यारी तेरे गुण मैं चीन्हों ॥
चोर तुम्हारो कुँवर कन्हाई । तिनसों जाय विलस तू आई ॥

रस बस कीन्हें श्याम तैं, कहा बनावति बात ।
कहे देत रस रँग भरे, अरसाहैं सब गात ॥
कह बहँकावति मोहिं, कहाँ हार कहँ ग्वालिनी ।
तबतें जानति तोहिं, जबतें तैं हरि सँग कियो ॥

इन बातनि कछु पावति है री । तोहिं यहै नित भावति है री ॥
देखति मोहिं अकेली जबहीं । नई बात उपजावति तबहीं ॥
बिनही देखे झूँठ लगावै । नाहक मोसों बैर बढ़ावै ॥
सोंह दिये बूझति मैं तोहीं । जोर कहतिकै देख्यो मोहीं ॥
जब जानी प्यारी बिरुझानी । तब वह चतुर सखी मुसकानी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी । तू जीती मैं तोसों हारी ॥

चली भवन वृषभानुदुलारी । अति अवसेर करत महतारी ॥
गई प्रात राधा नहिं आई । दिवस गयो निशियाम विहाई ॥
हारकाज मैं त्रास दिखाई । ताते रूसि रही कहुं जाई ॥
ह्व है धौं काके घरमाहीं । कहां जाउँ मैं ढूंढ़न ताहीं ॥
जाहु हार यह कहि पछिताई । सुता सनेह अधिक अकुलाई ॥
सुनिहै बात महर कहु जबहीं । मोपर अति रिस करिहै तबहीं ॥

शोचति जननी विकल अति, मन न लहति विश्राम ।
डर डराति ताही समय, गई कुँवरि निज धाम ॥
देखतही उठि धाय, हरषि लई उर लायके ।
सुता माय उर लाय, शोच मिट्यो धीरज भयो ॥

ले री मात हार मैं पायो । जा कारण मोहिं त्रास दिखायो ॥
मनहींमन कीरति सकुचाई । पोच करी मैं याहि रिसाई ॥
अति पुनीत राधिका प्रवीनी । कृष्णमिलनहित यहमतिकीनी ॥
अगम अगोचर है प्रभु जोई । व्रजवनितन वश कीन्हें सोई ॥
जो प्रभु शिव सनकादिक ध्यावैं । व्रजगोपिन सँग सो सुख पावैं
हरिकी कृपा अगोचर सारी । निगमन हूं ते अगम न भारी ॥
प्रीति विवस सबते गिरिधारी । राजा रङ्क पुरुष कह नारी ॥
देवकि उदर प्रीतिवश आये । प्रीतिहिते यशुमति पय प्याये ॥
प्रीतिविवस बन धेनु चराई । प्रीतिविवस नँद कुँवर कन्हाई ॥
प्रीतिहिके वश दही चुरायो । प्रीतिविवस ऊखल बँधवायो ॥

प्रीति विवस गोवर्द्धन धारी। प्रीतिविवस नटवर बनवारी॥
प्रीतिविवस गोपिन संग कामी। प्रीतिविवस वृन्दावन धामी॥
श्याम सदा वश प्रीतिके, तीन भुवन विख्यात।
बिना प्रीति नहिं पाइये, नंद महरको तात॥
प्रीति करहु चित लाय, ब्रजवासी प्रभुपदकमल।
कहत सुनत श्रुति गाय, प्रभु रीझत हैं प्रीतिको॥

---

## प्यारीके घर मिलन।

भये श्याम नागरिवश ऐसे। फिरति छांह सङ्गहि सँग जैसे॥
बदन कमलरस रूप लुभाने। रहत शिलीमुख जो मड़राने॥
वचन नादरस मृग जो गीधे। नैन कटाक्ष बङ्क शर बीधे॥
कबहुँ श्याम यमुना तट जाहीं। बिन प्यारी देखे अकुलाहीं॥
कबहुँ कदम चढ़ि मग अवलोकैं। कबहुँ जाय वन कुंजबिलोकैं॥
गृह बन लगत कहूं मन नाहीं। मिलन प्रकार चहतचितमाहीं
तब वृषभानुपुरा तन आवें। मुरली मधुर बजावें गावें॥
प्यारी प्रगट श्याम गति देखी। मनहीं मनहिं सिहात विशेखी
अति अनुराग भरे दोउ नागर। गुणसागर रस रूप उजागर॥
अरस परस दोउ चाहत ऐसे। शशि चकोर अम्बुज अलि जैसे॥
चली यमुन वृषभानुदुलारी। शोभित सङ्ग नवल ब्रजनारी॥
देखे नंदसुवन तेहि खोरी। व्याकुल प्रेम विकल मति भोरी॥

सखिन सङ्ग लखि नागरी, मन हरषो सकुचाय।
श्याम परे फँद कामके, कौन कहै समुझाय॥
सखियनके सङ्कोच, बोलि सकत नहिं मुख वचन।
हृदय भयो अति शोच, देखि विरह व्याकुल हरिहि॥
इतहि सखिनसों बात बतावै। उतहिं श्यामको भाव जनावै॥
मुख मुसकाय सकुच पुनि लीने। सहज अलक निरवारनकीने॥
एक सखी यमुनासों आवति। ताहि भेंटि यों वचन सुनावति॥
मेरे सदन आइयो आली। हर्ष भये यह सुनि वनमाली॥
प्यारी गुप्त भाव जो कीनो। श्याम सुजान जान सो लीनो॥
हरषि गये तब निज गृह मोहन। प्यारी चली सखिनके गोहन॥
चतुर सखिन मनमें लखि लीनो। भाव कछू हरिसों इन कीनो॥
ह्रवै आपुसमें बतरानी। हरितन लखि कछु यह मुसकानी॥
पुनि मुसकाय कमलमुख फेरयो। सदन बुलाय सखीको टेरयो॥
गये श्याम उन हर्ष बढ़ाई। ये अति चतुर करी चतुराई॥
और भाव कैसो गन कोऊ। आज रैनि मिलिहैं ये दोऊ॥
लै यमुनाते जल अतुराई। सखिन सङ्ग प्यारी घर आई॥
भाव दियो निशि आय हैं, मेरे मोहन आज।
अति हर्षित अङ्गन सजित, भूषण वसन समाज॥
सहज रूपकी खान, अङ्ग शृँगारत लाड़िली।
को करि सकै बखान, त्रिभुवनपति हरिवल्लभा॥
अङ्ग शृँगार कियो हरि प्यारी। वेणी रचि निजपाणि सँवारी॥

मोतिन सङ्ग जराऊ टीको। किधों बिंदु चन्दनको नीको ॥
लोचन अञ्जनरेख बनाई। अवणन तरवनकी छबि छाई ॥
नासा नथ अतिही छबि छाज। नागवेल रँग अधरन राजै ॥
सुभग अङ्ग सब नौसत साजैं। सुरँग सुगन्ध वसन शुभ भ्राजैं ॥
मनमोहनको पंथ निहारैं। कबहुं कि उत्कण्ठा जिय धारैं ॥
भयो बालशशि अस्त निहारी। कहति आज ऐहैं गिरिधारी ॥
आवन पैहैं कैधौं नाहीं। कै आवत ह्वै हैं मगमाहीं ॥
कधौं तात मात भय करिहैं। कै आवत मेरे घर डरि हैं ॥
आवैंगे कैधौं हरि नाहीं। यों शोचति प्यारी मनमाहीं ॥
कबहूं रचि रुचि सेज सँवारी। हरि ऐहैं मन हर्ष बिहारी ॥
सुमन सुगन्ध सेजपर धारै। पुनि पुनि कर अभिलाष निहारै ॥

आवैं कबहुँ अचानकहुं, जो मो गृह घनश्याम।
डारति अति अनुराग भरि, सुभग पांवडे धाम ॥
प्रगटे कृपानिधान, यों अभिलाषा करतहीं।
को करि सक बखान, भयो जु सुख लखि दुहुन मन ॥

वह छबि कापै जाति बखानी। वहरसभिभक मन्द मुसकानी
वह मृदु मधुर मन्द मुसकानी। वह संयोग प्रेम सकुचानी ॥
वह शोभा वह चितवन बांकी। वह रस प्रेम सुभग दुहुं धाँकी॥
वह सुख श्रीराधा माधवको। जो कहि सकै आहि जग कविको
जाकी महिमा वेद न जाने। कबि ताको केहि भांति बखाने ॥
श्यामा श्याम सेजपर सो हैं। अरस परस दोऊ मन मोहैं ॥

गुणआगर छबिसागर दोऊ। कोटि काम रति सम नहिं सोऊ।
मत्त प्रेमरस विवस विहारैं। युगल परस्पर अङ्ग सँवारैं॥
लटपटि पाग सँवारति प्यारी। अलक सुधारत श्रीगिरिधारी॥
रसविलास दोऊ अनुरागे। आलिङ्गन चुम्बन रस पागे॥
हास विलास विविध रस रीती। इह सुख रैनि यामद्वय बीती
अति रसमत्त युगल अलसाने। पुनि पौढ़े दोऊ लपटाने॥

निशि निघटी तमता मिटी, उड़गण ज्योति मलीन।
गये कुसुम कुम्हिलायके, भई दीपछबि छीन॥
विकसे सरस सरोज, भयो पवन शीतल सुरभि।
धरो उतारि मनोज, पनच आपने धनुषते॥

सरस वचन बोली तब प्यारी। जागहु प्राणनाथ बनवारी॥
भयो प्रातको समय कन्हाई। प्राचीदिशि पीरी परि आई॥
चंदन मलिन चिरइ चुहचानी। अलिछूटे कुमुदिन सकुचानी॥
बोले तमचर जहँ तहँ बानी। मिले कोक कोकी सुखमानी।
उठहु प्राणपति सदन सिधारो। है ब्रज घर घर बैर हमारो॥
लगीं रहति परखति ब्रजनारी। जागहिं जिन गुरुजन भय भारी
सुनत उठे मोहन मुसकाई। चले सदन अपने अतुराई॥
गृहतें निकसत सखियन जानी। देखि दरश तनु दशा भुलानी
प्रगट दरश दै गये कन्हाई। यह उनकी मनसाध पुराई॥
शीश मुकुट मोतिनकी माला। पीतवसन कटि नैन विशाला॥

श्याम बरन तनु सुन्दरताई । अङ्ग अङ्ग छवि बरणि न जाई ॥
देखि रूप मन रह्यो लुभाई । निकसि गये गृह कुवँर कन्हाई ॥

वार वार जिय लाड़िली, यह शोचति पछितात ।
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोये रात ॥
देखे जिन सखि कोय, श्याम गये मो सदनतें ।
मैं राखो है गोय, अब लगि यह रस सखिनसों ॥

देखौं जाय पँवरि है प्यारी । जहां तहां ठाढी ब्रजनारी ॥
सकुचि गई चिन्ता उपजाई । बार बार मन मन पछिताई ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही मेरी । सो इन आज प्रगट करि हेरी ॥
निकसे श्याम हमारे घरसों । इन जान्यों ह्वै है अटकरसों ॥
तिनही नित बूझति ये आई । मैं निदरयो इनको सतराई ॥
अबतो श्याम प्रगट इन देख्यो । करिहैं मोसों बहुत परेख्यो ॥
यह तो दांव भलो इन पायो । अब कैसे करि जाय छिपायो ॥
अबहीं बूझहिंगी सब जाई । कह करि हौं उनसों चतुराई ॥
प्रगट करों तो होय अनीती । राखन गुप्त कह्यो हरि प्रीती ॥
शोच परयो कछु बात न आवै । बार बार मन प्रभुहि मनावै ॥
प्राणनाथ हरि होउ सहाई । जाते मेरी पति रहि जाई ॥
जैसे बोध सखिनको होई । दीजै नाथ बुद्धि अब सोई ॥

ऐसे शोचति लाड़िली, कबहूं प्रभुहि मनाय ।
कबहूं प्रभुको सुख समुझि, प्रेम मग्न ह्वै जाय ॥

भयो बोध उर आय, सुमिरतही मन भावनो।
कहिहौं सखिन बुझाय, मन मन हरषी नागरी॥
परम कुशल राधे हरि प्यारी। रच्यो सखिनको बोध विचारी॥
अति आनन्द पुलकि तन आयो। शोच मोह उरते बिसरायो॥
जो छवि सुन्दर कुवँर कन्हाई। गये प्रात सखियन दरशाई॥
उनसों सोई रूप बखान्यों। यह बिचार प्यारी उर आन्यों॥
प्यारी पियके गर्व गहेली। अङ्ग अङ्ग छविपुञ्ज भरेली॥
बैठी सदन बिराजत रूरी। श्यामसनेह सुधारस पूरी॥
कहति परस्पर सखि परिहासा। कहति चलो राधाके पासा॥
ह्वै है निधरक घरमें बैसी। देखहिं चलो बदन छवि कैसी॥
कैसे अङ्ग अभूषण कैसे। कछु बदले कैधौं हैं वैसे॥
आज रैनि हरिसों रति मानी। कहि है कहा सुनैं चलि बानी॥
राधागृह गवनी ब्रजनारी। गई जहां वृषभानुदुलारी॥
देखि नागरी मुख नहिं बोली। जान्यों आई करन ठठोली॥
सहज रही बोली नहीं, कछु बदनसों बैन।
निकट बुलायो सखिनको, नयननहींकी सैन॥
इत लीनों इन जान, परम चतुर आली सबै।
यह कछु रच्यो सयान, देख हमैं बोली नहीं॥
अपनो भेद कछू नहिं दैहैं। कहा बोध रचिकै धौं कैहैं॥
अपनि जाव बल चोर चुरावैं। कैसेहु प्रगट न काहु जनावैं॥
निधरक भई श्याम सँग पाई। भूलहु मति याकी लरिकाई॥

निरखी भृकुटी त्योर निहारी। कहै कहाधों बात सवारी॥
राखति गर्व तुमहुं सब कोऊ। देखहु बोल नहीं किन कोऊ॥
कह्यो बिहँसि तब इक ब्रजनारी। सुनी अहो वृषभानुकुमारी॥
आज कहा मुख मूँद रही है। कापर रिस करि मौन गही है॥
हमसों कहति नहीं सो ए री। हम तो सङ्ग सखी हैं तेरी॥
कै देवनको ध्यान धरोरी। कै सुभाव कछु यहै परयो री॥
जब आवति हम तेरे प्यारी। तब तब यहै धरत तैं धारी॥
तुम दुराव कित राखति हमसों। हमहूं कछु राखति हैं तुमसों
ऐसो शोच कहा मनमाहीं। जो जवाब तोहि आवत नाहीं॥

कछु दिनते तेरी प्रकृति, अरी परी यह कौन।
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधे मौन॥
अपने मनकी बात, कछु हमसों भाषति नहीं।
ऐसे कहि मुसकात, प्यारीसों सब नागरी॥

मनहीमन जानति सब प्यारी। मोसों हँसी करति ब्रजनारी॥
परम प्रवीन सकल गुणखानी। बोली मधुर मनोहर बानी॥
सुनहु सखी बूझत कह हमसों। कहा बुझाय कहौं मैं तुमसों॥
आज प्रात इक चरित नयो री। जात इते कछु दृगन लख्यो री॥
नीके नेकु न देखन पाई। तबहींते मन रह्यो लभाई॥
कै घनश्याम कि श्याम कन्हाई। यहै शोच उर रह्यो समाई॥
बक पंक्ती कै हैं गज मोती। पीत दुकूल कि दामिनि ज्योती॥
इन्द्र शरासन कै बनमाला। शीश मुकुट कैधौं अरि व्याला॥

मन्द मधुर जलधरको गाजन । कैधों पग नूपुरध्वनि बाजन ॥
देखे आज श्याम जबहींते । पर्यो यहै धोखा तबहींते ॥
कहा कहौं हरिकी चपलाई । ऐसो रूप गयो दरशाई ॥
भरी श्यामरस कुवँरि सयानी । कहति सखिनसों निधरकबानी ॥

सखी कहति सब आपुसैं, सुनहुँ न याकी बात ।
प्रगट करन आई जु हम, आपुहि प्रगटति जात ॥
हम देखे जिय श्याम, तैसेही इनहूं लखे ।
दोष देति बिन काम, यह सूधी हमही कुटिल ॥

इतनेहि रहौ और जिन भाखौ । जो चाहौ अपनी पति राखौ ॥
इनसों तुम चाहतिहौ जीतौ । मनते गर्व करौ यह रीतौ ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी । को याकी बुधि सकै बखानी ॥
हम याकी दासी सरि नाहीं । देखहु सखी समुझि मनमाहीं ॥
हम देखत कछु और सुभाऊ । यह देखति हरिको सतभाऊ ॥
याकी अस्तुति कहा वखाने । इनहीं भले श्याम पहिचाने ॥
तब हँसि कह्यो सखिन सुनि प्यारी । तैंजो लखे सोहैं बनवारी ॥
प्रातहिते जो आज निहारे । गये कान्ह वे मेघ न कारे ॥
मोरमुकुट शिर मोर न होई । कटि पटपीत न दामिनि सोई ॥
मुक्तमाल बनमाल सुवेशू । नहिं वकपांति न धनुष सुरेशू ॥
पग नूपुरध्वनि गरजन नाहीं । मत राखौ धोखौ मनमाहीं ॥
देखे तैं प्रातहि गिरिधारी । काहेको शोचत मन प्यारी ॥

धनि धनि व्रजकी नागरी, हरि छबि लखति अनूप ।
मोहिं होत धोखो तबहिं, जब देखति वह रूप ॥
तुम देखति हरि गात, कैसे दृग ठहराय सब ।
मोपै लख्यो न जात, करि हारी केतो यतन ॥

तुम दरशन पावति री कैसे । मोहूं श्याम दिखावहु तैसे ॥
वे तो अति छबि चपल कन्हाई । तुम कैसे देखति ठहराई ॥
कैसे रूप हृदयमें राख्यो । मोसो सखी सांच सब भाख्यो ॥
मैं देख न पावति हरि नीके । रहति सदा अभिलाषा जीके ॥
धनि धनि तू वृषभानुदुलारी । धनि तुम पिता धन्य महतारी
धनि सो दिवस रैनि सो वारा । जब तैं लीन्हों री अवतारा ॥
धनि तेरे वश कुञ्जविहारी । धनि तैं वशकीन्हें गिरिधारी ॥
भावभक्ति मति रति धन सोऊ । एक सुभाव धन्य तुम दोऊ ॥
तोहि श्याम हम कहा दिखावें । तू हरिको हरि तोको भावें ॥
एक जीव द्वै देह तुम्हारी । वे तोमें तू उनमें प्यारी ॥
उनकी पटतरको तू दीजे । तेरी पटतर उनको लीजे ॥
सुधा सुधागुण क्यों बिलगाई । गूँगे को गुरु कह्यो न जाई ॥

तू उनके उरमें बसी, वे तेरे उरमाहिं ।
अरस परस ज्यों देखिये, दरपण दरपण छांहिं ॥
कहो कौनपै जाहिं, तुम दोउ निर्मल गात अति ।
वे तेरे रँगमाहिं, तू उनके रँगमें रँगी ॥

नीलाम्बर गराामा छवि तेरे । तुम छवि पीत वसन उनकेरे ॥
घन भीतर दामिनी विराजै । दामिनि घनके चहुँ दिशि राजे ॥
तुम अनूप दोऊ सम जोरौ । नन्दनँदन वृषभानुकिशोरौ ॥
सुनि सुनि सखियनकी मुखबानी । बोली राधाकुँवरि सयानी ॥
सुनि ललता सांचो कहि मोसों । मैं बूझति सकुचतहौं तोसों ॥
मोसों मानत नेह कन्हाई । मेरौसों कहि मोहिं सुनाई ॥
तुम तो रहत श्यामसँग नितही। मिलति जाय उनसों जिततितही
उनके मनकी सब तुम जानौ । हाहा मोसों सांच बखानौ ॥
सुनि राधा इतरात कहा री । तोते और कौन है प्यारी ॥
तेरेवश नँदनन्दन ऐसे । रहत पवन पंखावश जैसे ॥
ज्यों चकोर शशिके वशमाहीं । है शरीरके वश परछाहीं ॥
नाद विवश मृग देखिय जैसे । मनमोहन तेरे वश तैसे ॥

मिली खरिक तू श्यामको, दई धेनु दुहिं तोहिं ।
तेरे वश हरि तबहिंते, कहा भुरावति मोहिं ॥
बरणौं कहा सनेह, नेकहु तुम न्यारे नहीं ।
हो तुम एकहि देह, वे दच्छिण तुम वाम अँग ॥

---

## गर्वव्याज विरह लीला ।

सुनि प्यारी ललिता मुख बानी । मैं ऐसी जियमें यह आनी ॥
और नहीं कोऊ मो सरिकी । हौं राधा आधा अँग हरिकी ॥
अपनेही वश पियको करिहौं । अनत जात देखहुँ तौ लरिहौं ॥

ऐसे गर्व कियो जिय प्यारी। घर घर गई सकल ब्रजनारी॥
इहि अन्तर आये गिरिधारी। गर्वविभंजन जन सुखकारी॥
हरि अन्तर्यामी अविनासी। जानी प्यारी गर्व उदासी॥
उझकि झांकि प्यारीतन हेर्यो। प्यारी देखतही मुख फेर्यो॥
कह्यो कान्ह तुम मानत नाहीं। उझकत फिरत घरन ब्रजमाहीं॥
मिसही मिस युवतिन को हेरो। नेक नहीं छांडत घन घेरो॥
कोउ जैसे तैसे अपने घर। तुम आवत मानत नाहीं डर॥
ऐसे प्रेम गर्व करि प्यारी। प्राणनाथ तन नाहिं निहारी॥
जान्यो द्वारे लगे कन्हाई। बैठि रही अभिमान जनाई॥

हृदय श्याम मुख धाममें, राख्यो गर्व बसाय।
ठौर तहां पायो नहीं, रहे श्याम सकुचाय॥
जहाँ रहत अभिमान, तहाँ बास मेरो नहीं।
सो राधा उर जान, आप लगे पछितान हरि॥

तुरतहि गमन तहांते कीन्हों। नहीं दरश प्यारीको दीन्हों॥
चकित भई प्यारी मनमाहीं। यहां श्याम आये क्यों नाहीं॥
आपन आप द्वार पुनि देख्यो। तहां नाहिं नँदलालहि पेख्यो॥
झाँकतही फिरि गये कन्हाई। मनहीं मन श्यामा पछिताई॥
मोत चक परी अति भारी। ताते मोहन मोहिं विसारी॥
इक तो बैठि रही गर्वानी। दूजे मैं हरिसों झहरानी॥
मेरी बुद्धि जानिकै हीनी। मोसों श्याम निठरता कीनी॥
वे बहुनायक कुञ्जबिहारी। मोसों उनके कोटिक नारी॥

कासे कहौं हरिहि को लावै । को अब मोकों हरिहि मिलावै ।
भई विरहव्याकुल अकुलाई । वदनसरोज गयो कुन्हिलाई ॥
तब आपुनको निठुर कहावै । सुमिरि प्रीति उर भरि भरि आवै ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारै । नैन सरोजनसों जल ढारै ॥

भई विकल अति नागरी, विरहव्यथाको पीर ।
खान पान भावै नहीं, सुधि बुधि तजी शरीर ॥
घर बाहर न सुहाय, सुख सब दुखदायक भये ।
रह्यो शोच उर छाय, ब्रजबासी प्रभु मिलन को ॥

राधा सदन सखी पुनि आई । देखि दशा मन अति भरमाई ॥
अति व्याकुल तन वदन मलीना । नीर विहीन मीन जिमिदीना
कर गहि गहि बूझति ब्रजनारी । कहा भयो तोकहँ री प्यारी ।
ऐसे विवस भई तू जाहे । हमैं सुनाय कहत नहिं काहे ॥
अति प्रसन्न देख्यों तोहिं तवहीं । क्यों मुरझाय गई री अवहीं ॥
वहुरि लखे धों कतहुं कन्हाई । उनहू तोहिं ठगौरी लाई ॥
श्याम नाम सुनि श्रवणन जागी । जान्यो हरि आये अनुरागी
आतुर सखी कण्ठ लपटानी । चकि परी मोते कहि बानी ॥
अब अपराध क्षमो रिस त्यागी । करुणा करि मोहिकरहुसभागी
चकित रहीं सब ब्रजकी नारी । रहीं शोचि राधिकहि निहारी
शीतल जलसों मुख पखरायो । पोंछि आँचरन बचन सुनायो ॥
आज भई कैसी गति तेरी । परम चतुर ब्रजमें तू है री ॥

भयो अलिनके बचन सुनि, कछुक चेत उर आय।
तब जानी एती सखी, गई हृदय सकुचाय॥
क्यों तुम वदन मलीन, काहे तू ऐसी भई।
कहु प्यारी परवीन, बार बार बूझति सखी॥

बोली तब सखियनसों प्यारी। तुमसों कहो दुराव कहा री॥
मैं तो हरिके हाथ बिकानी। उन मुहिं तजी कुटिलमति जानी॥
अपनी कथा श्यामकी करनी। प्रगट कहों तुमसों सब बरनी॥
बैठीही मैं सदन अकेली। झांके आय द्वार हरि हेली॥
मैं मनमें कछु गर्व बढ़ायो। आदर करि नहिं भवन बुलायो॥
उन मेरे मनकी सब जानी। अन्तर्यामी शारँगपानी॥
कमलनैन वे गर्वप्रहारी। जाति रहे सखि मोहिं बिसारी॥
तबते बिरह विकल अतिकीनो। अहङ्कार यह फल मोहिं दीनो॥
चित न रहै कितनो समझाऊं। अब कैसे करि दरशन पाऊं॥
भयो भवन बन मोकहँ आली। नहीं सुहात बिना वनमाली॥
सुनहु सखी लागति मैं पाऊ। अब हरि मिलै सो करहु उपाऊ॥
बिन मनमोहन कुंवर कन्हाई। भये सुखद सब मोहि दुखदाई॥

गिरिकन्यापति तिलक कर, दाहत अनल समान।
शिवसुतबाहन भखनको, भयो हलाहल पान॥
जलधि सुतासुत हार, भयो इन्द्रआयुध सखी।
मलयज मनहुँ अँगार, शाखामृगरिपु वसनवर॥

सखी दृग मेरी यह है री । भयो काम अब मोको बैरी ॥
बाजिन भवतु प्रियको चाली । अब नहिं हरिसों करिहौं आली
अतु भिचागि जो मानहिं करिये । सोउ जरिजाहु न उरमें धरिये
अब सुभाव रहिहौं हरि साथा । मोहिं मिलावहु सखि ब्रजनाथा
सुनि राधे करनी यह तेरी । हमसों भेद कियो तैं एरी ॥
उनके गुण जैसे नहिं जाने । अबहौंतै ऐसे ढँग ठाने ॥
एकहि बार मिली तू धाई । नहिं राखी मर्याद बड़ाई ॥
तैंहीं उनको मूँड़ चढ़ायो । तब नहिं हमको भेद जनायो ॥
भवन विपिन सँग डोलन लागी । वे बहु तरुणिरमण अनुरागी ॥
निज कर अपनो महत गँवायो । परवश परि कौने सुख पायो ॥
मेरो कह्यो अजहुँ मनमाहीं । हित करि मानेगी धौं नाहीं ॥
धीरज धरि कत मरत वृथाहीं । तू हू मान करति क्यों नाहीं ॥

बात आपनी आपने, कर है देखु विचार ।
भई कहा ऐसी विवस, एरी एकहि बार ॥
पुरुष भँवर जिय जान, भोगी बहुत प्रसनको ।
बिना किये बहु मान; कौने पिय निज वश किये ॥

कहति सखी तुमतौ यह बाता । कम्प होत सुनि मेरे गाता ॥
मैंतौ मान श्यामसो कीनो । तातै इतनो दुख मोहिं दीनो ॥
अबतौ भूलि मान नहिं करिहौं । श्याम मिलहिं तौ पायन परिहौं
बिनती करि करि उनहिं सुनाऊं । यह अपनो अपराध क्षमाऊं ॥
चूक परी मोते मैं जानौं । उनको यह अपराध न मानौं ॥

वे आवत हैं मेरे नीके। मैंहौं गर्व धरयो सखि जीके॥
मेरे गर्वते कहा सरयो री। मिटयो हृदय सुख दुःख भयो री॥
जाते हानि आपनी होई। कहो सखो कीजै क्यों सोई॥
मान बिना नहिं प्रीति रहै री। प्रगट देखि मोहिं कहा कहै री॥
धाय मिलेकी गति तेरीसो। भई अधीन फिरति चेरीसी॥
अपनो भेद उन्हें तैं दीन्हों। तब दुराव हमहू सों कीन्हों॥
भय बिन प्रीति होति नहिं प्यारी। सचमानहिंसखि सीखहमारी

पुनि पुनि सिखवति तुम सखी, मान करनको मोहिं॥
मनतौ मेरे हाथ नहिं, मान कौन विधि होहिं॥
उमग भरत दिनरात, श्यामगुणन अभिलाष करि।
मन नहिं मानत बात, मान सजौं कैसे सखी॥

मन मोसों अब बाम भयो री। कहा करौं हरिसङ्ग गयो री॥
अब अपनो हित उनहिं न जानौं। मुदित मूढ़ अपमान न मानौं
इन्द्रिय सब स्वारथ रस पागी। गई सङ्ग मनही के लागी॥
घर फूटे क्यों रह्यो परै री। मनहिं बिना को मान करै री॥
अब कोऊ मेरे सँग नाहीं। रहो अकेली म तन माहीं॥
तापर भयो काम अब बैरी। विरहअग्नि तनु जारत है री॥
इतनेपर तुम मान करावति। कहो कौन सखि यह कहनावति।
मैं तो चूक आपनी मानी। मोहिं मिलावहु श्यामहिं आनी॥
अबतो क्योंहूं मान न करिहौं। ऐसी बात कहै तिहि लरिहौं॥
आली मोहिं नँदनन्दन भावै। सोई हितू जो आनि मिलावै॥

अबजो मिलहिं श्याम बड़भागी । फिरति रहौं सङ्गहिसँग लागी ॥
ऐसे कहि प्यारी अनुरागी । दारुण विरह व्यथा उर जागी ॥

देखि दशा सहि नहिं सकी, अली उठी अकुलाय ॥
हम राधाकी प्रिय सखी, रचिये वेगि उपाय ॥
कहैं श्यामसों जाय, ऐसी चूक परी कहा ।
दीजै याहि मिलाय, झुरि झुरि अति पीरी परी ॥

सखिन कह्यो तब सुन री प्यारी । मतिहि होय व्याकुल सुकुमारी ॥
अवहिं जाय हम श्यामहिं लावैं । नेकु धीर धरु तोहिं मिलावैं ॥
पटसों पोंछि वदन वठाई । तरक बात बहु भाषि सुनाई ॥
नेकु नहीं धीरज उर धारैं । बार बार मुख कान्ह उचारैं ॥
सावधान करि सखी सयानी । दौरी गई यहै अतुरानी ॥
लखि हरिमुख ललता मुसकानी । हरि लखि हँसे दुहूँ मन जानी ॥
तब हरि ललतासों मुसुकाई । बूझत चितवत नैन चुराई ॥
अति आतुर आई कत धाई । काहे वदन गयो मुरझाई ॥
बोली ललता तब मुसकाई । सुनहु चतुर नँदनन्द कन्हाई ॥
आज एक अचरज लखि पायो । परम विचित्र न जात बतायो ॥
अतिही अद्भुत रचना जाकी । वर्णत बनत भांति नहिं ताकी ॥
रीझि रही मैं ताहि निहारी । रीझौगे लखि कुञ्जविहारी ॥

मैं आई तुमसों कहन, चलहु दिखाऊं नैन ।
देखि परम सुख पायहौ, जो मानौ मो बैन ॥

एक अनूपम बाग, स्वर्णवर्ण नहिं जाय कहि।
उपजत लखि अनुराग, अति विचित्र बानक बन्यो।
युगल कमल अति अमल विराजै। तापर राजहंस छवि छाजै॥
द्वै कदलीतरु तापर सोहै। बिन दल फल उलटे मन मोहै॥
तापर मृगपति करत बिहारू। मृगपतिपर सरवर इक चारू॥
द्वै गिरिवर सरवरपर राजै। तिनपर एक कपोत विराजै॥
निकट सनाल कमल द्वै फूले। शोभितते अधदिशिको झूले॥
फूल्यो पुनि कपोतपर नीको। एक सरोज भावतो जीको॥
तापर एक अमीफललाग्यो। कीर एक तापर अनुराग्यो॥
तहां एक कोयल द्वै खञ्जन। तिनपर धनुष सुभग मनरञ्जन॥
धनुपर शशि द्वै नागिनकारी। मणिधरि एक नागिनी भारी॥
ऐसो अनुपम बाग सुहायो। घटत नेहजल कछु कुम्हिलायो॥
चलि घनश्याम सींचि सो दीजै। शोभा देखि सफल दृग कीजै
करि विचार देखो मनमाहीं। बनी ललित सब अङ्गनिमाहीं॥
सुनहु श्यामसुन्दर नवल, छैल छबीले श्याम।
तुम्हैं मिलनको नवल वह, अति व्याकुल है बाम॥
कहा भयो जो मान, कियो प्रेमके लाड़से।
अति सुन्दरी सुजान, प्यारी जीवन जीयकी॥
बरणौं श्रीवृषभानुदुलारी। चित दै सुनो लाल गिरधारी॥
कहौं प्रथम वेनी रुचिराई। ललित पीठ पाछे छवि छाई॥
अहिनी मनहुं कुटिल गति त्यागी। शशिमुख सुधाचुरावनलागी

रेखा अरुण सिंदूर सुहाई। शोभित शोभ न जानि बताई॥
मानहुँ किरण लाल रविकेरी। तिमिरसमूह बिदारि उजेरी॥
शोभित कुटिल भृकुटि अतिनीकी। मन हरिलेति भावतीजीकी॥
जगत जीत करि निजवशचारी। मनहुं मदन धनु धरे उतारी॥
केसरआड़ ललाट सुहाई। मनहुँ रूपकी पाड़ बँधाई॥
चपल नैन बिच नाक सुहाई। शोभित अधरनकी अरुणाई॥
मनौ युगल खञ्जन शक शोभा। देखि एक बिंबाफल लोभा॥
दशन कपोल चिबुक दरग्रीवा। बरणि न जाति महाछबिसीवा॥
सुभग अङ्ग सब भूषण सोहैं। कोटि काम तिय निरखत मोहैं॥

अति कोमल सुकुमार तन, सकल सुखनको सोर।
तुम बिन मोहन लाल पिय, व्याकुल अधिक शरीर॥
भरि भरि लोचन नीर, श्याम श्याम मुख कहि उठति।
चलहु हरहु यह पीर, मैं आई लखि धायकै॥

प्यारी बिकल सुनत सुखदाई। सहि नहिं सके उठे अकुलाई॥
चले बिहँसि ललताके साथा। प्रेमहिके वश श्रीव्रजनाथा॥
प्रेमबिवस प्यारीपहँ आये। देखि दशा मन अति पछताये॥
परी बिकल तनु दशा बिसारी। प्यारी मुख देखत गिरिधारी॥
नीलाम्बर निज करते टारौ। लीन्हीं सन्मुख बदन सुधारी॥
जलदपटल मानहु बिनगाई। दियो चन्द निकलङ्क दिखाई॥
भयो चेत परसत पियपानी। सन्मुख दृष्टि परत सकुचानी॥
लई उमँगि भरि अङ्क कन्हाई। बिकल देखि अँखियाँ भरि आई॥

युगल परस्पर लखि सकुचाये। इतनेहि बिरह दोऊ मुरझाये॥
कञ्चनवेलि तमाल सुहायो। मनहुं प्रेमवश सुधा सिंचायो॥
हरषि दुहू दिशि मुसकन फूले। परमानन्द फलन करि झूले॥
मुरछन विरह तुरत बिसराई। लखि यह मिलन सखी हरषाई॥

वह चितवन वह हँसि मिलन, वह शोभा सुख भार।
भई विवश ललता निरखि, इकटक रही निहार॥
रहे परस्पर देख, अति आतुर दोऊ छबिहि।
परन न देत निमेख, तृप्त न क्योंहूं मानहीं॥

ललता करत सखिनसों बानी। देखहु सखि राधा अतुरानी॥
कैसे अङ्ग अङ्ग छबि देई। मिले श्याम मन धीर न लेई॥
तृषावन्त जिमि अँचवत नीरा। सोऊ तौ धारत पुनि धीरा॥
यह आतुर छबि लै उर धारै। नेक नहीं दृग इत उत टारै॥
ज्यों चकोर चन्दहि टक लावै। याकी सरि सोऊ नहिं पावै॥
होम अग्नि घृत गति है जैसी। याकी दशा देखिये तैसी॥
यदपि श्याम श्यामा सँग प्यारी। छबि निरखत अतिआनँदभारी
हाव भाव करि पिय मन मोहै। विविध विलास वदन छबि सोहै
विरहविकल मति तदपि भ्रमावै। मिलेहु प्रतीति न उरमें आवै
तृषामध्य जिमि सलिलहि देखो। उपजति अधिकै प्यासविशेखो
चितवत चकित रहत चितमाहीं। स्वप्न कि सत्य देश यह आहीं
बुधि वितर्क बहु भांति बनावैं। देखहु अनदेखे ठहरावैं॥

कबहुँ कहति हौं कौन हौं, को हरि करत विचार ।
यह सुख भावत कौनको, सचकित रहत निहार ॥
निपट अटपटी बात, समुझि परत नहिं प्रेमकी ।
उरझि सुरझि उरझात, उरझनहीमें सुरझ अति ॥
उत हरि रूप इतै दृग प्यारी । लखि सखि मनहुं करतहैं रारी ॥
अति अहँकार भरे भट दोऊ । नेकुहु हारि न मानत कोऊ ॥
इत सुदृष्टि करि काम सुहाई । सेना सजि सजि दृगन चलाई ॥
उन अति भूषण जाल अपारा । अङ्ग अङ्ग रचि व्यूह सँवारा ॥
इनहिं कटाक्षबाण अति चोखे । बारंहिं बार हनत रण रोखे ॥
उतनहिं बदन व्यथा अति शूरे । पुलकि अङ्ग मानहुँ सरि पूरे ॥
इनअनुरागउतहिछबिछाई । क्षण क्षण अधिकअधिक अधिकाई
छवितरङ्ग सरिता अधिकानी । लोचन जलनिधि तृप्त न मानी
उत उदार छवि अङ्ग श्यामके । इत लोभी अति नैन बामके ॥
ललता सङ्ग सखिनको लीन्हें । दम्पति सुख देखत दृग दीन्हें ॥
लखियहमिलनसखीअनुरागी । कहतिकि धनिधनि दोउबड़भागी
धन्य नवल नवला यह जोरी । धनिधनि प्रीति नहीं रुचि थोरी
धन्य मिलन धनि यह लखन, धनि धनि धनि अनुराग ।
धनि सुख लटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग ॥
धनि धनि पुनि पुनि भाषि, हरखि चलीं सिगरी अली ।
युगल रूप उर राखि, एकहि थल राखे युगल ॥

———

## परस्पर अभिलाष लीला।

शोभित श्याम राधिका जोरी। अरस परस निरखत तृणतोरी॥
हरि रीझे प्यारी छवि देखी। भये विवश उर हर्ष विशेखी॥
कबहुँ पीतपट ढारत बारी। कबहुँ मुरलि वारत गिरिधारी॥
कबहुँ माल मुक्तनकी वारैं। कबहूं तन मन वारि निहारैं॥
कबहुँ सिहात देखि मनमाहीं। राधा सम शोभा कहुँ नाहीं॥
इनको पलक ओट नहिं कीजै। रूपसुधा नैननिपुट पीजै॥
कबहुँ निरखिमुखइरिसकुचाहीं। कोटि काम जिनकेवशमाहीं॥
चपल नैन दीरघ अनियारे। हाव भाव नाना गति भारे॥
कोटि कुरङ्ग कमल बलिहारी। खञ्जन मीन डारिये वारी॥
लोचन नहिं ठहरात श्यामके। काहू अँग सुख रङ्ग बामके॥
भये श्याम प्यारीवश ऐसे। फिरति गुड़ी डोरीवश जैसे॥
इकटक नैन अङ्ग छवि सोहैं। भये विवस लखि रूप विमोहैं॥

उठे उठत हैं तुरतही, बैठे बैठत पास।
चले चलत सँग बामके, ज्यों तनुछांह बिलास॥
रही सुरति कछु नाहिं, देह दशा भूली सबै।
अभिलाषा मनमाहिं, प्यारीहीके रूपकी॥

मगन श्याम श्यामारसमाहीं। निज स्वरूपकी सुधि कछु नाहीं
राधारूप देखि सुख पावैं। पुनि पुनि मन अभिलाष बढ़ावैं॥
मांगि लेति भूषण प्रियपाहीं। अपने अङ्ग सँवारत जाहीं॥
सजि तरवन कुण्डलहि उतारैं। बेसर लै नासापर धारैं॥

बेनी गूंथि मांग पुनि करहीं। शीशफूल अपने शिर धरहीं ॥
बेंदी भाल सँवारत तैसी। शोभित है प्यारीकी जैसी ॥
प्यारी दृगतें अञ्जन लेहीं। अति हित करि अपने दृग देहीं ॥
भूषण वसन सजत सब वैसे। प्यारी अङ्ग विराजत जैसे ॥
प्यारीको पियकी छवि भावै। हाहा करि यों वचन सुनावै ॥
कुण्डल मुकुट पीतपट पाऊं। मैं पिय तुम्हरो रूप बनाऊं ॥
हँसतहि हँसत मांगि सब लीन्हों। पियको भेष नागरी कीन्हों ॥
गोरे कान्ह सांवरी राधा। निरखि परस्पर पूरत साधा ॥

कबहुँ मुरलि लै नागरी, अधर धरति मुसकाय।
मन्द मन्द पूरति स्वरन, रिझवति पियहि बजाय ॥
कबहुँ बजावत श्याम, अरस परस अधरन धरत।
पूरत हैं मन काम, सकल कामपूरण युगल ॥

हरिको अपने रूप निहारी। आपहि हरि स्वरूप लखि प्यारी ॥
यह अभिलाषा उर तब धारी। कहति सुनो पिय गिरिवरधारी॥
तुम बैठो मानिनि दृढ़ ह्वै कै। तुमहिं मनाऊं मैं पद छ्वै कै ॥
मोको यह अभिलाष विशेखी। सुख पैहीं नैननि यह देखी ॥
सुनत श्याम मन मन मुसकाई। मुरि बैठे करि मान रुखाई ॥
तब प्यारी मन अति अनुरागी। हरिसों मान छुड़ावन लागी ॥
कहति मान तजि प्राण पियारी। मोते चूकपरी कह भारी ॥
कहतहिमैं तुम रिस कर मानी। कहा प्रकृति तुव परी सयानी॥
वृथा हठीली मान न कीजै। अब करि कृपा मोहिं सुख दीजै ॥

बार बार कर गहि गहि भाखै। शीश नवाय चरणपर राखै ॥
आनन आनन जोरि निहारै। पुनि पुनि वचन अधीन उचारै ॥
क्यों इतनो हठ करत नवेली। बोलत क्यों नहिं गर्वगहेली ॥

श्याम कियो हठ जानि कै, यह विचार ठहराय।
प्यारीके उर रसविरह, नेकु देहु उपजाय ॥
बैठि रहे निठुराय, नहिं बोलत मानत नहीं।
पुनि पुनि परसति पाय, हाहा करि करि लाड़िली ॥

नहीं हँसति नहिं मुखतन जोवै। बार बार नख भूमि करोवै ॥
लखि यहचरितहँसतिमनप्यारी। चकितरहत हँसि बदननिहारी
कहति सुनहुपियअबहँसिबोलो। तजहु मान यह घूंघट खोलो ॥
मोहन अब यह खेल मिटावो। कोटि चन्द्रछबि बदन दिखावो ॥
नागरि हँसति हृदय सुख भारी। सूधेनहिं चितवत गिरिधारी॥
लखि तियरूप पीयको प्यारी। बदन विलोकति चकृत भारी ॥
अपनो रूप पुरुषको देखी। भई मगन रसविरह विशेखी ॥
मैं नारी वे पुरुष विहारी। किधौं पुरुष मैं हौं वे नारी ॥
बढ़ी विरह संभ्रमता भारी। भई विकल तनु दशा बिसारी ॥
निरखत श्याम विरहकी शोभा। बोलत नाहिं अधिक मनलोभा
कबहुँ कहत यहख्यालन त्यागत। गानकरत नीके नहिं लागत ॥
कबहुं अंक भरिउरसों लावति। कबहूं फिरि परिपांयमनावती॥

कबहूं पाछे ह्वै रहति, कबहूं आगे जाय।
कबहुं उठति बैठति कबहुं, कबहुंक लेति बलाय ॥

कबहु कहति है पीय, कबहूँ प्यारी कह कहति ।
धीरज धरत न होय, भई समीपहि विरहवश ॥
भई विरहव्याकुल जब बाला । हर्षि हँसे तब पिय नँदलाला ॥
लई तुरत प्यारी उर लाई । कहति ख्यालहीमें अकुलाई ॥
तुमहीं मान करत मोहि भाख्यो । भई विवश कत धीरज राख्यो
मैं तो तुमको भाव बतायो । तुम काहे मनमें डर पायो ॥
देखि विरहव्याकुल मुरझाई । बार बार हरि अङ्कम लाई ॥
अमियवचन कहि शीतल कीन्हीं । बिरहताप उरते हरि लीन्हीं
तब नागरि मन लखि सुखपायो । मिटयो विरह मन हर्ष बढ़ायो
कहति भलो पिय मान दिखायो । मेरे मन अभिलाष पुरायो ॥
तियके रूप श्यामछवि देखी । पुनि पुनि पुलकित मुदितविशेखी
दंपति हर्ष मनहि मन कीन्हीं । तब नवकुञ्ज चलन चितदीन्हीं
पयारी मुकुर पाणि लै देख्यो । नटवर रूप आपनो पेख्यो ॥
हँसतहि हँसत भेटि सब डारयो । सहज रूप अपनो पुनि धारयो

चले हर्षि वन कुञ्जको, युगल नारिके रूप ।
इक गोरी इक साँवरी, शोभा परम अनूप ॥
अङ्ग अङ्ग छविजाल, अति विचित्र भूषण बसन ।
श्रीराधा नँदलाल, शोभा अवधि विलासनिधि ॥

जात चले व्रजवीथिन दोऊ । लखि नहिं सकत नारिनर कोऊ ॥
नंदनँदन तियछवि तनु काछे । शोभित हैं राधासँग आछे ॥
बार बार पिय रूप निहारी । मनहीं मन रीझति है पयारी ॥

कहति सखी देखे जिन इनको। बूझेते कहिहौं कह तिनको॥
तिहूँ भुवन शोभा सुखकीनिधि। करिहौं तिनकोगोपकवनविधि
पग नूपुर बिछिया छबि छाजैं। गजगति चलत परस्पर बाजैं॥
श्याम गौर सुन्दर सुख जोरी। मरकतमणि कञ्चनछबि थोरी॥
भुज भुज कण्ठ परस्पर राजै। या छबिको उपमा नहि छाजै॥
जात युगल बनको सुख पाई। उतते चन्द्रावलि सखि आई॥
दूरहिते लखि रही निहारी। इकटक नैन निमेष निवारी॥
पुनि पुनि मन विचार कर जोहै। एक राधिका दूसरि को है॥
ब्रजयुवतिन इक इक कर जानैं। यह धौं कौन नहीं पहिचानैं॥

> और गांवते यह कहूं, आई है ब्रजमाहिं।
> अतिहि सलोनी सांवरी, अबलौं देखी नाहिं॥
> राधे मन सकुचाहिं, चन्द्रावलि आवति निरखि।
> रही श्याम मुख चाहि, ब्रजहीको फेरति हरिहि॥

कहति जाहु पिय फिर मुख वाहीं। करते कर छूटत है नाहीं॥
उत आवति लखि सखिहि लजानी। इतहि श्यामके नेह भुलानी॥
दुख सुख हर्ष न हरिरस माती। उत चन्द्रावलि इन रँगराती॥
कहति निकट देखहु धौं जाई। बूझौं याहि कहांते आई॥
देख श्याममुखछबि मुसकानी। करी चतुरई इन पहिचानी॥
इनते निधरक और न कोऊ। कैसी बुद्धि रची इन दोऊ॥
ये दोऊ अति चतुर सयाने। निज करि इन्हैं विधाता जाने॥
और कहा इनको कोउ जानैं। मोसों नहीं परत पहिचानैं॥

सकुच छांड़ि अब इनहिं जनाऊं। जान बूझ काहे निदराऊं॥
जो इनको मैं टोकत नाहीं। जैहैं जीत मनहिं मनमाहीं॥
यह चतुरई चले छलि दोऊ। प्रगट करौं इनके गुण सोऊ॥
ऐसे बहुरि इन्हें नहिं पाऊं। आज प्रगट कहि लाज लजाऊं॥

कहु राधे यह कौन है, सङ्ग सांवरी नारि।
कबहुं इन्हें देख्यो नहीं, अति सुन्दरि सुकुमारि॥
को है इनको नाथ, कौन गोपकी ये सुता।
भलो बन्यो है साथ, जैसी यह तैसी तुमहुं॥

मथुराते यह आजहि आई। है इनते कछु प्रीति सगाई॥
एक दिना ललतासँग माहीं। दधि बेचन हम गई तहांहीं॥
उनहींके सँग भई चिन्हारी। तबहींकी पहिचान हमारी॥
वही सनेह जानिके आई। ऐसो शील स्वभाव सुहाई॥
मैं गृहते इत आवन लागी। येऊ संग आय अनुरागी॥
सुनि राधा यह सहज सुहाई। शील सनेह रूप अधिकाई॥
इनको ब्रजमें क्यों न बुलायो। अपने निकटहि आनि बसायो॥
कै वृषभानुपुरा कै गोकुल। राखहु इनहिं बुलाय सहित कुल॥
तुमहीं नवल नवल हैं येऊ। दोऊ मिलि श्यामहिं सुख देऊ॥
ऐसी है यह नारि सुहाई। और नारि मन लेति चुराई॥
हमहूं को अब इनहिं मिलावो। नीके इनके बदन दिखावो॥
हमहिं देखि सकुचत कत प्यारी। हमसों घूँघट करत कहा री॥

ऐसे कहि चन्द्रावली, गयो श्यामकर जाय।
यह कहुँ अबलौं नहिं सुनी, तियसों तिय सकुचाय॥
आपहि वदन उघारि, घूंघटपट हातौ कियो।
मुखछबि रही निहारि, माने करि लोचन सफल॥

बारहि बार कहत मुसुकाई। चितवत क्यों नहिं बदन उठाई॥
मथुरामें है बास तुम्हारो। कहा नाम मुख वचन उचारो॥
कियो राधिका यह उपकारो। दुर्लभ दर्शन भयो तिहारो॥
कछु इक मैं पहिंचानत तुमको। काहेको सकुचतिहो हमको॥
कबहुँ चिबुकगहि वदन उठावैं। कबहुं कपोल परसि सुखपावैं॥
कबहूँ चुटकि कहति मुख फेरौ। नैन उठाय नेकु इत हेरौ॥
नैन नैन सों हरि नहिं जोरैं। रहे लजाय भावसों भोरैं॥
चन्द्रावली देखि मुसकानी। हँसि बोली राधासों बानी॥
ऐसी सखी मिली ये तुमको। तौ काहेन बिसारौ हमको॥
जबसों इनसे प्रीति लगाई। बहुत भई तुमको चतुराई॥
अबलौं इनको कहां दुरायो। हमसों कबहूं नाहिं जनायो॥
त्रिभुवनकी सुखमा सब गुणनिधि। एकहि इन्हैं बनाई है विधि॥

तुमहुं कुशल येहू कुशल, क्यों न प्रीति दृढ़ होय।
जाने हौं चलि जाहु बन, आपस्वारथी दोय॥
दम्पति कियो विचार, सुनि चन्द्रावलिके वचन।
यासों नाहिं उबार, हर्षि मिले उर लाय तब॥

चले कुञ्जगृह हरषि विशाला। उभय वाम विच मदनगुपाला॥
वाम भाग प्यारीको लीन्हें। दक्षिण भुजा सखीपर दीन्हें॥
द्विवि दामिनिविचनवघन मानौ। रति समेत लखि मदन लजानौ
कैधौं कञ्चन लता सुहाई। ललित तमाल बिटप लपटाई॥
गये कुञ्जवन घन छवि छाई। सुमनपुञ्ज अलिगुञ्ज सुहाई॥
वर्ण वर्ण कुसुमित तरु नाना। करतौ कोकिल मङ्गल गाना॥
वहत समीर त्रिविधि सुखदाई। पावन मङ्गलभूमि सुहाई॥
लखि छविपुञ्ज कुञ्ज अनुरागे। सहचरि सहित युगल बड़ भागे
नव दल कुसुम तुल्य कमनीया। बैठे नवल रमण रमणीया॥
करत विलास विविध मन माने। कोटि कोटि रति काम लजाने
शोभित गौर श्याम शुभ जोरी। निरखत छविहिसखी तृण तोरी
सने रसिक दोऊ रसकाई। वसे निशा बनकुञ्ज सुहाई॥

तैसोइ विपिन सुहावनो, तैसिय पवन सुगन्ध।
तैसिय निर्मल चांदनी, तैसोइ सुघ संबन्ध॥
तैसोइ कुञ्ज निवास, तैसोई यमुनापुलिन॥
सकल सुखनको रास, तैसेइ रँगभीने युगल॥

वनहिं धाम सुख रैनि विहाई। उठे प्रात दोउ छवि अधिकाई॥
बैठे युगल रङ्ग रस भीने। आलसयुत अङ्गन भुज दीने॥
अरस परस दोउ छविहि निहारैं। रीझि परस्पर तन मन वारैं॥
अरुण नैन नख रेख सुहाई। विन गुणमाल हृदय छवि छाई॥
लटपटि पाग रसमसी भौंहैं। कुण्डल झलक कपोलन सोहैं॥

प्रिया बदन छबि श्याम निहारत। उरझो लट मुकन निरवारत॥
आलस नैन सुरतिरस पागे। नन्द नँदन पियसङ्ग निशि जागे॥
टूटे हार मरगजो सारो। नखशिख सुन्दर पिय अरु प्यारो॥
चले कुञ्जते युगल बिहारी। ब्रजवासी लखि लखि बलिहारी॥
सुन्दर श्याम सुन्दरी श्यामा। जीते सुन्दर रतिपति कामा॥
सुन्दर अवलोकनि मृदु बोलनि। सुन्दर चालि डगमगी डोलनि॥
सब विधि सुन्दर सुखनिधि दोऊ। सुन्दर उपमाको नहिं कोऊ॥

अति विचित्र नंदलालकी, लीला ललित रसाल।
जो सुख दुर्लभ शिव सनक, सो बिलसत ब्रजबाल॥
गये युगल ब्रजधाम, सखी सहित निशि रस बिलसि।
बसत प्रिया उर श्याम, श्याम हृदय प्यारी सदा॥

---

### शृङ्गारभूषण वर्णन लीला।

बैठी भवन शृँगार किशोरी। बहुरंगे अङ्ग शृँगारत गोरी॥
मानहुँ सबन देति पहिराये। रतिरणजीति पियासों आये॥
कटितट किङ्किणि बसन नवीने। बाजूबन्द भुजनको दीने॥
कर कंकण उर हार सुहाये। तरुवनि चारु श्रवण पहिराये॥
नकबेसर अञ्जन दृग दीनो। बेंदी ललित भाल पर कीनो॥
रची मांग सम भाग सुहाई। तामधि रेख सिंदूर बनाई॥
प्रभुसों बिमुख जानिके कादर। बांधति कुच मनु किये निरादर॥
दियो बिहँसि अधरनको बीरा। सन्मुख रहे प्रहार सधीरा॥

शोभित सदन शृंगार सुहाई । श्रीवृषभानुकुँवरि छवि छाई ॥
नखशिख कुसुमनिशिखकी सैना । किये कान्ह वश पङ्कजनैना
शीशफूल शिर अति छवि छाजै । मनहुँ भागमणि प्रगट विराजै
सुभो जराव फूल अरुणाई । हरति प्रात रविकी छवितांई ॥

चन्द्रवदन मृगशिशुनयन, भृकुटी कुटिल कलङ्क ।
अलक झलक छवि देति जनु, शोभित रजनी अङ्क ॥
कुन्दकली सम दांत, तिलप्रसून नाशा सुभग ॥
जीवबन्धुकी क्षांत, अधर अनूपम चिबुक तिल ॥

लखि कलकण्ठ कपोत लजाहीं । पीकलीक झलकनि जेहि माहीं
बाहु मृणाल लाल छवि छाये । कोमल पाणि सरोज सुहाये ॥
कुच युग चक्रवाक जनु नीके । लसत रोमावलि तट तट नीके ॥
त्रिवली तरल तरङ्ग सुहाई । अति गति नाभि मनोहरताई ॥
कृशकटि किंकिणियुत छवि छाई । पृथु नितंब शोभा अधिकाई
रम्भ स्तम्भ युग जंघ निकाई । पग नूपुर झनकार सुहाई ॥
चाल विलोकि कापग न लाजैं । मधुर मधुर ध्वनि पायल बाजैं ॥
चरणों को पदपङ्कज शोभा । हरिमनभ्रमर रहत जहँ लोभा ॥
निगम नेति नित गावत जाको । राधा वश कीनो है ताको ॥
ज्यों चकोर चन्दाको अतुर । त्यों नागरिवश गिरिधर चातुर ॥
देखे बिन जग रह्यो न जाई । सदा प्रेमवश त्रिभुवन राई ॥
उझकि झरोखा झांके आई । करति शृँगार प्रिया मन भाई ॥

अङ्ग अङ्ग भूषण वसन, रुचि रुचि सकल शृँगारि।
ले दर्पण देखति छबिहि, श्रीवृषभानुदुलारि॥
दीठ झरोखा लाय, रहे श्याम इकटक निरखि।
उर आनन्द बढ़ाय, देखत प्यारीकी छबिहि॥

इक कर दर्पण इक कर अँचरा। पुनि पुनि दृगन सँवारत कजरा
कबहुँ शीशके फूल सँवारैं। कबहूं कुटिल अलक निरवारैं॥
कबहूं आड़ रचति केसरिकी। कबहूँ छबि देखति हुँसरिकी॥
कबहूँ रचति सुमनसों वेणी। कबहुँ मांग मुक्तनकी श्रेणी॥
कबहूँ रिस करि भौंह सिकोरै। कबहूँ नैन नैनसों जोरै॥
इकटक दर्पण ओर निहारैं। नेकु बदन इत उत नहिं टारैं॥
निरखि आपनी छबि सुकुमारी। रही विवस प्रतिबिंब निहारी
अति आनन्द भई मति भोरी। बिसरी सुरति देहकी गोरी॥
कहति मनहिं मन अति सकुचाई। यह सुन्दरी कहाँते आई॥
करते मुकुर दूरि नहि टारैं। कछू रोषकरि हृदय विचारैं॥
कहूँ श्याम देखे जो याहीं। तुरत होयँ याके वशमाहीं॥
जो मोहन यासों अनुरागे। कहा चलै मेरी या आगे॥

यह आई किहि लोकते, अति सुन्दर बर नारि।
ब्रजमें तौ ऐसी नहीं, कोऊ गोपकुमारि॥
कोऊ ल्यायो याहि, कैधौं आई आपही।
सो बैरी मम आहि, जो लाई याको ब्रजहि॥

सुनो कहूं इन हरिकी शोभा। आई है ताहीके लोभा॥
जैसे सुन्दर कुवँर कन्हाई। तैसी सुन्दरि यह ब्रज आई॥
मनहीं मन पुनि पुनि पछिताई। पूँछति प्रतिबिंबहि सकुचाई॥
तू है कौन कहांते आई। यहां कौन तोको लै आई॥
नाम कहा है सुन्दरि तेरो। तुम जहँ रहत कौनसो खेरो॥
कहो न मुखते वचन सुनाई। मति सकुचो कहि सौंह दिवाई॥
हम तुम दिनन एक हैं गोरी। तू कछु रूप अधिक नहि थोरी॥
इहां अकेली तू क्यों आई। काहू सङ्ग और नहिं लाई॥
सुन्यो नहीं अन्याय इहांको। ऐसे कहि डरपावति ताको॥
करत कान्ह ब्रजमें बरजोरी। लेत तियनके भूषण छोरी॥
जो अपनी पति चहत सयानी। तो घर जाहु मानि मम बानी॥
लेहु बसनते अङ्ग छिपाई। देखें नहि कहुं श्याम कन्हाई॥

तेरे हितको कहति हौं, मान चहै मति मान।
आई है ब्रज आजही, तू उनको कह जान॥
ऐसो ढीठ न आन, त्रिभुवनमें कोऊ कहूं।
जैसो ब्रजमें कान्ह, मनभायो सबसों करत॥

नेक नहीं काहू डर मानें। मथुरापति जेहि रहति सकानें॥
उनके गुण नीके मैं जानों। तोसों अपनी दशा बखानों॥
हम मथुरा दधि बेचन जाहीं। घेरि लई उन मजके माहीं॥
गोरस लियो छोरि बरआई। हार तोरि दीन्हें बगराई॥
हम अनेक तू एक किशोरी। तातें जाहु बेगि गृह गोरी॥

सुनि सुनि श्याम प्रियाकी बानी। मनहीमन विहँसत सुखमानी
प्यारी चकित रूपनिज देखी। श्याम चकित सुनिबचनविशेखी
जानि दूसरी तिय प्रिय पाहीं। जान निकट मोहन सकुचाहीं॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारै। बोलत नहिं उर हर्ष बिचारै॥
देखत मुकुर प्रिया करमांहीं। अङ्कम लेबेको ललचाहीं॥
प्यारी के रसवस गिरिधारी। लेति दृगनभर भर छबि भारी॥
सुनि सुनि वचन हृदय सुख पावैं। पुलकि अङ्ग आनन्द बढ़ावैं॥

वचन सुन आनन्द अति मन, निरखि छबि सुख पावहीं
धनि धन्य राधारूप धनि, हरि नैन इकटक लावहीं॥
धन्य वह प्रतिबिंब धनि छबि, धन्य मुकुर निहारहीं।
धन्य भ्रम धनि प्रेम पूरण, धन्य तन मन वारहीं॥
धन्य सुख जेहि लागि राधा, कान्ह ब्रज तनु धारहीं।
रमा सहित बिलास नित, वैकुण्ठवास बिसारहीं॥
मिलन बिछुरन सुख विरह रस, चणहिं प्रति उपजावहीं
ब्रजविलास हुलास हरिको, नित नयो श्रुति गावहीं॥
नवल प्रीति नित नवल सुख, नित नव रूप रसाल।
नित नवरस बिलसत नवल, श्रीराधा नँदलाल॥
कहत रसीली बात, ज्यों ज्यों तिय प्रतिबिंबसों।
त्यों त्यों सुनि हरषात, ब्रजवासी प्रभुरस भरे॥

प्यारी निज प्रतिबिम्ब निहारे। भई विवस नहिं सुरत सँवारे॥
बार बार पूछति तापाहीं। क्यों सुन्दरि तू बोलति नाहीं॥

हंसै हंसति हेरति हे हेरे । फेरति भौंह भौंहके फेरे ॥
करति परस्पर हमसों हांसी । अपनो नाम न कहत प्रकासी ॥
परम चतुर तुमको में जानी । हमसों तुम कछु करत सयानी ॥
अतिही सुन्दर रूप तिहारो । देखि होत मन मुदित हमारो ॥
शोभित बेसरि नाक सुहाई । अति अनूप अधरन अरुणाई ॥
दशनदमकदामिनिहिलजावति । चिबुकनीलकणअतिछबिपावति
काहे ऐसे सुखको बानी । हमैं सुनावति नाहिं सयानी ॥
कहो वचन काकी हो घरनी । काकी सुता सहज मनहरनी ॥
कै रिस कै रस कै इत हेरति । मेरे सन्मुख लोचन जोरति ॥
कछु रिस कछु धरको मनमाहीं । धीर धरत नागरि जिय नाहीं॥

यह तो बोलति है नहीं, अति गरबीली बाम ।
देखत ही यहि रीझि हैं, छैल छबीले श्याम ॥
भई सौति यह आय, अब हरि याके वश भये ।
यों वियोग उपजाय, उपजायो उर विरहदुख ॥

रही दीठि दर्पणहि लगाई । टरति नहीं छबिकी अधिकाई ॥
उरमें भयो विरह दुख भारी । देखि दशा रीझे गिरिधारी ॥
कबहुं चलततियढिगहिकन्हाई । कबहुँ रहतलखि छबिहिभुलाई
औचकि पाछेते सुखदाई । मूंदे नयन कमलकर आई ॥
चौंकि चकित भइ मनमें प्यारी । जाने आये छैलविहारी ॥
डरति रही मनमें में जाको मिले आय सुन्दर हरि ताको ॥
तब कछु सुरति भई मनमाहीं । वह तो है मेरी परछाहीं ॥

संकुच दुराव करति पियपाहीं । मनहीं मन दोऊ मुसकाहीं ॥
जान बूझके पिय घनश्यामहि । लेति विपुल सखियनकेनामहि
श्याम प्रिया लोचन करि लायो । अति हित वेनी कर परसायो
शोभा कहा कहै कवि कोऊ । मेचकमणि सुमेर अङ्ग दोऊ ॥
ताबिच मनहु पन्नगी आई । रही कनकगिरिसों लपटाई ॥

वेष्टित भुज मूँदे करन, दीरघ खञ्जन नैन ।
मनु भख लीन्हीं धाय अहि, नहिं समात फणि ऐन ॥
करति सखिनसों रोष, मन हर्षत खीझत वदन ।
भरी चतुरई कोष, लूटति मन कामन फलन ॥

अति आनन्द भरे दोउ राजैं । उपमा कहत कवीश्वर लाजैं ॥
मर्कतमणि कुन्दनसँग मेली । किधौं लिये घन तड़ित अकेली ॥
कै शोभा सुख तनु धरि सोहै । ब्रजवासी भक्तन मन मोहै ॥
कोमल कर तिय नैन कन्हाई । रहे मूँदि छबि बरणि न जाई ॥
अतिहि विशाल चपल अनियारे । नहि समात प्रिय पाणि पसारे
छण खोलत छण ढकत बिहारी । मुख रिस मनमुसकातपियारी
ज्योंमणिधर मणि प्रगटकन्हाई । फिरिफिरि फणतर धरतछिपाई
श्याम उँगरियन अन्तरमाहीं । चञ्चल नैन दुरे दरशाहीं ॥
मरकतमणि पिंजरामें मानौं । तरफरात बिबि खञ्जन जानौं ॥
कर कपोल ढिग तरल तरोना । शोभा सहज सुभाय करो ना ॥
मनुयुग कमल मिलन शशि आये । विवर निषङ्ग सहायक लाये ॥
कुँवरि नागरी नागर नायक । उपमा काहि कहौं को लायक ॥

अपने कर प्रिय कर पकरि, लीन्हें नैन छुड़ाय।
रवि शशि चार सरोज जनु, द्वै चकोर मिलि भाय॥
कान्हें सन्मुख आन, पाणि पकरिकै लाड़िली।
भले भले जू कान्ह, मैं सखियन धोखे रही॥

भले आय औचक बिन जाने। मूंदि रहे दृग अतिहि पराने॥
कैसे दौरि पैठि गृह आये। नेकहु आवत जानि न पाये॥
तुम हो तिय मनहरन कन्हाई। तुम्हरी गति कछु जानि न जाई॥
तब हरि हर्षि प्रिया उर लाई। मुकुर कथा सब भाषि सुनाई॥
सुनि नागरि हरितन मुसकानी। चितै नयन कछु मनहिं लजानी॥
मैं तो अपने मन्दिरमाहीं। सहज लखत दर्पणमें छाहीं॥
तुम्हरी महिमा पियको जाने। इक सुन्दर अरु परम सयाने॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई। रसिकपुरन्दर जन सुखदाई॥
हर्षित गये सदन नँदलाला। इत नागरि उर हर्ष विशाला॥
जब प्रतिबिंब सुरत जिय आवै। समझ सुदृष्ट सकुच तब पावै॥
तिहि अन्तर सँग सखिन लिवाई। चन्द्रावलि राधाढिग आई॥
लखि प्यारी अति आदर कीन्हों। तुरत सबनको बैठक दीन्हों॥

सादर सनमानी सबै, दिये हर्षि कर पान।
पिय सँग सुख चाहत करन, रहति सकुच पुनि मान॥
गदगद स्वर मुखबैन, बार बार भाषति हरषि।
झलक प्रेम जलनैन, पुलकि गात पूरे सबै॥

कहति सखी सुन राधा गोरी । आज कहा अति हर्ष किशोरी ॥
हम तेरे नितही प्रति आवैं । इतनो आदर कबहुँ न पावैं ॥
पायो आज पर्यो कछु तैंरी । कीधौं मिले श्याम कहुँ हैं री ॥
उमग्यो प्रेम हर्ष उत्साहीं । हमैं सुनावति है क्यों नाहीं ॥
सुनि सखियनके वचन सयानी । बोली प्रिया हर्षि कै बानी ॥
आये आज सखी हरि मेरे । कहे जात नहिं गुण उनकेरे ॥
जैसी भांति मिले हरि हमसों । सो हित कहौं सुनहु सखितुमसों
मैं अपने सब अङ्ग शृँगारति । लिये मुकुर कर वदन निहारति॥
पाछे आनि भये हरि ठाढ़े । चतुरशिरोमणि छबिसों बाढ़े ॥
भाव एक भोरे मैं साजा । ताहि कहत सखि आवत लाजा ॥
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानो । जानि और तिय मनहिं डरानो
पाछे ते यह जानि कन्हाई । मूँदे नैन औचकहि आई ॥

तबहिं चैकि चकृत भई, मैं समझी निज भोर ।
लगी देन उरहन तुम्हैं, भई फिरति ही चोर ॥
सुनि राधा मुख बात, हिय हर्षी सब गोपिका ।
पुलकि प्रफुल्लित गात, कहत धन्य तू लाड़िली ॥

श्याम सङ्ग सुख लूटति है री । अब उनसों नहिं छूटति है री ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी । भली भई तू हरिरसपागी ॥
अब हरि तोते अति रति मानें । तेरो अन्तर हित पहिचानें ॥
आवत जात रहत घर तेरे । क्षण नहिं रहत तोहिं बिन हेरे ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउनके । परम भावते हो सबहुनके ॥

आज लाल मेरे गृह आये । बड़े भाग मैं हित करि पाये ॥
देख दरश नैनन सुख पायो । करौ आज आनन्द बधायो ॥
यह उपकार तुम्हारो आली । मोहिं सनाथ दिये वनमाली ॥
तुरत लाय हरि मोहिं मिलायो । मैं अपने अपराध छमायो ॥
नन्दनँदन पिय नैन समायो । भावत नहीं नेक विसरायो ॥
सुनि यह राधाको रसबानी । देति अशीष सखी हरषानी ॥
नन्दनन्दन वृषभानुकिशोरी । चिरजीवहु सुन्दर यह जोरी ॥

प्रेमभरे छबिसों भरे, भरे अनन्द हुलास ।
युगल माधुरी रस भरे, ब्रजमें करत विलास ॥
करत अनेक विहार, रूपरसिक गुणनिधि युगल ।
राधा नन्दकुमार, ब्रजवासी जन सुखकरन ॥

---

## नयन अनुराग लीला ।

हरि अनुराग भरीं ब्रजनारी । लोकसकुच कुलकानि बिसारी ॥
सासु ननँद गारी दै हारी । सुनत नहीं कोउ कहत कहा री ॥
सुत पति नेह जगत यह छोरयो । ब्रजतरुणिन तिनुकासम तोरयो ॥
वेद लोक मर्यादा डारी । ज्यों अहि केंचुरि फिरत निहारी ॥
ज्यों जलधार परे तृणमाहीं । जैसे नदी समुद्रहि जाहीं ॥
जैसे सुभट खेत चढ़ि धावे । जैसे सती बहुरि नहिं आवे ॥
जैसे भजे नन्दनन्दनको । नेकहु डर पुनि नहिं गुरुजनको ॥
तैसइ प्रेम विवस गिरिधारी । ज्यों गज पंकज सकहि निहारी ॥

ब्रज वनिता मन नहिं बिसरावैं। क्षणप्रति तिन्हैं देख सुखपावैं
आये पुनि तेहि ओर बिहारी। सखिन सहित बैठी जहँ प्यारी॥
भीर देखि मन सकुचे माहीं। ताते निकट गये हरिनाहीं॥
ताही मग निकसे सुखदाई। सुन्दर नटवर रूप दिखाई॥

शीश मुकुट कुण्डल श्रवण, उर चटकीली माल॥
पीतवसन ता कटिकाछनी, तनद्युति श्यामतमाल॥
चलत लटकनी चाल, वङ्क विलोकनि मृदुहँसनि।
अङ्ग अङ्ग छबिजाल, रसिक नवल नागरि छयल॥

औचक देखि श्याम ब्रजनारी। भई चकित तनुदशा बिसारी॥
जात चले ब्रजखोरि अकेले। कोटि कामकी छबि परहेले॥
पग द्वै चलत बहुरि फिरि हेरैं। कमल सनाल कमलकर फेरैं॥
मृगमदतिलक अलक घुंघरारी। तन वनधात चित रुचिकारी॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौहैं। नैन सैन दै दै मन मोहैं॥
निरखत ब्रजयुवती विथकानी। दुखसुखव्याकुल मन अकुलानी॥
गये कल्पतरु छांह कन्हाई। रूप ठगौरी तियन लगाई॥
लागीं कहन परस्पर बानी। लोचन मन अनुराग कहानी॥
सुनहु सखी यह नन्ददुलारी। हठ करि यह मन लेत हमारी॥
क्षण क्षण प्रति छबि और बनावै। शोभा कछु कहतनहिं आवै॥
मनतौ इनहीं हाथ बिकानो। हम सखि यहकछु भेद न जानो॥
नैननि साट करी नैननिसों। कियो मोल सैननि बैननिसों॥

वेंचि दियो मन आपुही, मृदुमुसकनधन पाय ।
परी रही हौं वीचही, नयना वड़ी वलाय ॥
भये श्यामको जाय, अव रुचि मानो मनहिंमन ।
मैं पचि हारि वुलाय, फेरि नहीं इतको फिरे ॥

अव मनहित हरिहीसों कीन्हों । भेद हमारो सव कहि दीन्हों ॥
मनतो गयो नैन हैं मेरे । तिनहूं वोलि किये हरिचेरे ॥
अव यह रहत वहां सव जाई । सोई करत जु कहत कन्हाई ॥
जितहि चलत वे तितही जाहीं । हरिके सन्मुख रहत सदाहीं ॥
भये वे जाय गुलाम श्यामके । रहे न काहू और कामके ॥
ताको कछु अपमान न जाने । फूले रहत अधिक सुखमाने ॥
जग उपहास सुनत वहुतेरो । लाज शङ्क दीन्हों सव डेरो ॥
आरज पथ मर्याद वडाई । लोकवेद कुलकानि गँवाई ॥
मैं समुझाय रही वहुतेरो । नेकहु कह्यो सुनत नहिं मेरो ॥
ललित त्रिभंगी छविपर अटके । मोसों तोरि सगाई सटके ॥
हरि अव छोड़त तिनको नाहीं । वैठे रहत आप तिन माहीं ॥
राखे वांधि अलककी डोरी । भाजि जाहिं मति कवहूंक दौरी ॥

अव ये लोचन श्यामके, सखी हमारे नाहिं ।
वसे श्याम रस रूप ये, श्याम वसे इन माहिं ॥
कहा करैं सखि श्याम, नैनन हीको दोष यह ।
हठ करि भये गुलाम, तनक मन्द मुसकानपर ॥

बोली अपर एक ब्रजनारी। सखि लोचन लोभी अति भारी॥
जबहिं लखत कमनीय कन्हाई। तबहिं सङ्ग लागत उठि धाई॥
मेरो हटक्यो नेकु न मानैं। लखत जाय वह छवि ललचानैं॥
ज्यों खग छूटत फन्द बधिकते। भागिचलत उड़ि वेग अधिकते॥
पाछो फेरि न फिरत डराई। जाय सघन बन मांझ समाई॥
त्यों दृग मोते छूटि पराने। हरि छबिबिन घन जाय समाने॥
अब वे इतको नाहिं निकारें। वह छवि निरखि हरषि उर धारैं॥
यदपि सुधाछबि पियत अघाई। तदपि तृप्ति नहिं मानत राई॥
भई सखी नैनन गति ऐसी। भरे भवन तस्करकी जैसी॥
देखि श्याम छवितन अधिकाई। अति लालची रहे ललचाई॥
लेत न बनै तजो नहिं जाई। चकित भये निज सुधि बिसराई॥
रहे विचारहि मांझ भुलाने। नहिं कछु लियो न त्याग पराने॥

नैन चोर हरि मुख सदन, छवि धन भांति अनेक।
तजत बनत नहिं एकहू, लेत बनत नहिं एक॥
सखि ये नैना चोर, हरिमुखछवि चोरन गये।
बांधे अलकनि डोर, हरिकी चितवन पाहरू॥

भली भई हरि इनहिं बँधायो। निदरि गये तैसो फल पायो॥
ये नहिं मानत कह्यो हमारो। सखि इनहीं सब काज बिगारो॥
कहति और यक गोपकुमारी। सखि ये नैन किधौं बटपारी॥
कपट नेह हमसों करि भारी। करी हमैं गुरुजनते न्यारी॥
श्यामदरश लाडू कर दीनो। हमैं आपने बश कर लीनो॥

प्रेम ठगोरी शिरपर छाई । फिरति सङ्गही सङ्ग लगाई ॥
विरहफांस गरडारि हमारे । करी विकल नहिं अङ्ग सँभारे ॥
कुललज्जासम्पदा हमारी । सो इन लूटि लई सखि सारी ॥
कहरति परी मोह वनमाहीं । लगन गांठ दृग छूटत नाहीं ॥
क्योंहूँ नेह जीत्र नहिं जाई । सुमिरि नैन गुण मन पछिताई ॥
कासों कहैं सखी यह बाता । भये नैन हमको दुखदाता ॥
हमको विरह दुसह दुख देहीं । आप सदा दरशन सुख लेहीं ॥

इहि विधि निदरति दृगनको, भरी प्रेम व्रजनारि ।
होत मग्न सुख विरह रस, नयननि श्याम निहारि ॥
यही भजन यह ध्यान, श्याम रूप रस गुणकथा ।
नहिं जानति कछु आन, निशि दिन व्रजकी सुन्दरी ॥

कोऊ कहति नैन खग मेरे । फँसे अलकफंदा हरि केरे ॥
छबिकणचारा लखि ललचाने । फांदि गये चितवन लपटाने ॥
हरिछबि अटकि परे दृग आई । अतिहि विलाप भये बिवसाई ॥
रहत दीन सन्मुख टक लाये । दुख सुख समुझ सबै बिसराये ॥
कहवावत हैं बड़े सयाने । वह छबि लेन गये अतुराने ॥
सोतो कछू हाथ नहिं आयो । आपन यों इन जाय बँधायो ॥
ऐसोको त्रिभुवन जो जाई । आवै सखी समुद्र अथाई ॥
हार जीत ये नेन न जानैं । मानअमान कछू नहिं मानैं ॥
परे रहत शोभाके द्वारे । नेकहु लाज नहीं उर धारे ॥
जाकी बानि परी सखि जैसी । धरी टेक उरमें तिन तैसी ॥

इन अँखियन यह टेक परी री। लुब्ध तज्यो कमलन भ्रमरी री॥
जो सुक नलिनीके वश आई। जिमि कपिमुठी छोड़िनहिंजाई॥

लोभवश जिमि मीन मृग, आप बँधावत आय।
रूपलालची नैन तिमि, भये श्यामवश जाय॥
सके न काहू छिध, लोकलाज कुलकानिगिर।
श्याम सलोने सिंध, मिले त्रिबेनी ह्वै नयन॥

सखी नैन अब हरिसङ्ग लागे। मन क्रम बच उनसे अनुरागे॥
सन्मुख रहत सदा सुख पाये। भूलि गये मग दहने बाये॥
ज्यों मणि देखि उरग सुख पावैं। ज्यों चकोर चन्द्रहिं टकलावैं॥
मुदित रङ्क जैसे धन पाई। तैसो इनको गति अब माई॥
अब ये नैन फिरत नहि फेरे। किये सखी हम यत्न घनेरे॥
देखे सुभग श्याम इन जबते। निठर भये हमसों ये तबते॥
जब मैं घूँघटपटहि धरेरो। तबये शिशुको अरन अरेरो॥
हरि अँग सँग लागि उठि धाये। मनहु उनहिं प्रतिपाल कराये
मृदु मुसकनरस पाय मिठाई। छणहींमें मति गति बिसराई॥
अति हठ परे न नेक बिसारैं। निमिष रुदन बल धीर न धारैं॥
लाज लकुट उरमें डरपाये। वेसखि एकहु डर न डराये॥
फिरे न मैं बहु भांति बुलाये। गये तनक हरिके फसलाये॥

अब हम तलफत उन बिना, मरत यही अफसोस।
गथ खोटो सखि आपनो, कहा पारखिहि दोस॥

प्रेमविवस तियवृन्द, ऐसे दोषति दृगनको।
तवहि छैल व्रजचन्द्र, टेर सुनाई बांसुरी॥

---

## मुरली लीला।

कृष्ण प्रेमरस पूरण तातें। करत हुती नयनको बातें॥
परी श्रवण इहि अंतर जाई। हरिकी मुरली टेर सुनाई॥
भई चकृत सुनि सव व्रजगोरी। परी आय मनु शीश ठगोरी॥
भूलि गई सुधि अँखियनकेरी। ह्वै गई मानो चित्र लिखे री॥
दुख सुख मनको वरणि न जाई। इकटक रहीं पलक बिसराई॥
देहदशा सब तुरत भुलानी। स्वेद चल्यो वहि मानहु पानी॥
भई विवस मतिकी गति भूलीं। प्रेमहिंडोर गोपिका झूलीं॥
कवहूं सुधि कवहूँ सुधि नाहीं। कवहूँ मुरलीनाद सुनाहीं॥
कछुक सँभारि धीर उर धारी। कहति परस्पर गोपकुमारी॥
अँखियनते मुरली हरि प्यारी। भै वैरिन यह सौत हमारी॥
व्रजमें धौं कितते यह आई। भई कठिन हमको दुखदाई॥
आवतही ऐसे ढँग जाके। भये श्याम तुरतहि वश ताके॥

जा रसको हम तप कियो, षट ऋतु सब व्रजबाम।
सो रस मुरली लेति अब, सहजहि वश करि श्याम॥
गावत मीठी तान, मुरली सँग अधरन धरे।
अब याके वश कान्ह, औरन विवस करी वही॥

ऐसो त्रिभुवन कौन सयानो । जो न मोह सुनि याकी बानो ॥
यहतौ भली नहीं व्रज आई । नई सौति हरिके मन भाई ॥
अब याके वश गिरिवरधारी । नेक अधरते करत न न्यारी ॥
याहीके अब रङ्ग रँगे री । मधुर वचन सुनि रीझि गये री ॥
करपल्लवन माहि बैठाई । रहत ग्रीव तापर लटकाई ॥
बारहिबार अधररस प्यावे । तासों अति अनुराग जनावे ॥
देखहु री याकी अधिकाई । पियत सुधारस हमहि दिखाई ॥
परी रहत बनमें धौं कैसी । भई ढीठ आवतही ऐसी ॥
दिनही दिन अधिकात जातरी । सखी नहीं यह भली बातरी ॥
आवतही हमरो धन लीनो । चाहत और कहाधौं कीनो ॥
मैं जो कहत सुनो री गोरी । सजग रहो सब नवलकिशोरी ॥
मुरली दूरि कराये बनिहै । कछू दिननमें हमें न गनि है ॥

फिरि हैं याके सँग लगी, लोकलाज गृह त्यागि ।
जब जब जहँ यह बाजिहै, मोहनके मुंह लागि ॥
करिहै नाना रङ्ग, यह जानति टोना कछू ।
या मुरलीके सङ्ग, देखहु हरि कैसे भये ॥

यह सुनि कहत एक ब्रजनारी । सखी बात यह कहति कहा री ॥
अब यह दूरि होति है कैसे । जाके वश नंदनन्दन ऐसे ॥
एक पाँय ठाढे ता आगे । रहत त्रिभङ्ग अङ्ग अनुरागे ॥
अधर सेजपर शयन कराई । करपल्लवन पलोटत पाई ॥
कबहुंकमिलि गावत हैं तासों । होति विवश पुहुमी सबजासों ॥

मुरली अति मोहन को भावै। ताके गुणन सखी को पावै॥
जानत राग रागिनी जेते। हरिसँग मिलि गावति हैं तेते॥
नाना विधिकी गतिन बजावैं। तान तरङ्ग अमित उपजावै॥
जैसेही रीझत मनमोहन। तैसिय भांति रिझावत गोहन॥
रहति सदा मुखहीसों लागी। अधरपियूषस्वादरस पागी॥
मधुर मधुर कलवचन सुनाये। पुनि पुनि हरिके मनहिं चुराये॥
ऐसो को अब हरिके करते। दूर करै याको निज वरते॥

अब मुरली छूटै नहीं, याके वश भये श्याम।
प्रगट कियो सब जगतमैं, मुरलीधर निज नाम॥
हरिको करि वशमांहि, मुरली लूटत अधररस।
उर डर मानति नाहि, हम सबते बोलति निठुर॥

निठुर बचन अब हमहिं सुनावै। हरिको मन हमते उचटावै॥
आरजपथ कुलकानि छुड़ावै। हम सबहिनको निलज करावै॥
ऐसे ढँग मुरलीके आली। हमते निठुर किये बनमाली॥
यह तौ निठुर काठकी जाई। प्रगट किये अपने गुण आई॥
अपनीही स्वारथ यह जानै। कपट राग हरिके सँग गानै॥
मुरली निठुर किये बनवारी। मुरली ते हरि हमहि बिसारी॥
बनकी व्याधि कहां यह आई। ऐसे कहि कहि तिय पछिताई॥
कहा भयो मोहनमुख लागी। अपनी प्रकृति नहीं इन त्यागी॥
एक सखी बूझत भइ ऐसे। मुरली प्रगट भई यह कैसे॥
कहां रहत काकी है जाई। कौन जाति कैसे इत आई॥

मात पिता हैं याके कैसे। जैसी यह तेज हैं ऐसे॥
बोली अरु इक तिया सयानी। अबलों तुम यह बात न जानी॥

सखि तुम अबलों नहिं सुन्यों, मुरलीको कुलधर्म्म।
सुनो सुनाऊं मैं तुम्हैं, याकि जाति अरु कर्म्म॥
तुमसों कहौं बखान, मे जानति याके गुगान।
सुनि सुख पैहो कान, या मुरलीकी कुलकथा॥

बनमें रहति बाँसकुल जाई। यह तौ याकी जाति सुहाई॥
जलधर पिता धरणि है माता। तिनके गुणन करौं विख्याता॥
बनहू ते तिनको घर न्यारो। निपटहि जहां उजाड़ अपारो॥
गुणन एकते एक उजागरि। मात पिता अरु मुरली नागरि॥
पर अकाज विश्वास न जानै। येहैं इनके कुलहि बखान॥
ना जानिये कौन फल आली। कृपा करी यापर बनमाली॥
सुनहु सखी याके कुल धर्म्मा। प्रथम कहौं मेघनके कर्म्मा॥
वे वर्षत जल सब जगमाहीं। गिरि बन सर सरिता सब ठाहीं॥
चातक सदा रहत करि आसा। एक बूँदको मरत पियासा॥
धरणी सबहीको उपजावै। आपन सदा कुमारि कहावै॥
उपजत पुनि विनशत जाहीमें। सो कछु छोह नहीं ताहीमें॥
ता कुल सुता मुरलिका जानौं। अब आगे गुण प्रगट बखानौं॥

तनुहीते प्रगटत अनल, ऐसी याकी झार।
प्रगट भई जा वंशमें, करति जारि तिहिं छार॥

ऐसे गुणकी आहि, यह मुरली सखि बांसकी।
आई निज कुल दाहि, और कौन याते निठुर॥
याको जाति श्याम नहि जानी। बिन जाने कीन्हीं पटरानी॥
कहिये चलो श्यामसों जाई। सुनत तजैंगे कुँवर कन्हाई॥
सखी कहा यह बात बखानी। श्यामहिं कहा भली तुम जानी॥
निज कुल जारत बिलम न लाई। ह्वै है तासों कौन भलाई॥
जाको हम षट ऋतु तपकीन्हीं। सोफल तुरत मुरलि यह दीन्हीं
जे सन्मुख ते विमुख कहावैं। बिमुख तुरत उत्तम फल पावैं॥
घरके वन वनके घर कीन्हें। कपटी परम श्यामको चीन्हें॥
एक अङ्गकी प्रीति हमारी। वे कपटी वहु तरुण बिहारी॥
ज्यों चकोर चन्दा हित मानैं। चन्द्र नहीं नेकहु उर आनैं॥
जलको तीर मीन तनु त्यागै। जलको तनक दया नहिं लागै॥
ज्यों पतङ्ग उड़ जोति जरै री। जोति नहीं कछु कृपा करै री॥
चातक एक मेघको जानैं। वह कछु ताकी प्रीति न मानैं॥
इन सबहिनते हरि निठुर, तेसिय मिली सहाय।
अब मुरली अरु श्यामकी, जोरी बनी बनाय॥
ये अहीर वह वन, काहे न प्रीति बढ़ावहीं।
दुहुं अनको मन ऐन, जैसे वे तैसी वहू॥
मुरलीने हरिको पहिचान्यो। हरिको मन मुरलीसों मान्यो॥
निठुर निठर मिलि बात बनावै। याहीके वल धेनु चरावैं॥
वाहीको लकुटी कर धारी। वाहीको वंशी अति प्यारी॥

हमसों वैर सदा हरि कीनों। दधि ले मारग जान न दीनों॥
पुनि भेदहि मन हरयो हमारो। कीनो कुल कुटुम्बते न्यारो॥
बहुरि बोलि अँखियनको लीनी। तापर सौति मुरलिया कीनी॥
सुनि सजनी बिन काज जरौ री। मर्म करे सो कोउ न करौ री॥
यह महिमा करता सब करई। कौने विधि धौं कापर परई॥
हम तप कर इतनो पचिहारी। सो घर कुलते भई नियारी॥
वनको घास इतो सुख पावै। श्याम अधर शिर छत्र धरावै॥
भये नृपति हरि मुरली रानी। और नारि हरिको न सुहानी॥
वनते लाय सुहागिनि कीन्ही। जाति पांति कुल कछु न चीन्ही॥

तप तीरथ जो पूरबहि, कठिन किये हरि हेत।
अब मुरली ता कष्टको, बैठि अधर फल लेत॥
मेटत पिछलो दाग, जो तप करि तायो तनहि।
धनि धनि मुरली भाग, अब गरजति अधरन चढ़ी॥

मुरली कौन सुकृतफल पायो। सब कलङ्क हरि परशि गँवायो॥
तनु कठोर मन जड़ रसहीनी। अन्तर सूनो सार विहीनी॥
लघुता अङ्ग न कछु गरुवाई। बांसवंश कछु नाहिं निकाई॥
छिद्र विशाल विपुल तन छाये। हरिहि परशि सब भये सुहाये॥
विधिते प्रबल भई यह मुरली। हरिमुखकमल वरासन जुरली॥
चार वेद विधि श्रुति मति भाखे। नीति सहित जड़ चेतन राखे॥
आठ बदन मुरली कहि नादा। उलटि दई हरिकी मर्यादा॥
जड़ चेतन चेतन जड़ कीने। थिर चर कर चर थिर कर दीने॥

एकबार श्रीपति सिखरायो। तबते ज्ञान विधाता पायो॥
याके तो नँदसुवन कन्हाई। लगे रहत हैं कान सदाई॥
याते को अरु प्रबल प्रवीना। कियो सकल जग निज आधीना॥
कहिये काहि औरको ऐसो। भई श्याम सँग मुरली जैसो॥

अति सुर नर मुनि सूर शशि, खग मृग सलिल समीर।
या मुरलीके वश सबै, धुनि सुनि धरत न धीर॥
रही विश्व भर जीति, मोहनमुख लगि बांसुरी।
मेटि सकल श्रुति नीति, रीति चलावति आपनी॥

सखि मुरलीको दोष न देहों। करि विचार अपने मन लेहों॥
हरि हित इन श्रम कीनों जोई। सो श्रम और कौनपै होई॥
जो अकुलीन तऊ बड़ भागी। कियो कठिन ब्रत हरिहितलागी
जब अति दृढ़ याको हरि जान्यो। तब बन भीतरते गृह आन्यो
जब याकी करतूति सुनोगी। तब धनि धनि करि याहि गनोगी
जनमत होते कर मति गाढ़ो। बनमें रहीं एक पग ठाढ़ो॥
शीत उष्ण वर्षा सहि लीनो। नेकहु मनसा मलिन न कीनो॥
कसकी नहीं नेक जब काटो। पत्र मूल शाखा जब छांटो॥
राखो डार धाममें आनो। शोच शोच सब देह सुखानो॥
मुख्यो न मन तन अङ्ग दगाये। विधे बेह अँग अँग करवाये॥
ताय सुलाखि परखि हरि लीन्हीं। तब मुरली पटरानी की
मुरली सही इती कठिनाई। तब पाई ऐसी ठकुराई॥

मुरली तप फल भोगवै, वृथा करत तुम आर।
निज गुण रिझये श्याम उन, गुणियन गुणी पियार॥
तुमते यह नहिं होय, जो करनी मुरली करी।
ताकी सम नहिं कोय, अति श्रम करि हरि वश करे॥

परम पुनीत प्रीति अब जानी। तब मुरली हरिके मन मानी॥
देखहुरी याकी अधिकाई। कहँलगि याकी करहिं बड़ाई॥
जबहीं श्याम अधर को परसै। तब अति हर्ष नादरस बरसै॥
तान तरङ्ग रङ्ग उपजावै। अति आनँद सब जगत जनावै॥
जियत श्याम अधरामृत पाई। छूटत मौन रहत मुरझाई॥
क्यों नहिं श्याम करैं हित ताको। अधरामृत जीवन है जाको॥
मुरली जो हरि हित तप कीन्हीं। परम चतुर पूरण तप लीन्हीं
तबलगि हरि को नहि पतियानी। सहे कष्ट बोली नहिं वानी॥
जबलग जीवन करि नहिं पायो। अधरामृतरस मनको भायो॥
जब हरिसों वांछित फल पायो। तब सबपर अधिकार जनायो॥
या सम और चतुर को आली। जिन वश किये श्याम बनमाली
क्यों नहिं त्रिभुवन को मन मोहै। जाके वश पति त्रिभुवनको है

मुरलीकी सर मत करौ, कह्यो हमारो मान।
धनि धनि ताहि बखानि है, सुन ताको यश कान॥
अधरामृत करि पान, अमर भई अब मुरलिका।
तिहुँ पुर होत बखान, शारदादि यश गावहीं॥

हमहू सब मिलके तप कीन्हों। ताको फल हमको हरि दीन्हों
लीन्हें भूषण वसन चुराई। युवतिन लाज छुड़ाय बुलाई॥
तब अम्बर दे धन्य बखानो। हम भोरी इतनोइ सुख मानो॥
अपनो अपनो भाग्य दिखौ रीं। मुरली सों बिन काजखिजौरीं
अब मुरलीसों हेत करौ री। नहिं जीतौगी मतहि लरौ री॥
मुरली हम ते तप अधिकाई। मुरलीके वश कुवँर कन्हाई॥
तनक आश दर्शनकी है री। सोऊ पुनि करते जैहे री॥
हैं बहुतेरी रमण कन्हाई। यह मिली इक तिनमें आई॥
मुरलीको जिन डाह करौ री। तुम नहि अपने प्रेम टरौ री॥
प्रेमहि ते हरि मान रहैंगे। वे सुजान सब जानि रहैंगे॥
सब तजि भज्यो जन्मते ताही। तज्यो जात कैसे अब वाही॥
मुरली सों कह काज हमारो। जीवहु मोहन नन्ददुलारो॥

हम हित कीन्हों श्यामसों, मेटि लोक कुलकान।
ताही सों हित चाहिये, जासों है पहँचान॥
हमको है वह आश, वै हैं अन्तर्यामि हरि।
करि हैं नाहि निराश, उर अन्तरकी जानिकै॥

कहा भयो मुरली हरि राखी। अपने करसों ताहि सुलाखी॥
गुणके काज चणक दुख पाई। दै अधरामृत तुरत जिवाई॥
हमते अधिक कियो उन नाहीं। करि विचार देखहु मनमाहीं॥
वर्ष पांच सातकके जबते। कियो सनेह श्यामसों तबते॥
पुनि पट् ऋतु तपसों मन लायो। अबलौं विरहानल तनु तायो

कैसे ये सब फलन फलैंगे। क्यों नहिं हमसों श्याम मिलैंगे ॥
तब यों कह्यो एक ब्रजनारी। मुरली श्याम अधरपर धारी ॥
जो अवगुण होतो यामाहीं। तो याको हरि छुवते नाहीं ॥
सुनो सखी यह है इह लायक। अतिही भली श्रवण सुखदायक
तुमही कहति वृथा जोइ सोई। जैसी यह ऐसी नहिं कोई ॥
जो यह भली बुरी गुण केरी। तो याको हरि श्याम मिलेरी ॥
काहिन प्रीति करें हरि ऐसो। है यह तिहुं भुवन में जैसो ॥

एक युवति अरु गुण भरी, बोलति मधुरे बैन।
श्रवण सुधा प्यावत तहूं, क्यों हरि अधर धरै न ॥
हरि बरजो मति कोय, देहु बजावन बांसुरी।
विरह विरससे होय, रस कीने रस होत है ॥

आप भले तो जगत भलोई। नातर सखी भलो नहिं कोई ॥
मुरली लगी श्यामके सुख री। तौहू है हमसों सन्मुख री ॥
सुनहु कान दे कहति कहा री। श्रीराधा श्रीराधा प्यारी ॥
तुम जानति हरि हमहि बिसारी। तुम हरिसों नहि नेक नियारी
जब जब मुरली श्याम बजावैं। तब तब नाम तुम्हारोइ गावैं ॥
मुरली भई सौति जो आई। तो हरि तेरिहि टहल कराई ॥
तू अर्द्धङ्गिनि वह है दासी। मेरे मन यह बात प्रकासी ॥
मुरली तुम्हरो नाम बतावैं। वाके सुखहरि तुमहि बुलावैं ॥
तुम प्यारी हरि हरि तुम प्यारे। मुरली यह यश कहत पुकारे ॥
हर्षीं सकल सुनत यह बानी। हम मुरली ऐसी नहिं जानी ॥

वृथा बैर यासों हम मान्यो। याको शील अबै हम जान्यो॥
मुरलीसों ऐसे सुख पाई। करति सकल व्रजनारि बड़ाई॥

धनि धनि बंशी बांसकी, धनि याके मृदु बोल।
धनि लगाये गुण याचिकै, वनते श्याम अमोल॥
धनि धनि याको वंश, धनि मुरली हरिमुख लगी।
सखिन सहित परशंस श्रीमुख श्रीराधा कह्यो॥

मुरली श्रीमुरलीधर केरी। महिमा कापै जात निबेरी॥
जाको यश गुण गंधर्व गावैं। वेद भेद जाको नहि पावैं॥
सुनत नाद त्रिभुवन मन मोहै। देव दनुज नर खग मृग जोहै॥
वा गो ललित श्रवण सुखदाई। बाजति हरि मुख लाग सुहाई॥
ब्रह्मादिक मन मोह करावै। शिव सनकादि समाधि भुलावै॥
माया योग कृष्णकी जोई। शोभित अधर सुरलिका सोई॥
हरिको श्वास जासुकी बानी। ताके गुण को सकै बखानी॥
जब मुरली नँदनंदन बजावैं। व्रजललना सुनिकै सुख पावैं॥
चकृत होत तनु दशा भुलावैं। प्रेमविवस सुधि बुधि बिसरावैं॥
जकी थकी जहँ तहँ रह जाहीं। मानहुं लिखी चित्रकी आहीं॥
कबहूं दुख कबहूं सुख मानैं। कबहूं निन्दहि कबहूँ बखानैं॥
ऐसी दशा होत घर घर की। बाजति मुरली जब नटवरकी॥
जबहि मुरली श्याम कर गहि, अधर राखि बजावहीं।
तरल तान तरङ्ग अगणित, गति अमित उपजावहीं॥

रहत सुनि धुनि मगन जल थल, जीव जहँ सोतहँ सही ।
कहत ब्रह्मानन्द जासों, पाय सँग पूजत नहीं ॥
सब सयान समान ज्ञान, गुमान तवहीं लै अहैं ।
वेद कुल मर्याद पतिव्रत, चार फल जबलौं चहैं ॥
तबहिलौं मन चपल बुधिबल, सकल रुचि धन धामको ।
सुनी स्वप्ने हु नाहिं जबलौं, श्रवण मुरली श्यामको ॥
धनि धनिते नरनारि जग, धनि धनि तिनके भाग ॥
ब्रजवासी प्रभु बांसुरी, जिनके मनमें लाग ॥
राखत है यह आस, जन ब्रजवासी दासहू ।
करहु हिये मम वास, मुरलीधर मुरली धरे ॥

---

## रासलीला ।

वंदौं युगल चरण सुखदायक । औरस रास नायिका नायक ॥
नन्दनँदन वृषभानुनन्दनी । सुर नर मुनि ब्रह्मादिवन्दनी ॥
रासरसिक रसरासबिलासी । नित्य धाम वृन्दावनवासी ॥
रूपराशि आनन्दनिधाना । मंगलप्रद सुन्दर भगवाना ॥
बहुरि रासपतिपद शिर नाऊं । रासचरित मङ्गल अब गाऊं ॥
वेदव्यास जो रास बखानो । सो गन्धर्वव्याह विधि जानो ॥
ब्रजगोपिन हरि हित तपकीन्हों।श्याम होयँ पति यह व्रतलीन्हों
नन्दनँदन तिनको वर दीन्हों । चीरहरण लीला तब कीन्हों ॥

करि हैं तुम्हरे मनको भाई । शरदरैनि शुभ लग्न धराई ॥
सो जब शरद सुखद ऋतु आई । राका रजनी परम सुहाई ॥
भक्त मनोरथ पूरणकारी । गावत विरद विदित श्रुतिचारी ॥
गये श्याम वृन्दावनमाहीं । जहँ बसंत ऋतु रहत सदाहीं ॥

श्रीवृन्दावन धामकी,शोभा परम पुनीत ।
बरणि सकै कवि कौन विधि, मन बुधि वचन अतीत ॥
सब चैतन्य स्वरूप, भूमिलता द्रुम गुल्म तृण ।
धारि रह्यो जड़ रूप, सुन्दरश्याम विहार हित ॥

जाको महिमा शिव मुनि गावैं । ब्रह्मादिक रज छुवन न पावैं ॥
जाको महिमा श्रीमुखवानी । संकर्षण प्रति श्याम बखानी ॥
चिंतामणिमय भूमि सुहाई । कोमल विमल रम्य सुखदाई ॥
सकल सुमङ्गल की जननीसी । कृष्ण चरणपंकज रमनीसी ॥
फिरत श्याम जहँ नांगे पायन । चरणचिह्न अङ्कित सब ठायन ॥
पावनहूको पावनकारी । व्रजवासी प्रभुको अति प्यारी ॥
वर्ण वर्ण वर विटप सुहाये । परम अनूप न जाहिं गनाये ॥
सदा सुमन फल संयुत सो हैं । अमित सुगन्ध स्वाद मन मोहैं ॥
नव पल्लव दल परम सुहाये । जगमगात नग ज्योति लजाये ॥
विपुल कान्ति शोभित बहु रङ्गा । अति विचित्र छवि उठतितरङ्ग
परम प्रकाश दशहु दिशि माहीं । कोटि सूर शशि पटतर नाहीं ॥
पत्र पत्र प्रतिविंब श्यामको । मोहत लखि मन कोटि कामको ॥

ठौर ठौर शोभित परम, तैसिय लता बितानि।
वृन्दावन तरु वेलि सब, नख शिख छबिको खानि॥
और सकल सुखधाम, वैकुण्ठ आदिक श्यामके।
यह विहार विश्राम, ताते अति सुन्दर सुखद॥

विपुल कुञ्ज मंजुल छबि छाई। जिन्हैं सँवारत काम सदाई॥
बहत समीर धीर सुखदाई। शीतल परम सुगन्ध सुहाई॥
चित्र विचित्र विहँग मृग नाना। बोलत डोलत विविध बिधाना
गुञ्जत भृङ्ग लुब्ध मकरन्दा। अति छबिपुञ्ज मञ्जु बनवृन्दा॥
तैसिय यमुना परम सुहाई। पुलिन पुनीत बरणि नहिं जाई॥
देति महा छबि झलकत रेतो। मानहु परम कान्तिको खेतो॥
फूले बनज विपुल बहु रङ्गा। गुञ्ज करत मधुमाते भृङ्गा॥
श्रीवृन्दावन छबि समुदाई। समग्रक बरणि कौन पै जाई॥
जाको पटतरको नहिं आना। बन अनूप अद्वैत बखाना॥
ऐसी कछु परत है हेरी। है अस्थलवपुष प्रभुकेरी॥
गोपीजन इन्द्रियगण तामें। हैं चैतन्य आप हरि जामें॥
नित्य धाम ताहीते गायो। यह पटतर मेरे मन भायो॥

सुखनिधि रसनिधि रूपनिधि, वृन्दाविपिन उदार।
शारद नारद शेष शिव, बरणत विधि श्रुति चार॥
सुखद न कोऊ आन, वृन्दावन सम दूसरो।
सकल विश्व सुखदान, सुख पावत मोहन जहां॥

तहँ विस्तृत इक अङ्ग सुहायो। मणिमय सुभग श्रुतिनमेंगायो॥
तापर अद्भुत कमल विराजै। षोडशपत्र चक्रसम राजै॥
योजन पञ्च तासु परमाना। रास स्थान सुवेद बखाना॥
मध्य करणिका अति रमणीया। बैठे तहां कान्ह कमनीया॥
शोभा अमितनेति श्रुति बानी। ताते गिरा कहति सकुचानी॥
कोमल श्यामल अङ्ग सुहाये। निरखि कोटि शत काम लजाये॥
नटवर वेष साज सब साजे। अङ्ग अङ्ग भूषण छवि छाजे॥
सखी शिखण्ड मनोहर माथे। बीच बीच मुक्तामणि गाथे॥
जलजमाल वनमाल सुहाई। कुण्डल अलक झलक छवि छाई॥
कटिपट पीत काछनी काछे। ललित शृंगार सुभग तनु आछे॥
मणिन जटित नूपुर पग नीके। चरणकमल भावत जन जीके॥
रवि शशि आदिक द्युतिधर जेते। नख उपमा पूजत नहिं तेते॥

अति अद्भुत लावण्यनिधि, श्री बृन्दावन चन्द।
निगम नेति किमि वरणिये, रसिक नवल नँदनन्द॥
जेहि गावत श्रुति चार, ब्रह्म पूर्णानन्द हरि।
सो पूरण अवतार, बृन्दावन रस रासपति॥

देखि शराम वनधाम कन्हाई। तैसिय शरद रैनि छवि छाई॥
प्रफुलित कुमुदिनिवन चहुँ पासा। ललित मालती करत सुवासा॥
जैसोइ यमुनापुलिन सुहायो। तैसोइ पूरणशशि छवि छायो॥
तैसिय जगमग ज्योतिद्रुमनकी। तैसिय ललित सुगन्ध सुमनकी

लखि बन सुख समुदाय कन्हाई। हर्षि रास रुचि मन उपजाई
तब कर लई सकल गुण मुरली। ललित योगमायासी मुरली ॥
नाद ब्रह्मकी उत्पति जासों। निगम अगम उपजै पुनि तासों ॥
विश्वविमोहन मन्त्र कलासी। हरिमुखकमल लसति कमलासी॥
राग रङ्ग रस रासबिलासी। सकल गुणनिमें आनँदरासी ॥
श्याम अधर धरि ताहि बजाई। त्रिभुवन मनमोहन ध्वनि छाई।
धरणि पताल जीव सब मोहे। नभ सुरगण सुर सुनत विमोहे ॥
चकित चन्द मृग मारग भूले। वरषत अमृतकणक अनुकूले ॥

शिव विरञ्चि सनकादि मुनि, तजि तजि ब्रह्मसमाधि।
भये नादमुरली मगन, चकित श्रवण रहे साधि ॥
रहे सबै मन भूल, सिध चारण गन्धर्व सुर।
तन सुधि रही न मूल, सुनि मुरली नंदनन्दकी ॥

थकित पवन गति गवन भुलानो। रह्यो प्रवाह नदिनथकि पानी
झरना झरहिं पषाण कठोरा। नाचि उठे चहुँ दिशि बन मोरा ॥
थकितविलोकत मृग सब ठाढ़े। खग रहे मौन मनहुँ लिखिकाढ़े
रही धेनु तृण गहि मुखमाहीं। थकित वत्स पय पीवत नाहीं ॥
सरकि सकत नहिं अहि ध्वनिमोहैं। उकठे विटप हरित सब सोहैं
तरुबेली सब चञ्चल पाता। नव अंकुर दल प्रफुलित गाता ॥
सुनि धुनि शेष नाग अकुलाने। नाग सकल सोवतते जाने ॥
जड़ चेतन गति भइ विपरीता। हरि मुख मुरली सुनत पुनीता

जो नर नारि तिहूं पुरमाहीं । भये नादवश तनु सुधि नाहीं ॥
सुनि धुनि चकित भई अतिभारी । जे ब्रजसुन्दरि गोपकुमारी ॥
यद्यपिमुरलिध्वनित्रिभुवन परशी । तदपि यथाविधि तिनहींदरशी ॥
या रसको तेई अधिकारी । नंदनँदन प्रियकी अति प्यारी ॥

सुनतहि बौरीसी भई, बिसरी सबी सयान ।
लगी ठगौरीसी मनहुँ, मुरलीकी ध्वनि कान ॥
रह्यो न उरमें धीर, बाजी बाजी कहि उठीं ।
आकुल विकल शरीर, सुनि मुरली ब्रजकी तरुणि ॥

षट्दशसहस गोपिका गोरी । मुरली सुनत भई सब भोरी ॥
कोउ धरणी कोउ गगन निहारैं । कोउ मनहींमन बुद्धिविचारैं ॥
घर घर तरुणि सबै बिततानी । आरजपथ गृह काज भुलानी ॥
लै लै तिनके नाम बजावैं । मुरलीमें हरि सबन बुलावैं ॥
रहि न सकीं ध्वनि सुनि अकुलाई । जो जैसे तैसेई उठि धाई ॥
लोक लाज गुरुजन डर डारयो । चलीं सकल गृहकाज बिसारयो ॥
काहू दूध उफनते छांडे । काहू दधिहि जमावत भांडे ॥
काहू करति रसोई त्यागी । कोऊ पतिहि जिमावत भागी ॥
बालक गोद सँभार न लीनो । दूध पियावतही तजि दीनो ॥
कोउ शृङ्गार करति उठि धाई । उलटे भूषण वसन बनाई ॥
बाजूबंद पगनसों बांधे । लै मञ्जीर उरनमें सांधे ॥
किंकिणि डारि लई गरमाहीं । हार लपेटत करसों जाहीं ॥

शीशफूल कानन धरे, करणफूल धरे भाल।
चलीं सकल मुरली सुनत, भ्रमतें ब्रजकी बाल॥
अञ्जन करि दृग एक, रह्यो एक अञ्जन बिना।
रह्यो न कछू विवेक, भई विवस मुरली सुनत॥

मुरलीसों हरि टेर बुलाई। उपजी प्रीति सकल उठि धाई॥
मुरलीध्वनि मारग गहि लीनो। और कछु उर शोच न कीनो॥
प्रेम स्वरूप सकल ब्रजनारी। पञ्चभूत अवगुणते न्यारी॥
रोकि रहे सुत पति पितु माता। तेकिमि रुकहिं अगम यह बाता
चलीं ध्यान धरि हरि उरमाहीं। गृह बन कुञ्ज रुकीं कहुँ नाहीं
जो प्रारब्ध कर्मवश कोई। राखीं रोकि पतिन गृह सोई॥
भयो विरहदुख तिनको ऐसो। कोटिन जन्म कर्म फल जैसो॥
पुनि धरि ध्यान हरिहि उर लायो। कोटि स्वर्गफल मानहु पायो
यों करि भोगत्याग तनु बाला। दिव्य देह धरि मिलीं गुपाला
इहि विधि बन सब चलीं किशोरी। लोक वेद मर्यादा तोरी॥
आतुर निकसि चलीं सब ऐसे। जरत भवन तजियत है जैसे॥
एक एकको सुधि कछु नाहीं। झुण्डन चलीं श्यामपहँ जाहीं॥

गृह गुरुजन तजि लाज तजि, ब्रजसुन्दरी निकाय।
मुरलीध्वनिरस रँग रलीं, मिलीं श्याम बन जाय॥
नटवर वपु गोपाल, अधर सधर मुरली धरे।
सन्मुख सब ब्रजबाल, देखि श्याम आनँद भरी॥

व्रजयुवतिन लखि मुदित विहारी। मोर मनहु छविघटा निहारी
कनक वर्ण शशि मुख सब वाला। पहुंची निकटजाय नँदलाला
विपिन सुहावन अति छवि वाढ़ी। भई जाय सन्मुख सब ठाढ़ी
रहे चकित हरि छवि अवलोकी। अटपट तनु शृङ्गार विलोकी॥
अद्भुत रूप देखि सुख पायो। मनहींमन अति हर्ष बढ़ायो॥
अति आदर करि कुंवर कन्हाई। बोले मन्द मधुर मुसकाई॥
वाके वचन प्रेमरस साने। प्रेम प्रतीत कसौटी माने॥
कहो अहो तिय व्रज कुशलाई। निशि काहे बनको उठि धाई॥
अर्द्धरात कछु डर नहिं कीन्हों। ऐसो कहा काज मन दीन्हों॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं। निज पति तजि धाई बनमाहीं॥
वेदपंथ निदरयो तुम भारी। जाहु अजहुँ घर वेगि सवारी॥
यह सुनिकै गुरुजन दुख पैहैं। बहुरी तुमको त्रास दिखैहैं॥

निजपति तजि परपति भजै, तिय कुलीन नहिं होय।
मरै नरक जीवत जगत, भलो कहै नहिं कोय॥
युवतिनको पति देव, कहत वेद हमहूं कहत।
करहु तिनहिंकी सेव, जो तुम चाहो सुख लह्यो॥

और कछू जियमें जिन राखो। करिये वेद वचन जो भाखो॥
तजि कै कपट करहु पतिसेवा। तियको पति तजि और न देवा॥
क्रूर कुपूत भाग विन रोगी। वृद्ध कुरूप कुबुद्धि वियोगी॥
ऐसेहु पतिको तिय जो त्यागै। वड़ो दोष ताके शिर लागै।
तातें मानहु कही हमारी। जाहु सकल घरको व्रजनारी॥

मात पिता तुम्हरे धौं नाहीं। ऐसे कहि कहि हरि पछिताहीं॥
कैसे उन तुम आवन दीनी। कैसीधौं यह विधि तुम कीनी॥
कैधौं कहि आई उनपाहीं। कैधौं वे जानत हैं नाहीं॥
नवयौवन तुम सब सुकुमारी। निशिबसिबो बन अनुचितभारी॥
जो यह बात सुनै ब्रज कोऊ। हमैं तुम्हैं दूषण दिशि दोऊ॥
अब ऐसी कीजो मति कबहूं। करि विचार देखो मन तुमहूं॥
बार बार युवतिन भरमाई। ऐसे सबसों कहत कन्हाई॥

निठुर वचन सुनि श्यामके, युवति उठीं अकुलाय।
चकित भई मन गुनि रहीं, मुख कछु वचन न आय।
बदन गयो मुरझाय, जनु तुषार कमलन परो॥
शोच रहीं शिर नाय, खोई निधि जनु पाइकै॥

विरहविकल चिन्ता अति बाढ़ी। रहीं चित्र पुतरीसी ठाढ़ी॥
कपट खेल यह गिरिधर ठान्यो। प्रेमविवशयुवतिन नहिं जान्यो
मनहीमन विहँसत नँदलाला। भई विरहव्याकुल ब्रजबाला॥
सहि नहि सकीं दुसह यह पीरा। बोलीं गद्गद गिरा अधीरा॥
सुनहु श्यामसुन्दर वर नायक। यह जिन कहो नाहिं तुम लायक
कोमल सुभग कमल मुख ताते। कैसे कहत कटुक यह बाते॥
लै लै नाम बुलायो सबको। धर्म्म सिखावत हो अब हमको॥
छांडि देहु पिय यह चतुराई। करहु हेत जेहि भांति बुलाई॥
कर्म्म धर्म्म श्रुति ताहि वखाने। जो कोउ कर्म्म धर्म्म विधि जाने॥
हम तो लोक वेद विधि त्यागी। चरण कमल तुम्हरे अनुरागी॥

सकल धर्ममय चरण तिहारे। बसत सदा सो हृदय हमारे ॥
कइयावतहो अन्तर्यामी । काहे यह समुझत नहिं स्वामी ॥

अब यह तुमको उचित नहिं, सुनहु श्याम सुखरास ॥
मन हमरो अपनाय कै, हमको करत निरास ॥
पाप पुण्य कहनाथ, यह तो हम जानैं नहीं ।
विकी तुम्हारे हाथ, अधरामृतके लोभ लगि ॥

अरु यह मृदु मुसकान तुम्हारी । सकल धर्मको मोहनहारी ॥
ऐसो को तिय ब्रजके माहीं । जाको मन इन मोह्यो नाहीं ॥
जैसिय मुरली मिली सहाई । जिन विधिकी मर्याद मिटाई ॥
अबतो मृदु मुसकन मन मोहै । पाप पुण्य जानति नहिं को है॥
हमतो पति इक तुमको जानैं। इक जो और दूसरो मानैं ॥
कोटि करो अब भवन न जाहीं । तुम तजि हमहिं और प्रियनाहिं
जानतहो सब अन्तर्यामी । काहे यह समुझत नहिं स्वामी ॥
मन वच कर्म तुम्हारी दासी । मृदु मुसकान तुम्हारी प्यासी ॥
जरत सकल विरहानलज्वाला । सींचहु अधरामृत नँदलाला ॥
दीन कृपानिधि नाम तुम्हारो । हमते दीन न और विचारो ॥
मृदु मुसकान दान अब दीजै । दारुण विरह दूर पिय कीजै ॥
जो नहिं मानत विनय हमारी । तौ यह तनु करि हैं बलिहारी॥

विरहविकल लखि गोपिकन, कृपासिंध भगवान ॥
उमँगि उठे दृग भरि लिये, दीन वचन सुनि कान ।

धनि धनि धनि ब्रजबाल, कहत मनहिमन हर्षि हरि।
सदय हृदय गोपाल, बोले दुहुँ कर जोरि तब॥
बोल प्रभुता डारि गोपाला। धन्य धन्य तुम ब्रजकी बाला॥
तुम सम्मुख मैं विमुख तुम्हारे। दूर करो यह दोष हमारे॥
मैं निर्दय बहु वचन बखाने। तुम अपने जिय एक न आने॥
मो कारण गृह कुटुंब बिसारो। धनि धनि धनि यह नेम तुम्हारो
लोकलाज शङ्का सब त्यागो। मनवचक्रम मोसों अनुरागो॥
यों कहि विहँसि मिले नँदलाला। अङ्कम भरिलीनो सब बाला।
यदपि अकाम सदा सुखरासी। तदपि भये रसप्रेमविलासी॥
एकहि बार युवति सब भेंटो। दुसह ताप विरहानल मेटो॥
कह्यो बिहँसि सबसों गिरिधारी। करहु रासरस मिलि सुखकारी
कृपादृष्टि अवलोकत नयनन। हँसि हँसि सींचत अमृत नयनन।
चहुँ दिशि हषभरीं सब ग्वारी। मध्य श्यामसुन्दर बनवारी॥
विहरत बनविहार सुखदाई। नवल गोपिका नवल कन्हाई॥
हँसत करत बहु रसचरित, युवतिवृन्द लिये सङ्ग।
गये यमुनतट श्याम तब, क्रीड़त कोटि अनङ्ग॥
सोहति अति कमनीय, कोमल उज्ज्वल रेत तहँ।
करी परम रमणीय, यमुनाजी निज पानि रचि॥
बहत समीर त्रिविध सुखदाई। कुसुम धूरि धुंधरि छवि छाई॥
उड़त सुगन्ध लपट चहुँ ओरा। गुञ्जत भँवर चारु चितचोरा॥
बैठे तहां श्याम सुखसागर। कोटि काम मनमथन उजागर॥

करन विलासहास रसलीला । कोटि अनङ्ग रङ्ग सुखशीला ॥
परिरम्भन चुम्बन कुचपरसत । हिय हुलास आनँदरस वरसत ॥
काम भाव गोपिन हरि ध्यायो । कियो सवनके मनको भायो ॥
अस अद्भुत रस प्रेम वढ़ायो । वहुरि रासरस रँग उपजायो ॥
सुनि पिय वचन सकल अनुरागीं । भूषण वसन सँवारन लागीं ॥
लखि उलटे भूषण सकुचानी । निरखि परस्पर तिय मुसकानी ॥
नवसत साजि भई सव ठाढ़ी । परम प्रेम आनँदरस वाढ़ी ॥
वंशीवट छविधाम अनूपा । कोटि कल्पतरु सम सुखरूपा ॥
तहां रच्यो रसरास कन्हाई । भइ कपूरमय भूमि सुहाई ॥

भई भूमि कपूरमय रज, वरषि जल कुङ्कुम सिंची ।
परम कोमल सुभग शीतल, ज्योति मणि कञ्चन खिंची ॥
हर्षि तहँ घनश्याम सुन्दर, रासमण्डल विधि रची ।
वर्णि कापै जाय सो छवि, निरखि शारदगति लची ॥
एक एकहि युवतिके विच, मधुर मूरति श्यामकी ।
तिनमध्य जोरी रासनायक, राधिका घनश्यामकी ॥
एक रूप अनेक वपु धरि, सवनिके विच राजहीं ।
करी यह लीला प्रगट प्रभु, मरम कोउ न जानहीं ॥
भई मण्डल जोरि ठाढ़ी, जात नहिं मुखछवि भनी ।
सहस वत्तिस उदित मानौ, मध्य घन दामिनि वनी ॥
तेहि अवसर ललना सहित, आये सुर मुनि सर्व ।
देवनटी किन्नरवधू, तुम्बुरादि गन्धर्व ॥

देखत चढ़े बिमान, हर्षि हर्षि बरषत सुमन।
करत मुदित मन गान, धन्य धन्य व्रजयुवति कह॥

सुरगण सब बाजन्त्र बजावैं। निरखत व्रजसुन्दर छवि पावैं।
नूपुर कङ्कण किङ्किणि बाजैं। मन्द मधुर मुरलीसुर गाजैं॥
ताल मृदङ्ग वीन मुँहचङ्गा। सुरमण्डल सारङ्ग उपङ्गा॥
तन्त्र अनेक विविध गति साजैं। मिले एक सुरसों सब बाजैं॥
नितत पियसँग चञ्चल बाला। जनु क्रीड़त घन दामिनिजाला
बिच बिच श्याम बीच व्रजगोरी। मरकत मणि कञ्चनकी जोरी
सुभग तमाल तरुण नँदलाला। कनक लता सम सब व्रजबाला॥
करसों कर जोरे छविछाजैं। कोटि काम छवि निरखत लाजैं॥
वृन्दावन उर मनहुँ बिशाला। लसत रासमण्डलकी माला॥
हरि व्रजनारि परस्पर सोहैं। कोटि काम रति को मन मोहैं॥
मटक चलन गति नागरनटकी। लटकन मुकुट लटकघूँघटकी॥
जनु बन घन दामिनी वरूथा। निरख नचत मोरनके यूथा॥

नचत मानौ मोरयूथन, मुकुट लटकन यों फबै।
चलत गतिलै नागरिनसँग, श्याम नटनागर जबै॥
धरणि पगपटकनि झटकि कर, भौंहमटकनि कहि परे।
ग्रीवचालन हलनकुण्डल, करजुफेरन मनहरे॥
मणि कण्ठ मुक्तामाल उर, बनमाल चरणनलौं बनी।
बदनपंकज अलक श्रमकण, झलकछबि सक को भनी॥

पटपीत फरकन काछनी, कटि लाल किङ्किणि सोहई ।
मलयचित्रित बाहुभूषण, श्याम तन मन मोहई ॥
लखि रहत नँदलाल तिय छवि, विविध विधि वेणी गुही ।
सुभग पाटी माँग मुक्ता, शीशफूलनि छवि रही ॥
जटित माल जरावबंदी, उदित द्युति भ्रुववङ्की ।
ललित वेसरि नाक अञ्जन, नैन श्रुटिना टङ्की ॥
अधर दशन कपोल चिबुकन, कण्ठभूषण अतिबने ।
करत रास विलास अद्भुत, हरत मनमोहन मने ॥
कबहुँ ललित गति लै चलत, नवल सुघर नँदनन्द ।
निरखि हर्षि तैसेइ चलत, नवल नागरीवृन्द ॥
कबहुं विचक्षण बाम, लटकि लेति नूतन गतिहिं ।
रीझि रसिक घनश्याम, तापर तन मन वारहीं ॥
निर्तत अरस परस पिय प्यारी । बोलत बलिहारी बलिहारी ॥
कोउ कलध्वनि पियकेगुणगावै । काउ अभिनयकरि भाव बतावै ॥
कोउ सङ्गीतकला गुणधारी । कोउ उघटत चटकत करतारी ॥
निर्तत ताल भेद गति लीना । सुघर एकते एक प्रवीना ॥
जात रसिकपिय बिकि बिनमोलैं । जब थेइ ताथेइ ताथेइ बोलैं ॥
तान तरङ्ग रङ्ग उपजावैं । लेत उपज अति रस बरषावैं ॥
कबहुंक उघटत छैल कन्हाई । फिरत लुब्ध जिमि बाल सुहाई ॥
गिरत मणिनके भूषण तनते । झरत फूल जनु रूप लतनते ॥
लटकि लटकि निर्तत अलबेली । ग्रीव ग्रीव मञ्जुल भुज मेली ॥

कोउ पियके सँग मिल करि गावै। कोउ मुरलीको छीन बजावै॥
काहू श्याम लेत भुज भरिकै। तजैं कमलमुख चुम्बनकरि कै॥
रमत रास पियसङ्ग छबीली। परम प्रेम रसरङ्ग रँगीली॥

रसरँगरँगीली प्रेमके वश, रास रस पिय सँग करैं।
निरखि देव प्रसून बरषहिं, हरषि उर आनँद भरैं॥
धन्य ब्रज धनि बाल ब्रजकी, धन्य बन पुनि पुनि कहैं।
करत रासविलास पूरण, ब्रह्म जहँ परगट अहैं॥
शम्भु अज सनकादि नारद, मुदित गुणगण गावहीं।
निरखि छबिनिधि श्यामश्यामा, ब्रह्मसुख बिसरावहीं॥
देवनारि बिसारि पति गति, कहि परस्पर शोचहीं।
ब्रजवधू विधि हम न कीनी, निरखि सुख मन लोभहीं॥
कह भयो जो ऊर्ध्व बसी, अरु अमरपदवी जो लही।
करत सुख जो श्यामसँग, ब्रजनारि सो त्रिभुवन नही॥
बार बार मनाय विधना, कहति यह बर दीजिये।
होय दासी ब्रजवधुनकी, कृष्णपद रति कीजिये॥
धनि धनि कहि बरषहि सुमन, मुदित सकल सुरनारि।
धनि मोहन धनि राधिका, धनि ब्रजगोपकुमारि॥
धनि धनि रास बिलास, धनि सुन्दरता धन्य सुख।
धनि बृन्दावनवास, सुरललना वियकी कहत॥

रमतरा सरस गोपकुमारी। नन्दनँदनपियकी सब प्यारी॥

करति मान कोकिला लजावें । हाव भाव करि पियहि रिझावें॥
राग रागिनी समय सुहाये । सहज वचन जिनके मन भाये ॥
गति सुगन्ध नितत सब गोरी । सहज रूपनिधि नवलकिशोरी ॥
महि पग पटकि भुजन लटकावें । फंद्रा करन अनूप बनावें ॥
निरखिलेत उपजत छविभारी । रीझरहतलखिछवि गिरिधारी॥
वेनी छुटी लटें बगराहीं । अलकें वेसरसों उरझाहीं ॥
श्रमजलविन्दु वदन द्युतिकारी । मनहुं सुधाकण चन्दमँझारी ॥
अति वशहोत निरखि मनमोहन । फिरत सबनके गोहन गोहन
नारि नारि प्रतिरूप प्रकासे । एकहि रूप सबनको भासे ॥
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो । कियो सबनके मनको भायो ॥
नितत अङ्ग थकित भई नागरि । रूप प्रेमगुण परम उजागरि ॥

भई नितत थकित तरुणी, रूप गुणन उजागरी ।
उमँगि तब उर लाय लीनी, श्याम लखि नवनागरी ॥
गिरत उरते हार टूटे, निरखि प्रभुहि जनावहीं ।
लेति बीचहि गहि तिन्हें, महिमांझ परन न पावहीं ॥
अति प्रीति श्रमजल पीतपटसों, पोंछि पवन डुलावहीं ।
उरझि बेसरिसों रही लट, कमलकर सुरझावहीं ॥
देखि विह्वल गात भूषण, शिथिल अङ्ग सँवारहीं ।
कहि कहि वचनमृदु परस्पर, निज पाणि श्रमहिंनिवारहीं
ऐसी विधि ब्रज सुन्दरिन, देत परम सुख श्याम ।
लखि पति गति स्वाधीन अति, भई गर्विता वाम ॥

परम प्रेमकी खानि, रूप शील गुणआगरी।
क्यों न करें अभिमान, जिनके वश त्रिभुवन धनी॥

कहति भई निजर मनमाहीं। हमसम अरु न युवति जगमाहीं॥
अब गिरिधर हम वश करि पाये। करत हमारे मनके भाये॥
अब हमते नहि ह्वैहैं न्यारे। रहिहैं सदा समीप हमारे॥
जोइ जोइ हमकहिहैं सोइ करिहैं। सदा हमारे सङ्ग विचरिहैं॥
कोउ पिय अंश भुजनको दीन्हों। कहति वचनयों गर्वहि लीन्हों
सुनो श्याम मैं अति श्रम पायो। अबतो मोपै जात न गायो॥
एक कहति मम पाँय पिराहीं। मोपै नृत्य होत अब नाहीं॥
एक कण्ठ भुज मेलि सयानी। रही लटकि बोलत नहि बानी॥
ऐसे भाव गर्वके कीन्हें। अन्तर्यामी हरि सब चीन्हें॥
गर्व देखि मोहन मुसकाने। मैं अवगति मोको नहि जाने॥
करत सदा भक्तन मनभाई। एक गर्व श्यामहि न सुहाई॥
सो युवतिनके मनमें जानी। दूरि करन हित यह जिय आनी॥

प्रेम अभूषण कनकसम, मलिन गर्वते होय।
विरहअग्नि तपये बिना, निर्मल होय न सोय॥
यह विचार जिय आन, ले वृषभानुकुमारिसँग।
ह्वै गये अन्तर्द्धान, व्रजबासी प्रभु सङ्गते॥

## अन्तर्द्धान लीला ।

प्रेम बढ़ावन हित सुखदाई । अन्तर कर बन दुरे कन्हाई ॥
गोपिन जब हरि देखे नाहीं । चकित भई तब सब मनमाहीं ॥
कहति एक कित कुंवर कन्हाई । उठीं सकल जहँ तहँ अकुलाई
भई विकल कछु मरम न पायो । पाय महाधन मनहु गवांयो ॥
खोजत जहँ तहँ दृष्टि पसारैं । अति आतुर चहुँओर निहारैं ॥
तब सबहिन मिलिके यह जानी । लैगइ हरिको कुवँरिसयानी ॥
कछु हर्ष कछु रिस उर धारी । देति भई हँसि रसकी गारी ॥
इन समान कपटी कोउ नाहीं । करत सदा दुबिधा हमपाहीं ॥
चलहु खोज कुञ्जनमें लेहैं ।जान कहाँ हमते बन पहैं ॥
ढूँढन चलीं सकल बनमाहीं । चरणचिह्न खोजत सब जाहीं ॥
देखति जहँ तहँ फिरत अधीरा । कोउ बन घन कोउ यमुनातीरा
कोउ कुञ्जन कोउ पुञ्जन हेरैं । श्याम श्याम करि कोऊ टेरैं ॥

इहि विधि सब खोजत फिरैं, बिरहातुर ब्रजबाल ॥
भई विकल पावत नहीं, कछु खोजत नँदलाल ॥
यदपि कियो हरि ख्याल, नेक दुरे बन कुञ्जमें ।

तदपि भई बेहाल, युवति श्याम देखे विना ॥
पलकान्तर विधिको दिनदिनको । बन अंतर अतिबड़दुखतिनको
भईबिरह व्याकुलचित जबहीं । हरिपदचिह्न लखति भइ तबहीं
कुलिश कमल ध्वज अंकुश जामें । जगमगात बन घन महितामें

निकट चिह्न प्यारी चरणनके। अरुण कमलदल सुभग वरनके॥
वन्दन करन लगीं रज जोई। शिव विरञ्चि याचत हैं सोई॥
कछु यक धीर धर्यो मनमाहीं। खोज लेति ताही मग जाहीं॥
कुंवर कान्ह प्यारीसँग लीने। फिरत सकल कुञ्जन रसभीने॥
कबहुं कुसुम वनमाल बनावैं। निरखि हर्षि प्यारिहि पहिरावैं॥
कबहूं सुमन सवाँरत वेणी। परम सुभग शोभाकी श्रेणी॥
कबहुँ सरोज सुगन्ध सुँघावैं। नागरिमन अभिलाष बढ़ावैं॥
कण्ठ कण्ठ भुज दोऊ जोरैं। घन दामिनि छूटति नहिं छोरैं॥
अति प्यारीके रसबस मोहन। भौंह निहारत डोलत गोहन॥

पति हित लखि अनुकूल अति, हरषि लाड़िली हीय॥
तातें उपज्यो गर्ब जिय,मैं अति प्यारी पीय॥
एक प्राण द्वै देह, तहाँ गर्ब कहँ पाइये।
यामें नहिं सन्देह, देह धरेको भाव यह॥

तब प्यारीके मन यह आई। मेरे ही वश कुंवर कन्हाई॥
मेरे हित बांसुरी बजाई। मेरे हित सब तियन बुलाई॥
मेरे हित रस रास उपायो। सबहिन तजि मोसों मन लायो॥
मो-सम सुन्दर चतुर उजागरि। और नहीं युवती कोउ नागरि॥
ऐसे गुणति मनहिं मनमाहीं। ठिठुकि रहति गहि पियकीबांहीं
बैठि जात कबहू मगमाहीं। कहति कि मेरे पांय पिराहीं॥
चलन कहत तुम जहां कन्हाई। मोपै पगन चल्यो नहिं जाई॥
नृत्य करत मैं अतिस्रम पायो। तातें पग नहिं जात उठायो॥

सुनहु मित्र मोहन सुखदाई । कन्ध लेहु पिय मोहिं चढ़ाई ॥
ऐसे तिय जब वचन बखाने । गर्ब जानि गिरिधर मुसकाने ॥
जहां गर्ब तहँ रहत न कबहीं । अन्तर्द्धान भये हरि तबहीं ॥
तुरतहि विकल भई अति प्यारी । देखत दुरे चरित गिरिधारी॥

चकित भई तब नागरी, गये कितै भजि श्याम ।
मनहीं मन पछितात अति, भूली तनसुधि बाम ॥
मैं कीनों अभिमान, नारि बुद्धि खोछी सदा ।
वे पिय परम सुजान, जान लई सो जीवकी ॥

भई विकल समुझत निज करनी । सो वह दशा जाय नहिं बरनी
विरहव्यथा बाढ़ी अति तनमें । परम अकेली रोवति बनमें ॥
नैनसलिल भीजत तनु सारी । कासि कासि पिय कहति पुकारी
हाहा नाथ अनाथ न कीजे । वेगि श्याम मोहिं दरशन दीजे ॥
मैं तुम कृपा पाय गरवानी । ताते सकी सँभरि न बानी ॥
सो अपराध क्षमा प्रभु कीजे । यह दूषण मनमाहिं न लीजै ॥
वेगि कृपा करि मिलहु दयाला । अहो कमलदलनयन रसाला ॥
विरहविकल यों वदत अकेली । रोवत सुनि खग मृग द्रुम बेली ॥
तहँ खोजति आई सब नारी । दूरिहिते देखी तिन प्यारी ॥
मुखशशि ज्योति रूपकी रासी । जनु घनते बिछुरी चपलासी ॥
द्रुम शाखा अवलम्बित ठाढ़ी । रुदन करति विरहादुख बाढ़ी॥
व्याकुल चकित चहूं दिशि जोवैं । कमलचरण नख भूमि करोवैं॥

जित तितते धाई सबै, ब्रजसुन्दरि अकुलाय।
व्याकुल अति लखि लाडिलौ, लीन्हीं कण्ठ लगाय॥
कहां गये गोपाल, बार बार बूझति सबै।
मुरछि परी तब बाल, मुखते वचन न आवई॥

देखि दशा सब तिय अकुलानी। बैठारी अङ्कम गहि पानी॥
कहु राधा क्यों बोलति नाहीं। काहे मुरछि परी महिमाहीं॥
या बनमें कैसे तू आई। कहां गये तजि तोहि कन्हाई॥
निरखि वदनसबहिन दुखकीनों। मनहुं अमीनिधिअमिरतदीनां
कोऊ लगी सँवारन अलकैं। कोउ अञ्चरते पोंछति पलकैं॥
नयननीर कछु सुधि नहिं देही। अति व्याकुल बिन श्यामसनेही
बूझति युवति कहां बनवारी। चलिहैं तहां तोहि लै प्यारी॥
सुनत नाम पियको अनुरागी। विरह मोह निद्राते जागी॥
जान्यो आये कुंवर कन्हाई। नयन उघारि मिलनको धाई॥
जो देखे तौ सब ब्रजबामा। अतिही बिलखि उठी तब श्यामा॥
कहत मोहि त्यागी नँदनन्दन। तुमहूं नहीं मिले जगबन्दन॥
मैं अपने जिय गर्व भुलानी। नहिं उनकी महिमा कछु जानी॥

बोली पियसों मन्दमति, मैं अभिमान बढ़ाय।
लीजे कन्ध चढ़ाय मुहिं, मोपै चल्यो न जाय॥
वे प्रभु परम सुजान, बिहँसि कह्यो मोहिं चढ़नको॥
ह्वै गये अन्तर्द्धान, अपनी चूक कहा कहौं॥

गये श्याम धौं कित बनमाहीं । मेरी दृष्टि परै कहुँ नाहीं ॥
कहति बिकल नयनन जल ढारी । मोको त्यागि गये गिरिधारी ॥
मुरछि परी धरणी अकुलाई । श्याम बिरह दुख सह्यो न जाई ॥
देखि दशा व्याकुल सब नारी । कहति निठुररी अति बनवारी ॥
त्रिया पुरुषसों जान जु करहीं । पुरुष नहीं ऐसी उर धरहीं ॥
देखहु श्याम तजी हम कैसे । नाहिं बूझिये उनको ऐसे ॥
कहति राधिकासों ब्रजनारी । मिलिहैं श्याम धीर धरु प्यारी ॥
चलौं आप खोजन सब बनमें । बिरहबिकल कछु सुधि नहिं तनमें ॥
टेरत जहँ तहँ घोषकुमारी । अहो रासपति कुञ्जबिहारी ॥
कहां दुरे पिय हमते भजिकै । जात प्राण तुम बिनु तनु तजिकै ॥
क्षमा करो प्रभु चूक हमारी । मिलहु कृपा करि वेगि मुरारी ॥
तुमबिन हमको सुनहु कन्हाई । क्षण क्षण कल्पसमान बिहाई ॥

जरत सकल तुम दरश बिन, विरहअग्नि तनु वाम ।
मन्द मधुर मुसकनिसुधा, बरषि बुझावो श्याम ॥
सहज विश्वसुखधाम, गावत तुमको जगत सब ॥
तिन्हैं होत कत वाम, जो दासी बिन मोल की ॥

सदा हमारी रक्षा कीनी । गरल अनल जलते रख लीनी ॥
अब कत निठुर होत हो प्यारे । विरह जरावत गात हमारे ॥
कतहि फिरत वन चरण उघारे । गड़िहैं कुशकण्टक अनियारे ॥
तुम पद बसत हमारे हियमें । ते कण्टक शालत हैं जियमें ॥
अहो नाथ यह कह जिय धारी । सुख देके दुख देत मुरारी ॥

ऐसे कहति सकल बन डोलैं। अलबल वचन बदनते बोलैं॥
अति अकुलाय गई मनमाहीं। जड़ चेतन कछु समुझत नाहीं॥
बूझति बन बिटपनसों धाई। तुम कहुँ देखे कुंवर कन्हाई॥
अहो कदम्ब अहो अम्ब तमाला। हमहिं बताओ कित नँदलाला॥
अहो जुही मालती निवारी। लखे कहूं इत जात बिहारी॥
हे चम्पक हे श्रीफल कदली। हे दाड़िम हे जामुन बदली॥
तुम देखे मनमोहन लाला। श्याम कमलदल नयन विशाला॥
हे पलाश हम दास तुम्हारी। कहो कहां सुखरासबिहारी॥

हे अशोक हरि शोक तुम, सत्य करो निज नाम।
लेत नहीं यस हे पनस, क्यों न कहत कित श्याम॥
हे मन्दार उदार, हे पीपर हर पीर मम।
कह कित नन्दकुमार, सुन्दर घनतन सांवरो॥

हे चन्दन तनु जरत जुड़ावो। नँदनन्दन पिय हमहिं बतावो।
हे अवनी चितचोर हमारे। कित राखे नवनीतपियारे॥
तुमते दूरि कहूं हरि नाहीं। क्यों न मिलाय देत हमपाहीं।
कहि धौं कुन्द मुकुन्द कहां हैं। हमको देहु बताय जहां हैं
हे वट नटनागरहि बताओ। कहूं निकट नंदसुवन दिखाओ॥
कहु धौं मृगी मया करि हमको। पूछति हम हाहा करि तुमको॥
देखियत डहडहे नयन तुम्हारे। तुम कहु मोहनलाल निहारे॥
हे दुखदमन परम सुखकारी। कहियत गति सर्वत्र तुम्हारी॥
जहां होयँ बलबीर बिहारी। कहति जाय कि न व्यथा हमारी॥

हे तुलसी तुमतौ सब जानो । क्यों नहिं हरिसों प्रगट बखानो ॥
तुमतौ सदा श्यामको प्यारो । कहत नहीं यह दशा हमारो ॥
बोलत नहिं कोउ कहत तरुनको । ले गये श्याम इनहुँके मनको ॥

इहि विधि बन घन ढूंढ़ि सब, व्रजतिय विरह उदास ॥
इत उनते फिर आवहीं, कुँवरि राधिका पास ॥
मनहुँ नीर बिन मीन, अति व्याकुल तरफत परी ॥
श्यामविरह अति दीन, कनकलतासी नागरी ॥

व्याकुल कहति सकल व्रजबाला । अजहूं नहिं आये नँदलाला ॥
कहा करें अब कितको जैये । श्याम बिना कैसे सुख पैये ॥
तब सब बहुरि यमुनतट आई । जहां रसिकप्रिय रास रमाई ॥
बैठीं सब राधा ढिग बामा । कहन लगीं हरिके गुणग्रामा ॥
सबके ढिग हरि सोहत कैसे । दृष्टि बन्द करि नटवर जैसे ॥
युवति नहीं कोउ उनको देखें । हरि सबहीको लीला पेखें ॥
देखि देखि मन अति सुख पावें । परम प्रीति रसरीति बढ़ावें ॥
करत चरित्र विचित्र विहारी । सदा श्याम भक्तन सुखकारी ॥
विरहअग्नि तनु गर्व जरावैं । निर्मल प्रेम भक्ति उपजावैं ॥
गोपीजन सब हरिको प्यारी । नेक नहीं कहुँ हरिते न्यारी ॥
कहति श्याम व्रज प्रगटे जबते । देत सबनको सब सुख तबते ॥
तिनमें हम सब उनकी दासी । क्यों हम तजि हरि भयो उदासी ॥

व्याधहुते करनी कठिन, हमते ठानी श्याम ।
वेणु बजाय बुलाय सब, बधत मृगी ज्यों बाम ॥

कीजै कौन उपाय, मोहन-मुख देखे बिना।
मरति मसोसा खाय, यह मन गौध्यो माधुरी॥
सदा हमारे मनको भावे। तिरछी चितवनि चितहि चुरावे॥
जब अति बालक हुते मुरारी। बालविनोद किये सुखकारी॥
खेलतमें बहु असुर सँहारे।। बिघन अनेकन ब्रजके टारे॥
अद्भुत चरित मनोहर कीनो। गिरिवरधर ब्रजको रख लीनो॥
हलधर सखन सङ्ग मुरली धरि। गोचारन बन जात जबहि हरि
तब हमको बीतत दिन जैसे। जानत है हमरो मन तैसे॥
कुण्डल मुकुट केश घुंघरारे। गोरज रञ्जित दृग अनियारे॥
पीत वसन वनमाल विशाला। वेनु बजावत मधुर रसाला॥
सखन मध्य गौअनके पाछे। चन्दन चित सुभग तनु आछे॥
सांझ समय आवत जब देखैं। तब हम जन्म सफल करि लेखैं॥
ऐसे कथत सकल व्रजनारी। हरिगुण रूप कथा विस्तारी॥
समझत कहत श्याम गुणरूपा। उपजी उर अति प्रीति अनूपा॥

भूलि गई सुधि देहकी, भयो विरहदुख औन।
केवल तन्मय ह्वै गई, नहिं जानति हम कौन॥
भृङ्गीकीट समान, मगन ध्यान रस नागरी॥
बिसरी सकल समान, भई आपुही कश्यतन॥

लागीं करन चरित सब हरिके।पूरण प्रेम भई गिरिधरके॥
ये लीला उनहींको सोहैं। नेक नहीं जानति हम को हैं॥
एक भई दधि चोर कन्हाई। एक पकरि गहि भुज लै आई॥

एक यशोमतिको वपु धरिकै । बांधति है ऊखलसों हरिकै ॥
इक भइ गाय एक गोपाला । बोलति वैसेइ बचन रसाला ॥
कारी धौरी धूमरि कहिकै । हटकत फिरत लकुट कर गहिकै ॥
कहति एक अम्बर गिरिधारी । गाय गोप सब रहो सुखारी ॥
कहति एक मूँदो सब लोचन । म करिहौं दावानलमोचन ॥
एक यमलअर्ज्जुन तरु मञ्जै । एक वकासुर वदन विभञ्जै ॥
एक वस्त्रको नाग वनाई । तापर निरत करत हरषाई ॥
एक दहीको दान चुकावै । इक त्रिभङ्ग ह्वै वेणु बजावै ॥
मगन भई सब या रसमाहीं । तनु अभिमान रह्यो कछु नाहीं ॥

अन्तर नेकु रह्यो नहीं, भई श्याम ब्रजबाम ।
तब अन्तर नहिं करि सके, भये निरन्तर श्याम ।
प्रगट भये ततकाल, तिनहींमधि नँदलाड़िले ।
सुन्दर नयन विशाल, गोपीजनवल्लभ सुखद ॥

प्रेममगन अति आतुरताई । श्रीवृषभानु कुँवरि उर लाई ॥
देखि प्रगट दरशन गोपाला । मिलीं धाय आतुर ब्रजबाला ॥
जो धनराशि परी कहुं पावै । लोभी जन लूटनको धावै ॥
लपटी एक धाय उरमाहीं । एक मिलत ग्रीवा दै बाहीं ॥
कोऊ परी चरणपर आई । कोऊ अङ्ग रही लपटाई ॥
कोऊ गहि उर पङ्कज लावैं । तप्त विरहको ताप नशावैं ॥
कोउ लटकी गहि भुजा नवेली । जनु श्रृङ्गारविटप छविवेली ॥
कोऊ मुखछवि रही निहारी । कोऊ रही चरण उर धारी ॥

कोऊ दृग भरि कहत भले हरि। एक पीतपट छोर रही धरि ॥
हरिसों मिली लसतियों भामिनि। जनुवनघनघेरयो बहु दामिनि ॥
कहुं अञ्जन कहुं कुङ्कुम रेखा। कहूं पीककी लीक सुबेषा ॥
युवतिनमध्य लसें हरि प्यारे। कृपादृष्टि सब ओर निहारे ॥

पुनि बैठे रहि हर्षि तहँ, युवतिवृन्द चहुँ पास।
सबके सन्मुख राजहीं, सुन्दर छबि घनरास ॥
बोले बिहँसि गोपाल, हँसत कियो यह ख्याल हम।
कहति भई बेहाल, तुम प्राणनते मोहि प्रिय ॥

सकुचीं सुनि प्यारी यह बानी। मन जान्यो नहि प्रगट बखानी ॥
कहि कहि कोमल वचन कन्हाई। सबको दुख डारयो बिसराई ॥
अति आनन्द सबनको दीनो। सफल मनोरथ सबको कीनो ॥
जाके साध हुती जिय जैसी। पूरण करी श्याम मन तैसी ॥
भये कान्ह प्रीतम अनुकूले। बढ्यो अनन्द सकल दुख भूले ॥
तब हरिसों सब नवलकिशोरी। पूछन लगीं बिहँसि कर जोरी ॥
प्रेम प्रीतिकी रीति सुहाई। हमें कहौ समुझाय कन्हाई ॥
इक जो प्रीति परस्पर कहिये। एक एक ही दिशिते लहिये ॥
एक दुहुनको मानत नाहीं। ताको कहा कहत जगमाहीं ॥
उत्तम प्रीति कहावति जोई। कहहु श्याम हमसों तुम सोई ॥
हम अबला जानति कछु नाहीं। ताते पूछति हैं तुमपाहीं ॥
सुनि गोपिनके वचन रसाला। भये प्रेमवश परम कृपाला ॥

यद्यपि जगत गुरु अजित प्रभु, भक्तवछल व्रजचन्द।
प्रेमविवस हारे तदपि, अपने मुख नँदनन्द॥
कहत भये तब कान्ह, सुनहु प्राणवल्लभ प्रिया।
नहि तुम सम कोउ आन्ह, निपुन प्रेमके पन्थमें॥

तदपि तुम पूछति हो जैसे। प्रगट करौं लच्छण सब तैसे॥
एक जो प्रीति परस्पर होई। स्वारथ हेतु मरत सब कोई॥
जैसे पशू पशूको जाने। आपुसमें अति हित कर माने॥
सो वह प्रीति कनिष्ठ कहावे। जासों सब संसार बँधावे॥
दूजो प्रीति एक दिशि जोई। करति धर्म अधिकारी सोई॥
जैसे मात पिता चित धरिकै। रचत हैं सुतकै हित करिकै॥
सो वह मध्यम प्रीति कहावत। उत्तम गति ताते जन पावत॥
जो यह दोउनको नहि जाने। गुण दूषण कछु उर नहि आने॥
तिन्हैं सुनो मैं कहत वखानी। कै कृतज्ञ कै पुनि अज्ञानी॥
उत्तम प्रीति जानिये सोई। अनायास उपजत उर जोई॥
दुहुँ दिशि हठ करि प्रीति बढ़ावे। नहि निमित्त तामें कछु आवे॥
अन्तर नेक परे नहि कोई। प्रीति पुनीत जानिये सोई॥

नहीं अन्तर नेकु जामधि, प्रीति उत्तम सो कही।
करी मोसों तुम सबन मोई, मैं ऋणी तुम्हरो सही॥
करहुँ जो उपकार तुम प्रति, कोटि कोटिन जग भरी।
कबहुँ होहुँ न उऋण तुमते, हे प्रिया व्रजसुन्दरी॥

करै ऐसो कौन जैसो, तुमन जो करनी करी।
लोक वेद मराद मम हित, तोरि तृण सम परिहरी॥
करहु मनते दूर अब यह, दोष मैं तुमते कियो।
प्रिया अन्तर परम सुखमें विरहदुख तुमको दियो॥
ऐसे प्रेमाधीन है, कहि कहि बचन रसाल।
दूर करी युवतीनके, मनते गांस गुपाल॥
बाढ्यो परमानन्द, ब्रजबासिन प्रभु वचन सुनि।
परम मुदित तियवृन्द, प्यारी प्रिय नंदनन्दको॥

---

## महामङ्गल रासलीला।

सुनि पियके मुखको रसबानी। गोपीजन सब मन हरषानी॥
हँसि हँसि बहुरि लाल उर लाये। मनते सब सन्देह मिटाये॥
देखि सबनकी प्रीति कन्हाई। बहुरि रासरस रुचि उपजाई॥
वैसोइ सुख सबको उपजायो। वही भाव सबके मन भायो॥
यह जान्यो सबहिन तबहीते। करत रासरम पिय सबहीते॥
अन्तर्धान चरित सब भूलीं। वैसइ आनँदके रस फूलीं॥
बहुरि रासमण्डल विधि जोरी। बिच बिच श्याम बीचविचगोरी
वैसइमधि नायक हरि राधा। बढ़े परस्पर प्रीति अगाधा॥
वैसइ मुरली श्याम बजाई। वैसइ थकित भयो उडुराई॥
वैसै सुर विमान नभ सोहैं। वैसइ सुर मुनि गन्धर्व मोहैं॥

वैसइ खग मृग नव द्रुम वेली। वैसइ यमुनापुलिन सुहेली।
वैसइ पवन त्रिविध सुखदाई। वही रासरस रूपनिकाई॥

करें वैसोइ रासरस पुनि, युवति अति छवि छाजहीं।
गौर अङ्ग किशोर वेष, सुदेख मुख शशि राजहीं॥
जोरि पङ्कजपाणि वाहु, मृनाल मण्डल साजहीं।
मध्य सबके श्याम श्यामा, रूपराशि विराजहीं॥
मुकुट कुण्डल वसन भूषण, वरण अञ्जन राजहीं।
अङ्ग अङ्ग अनङ्ग रति लखि, कोटि कोटिन लाजहीं॥
चरण नूपुर किंकिणी कटि, वलय नूपुर बाजहीं।
वीन ताल मृदङ्ग चङ्ग, उपङ्ग सुर सुख साजहीं॥

अरस परस निरखत छबिहि, भरे प्रेम आनन्द।
नवल नागरी व्रजवधू, नव नागर नँदनन्द॥
रहे निरखि सुर भूल, सहित सुन्दरी मग्न सुख।
पुनि पुनि बरषत फूल, धन्य धन्य व्रज कहि मुखन॥

सोहति हरि मुख मुरली कैसे। करि दिग्विजय नृपति वर जैसे।
वैठि पाणि सिंहासन गाजै। अधर छत्र शिरऊपर राजै॥
चमर चहूँ दिशि चिकुर सुहाये। वेतपाणि कुण्डल छवि छाये॥
वलि वलि वरजत हैं सब काहू। कहत निकट कोऊ मति जाहू॥
दृगहिते सब करत जुहार। सन्मुख आदर सहित निहारै॥
मधुकर पिक बन्दी गुण गावैं। मागध मदन प्रशंसि सुनावैं॥
मान महीपति बल मथि मार्यो। युवती यूथ जीत गहि आन्यो

विनहिं पनच विनही कोदण्डा। स्वर शर भेद कियो ब्रह्मण्डा॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी। बोलत हैं सब जय जय बानी॥
नारि पुरुष जड़ जङ्गम जेते। किये सकल अपने वश तेते॥
थक्यो पवन जल अनल सिरानो। विधिकृत मेटि आपनो ठानो
निज निज ठकुरायनकी रेखा। बांधि सकल वश भये विशेखा॥

रच्यो राजसूयज्ञ रस, रास विपिन शुभधाम।
तहँ अधिकारी सांवरो, मोहन सुन्दरश्याम॥
सबहिनको सुखदेत, दान मान रस प्रेमको।
बढ्यो माधुरी हेत, परमानन्दित लोग सब॥

गावत गोपीसँग सब जुरली। बाजत मधुर मधुर सुर मुरली॥
राग रागिनी प्रगट दिखावैं। जे सब रूप अनूपम गावैं॥
अति प्रवीन पियको मन मोहैं। नृत्य करति सुन्दर सब सोहैं॥
नाचत कबहुँ श्याम अरु श्यामा। रीझत निरखि सकल ब्रजवामा।
लै गति चलत परस्पर दोऊ। सो छबि बरणि सकै कबि कोऊ॥
होड़ाहोड़ी रङ्ग बढ़ावैं। तड़प लेत शोभा अति पावैं॥
उरझी कुण्डल बेसरसों लट। पीत बसन बनमाल रही सट॥
उरझे मन मन बैनन बैना। लटकीली छबि उरझे नैना॥
नाचन युगल चपल गिरिधारी। प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी॥
उरझी गोपीजन लखि शोभा। नहिं निरवारि सकत मन लोभा
अति रसरङ्ग बढ्यो सुख भारी। थेइ थेइ बदति मुदति ब्रजनारी
लगन सकल रससिन्धु निहारैं। रीझि रीझि तन मन धन वारैं।

मगन सब रसरास सुखनिधि, हर्षि तन मन वारहीं ।
हिय हुलास न जाय कहि छवि, साजयुगल निहारहीं ॥
कीन्हों जु तप जिहिं हेतु वारह, मास सो पति पाइयो ।
तब मन्त्र कीनों व्याहको, सब सखिन मङ्गल गाइयो ॥
ललित कुञ्ज वितान सुभग, लतान मण्डप द्युति बनी ।
बहु रङ्ग वन्दनवार चहुं दिशि, चारु सुमनन छवि घनी ॥
अति विचित्र पवित्र यमुना, पुलिन शुभ वेदी रची ।
वर्णि न सकै छवि कौन विधि, तिहुँ लोक शोभाकी सची ॥
तहँ नँदनन्दन लाड़िलो, श्रीवृषभानुकुमारि ।
दूलह दुलहिनि राजहीं, शोभा अमित अपारि ॥
भरीं परम उत्साह, ललितादिक व्रजसुन्दरी ।
प्रीति रीतिकी चाह, लागीं करन विवाह विधि ॥

मोरमुकुट रचि मोर बनायो । सो शिर धर गिरवरधर आयो ॥
तन घनश्याम पीतपट सोहै । घन दामिनि ताके ढिग मोहै ॥
वनमाला गरमाहिं विराजै । निरखत इन्द्रधनुष द्युति लाजै ॥
ललित अङ्ग तनु भूषण जाला । कुण्डल झलकन नयन विशाला ॥
सकल कला गुण रूपनिधाना । त्रिभुवन सुन्दर परम सुजाना ॥
जाके मनमथ सैन बराती । फूले विटप सुमन बहुभांती ॥
करि कोलाहल पिक शुक बोलैं । मञ्जु मोर निर्तत सँग डोलैं ॥
नभ सुरपति दुन्दुभी बजावैं । नाचत किन्नर गंधर्व गावैं ॥
वर्षत सुरगण सुमन सुहाये । व्रजतिय करति सकल मन भाये ॥

कुँवरि लाड़िली सुभग सँवारी। गोरे अङ्ग चूनरी सारी॥
नखशिख मणि भूषण छबिछाजैं। मुखशोभा लखि उडपतिलाजैं
प्रीतिरीति जहँ हित करि गानी। सो शुभ घरी विधाता बानी॥

शुभ घरी सो बानी विधाता, हेत जिहि दृढ़ ब्रत लियो।
शरदनिशि पून्यो विमल शशि, निरखि अति प्रफुलितहियो
अधर मधु मधुपर्क कहिकै, पाणिग्रहण सु विधि करी।
पढ़त नभ विधि वेद वाणी, सुरन जय धुनि उच्चरी॥
तब अलिन हँसि गांठि जोरी, प्रेमगांठि हिये परी।
सहस सोरह सङ्ग सखियां, फिरति भांवरि रस भरी॥
बढ्यो अति आनन्द उरमधि, साध सब पूरण भई।
मदनमोहन लाल दूलह, राधिका दुलहिनि नई॥
निरखि देव वरषैं सुमन, हरष न हिये समात।
वृन्दावन रसरासमुख, लखि सुरवधू सिहात॥
हमसों यह सुख दूरि, कहत परस्पर सुरनगण।
क्यों उठि लागै धूरि, धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज॥

सोहति युवतिवृन्दमधि जोरी। नवनागर वर नवलकिशोरी॥
शोभा अमित पार को पावै। निरखत बनै कहत नहिं आवै॥
दूलह श्याम दुलहिनी राधा। रूपसिंधु दोउ परम अगाधा॥
रागभीनि रँगभीने दोऊ। अति आनन्द उमँगि सब कोऊ॥
प्रेमरङ्ग भीनी ब्रजनारी। निरखि युगल छबि होहिं सुखारी॥

भरी प्रीतिरस गारी गावैं । लखि लखि पिय प्यारी सुख पावैं ॥
हास विलास मोह उपजावैं । वार वार दम्पतिगुण गावैं ॥
विविध भांति दुन्दुभि नभ वाजैं । निरत कला रम्भादिक साजैं ॥
हंस मोर पिक चातक वोलैं । वन मृग निकट सङ्ग सब डोलैं ॥
वारति तिय भूषण हरषाई । वनके मृगन देति पहराई ॥
तब इक सखी भई नँदराई । इक वृषभानुरूप धरि आई ॥
अति हित मिले महर दोउ धाई । तब विनती वृषभानु सुनाई ॥

तव जोरि कर वृषभानु विनयो, सुनहु श्रीनँदरायजू ।
हम भये सकल सनाथ अव, सव कृपा तुम्हरो पायजू ॥
अति वड़े पुण्यन मिले तुमसे, सगे सुखके सिन्धुजू
शिरमौर गोकुलचन्द्र, आनँदकन्द सव जग वन्दजू ॥
तुम गेह मज्जन हेत कन्या, हम न तुमसमयोगजू ।
निज दास करि सव जानिये, वृषभानुपुरके लोगजू ॥
अष्टसिधि नवनिद्धि सम्पति, सकल सुखके खानजू ।
ऐसे विनय करि नन्दके, चरणन गहे वृषभानजू ॥
तव नन्द अति आनन्द भरि, वोले सहित अनुरागजू ।
सुनहु श्रीवृषभानुजू, तुम धन्य अति वड़भागजू ॥
तुमसे समुद्रन सो सुनहु, सम्वन्ध मांगि न पाइये ।
परम निर्मल यश तुम्हारो, लोक लोकन गाइये ।
अति नेह कान्हरसों तुम्हारो, प्रीति पहिली यह भई ।
दई कन्या करि कृपा, गुण रूप सुख शोभामई ॥

पूरे मनोरथ सकल अब हम, बड़े सब भांतिन भये।
वृषभानु नन्द अनन्द प्रमुदित, परस्पर चरणन नये॥
मन मन हरषित नागरी, नागर नवलकिशोर।
लखि रसरीति सखीनकी, प्रेमप्रमोद न थोर॥
विलसत अति आनन्द, ब्रजविलास ब्रजनागरी।
प्रीतिविवस ब्रजचन्द्र, को कहि सकै सुहागसुख॥

करत मनोरथ सब मन भाये। त्रिभुवनपति दूलह करि पाये॥
व्याहरीति सब करि ब्रजनारी। गावति यशुमतिको रस गारी॥
तब कङ्कण छोरन विधि कीनी। रचि पचि गाँठि चतुरतियदीनी
कहत श्याम सों छोरी कङ्कन। परमानन्द मुदित गोपीजन॥
बड़े चतुर तौ खोलहु गिरिधर। यह न होय धरिबो गिरिको कर
कै छोरी कै दोउ कर जोरी। दुलहिनिके परि पायँ निहोरी॥
बड़े कहावत हो ब्रजनाथा। काहे कँपन लगे दोउ हाथा॥
छोरहु वेगि कि सुनहु कन्हाई। पठवहु यशुमति माय बुलाई॥
दोउ परस्पर कङ्कण छोरैं। प्रेम उमँग उर हर्ष न थोरैं॥
पचिहारे कङ्कण नहि छूटत। निरखि हर्षि ब्रजतिय सुख लूटत॥
कहत सहाय करो जिन कोऊ। कङ्कण छोरहि आपहि दोऊ॥
दुलहिनि दूलह कङ्कण खोलैं। कै वृषभानु बबाको बोलैं॥

कमल कमल परशो जनो, पाणि लाड़िली लाल।
लखि कबिकुल साँचे लगत, रोम कटीली नाल॥

दूलह नन्दकुमार, दुलहिन श्रीराधा कुवँरि ॥
सन्तन प्राणअधार, अविचल यह जोरी सदा ॥

यह रसरासचरित हरि कीनो । व्रजयुवतिन वाञ्छित फल दीन
व्रजतियसखहित कुञ्जविहारी । करी मास निशि षट उजियारी
साध नहीं युवतिन मन राखी । श्री भागवत कह्यो शुक भाखी ॥
वेद उपनिषद साख बतावैं । ब्रह्मा शम्भु सहसमुख गावैं ॥
नारद शारद ऋषय अनन्ता । कहत सुनत गावत सब सन्ता ॥
सोरह सहस गोपसुकुमारी । तिनके सङ्ग लाल गिरिधारी ॥
कियो रासरस रहस अगाधा । पूरण करी सबनकी साधा ॥
हाव भाव रस रास विलासा । नैन सैन मुख वचन प्रकासा ॥
भुजभरि मिलन अधररस चाखन । नृत्य गानरस रुचि सम्भाषन॥
क्षण क्षण बढ़ति अधिक रसरीती । इह विधिरैनिकरत सुखबीती
भयो समय ब्राह्मो शुभ काला । रास रमत भइं श्रम सब बाला॥
तब श्री यमुना गे नँदलाला । सोहत सङ्ग सकल व्रजबाला ॥

सोहत सकल व्रजबालसँग, नँदलाल तब यमुना गये ।
शरदनिशि रसरास करि, पूरण मनोरथ सब भये ॥
जैसे महा मदमत्त गज, वरयूथ करिणिन सँग लिये ।
फिरत वन सर सरित क्रीड़त, निदरि अति निर्मल हिये ।
तिमि नन्दसुत जगनन्द आनन्द, कंद रसनिधि श्याम ये
मेटि श्रुतिमर्याद व्रजतिय, प्रेम सब आनँद भये ॥

रमत वृन्दावन यमुन रस,केलि अति सुख मानई।
दास ब्रजवासी प्रभूगुण, नाग नर सुर गानई॥
धनि वृन्दावन धन्य सुख, धन्य श्याम धनि रास।
धनि धनि मोहन गोपिका, नित नव करत विलास॥
नहिं सुरपुर समतूल, वृन्दावन सुख एक फल।
कहि कहि बरषैं फूल, सुरगण मन आनँद भरे॥

यमुनाजल क्रीड़त नँदलाला। सोलह सहस सङ्ग ब्रजबाला॥
मधि राजत दोऊ वहँ जोरी। दम्पति सुभग सांवरी गोरी॥
कोऊ कटिलौं जल सुख साजै। कोउ उर ग्रीवालौं छबि छाजै॥
ताकी उपमा कवि किमि कहहीं। अति आदरछबिपार न लहहीं
छिरकत पानि परस्पर सोहैं। नन्दनँदन पियको मन मोहैं॥
सलिल शिथिल सोहत नँदनन्दन। सुन्दर भाल कुमकुमा चन्दन
पँचरँग भयो यमुनजल जाते। छबिमय लहरि उठति है ताते॥
रूपछटासी तियगण जामैं। करत बिहार लिये घनश्यामैं।
एक एक अँग भरि भरि लेहीं। हास विलास करत छबि देहीं॥
एकन लै अथाह जल डारैं। सुख व्याकुलता रूप निहारैं॥
इक भाजत इक पाछे धावैं। एक श्यामढिग पकरि लयावैं॥
कण्ठ लगाय लेत पिय ताही। सो सुख कबिसों कह्यो न जाहीं॥

करत केलि यमुनासलिल, ब्रजललनासँग श्याम।
निशि श्रम मिटि आलस गयो, भये सुखी सुखधाम॥

अलख लखो नहिं जाय, अविगतिकी गति को कहै।
जोगी सकत न पाय, सो भोगी व्रजतियनको ॥
जलविहार विहरत सुख पाई। रास रङ्ग मनते नहिं जाई ॥
युवती मंडल करि कर जोरें। श्यामा श्याम मध्य करि खोरें ॥
वही भाव मनमें उपजावें। निरखि निरखि मोहन सुख पावें ॥
विहरत नारि हँसत नंदनन्दन। अङ्कम भरि भरि लेत अनन्दन ॥
प्यारी श्याम अञ्जली डारे। सो छबि तिय सुख पाय निहारे ॥
मानहु कमल और इन्द्रियवर। छिरकत है मकरन्द परस्पर ॥
जलक्रीड़ा सुख करत कन्हाई। वरषत सुमन देव झरि लाई ॥
लीलासागर परम अपारा। कवि किहि विधि करि पावै पारा ॥
करि जल सङ्ग केलि व्रजनारी। आये जलतट निकसि विहारी ॥
भीजे पट लपटे तनुमाहीं। पटअन्तर लट चीर चुचाहीं ॥
ठाढ़े यमुनातीर कन्हाई। पुलिन पवित्र परम छबि छाई ॥
निरखत निर्मल तनुकी शोभा। अरस परस विहँसत मनलोभा
तब इक तरुको विहँसिकै, आयसु दीनो श्याम।
नाना भूषण वसन बर, तिन वर्षे अभिराम ॥
निज निज रुचि अनुहार, लै लै व्रजकी सुन्दरिन।
कीनो नवल शृंगार, उर आनन्द नहिं जाय कहि ॥
करि शृंगार तनु नवलकिशोरी। हरि सन्मुख ठाढ़ीं सब गोरी ॥
निरखि श्यामछबि मन ललचाहीं। विदा करत घरकोसकुचाहीं
हँसि बोले तब मदनगुपाला। जाहु सदन अब सब व्रजबाला ॥

अति आदर दै दै सुखदाई। पाणि परसि सब सदन पठाई॥
निशिसुख टरत न काहू मनते। चलीं सदन सब वृन्दावनते॥
अति आनन्द रह्यो उर भरिकै। भांवरि दै आई सँग हरिकै॥
मनके सफल मनोरथ कीने। नन्दसुवन हित पति करि लीने॥
गई सदन सब हर्ष बढ़ाये। घर घर लोगन सोवत पाये॥
जगस्वामी हरि यह मति ठानी। ब्रज युवतिन सबहिन घर मानी॥
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे। निज निज कारजमें सब लागे॥
नन्दधाम गये नन्दके लाला। काहू नहिं जान्यो यह ख्याला॥
यह रहस्य लीला गिरिधारी। सन्तजनन मन आनँदकारी॥

यह रहसलीला श्यामकी, सब सन्त सुर मुनि भावनी।
ज्ञान ध्यान पुरान श्रुति मति, सार परम सुहावनी॥
यह मंत्र यंत्र अनन्त ब्रतफल, ध्यान दम्पतिको रहै।
भाव करि नित भाव मन, बिनु भाव यह सुखह्नी लहै॥
धन्य श्रीशुकदेवमुनि, भागवत यह रस गाइये।
निगम नेति अगाध श्री गुरुकृपाबिन नहिं पाइये॥
सरुचि कहि जे सुनैं सीखैं, प्रीति करि जे गावहीं।
ऋद्धि सिधि सब कह गनाऊं, भक्ति अनुपम पावहीं॥
उर बढ़ै रसनेम दृढ़ पद, प्रेम राधा श्यामको।
अहहि अचल निवास वृन्दाविपिन, घन निज धामको॥
यहै आशा राखिकै उर, दास ब्रजवासी कही।
कृपा कीजे श्याम श्यामा, शरण पदपङ्कज गही॥

चरित ललित गोपालके, रास विलास अनेक।
कापै बरणो जात सब, इतनो कहां विवेक॥
निकसो तरै अघाय, ज्यों पिपीलिका सिन्धुते।
कह्यो यथामति गाय, तिमि व्रजवासी दासहू॥

---

## मान चरित्र लीला।

नित्य श्याम श्यामा सुखकारी। करत नित्य नव चरित विहारी
निर्गुण निर्विकार अविनासी। भक्त मनोरथ सदा विलासी॥
तिन वृन्दावनधाम सुहायो। नित्य रासरस वेदन गायो॥
भक्तन हेतु विविध तनु धारैं। भक्तन हित लीला विस्तारैं॥
सदा भक्तवश कृष्णकृपाला। दयासिन्धु प्रभु दीनदयाला॥
शरदरैनि रसरास उपायो। युवतिन प्रति निज रूप बनायो॥
सफल मनोरथ सबको कीनों। पति हित करि सबको सुख दीनों
तब कृपालु उरमें यह आनी। सदा भक्त वाञ्छित फलदानी॥
गोपिन गर्व रासमें कीनों। सो मैं अन्तर करि हरि लीनों॥
रही साध इनके मनमाहीं। हमको श्याम मनायो नाहीं॥
ते व्रजभक्त परम हित मेरो। करौं साध पूरण इन केरो॥
अब इक मानचरित्र उपाऊं। पांयन परि परि सबन मनाऊं॥
करि विभेद रसरीतिमें, देहुं मान उपजाय।
इनके सुखमण्डित वचन, कहवाऊं सुखदाय॥

सकल गुणनके धाम, परम विचक्षण रसिकमणि।
नवरससागर श्याम, एक प्रेमरसवस सदा॥
श्रीराधा मनमोहनि प्यारी। नवनागरि नवरूप उजारी॥
रास नृत्य रिझये गोपाला। ता रस मगन फिरत नँदलाला॥
करत भवन शृङ्गार पियारी। औचक तहां गये गिरिधारी॥
देखि प्रिया पियको हँसि दीनों। हर्षि श्याम अङ्कम भरि लीनों
रहे थकित छबि अङ्ग निहारी। जात कमलमुखपर बलिहारी॥
यहि अन्तर पियके उरमाहीं। देखी तिय निज तनु परछाहीं॥
झझकि उठी प्यारी भइ न्यारी। अति सनेहभ्रम सुरत बिसारी॥
और नारि पियके उर जानी। आपुन विषे प्रीति घटि मानी॥
राखत सदा हियेमें याही। ल्याये मोहिं दिखावन ताही॥
कियो मान यह भ्रम उपजाई। कहत वचन पियसों अनखाई॥
अब जानी पिय बात तुम्हारी। ऊपर हीकी प्रीति हमारी॥
हमसों मुँहकी बात मिलावत। यह प्यारी उरमाहिं बसावत॥
धनि धनि याको भाग्य है, बसति तुम्हारे हीय।
याही सों हित राखिये, अब मनमोहन पीय॥
भली करी सुख मानि, मोहिं दिखाई आनि कै।
यह प्यारी सुखदानि, उरते जिन न्यारी करो॥
ऐसे कहि मुसकाय किशोरी। कछु रिसकरि जिय भौंहसिकोरी
चकित श्याम लखि सन्मुखबानी। कहत कहा नागरी सयानी
सांच कहति कैधौं करि हांसी। कत रिसकरि तिय होतउदासी॥

समझो नहीं कहा जिय आई। झझकि उठी कै अति भ्रमपाई॥
हँसि भुज गहन लगे मनमोहन। बैठत क्यों नहि ममप्रिय गोहन
मोहिं छुओ जिन दूर रहो जू। बसत हिये किन ताहि गहो जू॥
तुम्हीं चतुर अरु सबै सयानी। हम दासी अरु ये पटरानी॥
उरमें मनभावती बसाई। हँसी करनको हमैं बताई॥
लखि लखि प्रियावदन सुखकारी। हँसत मनहिमन कुञ्जविहारी
कहति कहा भामिनि भइ भोरी। तोबिन उर को बसत किशोरी
तू मम श्रवण नयन सुखदानी। जीवन प्राण अधार सयानी॥
वृथा क्रोध कर जियमें आनै। मेरो कह्यो नहीं क्यों मानै॥

सुनो श्याम हिरदै बसत, सो छिपिये न छिपाय।
ज्यों शीशीके माहि जल, परगट परत लखाय॥
बातैं कहत बनाय, यह देखत हमसों हँसत।
जैहै कहुँ अनखाय, उरते तब पछितायहौ॥

जो वह कहै करो तुम सोऊ। वह नागरि तुम नागर दोऊ॥
मतिहिं सिखावो मोहिं कन्हाई। भलो करी लै सौत दिखाई॥
जाहु चले अब मैं सुख पायो। ऐसे कहि मन मान बढ़ायो॥
रिस करि मोन रही गहि प्यारी। देत मनहि मन वाको गारी॥
शोचत श्याम देखि मनमाहीं। बोलि सकत नहिं प्रियहि डराहीं
कहत वृथा जिय मान न कीजै। नहि अपराध जान जिय लीजै
क्यों रिस करति प्रिया मनमाहीं। मेरे उर तेरी परछाहीं॥
यह सुनि कुवँरि राधिका रानी। बोली रिस करि पियसों बानी॥

कहा बनावत बातैं हमसों। जाहु चले बोलों नहिं तुमसों॥
यह कहि ओट गई ह्वै प्यारी। भये बिरहबश तब गिरिधारी॥
अति व्याकुल तन मन अकुलाहीं। बार बार शोचत मनमाहीं॥
गयो सरोजबदन कुम्हिलाई। तहां एक सखि दूती आई॥

सो हरिसों बूझत भई, कहहु न मोहि सुनाय।
आज दशा कैसी लखति, बैठे कहा गँवाय॥
क्यों तनु रहे भुलाय, अति व्याकुल देखत तुम्हैं।
रह्यो वदन कुम्हिलाय, ऐसो शोच कहा पर्‍यो॥

बोले श्याम सखी हित जानी। विरहबिकल कहि जात न बानी॥
कियो मान वृषभानुकिशोरी। मैं कछु नहि अपराध कियो री॥
लखि मेरे उर निज परछाहीं। रूसि रही करि कोप वृथाहीं॥
मैं कहिकै बहु भांति मनाई। नहिं प्रतीति राधा उर आई॥
बिन समुझे इतनो हठ कीनो। तबते मोहि मदन दुख दीनो॥
ऐसे कहि शोचत बलबीरा। लेत नयन भरि सांस अधीरा॥
परम चतुर दूतिका सयानी। बिरहविकलता प्रियजिय जानी॥
कह्यो धीर धरिये बनवारी। चलिये बनको कुञ्जबिहारी॥
मैं प्यारी लै तुमहि मिलाऊं। आज कहा तौ तुमसों पाऊं॥
गई सदनते लै बनधामहिं। तहँ बैठारि धीर धरि श्यामहिं॥
मैं लै आवति राधा प्यारी। कितक बात यह सुनहु बिहारी॥
मेरे आगेकी वह बारी। कहा मान करिहै सुकुमारी॥

ऐसे कहि चातुर अली, आतुर लखि घनश्याम ।
श्रीवृषभानुलली जहां, चपल चली व्रजधाम ॥
मन मन रचत सयान, नई बनाऊं बात इक ।
अवहि छुड़ाऊं मान, मोसों धौं कहिहै कहा ॥

हरिसों रूसि मान करि बैसी । अवहीं कहा भई यह ऐसी ॥
करत विचार यहै मनमाहीं । गई सखी राधाके पाहीं ॥
कुँवरि किशोरी परम सयानी । मुख देखतहि दूतिका जानी ॥
सहजहि बोलि ताहि ढिगलीन्हीं । सहजहि कह्योमयाकिलकीन्हीं
तुरतहि कहि तब सखी सुनायो । तुमको बन घनश्यामबुलायो ।
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई । काहेको मुहि श्याम बुलाई ॥
तू आई याहीके लीन्हें । मैं अब श्याम भले करि चीन्हें ॥
कहा कहौं तोको री आली । तुहूँ भली अरु वे वनमाली ॥
उनकी महिमा कहत न आवै । अब इक नई नारि मन भावै ॥
ताको लै उरमाहिं बसाई । तोहिं उहांते टारि पठाई ॥
आज कहा कछु कलह भयो री । कैधौं कछु तैं मान ठयो री ॥
तबहि आज अनमनी बखानी । यह तौ कछु मैं बात न जानी ॥

मोसों नहिं कछु हरि कह्यो, सहज पठाई लैन ।
कहधौं परी पुकार वहँ, तुम चलि देखहु नैन ॥
कहत सुनाय सुनाय, लै लै तेरा नाम सब ।
तैं धौं लियो छुड़ाय, कहि काके काके गथहि ॥

काहे को गय लियो परायो। अपनो नाम कुनाम धरायो॥
डारि देहु जाको जो लीनो। तेरे बहुत दईको दीनो॥
तबहीं ते उन शोर लगायो। ता कारण हरि तोहि बुलायो॥
हरि तेरी दिशिते भगरे री। तू कत उनसों रोष करे री॥
यह कछु नोखी बात सुनाई। मैं काको धन लियो छिपाई॥
काहेको हरि भगरत माई। इतौ मया मोप कहँ आई॥
जैसे हैं तैसे हरि जाने। नहि उनके गुण परत बखाने॥
बैठ किधौं तू घर जा अपने। मैं उनपै अब जाउँ न सपने॥
हौं कह तोहि मनावन आई। मान करो तुम और सवाई॥
परधन लै सबको ब्रज बैठो। कहा करत बातैं यों ऐंठो॥
देति जवाब सबनि किन जाई। मोपै कह इतनो सतराई॥
तबते सबसों लरत कन्हाई। जब मैं तोहि बुलावन आई॥

बार बार कह कहत री, तू मोको डरपाय।
मैं नहि काहूको लियो, झूठहि दोष लगाय॥
लरत कौनसों श्याम, कौने करी पुकार अब।
कहै न तिनको नाम, सांच तबहि मैं मानिहौं॥

तब बदिहौं ऐसे कहि हेरो। श्याम निकट बैठे जब बेरो॥
कहँ लगि सबके नाम बताऊं। एक एक करि तोहि गिनाऊं॥
नभ जल धरणि बनहुमें आये। कहँ लगि मोते जात सुनाये॥
जो नहि तिनको गथहि चुराई। तौ तू कत बन चलत डराई।
परो बानि तोको यह कैसो। भलो कहत अलि लगति अनैसो॥

शठाम विना क्यों न्याव चुके री। तिनहींसों तू रोष करै री॥
कोटि करो एकै पुनि ह्वै हो। वे अरु तुम कछु जियके द्वै हो॥
मान कह्यो चलु श्याम बुलाई। श्रवण लागि हरि मोहिं पठाई॥
जिनको यह सब साज तुम्हारे। ते जन हरिपहँ जाय पुकारे॥
इन्दु कहत मो वदन विगोयो। अलिकुल अलकनको दुख रोयो॥
हरिण मीन छवि दृगन दुराई। खञ्जनहू तहँ देत दुहाई॥
शुकको छवि नासा हरि लीनी। बैनन करी कोकिला हीनी॥

अधर विम्ब दाड़िम दशन, लूटे कण्ठ कपोत।
लई तरणि छवि छीनिकै, तरल तरौना जोत॥
चक्रवाक कुच दोय, कटि हरि कदली जङ्घ लिय।
गज मराल गति जोय, चरण पाणि पङ्कज हरे॥

ये सब हरिसों करत लराई। तैं जु करी इनसों अधिकाई॥
अति अनीति लखि कुँवरकन्हाई। पठई मोहि लेन तोहि आई॥
प्रतिउत्तर अपनो करु चलि कै। इहाँ रही कह बैठि मचलिकै॥
सुनि पियके गुण हिय हँसिदीने। कछु सकुची मन कान जुलीने॥
चतुर सखी जियकी सब जानी। तबहीं हरषि कही यह बानी॥
आनि कहा अब तोहि परीरी। जब तब लखि निज छांह डरीरी॥
तादिन दर्पण लखि भ्रमकीनो। सो दृगमूँदि मेटि हरि दीनो॥
आज देखि पिय उर निज छाहीं। कियो इतोहठ कुवँरि वृथाहीं॥
यह सुनि समुझि मनहिं सकुचाई। सहचरि कण्ठ विहँसि लपटाई॥
रसकरि तुरत मान बिसरायो। सुनि व्रजधाम श्याम सुख पायो॥

हँसिकै कह्यो सखीसों जारी। तू हरि सों कहि आवत प्यारी ॥
मैं अंग भूषण बसन संवारी। आवति वनहिं जहां वनवारी ॥

यह सुनि हर्षी दूतिका, गई जहां घनश्याम।
अति व्याकुल तनु सुधि नहीं, विह्वल कीनों काम ॥
बैठत उठत अधीर, क्योंहू सुख पावत नहीं।
बढ़ति विरहकी पीर, श्रीराधा राधा रटत ॥

राधाविरहविकल गिरिधारी। कहूँ माल कहुँ मुरली डारी ॥
कहूं मुकुट कहुँ पीतपिछोरी। नहि कछु सुरति भई मति भोरी
कबहुँ मूँदि दृग ध्यान लगावैं। कबहूं प्यारीके गुण गावैं ॥
कबहूं लोटत कुञ्जनमाहीं। कबहूं बैठि द्रुमनकी छाहीं ॥
टाढ़ टेकि कबहु द्रुमडारी। तकत प्रियापथ पलक बिसारी ॥
देखि दशा दूतिका सयानी। कही श्याम सों आतुर बानी ॥
काहेको कदरात विहारी। मैं ल्याई वृषभानुदुलारी ॥
विरहविषाद दूरि कर डारो। नेक धीर अपने मन धारो ॥
सुनि प्यारीको नाम कन्हाई। मिले दूतिकासों उठि धाई ॥
कहां प्रिया कहि अति अकुलाये। नयनसरोज नीर भरि आये ॥
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी। आवत प्रिया अबहिं वनवारी ॥
मैं जु प्रतिज्ञा तुमते कीनी। विधना आज राखि सो लीनी ॥

अब अपने मन हर्षि करि, दूरि करो सन्देहु।
आवति है वृषभानुजा, भुज भरि अङ्कम ले ॥

सुख शोभाकी खानि, नहीं कुँवरि वृषभानुसी ।
तुम सम धन्य न आन, बड़भागिन तुम वश भये ॥
रसिक पुरन्दर प्रभु सुखदानी । सुनत सिहात दूतिका बानी ॥
पुलकित अङ्ग धीर नहिं धारैं । पुनि पुनि प्यारीपन्थ निहारै ॥
निज कर सुमन सुगन्ध लगावैं । कुञ्जभवन रुचि सेज बनावैं ॥
अति कोमल तनु जान पियारी । सेज कली चुनि करत नियारी॥
जो द्रुम लता लटकि तनु लागैं । तें ऊपर धरि मन अनुरागैं ॥
प्रेम प्रीति रसवश जगस्वामी । करत चरित मानहुँ अति कामी॥
देखि श्यामकी आतुरताई । हँसति सखी मन हर्ष बढ़ाई ॥
जानि प्रेमवश हरि सुखरासा । गई बहुरि प्यारीके पासा ॥
करि श्रृङ्गार नवल तनु गोरी । राजत श्रीवृषभानुकिशोरी ॥
सहज रूपकी राशि कुमारी । भई अधिक छवि भूषण भारी ॥
अङ्ग अङ्ग छविपुञ्ज विराजें । निरखि मदन तिय कोटिक लाजैं ॥
त्रिभुवनकी छवि मनहुँ बटोरी । विधि कीन्ही वृषभानुकिशोरी ॥
देखि रूप मन मगन सखि, बोली वचन सँभार ।
धन्य धन्य राधाकुवँरि, तुव गुण रूप अपार ॥
तो समान नहिं तीय, तिहुँ पुर सुन्दरि नागरी ।
बसत सदा पिय जीय, तू मोहन मनभावती ॥
चलहु बेगि अब सहित हुलासा । लागि रही पियकी इत आसा ॥
तेरोइ नाम जपत मन लाई । गावत तुव गुण कुवँर कन्हाई ॥
तुम तनु परस पवन जो जाही । उठि आतुर परिरम्भत ताही ॥

तेरो रूप आनि उर अन्तर। धरत ध्यान दृग मूंदि निरन्तर॥
रमौ श्यामतन मन तू जाते। राधारमण नाम है ताते॥
सुनि सहचरिके मुखकी बानी। पुलकि प्रफुल्लित मृदुमुसकानी
पियको प्रेम समुझि सुख पाई। चलीं मिलन गजगति इषाई॥
मुखशशि कनकलतासी गोरी। बालहरण छबि नयन किशोरी॥
भूषण वसन अनूप सुहाई। अङ्ग अङ्ग शोभित छबि छाई॥
अङ्ग सुगन्ध मनोहरताई। भँवरभीर चहुं ओर सुहाई॥
हँसि हँसि कहत सखीसों बातैं। झरत सुमन जनु रूपलतातें॥
ऐसे करत प्रकाश पियारी। गई जहां पिय कुञ्जविहारी॥

परम प्रेम दोऊ मिले, श्रीराधा नँदनन्द।
गुणआगर नागर युगल, छबिसागर सुखकन्द॥
जो प्रभु परम अपार, वेद भेद जानत नहीं।
सो ब्रज करत विहार, बर्णि पार को पावही॥

कुञ्जन मञ्जु सुफल छबि छाई। भँवरगुञ्ज सुखपुञ्ज सुहाई॥
फूलन सेज रुचिर रचि कीनी। चित्र विचित्र रङ्गरस भीनी॥
फूले खगगण करत कलोलैं। जहँ तहँ मधुर मनोहर बोलैं॥
फूली वृन्दावन तरु डारी। तन मन फूले पिय अरु प्यारी॥
सहचरि सहित मनोहर जोरी। राजत युगल किशोर किशोरी॥
हाव भाव करि रस उपजावैं। हास विलास करत सुख पावैं॥
सखी कह्यो तब कै अब नीके। सकुचि हँसी प्यारीसँग पीके॥
नयनकोर पियको हिय ताक्यो। तबहिं श्याम पीताम्बर ढांक्यो॥

यह छवि निरखि सखी बलि जाई । अचल रहौ जोरी सुखदाई
धनि राधा धनि कुंवर कन्हाई । धन्य मान रस केलि सुहाई ॥
धन्य कुञ्जवन धनि महि पावन । धन्य लता द्रुम सुमन सुहावन
धन्य सखी धनि सब व्रजवासी । तिनसँग विहरत प्रभु सुखरासी

गये श्याम श्यामा सदन, सखी सहित सुख पाय ।
मानचरित रसकेलि करि व्रजवासी बलि जाय ॥
मानचरित अनूप, जे सुभाव गावहिं सुनहिं ।
ते न परैं भवकूप, राधाकृष्णप्रतापते ॥

करत चरित नाना गिरिधारी । सुखसागर भक्तन हितकारी ॥
जाको शिव अज ध्यान लगावैं । सनकादिक मुनि जपकर ध्यावैं
जा प्रभुको यश परम विशारद । गावत अहिपति नारद शारद ॥
अखिल अनीह अकाम अभोगी । योग समाधि न पावत योगी ॥
सो प्रभु सबके अन्तर्यामी । युवतिन प्रेम भक्तिवश कामी ॥
बहु नायक ह्वै करत विहारा । व्रजपुर घर घर नन्दकुमारा ॥
रसलीला नाना उपजावैं । काहु रुठावैं काहु मनावैं ॥
आरस परस तिय सब यह जानैं । हरिहैं सबके धाम लुभानैं ॥
अवधि बदत काहूसों जोई । काहूके घर बसत कन्हाई ॥
सांझ कहत जाके घर आवन । जात प्रात ताके मनभावन ॥
व्रजगोपी जिनको पति जाने । कोउ आदरहिं कोउ अपमाने ॥
खण्डित वचन सुनत सुखदाई । यह लीला हरिके मन भाई ॥

ब्रजमें करत विहार हरि, ब्रजबनितनके सङ्ग।
अखिल काम पूरण करण, भरे प्रेम रसरङ्ग॥
कोटि काम कमनीय, सुन्दर सुखसागर नवल।
रमणीमन रमणीय, ब्रजभूषण ब्रजलाड़िलो॥

ब्रजबीथिन नँदनन्दन ठाढ़े। अङ्ग अङ्ग सुन्दर छबि बाढ़े॥
ललता आइ गई तिहिं पैंडे। मनमोहन रोको मग बैंडे॥
देखत छबि ललता ललचानी। बोली बिहँसि श्यामसों बानी॥
कत रोकत मगमें बिन काजे। जाहु चले जितहो हित साजे॥
झूंठहि दूतौ सनेह जनावो। कबहुं हमारे धाम न आवो॥
हरि हँसि कह्यो आज निशि ऐहैं। तेरी सौं हम अनत न जैहैं॥
ऐसे कहि मधुरे मुसकाई। छोड़ि दई मग छैल कन्हाई॥
ललता गई सदन सुख मानी। ऐहैं श्याम आज यह जानी॥
सांझहिते हरि पंथ निहारै। धाम आपने सेज सँवारै॥
भूषण वसन नवल तनु साजैं। खञ्जनसे दृग अञ्जन आंजैं॥
सुमन सुगन्ध अनूप मँगाई। रचि रुचि राखति माल बनाई॥
कबहूं ठाढ़ी होति दुवारे। कबहूं लखति गगनके तारे॥

कहति श्याम आये नहीं, होन लगी अधरात।
गये आश दे मोहि पुनि, कहा धरी जिय बात॥
वे बहुनायक श्याम, किधौं लभाने अनत कहु।
मन मन शोचत बाम, कारण कह आये नहीं॥

कैधौं कछु ग्वालहि चित दीनों । कैधों मातपिता डर कीनों ॥
कैधौं सोय रहे अलसाने । कैधौं घर आवत सकुचाने ॥
ऐसे सोचत रैनि विहानी। जहँ तहँ वोले तमचुर वानी ॥
तव वैठी अपनो मन मारी। कछू शोच कछु रिस उर धारी ॥
हरि निशि गये सखी शैलाके। सुन्दरश्याम धाम लीलाके ॥
तहँ सुख सोवति रैनि गमाई । प्रात होत ललता सुधि आई ॥
चले सहज शैलासों कहि के। जिय सँकोच ललताको गहि कै
आये ललता सदन विहारी । चितै रही मुखकी छवि प्यारी ॥
अञ्जन रेख अधरपर राजैं। पीक लीकनयनन छवि छाजैं ॥
सोहत ललित कपोलन नीको । लाग्यो अञ्जन काहू तीको ॥
तुरत मुकुर लै उठी सयानी । दिखरायो मुख सन्मुख आनी ॥
कहति देखि निज वदन सुधारो । लाल कहूं तब प्रात सिधारो ॥

पीक पलक अञ्जन अधर, देखि श्याम सकुचाय ।
रहे निचौहैं नयन करि, वचन कह्यो नहिं जाय ॥
ज्यों ज्यों सकुचत श्याम, त्यों त्यों हठ नागरि करत ॥
देखहु छवि अभिराम, हाहा मुख कत फेरियत ॥

सकुचत कहा वोलिके सांचे । आये तो मो गृह रँग राचे ॥
रैनि नहीं तो प्रातहि आये । धनि धनि वह जिन स्वांग बनाये॥
तुम जिन मानहु विलग कन्हाई । मैंतो करति अनन्द वधाई ॥
क्यों मोहन दर्पण नहिं देख्यो । सूधे मोतन काहे न पेख्यो ॥
ठाढ़े कत वैठत क्यों नाहीं । कहु कछु चूक परी हमपाहीं ॥

रहे मूक ह्वै कहा ठगेसे। सोहत हो अलसात जगेसे॥
उत्तर मोहिं देत क्यों नाहीं। मैं तबहीं ते बकत वृथाहीं॥
तब चितये दृगकोर कन्हाई। भाव अतिहि आधीन जनाई॥
ग्वालि प्रवीण जानि सब लीनों। तुरत रोष उरते तजि दीनों॥
हँसि करि मोहन कण्ठ लगाये। भले श्याम ऐसेहू आये॥
श्रमित अङ्ग जागे निशि जाने। अति सनेह मनहीं मन माने॥
अङ्ग सुगन्ध मर्दि अन्हवाये। बसन आभूषण दे बैठाये॥

रुचि भोजन दै सेजपर, पौढाये घनश्याम।
रसवश करि नव नागरी, किये सफल मन काम॥
सुर मुनि सकत न पाय, प्रभु ब्रजबासी दासको।
प्रेम प्रीतिवश आय, सो गोपीवल्लभ भये॥

कहत सौंह करि रसिकबिहारी। तुम प्रिय मोहिं प्राणते प्यारी॥
सदा बसत तुम मो मनमाहीं। तुम बिन लहत अनत सुख नाहीं॥
ऐसे कहि अति प्रीति जनावैं। चतुर वचन कहि चितहि चुरावैं
यहै भाव युवतिनसों भाखैं। सबहिनके मनकी रुचि राखैं॥
कुल मर्य्याद लोकडर त्यागी। सब गोपी हरिसों अनुरागी॥
बिन देखे रसभाव बढ़ावैं। नयनन देखतही सुख पावैं॥
ब्रह्म सनातन जग सुखकारी। यह लीला ब्रजमें विस्तारी॥
ललिताको सुख दे सुखसागर। चले सदन अपने नटनागर॥
उतते मग आवति चन्द्रावलि। देखि रही सुन्दरि छबि सांवलि
बने विशाल कमलदल लोचन। चितवनि चारु मारमदमोचन

इत मुसकाय श्याम तेहि हेरी। खोरि साँकरी भइ भटभेरी॥
बिहँसि कह्यो चन्द्रावलि प्यारी। कहां रहत हरि हमहिं बिसारी

तुम कैसे बिसरन प्रिया, हँसि बोले घनश्याम।
आज आय सुख लेहिंगे, रैन तुम्हारे धाम॥
सुनि हरषी जिय बाम, चली सदन मुसकायके॥
लखि सुख पायो श्याम, मुदित गये अपने भवन।

चन्द्रावलि मन अधिक उछाहू। फूली फिरत कहत नहिं काहू॥
सुखके करत मनोरथ नाना। वासर कलप समान बिहाना॥
भये अस्त रवि निशि नियरानी। उड़गण ज्योति देखि हरषानी
हरि सुषमाके भवन सिधाये। चन्द्रावलि के भवन न आये॥
सूने घर देखी सो ग्वाली। आतुर गये तहां बनमाली॥
सुषमा लखि हरिको सुख पायो। अतिही आदर करि बैठायो॥
कोककला कोविद वर नारी। हाव भाव मोहे गिरिधारी॥
बसे तहां मोहन सुख पाई। चन्द्रावलिकी सुरति भुलाई॥
इत चन्द्रावलि सेज सँवारै। वार वार हरिपन्थ निहारै॥
कबहुं भवन कबहुं अँगनाई। कबहूं रहति द्वार टक लाई॥
कबहुं सोच करत मनमाहीं। आवहिंगे मोहन कै नाहीं॥
कबहुं आलस कछु जिय जानी। धोवति है नयनन ले पानी॥

कबहुं कहत हरि आय हैं, उरमें हर्ष बढ़ाय।
कबहुं बिरहव्याकुल जरति, अति आकुल अकुलाय॥

कबहुं कहत सुख पाय, बहु रमणीरमणीय पिय॥
बसे अनत कहुँ जाय, मोसों झूठी अवधि वदि॥
ऐसेहि ऐसे रैनि बिहानी। सुनी श्रवण वायसकी बानी॥
भई काम दुख वाम उदासी। जाने श्याम कपटकी रासी॥
कहति वाम कर मनके माहीं। श्याम नाम खोटे सब आहीं॥
कोकिल श्यामश्याम अलि देखौ। श्यामजलद अहिश्यामविशेखौ
तिनहींकी करनी हरि लीनी। मोसों प्रीति कपटकी कीनी॥
ऐसे क्रोधविरह सब बाला। सुषमा सदन गये नँदलाला॥
प्रात भये उठि चले तहाँते। आलस भरे नयन रँगराते॥
चंद्रावली सदन चलि आये। ठाढ़े अजिर रहे सकुचाये॥
मन्दिरते रिसभरी गुवारी। नखते शिखलौं रही निहारी॥
मन मन कहत कुटिल अति गिरिधर। प्रात होत आये मेरे घर॥
कियो मान मनमें अति भारी। आंगनमें ठाढ़े बनवारी॥
और नारिके चिह्न बिलोकी। रोकति रिसहि रुकत नहि रोकी॥
तब बोली करि मान तिय, कहा काम मम धाम।
ताहीके घर जाइये, बसे जहां निशि श्याम॥
प्रात दिखावन मोहि, आये रङ्ग बनायकै।
मैं सुख पायो जोहि, भले बने हो लाल अब॥
बिन गुन शोभित है उर माला। बीच रेख सुखचन्द्र रसाल
अधर दीपसुतरेख सुहाई। नागबेलि रँग पलक रँगाई॥
लटपटि पाग महावर लाये। आलस नयन अरुण जल छाये।

चन्दन भाल मिल्यो कहुं वन्दन । यह छवि अधिकवनीनँदनन्दन
सन्तत गाढ़ वर पीठ धरे हो । जान्यो नागरि अङ्ग भरे हो ॥
इतनेपर डाहन मुहिं आये । सौंह करन को दूत उठि धाये ॥
जाउ तहीं जासों मन मान्यो । जैसे हो तैसे मैं जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो तब लाल बिहारी । तुमते और कौन मुहिं प्यारी ॥
तुम बिन मोहि कहूँ कल नाहीं । बसत सदा मन तेरेमाहीं ॥
यह चतुरई कहां पढ़ि आई । चीन्हे हो गुणराशि कन्हाई ॥
यह कहि गई भवनमें भामिनि । रीझे श्याम देखि छविकामिनि
सन्मुख जाय भये पुनि ठाढ़े । द्वारकपाट दिये पुनि गाढ़े ॥

पौढ़ि रही तिय सेजपर, वदन मूंदि अनखाय ।
हरितन पुनि चितयो नहीं, उरमें प्रेम बढ़ाय ॥
प्रभुगति लखी न जाय, जो चाहें सोई करें ।
पौढ़ि रहे सँग जाय, पौढ़ी तिय जहँ मान करि ॥

जो देखे तो सङ्ग कन्हाई । चली बहुरि तिय उठि झहराई ॥
खोलि किवार अजिरमें आई । देखे ठाढ़ तहां कन्हाई ॥
विनय करत नयननको सनन । चकित भई देखत तिय नैनन ॥
भीतर भवन गई पुनि प्यारी । तहां अङ्क भरि लई मुरारी ॥
तब नागरि रिस सबै भुलाई । चेटक करि वश करी कन्हाई ॥
मान छुड़ाय हुलास बढ़ायो । तियको सुख दीनो सुख पायो ॥
तब निज धाम गये गिरिधारी । चन्द्रावलि उर आनँद भारी ॥
तहां सखी दश पांचक आई । चन्द्रावलि बैठी जेहि ठाई ॥

औरै वदन और अँग शोभा। निरखि रही दृग द्वै मन लोभा॥
कहत पिया कह हर्ष वढ़ायो। कहै न लूट कहूँ कछु पायो॥
क्यों अँग शिथिल मरगजी सारी। यह छवि कही न जाय तुम्हारी॥
हमसों कहा दुरावति प्यारी। हम जाने तोहि मिले विहारी॥

चन्द्रावलि करि चतुरई, ज्वाब सखिन नहिं देह।
रही मूँदि मुख मन्द हँसि, भीजी श्याम सनेह॥
रह्यो ध्यान उर छाय, वह लीला बिसरै नहीं।
मुखसों कह्यो न जाय, गूँगेको गुड़सो भयो॥

तब बोली बूझति कइ आली। युवतीमन मोहन वनमाली॥
है लीला अद्भुत सब जिनकी। कही न जात बात सखि तिनकी॥
हाहा कहि चन्द्रावलि हमसों। हमहूं सुनें श्यामगुण तुमसों॥
कै तोहिं मिले यमुनके तीरा। कै तोहिं मिले भवन बलवीरा॥
तब चन्द्रावलि गदगद वानी। हर्ष सहित हरि कथा बखानी॥
सुनि हरिचरित ललित सुखकारी। भई प्रेमवश सब ब्रजनारी॥
चन्द्रावलि धनि धन्य कही तब। कहन लगी हरिके गुणगण सब॥
नन्दनँदन सब लायक हैं री। सबहिनके सुखदायक हैं री॥
बसे रैनि काहूके जाई। काहू देन प्रातसुख आई॥
काहूको मन आय चुरावें। काहूसों अपनो मन लावें॥
काहूके जागत सिगरी निशि। काहूको उपजावत हैं रिशि॥
ब्रजवासी प्रभुके मन भावें। तैसेइ तैसे चरित उपावें॥

यह लीला आनँद भरी, सकल रसनको सार।
भक्तन हित हरि करत हैं, गाय तरत संसार॥
घर घर करत विहार, व्रजयुवतिनके सङ्ग हरि।
गावति हैं श्रुति चार, व्रजवासी प्रभुके यशहिं॥

श्रीराधा वृषभानुदुलारी। नन्दनँदन पियकी अति प्यारी॥
सहज रहै अपने मनमाहीं। नन्दसुवन निशि अन्त न जाहीं॥
नन्दभवन कै मेरे गेहा। रहैं सदा चित यही सनेहा॥
श्याम बसे काहू नारीके। आये सदन प्रात प्यारीके॥
रतिरँगचिह्न अङ्ग परवाने। सोहत नयन अरुण अलसाने॥
प्यारी देखि रही मुख पियको। जान्यो रङ्ग लग्यो कहुँ तियको॥
तब मन विहँसि कह्यो श्रीराधा। आज बन्यो पियरूप अगाधा॥
परउपकार हेतु तनु धारयो। पुरवन सबकी साध विचारयो॥
कहां पढ़ी यह नीति बतावो। हमहूँको सो ठाम सुनावो॥
कहो कहां काको सुखदीनो। धनि धनि यह उपकार जु कीनो॥
धनि यह बात आज मैं जानी। क्यों नहिं कहियत प्रगट बखानी॥
धन्य मोहिं यह दरश दिखायो। धनि धनि जासों नेह लगायो॥

भली दिखाई आज यह, अद्भुत छवि अभिराम।
सूर उदय लोचन कमल, चन्द उदै पर श्याम॥
उर कुच कुंकुम दाग, अधर दशन छवि राजई।
रँगी महावर पाग, यह शोभा अनुपम बनी॥

क्यों उठि भोर यहांको आये। काहेको इतने सरमाये॥
तुमहूँ भले भलो हैं वोऊ। कौन्हों भलो भले मिलि दोऊ॥
कौन्हों है इतनो हित जिनते। तौ अब कित बिछुरे हो तिनते॥
जाहु तहीं वे सुनि दुख पैहैं। बहुरौ तुमसों मन न मिलैहैं॥
तिनहींको सुख दीजे मोहन। जिनसोंनिशिबिलसेमिलिगोहन॥
तिय सन्मुख नहिं लखत कन्हाई। वदन नवाय रहे सकुचाई॥
कबहुँ नयनकी कोर निहारैं। कबहुँ चरण नख भूमि उखारैं॥
प्रगट हसित मनमन मुसकाई। खण्डित बचन सुनत हरषाई॥
पियको सुख प्यारी नहिं जानैं। रोष करतहू पिय मन मानैं॥
जोइ आवत सोइ कहत वदनते। जाहु जाहु पिय कहत सदनते॥
तुम जानत जिय हमहिं सयाने। और बसत सब लोग अयाने॥
रैनि बसत कहुँ भोर हमारे। आवत नाहिं लजात लला रे॥

तबहिं श्याम बाणी मृदुल, बोले अति सकुचाय।
किन देख्यो कौने कह्यो, झूंठहि तुमसों आय॥
कहति झूठ यह बात, खोटी ब्रजनारी सबै।
तुमते प्रियको आन, सौंह करौं जो मानिये॥

बिनहीं बोले रहिये जू पिय। कत ऐसे वचनन दहिये हीय॥
झूठी सबै एक तुम सांचे। नीके लाज छांडिकै नाचे॥
सौंह कहूं सुनिबो करि पायो। सो अब इहां काम है आयो॥
ऐसे खिजत पीयसों प्यारी। आई तहां और ब्रजनारी॥
सखियन देखि कुँवरि मुसुकाई। उर अन्तर है रिस अधिकाई॥

तिन्हैं कह्यो सैननमें प्यारी। देखहु हरिकी छविहि निहारी॥
मौनहि रहे श्याम सकुचाई। युवति विलोकति छवि अधिकाई॥
कहति सबै हँसि हँसि व्रजबाला। कहँ पाई छवि यह नँदलाला॥
तबहि सखिन सों कह्यो किशोरी। करत इते पर सौंह लबोरी॥
निशि औरनके चित्तहि चुरावत। दरशन देन प्रात इत आवत॥
तुमहीं अङ्गचिह्न पहिचानो। सही परै सो बात बखानो॥
कृपा करैं तहँ हीं पग धारैं। नहीं काज इहँ वेगि सिधारैं॥

प्यारी उर अति रोष लखि, अरु सखियनकी भीर।
तब वहँते वहरायकै, द्वार गये बलबीर॥
शोच करत उरमाहिं, भरे विरह आनन्द रस।
जाय सकत कहुँ नाहिं, मनमें प्यारी डर डरत॥

---

## मध्यम मान लीला।

जबहीं श्याम गये द्वारेतन। कियो मान प्यारी अपने मन॥
कहति सखिनसों देखो तुम अब। वहुरि दोष देती मोको सब॥
ऐसे श्याम गुणनके आगर। चोरत चित्त फिरत अति नागर॥
ऐसे ख्याल मोहि दिखरावें। जान देहु अब यहँ जिन आवें॥
इहाँ काज इनको कछु नाहीं। मैं बैठी अपने घरमाहीं॥
जाव तुमहु अपने सब कामहिं। योंकहि प्रिया गई उठि धामहिं॥
नख शिख रोष भरी पियप्यारी। यौवन रूप गर्व उर भारी॥

चली सखी बहु दशा निहारी। द्वारेपर देखे बनवारी॥
कहति सुनौ मोहन पिय हमसों। प्रिया रोष कीन्हों अति तुमसों॥
तुम्हरे आवत अति रिस पाई। यह तुम कहा करी चतुराई॥
सुनत बात यह कुँवर कन्हाई। भये चकित अति गये मुराई॥
जान्यो मान कियो फिर प्यारी। भये बिरहव्याकुल तनु भारी॥

तब सखियन हरिसों कह्यो, चतुर कहावत नाम।
करत फिरत ऐसे गुणन अब कच्यात कत श्याम॥
तुमहिं करायो मान, अटपट रूप दिखाय कै।
अब लागे पछितान, प्रथम विचार कर्‍यो नहीं॥

यह सुनि धीरज कियो कन्हाई। तब इक युवती और बुलाई॥
तासों कहि सब बात जनाई। दूती करि हरि ताहि पठाई॥
कहत श्याम तोसों यह बानी। वेगि मिटै जिय मान सयानी॥
दूती गई करति मन साधा। बैठी तहां जाय जहँ राधा॥
प्यारी मान ठान इग बैठी। हृदय रोष भौहैं करि ऐंठी॥
उरमें सोतिशाल अति शाले। नेकु नहीं इत उत कहुं हाले॥
दूती कछू थाह नहिं पावे। बिना भीत कहँ चित्र बनावे॥
मनहींमन दूती पछिताई। अति आतुर मोहि श्याम पठाई॥
यह इत उत कहुँ नाहिं निहारै। कहा करौं मनमांझ बिचारै॥
तब कहि उठी दूतिका नारी। मान कियो बृषभानुदुलारी॥
कहा करौं मोहन अति कीन्ही। उनकी बात आज मैं चीन्ही॥
ऐसे मैं उनको नहिं जाने। अब कैसे उनसों मन माने॥

घर घर डोलत फिरत निशि, बोलत लगत न लाज ।
आय दिखाये प्रात मुख, नटके रतिरँग साज ॥
मैं आई अब बाज, जित चाहो तितही फिरो ।
उनको यहां न काज, राज करो ब्रजमें सदा ॥

दूती सुनि प्यारीकी बानी । अन्तर प्रेम रोष लपटानी ॥
कह्यो यमुनते मैं गृह आई । सखी एक यह बात सुनाई ॥
तब मैं रहि न सकी घरमाहीं । भली प्रकृति हरिकी यह नाहीं ॥
अब द्वारेते हरि न टरत हैं । परघर जानकि सौंह करत हैं ॥
मन पछितात कहत घनश्यामा । भूलेहुँ ऐसो करहुँ न कामा ॥
तू जिन मान तजे सुन मोसों । यहै कहन आई मैं तोसों ॥
अब समझे अरु हम समझावें । पर घर जानकि बात मिटावें ॥
अब मोको यह बात लखाई । जाहि न पर घर कुँवर कन्हाई ॥
जब दूती यों बात बखानी । द्वारे हैं हरि तब यह जानी ॥
उमगि उठ्यो रस सुनि मनमाहीं । बाहर प्रकट कियो सो नाहीं ॥
काहेको हरिद्वार खरे री । कौने राखे जाय घरे री ॥
तू रहि मान कितहि रिसपावति । यह हरिसों मैंही कहि आवति ॥

लई तीयके हीयकी, चतुर दूतिका जान ।
अति आतुर हरिपै गई, कहति आनकी आन ॥
कही मनाऊं लाल, नेकु मरम नहिं पाइये ।
दीठि न जोरति बाल, सूधे मुख बोलति नहीं ॥

अपनीसी बहुतै मैं भाखी । सुनि उन मौन हृदय धर राखी ॥

नेक नहीं उत्तर मुख बोलें। अति रिस कम्पत इत उत डोलें॥
मंजु कही सो सुनहु कन्हाई। भई बून्द बारिदकी नाई॥
भरि भरि लेत नयन जल कोरें। नहीं डरत बैठो मुख मोरें॥
तिरछी करि करि भौंहन तानै। कोटि कोटि अवगुण मुख गानै
ऐसीहै वह दीठ तुम्हारी। कहा बसीठि करै कोउ नारी॥
सुनहु रसिक बर कुँवर कन्हाई। आपहि लीजे जाय मनाई॥
याको नाम भयो गढ़वाई। लीजै ताहि सुरङ्ग लगाई॥
यह सुनि बिरह भरे बनवारी। मुरछि परे धर सुरति बिसारी॥
सखी उठाय लये अँकवारी। यों कत विकल होत बलिहारी॥
नागर बड़े कहावत हो जू। धीर धरो सुख पावत हो जू॥
बातन नेकु ताहि गहि पाऊं। तो तबहीं मैं तुमहि मिलाऊं॥

धीरज दै घनश्यामको, दूती गई उताल।
जाय कह्यो प्यारी निकट, प्यारे श्याम बेहाल॥
मुख नहि बोलत बयन, अति व्याकुल तेरे विरह।
भरि भरि डारत नयन, कहा कहौं न सँभार कछु॥

बारहि बार कहति पछितानी। दे सुख जो तू कुँवरि सयानी॥
तूही प्रिया भावती हरिकी। और नहीं कोऊ तो सरिकी॥
तेरेहि रसवस कुँवर कन्हाई। तेरे तनक बिरह कुम्हिलाई॥
तेरेहि रूपअधीन खरे री। तेरि हि चितवनके चेरे री॥
तेरेइ रङ्ग बसन तनु धारैं। तेरेइ रङ्गको तिलक सँवारैं॥
चन्द्रवदन तेरो लखि गोरी। मोरचन्द्र शिर मुकुट कियो री॥

तेरोइ चरित सुन अरु गानें। तू मानैं भावे जिन माने॥
अति अनुराग श्यामको तेरो। करि विचार नीके मैं हेरो॥
जो जाको नीके करि जानैं। सो तासों तैसो हित मानैं॥
यहै प्रीतिकी रीति पियारी। कह तू बोलि लेहुँ गिरिधारी॥
तू कहँ गई कहन कह आई। मैं जानति हरि तोहि पठाई॥
मानत कौन कही अब तेरी। जानति हौं हरिचरित बड़े री॥

अबधौं को तिनसों मिले, जिन्हैं परी यह बान।
उरमें राखत आन कछु, कहत करत कछु आन॥
हैं वे कपटनिधान, बहु नायक पूरे गुणन।
जिनको करत बखान, जिन वामन है बलि छल्यौ॥

मान किये अब नाहि बने री। देख विचारि हिये अपने री॥
जाके गुणगण सुर मुनि मोहैं। सो तेरे गुण गणि मणि पोहैं॥
सनकादिक जेहि ध्यान लगावैं। सो तेरे दरशन सुख पावैं॥
शिव विधि जाके द्वार खरे री। सो प्रभु तेरे द्वार परे री॥
जाके पद कमला कर लीन्हें। सो प्रभु पद चिन्तत मन दीन्हें॥
अति आतुर नँदलाल हिये री। सौंह करति हौं शीश छुये री॥
सनु प्यारी अति हठ नहि कीजै। सर्वस वारि श्यामपर दीजै॥
यह यौवन वर्षाको पानी। गर्व न कीजै याहि सयानी॥
सब सुख हरिके सङ्ग किये री। कृष्णविमुख के काज जिये री॥
पूरन पुण्य सुकृत फल तेरो। भामिनि मान कह्यो कर मेरो॥

हरिके रसरँग जो मन भीजै। रूपसुधा जो नयनन पीजै॥
सौंह चरण तेरेकी कीजै। सफल दरश दिय तो यों जीजै॥

वृथा जान नहिं दीजिये, हरिसों करि के मान।
उठति बैसके दिननको, सुन तिय यहै सयान॥
हिलि मिलि करहि कलोल, मैं तेरे हितकी कहति।
लेहि श्यामको बोल, परे द्वार बिलपत दई॥

सोई चतुर सुलच्चण नीको। सदा भावती जो पियजीको॥
यौवन गुण द्युति अरु हित पीको। है सुन्दरि तेरे शिर टीको॥
तेरे हित सब ब्रजकी बाला। कियो बुलाय रास नँदलाला॥
तू तनु श्याम प्राणरी प्यारी। परछाहीं अरु सब ब्रजनारी॥
तोसी और नहीं ब्रजगोपी। तेरेइ रूप बसे तिय ओपी॥
सुन्दरश्याम सकल सुखदायक। कहा भयो री जो बहुनायक॥
तो समान वृषभानुललीको। शशिहि कहा डर कुमुदकलीको॥
ऐसे जब दूती समुझाई। तब बोली तिय कछु मुसुकाई॥
वादहि बकति आय मेरे घर। बेधति है ऐसे वचनन शर॥
उनकी दूत दूतकी उत जाई। मिलवत झूठी बात बनाई॥
जो चहिहैं तो आपुहि ऐहैं। सौंह करैं अरु हाहा खैहैं॥
प्रीतिरीति कछु जानत नाहीं। जोइ आवत सोइ कहत वृथाहीं॥

जब प्यारी ऐसे कह्यो, सखी लियो तब जान।
मानत नाहीं लाड़िली, श्याम मिलाऊं आन॥

कह्यो सखी मुसक्याय, नहिं मानत मेरो कह्यो ।
श्याम मनावें आय, मैं जानौं तब मानिहैं ॥
अरी मान वे बहुत तेरे । लगत माननी कोई हेरे ॥
हांसी खेल औरको माई । तुलत न तेरे विरस रुखाई ॥
ऐसेही रहि जो लगि जाऊं । यह सुख हरिको आन दिखाऊं ॥
पिय मन नूतन चोप बढ़ाऊं । अति रस रूप अनूप उपाऊं ॥
यह कह गई श्यामपै आली । कहत आज सुनिये वनमाली ॥
मानति नाहिं मनायो प्यारी । को जानैं जियमें कह धारी ॥
हाहा करि मैं वहु समुझाई । सुनितें अधिक होन रिसहाई ॥
तुम आतुर वैसी गनि वाकी । आवति जाति बीच मैं थाकी ॥
आपहिं चलि लीजिये मनाई । और भांति नहिं बनत बनाई ॥
वहै बयारि जैसिये जवहीं । पीठ आड़िये तैसी तवहीं ॥
मोसी जो पठवहु तुम कोरी । नहिं मानत वृषभानुकिशोरी ॥
होती कहति तुम्हारे हितकी । पाई है कछु वाके चितकी ॥
चले बनत है लाल अब, और यत्न नहिं कोय ।
काछ काछिये जौन हरि, नाच नाचिये सोय ॥
आप काज महकाज, बड़े कहि गये बात यह
तजहु श्याम उर लाज, करि विनती तियसों मिलहु ॥
चलो चले तुम्हरे हठ जैहै । देखत प्रेम उमँग उर ऐहै ॥
सखी सङ्ग तब नवलविहारी । गये भवन बैठी जहँ प्यारी ॥
काहे भये सकुचि कै ठाढ़े । अति आधीन प्रेमरस बाढ़े ॥

नेक नहीं इत उत कहुं डोलैं। चित्र लिखेसे मुख नहिं बोलैं॥
यद्दपि लाल गाढ़े अति जीके। सकल सयानप भूले नीके॥
प्यारी देखि पियहि मुसकानी। जिय डरपे मोते यह जानी॥
अति आनन्द भयो मनमाहीं। चुपही रही कह्यो कछु नाहीं॥
मन मन कहत न अब उचटाऊं। आदर करि पियको बैठाऊं॥
मोसों श्याम बहुत सकुचाने। अब नहिं जैहैं धाम बिराने॥
सहचरि कह्यो देखु री प्यारी। कबके ठाढ़े हैं गिरिधारी॥
मान मनायो प्यारी पीको। तू पिय जिय पिय जीवन जीको॥
प्राणहिं प्राण रूसिबो कैसो। यह कहुं भयो सुन्यो नहिं ऐसो॥

करि आदर बैठारि पिय, हँसि ले कण्ठ लगाय।
घर आये नहिं कीजिये, ऐसी कित सकुचाय॥
है तू नागरि बाम, मनमें कहु ऐसी धरी।
वे ठाढ़ेहैं श्याम, तू मुखते बोलति नहीं॥

तब हँसि कह्यो भलो पिय वैसो। अब जिन काम करहु कहुँ ऐसो।
अबकी चूक नहीं म मानी। और दिनाको रहिये जानी॥
मेरी सौंह करो मो आगे। तजि सँकोच बोलो डर त्यागे॥
कह्यो सौंह कर मोहन तबहीं। आर तियनपर जात न कबहीं॥
नन्दभवन ते अबही आये। तुम्हरो रोष देखि सकुचाये॥
ऐसो अब काहेको बोलो। अबलोंकी करनी नहिं खोलो॥
अब जु कालुहिते अनत सिधारे। तौ तुमहीं जानोगे प्यारे॥
तब हरि हँसि कर शिरपर राखे। बारहि बार सौंहकर भाखे॥

सहचरि हँसि कर साखि रखीजू । सखीआजतेबातयहीजू ॥
पानदियें प्यारी तब लालहि । आई सखी सकल तेहि कालहि॥
सोंह करी सबहिन यह जानी । हँसे श्याम श्यामा मुसुकानी ॥
आदर करि सबको बैठायो । निरखि युगल सबहिन सुख पायो॥

कह्यो सखिनसों हँसि प्रिया, भरि आनँद उछाह ।
तुमहू सब मिलिके कह्यो, भये श्याम अब साह ॥
लखि लखि सखी सिहात, यह सुख लाड़िलि लालको ॥
बसे श्याम तहँ रात, प्रात चले अपने सदन ॥

चले धाम निज श्याम सकारे । देखे ठाढ़े नन्द दुवारे ॥
सकुच फिरे घर जात लजाने । प्रमदाके घर जाय समाने ॥
चकित बाल जब श्याम निहारे । कहत लाल यह ख्यालतुम्हारे
कहां हुते गवने किन माहीं । कबहू दरश देति हौ नाहीं ॥
रहत कहां हो सकल लभाने । आय परे इत कहां भुलाने ॥
कहौ कहा हौ कछु डरेसे । आलस भरे जम्हात खरेसे ॥
बसेकहू निशि तिय संग जागे । नयन अरुण अति रसरँग पागे
मलयज उरज छाप उर धारे । द्वै शशि मनहुँ उदित उजियारे ॥
नयन कछु सकुचनसे ऐसे । शशिके उदय सरोरुह जैसे ॥
पुतरी अलि उड़ सकै न जानी । उरझ रहै अँग गात न मानो ॥
डगमगात से डग पग डोलो । रसमस गात शृँगार अमोलो ॥
अङ्ग अङ्ग शोभाके सागर । धनि धनि बसे जहां रतनागर ॥

विहँसि चले कहि श्याम तब, तरक करी तुम बात ॥
समुझो सब हम भाय हैं, आज तुम्हारे रात ॥
सुनि हरषी जिय नारि, पुलक गात आनन्द उर ।
ऐहैं आज मुरारि, सांझ परे मेरे सदन ॥

प्रातहिते मन हर्ष बढ़ायो । नवसत साजि शृंगार बनायो ॥
बार बार दर्पण मुख देखे । भूषण बसन अङ्ग अवरेखे ॥
कद्रुसुत छबि छाजत वेणी । मांग सुधारत दधिसुत श्रेणी ॥
भुवनतीयसुत रेख सँवारे । धनपति पुरको नाम सुधारे ॥
हीरावलि उर पर लै धारे । श्याम मिलनसुख मनहिं बिचारे ।
रचि रचि सुमनन सेज बनावैं । केसर चन्दन अगर मिलावैं ॥
बहुनायक नँदसुवन कन्हाई । गये अन्त याको बिसराई ॥
बासर ऐसे करत बिहानो । एक याम निशिको नियरानो ॥
पर्‌यो शोच विरहा अकुलानो । श्याम न आये कहँ धौं जानो।
गये सांझ हीको कहि आवन । अजहूं नहिं आये मनभावन ।
कैधौं आवत हैं अब धाये । किधौं परे कहुँ फंद पराये ॥
वे बहु रमणीरमण बिहारी । कैधौं मेरी सुरत बिसारी ।

कुमुदाके घर हरि रहे, बढ़्‌यो अधिक उर हेत ।
भीजे दोऊ प्रेमरस, अरसपरस सुख लेत ॥
मुदित श्यामसँग बाम, क्षणसम बीतत याम तिह ।
याको युग सम जाम, बीतत नभ तारे गनत ॥

बसे उहां याही इहि रीती । भयो भोर रजनी सब बीती ॥
मनहींमन युवती पछितानी । मोसों श्याम कुटिलई ठानी ॥
गयो मदन दुख वदन झुराई । रही बैठि सदनहिं मुरझाई ॥
आई तहां सहज इक आली । देखी विरहविकलतनु ग्वाली ॥
लोचन जलज भरे जलढारे । मन मारे महि नखन बिदारे ॥
बूझन लगी निकट सो जाई । कहा भयो तोको री माई ॥
आनंद रहित आज मुख तेरो । देखत होत विकल मन मेरो ॥
सो तो वात भई है कैसी । मोहिं सुनाय कहत किन तैसी ॥
तब बोली मधुरे तिय बानी । अंचर पोंछि नयनको पानी ॥
कहा कहौं तोसों री आली । कपटी कुटिल कठिन वनमाली ॥
मोसों गये अवधि बदि माई । अनतहि लब्ध रहे कहुं जाई ॥
कियो नहीं मेरे गृह आवन । भये सखी नयना दोउ सावन ॥

ऐसे गुण हरिके सखी, निपट कपटकी खान ।
अब उनसों मोसों कहा, बने लिये पहिचान ॥
तोहिं मिलैं जो आज, मेरीसों कहियो उन्हैं ।
गहो कछु जिय लाज, वचननके सांचे बड़े ॥

उन्ह गई मैं कछु बुलावन । आपहि अजिर गये करि पावन ॥
मोपै कृपा आप यह कीन्हीं । तोसों कहौं तबहि मैं चीन्हीं ॥
काल्हि कहूं जागे तिय गोहन । जात हुते अपने घर मोहन ॥
द्वारे नन्दहि देखि डराने । मेरे गृह आये सकुचाने ॥
डग मग पग दृग नींद भरे री । बारहि बार जम्हात खरे री ॥

जब मैं कह्यो कहांते आये। तब मोतन सन्मुख मुसकाये ॥
उत्तर नहीं दियो सकुचाई। श्याम करी तब यह चतुराई ॥
कह्यो धाम मेरे निशि आवन। आपहि श्रीमुख वचन सुहावन
रैनि जागि मैं सेज सँवारी। ताते जरी रिसहिको मारी ॥
इतनी कहत द्वार हरि आये। ग्वालिनि भीतरते लखि पाये ॥
देखतही रिसमें झहरानी। कही सुनाय श्यामको बानी ॥
धन्य धन्य यह घरी विधाता। आये मेरे जू सुखदाता ॥

ऐसे कहि चुप ह्वै रही, मुरि बैठी रिस गात।
मधुरे वचनसों कहति, निकट सखीसों बात ॥
आये हैं करि गौन, चतुर नारि सँग निशि जगे ॥
इनसों मिलिहै कौन, फिरत कहा कोऊ बही ॥

कृपा करहिं अब इतहि न आवैं। उतही जांय जहां सुख पावैं॥
सखी लखे सब अङ्ग श्यामके। जागे कहुं निशि सङ्ग बामके ॥
कहुँ चन्दन कहुँ बन्दन रेखा। कहु काजर कहुँ पीक सुवेषा ॥
लखि स्वरूप हरितन मुसकाई। मान कियो यह दियो जनाई ॥
मन मन शोचत कुंवर कन्हाई। परे कठिन तियके फँद आई ॥
मेरो नाम सुनतही ऐंठी। मान कियो मोसों फिरि बैठी ॥
तबहीं श्याम करी चतुराई। सैननही सों सखी बुलाई ॥
सो कहि चली जाति घर माई। तू बैठी जो मान दृढाई ॥
अनतहि ठाढ़े भये कन्हाई। तहां सखी सहजहि चलि आई ॥

निरखि वदनदोउनहँसि दीन्हां। सखीकह्यो तुम यह कहकीन्हौं
तव हँसि कह्यो सखीसों गिरिधर। मैं मनाय लैहों तू जा घर॥
यह सुनि विहँसि गई कहि आली। जाय मनायलेहु वनमाली॥
रसिकनके मणि ज्ञान मणि, विद्या मणि गुण पाय।
आपनहू तहँ ते गये, तिनको दरश दिखाय॥
रही अकेली वाम, फिरि कै चितयो द्वारतन।
तहां न देखे श्याम, अधिक शोच मनमें भयो॥
तव जानी फिरि गये कन्हाई। रही तिया मनमें पछिताई॥
भई विरहव्याकुल अति नारी। मिटि गयो मान हृदय दुख भारी
कहत कहा मैं यह मति ठानी। आवतही हरिसों भहरानी॥
भीतरलों आवन नहि दीनों। कहा क्रोध मोको वह कीनों॥
ज्यों त्यों कर मेरे घर आये। सो मैं देखतही उचटाये॥
वार वार ऐसे पछिताई। मनहीं रही मसोसा खाई॥
श्याम गये निहचै जव जानी। न्हान चली तव यमुना पानी॥
अति व्याकुल मन कछु न सुहाई। कोऊ सखी न सङ्ग बुलाई॥
पहुँचीं यमुना तुरत अन्हाई। चली बहुरि घरको अतुराई॥
भये श्याम मारगमें ठाढ़े। पांच वर्षके ह्वै छवि बाढ़े॥
आगे ह्वै नागरिसों बोले। सुन्दर कोमल वचन अमोले॥
कहां जाति है री तू नारी। चलु वोलत जाको तू प्यारी॥
तनहि बुलाई श्याम तोहिं, लेन पठायो मोहिं।
सुनत वचन चलत भई, रही बाल मुख जोहि॥

श्याम नाम सुनि कान, अति आनँद उरमें भयो।
अगम चरितको जान, ब्रजबासी प्रभु कान्हके॥

कर गहि लियो चलो हरषाई। गोपकुमार जान गृह लाई॥
कहत श्याम बनधाम बुलाई। या बालकको लेन पठाई॥
पूछौं याहि भेद बनको सब। कहा कह्योहै हरि यासों अब॥
अति आनन्द भयो मन बालहि। अन्तहपुर ले गई गुपालहि॥
तहां चरित्र कियो नँदलाला। भये तरुण सुन्दर ततकाला॥
भुज गहि लई हर्षि उर लाई। चकित भई नागरि सकुचाई॥
छांड़ि देहु मन मुदित कहत तिय। ऐसे चरित करत धन२ पिय
ऐसे हरि भामिनी मनाई। सुख दै गये सदन सुखदाई॥
परम हर्ष मन भई गुवारी। रैनिविरह तनुताप निवारी॥
समुझि समुझिके पियगुणमनमें। पुनि२ हर्षित पुलकिततनमें॥
हरि ये चरित करत ब्रजडोलें। यशुमति ढिग बालकजिमिबोलें॥
निजगृह गये सदा नँदलाला। परम विचित्र ग्रामके ख्याला॥

ब्रजबासी प्रभुकी कथा, अति विचित्र सुखखान।
कहत सुनत गावत गुणन, हरषत सन्त सुजान॥
ब्रजनायक घनश्याम, नटनागर गुणआगरे।
ब्रजवासी सुखधाम, गोपीपति नँदलाड़िले॥

## गुरुमान लीला ।

सखिन सङ्ग वृषभानुकिशोरी । चली न्हान प्रातहि उठि गोरी
जाके घर निशि वसे कन्हाई । ताघर ताहि बुलावन आई ॥
ठाढ़ी भई द्वारपर आई । कढ़े तहांते कुँवर कन्हाई ॥
औचक मिले न जानत कोऊ । रहे चकित इत उतते दोऊ ॥
फिरी सदनको तुरतहि प्यारी । न्हान जानकी सुरति बिसारी ॥
भई विकल तनु रिस अतिबाढ़ी । रह गई सखी निरखि सबठाढ़ी
रह गये ठाढ़े श्याम ठगेसे । सकुचाने उर शोच पगेसे ॥
जब देखे हरि अति मुरझाये । तब सखियन भुजगहि समुझाये ॥
उलटि भई सब हरिको धाई । दै कै बांह प्रिया जहँ ल्याई ॥
देखी श्याम आय तहँ राधा । बैठी मान दृढ़ाय अगाधा ॥
रिसहीके रस मगन किशोरी । भई श्याम मति देखत भोरी ॥
ठाढ़े चकित चित्त अकुलाहीं । मुखते बचन कहे नहिं जाहीं ॥

व्याकुल लखि नँदलालको, सखियन कियो विचार ।
अब दोऊ जैसे मिलैं, करिये सो उपचार ॥
अति रिस नारि अचेत, को सुनिहै कासों कहैं ।
दूत वे धरत न चेत, परी रुठावन बानि दून ॥

प्यारी निकट गई सब आली । ठाढ़े पौरि रहे वनमाली ॥
कहत मान कीनों तैं प्यारी । न्हान जानते फिरी कहा री ॥
तोहि लखत हैं री गिरिधारी । अतिही डर तनु सुरति विसारी
मुरलि परे धरणी अकुलाई । तरुतमाल तनु गया झराई ॥

तेरी सों कछु चितयो उनको। नेकहु चैन रह्यो नहिं तनको॥
तेरे नयन अरी अनियारे। किधौं वान खरसान सँवारे॥
भौंहकमान तान यों मारे। क्यों कर राखे प्राण पियारे॥
घायल जिमि मूर्छित गिरिधारी। अमीवचन अब सींचत प्यारी
बहुनायक वे तू नहि जाने। तिनसों कहा दूती दुख मानें॥
बांह गहो हरिको ढिग लावैं। अबते निज अपराध क्षमावैं॥
गहत बांह तुमहीं किन जाई। मोसों कहा गहावन आई॥
कालहिंहिसौंह मोहिं उनदीनी। आजहि यह करणी पुनि कीनी

देखि चुकी उनके गुणन, निज नयनन सुखपाय।
तिन्हैं मिलावति मोहिं अब, बांह गहावति आय॥
मिलों न तिनसों भूल, अब जौलौं जीवन जियहुँ।
सहौं बिरहकी शूल, बरु ताकी ज्वाला जरौं॥

मैं अब अपने मन यह ठानी। उनके पन्थ न पीऊं पानी॥
कबहूं नयन न अञ्जन लाऊं। मृगमद भूलि न अङ्ग चढ़ाऊं॥
हस्तलय पटपीत न धारौं। नयनन कारे घन न निहारौं॥
सुनौं न श्रवणन अलिपिकवानी। नीले तनुपरसों नहि पानी।
सुनत प्रियाकी बात सुहाई। हर्षत ठाढ़े पौंरि कन्हाई॥
सखी कहति यों हठ नहि लीजै। हरिसों ऐसो मान न कीजै॥
तू है नवल नवल गिरिधारी। यह योवन है री दिन चारी॥
क्षण क्षण ज्यों करको जल छीजै। सुन री याको गर्व न कीजै।
नंदनँदन पिय मुख सुखकारी। तू करि नयन चकोर पियारी॥

हुतो प्रेम घन यह तो प्यारो। सो अब कहु तैं कियो कहा री॥
कहति हुतो रूसों नहिं कबहीं। सो अब रूसति है जब तबहीं॥
सुनिहै सुघर नारि जो कोई। करि है हँसी प्रेमकी सोई॥

मान कियो जो भावते, सो न भावतो होय।
डरते रिसवत प्रेम कित, अन्त भावतो सोय॥
लाख कहे किन कोय, पिय सनेह जो गाढ़है।
चतुर नारि है सोय, लियो प्रेम परचौ किनहुँ॥

तुम वे एक न दोय पियारी। जलते तरँग होति नहिं न्यारी॥
रस रूसनो ओस कन जैसो। सदा न रहिये चहिये तैसो॥
तजि अभिमान मिलहि पिय प्यारी। मान राधिका कही हमारी
चुप न रहत कइ करत मनावन। तुम आईहो बात बनावन॥
बहुत सखी घर आई यातें। सुरति दिवावत पिछली बातें॥
मोसों बात कहतहो काको। जाहु घरन अब कछु है बाको॥
को उनको यह बात चलावत। हैं वे अब तुमहीं को भावत॥
तुम पुनीत अरु वे अति पावन। आईहो सब मोहिं मनावन॥
यह कहि रही रोष भरि भारी। गई सखी लै जहां विहारी॥
कह्यो जाय हरिसों हरषाई। आज चतुरई कहां गँवाई॥
विन निज जांचन चलहि ललारे। कैसे चहत कियो सुखप्यारे॥
हो मनमोहन तुम बहुनायक। नागर नवल सकल गुणलायक॥

मान तजै नहिं लाड़िली, थाकीं सबै मनाय।
वेगि यत्न कछु कीजीये, रचिये आप उपाय॥

रच्यो दूतिका रूप, तब मनमोहन आपही।
करि तिय स्वांग अनूप, गये जहां प्रिय मानिनी ॥
बैठे निकट सखी मिस जाई। कहत श्रवण ढिग बात सुहाई ॥
बन घनश्याम धाम तू प्यारी। करि बैठी यों मान कहा री ॥
म उत गई तोहिं नहि पाई। हरिकी दशा देखि फिरि आई॥
अति आरति मन कुञ्जबिहारी। इकले खड़े गहे द्रुमडारी ॥
तेरोइ नाम रटत मुखमाहीं। और कछू तिनको सुधि नाहीं ॥
देखत व्यथा भई मुहि गाढ़ी। चल तू होहि नेक ढिग ठाढ़ी ॥
कुञ्जभवन ठाढ़े दोउ देखों। तब मैं नयन सफल करि लेखों ॥
अब हरि कहत कृपा मोहि कीजे। जो बूझिये दण्ड सो दीजे ॥
अति आतुर प्रीतमकी लेरी। हठ तजि हाहा कहि सुनि मेरी॥
तुव कारण वृषभानुदुलारी। मेरे पांय परत गिरिधारी ॥
अब मैं पांय परतिहौं तेरे। क्षम अपराध त्वश हरि केरे ॥
चाहत कियो श्यामको जोई। उन्हैं जानि मोसों कर सोई ॥
क्षण क्षण परशत चरण कर, क्षण क्षण लेत बलाय।
कहत प्रिया अब मान तजु, पुनि पुनि हाहा खाय ॥
लखि लखि सखी सिहात, चरित ललित नँदलालके।
मनहीमन मुसुकात, भरी प्रेम आनन्द रस ॥
तब चितयो प्यारी नयनन भर। आयो उघरि लाल लीलाधर ॥
श्याम चतुरई मोसों मांडत। वे गुण तुम अजहूं नहिं छांड़त ॥
इन छन्दनमें मान जूत हो। नीके सब गुण जानतहो जू॥

रसवादिन मोको करि पाई। वे बातैं सब देहु भुलाई॥
यह कहि बहुरि भई रिसहाई। रहे श्याम ठाड़े सकुचाई॥
गहे पीत पट अति आधीना। जलके निकट दीन जनु मीना॥
फिरि पाछो ह्वै पीठ श्यामको। हृदय विरह दुख अधिक बामको
कर आरसी अग्र लै धारैं। पट अन्तर हरि बदन निहारैं॥
रिसवश धरत नहीं मन धीरा। तलफत हिये विरहकी पीरा॥
इत नागरि उत नागर ओऊ। भली चतुरई बाढ़े दोऊ॥
जिते जिते मुख फेरति प्यारी। तितही ढरि आवत गिरिधारी॥
जोइ जोइ बात भावतिहि भावैं। सोइ सोइ बातैं श्यामचलावैं

करि हारे छलछन्द सब, कुवन न पावत छांह।
हठ छांड़त नहिं लाड़िली, हरि शोचत मनमांह॥
देखि श्यामको दीन, विरहविवस प्यारी निकट।
सखियां परम प्रवीन, तब सब समझावन लगीं॥

लखुरी कमलनयन तो आगे। कबके हहा करत अनुरागे॥
तेरे भयते कुँवर कन्हाई। आये तियको रूप बनाई॥
मधुर मधुर वचनन बनवारी। तोहिं मनावति हैं री प्यारी॥
हाहा करि अरु पांयन लागे। कियो कहा चाहति है आगे॥
लखि हरि खड़े मिलन मुरझाये। आदर नहिं चुकिये घरआये
वे तौ बनके भंवर बिहारी। तोसी और बेलिको प्यारी॥
करि सन्मान विहँसिकर बैसो। कीनो कहा निठुर मन ऐसो॥
पावन कहा मानके कीने। कहा गवावत आदर दीने॥

होत कहा घूँघटपट खोले। कहा नशात तनक मन बोले॥
ऐसो कहा कीजियत है री। प्रीतम छांड़ि राखियत बरी॥
निजवश मदनगुपालहि जानो। ऐसो कहा अधिक इतगानो॥
सिखको कहत अनसिखो आवै। कहा तोहिं कोई समुझावै॥

जो नहिं मानत श्यामसों, मानहि रहिहै हाथ।
तब अपने मन जानिहै, जब दहिहै रतिनाथ॥
ऐसे कहिहै कौन, मान प्रिया हम कहति हैं।
त्रिभुवनठाकुर जौन, सो तेरेवश ह्वै परयो॥

ऐसो समय बहुरि नहिं पैहै। सुनु री फिरि पाछे पछितैहै॥
यह योवन है धन स्वपनेको। मान मनायो पिय अपनेको॥
अब ये दिन रूसनके नाहीं। प्रिया बिचारि देखु मनमाहीं॥
पावस ऋतु कीन्हो री फेरो। गरजत गगन भयो घन घेरो॥
बोलत दादुर चातक मोरा। चहुं दिशि करति पवनझकझोरा॥
वरषत मेघ भूमि हित लागी। नारि सकल प्रीतम अनुरागी॥
जे बेली ग्रीषमऋतु दाहीं। ते हुलसी तरुसों लपटाहीं॥
सरिता उमगि सिन्धुको जाहीं। मिलन सरी सर आपसमाहीं॥
भयो समय यह दिवस चार को। नंदनँदन पिय सँग बिहारको॥
सुनि सखियनके बचन किशोरी। उमग्यो प्रेम रह्यो रिस गोरी॥
रिस करि कह्यो जाहु उठि ताके। रस कर हाथ बिकाने जाके॥
सुख सों भलो मनावत मेरो। रहत सदा अनहित चितघेरो॥

साँच बखानत जगत सब, बिरद तुम्हारो लाल।
गहे रहत मन तियनके, बिहँसि कह्यो यों बाल ॥
भये प्रफुल्लित श्याम, बिरह ताप तनुको गयो।
हर्षि उठीं सब बाम, प्यारो सख बिहँसत निरखि ॥

तब बोले हरि दोउ कर जोरी। तेरी सों वृषभानु किशोरी ॥
तुही हित चित जीवन मोको। सदा करत आराधन तोको ॥
तू ममतिलक तुही आभूषण। पोषण तेरेइ वचन पियूषण ॥
तेरोइ गुण मैं निशिदिन गाऊं। अब तजि मान हृदय सुखपाऊं
कर जोरें विनती करि भाख्यो। कहत शीश चरणनपर राख्यो ॥
यह सुनि कछु प्यारी मुसकानी। तब बोली उठि सखी सयानी
सुनहु श्याम तुमहो रससागर। रूप शील गुण प्रीति उजागर ॥
तुमते प्रिया नेक नहि न्यारी। एक प्राण द्वै देह तुम्हारी ॥
प्यारीमें तुम तुममें प्यारी। जैसे दर्पण छांह निहारी ॥
रसमें परै विरस जह आई। होय परति तहँ अति कठिनाई ॥
अबके हम सब देति मनाई। परसौ प्यारी चरण कन्हाई ॥
अब रुठायहो जो गिरिधारी। राम रामतो बहुरि हमारी ॥

अब परशे प्यारी चरण, परम प्रीति नँदनन्द।
छुट्यो मान हरषी प्रिया, मिट्यो विरह दुखदन्द ॥
उर आनन्द बढ़ाय, प्रेम कसौटी कसि पियहि।
अवगुणमन विसराय, मिली प्रिया उठि श्यामसों ॥

हर्षि मिले दोउ प्रीतम प्यारी। भई सखी सब निरखि सुखारी
तब दोउ उबटि सखी अन्हवायो। रुचिर शृँगार शृँगारिबनायो
मधुर मिष्ट भोजन मनभाये। दोउन एकहि थार जिमाये॥
दिये पान अँचवन करवाये। सुमन सुगन्ध माल पहिराये॥
लै बीरा अपने कर प्यारी। दीनो वदन बिहँसि गिरिधारी॥
तबहि सफल यौवन हरि जान्यो। परम हर्ष उर अन्तर मान्यो॥
मिलि बैठे दोउ प्रीतम प्यारी। तब सखिगन आरती उतारी॥
अति आनन्द भरे दोउ राजैं। अरस परस निरखत छबि छाजैं॥
पाये वश करि कुञ्ज बिहारी। बिहँसि कह्यो तब पियसों प्यारी
सुनहु श्यामा वर्षाऋतु आई। रचहु हिण्डोला शुभ सुख दाई॥
है मन पिय यह साध हमारे। सब मिलि झूलहि संग तुम्हारे॥
सुन तिय वचन श्याम सुख पायो। ऐसे कहि हरि मान छुड़ायो

तिय मान हरि ऐसे छुड़ायो, भक्तहित लीला करी।
निगम नेति अपार गुण सुख, सिन्धु नट नागर हरी॥
यह मान चरित पवित्र हरिको, प्रेम सहित जो गावहीं।
करहि आदर मान तिनको, सन्त जन सुख पावहीं॥
राधा रसिक गोपालको, कौतूहल रस केलि।
व्रजवासी प्रभु जननको, सुखद कामतरुवेलि॥
सफल जन्म है तास, जे अनुदिन गावत सुनत।
तिनको सदा हुलास, व्रजवासी प्रभुकी कृपा॥

## हिण्डोरा वर्णन लीला।

भक्त वश्य प्रभु कुञ्जविहारी। भक्तनहित लीला अवतारी॥
सदा सदा भक्तन सुखदाई। करत सदा भक्तन मन भाई॥
प्रेम भक्ति दृढ़ ब्रजकी बाला। भये वश्य तिनके नन्दलाला॥
जो जो सुख तिनके मन भावैं। सो सो ब्रजमें श्याम बनावैं॥
समय समयके सुखद विहारा। करैं तियन सङ्ग नन्दकुमारा॥
ग्रीषम गत पावस ऋतु आई। परम सुहावन जन सुखदाई॥
श्रीराधा मनकी रुचि जानी। तब हिंडोल लीला मन आनी॥
यमुना पुलिन गये मनभावन। वृन्दावन घन परम सुहावन॥
सखिन सहित सोहति सँग प्यारी। कोटिक करत मनोजबिहारी॥
अति आनन्द उमँगि चहुं ओरा। घुमड़ि रहे पावस घनघोरा॥
जहां तहां बगपांति उड़ांहीं। चपला चमकि रहीं घनमाहीं॥
गरजत मधुर श्रवण सुखदाई। तैसिय बहत समीर सहाई॥

नाना रङ्ग खग फूल फल, लगे नगनके चार।
गजमुक्तनके झूमका, झालर झबा अपार॥
शोभित लता वितान, अति उतङ्ग तरु सुमन युत।
रहे पान मिल पान, विविध नगन मांनहुँ जड़े॥

कनकवर्णमय भूमि सुहाई। छविहि होर नहि वर्णि सिराई॥
तापर रसिक छबिले दोऊ। उपमाको त्रिभुवन नहिं कोऊ॥
नन्दनन्दन वृषभानु किशोरी। गौर श्याम सुन्दर छवि जोरी॥
चहे उमँगि आनन्द उर भारी। निरखत छवि नभ सुर नरनारी

मोर मुकुट पीताम्बर सोहे। श्याम सुभग तनु त्रिभुवन मोहे॥
प्यारी अङ्ग बैंजनी सारी। शोभित चहुँदिशि चारु किनारी॥
युगल अङ्ग भूषण छबि छाये। रचि रचि सखि श्रृङ्गार बनाये॥
उर रत्नके हार विराजैं। सुमन हार अतिशय छबि छाजैं॥
उत कुण्डल दूत तरवनकी छवि। रह्योलजाय निरखि छबिकी रबि
सखिगण चण तृण तोर निहारैं। वारत प्राण रीझि रिझवारैं॥
भरि उछाह ऊंचे स्वर गावैं। पिय प्यारीको हर्षि झुलावैं॥
ताल मृदङ्ग बांसुरी बीना। बाजत सरस मधुर सुर लीना॥

यह सुख सुनि ब्रजसुन्दरी, अपर सकल नव बाल।
वृन्दाबन झूलति कुँवरि, राधा अरु नँदलाल॥
चलीं सकल अतुराय, नवसत साजि श्रृङ्गार तन।
गृहकारज बिसराय, मनमोहनके रस पगी॥

चुनि करि पहिरि चूनरी सारी। अरुण चुहचुही कोर किनारी
यूथ यूथ मिलि हरिपै आवैं। तिन्हैं प्रिया प्रिय निकट बुलाव॥
आदर वचन सप्रेम सुनावैं। सबके मनको साद पुरावैं॥
एकन लेत निकट बैठाई। एकै चढ़त पैंगपर धाई॥
एक बुलावति अति सचु पाई। गावति एक मलार सुहाई॥
राग रङ्ग सुख वरणि न जाई। रह्यो छाय घन निधि बन जाई॥
युवतिवृन्द चहुँ ओर सुहाई। भूषण भीर वर्णि नहिं जाई॥
बसन सुगन्ध सने बहु रङ्गा। भवँर भीर छांड़त नहिं सङ्गा॥
हरिमुखशशि लखि सुभग अनङ्गा। उमँगि मनो छविसिंधुतरङ्गा

देत चाव भरि जब झकझोरा। होति अधिक छवि बढ़त हिंडोरा
ऊंचो मिलत द्रुमनसों जाई। लेत जहांते सुमन कन्हाई॥
ज्यों ज्यों पैंगबढ़ति अति भारी। त्यों त्यों डरतिकुँवरिसुकुमारी

राखु राखु सखियन सहित, सौंह दिवावत जात।
जब नहिं सकत सँभारि तन, तब पियसों लपटात॥
हँसत परस्पर बाल, तब हिंडोल राखत पकरि।
करति चरित्र रसाल, पिय प्यारी अति रस भरे॥

इक उतरत इक चढत हिंडोरें। इक आतुर चढ़िबेको दौरें॥
एक कहति मोहिं देहु उतारी। एक चढ़नको बिनवति नारी॥
सबके मनकी रुचि हरि राखैं। मधुर वचन सबसों हँसि भाखैं॥
कबहुँ अकेले झूलन मोहन। गावति युवती सब मिलि गोहन॥
कबहूं युवतिन देत चढ़ाई। आप झुलावत कुंवर कन्हाई॥
कबहूँ मुरली मन्द बजावैं। कबहूं सङ्ग सबनके गावैं॥
बिच बिच देत कोकिला टेरे। रहे सजल घन झुकि अति नेरे॥
परत फुवार मन्द श्रमहारी। बहत त्रिविध अति सुखद बयारी॥
चातक पिय पिय रटत पुकारी। राधा नाम रटत बनवारी॥
ऐसे गोपिनसों मन मोहन। करत केलि कौतूहल गोहन॥
अति आनन्द सबन उपजावैं। निरखि सुमन सुरगण बरषावैं॥
जय जय जय धुनि बोलत बानी। धन्य धन्य ब्रज कहत बखानी

कहत ब्रज धनि अमर अम्बर, सकल मन आनँद भरे।
कहत मन मन इहै चाहत, हम न विधि ब्रज द्रुम करे॥

भक्त हित प्रभु अज सनातन, ब्रह्म तनु धरि अवतरे।
वर्णि कापै जात सो सुख, करत जो निज ब्रज हरे॥
नित लीला आनन्द नित, नित नव मङ्गल गान।
धनि धनि जिनके चित रहत, ब्रजवासी प्रभु ध्यान॥
हरिके चरित रसाल, जे सप्रेम गावत सुनत।
रहत सदा नँदलाल, ब्रजवासी तिनके निकट॥

---

## फाल्गुन वर्णन लीला।

जय जय जय श्रीनित्य विहारी। नित्यानन्द भक्त हितकारी॥
ब्रह्मरूप अवतरे मुरारी। नित नव करत बिहार बिहारी॥
नित्य नवल गिरिधर अभिरामा। नित्य रूप राधा ब्रजबामा॥
नित्य रास जलकेलि बिहारा। नित्य मानखण्डन व्यवहारा॥
नित्य कुञ्जसुख नित्य हिण्डोरा। नित्य प्रेम सुखसिन्धु हिलोरा
नित्य नवल हित हरि सङ्ग जोरी। नित्य नवल छबि मन्मथचोर
नित वृन्दावन घन सुखदाई। सदा बसन्त रहत जहँ छाई॥
सदा सुमन नव पल्लव डारी। सदा त्रिविध मारुत सुखकारी॥
सदा मधुप मधुमाते डोलैं। कोकिल कीर सदा कल बोल॥
सुनि धुनि नारि हृदय सुख पावैं। मनहीं मन अभिलाष बढ़ावैं॥
वारि वारि कहि पिय सुख पावैं। ऋतु वसन्त आई समुझावैं॥
फागु चरित अति साद हमारे। खेलैं मिलि सब सङ्ग तुम्हारे॥

ब्रजवनिता हरिसों हरषि, कहति सुनहु ब्रजराज ।
देखहु वन शोभा निरखि, अतिहि विराजत आज ॥
खेलत हैं दोउ फाग, मानहुँ मदन वसन्त मिलि ।

लखि उपजत अनुराग, यह रस अधिक सुहावनो ॥
द्रुमन मध्य टेसू तरु फूले । करत प्रकाश अग्नि समतूले ॥
मानहु निज निज मेरु सुहाई । हर्षि सबन होलिका लगाई ॥
कुञ्ज कुञ्ज कोकिल सुखदानी । बोलति बिमल मनोहर बानी ॥
निलज भई मनु ब्रजकी नारी । गावति गृहपति चढ़ी अटारी ।
नाना खग केकी शुकनारी । जहँ तहँ करत कुलाहल भारी ॥
मनहुँ परस्पर नर अरु नारी । देत दिवावत हैं सब गारी ॥
प्रफुलित लताविलोकत जितहीं । अलिमधुमत्तजातचलि तितही
मानहुँ गणिका देखि सुहाई । मतवारे लपटत हैं धाई ॥
पुहुप पराग अबीर सुहाई । लिये समीर फिरतहैं धाई ॥
संयोगिन रस अनरस विरहिन । कर क्रीड़त मनभायो सबहिन ॥
नवपल्लवदल सुमन सुहाये । वर्ण वर्ण विटपन छवि छाये ॥
जनु ऋतुराज सङ्ग छवि बाढ़े । बहु रङ्ग भरे लसत जनु ठाढ़े ॥

भँवर गुञ्ज निरझार शब्द, बजत दुन्दुभी चारु ।
रच्यो मण्डली मदन जनु, जहँ तहँ विविध विहारु ॥
वृन्दाविपिन समाज, कहँ लगि वर्णि वखानिये ।
कान्ह तुम्हारे राज, क्रीड़त सब आनन्द भरे ॥

रचहु फाग सुख अब नँदलाला। कर जोरे बिनवति सब बाला॥
सुनि गोपिनके बचन कन्हाई। रची फागलीला सुखदाई॥
बिहँसि कह्यो तब श्री गिरिधारी। सजहु समाज जाय तुम प्यारी॥
हमहूं सखन सङ्गलै आवैं। फागुरङ्ग ब्रजमाहिं मचावैं॥
यह सुनि मुदित भई ब्रजबाला। गये सदनको मदनगोपाला॥
सखा वृन्द सब श्याम बुलाये। सुनत सकल आतुर जुरि आये॥
हँसि हँसि उन्हैं श्याम समुझायो। आयो फागुन मास सोहायो॥
भैया हो सब खेलैं होरी। भरो अबीर गुलालन झोरी॥
यह सुनि ग्वाल बाल अनुरागे। होरी साज सजन सब लागे॥
कञ्चन कलश अनेक सुहाये। केशर टेसू रङ्ग भराये॥
अतर अरगजा विविध विधाना। लिये सुगन्ध भाजन भरि नाना॥
पीत अरुण बर वसन बनाये। नेह सुगन्धन अति मन भाये॥

अङ्ग अङ्ग भूषण ललित, उर सुमननकी माल।
नयन सैन शोभाहरन, बनी मण्डली ग्वाल॥
पान भरे मुख लाल, उसकाये बाहैं झँगा।
फेंटन भरे गुलाल, पिचकारी कञ्चन बरन॥

फटा पीत श्याम शिर सोहै। तुर्राकी झलकन मन मोहै॥
तापर मोर चन्द्र छबि न्यारी। कोटि चन्द्र रवि छबि बलिहारी॥
केशर खौर भाल शुभकारी। बीच तिलककी रेख शृँगारी॥
भौहैं कुटिल नयन रतनारे। कुण्डल झलक केश घुँघरारे॥
चारु कपोल मनोहर नाशा। मन्द हंसनि द्युति दशन प्रकाशा॥

अधरे अरुण चिबुकछविसीवा । कटि अति ललित कंबुकलग्रीवा
झँगा झीन रङ्ग पीत सुहायो । शोभित तनु छबिसों लपटायो ॥
घेरदार सञ्जाफ जरीको । झमकि रही छबि उमग भरीको ॥
तैसिय कमल चरणपर पनहीं । कञ्चन मणिमय मोहत मनहीं ॥
कर चूड़ामणि जटित अँगूठी । लसत अँगुरियन भांति अनूठी॥
बाहु त्रिजेठा जटित रतनको । चन्दन चित्रित श्याम लतनको ॥
झलकत झीन झँगाके माहीं । सो छबि कहत बनत मुख नाहीं

कटिपर पट पीरो कसे, कनक किनारे चार ।
तापर खोंसे मुरलिका, उर मुक्तनके हार ॥
तापर ललित विशाल, माल गुलाब प्रसूनकी ।
चितवन हँसन रसाल, बन्यो छैल नँदलाड़िलो ॥

बन्यो यूथ सब रंग रङ्गीलो । मधि नायक नन्दनंद छबीलो ॥
खेलत श्याम चले ब्रजहोरी । उड़त अबीर गुलालन झोरी ॥
बाजत ताल मिरदङ्ग सुहाई । डफ मुहचङ्ग बीन सहनाई ॥
और नगारनकी कल जोरी । बीच बीच मुरली सुर बोरी ॥
कोउ नाचैं कोउ भाव बतावैं । होरी गीत मिले सुर गावैं ॥
ब्रजवीथिन वीथिन सब डोलैं । हो हो होरी मुखते बोलैं ॥
मिलत गलिनमें जो नर नारी । बचत नहीं दीन्हें बिन गारी ॥
अबिर गुलाल तासुपर डारैं । भरि भरि पिचकारिन रङ्ग मारैं ॥
बोलत होरी बचन सुहाई । करि छांड़त सब मनकी भाई ॥
गोरस कहत माने डोलैं । मगन मगनके फटका बोलैं ॥

जो कोउ भाजि रहति घर बैठी। बरिआई आनत तिहि पैठी॥
अटन चढ़ी देखैं ब्रजनारी। छज्जनते छुटहिं पिचकारी॥

गावत होरी गीत सब, देहिं दिवावहिं गारि।
डारत अबिर गुलालको, झोरी भरि भरि नारि॥
द्रत हरिके सँग ग्वाल, मुदित गुलाल उड़ावहीं।
पिचकारिनके जाल, वर्षत भरि केशर ललित॥

होत कुलाहल आनँद भारी। रङ्ग अबीरन महल अटारी॥
है गइ ब्रजकी बीथिन बीचा। अबिर गुलाल कुमकुमाकीचा॥
ऐसे सङ्ग लिये सब ग्वाला। करत फागु कौतुक नन्दलाला॥
भीजि रहे केशरिरँग बागे। नखते शिख गुलालते पागे॥
आनँद भरे मुदित सब गावत। गुणी जननके बाल नचावत॥
बरसानेको चले कन्हाई। यह सुधि कुँवरि राधिका पाई॥
तुरत सखी सब बोलि पठाई। सुनत सकल आतुर उठि धाई॥
नवसत सकल मनोरथ साजैं। बरण बरण बर बसन बिराजैं॥
बेंदी भाल विराजत रोरी। मुख तँबूल तनुकी छबि गोरी॥
होरी खेल सुनत सब चोपी। आई प्रिया निकट सब गोपी॥
हँसि हँसि सबसों कहत किशोरी। चलौ श्याम सँग खेलैं होरी
पकरि आज मोहनको लीजै। मनभाई तिनसों सब कीजै॥

ललितादिक ब्रजनागरी, मिलि सब सजोसमाज।
तिनमें श्री कीरतिकुँवरि, सबहिनकी शिरताज॥

परम रूपको रास, गुणागार नवनागरी।
राजति भरी हुलास, मनमोहन मनभावनी॥
नख शिखलौं सब सुन्दरताई। रही छाय छवि पुञ्जनिकाई॥
भूषण जाल लाल नग केरे। शोभित अङ्गन सुभग घनेरे॥
सुखछवि वर्णि सके सो को है। जाहि देखि मोहन मन मोहै॥
लसति नवलतनु सुन्दर सारी। केशरिया कीनी जरतारी॥
गुलगचको लहँगा चटकीलो। घेर घनो अति छबिन छबीलो॥
कङ्कण किङ्किणि नूपुर बाजैं। होरी साज सजे सब राजैं॥
रङ्ग गुलाल सङ्ग सब लीनो। सोहहि युवति यूथ रँग भीनो॥
मृगमद केशर मेल मिलाई। मथि मथि लीन्हे कलश भराई॥
हाथनमें लीन्हे नवलासी। चलीं श्याम घनपै चपलासी॥
युवति यूथ लै सङ्ग किशोरी। गही जाय आगे ब्रजखोरी॥
उतते आये मदनगुपाला। सोहत सङ्ग भीर नव बाला॥
देखि परस्पर आनँद बाढ्यो। दुहुँ दिशि गोल भयो रुकि ठाढ्यो

भरि भरि पिचकारी हरषि, इतते धाये ग्वाल।
नवलासी लै लै करन, सिमिटि चलीं उत बाल॥
भो भटभेरो आन, परी मार विच रङ्गकी।
करत न कोऊ कान, मन भाई मुखते कहत॥

भरि भरि मूठि गुलाल चलावैं। हो हो होरी वचन सुनावै।
केशरि रँग लै लै पिचकारी। तकि तकि मारत पिय अरु प्यारी
दुहुँ दिशि चलत झराझर जेरी। भई गुलालकी घटा अन्धेरी॥

आय परत जाके जो पैड़। सो केशरिके कलश उलेड़ैं॥
लगि लगि रहे चीर अङ्गनसों। पहिचाने न परत रङ्गनसों॥
मुखशोभा कछु कहि नहिं जाई। रही गुलाल झलक छवि छाई॥
कवि उपमा कहि कहा बखाने। शशि सरोज दोऊ सकुचाने॥
सकुच रहित गारी सब गावैं। दुहुँ दिशि लैलै नाम चुकावैं॥
बाजत बीन रबाब तँबूरा। ताल पखावज ढोलक तूरा॥
नवलासी चपलासी गोरी। मारति ग्वालन कहि कहि होरी॥
यक भागे यक ढूँढ़न लागे। एक अबीर डारि सुख भागे॥
मच्यो खेल रँग रस अति भारी। सखियन बोलि कह्यो तबप्यारी॥

छल बलकर कछु भेदसों, मोहन पकरे जाय।
आंख आंजि मुख मांडि तब, छांड्यो हहा कराय॥
हैं अति लङ्गर कान्ह, ऐसे ये नहिं मानिहैं।
बसन चुराये आन, लेहिं दांव सो आपनो॥

तब यक तिय हलधर वपु काछ्यो। चली ओढ़ि नीलाम्बरआछ्यो॥
निकसि यूथते ह्वैके न्यारी। निकसी जिन ठाढ़े बनवारी॥
हरि जान्यो आये बलदाऊ। चले अकेले लेन अगाऊ॥
गये निकट ताके हरि जबहीं। धरे जाय औचक तिन तबहीं॥
आई धाय और सब नारी। लीन्हे पकरि श्याम अंकवारी॥
हँसि हँसि कहत सकल ब्रजबाला। ढीठो बहुत दई तुम लाला॥
सो फल आज तुम्हैं सब देहैं। दांव आपनो नीको लेहैं॥
ठाढ़े हँसत दूर सब ग्वाला। कहत गये पकरे नन्दलाला॥

हँसति कुँवरि राधा दुर ठाढ़ी। पियमुखनिरखिसकुचउरबाढ़ी॥
किनहू लियो पीतपट छोरी। काजर दियो किनहु बरजोरी॥
काहू वेणी शीश सँवारी। मुख गुलाल लावति कोउ नारी॥
काहू उर अरगजा लगायो। काहू रंग शीश ढरकायो॥

गये छूटि मोहन तबै, गोहन चले पराय।
आय मिले निज सखनमें, रही नारि पछिताय॥
कर मींजति पछितात, कहति परस्पर बाल सब।
भलो बनो थो घात, दांव लेन पायो नहीं॥

गये आज तुम भजि नन्दलाला। जैहो कहां काल्हि गोपाला॥
करि राखी जैसी तुम हमसों। सो हम दांव लेयँगी तुमसों॥
पीताम्बर अपनो यह लीजे। पठै ग्वाल काहूको दीजे॥
के आपही आय ले जाहू। अब हम नहीं पकरिहैं काहू॥
हँसत सखा सब तारी दै कै। वेनी छोरत हैं कर लैकै॥
कहत जाहु फिरि कुँवर कन्हाई। पीताम्बर लै आवहु जाई॥
भाजत हार हियेते टूटे। पीताम्बर गहने दै छूटे॥
तबहि कह्यो हरि नन्द दुहाई। अबहिं पीतपट लेत मँगाई॥
सखा एक हरि निकट बुलायो। युवति भेषकरि ताहि पठायो॥
गयो सुमिलि युवतिनके माहीं। हँसत जाय ठाढ़ो पट पाहीं॥
कहत देहु पट धरैं दुराई। अब नहि पावहि कुवँर कन्हाई॥
अब यह पट हरिको तब देहैं। दांव आपनो जब हम लेहैं॥

ऐसो कहि पट लै लियो, आयो चमकि गुवाल।
फेरयो करसों श्याम लै, चकित भई सब बाल॥
लखि हरिकी चतुराय, भई थकित ब्रजबाल सब।
धिरवत कहत सुनाय, भली बनाई आज तुम॥

गयो आज बचि करि चतुराई। अब बदिहैं जो बचहु कन्हाई॥
अब तो लाग लगीहै हमसों। जब लगि दांव लेति नहि तुमसों
पकरि नचावहि तुमहि बिहारी। तब कहिहौ हमको ब्रजनारी॥
कहत श्याम अब भये सयाने। इन बातन कछु भय नहि माने॥
जान लिये हम कपट तुम्हारो। अब तुम कह करि सकत हमारो
अबहीं ग्वालन देहु लगाई। छांड़ौं अपनी विनय कराई॥
नेक कानि मानतहौं तिनकी। सखी कहावति हौ तुम जिनकी
यह सुनि तब युवती मुसकानी। कहा करत हौ श्याम सयानी॥
तुम्हें नन्दकी सौंह कन्हाई। जो नहि बिनय करावहु आई॥
सखन सहित तब मोहन करषैं। लैलै पिचकारिन रँग वरषैं॥
उत सब युवती ह्वै इकठौरी। लै लै नवलासी सब दौरी॥
दियो सबनको मारि हटाई। भाजि चले तब कुंवर कन्हाई॥

भाजे भाजे कहत सब, तारी दै ब्रजबाल।
जो तुम जाये नंदके, ठाढ़े रहौ गुपाल॥
फिरे बहुरि घनश्याम, सखा वृन्द सब फेरिकै॥
शिथिल करी ब्रजबाम, झोरी मारि अबीरकी॥

ऐसे खेलत रस मिलि होरी। इत मोहन उत कुंवरि किशोरी॥

गोपी ग्वाल संग सब लीने । मोहन सकल रंग रस भीने ॥
कबहूँ परस्पर गावत गारी । कबहुं करत रस वाद विहारी ॥
कबहुं अबीर गुलाल उड़ावै । कबहूं रंग सलिल बरषावैं ॥
अरस परस छबि निरखत दोऊ । परमानन्द मगन सब कोऊ ॥
चढ़े विमानन नभ सुर देखैं । जन्म सफल व्रजको करि लेखैं ॥
पुनि पुनि हर्षि सुमन वर्षावैं । जय जय करि प्रभुको यश गावैं॥
ऐसे श्याम रङ्ग रस राख्यो । ललता आय बीच तब भाख्यो ॥
आज श्याम तुम औचक आये । हम काहू जानन नहिं पाये ॥
बहुत करी तुम आय ढिठाई । भई सांझ अब कुंवर कन्हाई ॥
काल्हि प्रात है वार हमारी । देखैंगी मनुसाय तुम्हारी ॥
ऐहै नन्दगांवलों प्यारी । रहियो सजग लाल गिरिधारी ॥

प्यारी करते पान लै, दीन्हें सखी सुजान ।
प्रात अवधि वदि खेलको, राख्यो दुहुं दिशि मान ॥
घर आये घनश्याम, सखन सङ्ग गावत हँसत ॥
गई प्रिया निज धाम, सखिन सहित आनँद भरी ॥

परमानन्द सकल व्रजनारी । कृष्णकेलि सुखकी अधिकारी ॥
कोंहु लाजको भय नहिं मानैं । कृष्ण विलास सदा उर आनैं ॥
श्रीराधिका कुंवरि सुखदाई । प्रात सखी सब बोलि पठाई ॥
कियो विचार सबन मिलि गोरी । नन्दगांव खेलैं चलि होरी ॥
मिलि मोहनसों यह सुख कीजै । फगुवा नन्द महरसों लीजै ॥
साभा सकल खेलकी लीन्हीं । रङ्ग गुलालन सों बहु कीन्हीं ॥

मथि मथि विविध सुगन्धन लीन्हे। भांति अनेक अरगजा कीन्हे
भरि भरि भाजन कनक सुहाये। अमित सुगन्ध न जाहिं गनाये॥
लै कांवरिन अनेक अपारा। चले सङ्ग सजि सुभग शृँगारा॥
ग्वालिनि यौवनगर्व गहेली। श्रीराधा सङ्ग चलीं सहेली॥
कुङ्कुम उबटि कनक तनु गोरी। रूपराशि सब नवलकिशोरी॥
एक बयस सुन्दर सब राजें। निरखत कोटि मदन लिय लाजैं॥

नवसत साजि शृँगार तनु, अङ्ग अङ्ग सब ग्वारि।
चन्द्रावलि ललतादि सब, अमित गोप सुकुमारि॥
को कवि बरणै पार, प्यारी सब नन्दलालकी।
शोभा अमित अपार, उपमाको त्रिभुवन नहीं॥

सुमन सुगन्धन गूँथी बेणी। लटकत कनक छबी छबिश्रेणी॥
मोतिन मांग बनी अति नीकी। केशरि आड़ जड़ाऊ टीकी॥
कुटिल भौंह अलकै घुंघरारी। मनमोहन मन मोहनहारी॥
खञ्जन नयन मधुप मृग हारे। अञ्जनरेख सुभग अनियारे॥
श्रवणन तरवण रबि सम ज्योती। नकबेसरि लटके गजमोती॥
दशन कुन्द विम्बाधर सोहैं। चिबुक नीलकण छबि मन मोहैं॥
कण्ठ कपोत मोति उर हारा। जनु युग गिरि बिच सुरसरिधारा॥
कुचचकवा मुखशशि भ्रम भूले। बैठे बिछुरि मनहुं दुहुँकूले॥
करकङ्कण चूरी गजदन्ती। नख मणि माणिक मेटत कन्ती॥
नाभी हृदय कहा कबि वरणै। कटि मृगराज लेत जनु निरणै॥

चरणन नूपुर बिछिया बाजें। चालमराल चलत कल राजें॥
लहँगा कसब पीतरङ्ग सारी। चमक चहूं दिशि लाल किनारी॥

नख शिख सब शोभा भरी, बनी छबीली बाम।
तिनमें श्रीराधा कुंवरि, राजत अति अभिराम॥
लई सबन गहि हाथ, पीरे सुमननकी छरी।
होरी हरिके साथ, नंदगांव खेलन चलीं॥

प्रम प्रीतिके रसबस पागीं। नंद नन्दन पियकी अनुरागीं॥
बाजे सुघर बजावें गोरी। गावहिं कोकिल कंठ निहोरी॥
करति केलि कौतुक मनमाहीं। अबिर गुलाल उड़ावत जाहीं॥
लीनो घेर नंदगृह जाई। बसत तहां मनहरन कन्हाई॥
शोभित रूप लतासी गोरी। गावत फाग नन्दकी पोरी॥
सुनि सुन्दर वर बाहर आये। हलधर ग्वाल गुपाल बुलाये॥
एकन एक भई सब नारी। होरी खेल मच्यो अति भारी॥
मृगमद कुङ्कुम चंदन घोरे। लै लै पिचकारी कर दोरे॥
गोपी ग्वाल भरे झकझोरी। अबिर गुलालन मारहिं गोरी॥
उड़त गुलाल घटा घन छाई। महि केशरिकी कीच सुहाई॥
बाजे सरस मधुर सुर बाजें। गान सुनत गण गंधर्व लाजें॥
पकरन एक एक छुटि भाजें। गारी देत एक तजि लाजें॥
हो हो होरी कहत सब, भरे परम आनन्द।
सखिन सङ्ग उत लाड़िली, इतै सखा नन्दनन्द॥

औचक धाई वाम, गहन हेतु नन्दनन्द तब।
गहि पाये बलराम, निकसि गये हरि भाजिकै॥
अति निशङ्क सब ब्रजकी गोरी। तामें अवसर पायो होरी॥
भरि भरि केशरिरङ्ग कमोरी। लै लै हलधरके शिर ढोरी॥
अबिर उड़ाय अँधेरो कीनो। ललता गहि दृगकाजर दीनो॥
व्यंग्य वचन सब कहत सुहाई। लेहु रोहिणी मात बुलाई॥
हास विलास विविध कहि गावैं। इत उत बल कहुँ जान न पावैं॥
फगुआ मनभावतो मङ्गाई। हलधर छाड़े विनय कराई॥
हँसत सखन मिलि कुवँर कन्हाई। आये दोऊ आंख अञ्जाई॥
तब हलधर दुचिते हरि कीन्हें। युवतिनधाय श्यामगहि लीन्हें॥
सिमटे सखा छुड़ावन धाये। युवतिनसे हरि छुटन न पाये॥
लै लै नवलासी नव बाला। दिये हटाय मारि सब ग्वाला॥
श्यामहिं जीत यूथमें लाई। भई सबनके मनकी भाई॥
रस लम्पट नन्दनन्द कन्हाई। दीन्हो आपुन आनि गहाई॥
लै आई प्यारी निकट, हँसति कहति ब्रजबाल।
कहिये अब कैसी बनी, बहुत करत हौ गाल॥
एक कहति मुसकाय, बसन हरेते आपुही।
हमहूं बसन छुड़ाय, लेहिं दाव अब आपनो॥
कान्ह कह्यो करिहौ कह मेरो। सोई पाय भयो अब नेरो॥
ऐसे कहति रूप अनुरागीं। मुरली छीनि बजावन लागीं॥
एकनि लियो पीतपट छोरी। एक रङ्ग गागरि लै दौरी॥

हरिके हाथ गहे चन्द्रावलि । कज्जल लै आई सज्ञावलि ॥
ललना लोचन अञ्जन लागी । एक श्रवणलगि कछु कहि भागी
एक चिबुक गहि वदन उठावै । एक गुलाल कपोलन लावै ॥
घेरि रहीं परिखाकी नाई । करति सबै निज निज मनभाई ॥
काहू वेणी गूंथि सम्वारी । काहू मोतिन मांग सुधारी ॥
पहिरावनि लहँगा कोउसारी । काहूले अङ्गिया उर धारी ॥
निरखि निरखि प्यारी मुसुकाई । राखत आपन कृष्ण बड़ाई ॥
काहू वदन अभूषण लीन्हें । नेकहु श्याम परत नहिं चीन्हें ॥
वधू वधू कहि सवहिन गायो । प्यारी निकट आनि बैठायो ॥

निरखि वदन प्यारी हँसी, श्याम हँसे सकुचाय ।
गहि प्यारी निज पाणि तब, दीन्हों पान खवाय ॥
सखियां करत कलोल, गांठि जोरि आञ्चर दई ।
व्रजमें रहे अडोल, यह जोरी युग युग सदा ॥

लीन्हें मध्य श्याम सब ग्वारें । मग्न भई अब वपु न सँभारें ॥
पिय प्यारी मुखकी छवि जोहें । अरस परस दोऊ मन मोहें ॥
रङ्गन भरे रङ्गीले दोऊ । त्रिभुवन छवि पटतर नहिं सोऊ ॥
एक नयनकी सैन मिलावें । एक युगल छवि लखि सुख पावें ॥
गावति एक महरिकी गारी । वजें मञ्जीरा डफ करतारी ॥
भरि भरि मूठ गुलाल उड़ावें । ग्वाल निकट कहुँ लगन न पावें ॥
रही गुलाल घटा छवि छाई । फूली मानहुँ सांझ सुहाई ॥
तब ललताको यशुमति माई । घर भीतरसे बोलि पठाई ॥

हँसिकै महरि बहुत सनमानी । विनती करी बहुरि मृदु बानी ॥
आज भई भोजनकी बिरियां । देखहु अब राधाकी उरियां ॥
खान पान करि श्रमहिं निवारो । बहुरि खेलियो निकट सबारो
ल्यावहु अब लाड़िलिहि लिवाई । कीरति जीको सौंह दिवाई ॥

तब यशुमतिपहँ राधिकाहि, ललता चली लिवाय ।
सकुच जानि घनश्याम अति, छूटे हाहा खाय ॥
हँसे ग्वाल मुख हेरि, तनु शोभा देखत खरे ।
बलको लीन्हो टेरि, बन्यो आजु अति सांवरो ॥

कहत सखा सब दै दै सोहन । ऐसेहि चलो नन्दपै मोहन ॥
चले भुजा गहि तहां लिवाई । छबि अनूप वह बरणि न जाई ॥
उत सब युवतिनके चितचोरे । चले लाल इतके अति भोरे ॥
अति छबि देखि हँसे नन्दराई । जननी सुनति दौरि तहँ आई ॥
निरखि हरषि लीन्हें उर लाई । अति आनन्द हृदय न समाई ॥
वार बार कर लेत बलैया । किन यह कीन्हों हाल कन्हैया ॥
ये ऐसी सब ब्रजकी बाला । सकुच हँसे मनहीं नन्दलाला ॥
तुरत श्याम सोइ वेष उतारयो । कटि पटपीत मुकुट शिरधारयो
युवतिन सहित कुँवरि श्रीश्यामा । आई नन्दमहरिके धामा ॥
भूषण वसन नवीन बनाये । यशुमति लै सबको पहिराये ॥
अति सनेह वृषभानुदुलारी । अपने हाथ शृँगारि सँवारी ॥
निरखि रूप प्रमुदित नँदरानी । वारति राई नोन सिहानी ॥

विविध भांति मेवा मधुर, और मिठाई आनि।
सादर सबको गोदमें, भरे हरषि नँदरानि॥
रह्यो नन्दगृह छाय, होरीको आनँद अति।
कहति यशोमति माय, फगुआ कहो सो दीजिये॥

ललकि कह्यो औरै कछु नाहीं। लेहैं कान्हर फगुआमाहीं॥
देखे बिन रहि सकहि जु उनको। तौ मांगे देहैं हम तुमको॥
बाढ़ौ वंश महर नँदराई। चिरजीवहु बलराम कन्हाई॥
जिनसे यह सुख व्रजमें लीजत। यह अशीश सबही मिलिदीजत॥
अति आनन्द मगन व्रजवासी। अष्ट सिद्धि नव निधिसबदासी॥
गोपी ग्वाल भये अनुकूला। न्हान चले यमुनाके कूला॥
जहँ वर विटप विविध रँग फूले। गुञ्जत भ्रमर मत्त रस भूले॥
शीतल सुखद छांह छवि छाई। फूलडोल तहँ रच्यो कन्हाई॥
झूलत रङ्ग भरे पिय प्यारी। गावत मिले गोप अरु नारी॥
ऐसे दूर खेल श्रम कीनो। अति आनन्द सबनको दीनो॥
तब यमुनाजल श्याम नहाये। महिदेवन शिर तिलक बनाये॥
कियो दान तिनको नँदलाला। वर्षत सुर सुमननकी माला॥

वरषत माल प्रसून सुरगण, निरखि छवि आनँद भरे।
श्रीनन्दसुत सुखधाम पूरण, काम सब व्रजजन करे॥
लूटि सुखरस फागको सब, मुदित निज निज गृह गये।
गोप बाल गोपाल बल, निज धाम आये छवि छये॥

कियो जो फाग विहार हरि, शारद लहै न पार।
ब्रजबासी सो किमि कहै, लीला सिन्धु अपार॥
जन मनके सुखदान, चरित ललित गोपालके।
गावत सुनत सुजान, ब्रजबासी जन रति लहत॥

---

## सुदर्शन शापमोचन लीला।

पूरण ब्रह्म कृष्ण भगवाना। ब्रजबिलास जो कीन्हे नाना॥
शिव विधि शारद नारद शेषा। कहि नहिं सकहिं गणेश अशेषा॥
कीन्हे चरित रहस्य अपारा। ब्रजयुवतिन मिलि रस शृङ्गारा॥
साध नहीं काहू मन राखी। करी सकल जो जाने भाखी॥
ब्रजबिलास रसकेलि बड़ाई। भांति अनेक मुनीशन गाई॥
ब्रजबासी प्रभु सब गुणनायक। जो कछु करहिं सोसबही लायक
सखा सङ्ग सबको सुख दीनो। मन भायो गोपिनको कीनो॥
महरि नन्द पितु मात कहाये। तिनके हेत देह धरि आये॥
बालकेलि रस सुख करि भारी। दियो परम आनन्द मुरारी॥
गिरि धरि ब्रजजन सगरे राखे। इन्द्रादिक सुर जय जय भाखे॥
गाय बच्छ बन माहिं चराये। कालीनाग नाथि लै आये॥
करे चरित अनेक कृपाला। भक्तन हित प्रभु दीनदयाला॥
भक्तनके हित लेत हैं, प्रभु युग युग अवतार।
असुर मारि थापत सुरन, हरत भूमि भव भार॥

गावत सन्त अपार, यश पुनीत पावनकरन।
पूरि रह्यो संसार, करता हरता आप हरि॥
इक दिन प्रभु भक्तन सुखदाई। नन्द हृदय यह मति उपजाई॥
चलिये आज सरस्वतितीरा। पूजन शङ्कर सकल अहीरा॥
लिये सङ्ग बल मोहन दोऊ। गोपी ग्वाल चले सब कोऊ॥
करत कुलाहल आनँद भारी। पहुँचे तहां सकल नर नारी॥
सरित पुनीत कियो अस्नाना। महिदेवन दीन्हें सब दाना॥
देखि देवथल अति सुख मानी। सादर पूजे शम्भु भवानी॥
पूजा करत सांझ ह्वै आई। श्रमित भये सब लोग लोगाई॥
खान पान करि सहित हुलासा। कियो रैनि तहँ बनमें बासा॥
सोये हरि हलधर सुखरासी। तब सोये सब ब्रजके बासी॥
आधी निशि अजगर यक आयो। नन्दमहरके पग लपटायो॥
उठे पुकारि चौंकि नँदराई। आये ब्रजवासी सब धाई॥
अजगर देखि डरे सब कोई। लगे छुड़ावन छुटत न सोई॥
हारे यत्न अनेक करि, सर्प न छोड़ै पांय।
कृष्ण कृष्ण करि नन्द तब, गुहराये अकुलाय॥
अति व्याकुल गये ग्वाल, बोले श्याम जगायकै।
कह्यो महा यक व्याल, लपटानो पग नन्दकै॥
सुनत उठे आतुर गोपाला। निकट जाय देख्यो सोइ व्याला॥
परस्यो ताहि कमलपद पावन। पाप शाप सन्ताप नशावन॥
छुवत चरण तिन लइ जमुहाई। धर्यो दिव्य तनु बरणि न जाई

लाग्यो हाथ जोरि गुणगावन। जय जय जगतईश जगपावन॥
सब देवनके देव मुरारी। जय जय जय ब्रजगोप बिहारी॥
ऋषि अङ्गिराशाप मोहिं दीन्हो। सो वह बहुत अनुग्रह कीन्हो॥
जाते प्रभुको दर्शन पायों। जन्म जन्मको पाप नशायों॥
ऐसी विनती प्रभुहि सुनाई। आयसु पाय चल्यो शिरनाई॥
बहुरि नन्दको शीश नवायो। देखि महर अति अचरज पायो॥
पूछ्यो जाय नन्द तब भेवा। तुम तौ दिव्यरूप कोउ देवा॥
सर्प शरीर धर्‍यो क्यों आई। सो सब हमसों कहौ बुझाई॥
नन्दबचन सुनि मन सुख पाई। तब उन अपनी कथा सुनाई॥

हौं यशगायक श्यामको, नाम सुदर्शन होय।
सुन्दर विद्याधरनमें, मोते और न कोय॥
इक दिन ऋषिके धाम, गयों धरे अभिमान मन।
कियो न तिन्हैं प्रणाम, रूप द्रव्यके गर्बसे॥

ऋषि अङ्गिरा बड़े विज्ञानी। जानि मोहिं जड़ अति अभिमानी
दीन्हों शाप कोप करि एहा। जाय होहु शठ अजगर देहा॥
ऐसे कह्यो मोहिं ऋषि जबहीं। अजगर भयों तुरत मैं तबहीं॥
देखि दुखित म्वहिं परम कृपाला। भये बहुरि मुनिराय दयाला
तब करि कृपा कह्यो यह मोहीं। कृष्ण दरश ह्वै है जब तोहीं॥
परशि चरणरज पाप नशैहे। बहुरि आपनो तनु तब पैहे॥
ते पद आजु परशि सुखदाई। भयो पुनीत रूप निज पाई॥
जो पदरज ब्रह्मा नहिं पावैं। शिव सनकादि सदा चित लावैं॥

मुनि प्रसाद सो रज मैं पाई। कहँ लगि मुनिकी करौं बड़ाई॥
दीनदयालु जगत हितकारी। सन्त समान कौन उपकारी॥
ऐसे विद्याधर सुख मानी। नन्दहि अपनी कथा बखानी॥
बहुरि कृष्णचरणन शिर नाई। गयो लोक निज बहु हर्षाई॥

नन्दादिक आनन्दसब, महिमा देखि पुनीत।
कहत परस्पर कृष्णगुण, गई तहां निशि बीत॥
आये सब ब्रजधाम, प्रात होत आनन्दसों।
सङ्ग श्याम बलराम, प्रभु ब्रजवासी दासके॥

———

## शङ्खचूड़वध लीला।

एक दिन सुन्दर मदनगोपाला। श्रीबलदेव और सँग ग्वाला॥
दिवस अन्त निशि समय सुहाई। उदित उड़प उड़गण छबिछाई
प्रफुलित चारु मालती सोहै। कुमुद सुगन्ध पवन मन मोहै॥
गुञ्जत भँवर मत्तरस लोभा। चले तहां देखन बनशोभा॥
ग्वालन मिलि गावत दोउ भाई। कबहुँ बजावत वेणु कन्हाई॥
ब्रजवनितागण चहुँदिशि घेरे। चले सुनत वंशीकी टेरे॥
जिनके तन मन बसे कन्हाई। मग्न भई छबि लखि अधिकाई॥
पहुँचीं श्री वृन्दावन जाई। गोरी ग्वाल सङ्ग समुदाई॥
विहरत बन विहार दोउ भाई। गोपी ग्वाल साथ सुखदाई॥
मन्द मन्द गति इत उत डोलैं। मृदु मुसकाय लेत मन मोलैं॥

रूपराशि निधिछबि दोउ बीरा। बैठे जाय यमुनके तीरा॥
पाछे सखावृन्द सब सोहैं। सन्मुख गोपी जन मन मोहैं॥

करत सबै मिलि मुदित मन, भरे प्रेम रस माहिं।
भये मगन उनमत्त जिमि, रह्यौ देहसुधि नाहिं॥
बाजत ताल मृदङ्ग, बीन चङ्ग मुरली मधुर।
छाय रह्यो रस रङ्ग, उठत तरङ्गैं तानकी॥

प्रेममगन सब घोषकुमारी। हरिछबि निरखति सुरत बिसारी॥
शिथिल वदन कच शीश सुहाये। विह्वल तन मन श्याम बसाये
को हम कहां नहीं कछु जाने। नयन श्यामके रूप लोभाने॥
रही श्रवण मुरलीधुनि छाई। गृह बनकी कछु सुधि नहिं राई॥
चन्द्रवदन चपलासी गोरी। हरिमुख नाद सुनत भईं भोरी॥
तहां यक्ष औचक इक आयो। शङ्खचूड नामी तिहि गायो॥
सो वह धनद अनुग अभिमानी। प्रभुप्रभाव नहिं जान अज्ञानी
देखतही बलराम कन्हाई। सब गोपिन लीन्हीं अगुवाई॥
घेरि लेत जिमि गाय अहीरा। उत्तर दिशि लै चल्यो अभीरा॥
जब गोपिन हरि देखे नाहीं। भयो चेत तब कछु मनमाहीं॥
कही जाति हम काके साथा। भई बिकल जिमि परम अनाथा॥
कृष्ण कृष्ण तब टेरन लागीं। महादुखित अति भयसों पागीं॥

सुनत श्रवण आरत बचन, उठि आतुर दोउ भाय।
अति समीप गोपीनके, तुरतहिं पहुचे जाय॥

मैं आयौं हौं धाय, मति डरपौ तिनसों कह्यो।
अबहीं लेत छुडाय, तुम्हैं, मारि या दुष्टको॥

शङ्खचूड़ फिरिकै तब देख्यो। काल मृत्यु सम दुहुँवन पेख्यो॥
भयो त्रसित तब मूढ़ अभागो। युवतिन छांड़ि जीव लै भागो॥
गोपिन पास राखि बलभाई। ता पाछे पुनि चले कन्हाई॥
अतिही निकट धाय कै लीनो। मूका एक तासु शिर दीनो॥
भयो प्राण बिन अधम अन्याई। प्रभुप्रताप उत्तम गति पाई॥
हतौ एक मणि ताके शीशा। सो लै आये हरि जगदीशा॥
दीन्ही सो बलको नँदलाला। प्रमुदित भईं देखि व्रजबाला॥
गोपी ग्वाल सहित दोउ भाई। बहुरि कियो सुख बनमें आई॥
सो दुख सबको तुरत भुलायो। परमानन्द सबन उपजायो॥
करत विविध विधि हास बिलासा। गृह आयेपुनिसहितहुलासा॥
नवकिशोर सुन्दर सुखदाई। व्रजजीवन बलराम कन्हाई॥
ग्वाल बाल गायनके साथा। क्रीड़ा करत ललित व्रजनाथा॥

देखि देखि हरिके चरित, परम विचित्र उदारि।
निशि दिन सब प्रमुदित रहत, व्रजवासी नर नारि॥
हरण सकल भवभीर, दुष्टदलन जनहितकरन।
नँदनन्दन बलवीर, व्रजवासी प्रभु सांवरो॥

———

## वृषभासुर वध लीला।

नंदनन्दन सन्तन हितकारी। कमलनयन प्रभु कुञ्जबिहारी॥
मुरली मुकुट धरे ब्रजराजैं। कोटि काम निरखत छबि लाजैं॥
नित नवसुख ब्रजमें उपजावैं। सुर नर मुनि त्रिभुवन यश गावैं॥
सुनि सुनि अगम कृष्णगुण गाहा। कंस असुर उर दारुण दाहा॥
जो जिहि भाव ताहि हरि तैसे। हितको हित जैसेको तैसे॥
हित अनहित यह प्रभुकी लीला। सदा श्यामसुन्दर सुखशीला॥
रीझि खीझि हरिको जो ध्यावैं। परमानन्द अभयपद पावैं॥
रहै कंस उर ध्यान सदाहीं। नँदनन्दन पद बिसरत नाहीं॥
शत्रुभाव शोचत दिन राती। नन्दसुवन मारौं किहि भांती॥
असुर अरिष्ट नाम बल भारी। एक दिवस नृप लियो हँकारी॥
तासों कहि सब मर्म बुझायो। बल सराहि ब्रज ताहि पठायो॥
नन्दनँदन मारनके काजा। चल्यो असुर करि गर्ब समाजा॥

नृपको शीश नवाय कै, कह्यो अरिष्ट सुनाय।
कितक काज महराज यह, मैं करि आवत जाय॥
तुम असुरनके राज, इतनेको शोचत कहा।
पलमें मारौं आज, बालक नन्द अहीरके॥

वृषभ रूप सोइ असुर बनाई। आयो तुरत ब्रजहि समुहाई॥
गिरि समान तनु अति बिकराला। महाकठिनदोउसींगविशाला॥
पूंछ उठाय डकारत आवै। खोदि खुरनसों छार उड़ावै॥
दृग आरक्त फेन मुख डारै। कबहु सींगसे भूमि बिदारै॥

कबहुं तरुनसों रगरत जाई । इत उत खोजत फिरत कन्हाई ॥
उन्नत ग्रीव चहूं दिशि धावै । जहां तहां गैयन बिडरावै ॥
बार बार गरजत अति भारी । सुनत डरे सब व्रज नर नारी ॥
बिडरीं गाय गोप सब भागे । कृष्ण कृष्ण कहि टेरन लागे ॥
काल स्वरूप वृषभ इक आयो । सबन कृष्णसों जाय सुनायो ॥
प्रभु सर्वज्ञ तुरत पहिचान्यो । वृषभ न होय असुर यह जान्यो ॥
बिहँसि कह्यो मोहन सबपाहीं । मत डरपो चिन्ता कछु नाहीं ॥
चले असुर सम्मुख मनमोहन । गोप ग्वाल लागे सब गोहन ॥

आगे ह्वै हरि हांक दै, तासों कह्यो सुनाय ।
रे शठ का तनु तरु घसत, फिरत बिडारत गाय ॥
मोहिन लख इत आय, तब तनु उपजो कण्डु जो ।
अबहीं देहुँ मिटाय, कहत नन्दकी सौंह करि ॥

वृषभासुर सुनि हरिकी बानी । मनमें गर्व कियो यह जानी ॥
याही बालकके बध काजा । आदर दै पठयो मोहि राजा ॥
भले शकुन मैं व्रजमें आयों । जो याको तुरतहि लखि पायों ॥
अबहीं याहि पलकमें मारों । नृपति काज करि जाय जुहारौं ॥
ऐसे अपने जिय अनुमानी । चल्यो श्याम सम्मुख अभिमानी ॥
टूटि पर्‌यो हरि ऊपर आई । लिये सींग गहि कुवँर कन्हाई ॥
यह आवत हरिको दिशि धाई । हरि पाछे लै जात हटाई ॥
पाछे पेलि श्याम तिहि दीन्हों । बहुरो वृषभासुर बल कीन्हों ॥

आवत जात असुर जब हारयो । ग्रीव मोड़ि तब धरणि पछारयो
परयो असुर पर्वत आकारा । मुखते चली रुधिरकी धारा ॥
असुर मारि उत्तम गति दीन्हीं । जय जय ध्वनि देवननभकीन्ही
भये सुखी सब सुर समुदाई । बरषि सुमन अस्तुति मुख गाई ॥

चकित भये लखि परस्पर, कहत सकल ब्रजबाल ।
हम जान्यो कोउ वृषभ है, यह तो असुर कराल ॥
दुष्टदलन गोपाल, मुदित कहत नर नारि सब ।
भक्तनको रछपाल, ब्रजबासी नँदलाड़िलो ॥

जब अरिष्ट मारयो गिरिधारी । भयो कंस सुनि बहुत दुखारी ॥
आये ऋषि नारद तिहि काला । कह्यो कंस सों सुन भूपाला ॥
जिन मारे सब असुर तुम्हारे । ते नहिं होहिं नदके बारे ॥
मैं जान्यों निश्चय यह भेऊ । हैं वसुदेवपुत्र वे दोऊ ॥
कन्या लै जो तुमहिं दिखाई । सोवह हनी यशोमति जाई ॥
भयो कछू यह सुनु छल राजा । को जानै कर्ता के काजा ॥
यह तौ पुत्र भयो हो जबहीं । कही हुती तोसों मैं तबहीं ॥
अपनीसों बहुतै तुमकीन्हों । सो क्यों मिटैजो विधि लिखिदीन्हों
करहु यत्न तुम अबहुँ सबारे । यह कहि नारद स्वर्ग सिधारे ॥
उठ्यो कंस सुनि मुनिकी बानी । भयो शोचवश मूढ़ अज्ञानी ॥
प्रथम देवकी अरु वसुदेऊ । छोड़े हुते बन्दिते दोऊ ॥
बहुत बुरो मान्यों तिनपाहीं । राखे बहुरि बन्दिके माहीं ॥

कैसे मारों कह करों, निशि दिन यहै विचार।
शालि रहे नृप कंस उर, हलधर नन्दकुमार॥
अबधों पठऊं काहि, मनहीं मन शोचत खरो।
काहुन मारयो ताहि, असुर गये ते सब मरे॥

---

## केशीवधलीला।

असुरनमाहिं बड़ो बलधारी। केशीअसुर बीर अति भारी॥
कंस ताहि तब बोलि पठायो। अति आदर करि ढिग बैठायो॥
कहत कंस केशी सुनु मोसों। जीकी बात कहत मैं तोसों॥
मो समान राजा कोउ नाहीं। मेरी आन सकल जगमाहीं॥
ये सेवक मेरे नहिं ऐसे। जैसे में चाहत हौं तैसे॥
जासों कहौं बात मैं जोई। करि आवै कारज वह सोई॥
ताते मोहिं यही पछितायो। तब केशी कहि बचन सुनायो॥
ऐसो कहा कठिन प्रभुकाजा। जाको तुम शोचत हौ राजा॥
तुम हौ सब असुरनके नायक। और कौन दूजो तुम लायक॥
जाहि क्रोध करि चितवो जबहीं। ताको नाश होय नृप तबहीं॥
आयसु कहा मोहिं किन दीजै। सो कारज अबहीं हम कीजै॥
यह सुनि कंस हर्ष जिय आन्यो। केशीको बहु भांति बखान्यो॥

असुरसंग सबही हते, काहि कहौं ब्रज जान।
नन्दमहरके छोहरा, करि आवै बिन प्रान॥

किया न तिन कछु काज, आगे जे पठये असुर।
यह सुनिके अति लाज, मारे सब नँद बालकन॥
ताते कछु ह्वैहै मैं जानत। बड़ो बीर तोको मैं मानत।
ता कारण ब्रज तोहिं पठाऊं। बहुत और कहि कहा सिखाऊं
जिहिं तिहि विधि छलबल करि कोऊ। मारिआवनंदबालकदोऊ
के लै आव बांधि दोउ भैया। कहत जिन्हैं बलराम कन्हैया॥
यह सुनि गर्व असुर मटकीनो। चल्यो ब्रजहि नृप आयसुदीनो
मनहि कहत देखौंधौं ताही। कंस नृपति डरपत सब जाही॥
अश्वरूप ह्वै ब्रजमें आयो। अतिबल गरजि चहूं दिशि धायो॥
वेगवन्त अति वपुष विशाला। भारत यीव पूंछ बिकराला॥
बारहि बारहि सो ध्वनि करही। ब्रजके लोगन मारत फिरही॥
जित तित भाजि चले नरनारी। भये बिकल सब अतिभय भारी
कह्यो जाय आतुर हरिपाहीं। अपूर्व एक आयो ब्रजमाहीं॥
अति विकराल न जात बतायो। कैधौं बहुरि असुर कोउ आयो
ब्रज आयो केशी असुर, जानि लियो नँदलाल।
सन्मुखह्वैताके हरषि कै, चले कंसके काल॥
शीश मुकुट बनमाल, कटि कसि बांध्यो पीतपट।
उर भुज नयन विशाल, असुर विदारन सुर सुखद॥
जब केशी देखे हरि आवत। भयो क्रोध करि सन्मुख धावत॥
अति बल दोऊ चरण उठाये। प्रभुके उरको चपल चलाये॥
देखत डरे सकल ब्रजवासी। गहे बीचही हरि अविनासी॥

छूटन असुर बहुत बल कीनो । ठेलि श्याम पाछे तब दीनो ॥
गिरो धरणि पर मुर्च्छित भारी । उठ्यो क्रोधकरि बहुरि सँभारी ॥
दावँ घात करिके बहु धावै । पुनि पुनि चरण चपेट चलावै ।
अतिहि वेग हरि जात बचाई । करत युद्ध कौतुक सुखदाई ॥
ताकत सुर मुनि चढ़े अकासा । कछु हर्षै मन कछु इक त्रासा ।
देखत गोपि गोप भय बाढ़े । चकित चित्त लिखेसे ठाढ़े ॥
वदन पसारि असुर तब धायो । चाहत हरिको मुखमें नायो ॥
तबहि श्याम यह बुद्धि उपाई । दियो हाथ ताके मुख नाई ॥
दांतन दावि सक्यो सो नाहीं । वृक्ष समान भयो मुखमाहीं ॥

एक हाथ मुख नाइके, तुरत केश गहि धाय ।
वली सुवन नँदरायके, पटक्यो असुर फिराय ॥
शब्द भयो आघात, धरक्यो उर सुनि कंसको ।
नंदमहरके तात, जान्यो केशीको हन्यो ॥

देखत सुरगण भये सुखारी । वर्षे सुमन सुमङ्गलकारी ॥
प्रफुलित भये सकल व्रजवासी । वढ्यो हर्ष उर मिटी उदासी ॥
गावत जययश प्रभुहि सुनाई । असुर निकन्दन जन सुखदाई ॥
धाय धाय हरिको सब भेटैं । धन्य धन्य कहि कहि दुख मेटैं ॥
बड़ो दुष्ट मोहन तुम मारयो । व्रजवासिनको प्राण उबारयो ॥
कान्हहि सदा सहाय हमारो । धन्य धन्य मोहन गिरिधारी ॥
लिये लाय उर यशुमति मैया । पुनि पुनि मुखकी लेत बलैया ॥
नन्द देखि आनँद अति कीनों । बहुत दान विप्रनको दीनों ॥

हरिको लै पुनि पुनि उरलावत । मुखचुम्बत लखि छबिसुखपावत
केशी मारि श्याम गृह आये । भये सकल आनन्द बधाये ॥
घर घर सब ब्रजलोग लुगाई । नन्दनँदनको करत बड़ाई ॥
ब्रजवासी प्रभु जन प्रतिपालक । सन्तत सुखद असुरकुलघालक ॥

धनि धनि ब्रजमें अवतरे, भक्तनके हित आय ।
सुखसागर शोभा अधिक, बलनिधि त्रिभुवनराय ॥
बल मोहन दोउ भाय, चिरजीवो जोरी युगल ।
देत अशीश मनाय. ब्रजवासी प्रभुको सबै ॥

---

## व्योमासुर वध ।

दूजे दिन सुन्दर ब्रजनाथा । गये बनहि गायनके साथा ॥
बलदाऊ अरु ग्वाल सुहाये । शोभित सङ्ग सुभग मन भाये ॥
गई गाय बनमें अगुवाई । जहँ तहँ चरण लगीं सुखपाई ॥
ग्वालन सङ्ग श्याम अनुरागे । चोरमिहिचनी खेलन लागे ॥
भये मग्न तनु सुधि कछु नाहीं । दौरत दुरत फिरत मगमाहीं ॥
तबहि कंस केशी बध सुनिके । बार बार शोचत शिर धुनिके ॥
व्योमासुर इक अति बलवाना । मायाचरित बहुत सो जाना ॥
पठयोताको तब ब्रज माहीं । मारन कह्योश्यामको ताहीं ॥
गोपवेष धरि सो ब्रजआयो । ढूढ़त हरिको बनमें पायो ॥
गयो समाय सखनके माहीं । ताको किनहुँ जान्यों नाहीं ॥

व्योमासुर इक बुद्धि उपाई। प्रथम बालकन लेहुं चुराई।
इकलो करि जब हरिको पाऊं। तब मारौं कैं गहि लै जाऊं॥

तुरन जाहिं बालक जहां असुर संग जाय।
आवहि एकहि एक लै, पर्वत माहिं दुराय॥
रहि गये थोरे ग्वाल, जब यों बहु बालक हरे।
तब जान्यों नँदलाल, व्योमासुरके कपटको॥

धरयो ध्यान तब कुंवर कन्हाई। हरिसों ताकी कहा बसाई॥
तुरत असुर लै भूपर पटक्यो। प्राण देह तजि स्वर्गहि सटक्यो॥
असुर मारि कै दीनदयाला। बालक शोधन चले गोपाला॥
ऋषि नारद आये त्यहि काला। देखि श्याममुख लखो विशाला॥
उपज्यो प्रेम हर्ष उर पावन। बीन बजाय लगे यश गावन॥
जय जय ब्रह्म सनातन स्वामी। आदिपुरुष प्रभु अन्तर्यामी॥
अलख अनीह अनन्त अपारा। को जानै प्रभु रूप तुम्हारा॥
सकल सृष्टिके सिरजनहारे। पालन लय सब ख्याल तुम्हारे॥
युग युग यह अवतार गुसाई। भक्तनहित प्रभु लेत सदाई॥
धरणी भार पाप भइ भारी। सुरन संग लै जाय पुकारी॥
त्राहि त्राहि श्रीपति दैत्यारी। राखि लेहु प्रभु शरण उबारी॥
राज अनीतिसुरन तब भाखी। शशि अरु सूर भये सब साखी॥
क्षीरसिन्धु अहिफेण प्रभु, श्रवणन परी पुकार।
तब जान्यों सुरसन्त महि, दुखित दनुजके भार॥

कह्यो भूमि अवतार, सिन्धुमध्य वाणी प्रकट ।
श्रीपति प्रभु असुरारि, जगत्राता दाता अभय ॥
मथुरा जन्मि गोकुलहि आये । मात पिता सोवतही पाये ॥
नन्द यशोदा बालक जान्यों । गोपिन कामरूप करि मान्यों ॥
पय पीवतही बकी विनाशी । भयो असुर सुनि कंस उदासी ॥
यहि अन्तर जे दनुज पठाये । ते प्रभु सब कौतुकहि नशाये ॥
धन्य धन्य ये ब्रजके बासी । जिन वश किये ब्रह्म सुखरासी ॥
मन बुधि वचन तर्कते न्यारे । निगमहु अगम न परत विचारे ॥
ते ब्रजयुवतिन बनहि विहारे । कमलनयन प्रभु नन्ददुलारे ॥
नील जलज तनु सुन्दर श्यामा । मोरमुकुट कुण्डल अभिरामा ॥
मुरलीधर पीताम्बरधारी । बनमालाधर कुञ्जबिहारी ॥
बसहु रूप यह उर धर पाऊं । बहुरि नाथ प्रभु विनय सुनाऊं ॥
यह अवतार जबहि प्रभु लीन्हों । आयसु सुरन यहै प्रभु दीन्हों ॥
दैत्य दहन सन्तन सुखकारी । अब मारहु प्रभु कंस प्रचारी ॥
जब यह गाथा गाय कै, नारद कही सुनाय ।
बोले प्रभु करि तब कृपा, सुधावचन मुसुकाय ॥
जाहु वेगि मुनिराय, करहु सुरनको काज यह ।
पठवहु मोहिं बुलाय, नृप आयसुते मधुपुरी ॥
जब प्रभु हँसि यह आयसु दीनों । तब प्रणाम प्रभुको ऋषि कीना
हरषि चले मुनि नृपके पासा । यहै बुद्धि मन करत प्रकासा ॥
यहै बात हलधर समुझाई । जो वाणी ऋषि गये सुनाई ॥

तुम प्रभु अखिल लोकके कारन । जन्मे हो भुवभार उतारन ॥
परम पुरुष अविगति अविकारा । अविनाशी अद्वैत अपारा ॥
सिन्धु रूप जन हित सुखकारी । त्रिभुवनपति श्रीपति असुरारी ॥
सङ्कर्षण जब ऐसो भाख्यो । सुनि सुनि श्याम हृदय सब राख्यो ॥
तब हँसि कही भ्रातसों बानी । जो तुम कहत बात मैं जानी ॥
कंसनिकन्दन नाम कहाऊं । केश गहौं पुहमी खसिटाऊं ॥
ऐसे प्रभु हलधर समुझाये । बालक बहुरि शोध सब लाये ॥
व्योमासुर मारयो नँदलाला । भये मुदित सब देखि गुवाला ॥
धन्य धन्य सब प्रभुको भाखे । कहत आज तुम हम सब राखे ॥

गाय गोप हलधर सहित, भये परम आनन्द ।
सांझ समय वनसे चले, ब्रजको श्रीनँदनन्द ॥
आये नन्दअवास, प्रभु ब्रजवासी दासके ।
गये कंसके पास, ऋषि नारद मधुरापुरी ॥

नारद गये कंसके पासा । मन मारे मुख करे उदासा ॥
आदर करि आसन बैठाये । हर्षि कंस मुनि निकट बुलाये ॥
कसो मुनि ऋषि मन क्यों मारे । कह चिन्ता मन बढ़ी तुम्हारे ॥
नारद कह्यो सुनो हो राऊ । कह बैठे कछु करौ उपाऊ ॥
त्रिभुवनमें नाहीं कोउ ऐसो । देख्यो नन्दसुवन मैं जैसो ॥
करत कहा रजधानी ऐसी । उपजी तुमको बात अनैसी ॥
दिन दिन भयो प्रबल बहुभारी । हम सब हितकी कहत तुम्हारी ॥
तब बोल्यो नृप गर्वित बानी । यह नारद तुम कहा बखानी ॥

यदपि कहत हौ तुम हितकेरौ। तदपि बराबरि नहिं वह मेरौ॥
कोटि दनुज मोसम मो पासा। जिनको देखि सुरन मन त्रासा॥
कोटि कोटि जिनके सँग योधा। जीति सके को जिनके क्रोधा॥
तिनके बल कह कहूं बताई। देखत जिनको काल डराई॥

रहत द्वार सन्तत खरो, कोटि भटनको भीर।
अति प्रचण्ड कोदण्डधर, महाबली रणधीर॥
महामत्त गज एक, त्रिभुवनगामी कुवलिया।
ऐसे सुभट अनेक, नामी सुभटन को गनै॥

कहा ग्वालके बालक दोऊ। तदपि बली उपजे हैं वोऊ॥
प्रजालोग ब्रजके सब मेरे। सेवा करत सदा रहे नेरे॥
ताते सकुचत हौं उन काजा। बालक सुनत होत मोहिं लाजा॥
भली करौ यह बात बुझाई। मनको डारौं खटक मिटाई॥
सुनहु और नारद मुनि हमसों। कहत मतेकी बाणी तुमसों॥
उनपर सैना कहा पठाऊं। नन्द सहित सहजहि बुलवाऊं॥
डारौं गजके चरण खुदाई। और प्रजा ब्रज देउँ बसाई॥
यहै बात मेरे मन आई। तब सुनि मुनि बोले मुसकाई॥
जो तुम अपनो गर्व सँभारो। तो जानो अब तुम उन मारो॥
त्रिभुवनमें को बलहि तुम्हारे। यह कहि मुनिविधिधाम पधारे॥
कंस आपने जिय यह जानी। नारद हितकी बात बखानी॥
अब मारौं नहिं गहर लगाऊं। मथुरा जिहि तिहि भांति बुलाऊं

यहै सोच उरमें पर्यो, नहिं विचार कछु और।
कैसे तिन्हैं बुलाइये, करत मनहि मन दौर॥
कबहुँ विचारत होय, आपहि चढ़ि धाऊं ब्रजहि।
पुनि सकुचत है जीय, ब्रजवासी प्रभु गुण समुझि॥

जन्महिते वे हैं असुरारी। सातहि दिनके बकी सँहारी॥
कागासुर वल गयो बढाई। सो मुरझाय गिर्‍यो फिर आई॥
शकट तृणा चणाहीमें मारे। ख्यालहि और असुर संहारे॥
गये प्रतिज्ञा करि करि जोई। आयो नहि जीवत फिरि कोई॥
अब उनको सहजहि बुलाऊं। ऐसो को जिहि लेन पठाऊं॥
जाय नन्दसों कहैं बुझाई। श्याम राम सुन्दर दोउ भाई॥
सुनि सुनि अति नृपके मन भाये। देखनको मधुपुरी बुलाये॥
ऐसे करि जब वे ह्यां ऐहैं। बहुरो जियत जान नहिं पैहैं॥
यह विचार उरमें ठहरायो। तब आतुर अक्रूर बुलायो॥
सुनि अक्रूर मनमें भय पायो। किहि कारण नृप वेगि बुलायो॥
आतुर गयो पवँरिपर धाई। जाय पवँरिया खबरि जनाई॥
सुनतहि बोलि महलमें लीन्हों। सकुचिगवनसुफलकसुतकीन्हों॥

कछु डर कछु जिय धीर धरि, गयो नृपतिके पास।
देखि डर्‍यो मुख शोचवश, उरते लेत उसास॥
हाथ जोरि शिर नाय, अनबोल्यो सन्मुख रह्यो।
लीन्हों ढिग बैठाय, मर्म वचन कहि कंस तब॥

आपहि और तहां कोउ नाहीं। बोलयो न्टप सुफलकसुतपाहीं
कहि जु गये नारद ऋषि बानी। सो सब कहिके प्रगट बखानी
सुनि अक्रूर कहत सत तोकों। श्याम राम शालत उर मोको॥
ज्यहित्यहि विधिअब उनकों मारौं। यह कछुदोषहृदयनहिंधारौं
पठवौं काहि जाहि ब्रज जोई। कहै प्रीति करि नन्दहि सोई॥
बल मोहन वुव तनय सुहाये। तुमहिं सहित न्टपराज बुलाये॥
सुनि गुण रूपहि अगम अगाधा। है न्टपको देखन को साधा॥
कालो पीठ क़मल ले आये। तबते न्टपके मनमें भाये॥
सो बखसीस इन्हैं अब देहैं। इनके बचन सुनत सुख पैहैं॥
यह कहिके उनको ले आवै। भेद सु कोऊ जानि न पावै॥
ऐसे कहि जब कंस सुनायो। तब अक्रूरहि धीरज आयो॥
मन मन कहत कहा यह भावै। आपुहि अपनो काल बुलावै॥

> कियो विचार अक्रूर तब, कहत जु कछु मैं और।
> तौ मारैगो मोहिं यह, अबहीं याही ठौर॥
> कह्यो मानिहै नाहिं, काल याहि आयो निकट।
> यह विचारि मनमाहिं, सुफलकसुत बोल्यो हरषि॥

सुनहु न्टपति नीके मन आनी। धनि धनि नारद सत्य बखानी
बड़े शत्रु हमको वे दोऊ। उपजे नन्दभवनमें कोऊ॥
कीजे वेग न्टपति यह काजा। वुम सरि और कौन मोहिं राजा॥
सुखते आयसु जो करि पाऊं। भोर वेगितिहि ब्रजहि पठाऊं॥
सुफलकसुत यह कही सयानी। तब हर्षो न्टप सुनि यह बानी॥

फिर फिर कहत हिये गरवाई । प्रात बोलि मारौं दोउ भाई ॥
आधी निशि लौं यह मन कीन्हों । तब अक्रूर विदा करि दीन्हों
परयो सेज आलस जिय जानी । सेवा करन लगीं सब रानी ॥
नेक पलक लागी झपकाई । लखे स्वप्न बलराम कन्हाई ॥
काल सरिस दोउ देखि डरानो । झिझकि उठ्योभरयोससकानो
देखे जागत ह्वां नहिं दोऊ । चकित भई रानी सब कोऊ ॥
बूझन लगीं सबै अकुलाई । कह झिझके स्वप्ने नृपराई ॥

महाराज झिझके कहा, स्वप्ने आज सकाय ।
कहिये काको शोच अति, जीमें रह्यो समाय ॥
तब मनमें सकुचाय, सहजहि राननिसों कह्यो ।
भेद न भयो जनाय, मन शङ्का उर धकधकी ॥

सावधान प्रतिपाल कराये । जहँ तहँ योधा सकल जगाये ॥
शयाम राम भय पलक न लावै । अन्तर शोच न प्रगट जनावै
जाग्यो आप सङ्ग सब नारी । भई याम निशि युगते भारी ॥
वैठत कबहुँ उठत अकुलाई । ठाढो होत कबहुँ अँगनाई ॥
घरियालीसों पूछि पठावै । बार बार निशि खबर मँगावै ॥
शोचत सब प्रातहि कह करिहै । क्रोध भरयो नृपका शिरपरिहै॥
कहो घरीनिशि गयाकन बाकी । छक छकच्चणयुग यहगतिताकी
कहत व्रजहि धों काहि पठाऊं । जासों कहि नँदसुवन मँगाऊं
पठवों अक्रूरहिको जाई । ल्याव व्रजते ठगि दोउ भाई ॥
इत देख्यो सपनो नदराई । बल मोहन कहुं गये हिराई ॥

ग्वाल बाल रोवत पछिताहीं । कहत श्याम तो अब ब्रज नाहीं ॥
सङ्गहि खेलत रहे हमारे । निठुर होय कहुँ अन्त सिधारे ॥

दूत एक कोउ आय कै, सँग लै गयो लिवाय ।
वाहीके दोउ ह्वै गये, ब्रजबासिन बिसराय ॥
अति व्याकुल नँदराय, मुरछि परे धरणी सुनत ।
विवश यशोदा माय, श्यामविरह व्याकुल खरी ॥

व्याकुल नरनारी ब्रजवासी । पशु पच्छी सब परम उदासी ॥
रोवत गिरत धरणि दुख पागे । अति अकुलाय नन्द तब जागे ॥
धकधकात उर श्रवत नयनजल । सुत अँग परसन लागे शीतल
ससकत सुनत अतिहि अतुरानी । कह भरमें पूछत नंदरानी ॥
नन्द नहीं कछु भेद जनायो । श्यामहि लखि धीरज उर आयो ॥
अति प्रभात रवि उगन न पायो । सुफलकसुत उत कंस बुलायो
सुनतहि द्वारपाल उठि धायो । सोवतते अक्रूर जगायो ॥
कह्यो वेगि चलिये नृपपासा । समुझि मंत्र निशि चल्यो उदासा
ठाढ़ो नृपति द्वारही पायो । देखत दूरिहिते शिर नायो ॥
अति आदर करि निकट बुलायो । शिरोपाव नृप तुरत मँगायो
अक्रूरहि निज कर पहिरायो । बहुत कृपा करि बचन सुनायो ॥
ल्यावहु नन्दमहर सुत दोऊ । तुम सम और चतुर नहि कोऊ ॥

मुख हरष्यो अक्रूर सुनि, हृदय गयो बिलखाय ।
असुरत्रास जियमें परयो, बचन कह्यो नहि जाय ॥

दीनो रथहि चढ़ाय, जाहु वेगि व्रज नृप कह्यो।
लै आवहु दोउ भाय, अवहि विलम्ब न कीजिये॥
तव अक्रूर कह्यो कर जोरी। सुनहु देव विनती इक मोरी॥
वल मोहन प्रातहि दोउ भैया। वनको जायं चरावन गैया॥
जो उनको घरमें नहि पाऊं। जाते प्रभु यह वात सुनाऊं॥
आज नन्दगृह वसिहौं जाई। प्रातहि लै आवहुं दोउ भाई॥
ऐसे जव अक्रूर जनायो। कंस वात यह मानि पठायो॥
शीश नाय तव रथ चढ़ि हांक्यो। सुफलकसुतव्रज सन्मुखताक्यो
वहु प्रशंसि सव मल्ल वुलाये। चाणूरादि सकल चलि आये॥
तिनसों कह्यो सुनौ सव वीरा। व्रजमें रहत जु नन्द अहीरा॥
कहियत वलो तासु सुत दोऊ। रामकृष्ण जिन कह सव कोऊ॥
वहुत असुर मेरे उन मारे। ताते हैं वे शत्रु हमारे॥
उनको मैं मधुपुरी वुलायो। सुफलक सुतको लेन पठायो॥
उनको मति जानौ तुम वारे। हैं वे महा कठिन वलभारे॥

रङ्गभूमि ताते रचौ, चित्र विचित्र वनाय।
सावधान ह्वैके तहां, रहौ मल्ल सव जाय॥
ऊंचो एक मचान, तहां और सुन्दर रचौ।
जहां असुर परधान, वैठैं सव मेरे निकट॥

योधा और अनेक वुलावो। सावधान करि सव वैठावो॥
ताते और पौरके वाहर। रहै कुवलिया गज तिहि ठाहर॥
राखो द्वार तीसरे जाई। गरुव कठिन अति धनुष धराई॥

बहु भट तहां रहैं रखवारी। अस्त्र शस्त्र धारी बल भारी ॥
ऐसे सजग रहौ सब कोऊ। जब आवें वे बालक दोऊ ॥
प्रथम धनुष उनसों चढ़वावो। उन्हैं कहौ यह धनुष उठावो ॥
जब वे धनुष उठावें नाहीं। घेरि लेहु उनको तिहि ठाहीं ॥
ताही ठौर मारि दोउ लीजो। भीतरलौं आवन नहिं दीजो ॥
जो कदापि ह्यांते चलि आवैं। तौ गजते आवन नहिं पावैं ॥
डारौ गजके चरण रुंदाई। तुमको राखत अबहिं जनाई ॥
जो छल बल करिकै बचि आवैं। रङ्ग भूमि आवन नहिं पावैं ॥
तौ सब मल्ल मारि उन लेहू। मो समीप आवन नहिं देहू ॥

ठौरहि ठौर सजाय कै, सजग रहौ यहि भांत।
जिहि तिहि बिधि मारौ उन्हैं, नहीं दूसरी बात ॥
मन मन मौज बढ़ाय, ऐसे आयसु दै सबन।
गयो सदन नृपराय, सुनहु कथा अक्रूरकी ॥

---

## अक्रूर आगमन लीला।

सुफलकसुत मन शोच अपारा। है नृप कंस बड़ो हत्यारा ॥
मन्त्र कियो मिलि मेरे साथा। पठयो मोहिं लेन ब्रजनाथा ॥
कैसे आनि देउँ मैं जाई। मो देखत मारै दोउ भाई ॥
नगर निकसि रथकीन्हों ठाढ़ो। परयो विचार हृदय अतिगाढ़ो
गज मुष्टिक चाणूर सुमिरिकै। आयो नीर लोचनन ढरिकै ॥

अति बालक बलराम कन्हाई। कहा करौं कछु नाहिं बसाई॥
मोहिं मारि वरु बन्दि करावै। यह विचार करि रथ न चलावै॥
पुनि पुनि कृष्ण हृदयमें ल्यावै। चलत फिरतकछु बनिनहिं आवै
प्रभु कृपालु सब अन्तर्यामी। सुफलकसुत मन पूरण कामी॥
सुमिरत कृष्ण हृदय यह आई। वे श्रीपति प्रभु त्रिभुवनराई॥
अखिल जगतके कारण कर्त्ता। उत्पति पालन अरु संहर्त्ता॥
भूमिभार कारण अवतारा। को जानै गुण रूप अपारा॥

धन्य कंस जिन मोहि ब्रज, पठयो लेन गोपाल।
जाय रूप वह देखिहौं, निगम नेति नँदलाल॥
यह विचार उर आनि, रथ हांको अक्रूर तब।
भयो शकुन शुभ मानि, मृगगण आये दाहिने॥

दहिने देखि मृगनकीमाला। सुफलकसुत उर हर्ष विशाला॥
कहत आज दिन शकुननजाई। भुजभरि मिलिहौं प्रभु सुखदाई
श्याम सुभग तनु परम सुहावन। इन्दुबदन त्रयताप नशावन॥
अङ्ग त्रिभङ्ग किये गोपाला। सारसहूते नयन विशाला॥
मोरमुकुट कुण्डल वनमाला। कटि कछनी पटपीत विशाला॥
तनु चन्दनकी खौर बनाये। नटवरवेष मनोज लजाये॥
है हैं गैयनके सँग ठाढ़े। ग्वालन मध्य महा छबि बाढ़े॥
सो दरशन लखि हौंउ सनाथा। धरिहौं जाय चरणपर माथा॥
जे शुभ चरण पितामह ध्यावैं। महिमा जिनकी वेद बतावैं॥
जिन चरणन कमला रतिमानी। शंभु धरयो शिर जिनकोपानी

सनकादिक नारद यश गावैं। जिन चरणन योगी चित ल्यावैं॥
बलि जिनकी मर्याद न पाई। हारि मानि निज पीठ नपाई॥

शिलाशाप मोचन करन, हरन भक्त उर पीर।
आज देखिहौं ते चरण, सकल सुखनको सीर॥
अरुण कञ्जके रङ्ग, अङ्कित अंकुश कुलिश ध्वज।
गोप बालकन सङ्ग, गो चारत बन पाइहौं॥

परिहौं जाय चरणपर जबहीं। भुजन उठाय भेंटिहौं तबहीं॥
परसत उर आनँद उपजैहैं। अङ्गन पुलकि तनूरुह ऐहैं॥
देखत दरश परश सुख ह्वै हैं। प्रेम सलिल लोचन भरि जैहैं॥
कुशल पूछिहैं मोहि सुखदानी। कहि नहिं सकिहौं गद्गदबानी
बारहि बार वचन मृदु कैहैं। सुनि सुनि श्रवण परम सुख पैहैं॥
यों अक्रूर ध्यानमें अटक्यो। भूल्यो पन्थ फिरत रथ भटक्यो॥
हरि अनुराग भर्यो उरमाहीं। रही देहकी सुधि कछु नाहीं॥
सांझ भई गोकुल नहिं पायो। नहिं जानत को हौं कहँ आयो॥
किन पठयो कहँ जात न जानी। रथ बाहनकी सुरति भुलानी॥
भयो हर्ष उर प्रेम विशाला। दशहू दिशि पूरण गोपाला॥
हरि अन्तर्य्यामी सब जानी। भक्तबछल है जिनकी बानी॥
भक्तिभाव करि जो कोउ ध्यावैं। मिलत तिन्हैं नहिं बिलमलगावैं

ग्वाल सङ्ग वृन्दाविपिन, चारत धेनु सुजान।
चले हर्षि हलधर सहित, भक्त हेतु जिय जान॥

यमुन पार करि गाय, गौरी गावत हर्षि हरि ।
गायन तहाँ मँगाय, लागे गोदोहन करन ॥
गायन दुहन लगे सब ग्वाला । आपहु दुहत भये नन्दलाला ॥
भक्त हेतु यह सुख उपजायो । तहां दरश सुफलकसुत पायो ॥
रहिनसक्योरथपरसुखव्याकुल । उतरि परयो भूपर अति आकुल॥
भयो मनोरथ मनको भायो । दौरि श्याम चरणन शिर नायो ॥
पुलकि गात लोचन जलधारा । हृदय प्रेम आनन्द अपारा ॥
कृपासिन्धु करि कृपा उठायो । भक्त हेतु मिलि कण्ठ लगायो ॥
भयो जु सुख सो सोई जानै । ब्रजबासी किहि भांति बखानै ॥
जो अक्रूर चरित मन कीन्हौं । तैसिय भांति दरश हरि दीन्हौं॥
मधुर वचन श्रवणन सुखदाई । पुनि पुनि पूछत कुँवर कन्हाई ॥
आनन चारु निरखि सुखकारी । तब बोल्यो अक्रूर सँभारी ॥
कुशल नाथ अब दरश निहारी । दैत्यदलन भक्तनहितकारी ॥
भेदहि भेद कंसकी बानी । सुफलकसुत सब प्रगट बखानी ॥
सुनत वचन अक्रूरके, मुसकाने ब्रजचन्द ।
फरकि भुजा भूभारकों, टारण असुर निकन्द ॥
मिले राम पुनि आय, परम प्रीति अक्रूरसों ।
उर आनन्द न समाय, वासुदेव दोऊ निरखि ॥
कहि कहि उठत इहैं नँदलाला । हमहिं बुलायो कंस भुवाला ॥
लेवेको अक्रूर पठाये । कालहिहि करि अति कृपा मँगाये ॥
सुनतहि भये चकित सब ग्वाला । कहा कहतहैं मदनगोपाला ॥

भये प्रेमवश मति अकुलानी। भरि आयो नयननमें पानी ॥
निरखि सबनको सुख सुखदानी। तब बोले करि श्यामसयानी
चलहु कालहि देखहि न्टप कंसा। मति आनो जियमें कछु संसा
यह कहि चले हर्षि ब्रजबालन। कछू हर्ष कछु संशय ग्वालन ॥
अति कोमल बलराम कन्हाई। हँसि लीन्हें अक्रूर उठाई ॥
सुमनहु ते हरुवे सुखदनियां। दोउ लसत सुफलकसुत कनियां ॥
ग्वाल सकल लीनो रथ डोरी। पहुंचे आय सकल ब्रजखोरी ॥
लखि जहँ तहँ ब्रज लोग चकाने। कंसदूत सुनि नन्द सकाने ॥
स्वप्नो समुझि शोच उर छायो। मन मन कहत कहांधौं आयो ॥

आतुर उठि आगे चले, लेन नन्द उपनन्द।
देखन धाये घरनते, सुनत नारि नर वृन्द ॥
श्याम राम उर लाय, स्यन्दन तजि सुफलकसुवन।
आवत लखि नन्दराय, भये हर्ष विस्मय विवश ॥

सादर तिनको शीश नवाये। कुशल प्रश्न करि गृह लै आये ॥
चरण धोय बैठक शुभ दीन्हीं। विविधभांतिभोजनविधिकीन्हीं
सङ्कर्षण अरु कुँवर कन्हैया। मिलि गये अक्रूरहि दोउ भैया ॥
छणक होत नहिं नेक नियारे। मनहुँ दुलारि उनहि प्रतिपारे।
तब अक्रूर सङ्ग लै दोऊ। भोजन कियो लखत सब कोऊ ॥
हरि इत उत फेरत नहि आखैं। सब ब्रजलोग मनहिमन भाखैं ॥
उठे अँचै तब पान खवाये। आदर सहित पलङ्ग बैठाये ॥
पुनि करजोरि नन्द यों भाख्यो। कहा कृपा करि पग इतराख्यो ॥

नृप ऐसे अक्रूर सुनायो । बल मोहनको नृपहि बुलायो ॥
तुमको कह्यो सङ्गले आवैं । सुनि सुनि गुण मेरे मन भावैं ॥
देखनको अभिलाष जनायो । ताते वेगिहि प्रात बुलायो ॥
व्रजके लोग सुनत यह बानी । भये चकित सुधि बुद्धि हिरानी ॥

चकित नन्द यसुमति चकित, मनहीं मन अकुलाय ।
हरि हलधरको सैन दै, सबै बुलावत जात ॥
मायारहित मुकुन्द, जाके योग वियोग नहिं ।
सदा एक आनन्द, अविगति अविनाशी पुरुष ॥

प्रेम भक्तको कछु डर लाजा । कीन्हों चहैं भूमि सुर काजा ॥
जाते नहि काहू तन हेरत । बोलत नहीं नयन नहिं फेरत ॥
जनु पहिचाने कबहूं किनाहीं । लखि लखिसबडरपत मनमाहीं
हरि सुफलकसुतसों मन लायो । यहै कहत नृप हमहिं बुलायो
हुतो साथ हमहूं मनमाहीं । कबहुं नृपति बोल्यो क्यों नाहीं ॥
हँसि हँसि ऐसे कहत मुरारी । यह सुनि विकल सकल नरनारी
श्याम नहीं कछु मनमें आने । भये नेह तजि तुरत विराने ॥
कहति परस्पर तिय अकुलाई । कितते आयो यह दुखदाई ॥
महाक्रूर अक्रूर नामको । जैहै प्रात लिवाय श्यामको ॥
जान कहत या संग कन्हाई । कैसे प्राण रहैंगे माई ॥
बिलखि वचनशोचत सबठाढ़ी । मनहुं विचित्रचित्रलिखिकाढ़ी
अब हम सङ्ग तुम्हारे जैहैं । भली भांति नृप देखन पैहैं ॥

ठौर ठौर ऐसौ दशा, कहत न आवत बयन।
बढ़ौ श्याम बिछुरन व्यथा, ढरत उमँग जल नयन॥
फिरत विकल सब ग्वाल, पूछत एकहि एकसों।
चलन कहत नन्दलाल, मन मलीन व्याकुल सबै॥
ब्रजके लोग बिकल सब देखैं। तब अक्रूर सबन परितोखैं॥
चिन्ता मतिहि करो मनमाहीं। इनको कछु और डर नाहीं॥
भंजन धनुष यज्ञके काजा। मधुपुर इनहि बुलायो राजा॥
व्याकुल महरि यशोमति धाई। आतुर परी चरणपर आई॥
सुफलकसुत मैं दासि तुम्हारी। सुनो कृपा करि बिनय हमारी
सन्तन धाम परम उपकारी। सुनियत कीरति बड़ी तिहारी॥
बड़े दुखनमें यह प्रतिपारे। राम श्याम प्राणनते प्यारे॥
धनुष तोर कह जानैं बारे। इन कब देखे मल्ल अखारे॥
राजसभाको यह कह जाने। कब इन न्टप जुहार पहिचाने॥
राजअंश अपनो सब लीजे। और कहो बरु अधिको दीजे॥
जाहु नन्द उपनन्दहि लैके। मैं कह करों सुतनको दैके॥
है अक्रूर तुम्हारो नामा। नगर कहा लरिकनको कामा॥
कहा धनुष यह देखिहैं, बालक अति अज्ञान।
कियो न्टपति कछु कपट यह, परत मोहि यों जान॥
देहुं नहीं हौं जान, मो निधनीके श्याम धन।
लेहि कंस बरु प्रान, को जीवे नँदनन्द बिन॥
कहति बिलखिहरिसों दुख भारी। क्यों मोहनममछोह बिसारी

दूखित जानि अपनो महतारो। मथुरा जाहु न मैं बलिहारो॥
ये अक्रूर क्रूर छल रचिकै। आये तुम्हैं लेन रथ सजिकै॥
निठुर भई करम गति आई। यह धौं विधना कहा बनाई॥
मोसो मात महर सो ताता। कहत रहत जग जग दोउ भ्राता॥
जिहि मुख जान कहत हो प्यारे। कैसे रहिहैं प्राण हमारे॥
मैं वलि ऐसो जिय मति धारो। मथुरामें कह काज तिहारो॥
निरखि रूप यशमति अकुलाई। व्याकुल परी धरणि मुरझाई॥
कहि जब लैवें प्राण कन्हैया। ह्वै कै निठुर जातहैं मैया॥
क्यों अक्रूर गोकुलहि आयो। मेरे प्राण लेनको धायो॥
नाम अक्रूर गुण क्रूर तुम्हारा। करिहौ सूनो भवन हमारा॥
रोवत वदन रोहिणी मैया। व्रजके जीवन ये दोउ भैया॥

भये निठुर अक्रूर मिलि, घरहू आवत नाहिं।
कहा करों कासों कहौं, को राखै गहि बाहिं॥
अति व्याकुल व्रज वाम, जहां तहां विलखी कहैं।
चलन चहत घनश्याम, इकज़ु रहैं सखि प्राण तनु॥

कहँ वह सुखहरिको सँग सजनी। विविध विलासभरदकौरजनी॥
हरि मुखशशि शीतल सुखकारी। चख चकोरलखिरहतसुखारी॥
कहँ वह सुन्दरि हरि गरबाहीं। पियत अधररस मन न अघाहीं॥
जग उपहास सखी जिहि लागी। कुल अभिमान लाजसवत्यागी॥
कुटिल चहत सो हमसों आली। करी कठिनविधिकरमकुचाली॥
कहु सखी फिरि कबहू ऐसे। मिलि हैं अव मिलियत हैं जैसे॥

कोहहैं बहुरि बात हँसि कबहों। लागत परम निठुरमोहिंअबहीं
विरहानल अग्निहुँते ताती। बिछुरत श्याम पीर अति छाती॥
न्यायहि सखी नागरी नारी। जरत बिरह उर अमित प्रचारी॥
अब सहिहैं ऐसो दुख प्राना। निशिदिन करि उर वज्र समाना
एक कहति कैसे हरि जैहैं। यशमति पै सखि जान न पैहैं॥
कह करि है अक्रूर हमारो। फिरि जैहै करि मुख निज कारो॥

हम तजि हरि नहिं जाइहैं, मोहिं जीय विश्वास।
कहा लेहिंगे मधुपुरी, छांड़ि यशोमति पास॥
धरयो तनक जब धीर, सुनि ताकी बाणी सबन।
सो जाने यह पीर, जो रँगराती श्यामके॥

करत नन्द उपनन्द बिचारा। करिये कहा कौन उपचारा॥
को जानैं कह नृप मनमाहीं। नृप आयसु मेट्यो नहिं जाहीं॥
अति बालक बलराम कन्हाई। भये शोचबश अब नँदराई॥
तब बोल्यो यक गोप पुरानो। प्रभु प्रभाव उर राखि सयानो॥
कहत कि मो मनमें यह आवै। सोई करो जो श्यामहि भावै॥
इनको बालक करि मति जानो। कहि गये गर्ग सोई परमानो
ये करता हरता सबहीके। भार उतारनहार महीके॥
जिन गिरि कर धरि ब्रजहि बचायो। बहुरि हमैं बैकुण्ठ दिखायो
जाहिगयो सुरपति शिरनाई। ल्यायो नाथि कालि अहि जाई॥
वरुण धाम देखी प्रभुताई। करति हते सब तुमहिं बड़ाई॥

कह्यो कंस ताको भय मानें। इनकौ महिमा येही जानें ॥
कितक धनुष हरि तुरत चढ़ैहैं। देखत इनहिं कंस सुख पैहैं ॥

जो करि है कछु कपट तौ, सब समरथ गोपाल।
हरि हलधर भैया उभय, ये कालहुके काल ॥
हर्ष सबै अहीर, हरि प्रताप उरमें समुझि।
सब लायक बलवीर, धीर धरो यह जानिकै ॥

बार बार यशुमति अकुलाई। कहत रहो सुत कुँवर कन्हाई ॥
अबहों तात बहुत तुम बारे। मथुरा बसत मल्ल हत्यारे ॥
क्यों बलराम कहत तुम नाहीं। तुम बिन लाल मात मरि जाहीं ॥
कहत राम सुनु यशुमति मैया। तू मति बारो जान कन्हैया ॥
मतिहि कंस भय व्याकुल होहीं। एक भरोसो हरिको मोहीं ॥
प्रथमहि बकी कपट करि आई। अतिहिप्रबलबिषकुचलपटाई ॥
चारहि दिनके तबहिं कन्हाई। तब देखतही ताहि नशाई ॥
शकट तृणावृत वत्स अन्याई। अघ अरिष्ट केशी दुखदाई ॥
एकहि पलमें सकल सँवारे। विष जलते सब सखा उबारे ॥
गोवर्द्धन जिन करपर धारयो। महाप्रलयको जल सब टारयो ॥
हरि सम बली और कोउ नाहीं। तू मत शोच करे मनमाहीं ॥
हम बालक कह तुमहिं सिखावें। धीर धरौ हम फिरि ब्रज आवें ॥

सुनि चरित्र गोपालके, डर भायो अबरोहि।
जो कछु करें सो सत्य प्रभु, आवत है सब सोहि ॥

कह्यो नँद तब आय, मैं लै जैहौं सङ्ग हरि।
धनुषयज्ञ दिखराय, लै ऐहौं तुरतहि बहुरि॥

---

## मथरागमन लीला।

ऐसेहि सबको रात बिहानी। भयो प्रात चिरिया चुहचानी॥
महर कह्यो सब गोप बुलाई। दधि घृत भार सँजोवहु जाई॥
नृपति भेंट हित करहु सँजोई। हरिके सङ्ग चलौ सब कोई॥
ग्वाल सखा यह सुनि अकुलाने। चहतश्याम मधुपुर निजुजाने
परयो शोर ब्रज घर जहँ ताईं। हरिमुख देखनको सब धाईं॥
सजत ग्वाल चलबेको साजा। गैया फिरत दुहनके काजा॥
कह्यो श्याम अक्रूरहि तबहीं। जोतहु तात तुरत रथ अबहीं॥
सुफलकसुत आयसु जब पायो। सहित सकोच रथहि पलनायो
सुफलकसुत ढिगते दोउ भाई। होत नहीं न्यारे कहुँ राई॥
देखतही यशुमति अकुलानी। परीधरणि बिलपतिबिललानी॥
विकल कहति मोहिं तजो दुलारे। जात किये सूनो ब्रज प्यारे।
यह अक्रूर ठगौरी लाई। मोहे मेरे बाल कन्हाई॥

यह सुफलकसुत बूझिये, तुम्हीं हरे मो बाल।
वृद्ध समयकी लकुटिया, मेरे मदनगोपाल॥
देखहु मनहिं बिचारि, लाभ कछू यामें तुम्हैं।
दियो धरम डर डारि, क्रूर भये इत आयके॥

चलन जात चितवत ब्रजनारी । विरहविकल तनुसुरत बिसारी ॥
जहँ तहँ चित्रलिखोसी ठाढ़ी । नयनन नीर नदी जिमि बाढ़ी ॥
लगत निमेष कूल दोउ नाहीं । भ्रमति नाव पुतरी तामाहीं ॥
ऊरध श्वास समीर झकोरत । चित्त कपोल तीरतरु तोरत ॥
काजलकीच कुचील किये तट । अधर कपोल उरज अञ्चलपट ॥
रहे जहां तहँ पथिक जकेसे । चरण हस्त मुख बचन थकेसे ॥
श्याम विरहव्याकुल ब्रजबाला । नीरहीन जिमि मीन बिहाला ॥
सूखत अधर बदन मुरझाने । जनु हिम परसि कमल कुम्हिलाने
कहति परस्पर वचन अधीरा । गद्गद बचन ढरत दृग नीरा ॥
जीवनधन प्राणनको प्यारो । लिये जात अक्रूर हमारो ॥
सुनहु सखी अब कीजे सोई । जाते बहुरि शूल नहिं होई ॥
गये। दूर रथ रह्यो न जैहै । पुनि पाछे पछितायो ऐहै ॥

परिहरि यश आशा जियन. लाज पञ्चकी कान ।
करिये विनती श्यामसों, सखी समय पहिचान ॥
होनी होय सो होय, पायँ परशि हरि राखिये ।
नातरु मरि हैं रोय, समय चूक उर शालिहैं ॥

प्रभु अन्तर्यामी सुखदानी । बिरह विकल गोपीजन जानी ॥
चितये नयन कमलदललोचन । सकल शोचसन्तापविमोचन ॥
मृदु मुसकानि ठगौरी डारी । श्याम ठगी सब ब्रजकी नारी ॥
रहि गई चितवनवचन न आयो । चढ़े श्याम रथअवसर पायो
हरिको नाम सुमिरि मन माहीं । चढ़े अक्रूर तुरन्त तहांहीं ॥

देखत महरि यशोमति धाई। पुत्र पुत्र कहि टेर लगाई॥
मोहन नेकु देखि द्रुत लैहो। बिछुरत लाल भेंट मोहिं देहो॥
राखहु तात बोध करि मैया। बहुरो चढ़हु विमान कन्हैया॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो। बहुरो ब्रजमें होत अँधेरो॥
यह कहि ग्वाल सखनको फेरो अपनो गाय जाय सब घेरो॥
ऐसे कहि यशुमति बिलखाई। किये यत्न बहु प्राण न जाई॥
बिलपति बिकल शममहतारी। अति व्याकुल सब ब्रजकी नारी

देखि दुखित ब्रजलोग सब, और यशोदा माय।
तब हरि कहि यह सुख दियो, बहुरि मिलैंगे आय॥
धरणीके हितकारि, मथुरातन चितये बहुरि।
कह्यो द्दगन सनकारि, रथ हांकन अक्रूर सों॥

बार बार यशुदा यों भाखे। कोऊ चलत गोपालहि राखे॥
सुफलकसुत बैरी भयो आई। हरे प्राण धन बाल कन्हाई॥
हरहु कंस बरु गोधन सारो। कै करि मोहिं बन्दिमें डारो॥
ऐसेहू दुख भ्राम सभागे। खेलहिं मो नयननके आगे॥
यह कहि महि लोटत अकुलानी। अतिही दुखित नन्दकी रानी
गोपीजन विरहानल डाढ़ीं। रहिं गद्द प्रेम बियोगनि ठाढ़ीं॥
जिमि कुमदिनिगण नीरबिहीना। रबिहि प्रकाश तासते दीना
श्यामविमुखच्चणच्चणकुम्हिलानी। बहुरोमिलनकठिनजियजानी
बल बुधि थकितस्रवतजललोचन। चलिनहिंसकींरहींमदमोचन
ग्वैंडेलौं सब गईं बिहाला। ब्रज तजि गमन कियो गोपाला॥

लै गये मधु अक्रूर निकारी। मारखौ ज्यों सब दीन बिडारी॥
देखत रहीं थकी टक लाई। जब लगि धूरि दृष्टिमें आई॥

भये ओट जब दृगनते, मुर्छि परीं बिलखाय।
कहति गयो रथ दूरि अब, धूरि न परति लखाय॥
कहा करैं ब्रज जाय, मन हरि लैगयो सांवरो।
परत न आगे पाय, पाछेही लोचन लखत॥

वदन विकल बिरहारस मातीं। भई न पवन सङ्ग उड़ि जातीं॥
रजहू नहीं विधाता बानी। जातीं चरण कमल लपटानी॥
भई नहीं यक रथको अङ्गा। जातीं चली तहां लगि सङ्गा॥
बिछुरे आज श्याम सुखराशी। तो परतीति दृगनकी नाशी॥
उड़ि नहि गये श्याम सँग लागे। कृष्णमयी नहिं भये अभागे॥
रसिक प्रेमके जगत बखाने। रूप लालची सब कोउ जाने॥
सो करणी कछु इननहिं कीन्हीं। वृथा मीनकी छवि हरिलीन्ही॥
धनि धनि मीन प्रीतिपथ सांचे। सखि ये नयन हमारे कांचे॥
अबये शूल सहत जिय शोचत। उमँगि उमँगि भरि२ जलमोचत॥
हरि बिन अब लखिये ब्रज सूनो। समय चूकि सहिये दुख दूनो॥
भई अजान सबै मनमाहीं। काहू चलत गह्यो रथ नाहीं॥
वृथा लाज करि काज बिगारो। सह्यो दुसह बिरहादुख भारो॥

यों ब्रजतिय पछिताय सब, देखि यशोदहि दीन।
लै आई सब नंदगृह, कृश तनु वदन मलीन॥

ब्रजतिय परम उदास, हरि बिन सुख सम्पति सपन।
रहैं प्राण इहि आस, श्याम कह्यो मिलिहौं बहुरि॥
खग मृग विकल जहां तहँ बोलैं। गाय वत्स रांभत सब डोलैं॥
तरुवेली पल्लव कुम्हिलानी। ब्रजकी दशा न परति बखानी॥
चले नन्द गोपनसँग लैकै। ब्रजबासिनको धीरज दैकै॥
बालसखा हरिके सुखदाई। दरशन लागि चले सब धाई॥
उत अक्रूर शोच मनमाहीं। कियो काजमें नीको नाहीं॥
बल मोहन भैया दोउ बारे। अति कोमल नवनीत पियारे॥
करिकै जननी जनक दुखारी। व्याकुल सबै घोषकी नारी॥
मैं लै जात कंसपै तिनको। सो देखत मारैगो इनको॥
धृक धृक धृक कुबुद्धि यह मेरी। जाहुँ लिवाय इन्हैं ब्रज फेरी॥
कंस आज मारै वरु मोहीं। हरिको जाय देहुँ नहिं ओहीं॥
यहि अन्तर यमुना नियराई। ठाढ़ो कियो तहां रथ जाई॥
अन्तर्यामी हरि भगवाना। भक्त हृदय संशय पहिचाना॥
भूख लगी तब हरि कह्यो, हमैं कलेऊ देहु।
करि यमुना अस्नान पुनि, तात तुमहुँ कछु लेहु॥
सुनत वचन मृदु कान, सुफलकसुत सुनि तुरतही।
कछु मेवा पकवान, भोजन दुहुँ भैयन दियो॥
आप स्नान करन मन दीन्हों। यमुना पैठि सङ्कलप कीन्हों॥
जबहीं शीश नीरमें डारयो। तब अचरज यक भाव निहारयो।
राम कृष्ण रथपर सुखदाई। जलभीतर शोभित दोउ भाई॥

चकित भयो जलते शिर काढ्यो । देख्यो रथ बाहर सो ठाढ्यो ॥
बहुरो बूड़ि सलिलमें पेख्यो । वैसोइ फेरि तहां रथ देख्यो ॥
जगा जलमें अगा प्रकट निहारै । पुनि पुनि संभ्रम बुद्धि विचारै
स्वप्न किधौं जाग्रत यह होई । कैधौं मो मतिमें भ्रम कोई ॥
कैधौं जलमें रथको छाया । कैधौं यह हरिकी कछु माया ॥
भयो विकल मति थिर कछु नाहीं । देखन लग्यो बहुरिजलमाहीं
जब अक्रूर बहुत अकुलायो । निज स्वरूप तहँ श्याम दिखायो॥
देखत भयो तहां जलमाहीं । सकल देव ठाढ़े हरिपाहीं ॥
अस्तुति करत चरण चित दीने । नमित कन्धपर समुग्रटकीने ॥

शेष सहस फणि मणिनयुत, जग मग ज्योति अनूप ।
श्वेत चरण पटपीत युत, राजित हलधर रूप ॥
नव नीरद तनु श्याम, पीतबास लावण्य निधि ॥
भुज प्रलम्ब अभिराम, शेष अङ्क हरि सोहहीं ॥

चारु अरुण पङ्कजदल नयना । चितवनि चारु चारु मृदुवयना
चारु तिलक वर भाल विराजैं । चारु कुटिल कुन्तल छवि छाजैं
चारु तिलक नासिका सुहाई । चारु कपोल अधर अरुणाई ॥
सुन्दर श्रवण चिबुक दरग्रीवा । चारु वसन विहसन छविसीवा
उर विशाल श्रीचिह्न विराजैं । उदर सुवर रोमावलि राजैं ॥
नाभि गँभीर छीण कटि देशू । भुज विशाल वर चारु सुवेशू ॥
जङ्घ गुलुफ अति चारु सुहाई । पदकमलन नखशशि छविछाई

नख शिख अनुपम रूप बिराजै। दिव्याभरण सकल अँग छाजै॥
कुण्डल मुकुट जटित मणिमाला। मुक्तमाल बनमाल बिशाला॥
यज्ञोपवित पितम्बर कांधे। कौस्तुभमणि अङ्गन बर बांधे॥
करपल्लवन मुद्रिका राजै। शङ्ख चक्र गद पद्म बिराजै॥
क्षुद्रघण्टिका अति द्युतिकारी। मणिन जटति नूपुर छबि भारी

नन्द सुनन्दादिकनते, दिव्य पारषद आहिं।
कर जोरे ठाढ़े सबै, परिचर्य्याके माहिं॥
ठाढ़ी जोरे हाथ, माया निज माया सहित।
भक्ति भक्तके साथ, अम्बरीष प्रहलाद बलि॥

शिव अज सहित शिवाअरुवानी। सनकादिक नारद अरु ज्ञानी
भक्तन सहित सुरासुर जेते। कर जोरे ठाढ़े सब तेते॥
चन्द्र कुवेर बरुण दिकपाला। मनु विशुकर्म्म धर्म्म यमकाला॥
वन्दन करत चरण धरि माथा। गावत वेद सकल गुण गाथा॥
जलमें लखि अक्रूर भुलान्यो। कृष्णप्रभाव प्रगट सब जान्यो॥
चिन्ता सकल चित्तकी नाशी। जान्यो कृष्ण ब्रह्म अविनाशी॥
मोहिं कृपा करि दर्शन दीनो। तहँ प्रणाम सुफलकसुत कीनो॥
अति आनन्द बढ्यो मनमाहीं। अस्तुति करन लग्यो तिहिठाहीं
धन्य धन्य प्रभु अन्तरयामी। नारायण त्रिभुवनके स्वामी॥
सकल विश्व तुमहीं विस्तारो। विश्वरूप है रूप तुम्हारो॥
निर्गुण निर्विकार अविनाशी। लीला सगुण गुणनकी राशी।॥
प्रभु तुम सब देवनके देवा। जानै कौन तुम्हारो भेवा॥

को जानै तुम्हरो भेव हरि, तुम सकल देवमयी प्रभो।
आदि कारण सबहिके तुम, विश्व सब तुम्हरो विभो॥
नाग नर सुर असुर अग जग, दास सब तुम्हरे हरी॥
रहत मायावश तुम्हारी, जाहि तुम ज्यहि विधि करौ॥
योग यज्ञ अनेक कर्म्मन करि, तुम्हें सब ध्यावहीं।
जैसो जाको भाव तैसो, तुमहिंते फल पावहीं॥
अति अगाध अपार तुम गति, पार काहू नहिं लह्यो।
शम्भु शेष गणेश विधना, नेति निगमनहू कह्यो॥
भक्त हित धरि विविध तनु तुम, चरित अद्भुत विस्तरो।
मच्छ कच्छ बराह वपु ह्वै, वेद गिरि तुम उद्धरो॥
होय नरहरि भक्त प्रण करि, शरण हित वामन भये।
भृगुवंशमणि अभिराम तनु धरि, मान मय क्षत्रिय हये॥
राम रूप निपाति रावण, अरु विभीषन नृप कियो॥
कंस अरि यदुवंशभूषण, कृष्ण वपु छविनिधि लियो।
बौद्ध रूप दयालु धरि, हिंसादि कर्म्म न भावहीं॥
निःकलङ्क मलेच्छहा, दशरूप श्रुति तव गावहीं॥
तवगुण रूप अनन्त प्रभु, हौं अजान जगदीश।
यों अस्तुति अक्रूर करि, नायो पदपर शीश॥
तबहि श्याम सुखदाय, अन्तरहित जलते भये।
निकस्यो अति अकुलाय, तब जलते अक्रूर पुनि॥
लख्यौ कृष्णकी जब प्रभुताई। बढ़्यो हर्ष अति उर न समाई॥

भूले नेम न कछु कहि जाई । मगन ध्यान बलराम कन्हाई ॥
कहत मनहिंमन यह अविनाशी । पूरण ब्रह्म सकल गुणराशी ॥
हरण करण समरथ भगवाना । नाहिन इन समान कोउ आना ॥
कितक कंस भेदी उर संशा । ये करिहैं ताको निरवंशा ॥
चल्यो हांकि रथ तब हर्षाई । नँद उपनन्द मिले तहँ आई ॥
हरि अक्रूरहि बूझत जाहीं । करि सयानमन मन मुसकाहीं ॥
कहो तात तुम अब हरषाने । प्रथमहिं कछु बहुत मुरझाने ॥
कहौ सांच हमसों सोइ बानी । तब अस्तुति अक्रूर बखानी ॥
धन्य धन्य प्रभु धनि श्रीकन्ता । गुणन अगाध अनादि अनन्ता ॥
निगम नेति कहि जाहि बखानै । सहसानन नित नव गुणगानै ॥
करिकै कृपा जानि निज दासा । दिये दरश संशय सब नासा ॥

अब मोहिं प्रभु बूझत कहा, तुम त्रिभुवनके नाथ ।
कर्ता हर्ता जगतके, सकल तुम्हारे हाथ ॥
कहा बापुरो कंस, कहा मल्ल कह कुवलिया ।
अब करिये निर्व्वंश, वेगि नाथ ऐसे खलन ॥

सुनि मोहन सुफलकसुत बानी । भये प्रसन्न भक्त सुखदानी ॥
जात चले रथपर दोउ भाई । सन्मुख दृष्टि मधुपुरी आई ॥
तरणि किरण महलन छवि छाई । जगमगात नभ सुन्दरताई ॥
अक्रूरहि बूझत घनश्यामा । कहियत है मधुपुर ये नामा ॥
श्रवन सुनत रहत हे जाही । देख्यो आजु दृगनते ताही ॥
कञ्चन कोटि कँगूरा सोहैं । बैठे मनहुं मदन मन मोहैं ॥

वन उपवन पुरके चहुं पाहीं । अति भावत मेरे मन माहीं ॥
लखि लखि हरि मथुराको शोभा ।पुनिपुनिपुलकत हरिमनलोभा
तहां जन्म नियमें करि जाने । ताते अधिक हर्ष उर माने ॥
बाजति नोबति नृपति दुवारा । होत शब्द घरियाल उदारा ॥
सुनि सुनि मन आनन्द बढ़ावैं। नगर शोर सुनि रुचि उपजावैं॥
कनक खचित मणि जटित अटारो । धव नवलअलिङ चित्रवारो

ध्वज पताक तोरण कलश, जहँ तहँ ललित वितान ।
मुक्ताझालरि झलमलै, को करि सकै बखान ॥
निरखि निरखि हर्षात, मनमोहन अक्रूरको ।
वलहि देखावत जात, ललित लाल कर पल्लवन ॥

कह अक्रूर सुनहु व्रजनाथा । भई आजु मधुपुरी सनाथा ॥
तुमहि विलोकि विराजति ऐसो । पति आगमतिय सोहति जैसो
कसो कोट कटि किङ्किणि मानों । उपवन वसनविविध रँगजानों
मन्दिर चित्र विचित्र सुहाये । जनु भूषण रचि रङ्ग बनाये ॥
जहँ तहँ विविध बाजने बाजैं । मनहु चरण नूपुर ध्वनि साजैं ॥
धामन ध्वजा विराजतहैं जिमि । संभ्रम गति अंचल चंचलतिमि
उच्च अटन पङ्क्तु छवि छाजै । जनु उर आनन्द उमगि विराजै
भूलौं अति सुख संभ्रम ताते । प्रगटे कनक कलश कुच जाते ॥
मांखा द्वार दरीची द्वारा । लागे विद्रुम कुलिश किवारा ॥
मनहु तुम्हारे दरशन लागी । नयनन रहीं निमेषन त्यागी ॥

मुक्ता झालरि खिरकि बिराजैं। हँसति मनों आनन्दन साजैं॥
जगमगि ज्योतिरही छवि झालो। जनु तुम पंथ निहारत भूलो।

नीके हरि अवलोकिये, पुरी परम रुचि रूप।
असुर कंसको जीतिकै, होहु इहांके भूप॥
सुनि बिहंसे नँदलाल, ललित वचन अक्रूरके।
पहुंच्यो रथ ततकाल, जाय निकट मथुरापुरी॥

ार निकट पहुँचे जब जाई। सुफलकसुवन सहित दोउ भाई
..ार श्याम रथपर दोउ राजें। कोटिन काम निरखि छबि लाजैं
कंस दूत लखि जहँ तहँ धाये। समाचार सब नृपहि सुनाये॥
आये बल मोहन दोउ भाई। सुनतहि नाम उठ्यो अकुलाई॥
गहि कर खड्ग चर्म लै धायो। रङ्गभूमिके महलन आयो॥
गज मुष्टिक चाणूर बुलाये। और सुभट सब बोलि पठाये॥
तिनसन कह्यो सजग सब होऊ। ठावँहि ठावँ रहो सब कोऊ॥
बहुतक असुर निकट बैठाये। धनुष पास बहु सुभट पठाये॥
पठवत दूत दूतपर धाई। आये कहँ लगि देखौ जाई॥
गर्जैं कंस सेन सब साजैं। द्वारे विविध बाजने बाजैं॥
पीरो भयो हृदय डर मानो। सूखत अधर वदन कुम्हिलानो॥
नन्दमहरके सुत सुनि आवत। मन मन मारन गर्व बढ़ावत॥

परयो शोर मथुरा नगर, आवत नन्दकुमार।
सुनि धाये नर नारि सब, गृहको काम बिसार॥

लाज कान डर डार, कोउ खिरकिन कोउ अटनपर ।
कोऊ खड़ी दुवार, कोउ धावत गलियन फिरत ॥
कियो प्रवेश नगरमें जाई । असुरनिकन्दन जनसुखदाई ॥
इन्दुवरगा रथपर दोउ वीरा । सुभग श्याम वर गौर शरीरा ॥
शीश मुकुट कुण्डल छवि छाजै । कुण्डल एक राम अति राजै ॥
नीलपीत वर वसन निकाई । मुक्तमाल बनमाल सुहाई ॥
निरखि सकल पुरजन अनुरागे । धाय धाय रथके सँग लागे ॥
युगल रूपलखि होहिं सुखारे । यकटकलोचन टरहिं न टारे ॥
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी । बढ्यो प्रेम आनँद उर भारी ॥
निशिदिनसुनिगुणगणअभिलासी । अतिआरतदरशनकी प्यासी
शशि आनन मृदुवेष किशोरा । भये निरखिदोउ नयन चकोरा ॥
पुलकि गात दृग आनँद पानी । कहत सप्रेम परस्पर वानी ॥
येई सखि बलराम कन्हाई । सुनियत जिनकी बहुत बड़ाई ॥
नन्दगोपके ये दोउ ढोटा । गौर श्याम सुन्दर वर जोटा ॥
मणि कञ्चनके शिखर दोउ, किधौं मानसर हंस ।
कै प्रगटे व्रज देन सुख, त्रिभुवनके अवतंस ॥
धनि धनि गोकुल ग्राम, धन्य श्याम बलराम धनि ।
धनि धनि व्रजकी वाम, प्रगट प्रीति पाली जिन्हन ॥
सुनत हुती पुरुषारथ जिनके । देखहु रूप नयन भरि तिनके ॥
अतिहि अनूप वेषनट सोहैं । कहहु सो को छवि देखिन मोहैं ॥
पूरव जन्म सुकृत कोउ कीन्हों । सोविधि यह नयननफल दीन्हों

अति अभिराम श्याम छविधारी। इनहीं प्रथम पूतना मारी॥
शकटा तृण इनहीं संहारे। वत्स बका अघ पुनि इन मारे॥
इन्द्रकोप बर्षन ब्रज कीनो। इनहीं गिरि कर धरि नख लीनो॥
जलते काली इनहिं निकारयो। पुनि अरिष्ट केशी इन मारयो॥
गौर शरीर नाम बल जोई। धेनुक अरु प्रलम्बहा सोई॥
अब अक्रूर पठै नृपराई। इहां बोलि पठये दोउ भाई॥
रङ्गभूमि रचि कियो अखारो। कहा करन धौं हृदय विचारो॥
जननी धीर धरयो धौं कैसे। अति बालक पठये हैं ऐसे॥
देहिं अशीश मांगि विधिपाहीं। न्हातहु बार खसहु तनु नाहीं॥

लेत बलैया वारिकै, आंचर यह कहि नार।
करिहै इनसों कपट नृप, तौ ह्वै है जरि छार॥
सफल भये मनकाम, देखि दरश इनको सखी।
कुशल जाहु निज धाम, देत अशीश सुनाय सब॥

कहत युवति यक सुनहु सयानी। मैं जो सुन्यो सो कहत बखानी
ये वसुदेव कुँवर सखि कोऊ। ऐसे लोग कहत सब कोऊ॥
कंसत्रास कहि मात पठाये। नन्द सखा गृह जाय दुराये॥
करि दुलार यशुमति पय प्याये। हित करि तिनके बाल कहाये॥
गौर अङ्ग नयनन रतनारे। जो प्रलम्बको मारनहारे॥
कुण्डल एक बाम श्रुति धारी। ते रोहिणीसुवन सुखकारी॥
अति अभिराम महाबलधामा। ताते नाम धरयो बलरामा॥
श्याम सुभग तनु उर बनमाला। शीशमुकुट दोउ नयन विशाला

राखैं धरी बनाय, ह्वै आवहु नृप द्वारलौं।
तव लीजो पट आय, जो भावै सो दीजियो॥
बन बन फिरत चरावत गैया। अहिर जाति कामरी उढ़ैया॥
नटको भेष साजिकै आये। नृप अम्बर पहिरन मन भाये॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा। पहिरावन लैवेकी आसा॥
नेक आश जीवनकी जोऊ। खोवन चहत अवहिं पुनि सोऊ॥
यह सुनि श्याम कह्यो मुसकाई। देहु वसन है तुमहिं भलाई॥
हम मांगतहैं सहजहि तुमसों। तुम कत करत इती रिस हमसों॥
सहज बातको रिस नहिं कीजै। मांगे देहु मानि गुण लीजै॥
भौंह ऐंठि तव रजक रिसानो। ये नृप वसन नहीं तुम जानो॥
अवहीं सुनत चणकमें मारैं। नन्दहि पकरि बन्दिमें डारैं॥
जाहु चले ह्यांते अब नीके। कै ह्वै हो अवहीं बिन जीके॥
करत अचगरी मोसों आई। दुहुँन मारिहौं कंस दुहाई॥
यह सुनि कियो श्याम सो ख्याला। भुजापकरिपटक्योततकाला॥
तुरत गयो तनु तजि स्वरग, कीन्हों रजक निहाल।
जन्म मरणते रह गयो, ऐसो गुण गोपाल॥
लखिकै गये पराय, सङ्गी ताके सब रजक।
लीन्हे वसन लटाय, श्याम प्रथमहीं नृपतिके॥
रजक मारि सब वसन लुटाये। आप पहिरि ग्वालन पहिराये॥
विविध रङ्ग बहु भांति नवीने। निजनिज रुचि ग्वालन सब लीने॥
चले तहांते सब हरषाई। मिल्यो एक दरजी पुनि आई॥

प्रभुको देखि बहुत सुख पायो। चरणकमलको माथ नवायो॥
घाट बाट जो बसन सुहाये। ते उन करि सम तुरत बनाये॥
ताको कृतहि मान प्रभु लीन्हों। अभयदान दै निज पद दीन्हों॥
पुनि यक माली हतो सुदामा। ताके द्वार गये घनश्यामा॥
तुरत आइ तिन पद शिर नायो। हरि हलधर लखि हर्ष बढ़ायो
आदर सहित सदनमें आने। चरण धोय निज भाग्य बखाने॥
नृपति हेत जो हार बनाये। ते सप्रेम प्रभुको पहिराये॥
हाथ जोरि बहु विनय सुनाई। जय जय श्रीपति प्रभु यदुराई॥
मोको बहुत अनुग्रह कीन्हों। दीन जानि अपनो करि लीन्हों॥

सुनि सप्रेम ताके वचन, रीझे श्याम सुजान।
माली पूरण काम करि, दियो भक्ति वरदान॥
सखन सहित दोउ भाय, बहुरि हर्षि आगे चले।
तहां पन्थमें आय, कुबिजा लै चन्दन मिली॥

निरखि श्यामछबि तनुसुधिभूली। बोली हरषि प्रेमरस फूली॥
हो प्रभु दीनबन्धु सुखदाई। तुम्हैं नाथ चन्दन मैं ल्याई॥
मोहिं कल्पना यह जगवन्दन। चरचौं अङ्ग तुम्हारे चन्दन॥
दासीकुल कुबिजा मम नाऊं। नृपके उर चन्दन नित लाऊं॥
तुमहिं जानिकै प्रभु तिहि ठाहीं। अरि अरु मित्र बसत उरमाहीं
आजहि दरश प्रकट प्रभु पायो। मो जियको सन्ताप नशायो॥
अब यह मलय कृपा करि लीजै। पूरण काम नाथ मम कीजै॥
अन्तर्यामी प्रभु सुखदानी। भाव भक्ति कुबिजा पहिचानी॥

भावहिके वश त्रिभुवनराई। हित करि कुबिजा निकट बुलाई॥
वन्दन करि पूजे दोउ भाई। रही श्याम छवि निरखि भुलाई॥
तब हरि हलधरसों हँसि भाख्यो। हेत बहुत इन हमसों राख्यो॥
हमहू कछु याको हित कीजै। सूधे अङ्ग नेक करि दीजै॥

पग राख्यो पग पीठपर, धरेउ शीश कर श्याम।
नेक उठाई चिबुक गहि, भई सुन्दरी वाम॥
को करि सकै वखान, जाहि बनाई आपु हरि।
भई रूप गुणखान, कुबिजा मन आनन्द अति॥

महा कुरूप कूबरी तैसी। परसत तुरत भई रति जैसी॥
तब कुबिजा अपने मन मान्यो। मिले मोहिं मोहन पति जान्यो।
पुनि पुनि कमलचरण सिरनाई। हाथ जोरि बहु विनय सुनाई॥
जिमिकीनीम्बहि कृपा कृपाला। तिमिममसदनचलहु नँदलाला
अपने चरणकमल तहँ धरिये। सफल मनोरथ मेरो करिये॥
तासों विहँसि कह्यो घनश्यामा। कंस देखि अइहौं तव धामा
अपनी करि तिय सदन पठाई। चले धनुष देखन दोउ भाई॥
ग्वाल सखा सँग सुभग सुहाये। कामसेन वर रूप बनाये॥
पुरजन भीर चहूँ दिशि भारी। चढ़ी अटारिन देखहिं नारी।
निरखि श्याम सुख द्वन्द उदारा। जनु पुर उदधि तरङ्ग अपारा॥
जहँ तहँ कहत सकल पुरवासी। भई सुन्दरी कुबिजा दासी॥
श्याम कछू चेटकसो कीन्हो। अङ्ग सुधारि रूप वर दीन्हो॥

रजक मारि लूटे बसन, करी कूबरी चारु।
बाल भाव मोहत मनहिं, हैं कोउ देव उदारु॥
सुनत रहे दिन रैन, पुरुषारथ इनको भवन।
तैसे देखे नैन, ब्रजवासी प्रभु नन्दसुत॥

गये धनुषशाला दोउ बीरा। देखत चकित भये भटभीरा॥
अस्त्र सँभारि उठे अकुलाई। देखि थके सुन्दर दोउ भाई॥
धनुष समीप असुर सब ठाढ़े। अति बलवन्त धीर रण गाढ़े॥
सहजहि घेरि लिये दोउ भैया। बोलि उठे सब सुनहु कन्हैया॥
सुनियत अतिबल भुजा तुम्हारी। यह कोदण्ड चढ़ावहु भारी॥
तिनसों बिहँसि कह्यो सुखरासी। कहा करत हमसों यह हासी
कहां बाल हम बैस किशोरा। कहां धनुष अति गरुअ कठोरा॥
शूरबीर ठाढ़े सब लहिये। तिनसों धनुष चढ़ावन कहिये॥
खेलन कहौ खेल कछु हमको। सो हम खेलि दिखावैं तुमको॥
ऐसे श्याम हसत तिनमाहीं। अरु अक्रूर गये नृप पाहीं॥
समाचार सब जाय सुनाये। नन्द सहित बल मोहन आये॥
यह कहि घर अक्रूर सिधारे। रजक जाय तिहि काल पुकारे॥

मारे बिन दूषण हमैं, नन्द गोपके बाल।
लीन्हे बसन लुटायकै, पहिराये सब ग्वाल॥
सुनतहि उठ्यो रिसाय, बोल्यो सबन बुलाय नृप।
करौ प्रथमहीं आय, देखौ इन ढीठे बड़े॥

अब मारिहौं अवशि दोउ भाई। लेहुँ आज सब ब्रजहि लटाई॥

देहु बन्दिमें नन्दहि लाई । गये अहीर बहुत इतराई ॥
मैं सादर करि इनहिं बुलायो । आगे दै इन रजक मरायो ॥
देखहु कोउ जान नहिं पावैं । असुर जाय सबको गहि ल्यावैं ॥
ऐसे कंस कहत रिसि आई । तबहीं दूतन खबरि जनाई ॥
कुबिजासों चन्दन हरि लीन्हों । ताको रूप अनूपम दीन्हों ॥
धनुष निकट पहुँचे दोउ भाई । यह सुनतहि कछु गयो सुखाई ॥
बहुरि धीर धरि असुर पठाये । ते यह कहत श्यामपहँ आये ॥
पहिले तोरि धनुष गोपाला । बहुरि बुलायो निकट भुवाला ॥
सुनि असुरनके वचन कन्हाई । बोले मनहीं मन मुसकाई ॥
याहीको नृप हमहिं बुलायो । जोरेउ बैर जानि यह पायो ॥
गहन लगे ते बालक जानी । तबहि श्याम कछु रिस उरआनी ॥

उर आनि रिस गहि पानि तुरतहि, असुर लै मारे सबै ।
अतिहि वेगि उठाय धनुषहि, तोरि महि डारेउ तबै ॥
उठे तब करि क्रोध योधा, मार मार पुकारहीं ।
नन्दसुत रणवीर हो, धर धीर असुर सँहारहीं ॥
एक झटकत एक पटकत, ते न मटकत फिरतहीं ।
एक अटकत एक लटकत, एक सटकत जहिं तहीं ॥
ताल चटकत चमकि छटकत, देखि भटकत नट भले ।
एक पकरि फिराय पटकत, जात ते नृपपहँ चले ॥

ग्वालहि मारे असुर सब, तोरि धनुष नँदलाल ।
चले सामुहें पवँरि तकि, जहां कुवलिया व्याल ॥

देखत चढ़े विमान, ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनि।
डारत सुमन सुजान, ब्रजबासी प्रभुपद हरषि॥
रङ्गभूमि हरि हलधर आये। सङ्ग सखा सब ग्वाल सुहाये॥
देख्यो द्विरद द्वारपर ठाढ़ो। मनहुँ गर्वको गिरिवर गाढ़ो॥
कन्धकेशरी गर्वप्रहारी। बल तन हँसे गयन्द निहारी॥
ता छणकी छबि कही न जाई। कसत पीतपट कटि लपटाई॥
श्याम सुभग लट घूँघरवारी। पाग पेंच मिलि पाग सँवारी॥
मधुपुरकी युवती सब बाढ़ी। कहत परस्पर महलन ठाढ़ी॥
लखहु सखी अँग अङ्ग लुनाई। रूपराशि मनहरण कन्हाई॥
कोटि मदनछबि विधि लुनि लीनी। तब यह मूरतिसांवरिकीनी
अतिहि कुशल ये लखि सुखदाता। हम अभागिके क्रूर विधाता
धनि ब्रजतिय इनके सँग लागीं। निशिदिन रहत प्रेमरस पागीं
बन बीथिन कुञ्जन बिच डोलैं। रास हास रस करत कलोलैं॥
होयँ हमारे सुकृत कछु, सुनहु सखी तौ आज।
जैसे तोरेउ धनुष हरि, त्यों जीतैं गजराज॥
सुरन मनावत जात, अति कोमज नँदलाल लखि।
बचहु कुशल दोउ भ्रात, मात पिताके पुण्यते॥
देखि मतङ्ग द्वार मतवारो। गजपालहिं बलराम हँकारो॥
सुनहु महावत बात हमारी। लेहु द्वारते बारण टारी॥
जान देहु हमको नृप पासा। नातरु ह्वैहै गजको नासा॥
कहै देत नहिं दोष हमारो। मति जानै तू हरिको बारो॥

त्रिभुवनपति दुष्टनसंहारी। धरणी भार उतारनकारी॥
सुनत बोल गजपाल रिसानो। रे गोपाल तुम्हैं मैं जानो॥
त्रिभुवनपति अब गाय चराये। गांड़े खान गजनसों आये॥
बाढ़त बड़े शूरको नाई। जैहैं प्राण अवहि क्षण माई॥
तोरेउ धनुष भयो अति गारो। नहि जानत यह गज अतिभारो॥
दश सहस्र गजको बल याही। डरपत है ऐरावत ताही॥
जब लगि यासों लरि नहि लैहो। तब लगि कैसे भीतर जैहो॥
ऐसे कहि अङ्कुश कर लीन्हों। गज गजपाल सामुहें कीन्हों॥

तबहि कोपि हलधर कह्यो, सुन रे मूढ़ कुजात।
गज समेत पटकौं अबहि, मुंह सँभारि कहु बात॥
नेक न लगि है वार, वारण मरि जैहै अबहि।
तासों कहत पुकार, मान अजहुँ मेरो कह्यो॥

यह सुनि गज गजपाल चलायो। झटकि शुण्ड बहुरो गज धायो॥
लीन्हो लपटि सूँडके माहीं। देखत शूर वीर चहुं घाहीं॥
तब बलराम कोप करि भारो। वज्र समान थाप इक मारो॥
तनु समेटि कर करि सकुचान्यो। दई कूक मदरंध्र सुखान्यो॥
तबहीं उचटि भये बल न्यारे। असुरसेन देखत हिय हारे॥
हँसत निकट ठाढ़े दोउ भाई। देखि महावत रह्यो लजाई॥
चकित रहेउ हाथी जब जान्यो। तब मनमें गजपाल डेरान्यो॥
जो ये बालक वधे न जाहीं। मारै कंस मोहि पलमाहीं॥
अङ्कुश मस्तकि शीशपर दीन्हो। बहुरि गयन्दहि तातो कीन्हो॥

भयो क्रोध हाथी मनमाहीं। गण्डस्थल मद अम्बु चुचाहीं॥
पवन वेगते आतुर धायो। गरजि घुमरि दोउनपर आयो॥
महा कोप करि गहे कन्हाई। परेउ दशन दै धरणि धसाई॥

डरपि उठे तेहि काल सब, सुर मुनि पुर नरनारि।
दुहू दशन बिच ह्वै कढे, बलनिधि प्रभु दैत्यारि॥
उठे गजहिके साथ, बहुरि ख्यालई हांक दै।
तुरतहि भये सनाथ, देखि चरित सब श्यामके॥

हांक सुनत अति कोप बढ़ायो। झटकि सूंड बहुरो गज धायो॥
रहे उदर तर दबकि मुरारी। गये जान गज रहेउ निहारी॥
पाछे प्रगट बहुरि हरि टेरेउ। बलदाऊ आगे ते घेरेउ॥
लागे गजहि खेलावन दोऊ। चकित भये देखत सब कोऊ॥
चहुँघा फिरत चक्रकी नाई। सूंड पूँछ क्षण क्षण छ्वै जाई॥
नेक नहीं अवसर गज पावै। चारों दिशि हरि फिरत नचावै॥
घात करत मनहीं मनमाहीं। गज रिसविकल इन्हैं रिस नाहीं
कबहूं पूँछ पकरिकै झोलैं। ज्यों बालक बछरन सँग खेलैं॥
कबहूं इत उतते दोउ बीरा। भजत मारिके मुष्टि गँभीरा॥
कबहुँ उदरतर ह्वै कढ़ि जाहीं। नेक छुवन पावत गज नाहीं॥
नील पीत पट कटि फहराहीं। चपल नयन दीरघ बरबाहीं॥
खेलत गज चञ्चल सँग राजैं। निर्तत मदन मनहुं गति साजैं॥

जनु मदन निर्तत साजि गति, इतिश्याम अरुगजखेलहीं।
पूँछ कर गहि कबहुँ आगे, कबहुँ पाछे पेलहीं॥

गजहि लखि पुर नारि नर सब, विकल विधिहि मनावहीं ।
वेगि मारैं श्याम गजको, हम निरखि सुख पावहीं ॥
दीन्हो महावत बहुरि अङ्कुश, क्रोध करि हाथी चल्यो ।
जबहिं हरि गहि पूँछ पटक्यो, नेक नहिं भूपर हल्यो ॥
लये खैंच मृणाल ज्यों रद, सुमन झरि देवन करी ।
दास ब्रजवासी हरषि सब, असुरकी सेना डरी ॥
हँसत हँसत मारेउ प्रबल, द्विरद कुवलिया श्याम ॥
सखन सहित ठाढ़े मुदित, छवि निरखत ब्रजबाम ॥
मारेउ अबदात भ्रात, जहँ तहँ सब कोऊ कहत ।
चिरजीवहु दोउ भ्रात, प्रभु ब्रजबासी दासके ॥

---

## मल्लयुद्ध लीला ।

चले जहां सब मल्ल गोपाला । द्विरद दन्त धरि कन्ध विशाला ॥
गौर श्याम सुन्दर दोउ भाई । श्रमसीकर मुखकमल सुहाई ॥
छवि अपार बलनिधि गम्भीरा । सङ्ग गोप बालककी भीरा ॥
सुनतकंस जिय अतिभय मान्यो । नव खगज्यों पिञ्जरअकुलान्यो
भाजनको मन मांझ विचारा । भाजि न सक्यो लाजकोमारा ॥
गये रङ्गमहि मोहन जबहीं । जेहि जस भाव दरश तेहि तसहीं ॥
उठे गङ्ग सब मल्ल अधीरा । बल समूह देखे दोउ बीरा ॥
दुष्ट दइत्य हते तहँ जेते । रूप भयानक दरशे तेते ॥

कंस समीप भूप जे आये। तिन्हैं राजवंशी दरशाये॥
साधु सिद्ध देखहिं शुभधामा। इष्टदेव पूरण सब कामा॥
देखे सुरगण गगन सुखारी। सब देवनके देव मुरारी॥
ग्वाल बाल सब देखत ऐसे। सदा सङ्ग खेलत ब्रज जैसे॥

महलनते देखैं प्रभुहि, सकल सुन्दरी बाम।
कोटि कामशोभा हरण, नव किशोर सुखधाम॥
देखत अति विपरीत, कंस नृपति नँदलालको।
कम्पि उठ्यो भयभीत, प्रकट काल दरशन भयो॥

सर्व भाव पूरण भगवाना। अबलहिं अबल बलहिं बलवाना॥
ललितहि ललित साधुको साधू। कुलन कुली सब गुणनअगाधू॥
जो जन जैसो ध्यान लगावैं। ताको तिहि विधि दरश दिखावैं॥

कहत देखि सब सुन्दर जोटा। येई नन्दमहरके ढोटा॥
रजक मारि नृप वसन लुटाये। कीन्हे कुबिजा अङ्ग सुहाये॥
इनहीं असुर समूह सँहारेउ। धनुष तोरि हाथी इन मारेउ॥
धरे कन्ध गजदन्त बिराजैं। बालक गोपसखा सँग राजैं॥
देखत असुर भीर चहुं पासा। जिनके बशमैं भूमि अकासा॥
लीन्हे घेरि कंस भय मानो। तब चाणूर कहत हँसि बानी॥
आवहु श्याम इतहि पग धारो। सुनत हुते बहु नाम तुम्हारो॥
सब कोउ तुम्हरे बलहि बखाने। हारि जीत काको को जानै॥
कहा भयो जो गज तुम मारो। लरहु आज हम सङ्ग अखारो॥

कहा नाम हमरो सुन्यो, हँसि बोले घनश्याम।
हम बालक भोरे अवहिं, हमैं खेलसों काम॥
कहिये बात विचार, हमैं तुम्हैं लरिबो कहा।
अपगति यह व्यवहार, आप देखि देखहु हम॥

जान देहु हमको नृपपाहीं। काहेको रोकत मगमाहीं॥
नृप हमको करि हेत बुलायो। तुम यह हमको कहा सुनायो॥
तब चाणूर कह्यो पुनि ऐसे। तुमको बालक कहिये कैसे॥
किये कर्म ब्रजमें तुम जैसे। देखे सुने नहीं कहुँ तैसे॥
गिरि गोवर्द्धन करपे धारेउ। जलते कालो नाग निकारेउ॥
औरो असुर वीर वल भारे। सुनियत खेलतही तुम मारे॥
सो वल आज देखि हम लेहैं। आगे जाय तुम्हैं तब देहैं॥
ज्यों ज्यों कंस लखत दोउ भाई। त्यों त्यों भय व्याकुलअकुलाई
कहि कहि वारहि वार पठावै। मल्लनको बहु त्रास सुनावै॥
क्यों रे सकुच करत मनमाहीं। मारत शत्रु वेग क्यों नाहीं॥
जो दोउ बालक आज न मारो। करौं सकुल तो नाश तुम्हारो॥
नृपसंदेश सुनि मल्ल डराने। कहत परस्पर मन सकुचाने॥

लोन नृपतिको मानके, नन्दसुवनसों आज॥
लर मरिये के मारिये, करै कंसको काज॥
लेहु सुयश नृपपास,अब विलम्ब नहिं कोजिये।
कछू क्रोध कछु त्रास, बोलि उठे तब मल्ल सब॥

हमसों श्याम लरत क्यों नाहीं। घाटि न कछु हमते बलमाहीं॥
पशुपालक तुम कुवँर कन्हाई। जीते बहुतक पशुन खिलाई॥
अबलगि नहीं मल्ल कोउ भेटयो। अबतौ हमसँग परयो चपेटयो
मल्लयुद्ध तुमसों हम लरिहैं। अब नरपतिको कारज करिहैं॥
ऐसे कहि कहि प्रभुहि सुनावैं। भुजा ऐंठि रज अङ्ग चढ़ावैं॥
ठोंकैं ताल गाज ज्यों गरजैं। गहैं गांस हरितन तकि तरजैं॥
आपुसमें सब करत विचारा। डारहु मारि उभय सुकुमारा॥
सुनि सुनि हरि हलधर मुसकाहीं। बोले बहुरि बिहँसितिहिपाहीं
सुनिये सकल मल्ल समुदाई। यहै तुम्हारे मन अब आई॥
नृपपै हमैं जाय नहिं देहो। बड़ो सुयश हमसों लरि लेहो॥
निपट खोज अब परे हमारे। यह न बसो उर भलो तुम्हारे॥
हम न कहैं तो तुम चित जैसो। कहत कहा कीजे अब तैसो॥

जबहिं श्याम ऐसे कह्यो, बिलखि उठीं सब नार।
देखो री मारन चहत, मल्ल उभय सुकुमार।
अति कोमल अति चार, बाचैं कैसे हू दई।
कहत नयन जल ढार, क्यों जननी पठये इहां॥

अतिहि निठर उर जाति अहीरा। लोभ लागि पठये दोउवीरा
येतौ बालक अतिहि अजाना। कियो कहा उन यह अज्ञाना॥
होन चहत अबधौं यह कैसो। कहत कंस यह बात अनैसो॥
कहत सबै हमको यह भावै। करि सहाय विधि इनहिं बचावै॥
तोरयो धनुष हन्यो गज जैसे। जीतहि श्याम इनहुको तैसे॥

जोरि जोरि कर विधिके आगे । अच्छर छोरि छोरि सब मांगे ॥
तब चाणूर कृष्णपै आयो । सहज श्याम कटिपट लपटायो ॥
भुज भुज जोरि भये भिडि ठाढ़े । तकि तकि दांव चलावत गाढ़े ॥
ऐसेहि मुष्टिक बलरामा । भिडे बढ़ाय बाद बलधामा ॥
दोऊ बीर लरत अति सोहैं । देखत सुरनरके मन मोहैं ॥
दीरघ नयन कमलते आछे । ललित लाल कछनी कटि काछे ॥
तनु चन्दन चित्रित छवि जाला । वृषभ कन्ध उर बाहु विशाला ॥

शिरसों शिर भुजसों भुजा, दृष्टि दृष्टिसों जोरि ।
चरण चरण गहि झपटिकै, लपट झपट झकझोरि ॥
गहन न पावत घात, छुटि जात लपटात पुनि ।
शिव विधिपै न गहात, तिन्हैं मल्ल चाहत गहन ॥

श्याम सहज मल्लनसों खेलैं । पकरि पकरि भुज दण्डन पेलैं ॥
भये प्रथम कोमल तनु ताहीं । शिथिल रूप पवित मनमाहीं ॥
तब चाणूर मनहि गरवान्यो । हरिके बलहि तुच्छ करि मान्यो ॥
कोटि कुलिशसम तनु तिहि काला । वुरतहि होय गये नँदलाला ॥
करिके कोप मुष्टि एक मारी । फूल समान श्याम उर पारी ॥
पहुपहुते कोमल तिहि मान्यो । तिन मारयो अपने जिय जान्यो ॥
भयो वेगि अति हर्षि नियारो । कहन लग्यो मुरि अहिर पछारो ॥
देख्यो हँसत गोपालहि ठाढ़ो । परयो शोच प्राणन अति गाढ़ो ॥
नन्दसुवन महिमा तब जानी । निश्चय मीच आपनी मानी ॥
तब मोहन करि कोप हँकारयो । जनु गजको मृगराज पुकारयो ॥

सुनत हांक सब दांव भुलानो। थरथराय चाणूर डरानो॥
धरयो धाय तब झपटि कन्हाई। पटक्यो महि गहि चरण फिराई॥

पटक्यो चरण गहि फेरि महि, चाणूर अति बल सांवरे।
धँसि गयो धरणी मसकि अंग, सब बिकट भूल्यो दांवरे॥
भयो शब्दाघात सुनि नृप, कंस उर धसको परयो।
निरखि पुर नरनारि नभ सुर, हर्षि हिय आनँद भरयो॥
पकरि ऐसिय भांति तब, बलराम मुष्टिक मारियो।
कहैं धनि धनि लोग सब, जय जयति सुरन उचारियो॥
शल्ल अरु अतिशल्ल तोशल, मल्ल तहँ जितने हते।
लपटि झपटि पछारिकै, पुनि नन्दसुत मारे तिते॥
जब मारे हरि मल्ल सब, परयो कटकमें शोर।
जिमि तारागण रबि उदय, छपैं असुर चहुँओर॥
सखन सहित दोउ बीर, रङ्गभूमि राजत खरे।
हरण भक्त भय पीर, ब्रजबासी प्रभु नन्दके॥

---

## कंसासुर वध लीला।

तबहीं श्याम मल्ल सब मारे। चपे असुर सब लखि हिय हारे॥
[लख]ि कंस अति भयो दुखारी। सेनापतिन कहत दै गारी॥
[ग]ांजत लिये खड्ग बहु क्रोधा। कहत गये कित रे सब योधा॥
[ल]ै तरवार ढाल सब कोऊ। डारहु मारि नन्दसुत दोऊ॥

डारे मारि मल्ल सब मेरे। तनक छोहरा अहिरनकेरे॥
डर नहिं करत चले द्रुत आवैं। देखहु जीवत जान न पावैं॥
असुर वीर अपनी सरि जेते। लै लै नाम पठाये तेते॥
कहा द्वारपालन भय वाढ़ो। करहु कपाट पँवरिको गाढ़ो॥
नृप भय मानि असुर सब धाये। अस्त्र शस्त्र लै हरिपर आये॥
भये विकल लखि पुर नरनारी। मन मन देत कंसको गारी॥
कहत कि भई कठिन यह बाता। बचहिं श्याम सो करै विधाता
आवत लखी असुरकी भीरा। भिरे हांक दै दै दोउ वीरा॥

अवलोकि असुर समूह आवत, हांक दै दोऊ भिरे।
मनहुँ गजगण निरखि केहरि, धाय तिन ऊपर परे॥
सुनत शब्द गँभीर हरिको, हहरि सेनापति गये।
लपकि गहि महि पटकि जहँ तहँ, क्रोध कर बलजू हये॥
श्याम गौर किशोर सुन्दर, असुर गण विच यों लरैं।
जनु शान्त अरु शृङ्गार धरि तन, वीरकी करनी करैं॥
जात नहिं वरणी चटक गहि, पटक द्रुत उत धावहीं।
भूमिभार अपार अघनिधि, असुरनिकर नशावहीं॥

परत्रो नगर खलभल सकल, अति भयव्याकुल कंस॥
पुनि पुनि मन्त्रिनसों कहत, वढ्यो अधिक उर संस॥
कीजै कछु उपाय, जियत जाहिं नहिं वन्धु दोउ।
मारहु नन्द बुलाय, व्रज कोउ रहन न पावहीं॥

पुनि वसुदेव देवकी दोऊ। मारहु कठिन वन्धते सोऊ॥

बहुरों उग्रसेनको मारौं । पितादोष कछु उर नहिं धारौं ॥
ऐसे पुनि पुनि वचन उचारे । कम्पित रिसन खड्ग कर धारे ॥
च्चण बैठत च्चण उठत अधीरा । मारे असुर सकल दोउ बीरा ॥
अति बलवन्त नन्दके बारे । तब सकोप नृप ओर निहारे ॥
गये मचान मचकि चढ़ि दोऊ । बाज झपट देखत सब कोऊ॥
ह्वै गयो चकित नृपति भय मान्यो । आयोकालनिकटयह्जान्यो
रहि गयो लिये खड्ग करमाहीं । हरिको मारिसक्यो सो नाहीं ॥
तबहीं श्याम लात इक मारी । गिरि गयो मुकुट शीशते भारी ॥
दीन ढकेलि मञ्चते भूपर । कूदि परे हरि ताके ऊपर ॥
तहां चतुर्भुज रूप दिखायो । सो स्वरूप दै स्वर्ग पठायो ॥
मार्‍यो कंस कहत सब बानी । जयध्वनि सुरगण गगन बखानी॥

जयध्वनि गगन सुरगण बखानी, सुमनकी वर्षा भई ॥
कहत सब हरि कंस मार्‍यो, हांक यह त्रिभुवन गई ॥
ब्रह्मादि सुर मुनि सिद्ध गंध्रब, मुदित मन अस्तुति भनी ।
भूमि सुर उपकार हित, अवतार धनि त्रिभुवन धनी ॥
धन्य गज धनि मल्ल मारे, धन्य कंसासुर अनी ।
परशि तब अनुपम लही गति, जात नहिं महिमा गनी ॥
धनि अखिल ब्रह्माण्ड नायक, भक्तहित नर तनु धर्‍यो ॥
धन्य ब्रजवासी सकल जिन, प्रेमकरि तुम वश कर्‍यो ॥
करि अस्तुति पुनि पुनि हरषि, सुमन वर्षि सुरवृन्द ।
मुदित बजावत दुन्दुभी, कहि जय जय नदनन्द ॥

मथुरापुर नर नारि, अति प्रफुलित सबको हियो ।
मनहु कुमुदवनचारि, विकसत हरि शशिमुख निरखि ॥

मारयो कंस जबहिं भगवाना । भ्राता अष्ट तासु बलवाना ॥
करि करि कोप युद्धको धाये । ते पुनि सब बलदेव नशाये ॥
बहुरि केश गहि कंस मुरारी । दियो घसीट यमुनजल डारी ॥
कीन्हीं कछुक तहां विश्रामा । भयो विश्रामघाट तिहि नामा ॥
सुनिकै मरन कंसकी नारी । और सकल भ्रातनकी प्यारी ॥
रोदन करि करि विविध विलापा । सुमिरि भूपको रूप प्रतापा ॥
निज हित समुझि भयो दुख भारी । चहत मरणपति नेहविचारी
गये तहां बहुरो दोउ भ्राता । करुणामय कोमल सुखदाता ॥
करि प्रबोध बोलीं सब रानी । रहीं मरणते सुनि प्रभुबानी ॥
बहुत भांति तिनको समुझाई । आये महल द्वार दोउ भाई ॥
कालनेमिके वंश सुहायो । उग्रसेन सुनिकै उठि धायो ॥
तिन प्रभुचरण आय शिर नायो । त्राहि त्राहि कहि वचनसुनायो

त्राहि त्राहि सुनाय आरत, वचन प्रभु चरणन गिरयो ॥
अब करहु करुणानिधि क्षमा, अपराध यह हमते परयो ॥
असुर मारे कंस भाइन, सहित सो उचितै करी ।
परद्रोहरत खल दलन हित, अवतार यह तुम्हरो हरी ॥
करिके कृपा अब प्रजापालन, हेत प्रभु चित दीजिये ।
बर बैठि सिंहासन सुभग, यह राज्य मधुपुरि कीजिये ॥

सुनि दीन वचन न हर्षि हरि, तब उग्रसेन उठायकै ।
बहु भांति करि सनमान पुनि पुनि, लिये हृदय लगायकै ॥
श्रीमुखसों कर जोरि पुनि, कह्यो सुनहु महराज ।
यदुवंशिनको शाप है, हमैं उचित नहिं राज ॥
करहु देव तुम राज, दूरि करो सन्देह सब ।
हम करिहैं सब काज, जो आयसु देहो हमैं ॥

जो नहिं माने आनि तुम्हारी । ताहि दण्ड करिहैं हम भारी ॥
और कछु चित शोच न कीजै । नीति सहित परजहि सुख दीजै
यादव जिते कंसको त्रासा । गृह तजि तजि भजि गये प्रवासा ॥
तिन सबको अब खोज बुलावो । सुख दै मथुरा मांझ बसावो ॥
विप्र धेनु सुरपूजन कीजे । इनकी रचामें चित दीजे ॥
यों प्रभु ऊग्रसेन समुझाये । राजसिंहासन पुनि बैठाये ॥
शिरपर मञ्जुल छत्र फिराई । निज कर चँवर लिये दोउ भाई ॥
युग युग प्रभु भक्तन सुखदाई । राखत जनकी सदा बड़ाई ॥
बरषि सुमन सुर कहत सुखारी । जय जय जय भक्तन हितकारी
उग्रसेन नृप करि बैठायो । लखि मथुरा लोगन सुख पायो ॥
धनि धनि कहत सकल नरनारी । अब करिहैं पितु मातु सुखारी
यहै बात सब घर घरमाहीं । इन सम और जगत कोउ नाहीं ॥

नर नारि सब यह कहत घर घर, और नहिं इनते बियो
धनि मातुपितु दिनराति धनि, सो जन्मजगजबहरिलियो

गहि कंस सहित सहाय मारयो, मरन नहिं रानिन दियो
उग्रसेन नरेश करि पुनि, चवँर कर अपने कियो॥
विबुध हर्ष सुमन वर्षें, सुथिर सब यदुकुल भयो।
अब पावहीं पितु मातु सुनि सुख सकल दुख उनकोगयो
हम जिये अब सब निरखि मुखछवि,जन्मको फलजगलह्यो
जियहु युगयुग भ्रात दोऊ, हरषि पुरवासिन कह्यो॥
कंस मारि भूभार हरि, उग्रसेन करि भूप।
कहां हमारे मातु पितु, तब बोले सुखरूप॥
सङ्गहि चले लिवाय, उग्रसेन अक्रूर तब।
रामकृष्ण दोउ भाय, ब्रजवासी जन दुखहरन॥
उत वसुदेव स्वप्न निशि आयो। हृदय हर्षि देवकी सुनायो॥
रामकृष्ण जनु मधुपुर आये। सुफलकसुत संग नृपति बुलाये॥
असुर सैन हति कंसहि मारयो। उग्रसेन नृपकरि बैठारयो॥
सुनि तिय कहैं नयन भरि पानी। कहत कहा पिय ऐसी बानी॥
सुनिहैं दूत कोऊ दुखदाई। कहिहैं अबहिं कंससों जाई॥
हम करि पाप जन्म जगलीन्हों। सो फल हमैं विधाता दीन्हों॥
वधे सात सुत देखत आगे। बच्यो एक हरि ब्रजले भागे॥
तापर बन्दि किये हम दोऊ। छुग जीवन परवश जग कोऊ॥
हमको मीच नीच विधि भूल्यो। होहु कंसको वंश निमूल्यो॥
कह वसुदेव रोउ मति नारी। धोवो वदन दीन्ह जलझारी॥
कहियत है दुखहरण गोपाला। गर्बप्रहारी दीनदयाला॥

ह्वै हैं प्रगट कबहुँ सुखदाई। तात तुम्हारे त्रिभुवन राई॥

अब जनि होहु अधीर तिय, धरहु धीर सुख पाय।
आयु बुलानो कंसको, देखत जाय बिलाय॥
स्वप्न वृथा नहिं जाय, मानु कह्यो मेरो प्रिया।
आज काल्हिमें आय, तोहिं मिलैं तेरे सुवन॥

यहि अन्तर द्वारे हरि आये। बज्रकपाट जहां जड़ि लाये॥
करुणा करि हरि तिन्हैं निहारा। गये सहज सब उघरिकिवाँरा॥
लखि वसुदेव सामुहें पाये। कहत कुँवर काके दोउ आये॥
दियो दरश तिहि प्रेम सुहायो। जन्म समय जो दरशन पायो॥
मिले धाय पितु मातु निहारे। कह्यो तात हम सुवन तुम्हारे॥
रोवत मधुर निरखि सुत दम्पति। सुनै न कंस मनहिंमन कम्पति
तबहीं कृष्ण कह्यो सुनु माता। मार्‍यो कंस असुर हम ताता॥
मल्ल पछारि सुभट सब मारे। द्विरद कुवलिया दन्त उखारे॥
यह कह करि पितु मातु सुखारे। तुरत तोरि पगबन्धन डारे॥
तब जननी निश्चय करि जानी। रोवन लगी कण्ठ लपटानी॥
बारहिं बार कहत उर लाये। मैं नहिं कबहूं गोद खिलाये॥
द्वादश वर्ष कहां रहे प्यारे। माता पिता जाहिं बलिहारे॥

सुनि जननीके वचन प्रभु, करुणानिधि यदुराय।
भये प्रेमवश दुखित लखि, बोले अति सकुचाय॥
लिख्यो न मेट्यो जाय, मति करु मात विषाद चित।॥
अब पुरवैं दोउ भाय, तुव मनके अभिलाष सब॥

पुत्रजन्म जगमें सुखकारी । तुम पायो हमते दुख भारी ॥
मातपिता जाते दुख पावैं । वृथा जन्म सुत तासु बतावैं ॥
सो अब दोष न मनमें दीजे । होनहार ताकी कह कीजे ॥
अब जननी सब शोच निवारो । तजो शोक आनँद उर धारो
सकल मनोरथ तुम्हरो करिहौं । स्वर्ग पताल जात नहिं डरिहौं
अष्टसिद्धि नवनिधि ले आऊं । घर घर मथुरा मांझ बसाऊं ॥
सुनि प्रभुवचन जननि सुख पायो । बार बार गहि कण्ठ लगायो
अति आनन्द भयो मनमाहीं । सो कहि सकत शारदा नाहीं ॥
कहत तात तुम वदन निहारो । सफल भयो अब जन्म हमारो ॥
सुत हित स्रवत पयोधर चीरा । मिटी सकल उर अन्तर पीरा ॥
वसुदेव हृदय हर्ष अति आयो । सिद्धिलाभ साधक जनु पायो ॥
पूरव पुण्य फल्यो सुखकारी । पायो सुत हित करि दैत्यारी ॥

---

वसुदेवगृह उत्सव लीला ।

तुरत बोलि तब विप्रवर, प्रीति सहित परि पांय ।
प्रथमहिं सङ्कल्पो हती, दई लच्च ते गाय ॥
और दियो बहु दान, बन्दीजन आये सुनत ।
परितोषे सन्मान, अति उछाह वसुदेव मन ॥
तब देवकी कह्यो पतिपासा । भरी परम आनन्द हुलासा ॥
प्रगटो आज सुवन मम धामा । करहु जन्म उत्सवकी सामा ॥

सुनि वसुदेव परम सुख पावा। हृष द्वार दुन्दुभी बजावा॥
यदुवंशी सगरे जुरि आये। ध्वज पताक मन्दिरन बँधाये॥
रोपे कदली खम्भ रसाला। बांधी रचि रुचि बन्दनमाला॥
लखि हरिजन्म अनन्द बधाई। ऋद्धि सिद्धि प्रकटी सब आई॥
हाटककलश अनेक विधाना। मङ्गल द्रव्य रचे विधि नाना॥
गजमुक्तनके चौक बनाये। मन्दिर गलिन सुगन्ध सिंचाये॥
सुनि सब मथुरापुर नर नारी। उमगि उठीं आनँद उर भारी॥
घर घर सबहिन मङ्गल साजे। द्वार द्वार प्रति बाजन बाजे॥
नौसत साज सकल वरनारी। सजि सजि मङ्गलकञ्चन थारी॥
गान करत कलकण्ठ लजावैं। श्रीवसुदेव धामको आवैं॥

जाति पांति परिजन प्रजा, बन्धुहितू सब लोग।
लै लै आवत भेट सजि, हरषत निज निज योग॥
भई भवन अति भीर, नट नाचत गावत गुणी।
धरि धरि मनुज शरीर, मानहुँ सुख आये सकल॥

तब जननी मन अति सुख पाये। उबटनकरि दोउसुत अन्हवाये
निज कर अङ्ग अँगौछि सुहायो। तनदुति लखिदृगताप नशायो
केशरि मलय मिलय रुचिकारी। कियो तिलकवर भालसुधारी
भूषण वसन शृँगारत कैसे। राजकुँवर बर पहरत जैसे॥
कञ्चन मणिमय खचित नवीनों। क्रीट मुकुटशोभितशिरकीनों
कलँगी ललित जड़ाव जड़ाई। तुर्रा मध्य अनूप सुहाई॥
गजमुक्तनके कुण्डल कानन। अति विशाल छबि शोभित आनन

कण्ठपदिकके हार विराजैं। उरविशालपर अति छवि छाजैं॥
पन्न रत्नके अङ्गद नीके। शोभित भुजन भावते जीके॥
कर चूरा नव रतन निकाई। पाणिपल्लवन छाप सुहाई॥
किङ्किणि ललित कलित रवकारी। कटिकेहरिपर वलित सवांरी
चूरा चारु मनोहर पांयन। चरणकमल भक्तन सुखदायन॥

नील पीतवर बसन तनु, दोउ सुतन शृँगार।
चारु अलक मुखशशि झलक, निरखि जात बलिहार॥
हते श्यामके साथ, ग्वाल तिन्हैं पुनि देवकी।
पहिराये निज हाथ, जानि कृष्णप्रीतम सबै॥

ग्वाल बाल सब चकित निहारे। कहिन सकतककुमनहिंविचारे
येतो कृष्ण देवकी जाये। झूठहि यशुमति सुवन कहाये॥
करत शोच मनहीं मनमाहीं। अब हरि ब्रज चलिहैं कै नाहीं॥
तब दोउ कुँवर चौक बैठारे। विप्रवृन्द वसुदेव हँकारे॥
विधिवत पूजि तिलक करवाये। दान बहुत हरि हाथ दिवाये॥
बहुरि आरती मात उतारी। लखि छवि मुदित सकल नरनारी॥
वेदध्वनि महिदेवन कीन्हीं। द्रव्य अनेक निछावरि दीन्हीं॥
वरुण सहित सुर नभ यश गावैं। वरषि कुसुम दुन्दुभी बजावैं॥
परमानन्द सकल पुरवासी। निधि सिधि सब गृह गृहकी दासी
बहुरो सखन सहित दोउ भैया। निज कर परसि जिमाये मैया॥
पूजी सकल कामना जीकी। मिटी कल्पना दारुण हीकी॥
यहि विधि कंस मारि यदुराई। मात पिताकी वन्दि छुड़ाई॥

इहि भांति कंस निपाति यदुपति, मातु पितुको सुख दयो
हर्षि अति नर नारि मथुरा, घरन घर आनन्द भयो॥
परम पावन यश सुहावन, पलहिमें त्रिभुवन गयो।
जीव जल थल नाग नर सुर, सरस रस जहँ तहँ भयो॥
यह कंसहतन पुनीत यश, नित नर सुनैं जे गावहीं।
ते न भवबन्धन परहि फिरि, अघसमूह नशावहीं॥
मिटहि दारिददोष दुरमति, विपति निकट न आवहीं।
सकल मन वाञ्छित लहै अरु, भक्ति अविचल पावहीं॥
कठिनशूलशङ्कटहरण, मङ्गलकरण अशेष।
राम कृष्णके चरित बर, गावत सुनत विशेष॥
नर तनु पाय सुजान, अनुदित गावत हरि कथा।
सकल सुखनको खान, ब्रजवासी प्रभुके सुयश॥

---

## कुबजा गृहप्रवेश लीला।

श्रीयदुकुलकुलकमल तमारी। दीनबन्धु भक्तन हितकारी॥
करिके जननी जनक सुखारी। तब कुबिजाको सुरति सवाँरी॥
नृपति भवन तजिकै अभिरामा। चले बसन कुबिजाके धामा॥
कृष्ण कृपा सबहीपै न्यारी। भाव भजन कुबिजा भइ प्यारी॥
सांचो भाव हृदय जहँ जाने। विवश होय तेहि हाथ बिकाने॥
नारि पुरुष कछु नाहिं न भेदा। नीच ऊंच नहिं करत निषेदा॥

प्रथमहिं जाय मिली मग पाई। सो हित मानि लियो यदुराई॥
चन्दन चर्चि तनक तनु दीन्हों। मनहुँ कोटि तप काशी कीन्हों॥
अति अकुलीन कंसकी दासी। परसत पावन भई रमासी॥
आये पुनि प्रभु ताके धामा। भक्तवत्सल है जिनको नामा॥
जब कुबिजा जान्यो हरि आये। पाटम्बर पांवड़े बिछाये॥
अति आनन्द लियो उठि आगे। पूरब पुण्यपुञ्ज सब जागे॥

ठेढ़ीते सूधी करी, दियो रूप अभिराम।
दासीते रानी भई, पूरे सब मन काम॥
को करि सकै प्रकास, अति विचित्र हरिके गुणन।
सदा दासको दास, भयो रहै प्रभु जननको॥

पुरवासिन सबहिन यह जानी। राजा हरि कुबिजा पटरानी॥
घर घर कहत सकल नर नारी। कियो कहा धौं इन तप भारी॥
मिली तनक चन्दन दै मगमें। भई विदित अति पावन जगमें॥
यह महिमा कछु कहत न आवै। को ताको पटतर अब भावै॥
भूलि कहत कुबिजा जो कोऊ। ताहि रिसाय उठत सब कोऊ॥
सो तो भई कृष्णकी प्यारी। दासी कहत डरत नरनारी॥
करत त्रास मनमें सब प्रानी। डारहि मारि सुनै जो रानी॥
जापर कृपा करैं यदुराई। ताहि नहीं यह कछु अधिकाई॥
सदा सदा हरिकी यह रीती। मानत एक भक्तसों प्रीती॥
धनिधनि कुबिजा हरिकी रानी। धनिधनि कृष्ण प्रीतिकरि मानी

धनि धनि चन्दन अङ्ग लगायो । धनिधनि भवनजहां हरि आयो
कहि कहि सब सुर नारि सिहाहीं । आज कूबरीसम कोउ नाहीं

वसे श्याम कुबिजासदन, तहँ करि कछु विश्राम ।
पुनि आये बसुदेव गृह, जन मन पूरण काम ॥
तब श्री नन्दकुमार, ब्रजबासिनको सुरति करि ।
मनमें कियो विचार, अब सब चलिये नंदपै ॥

ले बसुदेव सङ्ग दोउ भाई । गे जहँ उग्रसेन नृपराई ॥
तहां बहुरि यादव सब आये । पुनि उद्धव अक्रूर बुलाये ॥
तब हरि ऐसे बचन सुनाये । मम हित ब्रजवासी सब आये ॥
नन्दादिक सब गोप जितेका । रह्यो नहीं ब्रजमें कोउ एका ॥
गाय वत्स सब तजे अनेरे । हैं सूने मन्दिर सबकेरे ॥
ह्वै है दुखित यशोमति भैया । जिन हम प्रतिपाले दोउ भैया ॥
बहुत हेत उन हमसों कीन्हों । विविध भांति अबलौं सुख दीन्हों
सकुचत हौं अपने मनमाहीं । उनसों उऋण कबहु मैं नाहीं ॥
पलटो नहि जो उनको दीजै । अब चलि बिदा उन्हैं ब्रज कीजै
सुनि हरि बचन परम सुख पाई । सब मिलि चले जहां नन्दराई
सुनो नन्दगोपन यह बाता । मारो कंस जाय दोउ भ्राता ॥
सांच नहीं मनमें कछु माने । प्रजाभाव सब रहे सकाने ॥

मनहीं मन शोचत खड़े, नहिं आये बलराम ।
ब्रजमें आये ह्वै गयो, तिन्हैं आयबो बाम ॥

अब कैसे ब्रज जाहिं, बल मोहन दोऊ बिना।
अति व्याकुल मनमाहिं, कबधौं नयनन देखिहैं॥

---

## नन्द विदा लीला।

आये तबहीं कुवँर कन्हाई। नृप बसुदेव सहित दोउ भाई॥
देखत नन्द मिले उठि धाई। लिये लगाय कण्ठ सुखदाई॥
अब चलिहैं ब्रजको यह जान्यो। अति आनन्द हृदय हरषान्यो॥
लखि बसुदेव बहुत सुख पाई। मिले नन्दसों सादर धाई॥
उग्रसेन तब नन्द जुहारे। आदर सहित सकल बैठारे॥
उग्रसेन बसुदेव उपँगसुत। सुफलक सुत अरु यादवगण युत॥
बैठे मिलि हरि हलधर भाई। नन्दहि मिले निकट बैठाई॥
और गोप ठाढ़े सब पेखैं। यशुमति सुतको भाव न देखैं॥
नन्द मनहि मन अति अकुलाहीं। चलत वेगि अब ब्रजकों नाहीं॥
सबहीके मनमें यह आई। हरि अब हमसों प्रीति घटाई॥
करत विचार श्याम मन हीं। प्रीति विवश बोलत सकुचाहीं॥
तब हरि यों मुख वचन उचारे। बहुत कियो प्रतिपाल हमारे॥

झझकि परे नन्दराय सुनि, कहा कहत गोपाल।
मोसों कहत कि आनसों, किन कीन्हों प्रतिपाल॥
चौंकत जिय नन्दराय, मति मोसों ऐसे कही।
गद्गद हिय भरि आय, धारि सकत नहिं नयनजल॥

तब हरि मधुर कह्यो नन्दराई। सुनहु तात हम कहत लजाई॥
कहौ गर्ग तुमसों जो बानी। सो तुम तब निश्चय नहिं जानी॥
पुत्रहेतु हमको प्रतिपारे। तात मात जिमि अधिक दुलारे॥
खेलत हँसत बसत ब्रजमाहीं। जात हते दिन जाने नाहीं॥
हमको तुम दीन्हो सुख जितनो। कह्यो न जात बदनते तितनो
तुम सम मात पिता न हमारे। जहां रहे तहँ तात तुम्हारे॥
बिछुरन मिलन मोह अरु माया। यह प्रपञ्च जग विधि उपजाया
ह्वै है दुखित यशोमति मैया। मो बिन ब्रजतिय अरु सब गैया॥
ताते गमन वेगि ब्रज कीजै। जाय सबनको धीरज दीजै॥
यशुमति सों विनती मम कहियो। माने सदा पुत्रहित रहियो॥
मेरो सुरति न उरते टारो। मैं तुमते कबहूं नहिं न्यारो॥
हरि यों नन्दहि बचन सुनाई। बहुरो रहे सकुचि अरगाई॥

निठुर बचन सुनि श्यामके, भये विकल अति नन्द।
उमगि नीर नयनन चल्यो, परि गये दुखके फन्द॥
दुखित सखा अरु गोप, चकित रहे हरिमुख निरखि।
करत मनहिंमन कोप, ये चरित्र अक्रूरके॥

परे नन्द तब चरण न धाई। कहत न ऐसो कबहुं कन्हाई॥
हौं तजि मोहन चरणन जैहौं। तुम बिन जाय कहा ब्रजलै हौं
मधुबन तुमहिं छांडि जो जाऊं। यशुदै उत्तर कहा सुनाऊं॥
सन्मुख सुनत दौरि जब ऐहैं। तुम बिन काहि गोद भरि लैहैं॥
पन्थ निहारत ह्वै है मैया। चलहु वेगि ब्रज कुवँर कन्हैया॥

सद्माखन मथि कीन्हो ह्वैहै। कहो सो तुम विन काहि खवैहै॥
क्यों जीहैं विन दरशन पाये। होत निठुर कित मथुरा आये॥
बारह वर्ष कियो हम गारो। नहिं जान्यो परताप तुम्हारो॥
अब प्रकटे वसुदेवकुमारा। कीन्हो बचन गर्ग निरधारा॥
कत हम काज महारिपु मारे। कत दरिद्र दुख हरे हमारे॥
डारि न दियो कमलकर गिरिवर। दवि मरते व्रजजन ताके तर॥
कहँ नन्द यों विकल अधीरा। भई कठिन बिछुरनकी पीरा॥

देखि प्रीति अति नन्दकी, मन वसुदेव सिहात।
सकुचि रहे सब प्रेम वश, कहि न सकत कछु बात॥
व्याकुल सबै अहीर, मानहु पन्नगके डसे॥
हरिमुख लखत अधीर, टाढ़े काढ़े चित्रसे॥

तब हलधर नन्दै समुझावत। कहत तात तुम कत दुख पावत॥
करि कछु काज बहुरि व्रज आवैं। तुमबिन और कहां सुखपावैं॥
हरि प्रगटे भूभार उतारन। कह्यो गर्ग तुमसों सब कारन॥
मात पिता हमरे नहिं कोऊ। तुम्हरे सुवन कहावैं दोऊ॥
हमैं तुम्ह सुत पितुको नातो। और परे अब होत न हातो॥
बहुत कियो प्रतिपाल हमारो। जाय कहां उर ध्यान तुम्हारो॥
जननि अकेली व्याकुल ह्वैहै। तुम्हरे गये धीर कछु पैहै॥
व्याकुल नन्द सुनत यह बानी। पुनि पुनि कहत जोरि युगपानी॥
अबके चलहु श्याम मम गोहन। व्रजमें मिलिआवहु फिरिमोहन॥
मारेउ कंस कियो सुरकाजा। दीन्हीं उग्रसेनको राजा॥

सुख वसुदेव देवकी पायो। भयो सकल यदुकुल मन भायो॥
तदपि यशोमति बिन गिरिधारी। को जानै प्रभु टेक तुम्हारी॥

ऐसे कहि अति विकल ह्वै, रहे नन्द गहि पांय।
भई छीन द्युतिहीन मति, नयनन जल न रहाय॥
माया रहित मुकुन्द, नहीं विरह संयोग तिहि॥
ब्रह्म पूरणानन्द, सब घटबासी एक रस॥

देखि विरह अति कादर नन्दहि। सखावृन्द अरु सब उपनन्दहि
बिछुरत तजन चहतहैं प्राणा। तब यह चरित रच्यो भगवाना॥
मेरी अति दुस्तर है माया। जिन कर जीव विमुख भरमाया॥
तिन कछु दुन्द कियो जगमाहीं। तब हरि बोध करत नँदपाहीं
कत पछितात तात हो एतो। ब्रज अरु मथुरा अन्तर केतो॥
कहा दूरि तुमते कहुं जाहीं। करि विचार देखौ मनमाहीं॥
हैं ब्रजके नरनारि दुखारी। ताते कीजत बिदा तुम्हारी॥
ऐसे बोधि कियो ब्रजनाथा। तब नँद कह्यो जोरि युग हाथा॥
जो प्रभु तुमको ऐसे भाई। तौ अब मेरो कहा बसाई॥
जैहौं ब्रज प्रभु कहे तुम्हारे। जात बचन मोपै नहिं टारे॥
बहुत करी तुम मम प्रभुताई। नीच दशा लै ऊंच चढ़ाई॥
परम गँवार ग्वाल पशुपाला। भयो धन्य सब जगत विशाला॥

मेटि पाप सन्ताप सब, कियो सुकृतकी खान।
भरी साखि चौदह भुवन, सुर मुनि वेद पुरान॥

ऐसे कहि नँदराय, परे बहुरि हरिके चरण॥
लीन्हे श्याम उठाय, कह्यो जान सनमान तब॥
तब वसुदेव विनय बहु भाखी। आगे बहुत सम्पदा राखी॥
कियो जो हमप्रति तुम उपकारा। ताको बदलो नहिं संसारा॥
बालक ये अपनेही जानो। इहां उहां कछु भेद न आनो॥
सुनि सुनि नन्द महर पछिताई। रहे ठगे तनु दशा भलाई॥
सो कछु सम्पति नन्द न लीन्हीं। विनती बहुरि श्यामसों कीन्हीं
मांगत हौं प्रभु यह कर जोरी। ब्रजपर कृपा होय नहिं थोरी॥
तब सब गोप नृपतिपहँ आये। बहुत बोध करि ब्रजहि पठाये॥
गोपसखा बोधे हरि सबहीं। बिदा किये आदर दै तबहीं॥
चले सकल ब्रज शोचत भारी। हारे सरबस मनहुँ जुवारी॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं। लटपट चरण परत मगमाहीं॥
ब्रजतन जात विलोकत मधुवन। विरह व्यथा बाढ़ी व्याकुल तन॥

भये विरहवारिधि मगन, अति अचेत अकुलाय।
श्याम राम तजि मधुपुरी, आये ब्रज नियराय॥
उतहि गये हरि गेह, उग्रसेन वसुदेव युत।
ब्रजवासिनको नेह, पुनि पुनि श्रीमुखते कहत॥

पुनि पुनि नन्द कहत पछिताई। चूकपरी हरिकी सेवकाई॥
कहँलगि गनिये यह अपराधू। किये कर्म हम परम असाधू॥
कोमल पद बन अति कठिनाई। तहँ हरिपै हम गाय चराई॥
कितक दधिके काज रिसाई। बांधे यशुमति ऊखल लाई॥

इन्द्रकोप ब्रजलोग बचाये। वत्सग्वलोक मम हित उठि धाये ॥
हम मतिमन्द न उनहीं जाने। निकट बसत नाहिं न पहिचाने॥
तन धन लोभ कंस भय पाई। करि दीन्हे आगे दोउ भाई ॥
ऐसे समुझि नन्द निज करनी। परे मुरछि व्याकुल अति धरनी ॥
बार बार जोवत मग माता। व्याकुल बिन मोहन बल ताता ॥
आवत देखि गोप ब्रज ओरी। हर्षि हृदय आतुर उठि दोरी ॥
धाई धेनु वत्सको जैसे। माखन प्यारे हैं धौं कैसे ॥
कनियां लेबेको अतुरानी। आये बल मोहन यह जानी ॥

धाई अति हर्षित हिये, सुनत रोहिणी पास।
दरश आश आई सबै, ब्रजतिय हिये हुलास ॥
त्यहि चण अति आनन्द, ब्रजवासी ब्रजतिय सबै।
अति सकोचवश नन्द, सो दुख कापै जात कहि ॥

---

## ब्रजविरह लीला।

आतुर सकल गई नँदपासा। मनमोहन दर्शनकी आसा ॥
पेखे नन्द गोप सब देखे। श्याम राम दोऊ नहिं पेखे ॥
बूझत यशुमति अति अकुलाई। कहँ मम श्याम राम दोउ भाई
सुनत वचन व्याकुल नँदराई। नयन नीर भरि नारि नवाई ॥
देखत सूखि गई ब्रजनारी। जनु प्रफुलित कुमुदिनिहिममारी॥
जान्यो आन भई विधि सोई। कहि गये वचन गर्ग मुनि जोई

अति व्याकुल सब बिनब्रजनाथा। भये सकल नरनारि अनाथा॥
परे भूमि सब टेर लगाई। कौन दोष प्रभु हम बिसराई॥
यशुमति अति बिलपति बिलखानी। कहत सरोष नन्दसों बानी॥
धिग धिग महर कहा यह कीनो। मथुरातजि सुत ब्रज पगदीनो॥
मारग सूझि परेउ केहि भांती। बिदा होत फाटी नहिं छाती॥
अर्द्ध वचन सुनतहि उठि धाये। कहा लेन सुख ब्रजमें आये॥

कैसे प्राण रहे हिये, बिछुरत आनँदकन्द।
सुनी नहीं दशरथ कथा, कहूं श्रवण मतिमन्द॥
मैं मधुपुरको जाय, रहिहौं हरिकी धाय ह्वै।
लीजै ठोकि बजाय, अपनो अब ब्रज नन्द यह॥

यह सुनि नन्द परे मुरझाई। अति व्याकुल ब्रजलोगलुगाई॥
पुनि पुनि कहति यशोमति टेरे। कहँ छाड़े दोऊ सुत मेरे॥
जीवन प्राण सकल ब्रज प्यारो। छीनि लियो वसुदेव हमारो॥
सुफलकसुत बैरी भयो भारी। लै गयो जीवनमूरि हमारी॥
हौं न गई हरि सङ्ग अभागी। सिखये इन लोगनके लागी॥
जो मैं जानि पावती गोहन। तौ क्यों छाड़ि आवती मोहन॥
ऐसे रोवत करत बिलापू। कहि न जात यशुमति परितापू॥
हरि बिन सब नरनारि उदासी। आये जबहि सकल ब्रजवासी॥
नहीं श्याम बिन सदन सुहाई। मनहुं मशानभूमि धरि खाई॥
पूछत बिलखि यशोमति मैया। कहाँ नन्द कह कह्यो कन्हैया॥

तुमको विदा ब्रजहिं जब कीन्हो। हरि कछु मोहिं सँदेशोदीन्हो
तुम कछु हारसों विनय न भाखो। कहा श्याम मनमें यह राखो

मैं अपनोलों बहु कियो, वे प्रभु त्रिभुवननाथ।
जो चाहैं सोई करैं, कहा सु मेरे हाथ॥
कहिके तोहिं प्रणाम, बहुरि श्याम ऐसे कह्यो।
करिकै कछु सुरकाम, मिलिहौं तुमसों आय ब्रज॥

पुनि बोले ऐसे बल भैया। दुखी होन पावै नहिं मैया॥
धीरज देहु तात तुम जाई। कछु दिनमें हम मिलिहैं आई॥
पठयो मोहिं तोहिं हितलागी। तबमैं वचन सक्यों नहिं त्यागी
सुनि सँदेश यशुमति दुखपागी। रहे प्राण हरि चरणन लागी॥
एक पलक बिछुरत हरि नाहीं। गहि रहि मिलनआश मनमाहीं
ब्रज घरघर सब कहत गुवाला। कियो कृष्ण मथुरा जोख्याला॥
मारेउ रजक जाय हरि जबहीं। नहिंनिबहै जान्यो हम तबहीं॥
चन्दन बहुरि कंसको लीन्हो। रूप अनूपम कुबरी दीन्हो॥
वैसो धनुष तोरि पुनि डारेउ। फिरि दोउ भाद्दन गजको मारेउ
रङ्गभूमि सब मल्ल पछारे। असुर अनेक युद्ध करि मारे॥
कहत हते ब्रजमें हरि जैसे। कियो जाय कंसहि पुनि तसे॥
केश पकरि महि तुरत गिरायो। मारि यमुन जल माहिं बहायो

उग्रसेन राजा कियो, निज कर चमर ढुराय।
मथुरा नर नारी सबै, आनन्दे सुखपाय॥

पुनि भेंटे हरि जाय, देवकि अरु वसुदेव सों।
कह्यो परम सुख पाय, तात मात कहि भ्रात दोउ॥
तहां भयो उत्सव अति भारी। दियो दान बहु विप्र हँकारी॥
हरिहि वसन भूषण पहिराये। मङ्गल सब नर नारिन गाये॥
मथुरा घर घर वजो बधाई। वहु सम्पति वसुदेव लुटाई॥
अब नहिं गोप गोपाल कहावैं। वासुदेव सब नाम बुलावैं॥
यदुकुलकमल सकल जगनायक। विरदवान वर्णत गुणगायक॥
भये कृष्ण मथुराके राजा। अहिरन देखि लगति अति लाजा॥
पुनि ग्वालन यह वात सुनाई। वसे श्याम कुविजा गृह आई॥
भये जासुवश अति हित मानो। कीन्हो ताहि आपनो रानो॥
राजा हरि कुविजा भइ रानी। गोपिन सुनी जवहिं यह वानी॥
गई विरहतन तपन सिराई। सौतिशाल शाल्यो उर आई॥
भयो दुसह दुख ऊरध श्वासा। मिटी श्याम आवनकी आशा॥
नयनन जलधारा अति बाढ़ी। रही शोच बैठी कोउ ठाढी॥
जुरि आई व्रजतिय सबै, सुनि कुविजाकी बात।
लागीं आपसमें कहन, मन दुख मुख हर्षात॥
करी सुहागिनि श्याम, कुविजा दासी कंसकी।
आपुन पति वह वाम, कियो नाम तिहुँपुर विदित॥
लै श्रीखण्ड मिली मग माई। सुनियत ताते अति मन भाई॥
भलो वुरो कछु जात न चीन्हो। बहुत रूप दै सम कर लीन्हो॥
वे बहुरमण नगरकी सोऊ। वन्यो सङ्ग अव नीको ओऊ॥

कहतजु वह सोई अवमानैं। निशि दिन वाके गुणहि बखानैं॥
जानि अनोखो नेह बढ़ावैं। अब नहि सखी श्याम ब्रज आवैं॥
अपर कह्यो कछु रोष जनाई। श्याम सदाके ऐसइ माई॥
जब अक्रूर लेन ब्रज आयो। कान लागि तब यहै सुनायो॥
नई कूबरी नारि बताई। तबहिं गये ताके सँग धाई॥
बोली और एक तिनमाहीं। कुबिजा तुम देखी के नाहीं॥
दधिबेचन जब जात तहां री। तब नीके हम ताहि निहारी॥
अँग टेढ़ी मालिनकी जाई। हँसत जाहि सब लोग लुगाई॥
बसत ढिगन नृप महलन जोई। सुनियत करी सुन्दरी सोई॥

कोटि बार दाहो अनल, कोटि कसौ किन सोय।
तौ कत पीतरते कहूं, कैसे सोनो होय॥
हरि तजि दीन्हीं लाज, हमैं होत सुनिके हँसी।
जाय कूबरी काज, मथुरा मारेउ कंस नृप॥

बोली सखी और यक बानी। अलि यह बात नही तुम जानी॥
कुबिजा सदा श्यामकी प्यारी। वे भर्त्ता उनकी वह नारी॥
तैसे वहां ताहि करि दासी। राखी ये अविगति गुणरासी॥
रूपरतन कूबरमें राख्यो। जिमि मोती सीपन में भाख्यो॥
कंस मारिके सो अब लीन्हो। ताकी प्रभुता प्रगट न कीन्हो॥
ब्रजवनिता त्यागी अब तातें। बूझी सकल श्यामकी बातें॥
कहत एक तब सुनु सखि ए री। वे दिन हरिको बिसरि गये री
लिये फिरतही जब सब कनियां। पहिरावन सिखये हम तनियां

घर घर डोलत माखन खाते। यशुदहि उरहन देत लजाते॥
बहुरि भये जब कछुक सयाने। बाट घाट अवगुण बहु ठाने॥
जो जो उन हमसों गुण ठान्यो। हम सब ताहीमें सुख मान्यो॥
जिमि भजि आप गोकुलै आये। गोपभेष करि रहे छिपाये॥

देव मनावत दिन गये, बड़े होनकी आस।
बड़े भये तब यह कियो, बसे कूबरी पास॥
यशुमति लाड़ लड़ाय, वारेते सेवा करी।
ताहूको बिसराय, भये देवकीपुत्र अब॥

सुनो सखी अब कह्यो हमारो। नहि कीजै तिनको पतियारो॥
जो जन जगमें कृतहि न मानै। निज स्वारथ लगि बहु गुणठानै
ज्यों भँवरा कल कुञ्ज सोहाई। बैठन चाहि सुमनपर आई॥
रसहि चाखि पुनि हित नहि मानै। तहौं जात जहँ नूतन जानै
पालत काग पिकहि हितमाने। मिलत कुलहि जब होत सयाने
सोई भई हमहि अरु नन्दहि। कहिये कहा सखी गोविन्दहि॥
जे खोटे मन कपट सयाने। औसर परे परैं पहिचाने॥
बैठत अब नृप आसनमाहीं। सुनियत मुरली देखि लजाहीं॥
मोरपङ्ख देखत नहि भावैं। व्रजको नाम लेत बहरावैं॥
सुरभी चित्रहुमें जो हेरत। तो लजाय इत उत मुख फेरत॥
हमरो नाम सुनत चपि जाहीं। सुरत करत ग्वालनकी नाहीं॥
वे कह जान पीर पराई। जिनकी प्रकृति परी यह आई॥

भयो नयो अब राज ह्वां, नये मात पित गेह।
नई नारि कुबिजा मिली, भये सखा नव नेह॥
बिसरे ब्रजकी बात, कुञ्जकेलि रसरासको।
गये आपनी घात, दिन दिन दुख दूनो लहो॥

कौन बातको करें परेखो। सखि अपने जिय शोचि न देखो॥
ना हरि जाति न पांति हमारी। तिनको दुख मानिये कहा री॥
गोपीनाथ नन्दके लाला। अब न कहावत कान्ह गुवाला॥
वासुदेव अब उहां कहावत। यदुकुलदीप भाट बर गावत॥
नहिं वनमाल गुञ्ज उरमाहीं। मोरपच्छ माथेपर नाहीं॥
गृह बनको सब प्रीति भुलाई। वा मुरली सँग गई सगाई॥
अब वह सुरति होत कतराजन। दिनदश प्रीति करी निजकाजन
सबै अजान भई तिहि काला। सुनि मुरलीको शब्द रसाला॥
अब मन जलनिधि खगज्योंथाकैं। फिरि२ शरणजहांजिहिताक
कहत एक सुनुरी ब्रजनाथा। ब्रज अब मानों कियो अनाथा॥
तब वह कृपा हुती ब्रजपाहीं। राख्यो गिरिवर करतलमाहीं॥
बहुरो और प्रताप कियो री। हम हित दावानल अँचयो री॥

अब यह दोष लगै हमैं, समुझत सकुचत जीय।
भयो वज्रहूते कठिन, बिछुरत फट्यो न हीय॥
अब लागे दिन जान, सुनु सखि मोहनलाल बिन।
रहत देहमैं प्रान, बिन वह सूरति सांवरी॥

रहत वदन देखे विन नयना। श्रवण न रहत सुने विन वयना॥
रहत हियो विन हरि कर परसे। वेधत वाण मनोभव बरसे॥
अब सखि यों सहियत दुखभारो। मनहुँ नयन तन प्राण हमारो
जब विधि वालक वत्स चुराये। तब हरि तैसेइ और बनाये॥
जनु वेसेइ कुँवर कन्हाई। विरहवृष्टि व्रज ओर चलाई॥
ऐसे मन गुण गुणि गोपाला। भई विरहवश सब व्रजबाला॥
अतिही कठिन भयो दुख मनमें। व्यापी दशइ अवस्था तनमें॥
कोउ कह लोचन दीन हमारे। क्योंजीवहिंविन श्याम निहारे॥
ज्यों चकोर विन चन्द दुखारी। जैसे री बारिज विन बारी॥
विवरन जिमि ग्रीषमके खञ्जन। जैसे दुखी भ्रमर विन कञ्जन
श्याम सिन्धुते बिछुरि परे री। तड़फड़ात ज्यों मीन खरे री॥
भरत ढरत पुनि पुनि अकुलाहीं। हरिविन धरत धीर दृग नाहीं

देख्यो नहीं सुहात कछु, गृहवन विन नँदनन्द।
विरह व्यथा जारत तनहिं, भयो तपनि अति चन्द॥
विन श्वासाकी देह, और रूप ह्वै जात जिमि।
तिमि लागत व्रज गेह, हरि विन सखी भयावनो॥

इहि विरियां वनते हरि आवत। दूरिहिते कल बेणु बजावत॥
कबहुँक परम चतुर गोपाला। गावत ऊँचे स्वरन रसाला॥
कबहुँक लै लै नाम सुनावत। धौरी धूमरि धेनु बुलावत॥
देत दृगन सुख वनते आई। वह मनमोहन रूप दिखाई॥
और सखी बोली इक ऐसे। बहुरी कबहुँ देखिये वसे॥

बैठे ग्वाल बालकन साथा। बांटत खात अशन ब्रजनाथा॥
यकदिन दधि चोरत मम धामा। मैं दुरिदेखि रही छविश्यामा॥
वे भाजे मम लखि परछाहीं। तब मैं धाय लई गहि बाहीं॥
मुखकर पोंछि लिये गहि कनियां। प्रेम प्रीतिरसके सुखदनियां
रहे लागि छातीसों जैसे। सो वह कहो जात सुख कैसे॥
जिन धामन वे सुख अवलोकै। ते अब धरि धरि खात विलोके॥
सुमिरि सुमिरि वे गुणगण नाना। हरिबिन रहत अधमतनुप्राणा॥

कहँ लगि कहिये ये सखी, मनमोहनके खेल।
उन बिन अब गोकुल भयो, ज्यों दीपक बिन तेल॥
रहत नयन जल छाय, सुमिरि सुमिरि गुण श्यामके॥
कहिये काहि सुनाय, भये पराये कान्ह अब॥

एक प्रलाप करत मनमाहीं। कहै जाय कोऊ हरिपाहीं॥
लेहु आय निज गायन घेरी। फिरत नहीं ग्वालनकी फेरी॥
बिडरी फिरत सकल बनमाहीं। तुमबिननाहिं काहु पतियाहीं॥
अपनो जानि सँभारहु आई। मति बिसरौ ब्रजहेत कन्हाई॥
बिलखत गाय वत्स सब ग्वाला। नेकु सुनावहु बेणु रसाला॥
बूडत विरहसिंधुमें नारी। लेहु आय गहि भुजा निकारी॥
कोऊ कहत कहै कोउ जाई। बसो फेरि ब्रज कुवँर कन्हाई॥
अब नहि तुमसों गाय चरावैं। नहि जगाय बन प्रात पठावैं॥
माखन खात बरजिहै नाहीं। नहिं उरहन यशुदहि लै जाहीं॥
नहिं दांवरि यशुमतिको देहैं। नहि अब ऊखल सों बँधवैहैं॥

चोरी प्रगट करैं नहिं काहू। नहीं जनावहिं अवगुण ताहू॥
वेनी फूल गुहन नहिं कैहैं। नहीं महावर चरण दिवैहैं॥

मांगत दान न वरजिहैं, हठ नहिं करिहैं मान।
आय दरश अब दीजिये, रहत न तुम बिन प्राण॥
ऐसे कहि गहि पांय, ल्यावहिं फेरि मनाय हरि॥
वसहिं वहुरि व्रज आय, तौ व्रजानन्द न सांवरो॥

एक कहत अब हरि नहिं आवैं। नृपपद तजि क्यौंग्वालकहावैं॥
वहँ गज,रथ, चढ़ि चलत कन्हाई। इहँ क्यों गाय चरावहिंआई॥
उहां पटम्बर पहिरि दिखावैं। इहांकि क्यों अब कामरि भावैं॥
अब उन यशुमति मातु विसारी। कौन चलावै वात हमारी॥
वोली अपर सखी विलखाई। भये निठुर अब कुवँर कन्हाई॥
करी प्रीति हमसों हरि ऐसी। सुनु सखि सलिल मीनकीजैसी
तलफत मीन निपट अकुलाने। नीर कछु उर पीर न जाने॥
इतनी दूर दया नहिं कीन्ही। वीती अवधि खवरि नहिं लीन्ही
दै गये विहँसि चलत परतीती। मिलि हौं आय वहुरिरिपुजीती
हारे नयन उतहि मग जोवत। रोय रोय उर कचु कि धोवत॥
जैसो दिन निशि तैसी जाई। पलभर नींद परत नहिं आई॥
मन्द समीर चन्द दुखदाई। इनते जरत सेज अधिकाई॥

स्वप्नेहूतो देखिये, नींद परै जो नैन।
कीन्हे विविध उपाय मन, क्योंहू लहै न चैन॥

बोलि उठो इक बाम, सुन सखि हौं तोसौं कहौं॥
जबते बिछुरे श्याम, आज लखे मैं स्वप्नमें॥
आये जनु मम सदन गोपाला। हँसि भुज पाणि गहे नँदलाला॥
कहा कहौं अरि नींद भई री। एकहु क्षण नहिं और रही री॥
ज्यों चकई लखि निज परछाहीं। पतिहि जानि हरषी मनमाहीं॥
तबहीं निठुर विधाता आई। दियो पवन मिस सलिल डुलाई॥
मेरी दशा भई सखि सोई। जो जागों तो ढिग नहिं कोई॥
देखहु कहा अधिक अकुलाई। बिरह जरी अरु काम जराई॥
कहा कहौं किहि दोष लगाऊं। अपनी चूक समुझि पछिताऊं॥
बिछुरतही नहिं तज्यो शरीरा। समुझि परी तबहीं यह पीरा॥
महा दुखित अब अङ्ग हमारे। भये सखी दोउ नयन पनारे।
अतिही भ्रममाते बिन देखे। चाहत रूप श्यामको पेखे॥
रसना यहीनेम गहि राख्यो। हरि बिन और न चाहत भाष्यो॥
जबते बिछुरे कुवँर कन्हाई। तबते भये सबै दुखदाई॥
वोई निशि वोई दिवस, वोई ऋतु वइ मास।
बदले सबै सुभाव जनु, बिन हरि मदन विलास॥
चलौ औरही चाल, अब या ब्रजमें ऐ सखी।
विमुख भये गोपाल, भये दुखद जे सुखद सब॥
गृह कन्दरा सेज भइ शूलौ। शशिकी किरणि अग्निसमतूलौ॥
सींचत अली मलय घसि नीरा। होत अधिक ताते उर पीरा॥
फूली अरुण फल बन डारी। झरत देखियत मनहु अँगारी॥

हरि बिन फूल लगत सब कैसे । मनहुं त्रिशूल शूल उर जैसे ॥
तब इन तरुन अमृत फल लागे । अबते फल सब विषरस पागे
त्रिविध समीर तीर सम लागे । कोकिलशब्द अग्नि जनु दागे ॥
तप्त तेल सम वारिद पानी । उठत दाह सुनि चातक बानी ॥
सुनु सखि चातक दोष न दीजे। ज्याये या पक्षीके जीजे ॥
जैसे पिय पिय हम रट लावत । तैसेही कहि कहि वह गावत ॥
अति सुकण्ठ पीतम हित मानी । क्षण नहिं रहत रटत पियबानी
आप सुधारस पी सुख पावैं । टेरि टेरि विरहिन को ज्यावैं॥
जो यह खग नहिं करत सहाई । लहत प्राण तो दुख अधिकाई

या पक्षी सम और को, सुनु सखि सुकृत समाज ।
सफल जन्म है तासुको, जो आवै परकाज ॥
मगन सकल व्रजबाल, ऐसे हरिके विरहवश ।
नहिं विसरत नँदलाल, सोवत जागत दिवस निशि ॥

पथिक जात मधुवन तन हेरैं । ताहि धाय व्रजतिय सब घेरैं ॥
कहत परहिं हम पायँ तुम्हारे । सुनहु बटोही वचन हमारे ॥
उतहैं बसत कृष्ण व्रजनाथा । कहियो तिनसों व्रजकी गाथा ॥
तुम जो इन्द्रको यज्ञ नशायो। पुनि गिरि कर धर व्रजै बचायो॥
सो अब वह विरहा ह्वै आयो । चाहत है व्रज फेरि बहायो ॥
वर्षत निशि दिन दृग घनकारे । बहत कुचन बिच सलिलपनारे
ऊरध श्वास पवन झकझोरे । गर्जत शब्द पीर घन घोरे ॥
महा वज्र दुख सुख द्रुम डारे । व्याकुल अङ्ग सकल अति भारे॥

व्यथा प्रवाह बढ़्यो अति भारी। बूड़त विकल सकल ब्रजनारी॥
चितवत मग सब नाथ तुम्हारो। जानि आपनो आइ उबारो॥
गये मिलन कहि श्रीमुख बानी। अवधि वदी ते सबै सिरानी॥
तुम बिन तलफत प्राण हमारे। जैसे मीन सलिलते न्यारे॥

एक बार फिर आयकै, देहु सुदर्शन श्याम।
तुम बिन ब्रज ऐसो लगत, ज्यों दीपक बिन धाम॥
मिलते वेणु बजाय, अब वह कृपा भई कहा।
पुनि का करिहौ आय, प्राण गये ब्रज आयकै॥

सुनहु पथिक तोहिं राम दुहाई। कहियो यह मोहनते जाई॥
तुम बिन राधेके तनु आई। भई सबै विपरीत बनाई॥
वदन छपाकर प्रीति छिपानी। अब रह गई कलङ्क निशानी॥
अँखियां हुतीं कमलपखुरीसी। सो अब मनहुँ रङ्ग निचुरीसी॥
आंच लगे कञ्चन जिनि काचो। तिमि तनु विरहानलको ताचो
कदलीदलसी पीठ सुहाई। सो अब मानों उलटि बनाई॥
सुखकी सम्पति सकल नशानी। जारत भई कोकिलावानी॥
अब सब साद मानको नासो। ह्वै रहि तुम्हरे दरश पियासो॥
चातक पिक मृग अति कुलजाती। तब इनको देखत अनखाती
अब तिनसों पूछत हैं धाई। तुम्हरे चरणकमल कुम्हिलाई॥
ललतादिक सखियां लखि धाई। जानि अटा चढ़ि गर्व बढ़ाई
अब कहि सखी तिन्हैं अकुलाई। मिले रोयकै कण्ठ लगाई॥

सुधि बुधि सब तनुकी गई, रह्यो विरह दुख छाय।
होन चहत दशई दिशा, वेगि मिलहु तिहि आय॥
ऐसे निज निज हेत, कहत सँदेशो ग्रामसों।
पथिकहि चलन न देत, होत सांझ ताको तहां॥

विरहविकल सब व्रजकी वाला। हरि वियोग उर पीर विशाला
हरि दर्शन बिन कल नहिं पावैं। ज्यहित्यहिकहिउरव्यथाजनावैं
जब पपिहा बोलत निशि आई। कहत ताहि कोऊ अनखाई॥
हौं तो विरह जरी सन्तापी। तू कत जारत रे खग पापी॥
पिय पिय कहि अधरात पुकारे। मूढ़ मृतक अबलन कत मारै॥
तू नहिं सुखित दुखित बिन नीरा। तेउ न समुझत शठ परपीरा
करत कहा इतनौ कठिनाई। हरि बिन बोलत व्रजपर आई॥
उपजावत विरहिन उर आरत। काहे अगिलो जन्म बिगारत॥
एक कहत चातकसों टेरी। हैं सारङ्ग चेरि हम तेरी॥
पौढ़े होंहि जहां सुखदाई। ऊंचे टेरि सुनावहु जाई॥
गइ ग्रीषम पावस ऋतु आयो। सब काहू चित चाव बढ़ायो॥
तुम बिन व्रजतिय डोलत ऐसे। नाव बिना करयाको जैसे॥

मानगे तेरो कह्यो, तेरे हित घनश्याम।
लेहु सुयश चातक वड़ो, लै आवहु सुखधाम॥
सुनि चातकके वैन, कोऊ सखि ऐसे कहत।
यह विहङ्ग सुखदैन, सखि मोहिं प्यारो पीवते॥

निशिदिन पियपिय रटत बिचारो। पियके विरह भयो जरि कारो
स्वाति बून्द लगि रहत दुखारो। तज्यो सिन्धुको जल करि खार
आप पीर पर पीरहि पावै। जियको जीवन नाम सुनावै॥
प्रेमबाण लाग्यो जेहि होई। जानै व्यथा प्रेमकी सोई॥
कोऊ कहत कोकिलहि टेरी। सुन री सखी सीख इक मेरी॥
बसत जहां हित कुवँर कन्हाई। फिरि आवहि बारेक तहँ जाई
तू कुलीन कोकिला सयानी। सबहिं सुनावत मीठी बानी॥
तो सम कोउ नहीं उपकारी। जानत हौ बिरहिन दुख भारी॥
उपबन बैठि श्यामको टेरी। कहियो अबलन मन्मथ घेरी॥
श्रवण सुनाय मधुर कल बानी। ब्रज लै आव श्याम सुखदानी
प्राणहुँ पलट मिलत नहिं एरी। सेन्त सु बिकत सुयशकी ढेरी॥
ह्वैहैं बिन मोलन हम चेरी। गावहिं गोकुल कीरति तेरी॥

कोऊ ऐसे कहि उठत, बरजहु बोलत मोर।
रह्यो परत नहिं टेर सुनि, बिन श्रीनन्दकिशोर॥
बोलत करत बिहाल, मोरहु सखि बैरी भये।
बसे बिदेश गोपाल, ये बनते न टरैं मरैं॥

विरहमग्न यों ब्रजकी नारी। नहीं कृष्णसों पलभर न्यारी॥
रही कृष्णछबि दृगन समाई। रसना कृष्ण नाम रट लाई॥
मनमें गुणहिं सदा गुण हरिके। श्रवण रहे हरिको यश भरिके॥
बसी श्याम मूरति उरमाहीं। बिसरत सुरत एक पलनाहीं॥
बैठत उठत चलत घर बाहर। श्याम सनेह गुप्त अरु जाहर॥

सोवत जागत दिन अरु राती । प्रीतम कृष्ण प्रीति रस माती ॥
सब अँग कृष्ण प्रेमरस पागो । भई कृष्णमय सकल सभागी ॥
धनिसो प्रीति कृष्णसों लागो । धनि सो सुरति कृष्णरसपागो ॥
धनिसो सुख हरि सङ्ग विहारी । धनिसो दुख हरिबिरह बिचारी
धनिसो परेखो हरिसों जोई । धन्य सरेखो हरिको होई ॥
धनिसो ज्ञान ध्यान धनि सोई । जपतप धन्य जो हरि हित होई
धन्य जन्म जो हरिके दासा । सब विधि धन्य जिन्ह हरि आशा

नन्द यशोमति गोपिकन, निशि वासर हरिध्यान ।
व्रजवासी प्रभु दासको, आश रहे लगि प्रान ॥
विसरे सब व्यवहार, और न दूजे गति कछू ।
अन्ध लकुटिया धार, एक सुरति नँदनन्दको ॥

---

## श्रीकृष्णजीका यज्ञोपवीत लीला ।

रहे जाय मथुरा हरि जबते । नित नव मोद होत तहँ तबते ॥
देवकि मन अभिलाष पुरावैं । निरखि निरखि दोउ सुत सुख पावै
परमानन्द मगन वसुदेऊ । सुखी सकल यादवगण तेऊ ॥
मुदित सकल मथुरापुरवासी । देत सबन सुख प्रभु सुखरासी ॥
एक दिवस वसुदेव सुजाना । बोले जे कुल मध्य प्रधाना ॥
करि आदर मानता नड़ाई । तिनसों कहि इह बात सुनाई ॥
रम कृष्ण अबलों दोउ भाई । ग्वालनमध्य रहे व्रज जाई ॥

यदुवंशिनकी रीति न जाने। हैं अबहीं कुलधर्म अयाने॥
ताते यह विचार अब कीजै। यज्ञोपवीत दुहुनको दीजै॥
सुनि ये वचन सबन मन भाये। गर्ग आदि सब विप्र बुलाये॥
पूंछि सुदिन शुभ लग्न धराई। यज्ञकाज सब सौंज मँगाई॥
सकल तीरथनते जल आये। राम कृष्ण तासों अन्हवाये॥

सकल वेद विधि मन्त्र पढ़ि, करि अभिषेक पुनीत।
दोउ भाइन तब गर्ग मुनि, दियो यज्ञ उपवीत॥
अन्त न पावैं शेष, वेद श्वास जाको सकल।
ताहि दियो उपदेश, गायत्री गुरु गर्ग मुनि॥

दियो दान वसुदेव अनेका। पूजे सब द्विज सहित विवेका॥
सब नर नारी मङ्गल गायो। बन्दीजनन द्रव्य बहु पायो॥
लखि कौतुक सुरगण सुख पावैं। बरषि सुमन दुन्दुभी बजावैं॥
अति आनन्द भयो सब काहू। तात मात उर परम उछाहू॥
पुनि यक दिन वसुदेव सज्ञानी। यह इच्छा अपने मन जानी॥
पण्डित भलो कहूं जो पैये। तो विद्या सब सुतन पढ़ैये॥
काहू तब यह बात बखानी। सन्दीपन पण्डित बड़ ज्ञानी॥
रहै अवन्तीपुरके माहीं। तासम जग पण्डित कोउ नाहीं॥
यह सुनि कृष्ण सकल गुणखानी। पितुके मनकी रुचि पहिचानी॥
ह्वैकै नेम सहित दोउ भाई। विद्या पढ़न गये यदुराई॥
वेद विदित सेवा हरि कीन्हीं। अल्प काल विद्या सब लीन्हीं॥
लखि प्रभाव गुरु अति सुख पायो। जानि जगत्पति मन हर्षाय

तब हरि गुरुसों जोरि कर, बोले सहित सनेहु ।
गुरुदच्छिणा कछु चाहिये, मांगि सो हमसों लेहु ॥
तब गुरु कह्यो विचारि, तुम प्रभु कर्त्ता जगतके ।
बूझि लेहुँ निज नारि, जो वह कहै सो दीजिये ॥

तब सन्दीपन तियपहँ आये । बचन कृष्णके ताहि सुनाये ॥
देन कहत हरि दच्छिणा हमको । मांगैं कहा सो बूझैं तुमको ॥
मरे हुते ताके सुत दोई । तिन मांगे हरिसों पुनि सोई ॥
कृष्ण सकल जीवनके स्वामी । जल थल सब जिनके अनुगामी ॥
गये बहुरि भक्तन सुखकारी । जग उतपति पालन लयकारी ॥
चाहैं कियो होय सब सोई । आनि दिये गुरुके सुत वोई ॥
भये सुखी द्विज अरु द्विज नारी । सुतसन्ताप मिट्यो दुख भारी ॥
ह्वै प्रसन्न गुरु आशिष दीन्हीं । नमस्कार प्रभु गुरुको कीन्हीं ॥
गुरु आयसु ले पुनि दोउ भाई । आये मधुपुरि जन सुखदाई ॥
तात मात लखि अतिसुख पायो । भयो मनोरथ सब मनभायो ॥
राजकाज पुनि प्रभु सब करई । उग्रसेन आयसु अनुसरई ॥
हित जन परिजन नर अरु नारी । सुखी सकल हरि वदननिहारी ॥

ऊधो अरु अक्रूर जे, सखा श्यामके साथ ।
मिलि बैठत खेलत हँसत, इनके सँग यदुनाथ ॥
व्रजवासिनको ध्यान, व्रजवासी प्रभुके सदा ।
यद्यपि ब्रह्म सुखखान, तदपि भक्तवश प्रेमरस ॥

## उद्धवजीका विदा लीला।

उद्धव यदुपति सखा सज्ञानी। एक ब्रह्मसुखसों रति मानी॥
हरिको त्रिगुण रूप करि मानैं। प्रेमकथा कछु उर नहिं आनैं॥
अब हरि ब्रजकी बात चलावैं। तब उद्धव हँसिकै उचटावैं॥
हरि लखि मनहीं मन पछिताहीं। भली बानि याकी यह नाहीं
रूप रेख जाके नहिं कोई। धरयो नेम उरमें इन सोई॥
निर्गुण कथा योगकी गावै। जामें कछु रस स्वाद न आवै॥
मानत एक ब्रह्म अविनाशी। ज्ञान गर्वमें रहत उदासी॥
बिछुरन मिलन दुःख सुख जाहीं। नहीं प्रेम उपजत तनुमाहीं
कनक कलश पानी बिन जैसे। याको रूप बन्यो है तैसे॥
जो हौं कहौ कहा यह मानै। निन्दा और हमारी ठानै॥
कहिये काहि प्रेमकी गाथा। बन्यो हंस वायसको साथा॥
ब्रजको ध्यान सदा उर मेरे। प्रेम भजन याके नहिं नेरे॥

कहा यशोदा नन्दसे, सुखद तात अरु मात।
कहँ वह सुख ब्रजधामको, नहिं बिसरत दिन रात॥
कहां सखनको सङ्ग, कहां केलि वृन्दाविपिन।
कहँ वह प्रेमतरङ्ग, बंशीबट यमुनानिकट॥

कहां नवल ब्रजगोपकुमारी। कहँ राधा वृषभानुदुलारी॥
कहँ वह प्रीति रीति सुख सङ्गा। कहां रासरस हासतरङ्गा॥
कहँ कुञ्जन वनकेलि निकाई। कहां मानलीला सुखदाई॥
कहँ लगि ब्रजके सुखन सँभारों। जिहि लगि पुरवैकुण्ठ बिसारों

कहिये यह रस वाके आगे। उद्धव सुनत प्रेमको भागे॥
कैसे प्रेम होय यामाहीं। मेरे कहे मानिहै नाहीं॥
व्रजको याको देउँ पठाई। पैहै प्रेम तहां यह जाई॥
याके मन अभिमान वढ़ाऊं। कहि युवतिनकी प्रीति सुनाऊं॥
यहै वात यदुपति उर आनी। पठऊं व्रज यहि थापत ज्ञानी॥
कहौं वोध तिनको करि आवो। प्रेम मिटाय ज्ञान समुझावो॥
जैहैं तुरत सुनत यह वाता। कहिहैं हरि जानत मोहि ज्ञाता॥
करि अभिमान तुरत व्रज जैहैं। ह्वांते जाय साध ह्वै ऐहैं॥

ऐसे हरि वैठे करत, अपने उर अनुमान।
उद्धवके उरते करो, दूर ज्ञान अभिमान॥
आय गये तिहि काल, उद्धवजो हरिके निकट।
विहँसि मिले नन्दलाल, सखा सखा करि अङ्क भरि॥

अति सुन्दर सांवलि छविछायो। जव हरिको प्रतिविम्ब सुहायो
अंश भुजा देके यदुराई। उद्धवसे व्रजवात चलाई॥
उद्धव सुनो कहौं तुमपाहीं। व्रजको सुख मोहि विसरतनाहीं॥
नेकहु नहीं यहां मन लागत। उठिउठि पुनि उतहीको भागत॥
यह मन होत वहीं पुनि जैये। गोपी ग्वालनमें सुख पैये॥
कहँ वह हेत यशोमति मैया। दै दै माखन लेत वलैया॥
नहिं विसरत मनते विसराई। वह राधाकी प्रीति सुहाई॥
गोप सखा वृन्दावन गैयां। नहिं भूलत वंशीवट छैयां॥
त्यागत तिन्है वहुत दुखपाये। मिटत नहीं मनते पछिताये॥

उद्धव सुनि बोले मुसकाई। कहा कहत हरि यों अकुलाई॥
सदा रहत यह हित थिर नाहीं। जगव्योहार सकल मिथ्याहीं॥
मोसों सुनो बात यदुराई। एकै ब्रह्म सदा सुखदाई॥

जब उद्धव ऐसे कहो, बिहँसि ज्ञानको बात।
तब यदुपति सुख पायके, पुनि बोले हर्षात॥
भाई मो मनमाहिं, उद्धव कहि जो बात तुम।
तुम समान कोउ नाहिं, सखा और मेरो हितू॥

उद्धव तुम ब्रज वेग सिधारो। करि आवहु यह काज हमारो॥
पूरण ब्रह्म अलख अज जोई। मात पिता ताके नहिं कोई॥
रूप न रेख जाति कुल नाहीं। व्यापि रह्यो सब घट घटमाहीं॥
हो ताके ज्ञाता तुम ज्ञानी। गोपी सकल प्रीतिरत मानी॥
यह मत तिन्हें बोध करि आवो। प्रेम मेटिके ज्ञान दृढ़ावो॥
मेरे प्रेमविवश वे बाला। सहत बिरहदुख दुसह विशाला॥
कामअग्नि तनु तूल समाना। शोच श्याम मारुत बलवाना॥
भस्म होन पावत सो नाहीं। भीज रहत नयनन जलमाहीं॥
इहै आज लोपे इहि भांती। विरहव्यथा व्याकुल दिन राती॥
एते पै कैसे वे न्यारे। समाधान बिन धीरज धारे॥
ताते सखा वेगि तुम जाहू। मेटौ तिनके उरको दाहू॥
पठऊं नारिनके ढिग सोई। जो तुमहींसो लायक होई॥

यक प्रवीण गुरु सखा मम, तुमते ज्ञानी कौन।
सो कीजे जेहि ब्रजवधू, साधन सीखैं पौन॥

जिहि सुख पावैं नारि, ज्ञान योग उपदेशते।
तातें मोहि बिसारि, ब्रह्म अलख परचौ करैं॥
उद्धव सुनो कहत मैं तुमको। तुम सम हित और नहिं हमको॥
कैसहु उन गोपिनसों मोहीं। उऋण कीजिये विनवत तोहीं॥
निशदिन भक्ति सेरिये उनको। नाहिं आनिरुचिकैसहु तिनको
सर्वस तिनन मोहि सब दीन्हों। तन मन प्राण समर्पण कीन्हों।
मुक्ति तीन तिनको मैं दीन्हीं। सो उनहित एकहु नहिं कीन्हीं॥
रही एक सो योजन कहिये। सो वह ज्ञान बिना नहिं लहिये॥
सो अब देहु तिनहिं तुम ज्ञानू। जिहि पावैं पद पदनिरवानू॥
जो अङ्गीकृत करैं न तासू। तौ मैं हौ उनको ऋणदासू॥
गाय चरावत उनकी रैहौं। ब्रजतजि नहीं अनत कहुँ जैहौं॥
यहै बात मेरे मन भावै। और न कछु मोपै बनि आवै॥
उद्धव जाहु विलम्ब करौ जिन। उनको युग बीततमोबिन छिन॥
समाधान तिनको करि आवो। ब्रजमें जाय बिलम्ब न लावो॥

उद्धव ब्रजमें जायकै, विलँबि न रहियो जाइ।
तुम विन हम अकुलायहैं, श्याम करत चतुराइ॥
तुमहौ सखा प्रवीन, बार बार सिखऊं कहा।
जिय ज्यों जल विन मीन, सोई मतौ बिचारिये॥

कही श्याम ऐसे जब बानी। तब उद्धव अपने जिय जानी॥
यदुपति योग सांच अब जान्यो। ज्ञान गर्व अपने मन आन्यो॥
बोल्यो अति अभिमान बढ़ाई। तुम आयसु शिरपर यदुराई॥

तुम पठवत गोपिनके माहीं। मैं कैसे प्रभु करौं कि नाहीं॥
तुम्हरे कहे गोकुलहि जैहौं। ज्ञानकथा ब्रजलोगन कैहौं॥
जो मानिहैं ब्रह्म उपदेशू। तौ कहि हौं समुझाय सँदेशू॥
दिन द्वै रहि ब्रजमें सुख दैहौं। बहुरो आय चरण पुनि गैहौं॥
यह सुनि बिहँसि कह्यो हरि तबहीं। जाहुउपँगसुत ब्रजको अबही॥
ज्ञान दृढ़ाय खबरि तिन दीजै। एक पन्थ द्वै कारज कीजै॥
आये भ्रात दूतै हम दोऊ। तब ते ब्रज पठयो नहिं कोऊ॥
जाय नन्द यशुमति परितोषो। ज्ञानकथा कहि युवतिन पोषो॥
सकुचौ मतिहि जानि ब्रजनारी। कहियो ज्ञान योग विस्तारी॥

वचन कहतही समुझिहैं, वे हैं परम प्रबीन।
ह्वैहैं शीतल बिरहते, ज्यों जल पायो मीन॥
पठवत थापि महन्त, उद्धव को यहि काज हरि।
ह्वै आवैंगे सन्त, ब्रजभक्तनके दरशते॥

अपनोही रथ तुरत मँगायो। दै उपङ्गसुत को पलनायो॥
अपनेहू भूषण बसन सुहाये। निज कर उद्धव को पहिराये॥
अपनहू मुकुट आपनी माला। पहिराई उर बिहँसि बिशाला॥
उद्धव तब हरि रूप सोहाये। यक भृगुपदके चिह्न बराये॥
लिख्यो पत्रिका श्री यदुराई। नन्द बबाको विनय बड़ाई॥
पालागन कहियो कर जोरी। यशुमतिसे यहि भांति करोरी॥
बालक ग्वाल सखा समुदाई। लिख्यो मिलन सबहीं उर लाई॥
अरु नर नारि सकल ब्रज जेते। प्रीति जनाय लिखे सब तेते॥

लिखि गोपिनको योग पठायो । भाव जानि काहू नहिं पायो ॥
लेहु दृढ़ाय प्रीति ब्रजबाला । यह आनौ उरमें नँदलाला ॥
नीके रहियो यशुमति मैया । कछु दिनमें अइहैं दोउ भैया ॥
लिखि पाती उद्धवकर दीन्हों । और सुखागर विनती कीन्हीं ॥

कहा कहौं कछु दिवसते, जननी बिछुरेउँ तोहिं ।
ता दिनते कोऊ नहीं, कहत कन्हैया मोहिं ॥
कह्यो सँदेश न जात, अति दुख पायो मात तुम ।
अब मोको निज तात, वसुदेव अरु देवकि कहत ॥

कहियो नन्द बबासों जाई । कह मन धरी इती निठुराई ॥
जबते दियो इतै पहुँचाई । बहुरो शोध लियो नहिं आई ॥
बारेक बरसाने लै जैयो । समाचार तहँके सब लैयो ॥
ग्वाल बाल सब सखा हमारे । ह्वैहैं वे मम विरह दुखारे ॥
तिन्हैं जाय मम दिशिते भेंटो । कहि सँदेश तिनको दुख मेटो ॥
ब्रजवासी जेते नर नारी । गोपवत्स खग मृग वनचारी ॥
जोजिहि विधि तासों तिहि भांती । अरसपरस कहियोकुशलाती
मित्र एक मम दरशन पैहो । देखत ताहि परम सुख लैहो ॥
वृन्दावनमें रहत निरन्तर । होत नहीं कबहूं उर अन्तर ॥
सघन कुञ्ज तरु लता सुहाई । मिलियो ताको शीश नवाई ॥
इहि विधि उद्धवसों यदुराई । कहि सब मनकी बात सुनाई ॥
बल करि ताको प्रेम जनायो । ज्ञान गर्व ताके उर छायो ॥

ऐसे उद्धवसों करी, प्रकट श्याम ब्रज प्रीति।
उद्धव तिनको ज्ञान लै, चले करन विपरीति॥
लखि उद्धवको जात, हलधरलिये बुलाय ढिग।
समुझत ब्रजकी बात, आये जल भरि नैन पुनि॥
कहा कहौं उद्धवमैं तुमसों। यशुमति करत हेत जो हमसों॥
एक दिवस खेलत मो साथा। खेल कियो झगरो यदुनाथा॥
मोको दौरि गोद तब लीन्हो। करसों ठेलि श्यामको दीन्हो॥
नन्द बबा तब बनते आये। इन्हैं गोद लै मोहिं खिझाये॥
लगे कहन नान्हो तेरो भाई। तोको छोह लगत नहिं राई॥
वह हित नहि भूलत है हमको। कहत सँदेश बनत नहिं तिनको
कहियो तुम प्रणाम पुर जाई। अरु दोउ भैयनकी कुशलाई॥
कहियो हम हैं तनय तुम्हारे। मात पिता नहिं आन हमारे॥
मिलिहैं आय धायकै तुमको। कारज कछुक और है हमको॥
नहिं बिसरत चण गोकुल गाई। तुम तजि सुखको हमैं देखाई
सुनि बसुदेव देवकी पायो। उद्धव ब्रजको जात पठायो॥
नन्द यशोमति हित समुझि, लिखि पाती वसुदेव।
पालि दिये तुम सुत हमैं, नहीं उऋण तुम सेव॥
मति सकुचो जियमाहिं, राम कृष्ण तुम्हरे तनय॥
हम कहिबेको आहि, मात पिता तुम दुहुनके॥
वालपने तुम पालनहारे। बालकेलिरस तुम्हौं दुलारे॥
हमतो पाये वैस कुमारा। सो यह सब उपकार तुम्हारा॥

मति कल्पो अपने मनमाहीं । हरिसों मिलि किन जात इहांहीं ॥
श्याम राम नहिं तुम्हैं भुलावैं । दिवस रैनि तुम्हरे यश गावै ॥
ऐसे लिखि पाती सुखदाई । उद्धव कर वसुदेव पठाई ॥
तब हरि उद्धव वेगि पठायो । तुरत अकेले रथ बैठायो ॥
आयसु लियो विदा हरि कीन्हों । चले उपँगसुत व्रजपथ लीन्हों
उद्धव चले गर्व मन धारी । कहा ज्ञान समुझैंगी ग्वारी ॥
देखौं हौं व्रजलोगन धाई । मानत दूतो तिन्हैं यदुराई ॥
चले उपँगसुत जब हर्षाई । गोपिनमन तब गयो जनाई ॥
पुनि पुनि भ्रमर श्रवण लगि जाई । भयो कछुक दुख कछु हर्षाई
समुझि सो शकुन दरश अनुरागीं । जहँ तहँ काग उड़ावन लागीं

जो गोकुल हरि आवहीं, तो तू उड़ रे काग ।
दधि ओदन तोहिं देहुँगी, अरु अञ्चलकी पाग ॥
सुनि गोपिनके बैन, उठि बैठत बायस अनत ।
लखि पावत सब चैन, कहत परस्पर आपसे ॥

सखी आज गोकुल हरि आवैं । कैधौं काहू व्रजहि पठावैं ॥
नीकी बात सुनावै कोऊ । फरकत बाम नयन भुज दोऊ ॥
बिन बयारि अम्बर फहराई । टूटि टूटि कञ्चुकिबँद जाई ॥
उठि उठि बैठत काग कहेते । उमगत मन आनन्द लहेते ॥
भ्रमर एक चहुँ दिशि मडराई । पुनि पुनि कान लगतहै आई ॥
होत शकुन सुन्दर शुभ काला । आवन हार भये नन्दलाला ॥
जानत भाग्य दशा विधि फेरी । दूर करो अब दुख मनते री ॥

बहुरि गोपाल मिलैं जो आई। सुख सनेह करि लीजै माई॥
आसन हृदय कमलमें दीजै। नयनन निरखि वदनछबि लीजै॥
देखत रूप मान तजि दीजै। प्रेम भजन अपनो करि लीजै॥
आवैं जो ब्रज कुञ्जबिहारी। बड़ि भागिनी सबै ब्रजनारी॥
नन्द यशोमति सखि सख पावैं। अति बड़िभागिनि बहुरि कहावै

घर घर शकुन विचारहीं, ब्रजकी तिय बड़ भाग।
ब्रजवासी प्रभु दरशको, सबके मन अनुराग॥
मथुरातन टक लाय, अनुदिन पन्थ निहारहीं।
कब आवहिं ब्रजराय, यहै करत अभिलाष सब॥

---

## उद्धवजीका ब्रजागमन लीला।

उद्धव चले ब्रजहि समुहाये। मथुरा तजि गोकुल नियराये॥
रथपर बैठे शोभित कैसे। दूजे नँदनन्दन मनु जैसे॥
वहै मुकुट पीताम्बर काछे। श्यामरूप शोभित अङ्ग आछे॥
दूरहिते रथकी उजियारी। देखत हरषीं ब्रजकी नारी॥
जान्यो आवत कुँवर कन्हाई। आतुर जहँ तहँते उठि धाई॥
कहत परस्पर देखहु आली। मधुबनते आवत वनमाली॥
गये श्याम रथपर चढ़ि जाहीं। तैसो रथ आवत मगमाहीं॥
तैसोइ मुकुट मनोहर राजै। तैसोइ पट कुण्डल छबि छाजै॥
रथ तन सब देखत अनुरागीं। स्वप्नेको सुख लटन लागीं॥

ज्यों ज्यों रथ आतुर चलि आवै । त्यों त्यों पीताम्बर फहरावै ॥
भई सकल सुखव्याकुल नारी । प्रेमविवश आनन्द उर भारी ॥
जब लगि रथ आवत नियराई । तब लगि मानहुं कल्प बिहाई ॥

थहे घोर व्रज घर घरन, आवत हैं नन्दलाल ।
देखनको निकसे हरषि, तरुण वृद्ध अरु बाल ॥
सुनत यशोदा नन्द, लेन चले आगे हरषि ।
भये परम आनन्द, तिहि छण व्रजके लोग सब ॥

जब कछु रथ आगे नियरायो । तब सन्देह सबन मन आयो ॥
श्याम अकेले रथके माहीं । हलधर सङ्ग देखियत नाहीं ॥
कोऊ कहत न हैं व्रजनाथा । जोपै हलधर नाहिन साथा ॥
इतना कहत निकट रथ आयो । उद्धव निरखि नयन जल छायो ॥
रहीं ठगीसी सब व्रजबाला । नूतन विरह भई बेहाला ॥
मनहुं गई निधि केहूं पाई । बहुरि हाथते तुरत गँवाई ॥
है गइ सपनेकी रजधानी । जागत कछू नहीं पछितानी ॥
जबहीं कह्यो श्यामतौ नाहीं । यशुमति मुरझि परी महिमाहीं ॥
परी विकल यशुमति जेहि ठाई । व्रजतिय धाय तहां चलि आई ॥
श्याम बिना रथ लखि अकुलानी । जहां सो तहां रहीं मुरझानी ॥
रुदन करत व्याकुल अति भारी । लई उठाय पोंछि दृगवारी ॥
यह कहि बोध करत सब बाला । उद्धवको पठयो गोपाला ॥

भलो भई मारग चल्यो, सखा पठायो श्याम ॥
उठहु बूझिये हरि कुशल, कहति महरिसों बाम ॥

सफल घरीहै आज, करहु जानि यह मन हरष ।
आवनको ब्रजराज, इनके करहै है लिख्यो ॥
यह सुनि उठी कछुक सुखपाई । उद्धव निकटहि पहुँची आई ॥
हरिके रूप निरखि सुख पायो । श्याम सखा कहि सबन सुनायो
उद्धव निरखि कहत ब्रजनारी । सुन्दर सलज सुशीलमहा री ॥
ताहीते हरि याहि पठायो । लै सँदेश मोहनको आयो ॥
नीके नीके वचन सुने हैं । सुनि सुनि श्रवणन हियो सिरैहैं ॥
यह जानिये बेगि हरि अइहैं । याके मुख अब यह सुनि पइहैं॥
चहु दिशि घेर लियो रथ जाई । नन्द गोप ब्रजलोग लुगाई ॥
गये लिवाय नन्द निज द्वारे । उद्धव रथते हर्षि उतारे ॥
अरघ देय भीतर घर लीन्हो । धनि धनि तिनकहि आदर कीन्हो
चरण धोय आसन बैठायो । बहु प्रकार भोजन करवायो ॥
विविध भांति करिके पहुनाई । नन्दश्यामकी बात चलाई ॥
उद्धव कह्यो कुशल दोउ भैया । अरु वसुदेव देवकी मैया ॥
करत हमारी सुधि कबहुँ, कहु उद्धव बलबीर ।
पुलकि गात गदगद बचन, पूछत नन्द अधीर ॥
चूक परी अनजान, कह पछिताने आजके ।
घर आये भगवान, जाने हम निज अहिर करि ॥
प्रथम गर्गमुनि कह्यो बखानी । भूल्यो सङ्गदोष हित जानी ॥
अब उद्धव बिछुरे गिरिधारी । मरियत समुझि सूल सइ भारी ॥
कह्यो यशोमति दृग भरि पानी । उद्धव हम ऐसी नहिं जानी ॥

सुतको हित करिकै हम माने । हरि है वासुदेव प्रगटाने ॥
जेहि विरञ्चि शिव ध्यानलगावैं । निशि दिन अङ्ग बिभूतिचढ़ावैं
सो वालक हम अतिहि अयानौ । ऊखलसों बांध्यो गहि पानो ॥
फाटत नहीं वज्रसम छाती । अव यह समुझि हृदय पछितातौ॥
वैसे भाग कवहुं अव ऐहैं । वहुरि श्यामको गोद खिलैहैं ॥
जवते हरि मधुपुरी सिधारे । तवते ऊधो प्राण दुखारे ॥
तलफत मीन नीर विन जैसे । देख्यो श्याम मनोहर तैसे ॥
उठिकै प्रात जातिहौं खरिका । देखत दुहत औरके ढरिका ॥
उठत शूल उद्धव मनमाहीं । क्यों ये प्राण निकसि नहि जाहीं ॥

ग्वाल सखा सँग जोरि अव, को गैया लै जाय ।
को आवै संध्या समय, बनते गाय चराय ॥
काहि लेहु उर लाय, आंचरसों रज झारिकै ।
काको लेहु वलाय, चूमि मनोहर कमलमुख ॥

मैं वलि सांचौ कहियो ऊधो । कैसे श्याम रहत हां सूधो ॥
दहो महो माखन नित जाई । खात कौनके धाम कन्हाई ॥
कौन ग्वाल वालनकै साथा । भोजन करत तहां व्रजनाथा ॥
कौन सखा लीन्हे सँग डोलैं । खेलत हँसत कौनसे बोलैं ॥
काको माखन चोर जाई । देन उरहनो को अव आई ॥
वनमें यमुनातीर कन्हाई । किन गोपिनको रोकत जाई ॥
किनको दूध दही ढरकावैं । किनसों दधिको दान चुकावैं ॥
इतनी बूझति यशुमति माई । भई बिकल गुनसुमिरि कन्हाई

बोले नन्द बिलखि तब बानी। कहियो उद्धव सांच बखानी॥
श्याम कबहुँ बहुरो ब्रज ऐहैं। ब्रसबासिनको ताप नशैहैं॥
मोहिं तात यशुमतिसों माता। सदा कहतहैं हरि सुखदाता॥
कहि गये चलती बार मुरारी। मिलिहौं वहुरि तात यकबारी

करिहैं सो अपनो वचन, कबहुं श्याम प्रतिपाल।
कह उद्धव तुमसों कछू, कह्यो कि नाहिं गोपाल॥
भये सकल कृश गात, श्यामबिरह ब्रजनारि नर।
युग सम दिवस बिहात, उद्धव हमको हरिबिना॥

लखि उद्धव ब्रज रीति सुहाई। रहे कछुक मनमें सकुचाई॥
सुनत नन्द यशुमतिकी बानी। बोल्यो हृदय परम सुख मानी॥
कहि दोउ भाइनकी कुशलाती। दई श्याम दीन्ही सो पाती॥
हरिको कह्यो सँदेश सुनायो। हलधरको सब कह्यो सुहायो॥
पाती बांचि नन्द उर लाई। भटे मानहु कुवँर कन्हाई॥
लिखी श्यामके करकी पाती। यशुमति लैलै लावति छाती॥
दुसह विरहकी ताप नशावै। हरिसँदेश सुनि सुनि सुखपावै॥
पुनि वसुदेव लिख्यो है जोई। उद्धब दियो नंदको सोई॥
बांचत नयन नीर भरि आये। कहत श्याम अब भये पराये॥
पुनि वसुदेव लिखीका बाता। बोली बिलखि यशोदा माता॥
यद्यपि हरि वसुदेवकुमारा। उदर देवकी के अवतारा॥
तद्यपि मोहिं धायहुके नाते। एकबार मोहन मिलि जाते॥

उद्धव यद्यपि हम सव, समझावत व्रजलोग ।
उठत शूल तद्यपि निरखि, माखन हरि सुख योग ॥
रोटी अरु नवनीत, नित मांगत उठि प्रातही ।
कोदैहै करि प्रीत, तिन्हैं वानि जाने विना ॥

यदपि देवगृह सब सुख भोगा । है वसुदेव सदन सब योगा ॥
हम पशुपाल ग्वाल व्रजवासी । दही मही धन घोष निवासी ॥
राज सुखन कोउ कोटि लडावै । विन माखन नहि हरि सुखपावै
निशिदिन रहत यहै जिय शोचू । ह्वैहैं हरिहो करत सकोचू ॥
एकवार गोकुल फिरि आवैं । मनकरि माखन भोग लगावैं ॥
अधिक रहैं गोकुलमें नाहीं । उलटि बहुरि मधुपुरिको जाहीं ॥
ऐसे कहि यशुमति विलखाई । उद्धव चरण रही शिर नाई ॥
तव उद्धव बोले सुखपाई । धन्य यशोमति धनि नँदराई ॥
धन्य धन्यहैं भाग तुम्हारे । जिनको कृष्ण प्राणते प्यारे ॥
पूरण ब्रह्म कृष्ण सुखरासी । जगदात्मा सकल घट वासी ॥
हैं व्यापक पूरण सब पाहीं । जैसे अग्नि काठके माहीं ॥
मति जानो हरि हमते न्यारे । वे हैं सव जनके रखवारे ॥

मति जानो सुत करि तिन्हैं, वे सबके करतार ।
तात मात तिनके नहीं, भक्तन हित अवतार ॥
हम हैं सब अज्ञान, प्रभु महिमा जानैं नहीं ।
वे प्रभु पुरुष पुरान, जन्म कर्म्म करिकै रहित ॥

हम सब अपने भ्रमहिं भुलाने। नर समान हरिको करि जाने॥
ज्यों शिशु आप चक्र सम फिरई। ताको फिरत जानि सबपरई॥
ताते प्रभुहिं जानि हरि ध्यावो। जाते मुक्ति पदारथ पावो॥
उद्धव जो तुम हमहिं सिखावत। हमहूं बहुत मनहिं समझावत॥
तदपि वह मृदु रूप कन्हाई। देखे बिना रहो नहिं जाई॥
सब ब्रजके जीवन हरि बारे। उद्धव कैसे जात बिसारे॥
जा दिन मोहन बनहिं न जाते। ता दिन बन खग मृग अकुलाते॥
नहिं अघात देखे वह मूरति। रूपनिधान सांवरी सूरति॥
सो मृग तृण भरि उदर न खाहीं। भये रहत कृश श्यामबिनाहीं॥
मुरलीध्वनि खग मोहे जोई। सो अब सुख फल खात न कोई॥
जे बन सदा नवल सुखदाता। ते अब सूखे जीरण पाता॥
कोकिल कीर मोर नहिं बोलैं। व्याकुल भये सकल बन डोलैं॥

जिन्हैं चरावत श्यामजू, फिरत दुखारी गाय।
जहँ जहँ गोदोहन कियो, सूँघत तहँ तहँ जाय॥
सब ब्रज बिरह अधीर, युग सम बीतत पल हमैं।
धरैं कौन विधि धीर, उद्धव मनमोहन बिना॥

ऐसेहि कहत सुनत गुण हरिके। बैठे बीति गई निशि भरिके॥
ठाढ़े यशुदहि रैनि बिहानी। भरि भरि लोचन ढारत पानी॥
ब्रज घर घर सब होत बधाई। कहत कान्हकी पाती आई॥
निपट समीपी सखा सुहायो। उद्धवको हरि ब्रजहि पठायो॥
कञ्चन कलश दूध दधि रोरी। नन्द सदन लै आवत गोरी॥

गोपसखा सब कृष्ण उपासी। आये धाय सकल ब्रजबासी॥
उद्धवको हरि रूप निहारी। भये सुखी सब नर अरु नारी॥
ब्रजयुवती मिलि तिलक बनावैं। करि परदच्छिणा शीश नवावैं॥
कहत पायके दरश तुम्हारो। भयो जन्म अब सफल हमारो॥
बूझत कुशल सकल नर नारी। नन्द अवास भीर भइ भारी॥
उद्धव लखि व्रज प्रेम जकेसे। बोलि सकत नहिं रहे थकेसे॥
इकटक तात चहुँ दिशि सब ठाढ़े। उद्धव रहे मौन गहि गाढ़े॥

उद्धवकी लखिके दशा, व्रज जन मन अकुलात।
क्यों उद्धव तुम कहत नहिं, रामकृष्ण कुशलात॥
इक क्षण युग सम जाहिं, हमैं सुने बिन प्रीति हरि।
आवन कह्यो कि नाहिं, व्रजहि कृपा करि सांवरे॥

तब उद्धव बोले धरि धीरा। सदा कुशल हरि हलधर बीरा॥
दियो तुम्हें लिखि पत्र संदेशू। अरु श्रीमुख यह कह्योनिदेशू॥
करिसमाधि अन्तर मोहिं ध्यावो। गोपसखा करि मति चितलावो॥
हौं अनादि अविगति अविनासी। सदा एक रस सब घटबासी॥
निर्गुण ज्ञान बिन मुक्ति न होई। वेदपुराण कहत हैं सोई॥
ताते दृढ़करि यह मन धारो। सगुणरूप तजि निर्गुण विचारो॥
तुरत तापत्रय धरि दुखदाई। मिलिहौ ब्रह्मसुखहि सब जाई॥
उद्धव कही जबहिं यह बानी। गोपीजन सुनिके बिलखानी॥
इतनी दूर बसत सुनि आली। अब कछु और भये बनमाली॥
रही बिरहकी बात बिचारी। बूड़ी सकल मनहुँ बिन बारी॥

मिलन आश गइ सुनत सँदेशू। उपज्यो उर अति कठिन अँदेशू
फैलि गई जहँ तहँ यह बानी। कहत परस्पर सब अकुलानी॥

यह सब दोष लगै हमैं, करमरेख को जान।
प्रेम सुधारस सानिकै, अब लिखि पठयो ज्ञान॥
इक ऐसे यह देह, रही झरसि विरहाअनल।
केलाहूते खेह, अब आयो उद्धव करन॥

रूपराशि जो सब सुखदाई। ब्रजके जीवनमूरि कन्हाई॥
बिछुरे जिन्हैं इतो दुख पायो। सो अब हिरदय माहि बतायो॥
तिन्हैं कहत चितवो मनमाहीं। वे हैं पूरण भरि सब ठाहीं॥
जाको यत्न करत हैं योगी। निर्गुण निराकार निर्भोगी॥
सो करि कृपा आइकै ऊधो। बीथिन मांझ बहायो सूधो॥
अबलन कारण श्याम पठायो। व्यापक अगह गहावन आयो॥
भयो आय विरहन सब कोई। गायो निर्गुण निगमन जोई॥
जो समदृष्टि एकरस मोहन। तो कित चित्त चुरायो गोहन॥
उद्धव यह हित लागे काहे। जोपै इष्ट कृष्ण हियमाहे॥
निशिदिननयन दरश हित जागत। कलनहिपरतपलकनहिलागत
चहुंदिशिचितवतविरहअधीरा। विलखिविलखिभरिडारतनीरा
ऐसेहु दुख प्रकटत क्यों नाहीं। जोपै श्यामहि कहत इहाहीं॥
दहन देहु ऐसेहि हमहिं, अवधि आशकी थाह।
फिरि चाहे नहि पाय हौं, डारे अगुण अथाह॥

ल्याये युवतिन योग, जो योगिनको भोग तुम ।
हम तनु भरेउ वियोग, भयो अधिक दुख श्रवण सुनि ॥
एक कहत दूषण नहि याको । यह आयो पठयो कुबिजाको ॥
वाने जो कहि याहि पठायो । सोई याने आय सुनायो ॥
अब कुविजा जो जाहि सिखावै । सोई ताको गायो गावै ॥
कबहुँ श्याम कहैं नहि ऐसी । कही आय ब्रजमें इन जैसी ॥
ऐसी बात सुने को भाई । उठै शूल सुनि सहि नहि जाई ॥
कहत भोग तजि योग अराधो । ऐसी कैसे कहि हैं माधौ ॥
जप तप संयम नेम अचारा । यह सब विधवाको व्यवहारा ॥
युग युग जीवहु कुवँर कन्हाई । शीश हमारेपर सुखदाई ॥
अछत पति विभूति किन लाई । कहो कहांकी रीति चलाई ॥
हमरे योग नेम व्रत एहा । नन्दनंदनपद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हैं दोष को लावै । यह सब कुविजा नाच नचावै ॥
जब युवतिन यह बात सुनाई । उद्धव रह्यो मौन सकुचाई ॥

योग कथा युवतिन कही, मनहीं मन पछिताय ।
प्रेमवचन तिनके सुनत, रहि गयो शीश नवाय ॥
तब जान्यो मनमाहिं, ये गुण हैं सब श्यामके ।
मोहि पठयो इहि ठाहिं, याही कारणके लिये ॥

उद्धव सुनि गोपिनकी वानी । गुरु करि तिन्हैं प्रथमहीं मानी ॥
मन मन करि प्रणाम हर्षाने । उद्धव चले बहुरि बरसाने ॥

श्री वृषभानुकुवँरि हरि प्यारी। और सकल व्रज गोपकुमारी॥
जिनके मनमोहन नँदलाला। सुनी सबन यह बात रसाला॥
कोउ है मधुवनते आयो। हित करि श्रीनँदलाल पठायो॥
यूथ यूथ मिलि अति अतुराई। पिय सँदेश सुनतै उठि धाई॥
मिले उपँगसुत पन्थसम्भारी। रथ लखि कहत परस्पर नारी॥
बहुरि सखी सुफलक सुत आयो। वैसोई रथ परत लखायो॥
लै गयो प्रथमहि प्राण हमारो। अबधौं कहा काज जिय धारो॥
तिहि क्षण उद्धव दरश देखायो। तब धीरज सबके मन आयो॥
सङ्गी सखा श्यामको चीन्हों। सबन प्रणाम जोरि कर कीन्हों॥
उद्धव लखि अति भये सुखारी। मनहुँ विकल झख पायो बारी॥

तब उद्धव रथते उतरि, बैठे तरुकी छाहिं।
भई भीर गोपीनकी, अति अनन्द मनमाहिं॥
अति प्रिय पाहुन जान, सुधि ल्याये ब्रजराजकी।
करिकै अति सनमान, प्रेम सहित पूजे सबनि॥

हाथ जोरि पुनि विनय सुनाई। कहिये उद्धव निज कुशलाई॥
बहुरि कहौ मधुवन कुशलाता। हैं बसुदेव देवकी माता॥
कुशल क्षेम कहिये बलदाऊ। अरु अक्रूर कुशल कुबिजाऊ॥
बूझत श्याम कुशल अकुलानी। नयन नीर मुख गदगद बानी॥
लखि गोपिनकी प्रीति सुहाई। प्रेम मगन भे उद्धवराई॥
पुलकि गात अँखियन जल छाई। गयो ज्ञानको गर्व हिराई॥
पुनि पुनि यहै कहत मनमाहीं। ऐसी हरिको बूझिय नाहीं॥

व्रजनारिनको योग पठावैं। चितते व्रजकी प्रीति मिटावैं।
पुनि उद्धव उरमें धरि धीरा। बोले शोषि नयनको नीरा॥
सर्वविधि कहि हरिकी कुशलाती। दीन्हीं प्रथम श्यामकीपाती
लै लै करन मिलति सब पाती। कोउ नयनन कोउ लावति छाती
काहू लै कर शीश चढाई। बूझत आपन लिखी कन्हाई॥

अति हित पाती श्यामकी, सब मिलि मिलि सुख पाय।
उद्धव कर दीन्हीं बहुरि, दीजै बांचि सुनाय॥
उद्धव सबन समोध, बांचि श्यामकी पत्रिका।
लागे करन पबोध, ज्ञानकथा विस्तारि कै॥

मोको हरि तुम पास पठायो। आतमज्ञान सिखावन आयो॥
जाते पाप नहीं नियराई। मनते विषय देहु बिसराई॥
हरि आपहि नर आपुहि नारी। आपहि गृही आप ब्रह्मचारी॥
आपहि पिता आपही माता। आपहि पुत्र आपही भ्राता॥
आपहि पण्डित आपहि ज्ञानी। आपहि राजा आपहि रानी॥
आपहि धरनी आप अकाशा। आपहि स्वामी आपहि दासा॥
आपहि ग्वाल आपही गाई। आपहि गाय दुहावन जाई॥
आपहि भ्रमर आपही फूला। आपहि ज्ञान बिना जगमूला॥
राव रङ्क दूजा नहि कोई। आपहि आप निरन्तर होई॥
ज्यों बहु दीप ज्योति है एकू। तैसोइ जानों ब्रह्म विवेकू॥
यहि प्रकार जाको मन लागै। जरा मरण संशय भ्रम भागै॥
योग समाधि ब्रह्म चित लावै। ब्रह्मानन्द सुखहि तब पावै॥

सुनतहि उद्धवके वचन, रहीं सबै शिरनाय।
मानहुं मांगत सुधारस, दीन्हीं गरल पियाय॥
रहीं ठगीसी नारि, हरि सँदेश दारुण सुनत।
बोलीं बहुरि सँभारि, उद्धवसों कर जोरिकै॥

भले मिले तुम उद्धवराई। भली आय कुशलात सुनाई॥
कछुयक हती मिलनकी आशा। कियो आय ताको तुम नाशा॥
इन बातन कैसे मन दीजै। श्याम बिरह तनु पल पल छीजै॥
बिन देखे वह मूरति प्यारी। कुण्डल मुकुट पीतपटधारी॥
उद्धव कहौ कौन विधि जीजै। योग युक्ति लैके कह कीजै॥
छांडि अछत नँदनंदन प्यारो। को लिखि पूजै भीति पगारो॥
हम अहीर गोरसके भोगी। योग युक्ति जानैं कोउ योगी॥
उद्धव तुमसों सांच बखानैं। प्रेम भक्ति हमरे मन मानैं॥
हमको भजनानन्द पियारो। ब्रह्मानँद सुख कहा विचारो॥
व्यावरि व्यथा न वंध्या जानैं। ये दृग हरि दरशन सुख मानैं॥
पुनि पुनि हमैं वहै सुधि आवै। कृष्णरूप बिन और न भावै॥
नवकिशोरको नयन निहारैं। कोटि ज्योति ताऊपर वारैं॥

अधर अरुण मुरली धरे, लोचन कमल विशाल।
क्यों बिसरत उद्धव हमैं, मोहन मदनगोपाल॥
सजल मेघ तनु श्याम, रूपराशि आनँद भरयो।
मोहीं सब ब्रजवाम, और न जानत ब्रह्म हम॥

उद्धव सुनि गोपिनकी बानी। बोले बहुरो साजि सयानी॥
जो लगि हृदय ज्ञान नहिं नीकें। तोलौं सब पानीकी लीकें॥
बूझे बिन स्वप्नो सब होई। बिनविवेक सुख पाव न कोई॥
रूप रेख जाके कछु नाहीं। नयन मूंदि चितवो मनमाहीं॥
हृदयकमलमें ज्योति विराजै। अनहद्दनाद निरन्तर बाजै।
इड़ा पिङ्गला सुखमन नारी। सहज शून्यमें बसत मुरारी॥
नासाअग्र ब्रह्मको वासा। धरहु ध्यान तहँ ज्योति प्रकासा॥
क्राम क्रम योगपन्थ अनुसरहू। इहि प्रकार भव दुस्तर तरहू॥
उद्धव हम गोपाल उपासी। ब्रह्मज्ञान सुनि आवत हासी॥
जो वै रूप रेख नहिं चीन्हा। हाथ पांव मुख नयन बिहीना॥
तौ यशुदा करि काको जायो। काको पलना घालि झुलायो॥
कैसे ऊखल हाथ बँधायो। चोरि चोरि कैसे दधि खायो॥

कौन खिलाये गोद करि, कहे न तुतरे बैन।
उद्धव ताको न्यावहे, जाहि न सूझै नैन॥
नटवर वेष प्रकाश, श्री वृन्दावनचन्द्र तजि।
को खोजै आकाश, शून्य समाधि लगाय क॥

जानि बूझि मति होहु अयानी। मानहुँ सत्य हमारी बानी॥
भजो ब्रह्म ब्रह्म सब होहू। छांड़ि देहु ममता अरु मोहू॥
माया लिप्त आंधरो न बूझै। ज्ञान अनन्त नयन सब सूझै॥
मैं यह कहत कृष्णकी भाखी। देखहु बूझि वेद सब साखी॥
लगे आगि घर घर जरावै। को निज गृह तजि घर बुझावै॥

धरो करौ बलयोग सँवारो । भक्तिविरोधी ज्ञान तुम्हारो ॥
योग कहा सब ओढ़ि बिछावैं । दुसह वचन हमको नहिं भावैं ॥
अबलन आनि सिखावत योगू । हम भूलीं कैधौं तुम लोगू ॥
ऐसे कहि गोपी अनखानी । मनमें श्याम परेखो आनी ॥
ताही समय भ्रमर इक आयो । सहज निकट ह्वै वचन सुनायो ॥
वचन स्वभाव त्रिगुण अनुसारी । लागीं कहन सकल ब्रजनारी ॥
तासों कहि सब बात सुनावैं । उद्धव प्रति बहु व्यङ्ग बनावैं ॥

कोऊ उद्धवसों कहत, कोइ आली प्रति बात ।
निज निज मनकी उक्ति करि, अपनी अपनी घात ॥
उद्धव भूले ज्ञान, उत्तर बोलि न आवहीं ।
रहे मौनसों मान, सुनत बचन नारीनके ॥

बोलि उठी ऐसे इक ग्वारी । आय सुनो री सब ब्रजनारी ॥
आयो मधुप देन पद नीको । लीन्हे भयो सुयशको टीको ॥
तजन कहत भूषण पट गेहा । सुत पति बन्धव सजन सनेहा ॥
शीश जटा अरु भस्म लगावो । सगुण छांड़ि निर्गुण मन लावो॥
आये करन तियनपर छोहा । वस्तो छांड़ि बतावत खोहा ॥
सुनि सखि कहत एक अरु बाला । ये मधुपुर दोउ बसत मराला
वे अक्रूर और ये ऊधो । निरवारक पानी अरु दूधो ॥
जानत भली गांसकी बाता । इनहीं कंस करायो घाता ॥
इनके कुल ऐसी चलि आई । प्रगट उजागर वंश सदाई ॥
अब करि कृपा ब्रजहि उठि धाये । अबलन योग सिखावन आये

ऐसे एक कहत अरु ग्वाली। ये दोउ इकमन सुन री आली॥
तब अक्रूर अबहिं ये ऊधो। ब्रज आखेट कौन इन सूधो॥

वचन फांसि फँसि हँसि हरन, उन लिय रथ बैठाय।
हर लीन्हीं इन गोपिका, हतौ ज्ञान शर आय॥
देखहु लीन्हीं लाय, चहुँ दिशि दावा योगको।
भई कठिन अति आय, अबधौं का चाहत कियो॥

लागी कहन और यक ग्वारी। मधुकर जानी बात तुम्हारी॥
तुम जो हमैं योग यह आन्यो। करौ भली करणी सो जान्यो॥
इक हरिविरह रहीं हम जरिकै। सुनतै अधिक उठीं अब बरिकै
तापर अब जनि लोन लगावो। मतै पराई बात चलावो॥
दई श्याम तुम्हरे कर पाती। सुनिकै बहुत सिरानी छाती॥
कीन्हों उलटो न्याय कन्हाई। बहे जात मांगत उतराई॥
इक हम दुसह विरह दुख पावैं। दूजे लिखि लिखि योग पठावैं
मधुकर श्याम भेद अब पायो। नेहरत्न उन कहूँ गवांयो॥
पहिले अधर सुधारस प्यायो। कियो पोष बहु लाड़ लड़ायो॥
बहुरो शिशुको खेल बनायो। गृहरचना रचि चलत मिटायो॥
सांप कञ्ज को ज्यों लपटाई। ऐसी हितकी रीति दिखाई॥
बहुरो सुरति लई नहिं जैसे। तजी श्याम हमको अब ऐसे॥

करहु राज जहँ जाउ तहँ, लेहु अपन शिर भार।
दीजत सबै असीश यह, न्हातहु खसै न बार॥

बहुरङ्गी सुख तूल, जितिहिं जात तितही सदा।
इक रङ्गी दुखमूल, चातक मीन पतङ्ग गति॥

मधुप कहा कहि तुम्हें सुनैये। करिकै प्रीति सबै पछितैये॥
निबहैगी ऐसे हम जानी। उन लैकै कछु और ठानी॥
कारे तनुको कहा पत्यारो। मृदु मुसकनि मनहरो हमारो॥
तब काहू मन हरत न जान्यो। हँसिहँसि सब लोगन सुखमान्यो॥
बरु वहि कुबिजा कीन्हीं नीको। सुनिसुनि मधुप मिटत दुख जीको॥
चन्दन तनक श्याम उर धरिकै। श्रीसरवस्व पियो सब भरिकै॥
जैसो छल हमसों हरि कीन्हों। ताको दावँ कूबरी लीन्हों॥
बोली और एक या नारी। भाग दशा उद्धव छिन जारी॥
बिलपत रहत सकल ब्रजनारी। कुबिजा भई श्यामकी प्यारी॥
खात बच्यो असुरनको जोई। अब कुलबधू कहावत सोई॥
राजकुवँरि कोऊ हरि वरते। तो कछु हम चितमें नहिं धरते॥
बन्यो साथ अब अतिही आगर। कागा और मराल उजागर॥

अब खेलत दोउ लाज तजि, बारहमासी फाग।
लौंड़ीको डौंड़ो बजी, हांसी अरु अनुराग॥
हमैं देत वैराग, अपान दासीवश भये।
चतुर चचोरत आग, उद्धव यह अचरज बड़ो॥

उद्धव हरि ऐसे काजन करि। सुयश रह्यो त्रिभुवनमाहीं भरि॥
आये असुर जिते ब्रजमाहीं। मारे सकल बच्यो कोउ नाहीं॥

विषजल सों सब ग्वाल जिवाये । कालीनाग नाथिलै आये ॥
इन्द्रमान दलि व्रजहि बचायो । गोवर्द्धन कर बाम उठायो ॥
जब विधि बालक बत्स चुराये । करिकै यत्न आप उपजाये ॥
धनुष तोरि गज प्रबल सँहारो । मल्लन सहित कंस नृप मारो ॥
कीन्हो उग्रसेनको राजा । भये सकल देवनके काजा ॥
ऐसो कीरति करि सब नासो । कीन्हो नारि कूबरी दासो ॥
कहँ श्रीपति त्रिभुवन सुखदायक । अखिललोक ब्रह्माण्डकेनायक
ब्रह्मा शिव इन्द्रादिक देवा । करत निरन्तर जाकी सेवा ॥
उद्धव कहां कंसकी दासो । यह सुनि होत सकल ब्रज हासो ॥
कत मारत यदुकुलको लाजन । अब करिकै हरि ऐसे काजन ॥

गावत जग सब गीत अब, वा चेरीके काज ।
उद्धव यह अनुचित बड़ो, चेरीपति ब्रजराज ॥
उद्धव कहिये जाय, अबहूँ चेरी परिहरैं ।
यह दुख सह्यो न जाय, सवति कहावति कूबरी ॥

बोली और बाम यक ऐसे । उद्धव हरि रीझे धौं कैसे ॥
यक चेरी अरु कूबर पाछे । सोवत नहीं उताने आछे ॥
कुटिल कुरूप जाति कुलहीनी । ताको श्याम सुहागिनि कीनी
कहा सिद्धि धौं कूबरमाहीं । हमको लिखि पठवत क्यों नाहीं ॥
हमहूं कूबर यत्न बनावैं । चालक टेढ़ी चाल दिखावैं ॥
कहैं श्याम सोई अब कीजे । लोकलाज भामिनि तजि दीजे ॥
होहि आय गोकुलके बासी । तजैं निगोड़ी कुबिजा दासी ॥

मधुकर जो हरि हमैं विसार्‌यो । गोपीनाथ नाम यों धार्‌यो ॥
जो नहिं काज हमारे आवत । तौ कलङ्क कत हमहिं लगावत ॥
जो पै प्रीति करी कुबिजाकी । तौ अब बिरद बुलावहिं ताकी ॥
करतहि सुगम सबन करि पाई । प्रीति निबाहन अति कठिनाई ॥
अस परतीति कौन विधि माने । चणमें ह्वै गये श्याम बिराने ॥

ज्यों गजको रद त्यों करी, हरि हमसों पहिचान ।
दिखरावनको आनही, काज करनको आन ॥
बिषकीरा विष खात, छांड़ि छुहारो दाख फल ।
मन मन कीजै बात, उद्धव कहिये काहिसों ॥

उद्धव कहि कह तुम्हैं सुनावैं । जैसे हरि बिन हम दुख पावैं ॥
बरु रहते मथुरा घनश्यामा । कित आये यशुदाके धामा ॥
कत करि गोपवेष सुख दीन्हों । कत गोवर्द्धन करपर लीन्हों ॥
कतहि रासरसरचि बनमाहीं । किये विविध सुखबरणि न जाहीं ॥
करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई । अब मन धरी इती निठुराई ॥
जबते व्रज तजि गये बिहारी । तबते ऐसी दशा हमारी ॥
घटे अहार बिहार हर्ष हिय । भोग सँयोग आश आवरनिय ॥
बाढ़ी निशा वलय आभूषन । लोचन जल अञ्चल प्रति अञ्जन ॥
उर चिन्ता कच्छु की उसासा । जीवन रह्यो अवधको आसा ॥
बीतत निशा गनत नभ तारे । दिवस तकत पथ लोचन हारे ॥
रही नहीं सुधि बुधि मनमाहीं । बिरहानल तनु जरत सदाहीं ॥
सुमिरि सुमिरि कै हरिगुणग्रामा । दुख अधिकात सुहातनधामा

कहँलगि कहिये निज व्यथा, अरु हरिकी निठुराय।
तापर लाये योग अलि, अबलन करत सहाय॥
कठिन विरहकी पीर, जिहि व्यापै सो जानही।
क्यों धरिये मन धीर, सुनि अलि वचन भयावने॥

जे कच ते न फुलेल सँवारे। निज कर हरि गूंथे निरवारे॥
कहि पठयो तिनको मनभावन। भस्म सानिकै जटा बनावन॥
रत्नजटित ताटङ्क सुहाये। जिन कानन मोहन पहिराये॥
तिनको अब मुद्रा माटीके। ल्याये हैं उद्धव गढ़ि नीके॥
भाल तिलक अञ्जन नकवेसर। मृगमद मलयज कुंकुम केसर॥
उर कंचुकी मणिनके हारा। सब तजि कहत लगावहु छारा॥
ज्येहि गर श्याम सुभग भुज मेलो। पठई त्यहि आंगो अरु सेलो॥
पहिरे जा तनु चीर सुहावन। ताहि भगौहों कहत रँगावन॥
जा मुख पान सुगन्ध सुहाये। निज हाथन ब्रजराज खवाये॥
रस विवाद बहु तान तरङ्गा। गावत कहत रहत हरिसङ्गा॥
मदन विलास हासरस भाख्यो। हरिमुख अधरसुधा रस चाख्यो॥
तिन मुख मौन कौन विधि कीजै। ऊरध स्वास घूंटि किमि जीजै॥

वे तो हरि अतिही कठिन, जानी तिनकी बात।
मधुप तुम्हैं नहि चाहिये, कहत कठिन यों बात॥
नव बजाय मृदु बैन, अधरातन बोली नहीं।
किये रास रस ऐन, अब कटु वचन सुनावहीं॥

मधुकर मधु माधवकी बानी। हम सब जिमि माखी लपटानी॥
उड़ि नहिं सकीं फँसी हैं तामें। आवत सोच कहे अब कामें॥
जिमि अहारवश मीन विचारे। कण्टक गिलत कठिन अनियारे॥
अटकट कुटिल हृदय दुख बाढ़ै। बहुरि कौनविधि तिनको काढ़ै॥
जैसे बधिक सुनाद सुनावै। मृग मन मोहि समीप बुलावै॥
बहुरि करत धनुशर सन्धाना। तुरतहि मारि हरत है प्राना॥
जिमि सनेह बल दीप प्रकाशै। रजनीके तमको दुख नाशै॥
रूप लोभ शर मनहिं दिखाई। क्षणमें तिनको देत जराई॥
जिमि ठग मदमोदन खवावै। पथिक जननसों प्रीति जनावै॥
रस विश्वास बढ़ावत भारी। प्राण सहित गथ हरत पिछारी॥
तिमि मृदु मुसकानि मनहिं चुराई। खगजिमिहमब्रजनाथबुझाई॥
पाछे अब करनी यह कीनी। योगछुरी सबके गर दीनी॥

हरि हमसों ऐसी करी, कपटप्रीति विस्तार।
भई विरह बिषवेलि ब्रज, रसको ऊख उखार॥
कहिये कहा बखान, जिनसों हित यह मति तिन्हैं॥
हरिजू हमरे प्रान, हम हरिके भावैं नहीं॥

यह सुनि कह्यो और इक ग्वाली। कहत कहा मधुकरसों आली॥
उनहींको सङ्गी यह जोऊ। चञ्चल चित्त श्याम तनु दोऊ॥
वे मुरलीध्वनि जग मनमोहन। इनकी गुञ्ज सुमनदलजोहन॥
वे निशि अनत प्रात कहुँ आनै। ये बसि कमल अनत रुचिमानैं॥
वे द्वै चरण सुभग भुजचारी। ये षटपद दोउ विपिनविहारी॥

वे पटपीन मञ्जु तनु कारे । इनके पीतपंख दोउ आछे ॥
वे माधव ये मधुप कहावत । काहू भांति भेद नहिं आवत ॥
वे ठाकुर ये सेवक उनके । दोऊ मिले एकही गुनके ॥
कहा प्रतीति कीजिये इनकी । परी प्रकृति ऐसी है जिनकी ॥
निरस जानि भाजत पलमाहीं । दया धर्म इनके कछु नाहीं ॥
मन दै सरबस प्रथम चुरावैं । बहुरो ताके काम न आवैं ॥
इनकी प्रीति किये यों माई । ज्यों भुसपरकी भीति उठाई ॥

> कह्यो एक तिय सुन सखी, कारे सब इकसार ।
> इनसों प्रीति न कीजिये, कपटनको चटसार ॥
> देखो करि अनुमान, कारे अहि कारे जलद ।
> कविजन करत बखान, भ्रमर काग कोयल कपट ॥

कुलस्वभावसों हसि भजिजाहीं । यद्यपि तिन्ह लाभ कछुनाहीं ॥
जलद सलिल बरषत चहुँ पाहीं । भरत सकल सरसरितामाहीं ॥
निशि दिन ताहि पपीहा ध्यावै । भांवरि दै दै प्रीति बढ़ावै ॥
एक बूँदको तेहि तरसावै । भ्रमर मालतीसों मन लावै ॥
जब रसहीन होत वामाहीं । निरमोही तजि जाहिं पराहीं ॥
सुनियत कथा काग पिककेरी । अण्डन सेव करावत हेरी ॥
बड़े होत निज कुल उड़िजाहीं । बैठत निज माता पितुपाहीं ॥
ये सब कारे हरिपर वारे । सबहिनमें अतिही अनियारे ॥
सबको उपमा अरु गुण योग । न्याय देत पटतर कवि लोग ॥

अलिकुल अलक कोकिलाबानी। भुज भुजङ्ग तनु जलद बखानी
समुझो बात आज यह सारी। खानि कपटको कुब्जबिहारी ॥

मृदु मुसकनिविष डारिकै, गये भुजँगलौं भाग।
नन्द यशोदा यों तज्यो, ज्यों कोकिलसुन काग ॥
गये प्रीति यों तोर, जिमि अलि रस लै सुमनसों।
घन त्वे भये कठोर, चातक से हम रटत सब ॥

उद्धव सुनो एक उपखानो। बाजी तांत राग पहिचानो ॥
हरि आगे तुमसे अधिकारी। क्यों नहिं दुख पावैं ब्रजनारी ॥
कहत सुनत लागतहो ऐसे। मीठो कहत गरलसों जैसे ॥
पायो क्षोर लपटको तबही। लिखि आयो निर्गुण पद जबहीं ॥
योग तहां अधिकारहि पाये। क्यों नहिं तूम्बा यहां बनाये ॥
सुनि लीजै उद्धवजी हमसों। राजकाज चलिहै नहिं तुमसों ॥
करिये पोष आपनी काया। आये इतै करो बड़ि माया ॥
जो तुमहै हमरे हित आन्यो। सो हम शिर चढ़ाय सुख मान्यो
सुनिकै सब ब्रजलोग अनन्द्यो। नरनारी पर्‍यो कर वन्द्यो ॥
अब सँभारि अपनो यह लीजै। जिन तुम पठये तिनहीं दीजै ॥
उनहिनमें यह योग समैहै। इहां न काहूपै निरबैहै ॥
हम ब्रज बसत अहीर गँवारी। योग भोगको नहिं अधिकारी ॥

अन्ध आरसी बधिर ध्वनि, रोग ग्रसित तनु भोग।
उद्धव तिनको न्यावहै, हमैं सिखावत योग ॥

इमैं योग जो योग, सोई योग मिलाइये।
कहै न जाने रोग, कहा कीजिये वैद्यसों॥
ऊधव जाउ भले तुम ओऊ। अपने स्वारथके सब कोऊ॥
निर्गुण ज्ञान कहा तुम पायो। कौने या व्रज तुम्हैं पठायो॥
और कह्यो सन्देशो कोऊ। कहि निवरै अब सुनिये सोऊ॥
जब अक्रूर आय वह कीन्हो। सगरे व्रजको सुख हरि लीन्हो॥
तुम आये ऊधव यहि ठाटो। अन्न छुड़ाय खवावत माटो॥
जोपै हती ज्ञानकी गाथा। तौ कत रास नचे व्रजनाथा॥
मन हरि लीन्हो वेणु बजाई। आधी निशि सब नारि बुलाई॥
रसलीला वृन्दावन ठानो। अब मथुरा ह्वै बैठे ज्ञानी॥
तब ममता क्यों नहि उरधारो। मातुल मारयो कंस पछारो॥
बूझि परं नीके सब कोई। हुती कछुक आशा सोउ खोई॥
पढ़े सबै एकै परिपाटी। अधिक एकते एक न घाटी॥
हम बावरी चलीं नहि त्योंही। ज्यों जगचलत आपनी गोहीं॥
मनकी मनहीमें रही, करिये कहा विचार।
हम गुहारि जितनें चहत, तितते आई धार॥
जानत है सब कोय, जैसी तुम हमसों करी।
हम सहि लीनी सोय, पावोगे अपनो कियो॥
ऊधवजी पूछत हम तुमको। जो हरि योग सिखावत हमको॥
तौ करि कृपा आप किन आवैं। योग ज्ञान कहि प्रगट जनावैं॥
जो उपदेशी निकट न आवै। तौ श्रोता केहि विधि मन लावै॥

अबलग सुनो न काहू आनन। मन्त्र देन लागे बिन कानन॥
जबलगि युक्ति न सिद्ध बतावै। तब लगि साधक कैसे पावै॥
हम गोकुल वे मथुरामाहीं। खेतो होत सँदेशन नाहीं॥
जोपै करो श्याम यह माया। करैं और तो इतनो दाया॥
दरशन प्रथम दिखावैं आई। करहिं पवित्र चरण पखराई॥
योग जानिकै नगर तियागैं। सघन कुञ्जबन मन अनुरागैं॥
आसन मौन नेम आचारा। जप तप संयम ब्रत व्यवहारा॥
योग अङ्ग कहियत हैं जेते। बनहीमें बनि आवैं तेते॥
करि प्रबोध कर माथ छुवावैं। होहिं सिद्ध फल तौ सुख पावैं॥

तब तो खेलत सोंह करि, राख्यो कछु न सुहाय।
अब यह योग मिल्यो कहां, उद्धव कहियो जाय॥
हमको निर्गुण ज्ञान, जहँ स्वारथ तहँ सगुण हैं।
लिखि पठये निर्वान, चाटैं शहद लगायकै॥

बोलो और एक रिसमानी। मधुकर समुझि कहत किनबानी॥
परमधु पिये जात नहिं दीजै। मुख देखेको न्याव न कीजै॥
बीचहि परै सत्य सो भाखै। राव रङ्कको शङ्क न राखै॥
सूझि न परत दिवस अरु राती। बात कहत हो ठकुरसुहाती॥
ब्रजयुवतिनको योग सिखावत। वृषभ जोति सुरभीन गनावत॥
रे कृतघ्न लम्पट व्यभिचारी। कीरति इहै आनि बिस्तारी॥
हम जान्यो अलि है रसभोगी। कत सीख्यो यह योग कुयोगी॥
जे भयभीत होहिं लखि माला। ते क्यों छुवैं भयानक व्याला॥

क्यों शठ बकत छांड़ि लज्जाडर। कहँ अबला कहँ वेश दिगम्बर ॥
साधु होय तो उत्तर दीजै। कहा तोहिं कहि अपयश लीजै ॥
भई वाय सो देखियत तोहीं। इन बातन डर लागत मोहीं ॥
प्रथमहिं यत्न आपनो कीजै। ता पाछे औरन सिख दीज ॥

कत स्रम करि बकबक करत, कौन सुनत तुव बात।
बन कारो यों होतहै, उठि किन ह्यांते जात ॥
देखि मूढ़ चित चाय, कहँ परमारथ कहँ विरह।
राजरोग कफ जाय, ताहि खवावत हौ दही ॥

बोली और एक कोउ नारी। उद्धव सुनिये बात हमारी ॥
प्रथमहिं ब्रजकी कथा विचारो। पाछे योग सिद्धि विस्तारो ॥
जा कारण पठये हैं माधो। सो विचार कछु जियमें साधो ॥
केतिक बीच विरह परमारथ। देखो जियमें समुझि यथारथ ॥
परम चतुर हरिके निज दासा। रहत सदा सन्तनके पासा ॥
जल बूड़त पुनि पुनि अकुलाई। कहा फेन पकरत हौ धाई ॥
सुन्दरश्याम कमलदललोचन। सबविधि सुखदसकल दुख मोचन
ब्रजके जीवन नन्ददुलारे। कैसे उरते जात बिसारे ॥
योग युक्ति किहि काज हमारे। वाकी मुरलीपर सब वारे ॥
तुम निर्गुणकी कीरति गाई। करैं कहा सो बहुत बड़ाई ॥
अति अगाध पैहैं नहिं पारा। मन बुधि कर्म सबनके सारा ॥
रूप रेख नपु वर्ण न जासों। कैसे नेह निबाहैं तासों ॥

बिनहीं तोय तरङ्ग अरु, बिन चेतन चतुराय।
अबलो ब्रजमें नहिं हुतो, मधुप करी तुम आय॥
कहो विविध विध कोय, नहिं सुहात नंदनन्द बिन।
अन्नक्षुधारत जोय, स्रक चन्दन क्यों सुख लहै॥

लागी कहन और यक ग्वाली। क्ति बेकाज कहत है आली॥
कहिये तेहि जो होय विवेकी। यह अलि निज बातनको टेकी
बकि यासों को मूड़ पचावै। फटकै भुसो हाथ कह आवै॥
तजि रसगेह नेह हरि पीको। सिखवत नीरस निर्गुण फीको॥
देखत प्रगट नयन कछु नाहीं। ज्योति ज्योतिखोजत तनुमाहीं
श्रवण सुनत जाकी मुरलीधुन। भूलि रहे शिवसे योगी जन॥
सो प्रभु भुज ग्रीवापर डारी। बन बन लाज छुड़ाय बिहारी॥
रासबिलास विविध उपजायो। सङ्ग हमारे नाच दिखायो॥
लोकलाज कुलकानि नशाई। हम सब तिनके हाथ बिकाई॥
काटि सुहाग प्रेमकी हेली। बोवत योग जहरकी बेली॥
चौपद होय ताहि समुझैये। कौन भांति षटपदहि सिखैये॥
लागे कौन कहे अब याके। छाँछो दूध बराबर जाके॥

हम बिरहनि बिरहा जरी, जारी और अनङ्ग।
सुखतौ तबहीं पाइहैं, जब नाचै फिर सङ्ग॥
छांड़ि जगत उपहास, दृढ़ब्रत कीन्हो श्यामसों।
सोई हमैं सुपास, और युक्ति चाहैं नहीं॥

सुनु रे मधुप कुटिल कुविचारी। ये व्रजलोग कृष्णव्रतधारी॥
सुन्दर श्याम रूपरस साने। श्रीगोपाल तजि और न जाने॥
जो तजि श्याम औरको ध्यावैं। व्यभिचारीते भक्त कहावैं॥
विद्यमान तजि सुरसरि तीरा। चाहत कूप खोदि के नीरा॥
सुनै कोन यह सखौ तुम्हारी। अति अनन्य मण्डली हमारी॥
योगमोट तुम शिर धरि आनी। सो नहि व्रजवासिन मनमानी॥
इतनी दूर जाहु लैं कासी। चाहत मुक्ति तहांके बासी॥
हमकहं करैं मुक्ति लै रूखी। अबला श्यामसङ्गकी भूखी॥
ओसन प्यास कौन बिधि जाई। जबलगि नीर न पियै अघाई।
ऐसी बात कही अलि हमसों। तजहु शोचमिलिहैं हरि तुमसों
हेतु हमारे जो पगु धारे। तौ हित करि दुख हरो हमारे॥
करहु सो यत्न श्याम जिमि आवैं। प्रगट देखि छवि हम सुखपाव

सत्यज्ञान औ ध्यान अलि, सांचो योग उपाय।
हमको सांचो नन्दसुत, गर्ग कह्यो समुझाय॥
वश कीन्हो मृदुहास, हम चेरी नंदनन्दकी।
नख शिख अङ्ग विलास, तिनहीं देखे जीजिये॥

इतनेही सों काज हमारो। मिलिहि फेरि व्रज नन्ददुलारो॥
और अनेक उपाय तिहारो। राज करहु अलि हमहि न प्यारो॥
तुम तो मधुप प्रीति रस जानो। हम काजे कत होत अयानो॥
सर्व सुमनमें फिरि फिरि आवत। क्यों कमलनमें आप बँधावत॥
जेहि बल काठ फोरि घर करहू। क्यों न कमलदल टारत तबहू॥

रँग श्याम रँग जे पहिलेसे। चढ़त और रँग तिनपर कैसे॥
पारस परसि जो लोह सुहायो। सो किमि बहुरिचु बकलपटायो
सुनी जिनन मुरलीधुनि कानन। सो किमि सुनत कौंगरी तानन
बसे जासु उर सगुण कन्हाई। कैसे निर्गुण तहां समाई॥
यह मन श्याम स्वरूप लभानो। कहा करैं ले योग बिरानो॥
सिंह सदा आमिष रुचि मानै। तृण न भखै पुनि तजै परानै॥
हरि तजि हसैं न और सुहाई। कोटि भांति कोउ कहै बुझाई॥

> द्वै दृग रूप विराटके, कहियत एक समान।
> ताहू में हित चन्द्रमा, नहीं चकोरहि भान॥
> लोकन रूप अधीन, सगुण सलोने श्यामके।
> क्यों सुख पावै मीन, जल बिन डारै दूधमें॥

नहिं मानत ये नयन हमारे। सुख न लहतबिन कान्ह निहारे॥
भये श्याम छवि जलके मीना। मुरली धुनिके मृग आधीना॥
अलि लोभी पङ्कज पद करके। कोकि कोकनदद्युति दिनकरके॥
वदन इन्दुके कुमुद चकोरा। तन घनछबिके चातक मोरा॥
वहे रूप परगट जब देखैं। जीवन सफल तबहिं करि लेखैं॥
बिगरि परे मन मधुप हमारे। ज्ञान बचन नहिंसुनत तुम्हारे॥
ललित अनङ्ग रूप रस साने। खरे चकित ताते जग जाने॥
श्वान पूँछलौं समनहिं होई। जो कोउ यत्न करै पचि कोई॥
सो मन गयो श्यामके साथा। सुनै कौन अब निर्गुण गाथा॥
एकै मन एकै वह मूरत। अटको ताहि न तजौं महूरत॥

जो होतो दूजो मन कोऊ । तो हम लै धरती तहँ सोऊ ॥
उद्धव हरि हैं ईश हमारे । ते अब कैसे जात बिसारे ॥

योग दीजिये लै तिन्है, जिनके मन दश बीस ।
छित डारत निर्गुण हूतै, उद्धव ब्रजमें खीस ॥
गुण कर मोही श्याम, को निर्वाही निर्गुणहि ।
किये जन्मके काम, क्यों तजिये नँदनन्द अब ॥

कहत मधुप तुम बात सुहाई । कहतहि सुगम करत कठिनाई ॥
प्रथम अग्नि चन्दनसी जानी । सती होन उमहै सुख मानी ॥
ताको तपन और सियराई । कहै कौन पाछे पुनि आई ॥
पैठत सुभट यथा रण जाई । कुसुमलता सम खड्ग सुहाई ॥
दियो अपनपो शूर उदारा । को अब करै तासु निरवारा ॥
ये मनमोहनसों उरझाने । दुख सुख लाभ हानि नहिं जाने ॥
प्रेमपन्थ सूधो अति ऊधो । मति निर्गुण कण्टक लै रूंधो ॥
नेह न होइ पुरानो क्योंहीं । सरित प्रवाह नयो नित ज्योंहीं ॥
निरखहि आनन्द रूप छके जल । रवि प्रतीतनहिं मीनचढ़थल
बूड़त उमहि सिन्धुके माहीं । ये तउ नीर न पियत अघाहीं ॥
दिन दिन बढ़त कमलदल जैसे । हरिछवि दृगन लालसा तैसे ॥
बसे गुपाल हृदय अम्बुज अलि । निकसत नाहिं सनेह रहे रलि

योगकथा अब मति कहो, उद्धव बारहिं बार ।
भजै आन नँदनन्द तजि, ताको जननी छार ॥

यहै हमारे भाव, अब कोऊ कछुव कहौ।
जैबो होय सु जाव, रहौ प्रीति नँदलालकी॥
रहै प्राण तनु प्रेमहि खोई। कौन काज आवै पुनि सोई॥
बिना प्रेम शोभा नहिं पावै। निशा गये जिमि शशि न सुहावै॥
बिना प्रेम जग खग बहुतेरे। चातक यश गावत सब टेरे॥
प्रेम सहित मीननको करणी। नयन अछत देखहु जग वरणी॥
हमते प्रेम जात नहिं दीन्हो। दुहूं भांति हम तो यश लीन्हो॥
मिलैं श्याम तो अधिक सुहायो। नातरु सकल जगत यश गायो॥
कहँ हम यह गोकुलकी ग्वारी। वर्णहीन घटिजाति हमारी॥
कहँ वे श्रीकमलाके नाथा। बैठे पांति हमारे साथा॥
निगम ज्ञान मुनि ध्यान अतीता। सो ब्रज भये हमारे मीता॥
तिन्हैं सङ्ग लै रास बिलासी। मुक्ति इते पर काकी दासी॥
यह सुनि बोलि उठी इक आनै। मेरो बुरो न कोऊ मानै॥
रसकी बात रसिकही जानै। निरस कहा रसकी पहिचानै॥
दादुर कमलन ढिग बसत, जन्म मरण पहिचानि।
अलि अनुरागी जानिकै, आप बँधावत आनि॥
जानैं कहा मिठास, गूँगो वास सवादको।
मानहु काटयो घास, इनसों कहिबो प्रेम रस॥
धनि धनि उद्धव तुमबड़भागी। हरिसों हित नहिं मन अनुरागी॥
पुरइन बसत यथा जलमाहीं। जलको दाग लग्यो कहुँ नाहीं॥
गागर नेहनीरमें जैसे। अपरस रहत न भीजत तैसे॥

पैरत नदी बूंद नहिं लागी । नेक रूपसों दृष्टि न पागी ॥
हम सब व्रजकी नारि अयानी । ज्यों गुड़सो चींटी लपटानी ॥
अब कासों वह लगन बखानैं । लागे बिन उद्धव को जानैं ॥
हृदय दहै नित सोच न रहिये । पशुवेदन ज्यों मन मन दहिये ॥
सबते पीर लगनकी भारी । यत्न रहित दुख सुखते न्यारी ॥
मंत्र यंत्र उपचार न पावैं । वैद कहांलगि ताहि बतावैं ॥
घायल पीर जानिहै सोई । लाग्यो घाव जाहिके होई ॥
प्रेम न रुकत हमारे रूते । गज कहुं बँधत कमलके सूते ॥
कैसे विरह समुद्र सुखाई । योगअग्निकी तनक लुकाई ॥

यद्यपि समुझाये बहुत, हम करि मनहिं कठोर ।
तदपि न कबहूं भूलई, उद्धव नन्दकिशोर ॥
क्यों सुख पावैं प्रान, पलक लगत तब सहत नहिं ।
लागे वर्ष विहान, अब बिन देखे श्यामके ॥

तब षटमास रासके माहीं । एक निमिष सम जाने नाहीं ॥
अब औरै गति बिना कन्हाई । एक एक पल कलप बिहाई ॥
तब बन बन हरिसङ्ग बिहारी । अब व्रजमें यह दशा हमारी ॥
ज्यों देवी उजार पुरमाहीं । को पूजै कोउ मानत नाहीं ॥
कहत और यौवन अब ऐसो । चित्र अँधेरे घरको जैसो ॥
नवरागि अति सीरो अब तातो । भयोसकलसुख करि तनु हातो ॥
कत करि प्रीति गये मनभावन । जासों हम लागीं दुख पावन ॥

फिरि फिरि यहै समुझि पछिताहीं । कह्यो हतो आवन हम पाहीं ॥
याही आश प्राण तनु माहें । बारेक बहुरि मिल्योही चाहें ॥
उद्धव हृदय कठोर हमारे । फटे न बिछुरत नन्ददुलारे ॥
हमते भली जलचरी होई । अपनो नेह निबाहत जोई ॥
जो हम प्रीतिरीति नहिं जानी । तौ ब्रजनाथ तजी दुख मानी ॥

कहँ लगि कहिये आपनी, उद्धव तुमसों चूक ।
हम ब्रजवास बसी मनहुँ, सबै दाहिने शूक ॥
उद्धव कह्यो न जाय, मोहन मदनगोपालसों ।
नयनन देखो आय, एक बार ब्रजकी दशा ॥

बोली और एक ब्रजबाला । उद्धव भली करी गोपाला ॥
अब ब्रज कबहूं आवैं नाहीं । मथुरहि रहैं सदा सुखमाहीं ॥
इहां चली अब उलटी चाली । देखत दुख पइहैं वनमाली ॥
तपत इन्दु सूरजकी भांती । चन्दन पवन सेज सब ताती ॥
भूषण बसन अनल सम दागै । गृह बन कुञ्ज भयावन लागै ॥
जित तित मार द्रुमको डारन । धनुधरलिये करत है मारन ॥
हमतौ न्याय सहैं दुखएतो । ब्रजबासिनी ग्वाल जड़ तेतो ॥
वे प्रभु भोग सँयोग भुवाला । क्यों सहिहैं कोमल तनु ज्वाला ॥
उद्धव कह्यो सँदेश सिधारो । जान्यो सब परपञ्च तिहारो ॥
बातन कहा हमैं भरमावत । जल मथि सुन्यो न माखन आवत॥
सगुण निकट दर्शत है जिनको । निर्गुण ओट बतावत तिनको ॥
जोपै निज्ञ तुम यहै बखानो । प्रभु पूरण सबमें सम जानो ॥

तो तुम कापै करत हौ, उद्धव आवागौन ।
को नेरे को दूर है, कहां कौन ह्यां कौन ॥
खोजेहु पावत नाहिं, योगी यागसमुद्रमें ।
इहां बँधावत वाहिं, सो यशुदाके प्रेमवश ॥

हम गुवाल गोकुलके बासी । गोपनाम गोपाल उपासी ॥
राजा नन्द यशोदा रानी । यमुना नदी परम सुखदानी ॥
गिरिवरधारी मित्र हमारे । वृन्दावन मिलि सङ्ग विहारे ॥
अष्ट सिद्धि नव निधि सब दासी । इहां न योग विराग उदासी
वहै प्रेम रसकी सब भूखी । कीजै कहा मुक्ति लै रूखी ॥
निर्गुण कहा प्रेमरस जानै । उपदेशहु जे लोग सयानै ॥
हम ऐसेहि अपनी रुचि माने । रहिहैं विरहवायु बौराने ॥
निशिदिन सपने सोवत जागे । वहै श्याम छविसों दृग पागे ॥
वालचरित्र किशोरीलीला । सुधासमुद्र सकल सुखशीला ॥
सुमिरि सुमिरि सोई सुखधामा । रटि रटि मरिहैं माधव नामा
विरहा मधुप प्रेमको करई । ज्यों पट फटल रङ्ग गहि धरई ॥
ज्योंघट प्रथम अनल तनु तावै । वहुरि उमहि रस भरि सुखपावै

सन्मुख शर सहि शूर जब, रविरथ वेधत जाय ।
प्रथम वीज अङ्कुर तमहि, पुनि फल फरत अघाय ॥
को दुख सुखहि हराय, कृष्णप्रेमके पन्थ चलि ।
और न कछू उपाय, उद्धव मीनन नीर विन ॥

बोली एक सखी सुनि लीजै। अपने काज कहा नहिं कीजै॥
दिना चारि यहहू सब करिये। जो हरि मिलैं योगहू धरिये॥
जटा बनाय भस्म तनु साजै। मूँदे रहै नयन बिन आंजे॥
सिङ्गी दण्ड लेहिं मृगछाला। पहिरैं कन्था सेली माला॥
धरि धीरज सन्मुख शर सहिये। भाजे आज उबार न लहिये॥
विरह ज्ञान बिच बिनहीं काजै। मरियतहैं यह दुसह दुराजै॥
एक सखी ऐसे कह दीन्हो। उद्धव तुम जु कह्यो सब कीन्हो॥
नयन मूँदिकै ध्यान लगायो। इत उत मनको बहुत चलायो॥
उरझि रह्यो नँदलाल प्रेमवश। नेक न चलत गयो गाड़े फँस॥
जो हरि मिलत जानिहू परते। तो लै योग शीशपर धरते॥
यहलै देहु तिन्हहिं फिरि जाई। जिन पठये तुम इतहि सिखाई॥
लेहिं न नेकु जान हमारे। देखियत माथे परेउ तुम्हारे॥

भूले योगी योग जिहिं, तुमसे कियो बखान।
जान्यो गयो न पञ्चमुख, ब्रह्मरंध्र तजि प्रान॥
हम उर जाको ध्यान, हमहिं दिखावहु ज्योति सो।
निपटहि छूछो ज्ञान, उद्धव कहा सुनावहू॥

उद्धव जबते श्याम निहारे। तबते योगी नयन हमारे॥
शिखासीख गुरुजनकी टारी। धरेउ जनेऊ लाज उतारी॥
पलक बसन घूँघुट गृह त्यागे। दिशा दिगम्बर मन अनुरागे॥
सजत समाधि रूप लटकाये। भये सिद्ध नहिं डिगत डिगाये॥
ताके बीच विघ्नके कर्त्ता। पचि पचि रहे मातु पितु भर्त्ता॥

अब ये और योग नहिं जाने। वही श्याम छबि साध भुलाने॥
भये कृष्णमय नयन हमारे। नहीं कृष्ण हमते कहुँ न्यारे॥
हमसों कहत कौनकी बातें। गयो कौन तजि हमको घातें॥
मथुरा जाय रजक किन मारेउ। धनुष तोरि किन द्विरद पछारेउ
किन मल्लन मथि कंस वहायो। उग्रसेन किन बन्दि छुड़ायो॥
को वसुदेव देवकी जाये। तुम किनके पठये ब्रज आये॥
कुण्डल मुकुट गुञ्ज उर राजैं। गोकुल यशुदा नन्द विराजैं॥

को पूरण को अलख गति, को गुणरहित अपार॥
करत वृथा बकवाद कत, यहि ब्रज नन्दकुमार॥
जात चरावत धेनु, दिन उठि ग्वालन सङ्ग मिलि॥
मधुर बजावत वेनु, आवत सन्ध्याके समय॥

जिन उद्धव मथुरा तब देख्यो। ब्रजवसि जन्म सफल करि लेख्यो
लेहो कहा जाय प्रभुतामें। परिहो जाय राज्य विपतामें॥
निरख्यो गोकुल लाल कन्हाई। घरघर माखन खात चुराई॥
जन्म कर्म गुण गावो नीके। परम मधुर सुखदायक जीके॥
नन्दराय उत्सव किमि कीन्हों। कैसे दान द्विजनको दीन्हों॥
कैसे गोपीजन सुनि धाई। कैसे पट भूषण पहिराई॥
कैसे गोप ग्वाल सब आये। नृत्यत भेष विचित्र बनाये॥
कैसे दधिको कीच मचाई। ब्रज सब भई अनन्द बधाई॥
बालविनोद कौन विधि कीन्हों। कैसे गोवर्द्धन कर लीन्हों॥
कैसे दधिको दान चुकाहो। शरदरास सुख किन उपजायो॥

यह रस प्रेमकथा चित लावो। अपनो नीरस कथा बहावो॥
निगम नेति निर्गुणको ध्यावै। क्यों नहिं प्रगट दरश चितलावै॥

भावत है जो कृष्णको, योग सो हमसों देखि।
उद्धव सब तनु स्नेह करि, सुमति होय करि पेखि॥
सब अङ्ग करिकै कान, बैठहु मनहिं बटोरिकै।
तजहु ज्ञान अभिमान, तौ यह अर्थ सुनावहीं॥

नहीं जटा नहिं भस्म लगावैं। रूधें श्वास न श्रृङ्ग बजावैं॥
नहीं वेद नहिं पढ़हिं पुराना। शम दम नेम न संयम ध्याना॥
हम श्री गोकुलचन्द्र अराध्यो। प्रेम योग तप तिनसों साध्यो॥
मन वच कर्म्म और नहिं जानैं। लोक वेद दुख सुख भ्रम मानैं॥
मानऽपमान निन्द कुल कारसौ। अग्नि अँचै गुरुजन बच सरसौ॥
हनति ताप चहुँ दिशि तनु देखो। पियत धूम उपहास विशेखो
करि सुप्रेम वन्दन जगबन्दन। कर्म्म धर्म्म कामना निकन्दन॥
हम जु समाधि प्रीतिबानिक हरि। अङ्गमाधुरी हृदय रहीं धरि।
निरखत रहत निमेष न त्यागत। यह अनुराग योग नित जागत
सगुण स्वरूप रङ्गरस रागे। भृकुटि नैन नैनन लगि लागे॥
हँसनप्रकाश सुमुख कुण्डलद्युति। शशि अरु सूर देखिये उद्द्युति
मुरली सधर मधुर सुर गाजै। शब्द अनाहत सोई ध्वनि बाजै॥

वरषत रस रुचि मन अचै, रह्यो परम सचमान।
अति अगाध सुख सङ्गको, पद आनन्द समान॥

मन्त्र दियो रति ऐन, भजन ज्ञान हरिको हमैं।
गुरु करैं अब कौन, कौन सुनै फीको मतो॥
उद्धव व्रजकी रीति निहारी। भये विवश निज नेम बिसारी॥
लाग्यो कहन धन्य व्रजबाला। जिनके सर्बस मदनगोपाला॥
धन्य धन्य यह प्रेम तुम्हारो। भक्ति सिखाय मोहिं निस्तारो॥
तुम मम गुरु मै दास तुम्हारो। धन्य कृष्ण पद दृढ़ व्रत धारो॥
मैं जड़ कीन्हो और उपाई। अब तुम दरश भक्ति निज पाई॥
उद्धव आयो योग सिखावन। सीखे प्रेम भक्ति अति पावन॥
भये मग्न रस प्रेम विशाला। लागे गावन गुणगोपाला॥
लोटत कबहुँ कुञ्जमें जाई। कबहूं विटपन भेंटत धाई॥
कबहूँ व्रजरज शीश चढ़ावैं। कबहूं गोपिन पदशिर नावैं॥
पुनि पुनि कहत धन्य व्रजनारी। धन्य ग्वाल गैया बनचारी॥
धन्य भूमि यह सुखद सुहावन। धन्य धाम वृन्दावन पावन॥
ऐसे प्रेम मगन मन फूल्यो। को हौं कित आयों सुधि भूल्यो॥

उद्धव मन आनन्द अति, लखिकै प्रेमविलास।
आयोहौं दिन दोयको, बीति गये षट मास॥
जब उपज्यो उर शोच, वचन कृष्णके सुरति करि।
मनमें भयो सकोच, बोल्यो हो प्रभु वेग मोहिं॥

तब उपनन्दसुत रथहि पलान्यो। मथुरा चलबेको अतुरान्यो॥
उद्धव जात गोपिकन जानी। आई धाय सकल अकुलानी॥

तब उद्धव सबको शिर नाई। हाथ जोरिके विनय सुनाई॥
अब मोहिं देवि अनुग्रह कीजै। जाउं कृष्णापै आयसु दीजै॥
मैं सेवक जैसो उनकेरो। त्यों जानिये आपनो चेरो॥
कह्यो जो मैं कछु तुमसों आई। कृष्ण कहेते करी ढिठाई॥
सो अपराध क्षमा अब कीजै। ह्वै प्रसन्न यह आशिष दीजै॥
जासों कृष्ण करें मोहिं दाया। रहै प्रीति तुम चरण अमाया॥
करों बड़ाई कहा तुम्हारी। ऐसी विमल न बुद्धि हमारी॥
कृष्ण सदा तुम्हरो यश गावैं। जाको अन्त वेद नहिं पावैं॥
कबहुँक सुरत करत मम रहियो। जानि आपनो जनहितगहियो
सुनि उद्धवकी निर्मल बानी। भईं विवश ब्रजतिय सुख मानी॥

क्यों नहिं उद्धवजी कहो, ऐसे बचन बिचारि।
अन्त बड़े सब भांति तुम, हम निदान जड़ ग्वारि॥
होय न शील समान, लघु दीरघ ताते भये।
भृगु कीन्हों अपमान, श्रीपति करि भूषण लियो॥

कहां गरलसे बचन हमारे। कहँ अति शीतल मृदुल तुम्हारे॥
तुम हित कह्यो हम सुख मानी। तरन उपाय वेदविधि बानी॥
हम गँवारि उलटी सब बूझी। कहीं कटुक तुमसों जो सूझी॥
लोक वेद छोड़्यो हम जैसो। ताकर फल भुगतैंहैं तैसो॥
कहा करै मन बहु समझावैं। श्यामदरश बिन सुख नहिं पावैं॥
दुर्लभ दरश तुम्हारो हमको। कहिये जान कौन विधि तुमको॥
करिकै कृपा कीजियो सोई। जसे दरश श्यामको होई॥

देखत हौ या तनुको दहिवो । समय पाय हरि आगे कहिवो ॥
चाप बसतको चूक हकारी । मन नहिं धरे लाल गिरिधारी ॥
जानि हमैं अति दीन दुखारी । करहि कृपा मन गुणहिं विचारी
आवन अवधि कहीही जोई । धरिहैं सुरति बचनकी सोई ॥
बहुत कहा कहिये ब्रजराजहि । करिहैं बांह गहेकी लाजहि ॥

प्रभु दीननपति दीन हित, यही हमारे आस ।
कबहुँक दर्श दिखायके, हरिहैं लोचन प्यास ॥
ऐसे कहि ब्रजबाम, भई विरहसागर मगन ।
उद्धव करि परणाम, आये यशुमति नन्दपै ॥

मांगी विदा जोरि कर दोऊ । तुम सम धन्य और नहिं कोऊ ॥
रामकृष्ण करि सुत जिन पाये । बाल भावकरि गोद खिलाये॥
धनि गोकुल धनि गोकुलवासी । किये प्रेमवश जिन अविनासी
कृपा करी मोहिं कृष्ण पठायो । जातें दरश सबनको पायो ॥
अब तुम मोको देहु निदेशू । जाय कृष्णसों कहौं सँदेशू ॥
सुनि सप्रीति उद्धवकी वाता । नन्द बबा अरु यशुमति माता ॥
उमग्यो प्रेम नयन जल बाढ़े । भये जोरि कर आगे ठाढ़े ॥
उर बल श्याम विरहकी पीरा । कहत सँदेश बहत दृगनीरा ॥
उद्धव हरिसों कहियो जाई । यशुदाकी आशीष सुनाई ॥
कमलनयन सुन्दर सुखदाई । कोटि युगन जीवहु दोउ भाई ॥
कहियो बहुरि दूती समुझाई । तुम बिन दुखित यशोमति माई
इतनी दया मातपै कीजै । एकबार दरशन फिरि दीजै ॥

नन्द दोहनी भरि दई, कह्यो नयन भरि नीर ।
वा धौरीको दूध यह, भावत हो बलवीर ॥
दई यशोमति माय, मुरली ललित गोपाल को ।
उद्धव दीजो जाय, प्यारीही अति लालको ॥

---

## उद्धवजीको मथुरागमन लीला ।

उद्धव ल माथे धरि लीन्ही । लखि शुभ प्रीति दण्डवत कीन्ही ॥
चल्यो योगकी नाव बुड़ाई । ह्वै गयो आप गोप ब्रज आई ॥
जाय कृष्णपद शीश नवायो । प्रभु सादर तेहि कण्ठ लगायो ॥
कहिये सखा कुशलसों आये । ब्रजमें जाय बहुत दिन लाये ॥
नन्दबबा अरु यशुमति माई । कहो कौन बिधि देखे जाई ॥
बसत प्राण मोहींमें जिनके । कैसे दिन बीतत हैं तिनके ॥
कहा दशा ब्रजगोपिन केरी । जिनके प्रीति निरन्तर मेरी ॥
उद्धव समुझत ब्रजकी बाता । भये प्रेमवश पुलकित गाता ॥
भूल्यो यदुपति नाम बड़ाई । कह्यो सुनौ गोपाल गुसांई ॥
कहों कहा प्रभु तुम्हैं सुनाई । ब्रजकी रीति कही नहिं जाई ॥
कृपाकरी मोहि तहां पठायो । ब्रजबासिनको दरश दिखायो ॥
जादिन गयो तुम्हैं शिरनाई । पहुँच्यो सांझ गोकुलहि जाई ॥
दूरिहिते लखि रथध्वजा, अरु पटपीत रसाल ।
जानि तुम्हैं आवत हरषि, धाये गोपी ग्वाल ॥

रथपर मोहिं निहार, रहे ठगे से थकि सबै।
चल्यो दृगन भरि धार, रहे मुरछि व्याकुल धरणि॥
भये विकल सब आशा टूटे। विरहघात मुरझे फिर फूटे॥
जब तुम्हरो पठयो मोहिं जान्यो। लै नँदसदन माहिं सनमान्यो
तुम बिन यशुमति परम दुखारी। बूझी कुशल सराम तुम्हारी॥
तृषित चातकी ज्यों अकुलानी। कृष्ण कृष्ण लागी जकबानी॥
बारहि बार यहै पछिताहीं। प्रभु प्रभाव हम जान्यो नाहीं॥
बांधे ऊखल तनक दहीको। अब कसकत कसनी सो हीको॥
व्रज अब शून्य बिना मनमोहन। परम अभागो गई न गोहन॥
ठाढ़ी रहीं ठगोरी लाई। वृद्ध बयस तजि गये कन्हाई॥
दशरथ प्राण तजे सुत लागी। मैं देखतही रही अभागी॥
अब जनु ऐसेही मरि जैहौं। बहुरि न श्यामहिं कनियां लैहौं॥
यों तुम्हरे हित यशुमति माता। अतिहीदीन दुखित बिलखाता
नन्दहु सुमिरत तुम गुणग्रामा। बीती निशा चारहू यामा॥
यद्यपि मैं बोधे बहुत, तुम बिन कछु न सोहात।
तिनकी दशा बिलोकि मोहिं, युगसम बीती रात॥
नन्द यशोदहि पाय, गयो प्रात वृषभानुपुर॥
सुनि सब आई धाय, धाम काम तजि बामतहँ॥
मोहिं तुम्हारो निजजन जानी। सनमान्यो सबही सुख मानी॥
लखि पट भूषण चिह्न तुम्हारे। भई प्रेमवश सुरत सम्हारे॥
शिथिल अङ्ग भरि आये नयना। पूँछी कुशल सुगद्गद बयना॥

जब मैं कह्यो सँदेश तुम्हारो । सुनतहि आयो सबन पत्यारो ॥
बीती घरिक धीर उर आन्यो । मेरो कह्यो सांच नहिं मान्यो ॥
दूषण सब कुबिजाको दीन्हो । कछुक परेखो तुमसों कीन्हो ॥
तिनकी बात न जात बखानी । प्रेमपन्थ वे सकल सयानी ॥
बह रसरीति देखि उनकेरी । कटुक कथा लागी मोहिं फेरी ॥
यद्यपि मैं बहु विधि समुझाई । ग्रंथयुक्ति सब कथा सुनाई ॥
कहिबे में न कछु सक राख्यो । भयो पवन ज्यों भुसमें भाख्यो ।
ज्ञानपन्थ जो श्रीमुख बानी । सोवत तिनको भई कहानी ॥
कैइक कही बनाय अनेका । उनके दृढ़ब्रत पतिब्रत एका ॥

गही एकही गहन उन, मेटि वेद विधि नीति ।
गोप भेष भजि सांवरे, रही विश्वभरि जीति ॥
नहिं सीखैं शिख आन, जो विधि जाहि सिखावहीं ।
तुमहूँ बड़े सुजान, उहां जाहु तो जानहू ॥

क्षमा करो आयसु जो पाऊं । तौ अपनी सब विपति सुनाऊं ॥
योगकथा कहि अबलनमाहीं । होवै इतो दुःख क्यों नाहीं ॥
मैं निर्गुण गुण एक बखानो । सोऊ पूरो कहि नहिं जानो ॥
वे सब उमगे बारिधि ज्योंहीं । जामें थाह न पाऊं क्योंहीं ॥
कहौं एक मैं पहरक माहीं । वे कोटिक क्षणमें कहि जाहीं ॥
कौन कौनको उत्तर आवै । सुनत सबै उनहींको भावै ॥
प्रेम प्रीति उनकी लखि बांकी । धरी रही सब बात यहांकी ॥
रह्यो चकित जिमि मनकी ऊलैं । जैसे हरिण चौकरी भूलैं ॥

वे पारत पटिया सो शीशा। सिखवों काहि योग जगदीशा ॥
वे पटवेत्ता सकल स्वभाऊ। मैं शठ बारहखरी पढ़ाऊ ॥
अबलन वचन सुनतही मेरे। भई अग्नि ज्यों घृतके गेरे ॥
बहुत भांति करि मैं सब यांचो। एको अङ्ग न कोऊ कांचो ॥

सगुण प्रेम दृढ़ उन गह्यो, यथा पपीहा पयद।
जानि लेहु प्रभु तुम यहां, कहा निरोगहिं वयद ॥
तिन्हें निरन्तर ध्यान, श्याम राम अम्बुजनयन।
लागत फीको ज्ञान, अवलोकत उनको भजन ॥

मैं देख्यो षड़मास खोज कर। एकै रीति सबै ब्रज घर घर ॥
ज्यों कुरुखेत दिये बाढ़त धन। त्यों अधिकात प्रेमनिततुमतन॥
प्रकट तुम्हारे गुण चित दीन्हें। देह गेह अर्पण सब कीन्हें ॥
कोऊ कहत गये गोचारन। कोउ कह गये अघासुर मारन ॥
कोऊ कहत इन्द्रजल जाई। गोवर्द्धन कर लियो कन्हाई ॥
कोऊ कहत यमुन सुनि कालो। नाथन गये ताहि वनमाली ॥
वरघर दुहत कहत कोउ बाला। कोउ कह बन खेलत नँदलाला॥
कोऊ कहत कुटिल लम्पट हरि। बसे जाय री धौं काके घरि ॥
एक कहत वन वेणु बजावें। चलो सुनत यों कहि उठि धावें ॥
ऐसी लीला प्रकट बखानैं। मेरो कह्यो न कोऊ मानैं ॥
हरि मानो निजमति घटज्ञानी। सुनि लीन्ही उनको मैं वानी॥
प्रीति रीति लखि तहां डुलान्यो। नाथ तुम्हारी सुरति भुलान्यो

तुमसों आवन कहि गयो, वेगहि ब्रजतें नाथ।
उन लखि उनसों ह्वै लग्यो, गावन उनके साथ॥
बीत गये षट मास, समुझि परी आयो कहां।
तब उपज्यो जिय त्रास, भाजि चलो दै आन कहि॥
बहुरि कहां मोको सुख वैसो। रसलीलाविनोद ब्रज कैसो॥
कहत न बनै देखतहि भावै। यह सुख बड़भागी सोइ पावै॥
बस्यो न पांचो दिन उनमाहीं। तासु जन्म जगमाहि वृथाहीं॥
नहिं श्रुति शेष ब्रह्मसुख पायो। जो रस ब्रजगोपिन मिलिगायो
निरखत यदपि यहां यह सूरत। तदपि जाय उतही मन पूरत॥
बरही मुकुट गुञ्जकी माला। मुख मुरलीध्वनि वेण विशाला॥
आगे धेनु रेनु मण्डित तन। तिरछी चितवन चारु हरणमन॥
गोपी ग्वालनसों हरि बोलत। खेलत खात हँसत ब्रज डोलत॥
तब वह सुख समुझत मन भावै। दूतयह लखिकछु कहतनआवै
तुम्हरी अकथ कथा तुम जानो। मैं कह समुझों मूढ़ अयानो॥
हियमें मोहिं बहुत यह शालै। तुम तौ प्रभु करुणाके आलै॥
होत कठोर कठिन मन काहे। बनत कौन विधि बिना निबाहे॥
निगम कहत वश भक्तके, पूरण सब सुखसाज।
करि सुदृष्टि ब्रज पेखिये, गहो बिरह की लाज॥
अतिहि दुखित तनु छीन, ब्रजबासी तुम विरहवश।
तुमतन मन धन लीन, रटत चातकौ लों सबै॥
कहौं कहा गति प्रभु राधाकी। जैसी विरहव्यथा बाधाकी॥

तृषणा विन अति छीण शरीरा। वसन मलीन श्रवत दृग नीरा॥
सुधि बुधि कछू देहकी नाहीं। रहत बावरी ज्यों घरमाहीं॥
कबहुँक कृष्ण कृष्ण रट लावै। कबहुँक नाम आपनो गावै॥
विषदिशि अग्नि काठकृमि जैसे। सहत विरहदुख दुहुँ दिशि तैसे
लहत न छांहू शीतलताई। कबहू रहत मौन शिर नाई॥
गृहजन देखि देखि दुख पावैं। नहिं कछु सुनतिकोटिसमुझावैं॥
सूखी जिमि नलिनी विनपानी। जुगवत यत्न सखी सयानी॥
तृणके अग्र ओसकण जैसे। आशा अवधि प्राण तनु तैसे॥
अचरजमोहि बड़ो यह आवै। प्रभु तुमको कसो यह भावै॥
करुणामय प्रभु अन्तर्यामी। भक्तन हित तनु धारौ स्वामी॥
वेगि कृपा करि दर्शन दीजे। व्रजजन मरत ज्याय सब लीजे॥

यह मुरली दै बिलखिके, कह्यो यशोमति माय।
एकबार हित नन्दके, दरश दिखावहि आय॥
जिन गैयनको श्याम, आप चराई हेत करि।
बहुरि न आई धाम, बिडरी कुञ्जनमें फिरत॥

सुनिके प्रभु उद्धवके बैना। उमँगे प्रेम भरे दोउ नैना॥
व्रजजनप्रीति आय उर शाली। भये विवश जन प्रण प्रतिपाली
लै उठाय मुरली उर लाई। धरि व्रजध्यान रहे अरगाई॥
सहज स्वभाव कृपालुहि ऐसे। होत तुरत जैसनको तैसे॥
पुनि हा व्रज कहि छांड़ि उसासू। पोंछि पीतपटसों जल आंसू
उद्धवसों यों वचन सुनाये। भले सखा शिख दै व्रज आये॥

मनमें यों प्रभु कियो विचारा। ब्रजभक्तन मम रूप अधारा॥
मेरे मुक्ति बड़ी निधि सोई। सो वे नहीं आदरत कोई॥
ताते जो जनके मन भावै। सोई मोहि करत बनि आवै॥
भक्ताधीनसों पण हमारे। ब्रजवासी मोको अति प्यारे॥
सदा बसत ताते ब्रजमाहीं। इन सम मोहि और हितु नाहीं॥
सब समरथ प्रभु सब गुणनागर। ब्रजवासी जनके सुखसागर॥

मन करि हरि ब्रजमें रहे, मिलि ब्रजजन मनसाथ।
तनकहि देवन काज हित, भये द्वारका नाथ॥
सदा बसत ब्रज श्याम, नटवर वपु मुरली धरे।
ब्रजजन पूरण काम, कोटि काम लावण्यनिधि।

बसत सदा ब्रज कुँवर कन्हाई। ब्रजवासी जनके सुखदाई॥
कृष्णप्रेममूरति ब्रजनारी। कबहूँ नहीं कृष्णते न्यारी॥
नित्य नवल नित बनहिं विहारा। ब्रजविलास नित नवल उदारा
नित्यधाम वृन्दावन पावन। नित्य रासरस परम सुहावन॥
शिव सनकादि शेष जेहि ध्यावैं। सुर नर मुनि सब ध्यानलगावैं
ब्रजगोपिनकी महत बड़ाई। एक समय ब्रह्मा सब गाई॥
भृगु नारद आदिक जे भक्ता। पूछत भये विनय संयुक्ता॥
तिनसों विधि यहि भांति बखानो।वेदऋचासब ब्रजतिय जानो॥
इनसम सत्य कहीं तुपपाहीं। मो शिव शेष लक्ष्मी नाहीं॥
नहीं कृष्णते इक क्षण न्यारी। इनते और न कोउ अधिकारी॥

इनके भाव कृष्ण जो ध्यावै । प्रीति रीति दृढ़ करि मन लावैं ॥
नारि पुरुष कोऊ किन होई । वेदऋचा पावै गति सोई ॥

परशै इनको चरणरज, वृन्दावन महिमाहिं ।
सोऊ गति इनकी लहै, यामें संशय नाहिं ॥
यों विधि कही बुझाय, महिमा ब्रज गोपीनकी ।
व्यास कही सो गाय, पावन वृहत पुराणमें ॥

ताते भृगु आदिक नारद मुनि । इन्द्रादिक सुर शिव ब्रह्मा पुनि
अरु हरिभक्त जगतजे अइहीं । वृन्दावनरज वाञ्छित रहहीं ॥
ब्रजरज अति दुर्लभ श्रुति गावैं । बड़ भागीजन तेई पावैं ॥
चित धरि सोई ब्रज रस रसा । ब्रजविलास गायो ब्रजदासा ॥
कृष्णचरित ब्रजवन निकुञ्जको । सार सकल सुख सुकृत पुञ्जको
सार ज्ञान विज्ञान ध्यानको । वेद शास्त्र अस्मृति पुरानको ॥
सार वहुरि इतिहास भजनको । योग जाप अरु यज्ञ यजनको ॥
सार अमित मुनि सन्त मतनको । हरिपद पङ्कज प्रेम यतनको ॥
सार जन्म अरु सुगति मुक्तिको । परमानन्द रु विमल भक्तिको ॥
सार सकल रस रसिकाईको । परम मधुर सुन्दरताईको ॥
सार सारको परम सुहायो । ब्रजविलास भक्तन मन भायो ॥
सहित स्वभाव प्रीति जो गैहै । तेजन गति गोपिनकी पैहैं ॥

यह ब्रजविलास हुलास सों, नरनारि सुनि जे गाइहैं ॥
सीखैं सिखावैं पढ़ें रुचिकर, प्रेम मन उपजाइहैं ॥

धरि भाव भरता कृष्णसों, उर कमलपद चितलाइहैं ॥
हरि राधिकापरसादते, ब्रजगोपिका गति पाइहैं ॥
पूरण सकल मन काम, सब सुखधाम यश नँदलालको ॥
दलन दारिद दोष दुख, भयभव हरण यम कालको ॥
यह जानि गावहिं सुजन गायो, जिनन आनँदपद लह्यो ॥
तिनको कृपा बल गाय कछु, इक दास ब्रजवासी कह्यो ॥

ब्रजविलास ब्रजराजको, को कहि पावै पार।
भक्त भाव गावत भगत, भजन प्रभाव विचार ॥
सिगरे दोहा आठसौ, और नवासी आहिं।
हैं इतनेहीं सोरठा, ब्रजविलासके माहिं ॥
दश सहस्र षटसों अधिक, चौपाई विस्तारु।
छन्द एक शत षट अधिक, मधुर मनोहर चारु ॥
सबको ऽनुष्ठुपछन्द करि, दश सहस्र परिमान।
खण्डित होन न पावहीं, लिखियो जान सुजान ॥
विधि निषेध जाने नहीं, कछु ब्रजवासी दास।
ज्यों जाने त्यों राखि हैं, नँदनन्दनको आस ॥
नहि तप तीरथ दान बल, नहीं कर्म्म व्यवहार ॥
ब्रजवासीके दासको, ब्रजवासी आधार ॥
ब्रजवासी गाऊं सदा, जन्म जन्म करि नेह ॥
मेरे जप तप व्रत यहै, फलदीजै पुनि एह ॥

सम्पूर्णम्।

# विजया वटिका

—◇—

## सब प्रकारके ज्वरकी महौषध।

विजया-वटिका आज भारतमें प्रसिद्ध है। गरीबकी झोपड़ी और राजाके महलमें विजया-वटिका सम भावसे वर्त्तमान है। विजया-वटिकाने मानो ब्रह्माण्ड विजय कर डाला है।

अङ्गरेज स्त्रियोंकी विजया-वटिका बड़ी प्यारी वस्तु है; क्या जाने, किसगुणसे विजया-वटिका हिन्दुस्थानी चीज होने पर भी साहब मेमोंकी प्यारी है।

विजया-वटिकाकी शक्ति मन्त्रशक्तिकी भांति अद्भुत है। जो ज्वर वैद्यक, डाक्टरी, होमियोपैथी आदि चिकित्साओंसे भी अच्छा नहीं होता, घरके लोगोंने जिन रोगियोंके जीनेकी आशा छोड़ दी हैं— ऐसे कितनेही रोगी विजया वटिकासे अच्छे हुए हैं।

कभी विजया-वटिका वज्रसे कठोर और कभी फूलसे भी कोमल होती है। यही विजया-वटिकाके गुण हैं, यही उसका महत्त्व है और यही उसका अलौकिकत्व है। रोगीकी नाड़ीपर दिन रात ज्वर है, प्लीहा और यकृतसे वह कष्ट पाता है, उसका हाथ पांव मुंह सूज गया है, आंखें पीली होगई हैं, नाकसे नकसीर फूटती हैं— ऐसे विविधव्याधिग्रस्त रोगी भी विजया-वटिकासे अच्छे हुऐ हैं।

और जब आदमीको प्लीहा, यकृत कुछ नहीं है, ज्वर भी नहीं है, अच्छा शरीर है,—इस समय भी विजया-वटिका सेवनसे भूख बढ़ेगी, शरीरका लावण्य बढ़ेगा। इसीसे विजया-वटिका विचित्र है। कुनैनसे जो ज्वर नहीं जाता, विजया-वटिकासे वह चला जाता है। दस पन्द्रह दिनके बीचमें जिनको फिर फिरके ज्वर आता हो, उनकी बीमारीके लिये विजया-वटिका ब्रह्मास्त्र है।

---

## मूल्यादि।

| वटिकाकी | संख्या | मूल्य | डा: मा: | पेकिङ्ग |
|---|---|---|---|---|
| १ नं० डिबिया | १८ | ॥=) | ।) | =) |
| २ नं० डिबिया | ३६ | १=) | ।) | =) |
| ३ नं० डिबिया | ५४ | १॥=) | ।) | =) |
| ४ नं० डिबिया | १४४ | ४।) | ।) | =) |

वेल्यु पेबलमें डिबिया लेनेसे और =) दो आना अधिक लगेगा।

---

## प्रशंसा पत्र।

पहला पत्र।

आनन्दके साथ जताता हूं कि मेरी अढ़ाई वर्षकी शिशु सन्तान जो बङ्गदेशमें रहते समय प्राय: एक वर्षके उपरतक मलेरिया ज्वर प्लीहा और लिवर वगैरह भोगती रही और जो पश्चिमोत्तर देशकी ऐसी उत्तम आवहवा-वाले स्थानमें आकर भी ३ मासतक डाक्टरकी विशेष चिकित्सा करवाकर फल न पा सकी; किन्तु उसी सन्तानको उस दिन आपकी विजया वटिका मंगाकर तथा व्यवस्थानुसार सेवन और प्रलेप वगैरह कराके विशेष उपकार हुआ, यह बात मैंने

तथा और सब लोगोंने ही प्रत्यक्ष देखी। रोग अति कठिन हो गया था, यह बात अन्यान्य लोगोंके सिवाय डाक्टर साहबको भी स्वीकार करना पड़ी थी। परन्तु आपकी विजया बटिका सेवनके दिनसे ही मानो जलती आगमें पानी डाला गया। जो हो, यद्यपि "विजया बटिका" दाम देकर खरीदी है, तो भी आपके आगे हमेशाके लिये कृतज्ञतापाशमें बंध गया। मैं जगदीश्वरसे मन-वचनकर्म्मसे आप लोगोंका मङ्गल चाहता हूं।

अधीन—हरेन्द्रनाथ वसु।
बलिया, पश्चिमोत्तर देश।

---

दूसरा पत्र।

बङ्गाल ढाकेके बान्धव-सम्पादक, भावलके राजा साहबके मन्त्री श्रीकालीप्रसन्न घोष बहादुर क्या लिखते हैं, सो देखिये,—

"आपकी विजया बटिका बहुत उमदा दवा है। मेरे उपदेशसे अनेक लोगोंने उसका सेवन किया और सेवनसे विशेष फल पाया है। भावलके राजा विजया-बटिकाके बिलकुल पक्षपाती हैं। उन्होंने विजया बटिका सेवन करके स्वयं खूब फायदा उठाया है और अपने पोष्य परिजनोंके बीच उसका सेवन कराके तथा फायदा देखके खुश हो गये हैं। इस बार शारदीय दुर्गापूजाके कुछ आगे राजा साहबके साथ विजया बटिकाके सम्बन्धमें मेरी बातचीत हुई थी। उस समय उन्होंने सौ मुहसे उसकी तारीफ की।

---

तीसरा पत्र।

दारजिलिङ्गके पास सिकिम राजधानीसे उसी देशके रईस मशहूर जमीन्दार श्रीलम्बोदर प्रधान महोदयने अङ्गरेजीमें जो चिट्ठी दी है, उसे एकबार देखिये :—

उसका मर्मार्थ यह है,—मैं अति आनन्दकेसाथ आपको जाहिर करता हूं, कि

आपकी विजया वटिका जारी होनेके दिनसे ही मैंने स्वयं इसका व्यवहार किया और अपनी रैयतके बीच भी इसको बांटा। अब मैं समझ सका हूं, कि केवल एक या दो गोलीसे ही ज्वर सम्पूर्ण रूपसे आराम हो जाता है। अनुग्रहपूर्व्वक मुझे बताइये, कि ४ नं० डिबिया विजया वटिका एक दर्जनका क्या दाम है ?

श्रीलम्बोदर प्रधान, जमीन्दार।
सिकिम, पोष्टाफिस रङ्गीत, दारजिलिङ्ग।

---

चौथा पत्र।

दरभङ्गाराज्यके अधिकांश निवासी विजया वटिकाका सेवन किया करते हैं। दरभङ्गाके महाराजने स्वयं राज्यकी प्रजाओंमें विजया वटिका चलाई थी, यह बात निम्नलिखित चिट्ठी पढ़नेसे ही विशेष प्रतीत होगी। वर्ष भरमें एकबार नहीं,—अक्सर हमको इसी तरह बीसियों दरजन विजया वटिका भेजना पड़ती है।

अङ्गरेजी पत्रका मर्म्म यह है,—"दरभङ्गानरेशके प्रधान मन्त्री प्राइवेट सिकत्तर विज्ञवर श्रीयुक्त केशरी मिश्र महाशयने लिखा है, कि महाराज दरभङ्गानरेशके लिये ३ नं० ७२ डिबिया अर्थात् ६ दरजन विजया वटिका भेज दीजिये।"

कमिशन बाद देकर इस ३ नं० ७२ डिबियाका दाम एक सौ पांच रुपया है।

---

पांचवां पत्र।

कृपापूर्व्वक और एक बाक्स ३नं० विजया वटिका भेज दीजिये। जो कुइनाइनसे बन नहीं पड़ा, विजया वटिकाने वही कर दिखाया। कई ज्वररोगी आपकी पहिले भेजी हुई विजया वटिका खाकर आराम हुए। लालबिहारी मिश्र कम्पनसेशन डिप्टी कलक्टर। इलाहाबाद।

---

छठवां पत्र।

आपकी विजया बटिकाके गुण अमृतके समान है। बुखार तो कैसाही हो, तीन दिनमें भाग जाता है। और कई मरजको फायदा करती है। हमने करीब बीस डिब्बीके मंगाया। चौथिया तिजारी और रोज रोजके बुखारवालोंको दिया। सबको फायदा हुआ।

३ नं०की १ डिबिया विजया बटिका इस पतेपर मेरे नाम बजरिये वेल्यूपेबल भेजिये। चौधरी ठाकुरप्रसाद जमीन्दार, मौजा विक्रमपुर, मध्यप्रदेश।

---

सातवां पत्र।

पञ्जाब-लाहौरकी मेम साहिबा श्रीमती हारिस राजसने अङ्गरेजी चिट्ठी भेजी थी। उसका सारांश सुनिये ;—

"विजया बटिका अद्‌भुत शक्तिसम्पन्न है! नौ महीनेसे मुझे ज्वर था। किसी तरह जाता नहीं था; आपकी विजया बटिकासे मुझे पूरा आराम हुआ है। आनन्द यह है, कि थोड़ा दाम देकर मैं डाक्टरकी भारी फीससे बच गई।"

---

आठवां पत्र।

रुहेलखण्ड, रामपरष्टेट हाईस्कूलके प्रिन्सपल बी, सिंह लिखते हैं ;—

"क्रमसे एलोपेथी, होमियोपेथी और हकीमसे महीनों चिकित्सा करानेपर भी कुछ लाभ न हुआ, परन्तु आपकी विजया बटिकाने मन्त्रकी भांति चमत्कार दिखाया। अपने मित्रोंसे मैंने इस परम औषधके लेनेका अनुरोध किया है।

---

## बी० वसु० एण्ड कम्पनी।

नवां पत्र।

महाशय! आपकी विजया वटिका सेवन करके ५ प्लीहा रोगी अच्छे हुए हैं। अनुग्रह करके ३ नम्बरका और एक वाक्स भी: पी: पोष्टमें भेज दीजिये। विजया वटिका जीर्णज्वर प्रभृति रोगोंको बहुत फायदे- मन्द है।

श्रीलक्ष्मीप्रसाद बी, एल,
वकील, छपरा (सारन)।

---

दशवां पत्र।

वकीलकी चिट्ठी।

पञ्जाब-लाहोरके प्रधान विचारालयके सुप्रसिद्ध बङ्गाली वकील बाबू अमृत-लाल राय, बी०, ए०, बी०, एल०, ने जो पत्र अङ्गरेजीमें लिखा है, उसका भावार्थ यह है,—

"आपकी सुप्रसिद्ध "विजया वटिका"से मेरा असामान्य उपकार हुआ है। इसी लिये आनन्द सहित आपको धन्यवाद देता हूं। पिलही और यकृत सहित पुराना ज्वर और वातज्वर,—अनेक औषधियोंसे जो अच्छे नहीं हो सके,वे सब आपकी विजया वटिकासे दूर हुए। कृपाकर शीघ्र ही ३ नम्बर विजया वटिकाकी एक डिब्बी बी० पी०से भेज दीजिये।"

विजया वटिका मिलनेका पता—

कलकत्ता—७९ नं० हेरिसन रोडमें बी० वसु एण्ड कम्पनीके पास विजया वटिका मिलती है।

---

पुष्ट रहेगा। जो साठ वर्षके बूढ़े हैं, कमर झुक गई है और मांस लटक गया है, तीन महीने यह बी० वसु एण्ड कम्पनीका सालसा पीके देखें, शरीरमें सत्य सत्य नई जवानीका उभार होगा। वलवीर्य बढ़ेगा, नये आदमी बन जावेंगे। विशेष परीक्षाकी इच्छा हो, तो सालसा पीनेके पहले अपने शरीरको तौल लें। पीनेके बाद हर महीने इसी तरह शरीर तौलते रहें, स्वयं देखेंगे, कि शरीर कितना बढ़ता है। लड़के बच्चे पुरुष स्त्री, सब, बी० वसु एण्ड कम्पनीका सालसा सेवन करते हैं।

## बी० वसु एण्ड कम्पनीका सालसा

इन रोगोंमें मन्त्रकी शक्तिकासा काम करता है;-(१) नाना प्रकारके पारेके घाव (२) नाना प्रकारके चर्म्मरोग (३) सूखी खाज (४) गर्मीके घाव (५) वातरोग (६) जोड़ोंका दर्द (७) अङ्गोंका दर्द (८) अर्श और भगन्दर (९) अम्लादि रोग (१०) शक्तिवृद्धि (११) मेधा वृद्धि (१२) क्षुधावृद्धि (१३) स्मरणशक्ति अधिक होती है।

## हाथी मार्का सालसाका मूल्यादि।

| | डाक | मा: | पेकिंग |
|---|---|---|---|
| १ नं० आध पावकी शीशी | ॥=) | ॥) | =) |
| २ नं० पावभरकी शीशी | १=) | ॥।) | =) |
| ३ नं० डेढ़ पावकी शीशी | १॥=) | १) | =) |

## प्रशंसा पत्र।

पहला पत्र।

मेरी स्त्री बारह तेरह वर्षमें अम्लरोगमें जकड़कर बहुत कष्ट पाती थी। मेरी एक पड़ोसिनीका भी इसी प्रकारका अम्लशूल बी० वसु कम्पनीके साल-

सेसे जाता रहा था। सो मैंने भी बी० वसु कम्पनीके सालसेकी कई शीशियां मंगाकर अपनी स्त्रीको पिलाई। चार महीने यों सालसा पिलानेसे मेरी स्त्रीका अम्लशूल जाता रहा। पहले वह रसोई न कर सकती थी, क्योंकि अग्निकी तापसे उसको शूल होता था। अब मजेमें आंचके पास बैठती है। मैंने उसे वैद्य कविराज हकीम डाक्टर और अवधूत फकीरोंकी दवा कई बार खिलाई थी, पर कुछ फायदा न हुआ। फिर उसे अम्लशूल होगा वा नहीं, सो नहीं कह सकता। पर इधर एक वर्षसे नहीं हुआ है। मुझे भरोसा है, कि सालसा सेवनसे यह पीड़ा नहीं रहेगी। मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

योगेशचन्द्र सरकार,

जज अदालतके वकील, वर्द्धमान, वङ्गाल।

दूसरा पत्र।

बाबू सर्वेश्वर मित्र, इलाहाबाद हाईकोर्टसे बी० वसु एण्ड कम्पनीके सालसेके विषयमें क्या लिखते हैं, पढ़िये—आपका सालसा व्यवहार करके मुझे वहुत फायदा पहुंचा है। मैं एक "Confirmed dyspeptic" था। वहुत दिनोंसे यह रोग भोगता था। कोठा साफ अक्सर न होता था। आपका सालसा इस्तिमाल करनेके दिनसे कोठा खूब साफ रहता है। खूब भूख भी लगती है।

तीसरा पत्र।

आपका सालसा पीनेसे वहुत उपकार हुआ है। यह भूखकी बढ़ती, धातुकी पुष्टि, और खूनकी सफाई कर सकता है,—इसमें सन्देह नहीं है। सचमुच आपका सालसा वहुत ही फायदेमन्द बना है। इसके लिये आपको धन्यवाद देता हूं। जो लोग खूनकी सफाई, भूखकी बढ़ती और धातुकी पुष्टि चाहते हैं, उनसे एकबार बी० वसु एण्ड कम्पनीका सालसा पीनेका अनुरोध करता हूं।

योगेन्द्रमोहन सेनगुप्त जमीन्दार।

पोष्ट चौदहगांव, त्रिपुरा।

**सालसा मिलनेका ठिकाना—बी० बसु० एण्ड कम्पनी।**

**७९ नं० हैरिसन रोड, कलकत्ता।**

फुलेलाके इस्तिमाल करनेसे बालोंकी जड़ मजबूत होती है। बाल काले और चिकने होते हैं। फुलेलासे बाल झड़नेका दोष दूर होकर बाल बढ़ते हैं;—चामरकीसी शोभा होती है। बहुत दिन तक फुलेला मलते रहनेसे गञ्ज रोग आराम होता है।

## मूल्यादि।

तीन औन्सकी शीशीका मूल्य एक रुपया, पेकिंग ≈) आना। डाक महसूल ॥) आठ आना। वेलुपेबल कमीशन ≈) दो आना। अगर कोई १२ शीशी फुलेला एक साथ लें, तो २) दो रुपया कमीशन अर्थात् दस रुपये हीमें १२ शीशी फुलेला पावेंगे। डाक महसूल ३) तीन रुपया पेकिंग चार्ज ।≈) आना। वेलुपेबिल कमीशन चारआना ।)।

---

## फुलेलाका प्रशंसा पत्र।

### पहला पत्र।

आपका फुलेला मलकर स्नान करनेसे बड़ाही आराम जान पड़ता है। इसमें मीठी खुशबू और अद्भुत चिकनाईकी शक्ति है, यही जानकर पुरुष और स्त्री—सभी फुलेलाको अधिक पसन्द करते हैं। स्नानके पीछे भी इसकी मनोहर खुशबू बहुत कालतक रहती है। श्रीहीरोदचन्द्र राय चौधरी एम० ए०, प्रिन्सियल, हुगली कालेज, बङ्गाल।

### दूसरा पत्र।

आज चार महीने हुए, मैं नियमपूर्व्वक आपका "फुलेला" इस्तिमाल कर रहा हूं। इसकी खुशबू अति मनोहर और देरतक रहनेवाली है। दिमागके ऊपर इसकी तासीर देखकर बहुत ही अचम्भेमें पड़ना होता है। स्नानके

उपरान्त इनकी खुशबू बड़ी देरतक रहती है। यहींपर इनकी विशेषता है। आपके इन अपूर्व आविष्कारने शौकिया चीजोंकी तादाद बढ़ा दी है। और आपके फुलेलाने उन चीजोंमें सर्वप्रधान आसन ग्रहण किया है। मैंने भांति भांतिके केशतैल इस्तिमाल किये, पर आपके फुलेलाकी भांति मनोहर खुशबूदार और फायदेमन्द तेल दूसरा न देखा। बी० के० मुखरजी बी० ए०।

विज्ञानाध्यापक, सेण्टष्टीफेन कौलिज, दिल्ली।

## पुत्र क्या देवताहै?

तीसरा पत्र।

महाशय! बूढ़ा होगया। शौक ससुरका कुछ उधार नहीं है, सो बहुत दिनोंसे कोई खुशबूदारतेल इस्तिमाल नहीं किया। इसी बीचमे मेरी कन्या ससुरालसे आई है। उसके आते ही मकानमें खुशबू भर गई। कन्याके एक पुत्र है। सो एक दिनमैं ने कन्यासे कहा, "बेटी! तुम्हारा पुत्र क्या कोई स्वर्गच्युत देवता है? जबसे घरमें आया है, तबसे खुशबू आ रही है।" कन्याने कहा, "नहीं कका! मैं फुलेला मलतीहूं; कपड़े लत्ते में लगा रहताहैं, उसीसे आपको खुशबू आया करती है।" मेरा कौतुक बढ़ा। कहा, "बेटी! फुलेलामें इतनी गन्ध है? तो देखूंगा। कन्याके साथ दो शीशी फुलेला था। उसने एक शीशी मुझे देकर कहा. "कका! आपके सिरके बाल गिर रहे हैं, मलनेसे बाल घने होंगे; और आप जो शिर दुखनेकी बात कहते हैं, सो दिन रात पढ़नेसे हुआ है। फुलेला मलिये, सब दूर होगा।" उसी दिनसे फुलेला मलकर मैंने शिर पीड़ा दूर कर डाली। बाल भी अब घने हो गये हैं। सोचा था, बुढ़ापेका बाल झड़ना, किसी प्रकार न जावेगा, पर फुलेलासे वह दूर होगया, यह देखकर ताज्जुब है। अम्बिकाचरण गुप्त, भांगामोड़ा, हुगली।

फुलेला मिलनेका पता

७९ न० हेरिसन रोड, कलकत्ता

बी० वसु० एण्ड कम्पनीके पास।

इस दांतके मञ्जनसे शीघ्र ही उन लोगोंको शुभ फल मिलेगा। असमय दांत गिरनेका भय नहीं रहेगा। इस उमरमें जिन लोगोंके दांतके मसूड़ेमें कोई बीमारी नहीं है, बी, बसु, एण्ड कम्पनीके दांतके मञ्जनसे उनके दांतोंकी शोभा बढ़ेगी। मसूढ़े सख्त होंगे और मुंहकी दुर्गन्ध दूर हो जायगी।

---

## प्रशंसा-पत्र।

### १ ली चिट्ठी।

कलकत्ता मेडिकेल कालेजके पास शुदा डाक्तर सुप्रसिद्ध चतुर चिकित्सक बाबू विपिन विहारी सेन एम, बी, महाशय ४५—४६ नं०कालिज ष्ट्रीट कलकत्ता से लिखते हैं,——

"आपका भेजा हुआ दांतका मञ्जन बहुत ही अच्छा है। और और दुकानदारोंके यहांसे जितने मञ्जनका इस्तिमाल किया, उन सबमें आपका मञ्जन उत्तम है। जरासा लेकर मुंह धोनेसे मुंह खूब साफ और सुगन्धयुक्त हो जाता है। आजसे आपहीका मञ्जन मंगावेंगे।

---

### २ री चिट्ठी।

कलकत्ता केशव-अकाडमी स्कूलके संस्कृत शिक्षक बाबू महेन्द्रनाथ विद्यानिधि महाशय लिखते हैं,——

आपके दांतके मञ्जनसे मैंने विशेष फायदा उठाया है। मेरे दांतोंमें बहुत दिनोंसे पीड़ा रहती है, पर उक्त मञ्जनके सिर्फ दो महीने इस्तिमालसे ही रोग आराम हो गया। खुशबू खूब बढ़िया है। दांत खूब साफ होते हैं। मुंह अच्छा साफ होता है।